प्रगण्य

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र

CTET REET UPTET
MP Samvida BTET
UTET, JTET HTET
CGTET HPTET

LEVEL-I एवं LEVEL-II परीक्षा हेतु

Part 2

प्रगण्य प्रकाशन
126, सेक्टर-6, विद्याधर नगर, जयपुर 302039

VISIT…

LANZAROTE Caliente.COM

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र

Part 2

दीपक कुमार शर्मा
8859637150
मथुरा वृन्दावन
दीपक कुमार शर्मा
DEEPAK KUMAR SHARMA
MATHURA VRINDAVAN- 8859637150
दीपक कुमार शर्मा
8859637150
मथुरा वृन्दावन

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक में बाल विज्ञान–मनोविज्ञान को मानस के समक्ष रखकर बाल विकास के कारण, महत्त्व, अर्थ पर विचार रखा गया है तथा इसकी सीमा का निर्धारण भी किया है। विकास के नियम, सिद्धान्त और प्रभावित करने वाले कारकों पर विचार रखते हुए, वंशानुक्रम एवं वातावरण पर भी इशारा हुआ है। चूँकि भूत पर ही वर्तमान का महल टिका होता है इसीलिए गर्भ के समय और पूर्व तथा बाद की समस्त स्थितियों को ध्यान में रखकर हमने क्रमवार इसकी व्याख्या प्रस्तुत की है। एक सचेष्ट माली की तरह चौकीदारी का ध्यान रखा है तथा शारीरिक विकास से लेकर बालक के क्रियात्मक, संज्ञानात्मक, भाषा, सामाजिक, संवेगात्मक तथा व्यक्तित्व विकास को पद्धति के अनुसार रखकर उन बातों को भी उठाया है, जिससे कि बाल अपराध को बढ़ावा मिलता है। बालक किस प्रकार चिन्तन करता है, किस प्रकार सीखता है, उनकी व्यक्तिगत विभिन्नताएँ, व्यक्तित्व, बुद्धि आदि पर भी प्रकाश डाला गया है। विशिष्ट, साधारण एवं समस्यात्मक बालक के अनन्तर विकासक्रम एवं स्वभाव पर भी बात उठाई गई है। बालकों के शिक्षण की विधियों का विस्तृत विवेचन किया गया है। बालकों की उपलब्धि का मापन मानव विकास का केवल एक परिचय नहीं बल्कि हमारी मूलभूत समस्या का समाधान है। शिक्षा के क्षेत्र में बालकों को प्राप्त अधिकार, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा आदि को भी विषय–वस्तु में सम्मिलित किया गया है।

पुस्तक लेखन में प्रयास किया गया है कि प्रस्तावित पाठ्यक्रम के सभी बिन्दुओं पर चर्चा हो, जिससे छात्रों को विषय वस्तु के लिए अन्यत्र न जाना पड़े। सम्पूर्ण पाठ्य–सामग्री एक ही स्थान पर उपलब्ध कराने का पूर्ण प्रयत्न किया गया है। पाठ्य–पुस्तक अत्यन्त ही सरल तथा बोधगम्य भाषा में लिखने की चेष्टा की गई है। भाषा शैली का स्तर भी अत्यन्त उच्च रखते हुए इसे छात्रों के अनुरूप ही रखने का प्रयास किया गया है। आवश्यक स्थानों पर उदाहरण, दृष्टान्त तथा समुचित व्याख्या देकर विषय–वस्तु समुचित रूप से समझाने का प्रयास किया गया है। पुस्तक में अध्यायीकरण प्रस्तावित पाठ्यक्रम के अनुरूप रखा गया है, जिससे पाठकों को पाठ्यक्रमानुसार अध्ययन करने में सुविधा रहे।

हमें पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत संस्करण उन सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, जो बाल विकास तथा शिक्षण विधियों में रुचि रखते हैं। हमारा यह प्रयास रहा है कि इस विषय का अध्ययन करने वाले आम पाठकों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो। पुस्तक के भावी संस्करणों में सुधार हेतु पाठकों के मूल्यवान एवं उपयोगी सुझाव सदैव आमंत्रित है।

लेखक

विषय-सूची

क्रम संख्या	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	बाल विकास	1-11
2.	वृद्धि और विकास	12-26
3.	वृद्धि एवं विकास के विभिन्न आयाम	27-50
4.	वंशानुक्रम एवं वातावरण	51-62
5.	अधिगम	63-78
6.	अधिगम के सिद्धान्त	79-108
7.	बालकों में चिन्तन एवं अधिगम	109-132
8.	अभिप्रेरणा एवं अधिगम	133-151
9.	व्यक्तिगत विभिन्नताएँ	152-160
10.	व्यक्तित्व	161-179
11.	बुद्धि	180-201
12.	विशिष्ट बालक	202-256
13.	समायोजन	257-275
14.	शिक्षण अधिगम की मूल प्रक्रियाएँ	276-291
15.	शिक्षण अधिगम की व्यूह रचनाएँ एवं विधियाँ	292-317
16.	मूल्यांकन	318-332
17.	उपलब्धि परीक्षण का निर्माण	333-352
18.	क्रियात्मक अनुसंधान	353-361
19.	निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009	362-372
20.	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005	373-378

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

अध्याय 11

बुद्धि

1.1 प्रस्तावना

बुद्धि, शब्द मनोविज्ञान की ही नहीं, सभी सामाजिक तथा प्राकृतिक विज्ञानों की दुनिया में महत्त्वपूर्ण है। व्यक्ति की कार्य करने की कुशलता, व्यवहार समायोजन, समस्या-समाधान आदि अनेक ऐसे पक्ष हैं, जहाँ व्यक्ति अपने विवेक से कार्य करता है तथा सफलता प्राप्त करता है। शिक्षा, जहाँ एक ओर व्यक्ति का समग्र विकास करती है, वहीं दूसरी ओर वह उसे प्रत्येक परिस्थिति में कार्य करने एवं समायोजन करने के योग्य भी बनाती है। बालकों की क्षमता का विकास बुद्धि के द्वारा होता है।

शिक्षा के ही नहीं, सामाजिक तथा भौतिक विज्ञानों के क्षेत्र में बुद्धि तथा उसकी मापन-प्रक्रिया का अत्यधिक महत्त्व है। किसी कार्य को विधिपूर्वक बिना किसी परेशानी के हल करना बुद्धिमत्ता का प्रतीक समझा जाता है। विश्व के महान् साहित्यकार, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक तथा महान् राजनीतिक बुद्धि के सन्दर्भ में विशेष योग्यता प्राप्त कर रहे हैं।

1.2 बुद्धि का अर्थ

बुद्धि एक ऐसा सामान्य शब्द है, जिसका प्रयोग हम अपने दिन-प्रतिदिन की बोलचाल की भाषा में काफी करते हैं। मनोविज्ञान में **बुद्धि** शब्द का प्रयोग सामान्य अर्थ से हटकर विशेष अर्थ में होता है। प्रारम्भ से ही मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि शब्द को परिभाषित करने की कोशिश की है, परन्तु अभी तक बुद्धि के सम्प्रत्यय को सर्वमान्य रूप में स्पष्ट नहीं किया जा सका है।

बुद्धि अंग्रेजी शब्द Intelligence का हिन्दी रूपान्तर है। Intelligence शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के दो शब्दों **Inter** एवं **Legere** से मिलकर हुई है जिनका क्रमशः अर्थ है **बहुत में से** एवं **चयन करना**। अतः Intelligence का शाब्दिक अर्थ होता है **अनुकूलनशील विकल्पों की क्षमता**, परन्तु बुद्धि के बारे में मनोवैज्ञानिकों की अपनी अलग-अलग धारणाएँ हैं।

1.3 बुद्धि की परिभाषाएँ

अनेक मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि को भिन्न-भिन्न ढ़ंग से परिभाषित करने का प्रयत्न किया है। इन सभी परिभाषाओं को मूलतः तीन भागों में बाँटा जा सकता है-

1. पहली श्रेणी में उन परिभाषाओं को रखा जा सकता है, जिनमें बुद्धि को वातावरण के साथ समायोजन करने की क्षमता के आधार पर परिभाषित किया गया है, जो व्यक्ति जितनी जल्दी वातावरण के साथ समायोजन स्थापित कर लेता है, उसे उतनी ही तीव्र बुद्धि का समझा जाता है।
2. दूसरी श्रेणी में उन परिभाषाओं को रखा गया है, जिनमें बुद्धि को सीखने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है।
3. तीसरी श्रेणी में उन परिभाषाओं को रखा गया है, जिनमें बुद्धि को अमूर्त चिन्तन करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है।

अधिकतर मनोवैज्ञानिकों द्वारा यह अनुभव किया गया कि इन तीनों श्रेणियों की परिभाषाओं में बुद्धि के मात्र एक पहलू या पक्ष को आधार मानकर बुद्धि को परिभाषित किया गया है। वास्तव में बुद्धि में सिर्फ एक ही तरह की क्षमता सम्मिलित नहीं होती है बल्कि अनेक तरह की क्षमताएँ, जिन्हें सामान्य क्षमता कहा जाता है, सम्मिलित होती हैं। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये कुछ मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि को दूसरे ढ़ंग से परिभाषित किया है। इन परिभाषाओं में से निम्नांकित तीन सर्वश्रेष्ठ परिभाषाएँ नीच दी जा रही हैं-

1. वेश्लर के अनुसार-

बुद्धि एक समुच्चय या सार्वजनिक क्षमता है जिसके सहारे व्यक्ति उद्देश्यपूर्ण क्रिया करता है, विवेकशील चिन्तन करता है तथा वातावरण के साथ प्रभावकारी ढ़ंग से समायोजन करता है।

2. स्टोडार्ड के अनुसार-

बुद्धि उन क्रियाओं को समझने की क्षमता है, जिनकी विशेषताएँ (1) कठिनता, (2) जटिलता, (3) अमूर्तता, (4) मितव्ययिता, (5) किसी लक्ष्य के प्रति अनुकूलनशीलता, (6) सामाजिक मान तथा (7) मौलिकता की उत्पत्ति होती है, और कुछ परिस्थिति में ऐसी क्रियाओं को, जो शक्ति की एकाग्रता तथा सांवेगिक कारकों के प्रति प्रतिरोध दिखलाती हैं, करने की प्रेरणा देती है।

3. रॉबिन्सन तथा रॉबिन्सन के अनुसार-

बुद्धि से तात्पर्य संज्ञानात्मक व्यवहारों के सम्पूर्ण वर्ग से होता है जो व्यक्ति में सूझ द्वारा समस्या समाधान करने की क्षमता, नयी परिस्थितियों के साथ समायोजन करने की क्षमता, अमूर्त रूप से सोचने की क्षमता तथा अनुभवों से लाभ उठाने की क्षमता को दिखलाता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण के आधार पर बुद्धि के अर्थ को संक्षेप में इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है-

बुद्धि वह सामान्य योग्यता तथा विभिन्न मानसिक योग्यताओं का समन्वय है, जो व्यक्ति के व्यावहारिक जीवन में सफल होने में सहायक सिद्ध होती है।

1.4 बुद्धि की प्रमुख विशेषताएँ एवं तथ्य

उपर्युक्त परिभाषाओं का एक सामान्य विश्लेषण करने पर हम बुद्धि से सम्बन्धित विशेषताओं के सन्दर्भ में निम्नलिखित तथ्यों पर पहुँचते हैं-

1. बुद्धि विभिन्न क्षमताओं का सम्पूर्ण योग होता है अर्थात् इसमें कई प्रकार की क्षमतायें होती हैं। इन क्षमताओं का पूर्ण योग ही बुद्धि कहलाता है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

2. बुद्धि के सहारे व्यक्ति किसी समस्या के समाधान में सूझ का सहारा लेता है। इतना ही नहीं, किसी समस्या के समाधान में गत अनुभूतियों का लाभ वह बुद्धि के कारण ही उठा पाता है।
3. बुद्धि के सहारे व्यक्ति उद्देश्यपूर्ण क्रियायें करता है।
4. बुद्धि व्यक्ति को वातावरण के साथ प्रभावकारी ढंग से समायोजन या अनुकूलन करने में मदद करती है।
5. बुद्धि से व्यक्ति को विवेकशील चिन्तन तथा अर्मूत चिन्तन करने में भी मदद मिलती है।
6. बुद्धिमान व्यक्ति प्रायः कठिन एवं जटिल कार्य को समझकर करते हैं। इनके कार्यों में मौलिकता अधिक होती है।
7. बुद्धि व्यक्ति को विभिन्न प्रकार की बातों को सीखने में सहायता प्रदान करती है।
8. बुद्धि पर वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है। विभिन्न शोधों के निष्कर्षों से पता चलता है कि अच्छे वातावरण में पोषित बच्चों की बुद्धि लब्धि अधिक होती है।

1.5 बुद्धि के प्रकार

यद्यपि यह निश्चित कर पाना बहुत कठिन है कि बुद्धि कितने प्रकार की होती है, किन्तु मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि के जटिल सम्प्रत्यय को अधिक स्पष्ट करने के लिए बौद्धिक योग्यता को कुछ वर्गों में विभाजित करने का प्रयास किया है।

थॉर्नडाइक एवं गैरेट ने बौद्धिक योग्यताओं को तीन वर्गों में रखते हुए तीन प्रकार की बुद्धि का उल्लेख किया है, जो निम्नलिखित हैं–

1. अमूर्त बुद्धि

अमूर्त बुद्धि व्यक्ति की ऐसी बौद्धिक योग्यताओं का समन्वित रूप होता है, जिनकी आवश्यकता गणितीय, शाब्दिक, प्रतीकात्मक या सांकेतिक विषयवस्तुओं को समझने एवं तत्सम्बन्धी समस्याओं के समाधान में पड़ती है। इसका सम्बन्ध पढ़ने, लिखने एवं तार्किक चिन्तन से होता है। शब्दों, संकेतों एवं प्रतीकों के माध्यम से अपने विचारों को अभिव्यक्त करने में अमूर्त बुद्धि का ही योगदान होता है। कवि, साहित्यकार, चित्रकार आदि अपने भावों को इसी बुद्धि के माध्यम से व्यक्त करते हैं। दार्शनिकों, शिक्षकों, अधिवक्ताओं, चिकित्सकों, वैज्ञानिकों आदि में भी अमूर्त बुद्धि की अधिकता होती है।

2. मूर्त या स्थूल बुद्धि

मूर्त या स्थूल बुद्धि उन बौद्धिक योग्यताओं का संगठन होती है, जिनके द्वारा व्यक्ति विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के बारे में जानने, समझने तथा उनका व्यावहारिक प्रयोग कर सकने में सक्षम होता है। इसीलिए इसे व्यावहारिक यान्त्रिक बुद्धि भी कहा जाता है। दैनिक जीवन में विविध प्रकार के कार्यों को करने में मूर्त बुद्धि की ही आवश्यकता होती है। ऐसी बुद्धि वाले व्यक्ति अच्छे कारीगर, इंजीनियर, औद्योगिक कार्यकर्त्ता एवं व्यापारी आदि होते हैं।

3. सामाजिक बुद्धि

सामाजिक बुद्धि उन बौद्धिक योग्यताओं का संगठन है, जो व्यक्ति को उसके सामाजिक परिवेश के साथ समायोजन स्थापित करने में सहायक होती है। इसीलिए इसे दूसरे व्यक्तियों को समझने एवं उनसे उचित व्यवहार करने की योग्यता के रूप में जाना जाता है। सामाजिक बुद्धि की प्रबलता वाला व्यक्ति दूसरे लोगों के साथ सहजता एवं शीघ्रता से समायोजन स्थापित कर लेता है। इस बुद्धि से युक्त व्यक्ति उचित–अनुचित का ध्यान रखते हुये दूसरे लोगों से व्यवहार करता है, जिससे उसे समाज में सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। सामाजिक बुद्धि के कारण ही व्यक्ति की समाज में रूचि बढ़ती है। इस प्रकार की बुद्धि वाले व्यक्ति मिलनसार, सामाजिक कार्यों में रूचि लेने वाले तथा मानव सम्बन्धों के ज्ञान से परिपूर्ण होते हैं। अतः ऐसी बुद्धि के व्यक्ति अच्छे व्यवसायी, सामाजिक कार्यकर्त्ता, सफल नेता, राजनीतिज्ञ, व्यावसायिक अभिकर्त्ता आदि होते हैं।

1.6 बुद्धि का विकास

बुद्धि एक जन्मजात योग्यता या नैसर्गिक सम्पदा है। व्यक्ति की अन्य शारीरिक विशेषताओं की तरह ही उसकी बौद्धिक क्षमता का निर्धारण भी गर्भाधान के समय ही हो जाता है। मानव के मस्तिष्कीय विकास पर ही बुद्धि का विकास अवलम्बित है। मानव मस्तिष्क के अग्र भाग की ऊपरी सतह द्वारा बौद्धिक क्रियाओं का संचालन होता है। यह मस्तिष्कीय क्षमता बीज रूप में आनुवंशिक होती है, जिसका निर्धारण गर्भाधान की क्रिया के साथ हो जाता है। यद्यपि जन्म के साथ ही मानव मस्तिष्क में बुद्धि की सारी सम्भावनायें बीज रूप में विद्यमान रहती हैं, परन्तु उनमें से लगभग 50% क्षमता ही विकसित होती है। शेष 50% बौद्धिक क्षमता का विकास वातावरण के सम्पर्क में आने पर होता है, जिसके लिए स्वच्छ वातावरण की आवश्यकता होती है। उक्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए बुद्धि के विकास के सन्दर्भ में निम्नलिखित बातें महत्त्वपूर्ण हैं–

1. बालक का मस्तिष्क जो उसकी आनुवंशिकता के फलस्वरूप प्राप्त होता है, में बीज रूप से बुद्धि की मात्रा कितनी है। जिस बच्चे का जितना क्षमतावान मस्तिष्क होगा उसके पास बुद्धि की मात्रा भी उतनी ही अधिक होगी।
2. जन्म के पश्चात् मस्तिष्क के विकास की सम्भावनायें लगभग 4 गुना होती हैं। मस्तिष्कीय परिपक्वन के स्तर को नीचे रखने वाली बाधायें यथा मस्तिष्कीय रोग, आघात, कुपोषण इत्यादि बौद्धिक क्षमता को प्रभावित करती हैं अर्थात् मस्तिष्क के स्वाभाविक विकास में जितनी बाधा आयेगी, बुद्धि की मात्रा के न्यून होने की सम्भावनायें उतनी ही प्रबल होंगी।
3. मस्तिष्क को परिपक्वता प्राप्त करने में वातावरणीय परिस्थितियाँ सहयोग करती हैं। यदि उपलब्धता पर्याप्त है, जो बीजभूत योग्यताओं को विकसित होने में मदद मिलती है। मस्तिष्कीय सक्रियता के अभाव में अपेक्षित बुद्धि का विकास सम्भव नहीं हो पाता है।
4. बुद्धि का विकास आयु एवं शारीरिक बुद्धि द्वारा भी नियन्त्रित होता है। विभिन्न आयु में विकास की गति समान नहीं होती है। शारीरिक विकास की गति मन्द रहने पर बुद्धि विकास की गति भी मन्द पड़ जाती है। प्रारम्भिक अवस्था में 4–5 वर्षों तक बुद्धि विकास की गति भी तीव्र रहती है, तत्पश्चात् विकास की गति मन्द पड़ जाती है। पुनः 8 से 12 वर्ष की अवस्था में बुद्धि विकास की गति तीव्र होती है, जो बुद्धि विकास

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

की चरमावस्था तक चलती है। अध्ययनों में देखा गया है कि मन्द बुद्धि बालकों के बुद्धि विकास की गति प्रारम्भ से ही प्रखर बुद्धि बालक की अपेक्षा मन्द रहती है तथा विकास 13–14 वर्ष की अवस्था में ही अपनी चरमावस्था को प्राप्त कर लेता है, जबकि प्रखर बुद्धि के बालकों की बुद्धि के विकास की गति अपेक्षाकृत तीव्र होती है और 16–18 वर्ष की अवस्था में चरमावस्था को प्राप्त करती है। इस तथ्य को निम्नांकित रेखाचित्र के माध्यम से स्पष्टता से समझा जा सकता है–

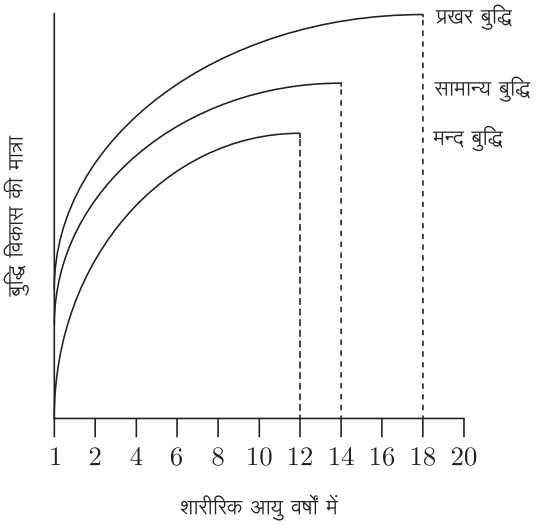

1. प्रथम 2 वर्ष

फ्रांसीसी मनोवैज्ञानिक पाईगेट का कथन है कि जब शिशु पैदा होता है तभी से उसमें अपने अनुभवों को संगठित करने की शक्ति होती है, परन्तु अनुभवों को संगठित करने की शक्ति सभी शिशुओं में एक जैसी नहीं पायी जाती है। किसी शिशु में यह शक्ति कम होती है, किसी में अधिक। प्रथम दो वर्षों में शिशु का बौद्धिक विकास इस प्रकार प्रकट होता है–

1. **प्रथम वर्ष** – इन्द्रियगोचर गमनात्मक क्रियाएँ
2. **द्वितीय वर्ष** – सरल प्रश्नों की समस्याओं को सुलझाना, उसका भाषा विकास, अन्य व्यक्तियों की ओर उसकी प्रतिक्रियाएँ।

2. 2–5 वर्ष

सामान्य मानसिक योग्यता तथा भाषा सम्बन्धी योग्यता इन दोनों में बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। जैसे–जैसे बालक बड़ा होता जाता है, वैसे–वैसे उसका शब्द भण्डार तथा शब्द प्रयोग की क्षमता बढ़ती जाती है। ये बातें उसके बौद्धिक विकास की परिचायक हैं। पाइगेट के मतानुसार, इन वर्षों में ज्ञानेन्द्रियजनित क्रियात्मक योग्यताएँ ही बुद्धि का आधार हैं। इनका प्रभाव बालक के प्रत्यक्षीकरण और प्रत्यय निर्माण पर पड़ता है। बुद्धि के अन्य तत्त्व हैं– परिस्थिति को ठीक–ठीक समझने की योग्यता, सम्बन्धों को समझना, स्मृति, अच्छी निर्णय शक्ति, समस्या समाधान आदि।

3. 5–8 वर्ष

इस अवस्था में बालक वस्तुओं में परस्पर समानता और अन्तर को भली–भाँति समझने लगते हैं। इस अवस्था में बालक की स्मृति का भी विकास होता है। 8 वर्ष के अधिकांश बालक कहानी पर पूछे गये 6 प्रश्नों में से 5 का उत्तर दे सकते हैं और 16 शब्दों के वाक्य को सुनकर बिना गलती किये उसे दोहरा सकते है। बालक इन वर्षों में पढ़ना–लिखना तथा गणना करना आदि सीखते हैं। इस अवस्था में जो विशेष परिवर्तन होता है वह यह कि बालक **ठीक** और **गलत** की धारणाओं पर विचार करने लगते हैं। बालक के सामने जब कोई समस्या आती है, तो पहले वह सोचता है तब निर्णय करता है।

4. 8–12 वर्ष

इस अवस्था में बालक अपनी मानसिक योग्यताएँ निम्नलिखित रूपों में प्रकट करते हैं–

1. समस्यात्मक स्थितियों को सुलझाने की प्रवृत्ति
2. असंगतियों को पहचानना
3. वातावरण में महत्त्वपूर्ण तत्त्वों को पहचानना
4. सामाजिक तथा राष्ट्रीय समस्याओं की जानकारी
5. प्रश्नों का युक्तिपूर्ण उत्तर देना
6. शब्दों का ठीक–ठीक अर्थ समझना तथा सूक्ष्म शब्दों को स्पष्ट करना
7. नियमीकरण
8. भाषा का उचित प्रयोग तथा
9. प्रतिदिन के जीवन से सम्बन्धित सूचनाओं की जानकारी।

पूर्व किशोरावस्था की सबसे बड़ी विशेषता है– बालकों को भाववाचक संज्ञाओं का ज्ञान जैसे–न्याय, बदला, दया, परोपकार, दान इत्यादि। 11 वर्ष तक पहुँचते–पहुँचते बालक कहानियों को अपने शब्दों में सुना सकते हैं और कभी–कभी कल्पना के आधार पर उसमें कुछ परिवर्तन भी कर देते हैं।

5. 12–18 वर्ष

मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के अनुसार, किशोरावस्था के आरम्भ में अर्थात् 12 वर्ष की आयु में बालक में निम्नलिखित योग्यताएँ पायी जाती हैं–

1. विभिन्न कठिन स्तर के अक्षरों का वह स्पष्टीकरण कर सकता है।
2. बालक के सामने भिन्न–भिन्न वाक्य प्रस्तुत करने पर, उनमें निहित असंगत तथ्यों की ओर वह संकेत कर सकता है।
3. चित्र में प्रदर्शित वस्तुओं के सम्बन्ध में संतोषजनक उत्तर दे सकता है तथा चित्र से सम्बन्धित कहानी भी बना सकता है।
4. अंकों को उल्टा दोहरा सकता है।
5. भाववाचक संज्ञाओं जैसे– साहस, रक्षा, स्नेह आदि को समझा सकता है।
6. वह वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कर सकता है।

1.7 बुद्धि के सिद्धान्त

आज के मनोवैज्ञानिक चिन्तन के युग में बुद्धि के अनेक सिद्धान्त प्रचलित हैं। इसका कारण भी है– पहले मनोवैज्ञानिक शक्ति–सिद्धान्त पर विश्वास करते थे। मन में अनेक शक्तियों का अस्तित्व मानते थे। ये शक्तियाँ बुद्धि का द्योतक थीं। कल्पना, अनुभव तथा स्मरण पर आधारित उपलब्धियाँ बुद्धि के आधार पर ही विकसित समझी जाती थीं। कालान्तर में मनोविज्ञान के क्षेत्र में अनेक महत्त्वपूर्ण

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

वाद प्रचलित हुये और उसके अनुसार बुद्धि के सिद्धान्तों का भी प्रतिपादन हुआ। ये सिद्धान्त इस प्रकार हैं–

1. बिने का एक–तत्त्व सिद्धान्त
2. द्वि–तत्त्व सिद्धान्त
3. बहु–तत्त्व सिद्धान्त
4. समूह–तत्त्व सिद्धान्त
5. प्रतिदर्श सिद्धान्त
6. क्रमिक महत्त्व सिद्धान्त
7. त्रि–आयाम सिद्धान्त

1. एक–तत्त्व सिद्धान्त

इस सिद्धान्त को बिने ने दिया था। इन्होंने बुद्धि को एक अखण्ड व अविभाज्य इकाई माना है, जिसके अनुसार व्यक्ति की विभिन्न मानसिक योग्यताएँ एक इकाई के रूप में काम करती हैं, क्योंकि बुद्धि एक सर्वशक्तिशाली मानसिक प्रक्रिया है, जो सम्पूर्ण मानसिक कार्यों को प्रभावित करती है। इस सिद्धान्त को मोनारिच सिद्धान्त भी कहते हैं। इसके अनुसार बुद्धि केवल एक ही तत्त्व से बनती है व इसमें ही सभी क्षेत्रों में एक ही बुद्धि व्याप्त है।

यह सिद्धान्त पूर्ण रूप से लागू नहीं होता है, क्योंकि कोई व्यक्ति अगर विज्ञान में कुशल है तो यह नहीं कहा जा सकता कि वह कला में भी निपुण होगा।

2. द्वि–तत्व सिद्धान्त

इस सिद्धान्त को स्पीयरमैन ने दिया था। इनके अनुसार बुद्धि दो तत्त्वों से मिलकर बनी होती है। जिसमें सामान्य तत्त्व व विशिष्ट तत्व होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति में एक सामान्य तत्त्व होते हैं, जो कई विशिष्ट तत्त्वों से सम्बन्धित होते हैं। जिसके आधार पर ही व्यक्ति की बुद्धि निश्चित होती है। जिस व्यक्ति का सामान्य तत्त्व, विशिष्ट तत्त्व से जितना अधिक सहसम्बन्धित होता है उस व्यक्ति में उतनी ही अधिक बुद्धि होती है और वह उतनी ही ज्यादा प्रगति या उन्नति करता है।

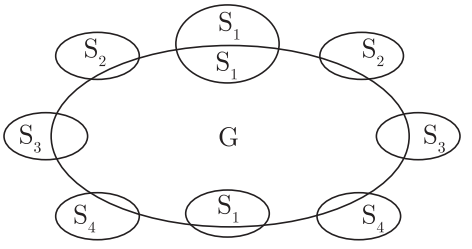

इस चित्र में एक सामान्य तत्त्व कई विशिष्ट तत्त्वों को अपने में साधे हुये है जिन्हें प्रदर्शित किया गया है।

कुछ समय बाद स्पीयरमैन ने अपने इस सिद्धान्त में संशोधन किया और दो तत्त्वों के स्थान पर तीन तत्त्वों का प्रतिपादन किया व इस तीसरे तत्त्व को उन्होंने **समूह** कहा।

3. बहु–तत्त्व सिद्धान्त

बहु–तत्त्व सिद्धान्त का प्रतिपादन थॉर्नडाइक ने किया था। इन्होंने स्पीयरमैन के सिद्धान्त का खण्डन करते हुये कहा कि बुद्धि सिर्फ दो कारकों से मिलकर नहीं बनी, बल्कि बुद्धि की रचना बहुत से छोटे–छोटे तत्त्वों या कारकों के मिलने से हुई है। प्रत्येक कारक या तत्त्व एक विशिष्ट मानसिक क्षमता का प्रतिनिधित्व करता है व एक–दूसरे से स्वतन्त्र होता है। जैसे मकान बनाने में ईंटों का प्रयोग होता है, लेकिन प्रत्येक ईंट एक–दूसरे से स्वतन्त्र होती है, लेकिन फिर भी योगदान देती है।

इस सिद्धान्त के अनुसार सामान्य बुद्धि के समान कोई चीज नहीं होती, सिर्फ इसमें बहुत सी विशिष्ट क्रियाएँ होती है।

थॉर्नडाइक ने सामान्य तत्त्व के अलावा कुछ मूल तत्त्व भी बताये हैं, जिनमें उन्होंने आंकिक योग्यता, शाब्दिक योग्यता, दिशा–योग्यता, तर्क योग्यता, स्मरण शक्ति व भाषण योग्यता का प्रयोग किया।

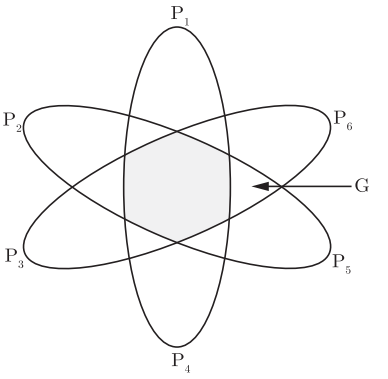

4. समूह–तत्त्व सिद्धान्त

इस सिद्धान्त को थर्स्टन ने दिया था। इस सिद्धान्त को **कारक विश्लेषण** भी कहते हैं। थर्स्टन के अनुसार सामान्य बुद्धि को कई भागों में बाँटा जा सकता है। इनको प्राथमिक योग्यतायें कहा जाता है। इन प्राथमिक क्रियाओं के कई ग्रुप होते हैं जिनका अपना एक प्राथमिक तत्त्व होता है। थर्स्टन व उनके साथियों ने निम्न नौ तत्त्वों को बताया, जो निम्न हैं–

1. मौखिक तत्त्व या शाब्दिक तत्त्व
2. प्रेक्षण तत्त्व
3. अंक सम्बन्धी तत्त्व
4. शाब्दिक–प्रवाह सम्बन्धी तत्त्व
5. स्मृति शक्ति तत्त्व
6. प्रत्यक्षीकरण सम्बन्धी तत्त्व
7. तार्किक तत्त्व
8. निगमन तर्क तत्त्व
9. आगमन तर्क तत्त्व

बुद्धि = V+S+N+W+M+P+R+I+D

अतः बुद्धि इन सब बातों का जोड़ है जिनके मिलने पर ही बुद्धि का निर्माण होता है। थर्स्टन के अनुसार दो मूल तत्त्वों में जितना अधिक सह–सम्बन्ध होता है इनके बीच उतना ही अधिक हस्तान्तरण होता है।

5. प्रतिदर्श सिद्धान्त

इस सिद्धान्त को थॉमसन ने दिया। इनके अनुसार बुद्धि कई स्वतन्त्र तत्त्वों से मिलकर बनी होती है। जब व्यक्ति कोई कार्य करता है, तो उसके लिये वह अपनी योग्यताओं का प्रयोग करता है, लेकिन वह अपनी सम्पूर्ण योग्यता का

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

प्रयोग न करके केवल उसके एक प्रतिदर्श का प्रयोग करके ही उस कार्य को पूर्ण करने का प्रयास करता है, जिसके परिणामस्वरूप उसके कार्य को पूर्ण करने में केवल एक ही प्रतिदर्श का प्रदर्शन होता है। इन प्रतिदर्शों में जो सम्बन्ध होता है वह सभी योग्यताओं के स्वतन्त्र मिश्रण के कारण से आता है।

6. क्रमिक महत्त्व सिद्धान्त

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन वर्नोन व बर्ट ने किया। इसमें प्रत्येक मानसिक योग्यता को क्रमिक महत्त्व प्रदान किया गया है। जिसके आधार पर सबसे पहले सामान्य मानसिक योग्यता व फिर विशिष्ट योग्यता आती है।

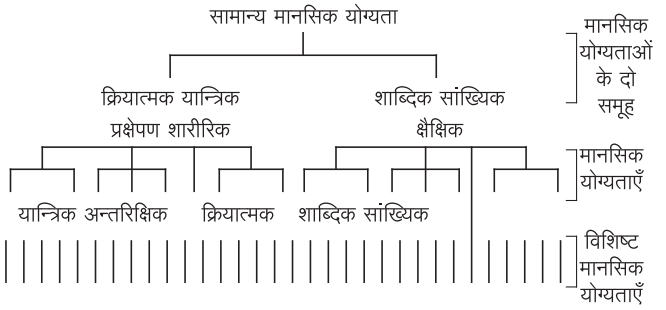

इस चित्र में सामान्य मानसिक योग्यता को दो भागों में बाँटा गया है–

1. क्रियात्मक, यान्त्रिक, प्रक्षेपण व शारीरिक।
2. शाब्दिक, सांख्यिक व शैक्षिक।

इसमें वर्नोन ने प्रथम को K.M. व दूसरे को V.D. कहा है।

7. त्रि–आयाम सिद्धान्त

इस सिद्धान्त को 1967 में गिलफोर्ड ने दिया। इस सिद्धान्त को त्रिविमीय सिद्धान्त या बुद्धि संरचना सिद्धान्त भी कहते हैं। यह सिद्धान्त थर्स्टन, थॉर्नडाइक व स्पीयरमैन के सिद्धान्तों से काफी अलग है।

गिलफोर्ड ने बुद्धि के सभी कारकों या तत्त्वों को तीन विमाओं में बाँटा, जो निम्न हैं–

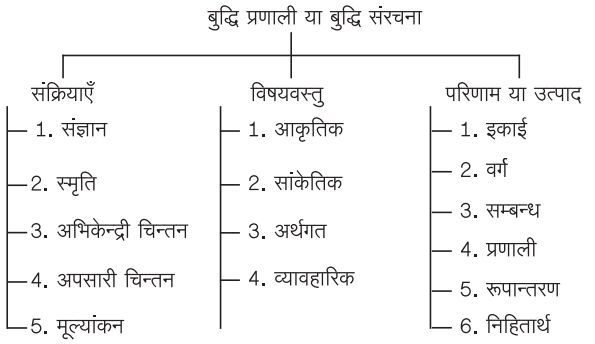

1. **संक्रिया** – यह व्यक्ति द्वारा की गई मानसिक प्रक्रिया के स्वरूप से सम्बन्धित होता है। संक्रिया में दिये गये कार्य में व्यक्ति द्वारा की गयी मानसिक क्रियाओं के स्वरूप की व्याख्या होती है। संक्रिया को पाँच भागों में बाँटा गया है– (1) मूल्यांकन,(2) अभिसारी चिन्तन, (3) अपसारी चिन्तन, (4) ज्ञान, (5) स्मृति। जैसे किसी विद्यार्थी को सहशिक्षा के गुण–दोषों को लिखने को कहा जाये तो यह मूल्यांकन की संक्रिया होगी।
2. **विषयवस्तु**– इसमें सूचनाओं के आधार पर संक्रियायें की जाती हैं। इन सूचनाओं को चार भागों में बाँटा गया है– (1) आकार, (2) सांकेतिक, (3) शाब्दिक, (4) व्यावहारिक।
3. **उत्पादन** – इसका अर्थ किसी विशेष प्रकार की विषय–वस्तु द्वारा की गयी संक्रिया के परिणाम से होता है। गिलफोर्ड ने इसे छः भागों में बाँटा है– (1) इकाई, (2) वर्ग, (3) सम्बन्ध, (4) पद्धतियाँ, (5) रूपान्तरण, (6) प्रयोग।

अतः गिलफोर्ड ने बुद्धि सिद्धान्त की व्याख्या तीन विमाओं के आधार पर की है और इनमें प्रत्येक विमा के अपने कई कारक हैं। संक्रिया विमा के पाँच कारक, विषय–वस्तु विमा के चार कारक व उत्पादन विमा के छः कारक हैं। इस प्रकार गिलफोर्ड के अनुसार बुद्धि के कुल= $5 \times 4 \times 6 = 120$ कारक या तत्त्व होते हैं।

1.8 बुद्धि मापन

बुद्धि मापन द्वारा यह जाना जा सकता है कि किसी व्यक्ति में बुद्धि का क्या स्तर है, क्योंकि कोई भी दो व्यक्ति या विद्यार्थी एक जैसी ही पाठ्य वस्तु को एक ही तरह से नहीं समझ पाते। कोई विद्यार्थी तो शीघ्रता से समझ लेता है, तो कोई उसी पाठ्य–वस्तु को समझने के लिये समय लेता है। इसको सामान्यतः व्यक्तिगत विभिन्नतायें भी कहा जाता है, लेकिन इसका दूसरा सत्य दोनों विद्यार्थियों के बुद्धि के स्तर में असमानता से भी है, जिसके कारण कोई जल्द सीखता है, तो कोई देर से।

प्रारम्भ से ही यह भिन्नता बुद्धि के कारण होती थी, लेकिन इसको औपचारिक तौर पर नहीं लिया गया था। आज इसका प्रयोग औपचारिक रूप में किया जाता है। वास्तव में बुद्धि को मापा तो जा सकता है, लेकिन पूरी तरह से नहीं, क्योंकि बुद्धि अमूर्त होती है।

आधुनिक मनोविज्ञान ने बुद्धि का मापन करने के लिये बुद्धि–परीक्षण किये हैं। बुद्धि–परीक्षण का तात्पर्य बालक की मानसिक योग्यता का मापन करना है व यह ज्ञात करना है कि उस बालक में कौन–कौन सी मानसिक योग्यताएँ हैं व कितनी मात्रा में हैं। ड्रेवर के अनुसार,

> बुद्धि–परीक्षण किसी प्रकार की समस्या होती है, जिसकी सहायता से एक व्यक्ति के मानसिक विकास के स्तर का अनुमान लगाया जा सकता है।

बुद्धि–परीक्षणों की सहायता से बुद्धि मापन का प्रयास सबसे पहले बिने ने किया। एक अन्य चिकित्सक साइमन की सहायता से बिने ने एक ऐसे यन्त्र का निर्माण किया जिसके द्वारा किसी भी व्यक्ति की बुद्धि को मापा जा सकता है। इसको **बिने–साइमन मापन विधि** कहते हैं। बिने के इन बुद्धि–परीक्षणों को बहुत सफलता मिली व इसके बाद बर्ट, टर्मन आदि ने भी अपने बुद्धि–परीक्षणों का निर्माण किया। टर्मन ने बिने के इस बुद्धि–परीक्षण में संशोधन किया जिसको **स्टैनफोर्ड–बिने मापन विधि** कहा गया। इसमें कुल 90 प्रश्न थे, जिनको 1000 बालकों से किया गया। इन्होंने बुद्धि–मापन के लिये एक सूत्र बताया–

$$\text{बुद्धि लब्धि (I.Q.)} = \frac{\text{मानसिक आयु (M.A.)}}{\text{वास्तविक आयु (C.A.)}} \times 100$$

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

I.Q. = बुद्धि लब्धि
M.A. = मानसिक आयु
C.A. = वास्तविक आयु
उपर्युक्त शब्दों का संक्षिप्त वर्णन निम्न प्रकार है–

1. मानसिक आयु

इसको सबसे पहले **बिने** ने दिया था। यह किसी व्यक्ति की वह विकास सीमा है, जो उसके कार्यों द्वारा जानी जाती है और उसी आयु विशेष में उसकी अपेक्षा होती है। जैसे– यदि किसी बालक की मानसिक आयु 9 वर्ष बतायी जाती है, और वह परीक्षा में 9 वर्ष की आयु के बालकों के समान ही कार्य करता है तो वह 9 वर्ष की ही आयु का कहलायेगा। इसको निकालने के लिये निम्न सूत्र प्रयोग किया जाता है–

$$\text{मानसिक आयु (M.A.)} = \frac{\text{वास्तविक आयु (C.A.)} \times \text{बुद्धि लब्धि (I.Q.)}}{100}$$

2. वास्तविक आयु

यह किसी भी व्यक्ति की आयु है जो वास्तविकता को प्रदर्शित करती है। व्यक्ति की वास्तविक आयु पहले से ही ज्ञात होती है। इसको निकालने के लिये निम्न सूत्र है–

$$\text{वास्तविक आयु (C.A.)} = = \frac{\text{मानसिक आयु (M.A.)}}{\text{बुद्धि लब्धि (I.Q.)}} \times 100$$

3. बुद्धि–लब्धि

इसको सबसे पहले स्टर्न ने दिया था व बाद में इसका प्रयोग टर्मन ने 1916 में किया था। यह किसी बालक या व्यक्ति की वास्तविक बुद्धि की मात्रा को प्रदर्शित करता है। जो वास्तव में वह बालक रखता है। इसके द्वारा व्यक्ति या बालक के तीव्र, सामान्य या मन्द बुद्धि होने का पता चलता है व साथ ही साथ उसकी तुलना सरलता के साथ अन्य बालकों या व्यक्तियों से की जा सकती है।

कोल व ब्रुस के अनुसार बुद्धि–लब्धि यह बताती है कि बालक की मानसिक योग्यता में किस गति से विकास हो रहा है।

बुद्धि–लब्धि निकालने के लिये मानसिक आयु को वास्तविक आयु से भाग देकर उसे 100 से गुणा करते हैं। जिससे कि उसमें दशमलव में कोई बुद्धि–लब्धि न आये।

$$\text{बुद्धि लब्धि (I.Q.)} = \frac{\text{मानसिक आयु (M.A.)}}{\text{वास्तविक आयु (C.A.)}} \times 100$$

बुद्धि लब्धि का विस्तृत वर्णन अध्याय में आगे किया गया है

1.9 बुद्धि परीक्षण के प्रकार

मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि की माप करने के लिए अनेक तरह के परीक्षणों का निर्माण किया है। उद्देश्य की समानता होते हुये भी इन परीक्षणों में भिन्नता पाई जाती है। इस भिन्नता के प्रमुख कारण उनमें प्रयुक्त भाषा, प्रश्नों की संख्या, उनका प्रशासन आदि है। इन सभी परीक्षणों का मूलरूप से निम्नांकित दो कसौटियों के आधार पर वर्गीकरण किया गया है–

1. क्रियान्वयन या प्रशासन के आधार पर
2. भाषा प्रयोग एवं कार्य निष्पादन के आधार पर

1.9.1 क्रियान्वयन या प्रशासन के आधार पर

प्रशासनिक पद्धति के आधार पर बुद्धि परीक्षणों के दो प्रकार बताये गये हैं–

1. वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण

इस प्रकार के बुद्धि परीक्षणों की सहायता से एक समय में केवल एक ही व्यक्ति की बुद्धि का मापन किया जाता है, चूँकि इस प्रकार के परीक्षणों में एक समय में केवल एक ही व्यक्ति की बुद्धि का मापन करना होता है, अतः परीक्षण के पद क्रियात्मक, शाब्दिक या अशाब्दिक किसी प्रकार के हो सकते हैं अथवा एक ही परीक्षण में तीनों प्रकार के पदों को सम्मिलित किया जा सकता है। इस प्रकार के परीक्षणों के प्रशासन एवं मानकीकरण में कठिनाई होती है तथा धन एवं समय भी अधिक लगता है। बिने–साइमन परीक्षण, पास–एलाँग परीक्षण, घन रचना परीक्षण आदि वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण के कुछ उदाहरण हैं।

2. सामूहिक बुद्धि परीक्षण

जैसा कि नाम से स्पष्ट है, इन परीक्षणों की सहायता से एक समय में एक से अधिक व्यक्तियों की बुद्धि का मापन किया जा सकता है। यही कारण है कि आज वैयक्तिक परीक्षणों की अपेक्षा इन परीक्षणों का प्रयोग अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में किया जा रहा है। सामूहिक परीक्षणों का जन्म प्रथम विश्वयुद्ध के समय हुआ। इसमें आर्मी अल्फा एवं आर्मी बीटा परीक्षणों का निर्माण किया गया। आर्मी अल्फा शिक्षित व्यक्तियों के लिए था तथा आर्मी बीटा परीक्षण अशिक्षित व्यक्तियों के लिए था। सामूहिक परीक्षणों की उपयोगिता अधिक होने के कई कारण हैं जैसे इनका मानकीकरण एवं प्रशासन अपेक्षाकृत आसान होता है तथा धन एवं समय की बचत होती है, परन्तु समस्यात्मक एवं कम आयु के बच्चों पर इनका प्रयोग उपयुक्त नहीं है तथा इनमें विश्वसनीयता एवं वैधता नहीं होती। भारतीय मनोवैज्ञानिकों ने कई सामूहिक बुद्धि परीक्षणों का निर्माण किया है जिनमें से प्रयाग मेहता : सामूहिक बुद्धि परीक्षण(1962), आर.के.टण्डन : सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण(1960), राम नरेश सिंह : वनार्ट सामान्य बुद्धि परीक्षण (1970) प्रमुख हैं।

1.9.2 भाषा प्रयोग एवं कार्य निष्पादन के आधार पर

भाषा प्रयोग एवं कार्य निष्पादन के आधार पर बुद्धि परीक्षणों को निम्नांकित 4 भागों में बाँटा गया है–

1. शाब्दिक बुद्धि परीक्षण

इस प्रकार के बुद्धि परीक्षण वह बुद्धि परीक्षण हैं, जिनमें व्यक्ति की बुद्धि का मापन शाब्दिक प्रश्नों के द्वारा मौखिक अथवा लिखित रूप में प्रत्युत्तर प्राप्त कर किया जाता है। सरल शब्दों में, शाब्दिक बुद्धि परीक्षण वह परीक्षण है जिनके पदों में भाषा का उपयोग होता है। यह परीक्षण चूँकि पेपर–पेन्सिल परीक्षण होता है, अतः इन परीक्षणों का उपयोग व्यक्तिगत अथवा सामूहिक किसी भी स्तर पर

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

किया जा सकता है। इन परीक्षणों का उपयोग केवल उन्हीं व्यक्तियों पर किया जा सकता है, जो परीक्षण की भाषा को जानते हैं। भाषा उपयोग के कारण यह परीक्षण अधिक विश्वसनीय और वैध होते हैं। चूँकि इन परीक्षणों में भाषा का उपयोग होता है अतः यह परीक्षण अधिक विश्वसनीय एवं वैध होते हैं, परन्तु भाषा का उपयोग होने के कारण इनका उपयोग संकुचित होता है। ऐसे परीक्षणों का उपयोग छोटे बच्चों, अशिक्षित व्यक्तियों और परीक्षण के अतिरिक्त अन्य भाषा जानने वालों के ऊपर नहीं किया जा सकता है। इन परीक्षणों का रूप निर्माण केवल प्रशिक्षित व्यक्ति ही कर सकते हैं क्योंकि ऐसे परीक्षणों को अनेक प्रकार के कारक प्रभावित करते हैं।

2. अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण

अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण ऐसे परीक्षण को कहा जाता है जिसमें भाषा अर्थात् शब्दों, वाक्यों तथा संख्या का प्रयोग निर्देश में निश्चित रूप से होता है और साथ ही साथ व्यक्ति जिसकी बुद्धि मापी जा रही है, को वस्तुओं का वास्तविक परिचालन का जोड़ तोड़ भी नहीं करना पड़ता है। फ्रीमैन(1965), ने रैवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसीज को अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण का एक उत्तम उदाहरण बतलाया है।

अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण का सबसे बड़ा गुण यह है कि चूँकि इसमें भाषा का प्रयोग एकांशों में नहीं होता है इसलिए प्रयोग छोटे बच्चों, कम पढ़े-लिखे व्यक्तियों तथा मानसिक रूप से मंदित बच्चों के लिए आसानी से किया जा सकता है। ऐसे परीक्षणों का एक सामान्य दोष यह है कि इसमें बुद्धि परीक्षक को प्रशिक्षित होना आवश्यक है। साधारण व्यक्ति को या अप्रशिक्षित व्यक्ति को ऐसे परीक्षणों द्वारा बुद्धि मापने में कठिनाई हो सकती है।

3. क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण या निष्पादन बुद्धि परीक्षण

क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण ऐसे परीक्षण को कहा जाता है, जिसमें भाषा का प्रयोग निर्देश में हो भी सकता है, परन्तु ऐसे परीक्षणों के एकांशों में भाषा का प्रयोग बिल्कुल भी नहीं होता है और परीक्षार्थी के सामने कुछ वस्तुयें वास्तविक रूप में उपस्थिति की जाती हैं, जिनका परिचालन कर परीक्षार्थी को उसे सही करना पड़ता है। परीक्षार्थी द्वारा किये गये जोड़-तोड़ में परिशुद्धता, त्रुटियाँ तथा लगे समय के आधार पर व्यक्ति के बुद्धि की माप की जाती है। उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण की अग्रांकित तीन विशेषताएँ होती हैं-

1. इस प्रकार के परीक्षण के निर्देश में भाषा या संख्या का प्रयोग कभी होता है और कभी नहीं भी होता है।
2. इस परीक्षण के पदों या एकांशों में भाषा का प्रयोग बिल्कुल भी नहीं होता है।
3. इस परीक्षण में व्यक्ति के सामने वस्तुओं को वास्तविक रूप में उपस्थित किया जाता है और उसमें उसे जोड़-तोड़ करना पड़ता है।

मनोवैज्ञानिकों ने कई तरह के क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण का निर्माण किया है परन्तु इस तरह के परीक्षण को सबसे पहले सेगुइन ने 1866 में मानसिक रूप से मन्द बुद्धि के बच्चों का मापन करने के लिए निर्मित किया था। इसके बाद कई क्रियात्मक बुद्धि परीक्षणों का निर्माण हुआ, जिनमें से कोह ब्लॉक डिजाइन परीक्षण, पास एलाँग परीक्षण, घन रचना परीक्षण आदि प्रमुख हैं।

क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण में कई गुण पाये जाते हैं, चूँकि इनमें भाषा का प्रयोग नहीं होता है, अतः इसका प्रयोग पढ़े-लिखे व्यक्तियों के अलावा अनपढ़, गूँगे, छोटे बच्चों एवं मानसिक मंदता युक्त बच्चों की बुद्धि मापने में आसानी से किया जा सकता है तथा भाषा का प्रयोग नहीं होने के कारण ही इन परीक्षणों द्वारा किसी भी देश तथा संस्कृति के व्यक्तियों की बुद्धि मापी जा सकती है।

इस परीक्षण की कुछ कमियाँ भी है। इस तरह के परीक्षण द्वारा एक समय में एक ही व्यक्ति की बुद्धि की माप हो पाने के कारण यह अत्यधिक खर्चीला माध्यम है और साथ ही इनका निर्माण भी शाब्दिक बुद्धि परीक्षणों की अपेक्षा कठिन है।

4. अभाषाई बुद्धि परीक्षण

अभाषाई बुद्धि परीक्षण जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, पूर्णतः भाषा के बन्धन से मुक्त होता है। अभाषाई बुद्धि परीक्षण ऐसे परीक्षण को कहा जाता है जिसमें भाषा का प्रयोग न तो एकांश में और न ही निर्देश में होता है। प्रायः इस तरह के परीक्षण में निर्देश हाव-भाव, निर्देशन, तथा चित्राभिनय द्वारा दिया जाता है। साथ ही इस तरह के परीक्षण में परीक्षार्थी को वस्तुओं का वास्तविक परिचालन भी नहीं करना होता है।

गुड का ड्रा-ए-मैन परीक्षण तथा कैटल का संस्कृति मुक्त बुद्धि परीक्षण इसके प्रमुख उदाहरण हैं। चूँकि अभाषाई बुद्धि परीक्षण बहुत हद तक क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण से मिलता-जुलता है, अतः इसके गुण-दोष भी क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण के समान ही हैं।

1.10 बुद्धि परीक्षण के विभिन्न प्रकारों की तुलना

बुद्धि परीक्षण के विभिन्न प्रकारों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि भाषा प्रयोग के आधार पर इनके दो प्रमुख रूप शाब्दिक एवं अशाब्दिक हैं तथा प्रशासन के आधार पर दो प्रमुख रूप व्यक्तिगत एवं सामूहिक हैं। सभी प्रकार के परीक्षणों की अपनी अलग-अलग विशेषतायें एवं सीमाएँ हैं, जिनके आधार पर इनका तुलनात्मक अध्ययन इस प्रकार है-

1.10.1 शाब्दिक एवं अशाब्दिक बुद्धि परीक्षणों की तुलना

शाब्दिक बुद्धि परीक्षण एवं अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण में निम्नलिखित अन्तर पाये जाते हैं-

क्र. सं.	शाब्दिक बुद्धि परीक्षण	अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण
1.	इनमें बौद्धिक समस्याओं को शब्दों या भाषा के माध्यम से परीक्षार्थी के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है।	इसमें बौद्धिक समस्याओं को रेखा-चित्रों, आकृतियों या स्थूल वस्तुओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।
2.	शाब्दिक परीक्षण में व्यक्ति को भाषा तथा संख्याओं का ज्ञान आवश्यक है।	अशाब्दिक परीक्षण में व्यक्ति को भाषा तथा अंको का ज्ञान आवश्यक नहीं है।
3.	शाब्दिक बुद्धि परीक्षण की अनुक्रिया का अंकन परीक्षण पुस्तिका में दिये गये निर्देशों को पढ़कर उसी पुस्तिका में करना होता है।	अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण में परीक्षण-कर्त्ता मौखिक निर्देश देता है और परीक्षार्थी मौखिक निर्देशानुसार कार्य करता है। निर्देश लिखित भी हो सकते हैं किन्तु अनुक्रिया के लिए शब्दों या अंको का प्रयोग नहीं होता।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

क्र. सं.	शाब्दिक बुद्धि परीक्षण	अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण
4.	अनुक्रिया अंकित करने के लिए शाब्दिक परीक्षण में शब्द/वाक्य पर चिह्न लगाना, रिक्त स्थान की पूर्ति, मिलान करना, टिक लगाना आदि विधियों का प्रयोग होता है।	अशाब्दिक परीक्षण में चित्रों को पहचानना, अंग पूर्ति करना, आकृतियाँ बनाना, चित्रों के अनुसार गुटकों को जोड़ना आदि विधियों का प्रयोग किया जाता है।
5.	इनका प्रयोग शिक्षित एवं परीक्षण की भाषा जानने वाले व्यक्तियों पर ही किया जा सकता है।	इनका प्रयोग अशिक्षित या निरक्षर लोगो तथा किसी भी भाषा के बोलने वालों पर किया जा सकता है।
6.	इन परीक्षणों के परिणाम प्रयोज्य की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय परिस्थिति से प्रभावित रहते हैं।	इन परीक्षणों के परिणाम सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय कारकों से प्रभावित नहीं होते। अतः इन्हें संस्कृति मुक्त परीक्षण भी कहा जाता है।
7.	शाब्दिक परीक्षण में समय का बन्धन अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं होता।	अशाब्दिक परीक्षण में बुद्धि की माप करने में समय सीमा अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होती है।
8.	इनका निर्माण एवं प्रशासन अपेक्षाकृत सरल एवं कम खर्चीला होता है।	इनका निर्माण एवं प्रशासन जटिल होता है। अतः इसके लिए कुशल एवं प्रशिक्षित व्यक्तियों की आवश्यकता होती है तथा यह अधिक खर्चीला भी होता है।
9.	ये परीक्षण व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों रूपों में सम्पन्न कराये जा सकते हैं।	अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण प्रायः वैयक्तिक रूप से ही प्रशासित किये जाते हैं।
10.	वन परीक्षणों की वस्तुनिष्ठता, विश्वसनीयता एवं वैधता अपेक्षाकृत अधिक होती है।	इन परीक्षणों में व्यक्तिनिष्ठता की सम्भावना होती है। ये परीक्षण विश्वस्तरीय एवं वैध होने के साथ-साथ संस्कृति मुक्त भी होते हैं।
11.	ये परीक्षण छोटे बच्चों एवं मन्द बुद्धि बालकों के लिए अधिक उपयुक्त नहीं होते।	ये परीक्षण छोटे बच्चों एवं मन्द बुद्धि बालकों और गूँगे-बहरे आदि मानसिक एवं शारीरिक मन्दतायुक्त व्यक्तियों के लिए उपयुक्त होते हैं।
12.	भाषा के विकास का प्रभाव बुद्धि परीक्षण के निष्कर्ष पर पड़ता है।	भाषा के ज्ञान के स्तर का प्रभाव बुद्धि परीक्षण के निष्कर्ष पर नहीं पड़ता

1.10.2 वैयक्तिक तथा सामूहिक बुद्धि परीक्षणों की तुलना

वैयक्तिक तथा सामूहिक बुद्धि परीक्षण में निम्नलिखित अन्तर पाये जाते हैं-

क्र. सं.	वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण	सामूहिक बुद्धि परीक्षण
1.	इनके द्वारा एक समय में एक ही व्यक्ति का बुद्धि परीक्षण किया जा सकता है।	इन परीक्षणों के द्वारा एक ही समय में एक से अधिक व्यक्तियों का बुद्धि परीक्षण किया जा सकता है।
2.	इन परीक्षणों का प्रशासन कुशल एवं प्रशिक्षित व्यक्तिअर्थात् विशेषज्ञ द्वारा ही किया जा सकता है।	इस परीक्षा को कोई सामान्य योग्यता वाला व्यक्ति भी उसके निर्देशों को भलीभाँति पढ़कर एवं समझकर प्रशासित कर सकता है।
3.	इस परीक्षण में अधिक समय लगता है।	इन परीक्षणों में अपेक्षाकृत कम समय लगता है।
4.	इनमें समय सीमा अधिक होती है तथा कुछ परीक्षण में समय सीमा का कोई बन्धन नहीं होता हैं।	यह परीक्षण प्रायः 45 से 90 मिनट के भीतर पूरा हो जाता है।
5.	इस परीक्षण के प्रश्नों को बनाने में कठिनाई होती है।	इसमें प्रश्न सरलता से बन जाते हैं।
6.	इस परीक्षण में धन अधिक खर्च होता है।	इसमें कम धन की आवश्यकता होती है।
7.	यह छोटे बालकों के लिए अधिक उपयुक्त है।	यह बड़े बालकों और वयस्कों के लिए उपयुक्त है।
8.	इनके प्राप्तांकों के आधार पर प्रयोज्य से संबंधित अनेक गुणात्मक जानकारियाँ भी प्राप्त की जा सकती हैं, जैसे- उसकी अभिरूचि, अभियोग्यता आदि का पता भी लगाया जा सकता है।	इनके द्वारा परीक्षार्थियों की बुद्धि के अतिरिक्त अन्य किसी गुण का पता लगा पाना सम्भव नहीं होता है।
9.	इनका प्रयोग निरक्षर लोगों के लिए भी किया जा सकता है।	इनका प्रयोग शिक्षित व्यक्तियों के लिए ही किया जा सकता है।
10.	इनके द्वारा किसी समूह का एक साथ परीक्षण करना संभव नहीं होता है।	इन्हें वैयक्तिक परीक्षण के रूप में भी प्रयुक्त किया जा सकता है।
11.	इन परीक्षणों के प्रशासन में मौखिक विधि का प्रयोग अधिक होता है।	ये परीक्षण लिखित होते हैं तथा इनका उत्तर भी लिखित रूप में देना होता है।
12.	इनके प्रशासन के समय परीक्षक आवश्यकतानुसार प्रश्नों के क्रम में परिवर्तन कर सकता है तथा प्रश्नों के स्वरूप में भी आंशिक परिवर्तन कर सकता है।	इन परीक्षणों के प्रश्नों में परीक्षक द्वारा किसी भी प्रकार का परिवर्तन कर पाना सम्भव नहीं होता।
13.	इन परीक्षणों पर परीक्षार्थी अपनी योग्यता का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन सहजता से कर सकता है।	इन परीक्षणों पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन में अनेक कारक बाधक हो सकते हैं।
14.	इनमें नकल करने की संभावना नहीं होती है।	इनमें परीक्षार्थी विभिन्न माध्यमों से नकल कर सकता है।
15.	इस परीक्षण के निष्कर्ष में प्रामाणिकता, विश्वसनीयता और वस्तुनिष्ठता अधिक पायी जाती है।	सामूहिक परीक्षण के निष्कर्ष कम प्रामाणिक और विश्वसनीय होते हैं।
16.	इसमें बालक और परीक्षक का निकट सम्पर्क स्थापित हो जाता है।	सामूहिक परीक्षा में इस बात का अभाव होता है।
17.	ये परीक्षण शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन तथा मानसिक निदान में अत्यधिक उपयोगी होते हैं।	इनके द्वारा मानसिक निदान सम्भव नहीं होता है, किन्तु सामान्य रूप से शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन देने में उपयोगी हो सकते हैं।
18.	इनका उपयोग व्यक्तिगत योग्यता की जाँच एवं नैदानिक कार्यों हेतु अधिक किया जाता है।	इनका उपयोग व्यक्तियों के चयन एवं वर्गीकरण हेतु अधिक किया जाता है।
19.	इस परीक्षा से सामूहिक बुद्धि का पता नहीं लग सकता।	सामूहिक परीक्षक से सामूहिक बुद्धि का पता लगाया जा सकता है।

1.11 बुद्धि परीक्षण की शिक्षा में उपयोगिता

गिलफोर्ड के अनुसा बुद्धि-परीक्षणों द्वारा मापी जाने वाली सामान्य योग्यताएँ तथा प्राथमिक योग्यतायें अलग हैं और उनका विकास आयु के साथ-साथ होता है। मध्य अवस्था आने पर उनका पतन होने लगता है। विकास का चरमोत्कर्ष 20

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

वर्ष की आयु तक होता है। इसमें कुछ यौन भिन्नतायें भी पाई जाती हैं; जो कुछ पुरूषों को प्रभावित करती हैं तो कुछ स्त्रियों को। सन्तुलन इस बात का प्रतीक है कि दोनों (पुरूष तथा स्त्री) में सामान्य योग्यता समान होती है।

अतः समानता तथा भिन्नता के आधार पर बुद्धि-परीक्षणों का विनियोग शिक्षा में होता रहा है। इसके उपयोग इस प्रकार हैं-

1. बुद्धि परीक्षण द्वारा छात्रों की बुद्धिलब्धि एवं उनकी मानसिक आयु का पता लगाकर उसके अनुसार उन्हें एक उपयुक्त कक्षा में प्रवेश दिया जा सकता है।
2. बुद्धि परीक्षणों द्वारा बालकों का उनकी बुद्धि के अनुसार वर्गीकरण करके (सामान्य बुद्धि, मन्द बुद्धि व तीव्र बुद्धि) उनके लिए विशिष्ट छात्र आधारित तकनीकों का प्रयोग भी किया जा सकता है।
3. बुद्धि परीक्षणों के आधार पर छात्रों को विषय चुनने हेतु निर्देशित किया जा सकता है।
4. बुद्धि परीक्षण छात्रों की विशिष्ट योग्यता के मापन में भी सहायक है। जैसे वाद-विवाद प्रतियोगिताओं व अन्य क्रियाकलापों में, छात्र अपना बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं।
5. बुद्धि परीक्षणों के आधार पर शिक्षक छात्रों को उचित शैक्षिक व व्यावसायिक निर्देशन देने में सफल होते हैं, क्योंकि विभिन्न व्यवसायों हेतु विभिन्न स्तर की बुद्धि की आवश्यकता होती है, जिसका पता इन परीक्षणों द्वारा लगाया जा सकता है।
6. बुद्धि परीक्षण शैक्षिक दुर्बलता का निदान करने में भी सहायक है। अक्सर देखा जाता है कि अधिक तीव्र बुद्धि के छात्र और कम बुद्धि के छात्र में पाठ्यक्रम के प्रति उदासीनता उत्पन्न हो जाने से वे शैक्षिक रूप से दुर्बल हो जाते हैं, जिसका निदान बुद्धि परीक्षणों के प्रयोग से ही सम्भव होता है।
7. बुद्धि परीक्षणों की उपयोगिता अभिभावकों के निर्देशन के लिए भी है। इन बुद्धि परीक्षणों की मदद से ही अभिभावक अपने बच्चे के बुद्धि स्तर को जान पाते हैं व उसी के अनुसार वे उन्हें परामर्श देते हैं तथा उनकी उपयुक्त शिक्षा व्यवस्था कर सकते हैं।
8. छात्रों को आगामी कक्षाओं में भेजते समय अर्थात् कक्षोन्नति का निर्णय लेने में भी बुद्धि परीक्षणों की मदद ली जा सकती है।
9. बुद्धि परीक्षण द्वारा न सिर्फ छात्रों की बल्कि शिक्षकों की बुद्धि की भी माप की जाती है और उसके आधार पर योग्य एवं बुद्धिमान शिक्षकों का चयन किया जाता है। ऐसे योग्य शिक्षकों के चयन द्वारा छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियाँ भी अधिक होती हैं।
10. बुद्धि परीक्षणों द्वारा तीव्र बुद्धि छात्रों की पहचानकर उनकी विशेष शिक्षा का प्रबन्ध किया जाता है जिसमें ऐसे छात्रों का शैक्षिक विकास तेजी से होता है।
11. इन परीक्षणों का सर्वाधिक उपयोग समस्यामूलक छात्रों के उपचार हेतु किया जाता है।
12. बुद्धि परीक्षणों के प्रयोग से अनुशासन की समस्या का समाधान भी सम्भव होता है तथा छात्रों की मानसिक बीमारियों का उपचार भी सम्भव हो पाता है।
13. इन परीक्षणों द्वारा शिक्षा में व्याप्त अपव्यय व अवरोधन की समस्या को भी दूर किया जा सकता है।
14. बुद्धि परीक्षणों का मनोचिकित्सा व अनुसन्धान के क्षेत्र में भी प्रयोग किया जाता है।
15. ये परीक्षण बालकों की क्षमता के अनुसार उन्हें कार्य देने में भी शिक्षक की सहायता करते हैं।
16. इन परीक्षणों के द्वारा पाठ्यक्रम निर्माण व शिक्षण पद्धति के निर्धारण में मदद मिलती हैं।
17. बुद्धि परीक्षणों के प्रयोग द्वारा समस्यात्मक बालकों के असामान्य व्यवहार के कारणों को जानकर उनका उपचार व सुधार किया जा सकता है।

इस प्रकार बुद्धि परीक्षण की शिक्षा के क्षेत्र में अत्यन्त उपयोगिता है तथा इन्हें शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण साधन मानकर उपयोग किये जाने से शिक्षक, छात्र अभिभावक, समाज, देश व राष्ट्र का हित हो सकता है व विभिन्न समस्याओं का भी निदान हो सकता है।

1.12 बुद्धि-लब्धि

बुद्धि-लब्धि प्रत्यय सामान्य बुद्धि के सिद्धान्त पर आधारित है। इसकी अवधारणा यह है कि बुद्धि एक इकाई के रूप में होती है, जिसे सामान्य योग्यता कहते हैं। इसका एक सूचकांक होता है, परन्तु कारक विश्लेषण द्वारा जो अध्ययन किए गए हैं, उन्होंने बुद्धि को कई कारकों में प्रदर्शित किया है। स्पीयरमैन दो तत्त्व मानता है- सामान्य तथा विशिष्ट योग्यता। इसी प्रकार थर्स्टन ने छः प्राथमिक मानसिक योग्यताओं को ज्ञात किया। इस प्रकार बुद्धि का अपना स्वरूप होता है। गिलफोर्ड ने मानसिक स्वरूप में 120 योग्यताओं को प्रदर्शित किया है।

बुद्धि-लब्धि में मानसिक आयु की आवश्यकता होती है। बिने के परीक्षण से मानसिक आयु मापी जाती है। बिने-साइमन ने 1908 में मानसिक आयु का विचार दिया। मानसिक आयु से अभिप्राय उस आयु से है जो बुद्धि या मानसिक परीक्षण से निर्धारित होती है। किसी भी वास्तविक आयु का औसत मानसिक स्तर या मानसिक विकास की ओर संकेत करता है। मानसिक आयु की गणना में त्रुटियाँ होने की सम्भावना होती हैं। अतः मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि-लब्धि का विचार प्रस्तुत किया। बुद्धि-लब्धि का सूत्र इस प्रकार है -

$$\text{बुद्धि लब्धि (I.Q.)} = \frac{\text{मानसिक आयु (M.A.)}}{\text{वास्तविक आयु (C.A.)}} \times 100$$

माना कि एक बालक की वास्तविक आयु 12 वर्ष है। वह 15 वर्ष के बालक के समान प्रश्न पत्र हल करता है तो उसकी मानसिक आयु 15 वर्ष होगी और सूत्र के अनुसार बुद्धि-लब्धि इस प्रकार होगी-

$$\text{बुद्धि लब्धि (I.Q.)} = \frac{15}{12} \times 100 = 125$$

बुद्धि-लब्धि से मानसिक आयु व वास्तविक आयु के पारस्परिक सम्बन्ध तथा विकासात्मक गति का ज्ञान होता है। एक बालक की बुद्धि-लब्धि जीवन भर एक जैसी नहीं रहती। मानसिक आयु का विकास वास्तविक आयु के साथ-साथ होता है।

टर्मन ने 1916 में स्टैनफोर्ड बिने परीक्षण के साथ बुद्धि-लब्धि के वितरण की तालिका भी तैयार की, जो निम्न है-

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

क्र.सं.	बुद्धि-लब्धि	वर्ग
1.	140 से अधिक	प्रतिभाशाली बुद्धि
2.	120-140	प्रखर बुद्धि
3.	110-120	अति सामान्य बुद्धि
4.	90-110	सामान्य बुद्धि
5.	75-90	अल्प बुद्धि
6.	50-75	मूर्ख
7.	25-50	मूढ़
8.	25 से कम	जड़ बुद्धि

टर्मन तथा मैरिल ने 3184 छात्र संख्या पर प्रयोग करके बुद्धि-लब्धि का विभाजन इस प्रकार किया है-

क्र.सं.	बुद्धि-लब्धि प्रसार	विवरण	प्रतिशत
1.	140 से ऊपर	प्रतिभावान	0.5
2	130-139	बहुत अच्छे	3.0
3.	120-129	अच्छे	7.0
4.	110-119	प्रखर	14.0
5.	100-109	उच्च सामान्य	25.0
6.	90-99	निम्न सामान्य	25.0
7.	80-89	मन्द बुद्धि	14.0
8.	70-79	हीन	7.0
9.	60-69	जड़	0.5
10.	60 से नीचे	.....	.....

भारत में डॉ. कॉमथ ने यहाँ की परिस्थितियों के अनुसार बुद्धि-लब्धि का वितरण ज्ञात किया है। यह बुद्धि-लब्धि वितरण इस प्रकार है-

क्र.सं.	वर्ग	बुद्धि-लब्धि	प्रतिशत
1.	प्रतिभाशाली	140 से ऊपर	5
2.	असामान्य	130-139.5	3.5
3.	अत्यन्त उच्च	120-129.5	9.0
4.	उच्च	110-119.5	15.0
5.	सामान्य	90-109.5	42.0
6.	पिछड़े हुए	80-89.5	15.0
7.	अत्यन्त पिछड़े	70-79.5	9.0
8.	सीमा पर	60-69.5	3.5
9.	मूर्ख	50-59.6	1.5
10.	मन्दबुद्धि	40-49.5	5
11.	जड़ बुद्धि	30 से नीचे	.....

बेसल आयु- इसे मूल आयु कहते है, जिस आयु स्तर के छात्र सभी प्रश्नों को सही कर लेता है, परन्तु उसे अधिक आयु के स्तर के सभी प्रश्नों को सही नहीं कर पाता है। इस स्थिति में सभी 6 प्रश्नों को सही कर लिया उसे 12 माह के अंक दिए जाने चाहिए, परन्तु मूल आयु के कारण 5 वर्ष के अंक दिए जाएंगे। 7 वर्ष के बालक की मानसिक आयु की गणना इस प्रकार की जाएगी-

क्र.सं.	स्तर	सही प्रश्न	अंक
1.	5 वर्ष आयु स्तर	सभी प्रश्न सही (मूल आयु)	5 वर्ष
2.	6 वर्ष आयु स्तर	4 प्रश्न सही	8 माह
3.	7 वर्ष आयु स्तर	3 प्रश्न सही	6 माह
4.	8 वर्ष आयु स्तर	2 प्रश्न सही	4 माह
5.	9 वर्ष आयु स्तर	सभी गलत	.....
		मानसिक आयु का योग	6 वर्ष 6 माह

$$\text{बुद्धि लब्धि (I.Q.)} = \frac{\text{मानसिक आयु (M.A.)}}{\text{वास्तविक आयु (C.A.)}} \times 100$$

$$\text{बुद्धि लब्धि (I.Q.)} = \frac{6.5 \times 100}{7} = 93$$

बिने परीक्षण का मध्यमान 100 बुद्धि लब्धि होती है। इसलिए यह छात्र सामान्य से निम्न स्तर का छात्र है। इसका प्रमाणिक विचलन 16 होता है।

****

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

अभ्यासार्थ प्रश्न

1. बुद्धि से क्या तात्पर्य है?
(1) अमूर्त विचारों की योग्यता (2) ज्ञानार्जन की योग्यता
(3) कार्य करने की योग्यता (4) उपरोक्त सभी

2. बुद्धि की प्रमुख विशेषता है–
(1) जन्मजात (2) अर्जित
(3) सामाजिक (4) व्यक्तिगत

3. बुद्धि का अधिकतम विकास होता है–
(1) शैशवावस्था में (2) बाल्यावस्था में
(3) किशोरावस्था में (4) प्रौढ़ावस्था में

4. फ्रीमैन ने बुद्धि के कितने प्रकार बताए हैं?
(1) 1 (2) 2
(3) 3 (4) 4

5. **बुद्धि अमूर्त वस्तुओं के विषय में सोचने की योग्यता है।** यह परिभाषा किसने दी है?
(1) थॉर्नडाइक ने (2) मैक्डूगल ने
(3) बर्मिंघम ने (4) टर्मन ने

6. **बुद्धि पहचानने तथा सीखने की शक्ति है।** यह किसका कथन है?
(1) स्टर्न का (2) बिने का
(3) माल्टन का (4) टर्मन का

7. **बुद्धि, ज्ञान अर्जन करने की क्षमता है।** यह कथन है–
(1) वुडवर्थ का (2) टर्मन का
(3) वुडरो विल्सन का (4) रॉस का

8. भारत में बुद्धि–परीक्षण का आरम्भ हुआ–
(1) 1924 (2) 1927
(3) 1922 (4) 1020

9. **बुद्धि पहचान तथा अधिगम की शक्ति है।** यह कथन किसका है?
(1) टर्मन का
(2) गाल्टन का
(3) बिनेट का
(4) स्टर्न का

10. बुद्धि परीक्षणों का जन्मदाता कहा जाता है–
(1) थॉर्नडाइक को (2) साइमन को
(3) बिने को (4) स्पीयरमैन को

11. **सामूहिक बुद्धि–परीक्षण** सर्वप्रथम किस देश में आरम्भ हुआ?
(1) ब्रिटेन (2) अमेरिका
(3) जर्मनी (4) भारत

12. बुद्धि के **एक तत्त्व सिद्धान्त** के प्रतिपादक हैं–
(1) विलियम कॉक्स (2) विलियम स्टर्न
(3) बिने साइमन (4) स्पीयरमैन

13. **द्वितत्त्व सिद्धान्त** के प्रतिपादक हैं–
(1) थॉर्नडाइक (2) स्पीयरमैन
(3) थर्स्टन (4) कैली

14. **बहुतत्त्व सिद्धान्त** के प्रतिपादक हैं–
(1) बिने (2) टर्मन
(3) स्टर्न (4) थर्स्टन

15. बुद्धि–परीक्षण से कौनसा नाम सम्बन्धित है?
(1) क्रो एवं क्रो (2) जोन्स
(3) एल्फ्रेड बिने (4) रॉस

16. किस मनोवैज्ञानिक ने सृजनात्मकता को सामान्य बुद्धि कहा है?
(1) बर्ट ने (2) वर्नोन ने
(3) जेक्सन ने (4) कोगन ने

17. **व्यक्ति के चेहरे को देखकर उसकी बुद्धि का पता लगाया जा सकता है।** यह कथन किसका है?
(1) स्पर्जहीम का (2) बर्ट का
(3) गॉल का (4) लेवेटर का

18. **बुद्धि सिर्फ एक सामान्य तत्त्व से निर्मित है।** यह कहा–
(1) स्पीयरमैन ने (2) थॉर्नडाइक ने
(3) एबिंगहॉस ने (4) इनमें से कोई नहीं

19. **बुद्धि व्यक्ति की सार्वभौमिक क्षमता है।** यह परिभाषा प्रस्तुत करने वाले मनोवैज्ञानिक हैं–
(1) वेश्लर (2) फ्रीमैन
(3) स्पीयरमैन (4) इनमें से कोई नहीं

20. **बुद्धि वह है, जिसका मापन बुद्धि–परीक्षणों द्वारा किया जाता है।** यह परिभाषा प्रस्तुत की है–
(1) टर्नल ने (2) फ्रीमैन ने
(3) वर्नोन ने (4) इनमें से कोई नहीं

21. बिने के अनुसार बुद्धि में निहित है–
(1) ज्ञान (2) आविष्कार
(3) निर्देश व आलोचना (4) ये सभी

1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.	9.	10.	11.	12.	13.	14.	15.	16.	17.	18.	19.	20.	21.
(4)	(1)	(3)	(4)	(4)	(3)	(3)	(4)	(3)	(3)	(2)	(2)	(2)	(4)	(3)	(1)	(4)	(4)	(1)	(2)	(4)

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

22. निम्न में से कौन मूर्त बुद्धि का अच्छा उदाहरण नहीं है?
(1) इंजीनियर (2) मैकेनिक
(3) कारीगर (4) दार्शनिक

23. बुद्धि के क्रमिक विकास सिद्धान्त का जनक कौन है?
(1) थॉमसन (2) थॉर्नडाइक
(3) बर्ट एवं वर्नोन (4) स्पीयरमैन

24. निम्न में से कौन अमूर्त बुद्धि का अच्छा उदाहरण नहीं है?
(1) चित्रकार (2) साहित्यकार
(3) कवि (4) व्यवसायी

25. मानसिक आयु का प्रत्यय दिया था–
(1) टर्मन ने (2) बिने ने
(3) स्पीयरमैन ने (4) थॉर्नडाइक ने

26. सृजनात्मकता का बुद्धि से निम्न में से क्या सम्बन्ध है?
(1) भेद (2) पूरकता
(3) तादात्म्य (4) उपर्युक्त सभी

27. कैली ने बुद्धि को कितने खण्डों में विभाजित किया है?
(1) 5 खण्डों में (2) 9 खण्डों में
(3) 4 खण्डों में (4) 10 खण्डों में

28. बुद्धि के मात्रा सिद्धान्त के प्रतिपादक हैं–
(1) थॉर्नडाइक (2) थर्स्टन
(3) कैली (4) स्पीयरमैन

29. **बुद्धि के कल्चर फेयर टेस्ट** के प्रदाता है–
(1) रेवन (2) हैलम्स
(3) जैनसन (4) सभी

30. **बुद्धि में सामान्य के साथ विशिष्ट तत्त्व भी होता है।** यह कहा–
(1) अल्फ्रेड बिने ने (2) स्टर्न ने
(3) टर्मन ने (4) स्पीयरमैन ने

31. नया आविष्कार, नया चिन्तन, नयी योजना इसी बुद्धि के सहारे होता है–
(1) अमूर्त बुद्धि
(2) मूर्त बुद्धि
(3) गामक बुद्धि
(4) उपरोक्त सभी

32. थॉर्नडाइक के अनुसार–
(1) बुद्धि अमूर्त है। (2) बुद्धि मूर्त है।
(3) बुद्धि यान्त्रिक है। (4) उपरोक्त सभी

33. **बुद्धि सापेक्ष रूप में नवीन परिस्थितियों में अभियोजन करने की जन्मजात योग्यता है।** यह कथन है–
(1) स्टर्न का (2) बिने का
(3) बर्ट का (4) मैक्डूगल का

34. बुद्धि लब्धि के लिए विशिष्ट श्रेय किस मनोवैज्ञानिक को जाता है?
(1) सिगमेडरी को (2) मैक्डूगल को
(3) कोहलर को (4) स्टर्न को

35. बुद्धि लब्धि (I.Q.) का प्रत्यय किसने दिया?
(1) टर्मन ने (2) जड ने
(3) कैटिल ने (4) थॉर्नडाइक ने

36. हॉवर्ड गार्डनर का बुद्धि का सिद्धान्त ..... पर बल देता है।
(1) शिक्षार्थियों में अनुबन्धित कौशलों
(2) सामान्य बुद्धि
(3) विद्यालय में आवश्यक समान योग्यताओं
(4) प्रत्येक व्यक्ति की विलक्षण योग्यताओं

37. मोहित की बुद्धि रोहन की बुद्धि से अच्छी है, जिसका मुख्य कारण है–
(1) वातावरण
(2) आनुवांशिकता
(3) शारीरिक गतिक बुद्धि
(4) 1 व 2 दोनों

38. एक नर्तक में कौनसी बुद्धि की प्रधानता होती है?
(1) संगीत बुद्धि (2) व्यक्तिगत बुद्धि
(3) शारीरिक–गतिक बुद्धि (4) तरल–ठोस बुद्धि

39. बुद्धि का **तरल मोजेक मॉडल** किसने दिया था?
(1) कैटिल ने (2) गिलफोर्ड ने
(3) थर्स्टन ने (4) स्पीयरमैन ने

40. जो बुद्धि सिद्धान्त, बुद्धि में सम्मिलित मानसिक प्रक्रियाओं (जैसे– परा–घटक) और बुद्धि द्वारा लिए जा सकने वाले विविध रूपों (जैसे– सृजनात्मक बुद्धि) को शामिल करता है, वह है–
(1) स्पीयरमैन का g कारक
(2) स्टर्नबर्ग का बुद्धिमता का त्रितन्त्र सिद्धान्त
(3) बुद्धि का सावेन्ट सिद्धान्त
(4) थर्सटन की प्राथमिक मानसिक योग्यताएँ

41. ..... के अतिरिक्ति बुद्धि के निम्नलिखित पक्षों को स्टर्नबर्ग के त्रितन्त्र सिद्धान्त में सम्बोधित किया गया है–
(1) सन्दर्भगत (2) अवयवभूत
(3) सामाजिक (4) आनुभविक

22.	23.	24.	25.	26.	27.	28.	29.	30.	31.	32.	33.	34.	35.	36.	37.	38.	39.	40.	41
(4)	(3)	(4)	(2)	(1)	(2)	(1)	(1)	(4)	(1)	(4)	(3)	(4)	(1)	(4)	(4)	(3)	(1)	(2)	(3)

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

42. रेवन का प्रोग्रेसिव मैट्रिसिज परीक्षण ..... परीक्षण का उदाहरण है।
(1) मौखिक बुद्धि-लब्धांक
(2) संस्कृति-मुक्त बुद्धि-लब्धांक
(3) समूह बुद्धि-लब्धांक
(4) व्यक्तित्व

43. **यदि व्यक्ति ने अपने वातावरण से सामंजस्य करना सीख लिया है या सीख सकता है, तो उसमें बुद्धि है।** बुद्धि की यह परिभाषा किसने दी?
(1) थॉर्नडाइक ने (2) रायबर्न ने
(3) कॉलविन ने (4) थॉमसन ने

44. 16 वर्षीय बच्चा बुद्धि-लब्धि परीक्षण में 75 अंक प्राप्त करता है, उसकी मानसिक आयु ..... वर्ष होगी।
(1) 15 (2) 12
(3) 8 (4) 13

45. बुद्धि-लब्धांक के आधार पर विभिन्न समूहों में विद्यार्थियों का वर्गीकरण उनकी स्व-गरिमा को ..... है और उनके शैक्षणिक निष्पादन को ..... है।
(1) बढ़ाता; घटाता (2) बढ़ाता; बढ़ाता
(3) घटाता; घटाता (4) घटाता; प्रभावित नहीं करता

46. **तार्किक गणितीय बुद्धि** ..... से सम्बन्धित है।
(1) द्वि-कारक सिद्धान्त
(2) समूह कारक सिद्धान्त
(3) पदानुक्रमिक सिद्धान्त
(4) बहुबुद्धि सिद्धान्त

47. एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों की विभिन्न अधिगम-शैलियों को सन्तुष्ट करने के लिए वैविध्यपूर्ण कर्यों का उपयोग करती है। वह ..... से प्रभावित है।
(1) पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त
(2) कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धान्त
(3) गार्डनर के बहुबुद्धि सिद्धान्त
(4) वाइगोत्स्की के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त

48. बहुविध बुद्धि सिद्धान्त के अनुसार सभी प्रकार के पशुओं, खनिजों और पेड़-पौधों को पहचानने और वर्गीकृत करने की योग्यता ..... कहलाती है।
(1) तार्किक-गणितीय बुद्धि (2) प्राकृतिक बुद्धि
(3) भाषिक बुद्धि (4) स्थानिक बुद्धि

49. **अधिकांश व्यक्तियों की बुद्धि औसत होती है, बहुत कम लोग प्रतिभा-सम्पन्न होते हैं और बहुत कम व्यक्ति मन्द बुद्धि के होते हैं।** यह कथन ..... के प्रतिस्थापित सिद्धान्त पर आधारित है।
(1) बुद्धि और जातीय विभिन्नताओं
(2) बुद्धि के वितरण
(3) बुद्धि की वृद्धि
(4) बुद्धि और लैंगिक विभिन्नताओं

50. मनोवैज्ञानिक अल्फ्रेड बिने एवं उसके साथी साइमन ने बुद्धि के मापन के आधार के लिए किसे सर्वाधिक उपयुक्त पाया?
(1) बच्चों की रूचि को
(2) बच्चों के निर्णय, स्मृति, तर्क एवं आंकिकीय जैसे मानसिक कार्यों को
(3) बच्चों की शारीरिक क्षमता को
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

51. यदि किसी बालक की मानसिक आयु 12 वर्ष एवं वास्तविक आयु 10 वर्ष हो, तो उसका बुद्धि-लब्धांक कितना होगा?
(1) 120 (2) 100
(3) 124 (4) 130

52. आप आठवीं कक्षा के अध्यापक हैं। आप इस कक्षा के एक छात्र का बुद्धि-लब्धांक 130 से अधिक पाते हैं, तो इसका अर्थ है कि वह ..... बालक है।
(1) मन्द बुद्धि (2) औसत बुद्धि
(3) अति श्रेष्ठ बुद्धि (4) सामान्य बुद्धि

53. पियाजे ने बुद्धि को किसके प्रति समायोजन-योग्यता के रूप में परिभाषित किया है?
(1) भौतिक एवं सामाजिक पर्यावरण
(2) जन्मजात वृद्धि
(3) परिवार की माँग
(4) कार्य-जीवन की माँग

54. बुद्धि के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौनसा कथन सत्य है?
1. बुद्धि नवीन पर्यावरण के साथ समायोजन की योग्यता है।
2. बुद्धि सीखने की योग्यता है।
3. बुद्धि अमूर्त चिन्तन की योग्यता है।
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 एवं 3 (4) ये सभी

55. **बुद्धि व्यक्ति की वह समुच्चय या सार्वभौमिक क्षमता है, जो उसे उद्देश्यपूर्ण क्रिया करने, तर्कपूर्ण चिन्तन करने तथा वातावरण के साथ प्रभावपूर्ण समायोजन में सहायता करती है।** यह कथन किसका है?
(1) वेश्लर का
(2) हैवर एवं फ्राइड का
(3) थर्स्टन का
(4) टर्मन का

42.	43.	44.	45.	46.	47.	48.	49.	50.	51.	52.	53.	54.	55.								
(2)	(3)	(2)	(4)	(4)	(3)	(2)	(2)	(2)	(1)	(3)	(1)	(4)	(1)								

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

56. बुद्धि-लब्धांक प्राप्त करने का सही सूत्र है-
(1) मानसिक आयु/कालानुक्रमिक आयु ×100
(2) कालानुक्रमिक आयु/मानसिक आयु ×100
(3) मानसिक आयु/कालानुक्रमिक आयु ×125
(4) कालानुक्रमिक आयु/मानसिक आयु ×125

57. रमेश और अंकित की समान बुद्धि-लब्धि 120 है। रमेश अंकित से दो वर्ष छोटा है। यदि अंकित की उम्र 12 वर्ष हो, तो रमेश की मानसिक आयु होगी-
(1) 9 वर्ष (2) 10 वर्ष
(3) 12 वर्ष (4) 14 वर्ष

58. बुद्धि का कौनसा सिद्धान्त सामान्य बुद्धि **g** व विशिष्ट बुद्धि **s** की उपस्थिति का समर्थन करता है?
(1) नियम प्रतिकूल सिद्धान्त
(2) गिलफोर्ड का बुद्धि का सिद्धान्त
(3) स्पीयरमैन का द्विखण्ड सिद्धान्त
(4) वर्नोन का पदानुक्रमिक सिद्धान्त

59. बुद्धि लब्धि के सम्बन्ध में क्या सत्य है?
(1) बौद्धिक आयु से व्युत्क्रमी सम्बन्धित
(2) कालानुक्रमिक आयु से प्रत्यक्ष सम्बन्धित
(3) कालानुक्रमिक आयु से व्युत्क्रमी सम्बन्धित
(4) बौद्धिक तथा कालानुक्रमिक आयु दोनों से प्रत्यक्ष सम्बन्धित

60. सतत् और व्यापक मूल्यांकन की योजना में **व्यापक** शब्द ..... के अलावा निम्नलिखित के द्वारा समर्थित किया जाता है-
(1) बहुबुद्धि सिद्धान्त
(2) सूचना प्रक्रमण सिद्धान्त
(3) जे. पी. गिलफोर्ड का बुद्धि-संचरना का सिद्धान्त
(4) एल. एल. थर्स्टन का प्राथमिक मानसिक योग्यताओं का सिद्धान्त

61. शारीरिक गतिक बुद्धि रखने वाले बच्चे की अन्तिम अवस्था निम्नलिखित में से कौनसी हो सकती है?
(1) वाचक (2) राजनीतिक नेता
(3) शल्य चिकित्सक (4) कवि

62. सिरिल बर्ट के अनुसार पिछड़े बालकों की बुद्धि लब्धि होती है-
(1) 120 से अधिक (2) 85 से कम
(3) 120 से कम (4) इनमें से कोई नहीं

63. प्रतिभाशाली बालकों में निम्न विशेषता होती है-
(1) अधिक महत्त्वाकांक्षा (2) बुद्धिलब्धि 110 से अधिक
(3) विस्तृत शब्दकोश (4) इनमें से सभी

64. **पिछड़ा बालक वह है, जो अपने पाठशाली जीवन के मध्य (10-11 वर्ष) में अपनी आयु के अनुरूप सामान्य कक्षा के नीचे की कक्षा का कार्य न कर सके।** यह कथन किसका है?
(1) सिरिल बर्ट का (2) टर्मन का
(3) टेलर का (4) मारंटिस का

65. **एक शिक्षिका का भावनापूर्वक बुद्धिलब्धांक ऊँचा है।** इसका तात्पर्य है कि-
(1) वह उच्च बुद्धिवाली है।
(2) वह उच्च अनुशासनप्रिय है।
(3) वह हास-परिहास वाली है।
(4) वह सन्तुलित व्यवहार रखती है।

66. निष्पत्ति लब्धि (A.Q.) का सूत्र होता है-
(1) $A.Q. = \frac{M.A.}{C.A.} \times 100$ (2) $A.Q. = \frac{C.A.}{E.A.} \times 100$
(3) $A.Q. = \frac{E.A.}{C.A.} \times 100$ (4) $A.Q. = \frac{E.A.}{M.A.} \times 100$

67. आर. बी. कैटल की तरल बुद्धि तुल्य है-
(1) वंशानुगत कारकों के (2) पर्यावरणीय कारकों के
(3) बौद्धिक कारकों के (4) सामाजिक कारकों के

68. अन्तर्वैयक्तिक बुद्धि से तात्पर्य है-
(1) स्वयं की क्षमताओं एवं कमजोरियों की पहचान करना
(2) दूसरों को अभिप्रेरित करने का कौशल
(3) विभिन्न व्यक्तियों को समझने का कौशल
(4) दूसरों के साथ बातचीत करने का फैसला

69. स्वयं की भावनाओं तथा संवेगों को नियन्त्रित करने से सम्बन्धित बुद्धि को क्या कहा जाता है?
(1) भाषायी बुद्धि (2) अन्तर्वैयक्तिक बुद्धि
(3) स्थानिक बुद्धि (4) वैयक्तिक बुद्धि

70. अन्तर्वैयक्तिक बुद्धि को प्रदर्शित करने वाला व्यवहार है-
(1) दूसरे के अन्तर्मन की इच्छाओं एवं मंशा का पता लगाना
(2) दूसरे के मूड को भाँप जाना
(3) मिलते-जुलते संवेगों यथा उदासी एवं पछतावे में भेद कर पाना
(4) दूसरों के विचारों एवं व्यवहारों को प्रभावित करने के लिए उनसे सम्बन्धित जानकारी का उपयोग करना

71. निम्न में से कौनसा कथन बुद्धि के बारे में सत्य नहीं है?
(1) यह एक व्यक्ति की मानसिक क्षमता है।
(2) यह सामंजस्य/ अनुकूलन स्थापित करने में सहायक है।
(3) यह व्यवहार की गुणवत्ता से आँकी जाती है।
(4) यह स्थायी एवं अपरिवर्तनशील विशेषता है।

56.	57.	58.	59.	60.	61.	62.	63.	64.	65.	67.	68.	69.	70.	71.							
(1)	(3)	(3)	(3)	(3)	(3)	(4)	(4)	(2)	(4)	(1)	(1)	(1)	(4)	(4)							

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

72. गिलफोर्ड ने कितनी मौलिक मानसिक योग्यताओं के आधार पर बुद्धि की संरचना का वर्णन किया है?
(1) एक (2) दो
(3) तीन (4) चार

73. किस मनोवैज्ञानिक ने सर्वप्रथम प्रयोगशाला खोलकर बुद्धि-परीक्षण के कार्य को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया?
(1) गाल्टन ने (2) वुण्ट ने
(3) कैटल ने (4) एबिंगहॉस ने

74. सामूहिक बुद्धि-परीक्षण की क्या सीमा है?
(1) इसमें वस्तुनिष्ठता बहुत कम है।
(2) इसमें एक ही बालक का परीक्षण हो सकता है।
(3) इसमें समय व धन अधिक व्यय होता है।
(4) इसमें परीक्षक का प्रयोज्य से व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सकता।

75. 70 से 80 तक की बुद्धिलब्धि वाले बालक को टर्मन ने किस नाम से पुकारा है?
(1) मूर्ख (2) हीनबुद्धि
(3) मन्दबुद्धि (4) क्षीणबुद्धि

76. किस मनोवैज्ञानिक ने बुद्धि को सात प्रमुख योग्यताओं का समूह बताया है?
(1) स्पीयरमैन का (2) थर्स्टन का
(3) थॉर्नडाइक का (4) टर्मन का

77. सन् 1910 में सर्वप्रथम किसने गणित की बुद्धि परीक्षा सम्पादित की?
(1) कोर्टिस ने (2) सोर्टिस ने
(3) कैटल ने (4) बिने ने

78. **बुद्धिलब्धि और भाषा सम्बन्धी योग्यता में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।** यह विचार किसका है?
(1) लॉवेल तथा मारकेल का
(2) स्पाईकर तथा इर्विन का
(3) फिशर तथा यम्बा का
(4) टर्मन का

79. **बुद्धि की संरचना में मूल रूप से दो कारक निहित होते हैं**? यह कथन किसका है?
(1) स्पीयरमैन का (2) थर्स्टन का
(3) गार्डनर का (4) गिलफोर्ड का

80. सबसे पहला बुद्धि-परीक्षण 1905 में बनाया गया था। इसे किसने बनाया था?
(1) टर्मन एवं बिने ने (2) वेश्लर एवं अर्थर ने
(3) साइमन एवं वेश्लर ने (4) बिने एवं साइमन ने

81. **बुद्धि के विकास में वंशानुक्रम की अपेक्षा वातावरण का प्रभाव अधिक पड़ता है।** यह कथन-
(1) सत्य है। (2) असत्य है।
(3) अर्द्धसत्य है। (4) काल्पनिक है।

82. मन्द-बुद्धि बालक की बुद्धि-लब्धि होती है-
(1) 75 से 120 (2) 120 से अधिक
(3) 60 से कम (4) 60 से अधिक

83. प्रतिभाशाली बालक की बुद्धि-लब्धि कितनी होती है?
(1) 130 से ऊपर (2) 120 से ऊपर
(3) 140 से ऊपर (4) 150 से ऊपर

84. पिछड़े हुए बालक की बुद्धि-लब्धि कितने से कम होती है?
(1) 70 से कम (2) 85 से कम
(3) 80 से कम (4) 100 से कम

85. बुद्धि को स्थूल, अमूर्त एवं सामाजिक नामक तीन प्रकारों में किसने बाँटा है-
(1) टर्मन ने (2) स्टर्न ने
(3) थॉर्नडाइक ने (4) स्पीयरमैन ने

86. बुद्धि के द्वि-तत्त्व सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति की बुद्धि का विशिष्ट तत्त्व-
(1) जन्मजात होता है।
(2) अर्जित किया जा सकता है।
(3) सभी बुद्धिमान व्यक्तियों में समान रूप से पाया जाता है।
(4) इनमें से कोई नहीं।

87. बुद्धि के त्रि-तत्त्व सिद्धान्त में स्पीयरमैन ने तीसरा तत्त्व (जो इन्होंने अपने द्वि-तत्त्व सिद्धान्त में नहीं बताया था) जोड़ा-
(1) सामान्य तत्त्व (2) विशिष्ट तत्त्व
(3) समूह तत्त्व (4) एकल तत्त्व

88. बालक प्रसंगबोध परीक्षण 3 वर्ष से 10 वर्ष की आयु के बालकों के लिए बनाया गया है। इस परीक्षण में कार्ड में प्रतिस्थापित किया गया है-
(1) सजीव वस्तुओं के स्थान पर निर्जीव वस्तुओं को
(2) लोगों के स्थान पर जानवरों को
(3) पुरूषों के स्थान पर महिलाओं को
(4) वयस्कों के स्थान पर बालकों को

89. एक बालक जिसकी बुद्धिलब्धि 105 है, उसे वर्गीकृत किया जाएगा-
(1) श्रेष्ठ बुद्धि
(2) सामान्य से अधिक बुद्धि
(3) सामान्य बुद्धि
(4) मन्द बुद्धि

72.	73.	74.	75.	76.	77.	78.	79.	80.	81.	82.	83.	84.	85.	86.	87.	88.	89.				
(3)	(2)	(4)	(2)	(2)	(2)	(2)	(1)	(4)	(1)	(3)	(3)	(3)	(3)	(2)	(3)	(2)	(3)				

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

90. हॉवर्ड गार्डनर द्वारा निम्न में से एक को छोड़कर बाकी सभी बुद्धि के प्रकार बताए गए हैं–
(1) भाषा (2) सृजनात्मकता
(3) अन्तःवैंयक्तिक कौशल (4) बाह्य वैयक्तिक कौशल

91. बुद्धि–लब्धांक सामान्यतः ..... रूप से शैक्षणिक निष्पादन से सम्बन्धित होते हैं।
(1) कम से कम (2) पूर्ण
(3) उच्च (4) मध्यम

92. 60 मिनट में आपको 60 प्रश्नों के उत्तर देने हैं। आप कितने अधिक से अधिक प्रश्नों के उत्तर दे पाए, ये बुद्धि परीक्षण हैं–
(1) शक्ति बुद्धि परीक्षण (2) गति बुद्धि परीक्षण
(3) शाब्दिक बुद्धि परीक्षण (4) इनमें से कोई नहीं

93. एक बालक यन्त्रों व मशीनों में रूचि लेता है। अपनी खिलौना कार को खोलकर देखता है। उसके अन्दर बुद्धि का कौनसा प्रकार विद्यमान है?
(1) मूर्त बुद्धि (2) सामाजिक बुद्धि
(3) अमूर्त बुद्धि (4) इनमें से कोई नहीं

94. वर्तमान समय में बुद्धि का मापन क्यों आवश्यक है?
(1) पिछड़े बालकों के चुनाव हेतु
(2) भावी सफलता के ज्ञान हेतु
(3) बालकों के वर्गीकरण हेतु
(4) उपरोक्त सभी

95. I.Q. का सूत्र है–
(1) $\frac{\text{M.A.}}{\text{C.A.}} \times 100$ (2) $\frac{\text{C.A.}}{\text{M.A.}} \times 100$
(3) $\frac{\text{E.A.}}{\text{C.A.}} \times 100$ (4) इनमें से कोई नहीं

96. कक्षा में एक बालक अपने साथियों की अपेक्षा हर पाठ को सबसे तीव्रता से पढ़ता व समझता है। समस्या समाधान अद्वितीय तरीके से करता है इसकी सम्भावित I.Q. होगी–
(1) 140 से अधिक
(2) 81 से 90
(3) 91 से 110
(4) इनमें से कोई नहीं

97. कक्षा में सामान्य उपलब्धि वाला बालक जिसकी बुद्धिलब्धि औसत है, उसका I.Q. है–
(1) 91 से 110 (2) 71 से 80
(3) 111 से 120 (4) 71 से कम

98. जहाँ प्रश्नों का स्वरूप शब्दों में हो, वह बुद्धि परीक्षण इस प्रकार का होगा–
(1) शाब्दिक बुद्धि परीक्षण (2) अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण
(3) गति बुद्धि परीक्षण (4) इनमें से कोई नहीं

99. शक्ति बुद्धि परीक्षण की विशेषता है–
(1) प्रश्नों का कठिनाई स्तर सामान्य
(2) प्रश्नों का कठिनाई स्तर बढ़ता जाता है
(3) बुद्धि का सम्बन्ध प्रश्नों को हल करने की गति है
(4) उपरोक्त सभी

100. **आर्मी अल्फा परीक्षण** एक परीक्षण है–
(1) शाब्दिक सामूहिक (2) अशाब्दिक व्यक्तिगत
(3) शाब्दिक व्यक्तिगत (4) अशाब्दिक सामूहिक

101. शाब्दिक वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण है–
(1) शब्दों द्वारा एक व्यक्ति की परीक्षा
(2) चित्रों द्वारा एक व्यक्ति की परीक्षा
(3) शब्दों द्वारा समूह की परीक्षा
(4) उपरोक्त सभी

102. शाब्दिक बुद्धि परीक्षण की विशेषता नहीं–
(1) पद या प्रश्नों के भाषा का प्रयोग
(2) उत्तर भाषा के माध्यम से
(3) पढ़ा–लिखा होना या भाषा का ज्ञान आवश्यक नहीं
(4) इनमें से कोई नही

103. सामूहिक बुद्धि परीक्षण की विशेषता है–
(1) एक समय में अधिक लोगों की परीक्षा
(2) बड़े बालकों व वयस्कों के लिए उपयुक्त
(3) कम समय, कम धन की आवश्यकता
(4) उपरोक्त सभी

104. बुद्धि एक मानसिक योग्यता है–
1 सीखने एवं समझने की 2 समस्या समाधान की
3 चिन्तन की 4 वातावरण में समायोजन की
कूट–
(1) केवल 1 सही है। (2) केवल 2 सही है।
(3) 1 और 3 सही हैं। (4) 1 से 4 सभी सही हैं।

105. गिलफोर्ड ने बुद्धि का कौनसा सिद्धान्त प्रस्तुत किया है?
(1) विषय वस्तु प्रक्रियाएँ सिद्धान्त
(2) त्रिविमीय सिद्धान्त
(3) स्ट्रक्चर ऑफ इन्टलैक्ट
(4) उपर्युक्त सभी

90.	91.	92.	93.	94.	95.	96.	97.	98.	99.	100.	101.	102.	103.	104.	105.						
(2)	(3)	(2)	(1)	(2)	(1)	(1)	(1)	(1)	(2)	(1)	(1)	(3)	(4)	(3)	(4)						

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

106. शिक्षित व्यक्तियों के समूह का बुद्धि परीक्षण करने के लिये निम्न में से किस परीक्षण का प्रयोग किया जाता है?
(1) शाब्दिक सामूहिक बुद्धि परीक्षण का
(2) शाब्दिक व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण का
(3) अशाब्दिक सामूहिक बुद्धि परीक्षण का
(4) अशाब्दिक व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण का

107. बुद्धि का फॉर्म बोर्ड परीक्षण (Form Board Test of Intelligence) का निर्माण निम्न में से किसने किया?
(1) मैरिल-पामर ने (2) सेगुइन एवं गोडार्ड ने
(3) वैश्लर-वैलव्यू ने (4) बिने-साइमन ने

108. कैटल द्वारा निर्मित बुद्धि परीक्षण का नाम है-
(1) कैटिल सिक्सटीन पी. एफ.
(2) कैटिल कल्चर फ्री टेस्ट ऑफ इन्टेलीजेन्स
(3) कैटिल कल्चर फेअर टेस्ट ऑफ इन्टेलीजेन्स
(4) कैटिल कल्चर एम्बिडेड टेस्ट

109. भाषायुक्त बुद्धि परीक्षणों को क्या कहते हैं?
(1) निष्पादन बुद्धि परीक्षण
(2) शाब्दिक बुद्धि परीक्षण
(3) अशाब्दिक परीक्षण
(4) प्रक्षेपी परीक्षण

110. निम्न में से शैक्षिक लब्धि (Achievement Quotient) का सूत्र कौनसा है?
(1) मानसिक आयु/शैक्षिक आयु × 100
(2) शैक्षिक आयु/वास्तविक आयु × 100
(3) शैक्षिक आयु/मानसिक आयु × 100
(4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

111. बुद्धि की अवधारणा को समझने हेतु गिलफोर्ड ने किस अवधारणा का प्रयोग किया था?
(1) कन्टेन्ट (2) प्रोडक्ट
(3) आर ऑपरेशन (4) ये सभी

112. बुद्धि परीक्षण की उपयोगिता है-
(1) समस्याग्रस्त बालकों के सुधार में
(2) सर्वोत्तम बालक के चुनाव में
(3) 1 और 2 दोनों में
(4) इनमें से कोई नहीं

113. बिने साइमन की बुद्धि परीक्षण विधि कितने वर्ष के बालकों के लिए थी?
(1) 5 से 15 वर्ष (2) 3 से 15 वर्ष
(3) 2 से 12 वर्ष (4) 4 से 11 वर्ष

114. **बुद्धि वही है, जिसका बुद्धि-परीक्षण मापन करते हैं**। यह कथन किस मनोवैज्ञानिक का है?
(1) बर्ट का (2) टर्मन का
(3) एबिंगहॉस का (4) फ्रीमैन का

115. 1908 के बिने-साइमन बुद्धि परीक्षण से किस आयु वर्ग के बालकों की बुद्धि की परीक्षा की गई?
(1) 1 से 16 वर्ष
(2) 3 से 13 वर्ष
(3) 2 से 10 वर्ष
(4) 1 से 20 वर्ष

116. टर्मन ने बुद्धि को क्या माना है?
(1) समायोजन की योग्यता
(2) अमूर्त चिन्तन की योग्यता
(3) सीखने की योग्यता
(4) उपर्युक्त में कोई नहीं

117. ऐसे बुद्धि-परीक्षण, जिनमें लकड़ी के गुटकों इत्यादि का प्रयोग करके बुद्धि परीक्षण किया जाता है, उसे किस नाम से जाना जाता है?
(1) प्रक्षेपी परीक्षण
(2) निष्पादन परीक्षण
(3) चित्र परीक्षण
(4) उपर्युक्त सभी

118. विद्यालयों में छात्रों की बुद्धि ज्ञात करने का प्रमुख उद्देश्य होता है-
(1) माता-पिता को उनके बालकों की सीमाओं का ज्ञान प्रदान करना
(2) छात्रों के अनुकूल प्रत्याशाएँ करना
(3) छात्रों को निदानात्मक परामर्श प्रदान करना
(4) छात्रों के महत्त्वाकांक्षा स्तर को बढ़ाना

119. एलेक्जेण्डर का निष्पादन बुद्धि परीक्षण किस नाम से जाना जाता है?
(1) फॉर्म बोर्ड परीक्षण
(2) ब्लॉक डिजाइन परीक्षण
(3) प्रोग्रेसिव मैट्रिसेज
(4) पास एलाँग परीक्षण

120. **ड्रा ए मैन परीक्षण** मूलतः किसके द्वारा निर्मित है?
(1) एलेक्जेण्डर द्वारा (2) कोह द्वारा
(3) गुडएनफ द्वारा (4) भाटिया द्वारा

121. निम्नांकित में से किस मनोवैज्ञानिक ने कारक-विश्लेषण के आधार पर बुद्धि-सिद्धान्त का विवेचन किया है?
(1) बिने ने (2) थर्स्टन ने
(3) स्पीयरमैन ने (4) पियाजे ने

106.	107.	108.	109.	110.	111.	112.	113.	114.	115.	116.	117.	118.	119.	120.	121.						
(1)	(2)	(3)	(2)	(2)	(4)	(3)	(2)	(4)	(2)	(2)	(2)	(2)	(4)	(3)	(2)						

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

122. एक शिक्षक के लिए छात्र की बुद्धि लब्धि की उपयोगिता है–
(1) छात्र की उन्नति करने में
(2) छात्र से शैक्षिक प्रत्याशा का मूल्यांकन करने में
(3) छात्रों की ग्रेड प्रतिस्थापन में
(4) पाठ्यक्रम के प्रकरणों को सुनिश्चित करने में

123. मानसिक आयु माप होती है–
(1) मानसिक परिपक्वता की
(2) मानसिक वृद्धि की दर की
(3) जन्मजात मानसिक शक्ति की
(4) उसकी आयु वर्ग के समकक्ष अन्य बालकों के बौद्धिक स्तर के समान

124. बुद्धि लब्धि एक सूचकांक (इन्डेक्स) है–
(1) मानसिक विकास का
(2) मानसिक विकास की दर का
(3) मानसिक योग्यता के अन्तिम स्तर का
(4) मानसिक परिपक्वता का

125. व्यक्ति की बुद्धिमत्ता बुद्धि के किस प्रकार पर निर्भर है?
(1) सामान्य बुद्धि पर
(2) विशेष बुद्धि पर
(3) उपरोक्त दोनों
(4) कोई नहीं

126. बिने साइमन बुद्धि परीक्षणों की गणना निम्नलिखित में से किन बुद्धि परीक्षणों में की जाती हैं?
(1) वाचिक व्यक्ति बुद्धि परीक्षण
(2) अवाचिक व्यक्ति बुद्धि परीक्षण
(3) वाचिक समूह बुद्धि परीक्षण
(4) अवाचिक समूह बुद्धि परीक्षण

127. बिना पढ़े–लिखे लोगों के सामूहिक परीक्षण के लिये निम्नलिखित में से कौनसे परीक्षण अपनाये जाते हैं?
(1) वाचिक व्यक्ति बुद्धि परीक्षण
(2) अवाचिक व्यक्ति बुद्धि परीक्षण
(3) वाचिक समूह बुद्धि परीक्षण
(4) अवाचिक समूह बुद्धि परीक्षण

128. पढ़े–लिखे लोगों के सामूहिक परीक्षण के लिये निम्नलिखित में से कौनसे परीक्षण अपनाये जाते हैं?
(1) वाचित व्यक्ति बुद्धि परीक्षण
(2) अवाचिक व्यक्ति बुद्धि परीक्षण
(3) वाचिक समूह बुद्धि परीक्षण
(4) अवाचिक समूह बुद्धि परीक्षण

129. प्रशासन के आधार पर बुद्धि परीक्षणों के प्रकार हैं–
(1) 2 (2) 3
(3) 5 (4) इनमें से कोई नहीं

130. बुद्धिमता किस आयु तक बढ़ती है?
(1) 18 वर्ष तक (2) 20 वर्ष तक
(3) 25 वर्ष तक (4) जीवन भर

131. I.Q. पर प्राप्त अंक उदाहरण है–
(1) आनुपातिक पैमाना (2) नोमिनल पैमाना
(3) क्रमबद्ध पैमाना (4) आन्तरिक पैमाना

132. **सामाजिक बुद्धिमता** की अवधारणा के प्रतिपादक हैं–
(1) थॉर्नडाइक (2) बिने
(3) कैटिल (4) स्पीयरमैन

133. प्रथम वयस्क बुद्धि परीक्षण प्रतिपादित किया था–
(1) बिने ने (2) कैटिल ने
(3) वैश्लर ने (4) इनमें से कोई नहीं

134. प्रथम सामूहिक बुद्धि परीक्षण कहलाता है–
(1) आर्मी अल्फा (2) बिने साइमन परीक्षण
(3) वैश्लर परीक्षण (4) कैटिल परीक्षण

135. निम्न में से कौनसा निष्पादन परीक्षण नहीं है?
(1) आर्मी अल्फा (2) आर्मी बीटा
(3) कोहज ब्लॉक परीक्षण (4) सभी

136. बिने–साइमन परीक्षण का विकास किया गया था–
(1) I.Q. मापन हेतु
(2) बुद्धिमता मापन हेतु
(3) उपसामान्य बुद्धि मापन हेतु
(4) ये सभी

137. इनमें से कौनसा व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण है?
(1) बिने–साइमन (2) स्टैनफोर्ड बिने
(3) वैश्लर (4) ये सभी

138. अधिकतर मनोवैज्ञानिकों के मतानुसार बुद्धिमता होती है–
(1) जन्मजात (2) सीखने पर आधारित
(3) 1 व 2 दोनों (4) पर्यावरणीय

139. भारतीय परिस्थितियों में बिने परीक्षण का पहला प्रमाणीकरण निम्नलिखित में से किसने किया?
(1) चन्द्र मोहन भाटिया ने (2) सी. हरबर्ट राइस ने
(3) जे. मनरी ने (4) डॉ. जलोटा ने

122.	123.	124.	125.	126.	127.	128.	129.	130.	131.	132.	133.	134.	135.	136.	137.	138.	139.				
(1)	(1)	(2)	(1)	(1)	(4)	(3)	(1)	(1)	(4)	(1)	(3)	(1)	(1)	(3)	(4)	(3)	(2)				

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

140. गिलफोर्ड ने अपने बुद्धि सिद्धान्त में कुल कारक बताए हैं–
(1) 200 (2) 300
(3) 150 (4) 100

141. **बुद्धि इन चार शब्दों में निहित है– ज्ञान, अधिकार, निर्देश और आलोचना।** यह परिभाषा दी है–
(1) वुडरो ने (2) बिने ने
(3) टर्मन ने (4) स्टर्न ने

142. **शीघ्र अधिगम अथवा अधिगम धारणा की योग्यता ही बुद्धि है।** यह परिभाषा प्रस्तुत की है–
(1) बंकिंघम ने (2) हैबर व फ्रायड ने
(3) गैरेट ने (4) रैक्स ने

143. बुद्धि के सन्दर्भ में असत्य कथन है–
(1) बुद्धि समस्या समाधान की योग्यता है।
(2) बुद्धि अनेक कारकों का योग है।
(3) बुद्धि पूर्णतः अर्जित होती है।
(4) बुद्धि इनके इकाइयों का समूह है।

144. मैकेनिक, इन्जीनियर, कारीगर, औद्योगिक कार्यकर्ताओं में किस प्रकार की बुद्धि पायी जाती है?
(1) मूर्त (2) जैविक
(3) अमूर्त (4) सामाजिक

145. अमूर्त बुद्धि का सम्बन्ध होता है–
(1) सामाजिकता से (2) पुस्तकीय ज्ञान से
(3) यान्त्रिकता से (4) उपर्युक्त सभी से

146. एक दार्शनिक में किस प्रकार की बुद्धि पाई जाती है?
(1) सामाजिक (2) अमूर्त
(3) मूर्त (4) उपर्युक्त सभी

147. कूटनीतिज्ञ, अच्छे मन्त्री, व्यावसायी व सामाजिक कार्यकर्ताओं में निम्न बुद्धि पाई जाती है–
(1) अमूर्त (2) मूर्त
(3) सामाजिक (4) उपर्युक्त सभी

148. शाब्दिक व गणितीय संकेतों को समझने वाले व्यक्ति की बुद्धि थॉर्नडाइक के अनुसार है–
(1) राजनीतिक
(2) अमूर्त
(3) मूर्त
(4) सामाजिक

149. बुद्धि को कारकों का योग बताने वाले सिद्धान्तों को निम्न श्रेणी में विभक्त किया गया है–
(1) तत्त्व सिद्धान्त (2) प्रक्रिया सिद्धान्त
(3) कारकीय सिद्धान्त (4) उपर्युक्त सभी

150. बुद्धि को समस्या समाधान की प्रक्रिया बताने वाले सिद्धान्तों को क्या कहा जाता है?
(1) तत्त्व सिद्धान्त (2) प्रक्रिया सिद्धान्त
(3) प्रक्रिया उन्मुखीय सिद्धान्त (4) उपर्युक्त सभी

151. **मस्तिष्क में कुल 30 शक्तियाँ हैं, जिनमें से एक बुद्धि भी है।** यह किस मनोवैज्ञानिक ने कहा है?
(1) स्पीयरमैन ने (2) कैटल ने
(3) रीड ने (4) स्टर्न ने

152. किस सिद्धान्त को **राजतन्त्रीय सिद्धान्त** कहा जाता है?
(1) स्पीयरमैन का सामान्य कारक सिद्धान्त
(2) बिने का एक कारक सिद्धान्त
(3) स्पीयरमैन का विशिष्ट कारक सिद्धान्त
(4) स्पीयरमैन का समूह कारक सिद्धान्त

153. निम्न में से कौनसी विशेषता बुद्धि की परिभाषाओं से सम्बन्धित नहीं है–
(1) बुद्धि समस्या समाधान की योग्यता है।
(2) बुद्धि वातावरण के साथ समायोजन की योग्यता है।
(3) बुद्धि मूर्त चिन्तन करने की क्षमता है।
(4) बुद्धि सीखने की क्षमता है।

154. राम गणितीय समस्याओं को हल करने में निपुण है, राम में बुद्धि का कौनसा प्रकार लक्षित होता है?
(1) अर्मूत (2) मूर्त
(3) वंशगत बुद्धि (4) सामाजिक

155. **बुद्धि बिजली के समान है, जिसे परिभाषित करने की अपेक्षा मापना सरल है।** यह कथन किसका है–
(1) जेन्सन का (2) कैटल का
(3) डाईक का (4) फिलन्न का

156. एक सफल पेन्टर में किस प्रकार की बुद्धि पाई जाती है?
(1) सामाजिक (2) ठोस
(3) तरल (4) अमूर्त

157. बुद्धि को तरल बुद्धि और ठोस बुद्धि में किसने विभक्त किया है?
(1) कैटल ने (2) स्पीयरमैन ने
(3) गिलफोर्ड ने (4) गार्डनर ने

140.	141.	142.	143.	144.	145.	146.	147.	148.	149.	150.	151.	152.	153.	154.	155.	156.	157.				
(3)	(2)	(2)	(3)	(1)	(2)	(2)	(3)	(2)	(3)	(3)	(3)	(1)	(3)	(1)	(1)	(4)	(1)				

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

158. कैटल के अनुसार तरल व ठोस बुद्धि का विकास क्रमशः होता है–
(1) किशोरावस्था व बाल्यावस्था में (2) बाल्यावस्था व किशोरावस्था में
(3) किशोरावस्था व वयस्कावस्था में (4) प्रौढ़ावस्था व किशोरावस्था में

159. ठोस बुद्धि से क्या तात्पर्य है?
(1) वंशानुक्रम का
(2) व्यक्ति के अर्जित व तथ्यात्मक ज्ञान
(3) व्यक्ति की तर्कशक्ति
(4) उपर्युक्त सभी

160. किस भारतीय मनोवैज्ञानिक ने कोह ब्लॉक बिल्डिंग, पास–एलांग, आकृति चित्रण, चित्र परीक्षण को सम्मिलित करके निष्पादन बुद्धि परीक्षण माला तैयार की है?
(1) जोशी ने (2) भाटिया ने
(3) ओझा ने (4) उपर्युक्त सभी

161. मानसिक परीक्षण शब्द का प्रथम प्रयोग किया–
(1) स्टर्न ने (2) बिने ने
(3) टर्मन ने (4) कैटल ने

162. प्रथम सामूहिक भाषात्मक परीक्षण का नाम है–
(1) सैनिक सामान्य वर्गीकरण
(2) आर्मी बीटा परीक्षण
(3) आर्मी अल्फा परीक्षण
(4) उपर्युक्त सभी

163. प्रथम सामूहिक भाषा रहित परीक्षण था–
(1) आर्मी बीटा परीक्षण (2) आर्मी अल्फा परीक्षण
(3) सैनिक सामान्य वर्गीकरण (4) उपर्युक्त सभी

164. शिकागो भाषा रहित परीक्षण निर्मित किया गया है–
(1) 14 वर्ष के बच्चों हेतु
(2) 10–12 वर्ष के बच्चों हेतु
(3) 3–11 वर्ष के बच्चों हेतु
(4) 12–13 वर्ष के बच्चों हेतु

165. प्रथम संस्कृति मुक्त बुद्धि परीक्षण का निर्माण किया–
(1) साईमन ने (2) बिने ने
(3) कैटल ने (4) रेविन ने

166. भारतीय मनोवैज्ञानिक डॉ. एस. सी. जोशी ने प्रतिपादित किया–
(1) मानसिक योग्यता परीक्षण–1960
(2) वाचिक बुद्धि परीक्षण–1971
(3) सामूहिक बुद्धि परीक्षण–1962
(4) सामूहिक मानसिक योग्यता–1961

167. डॉ. प्रयाग मेहता द्वारा निर्मित किया गया–
(1) वाचिक बुद्धि परीक्षण–1971
(2) सामूहिक बुद्धि परीक्षण–1962
(3) मानसिक योग्यता परीक्षण–1960
(4) सामूहिक मानसिक योग्यता–1961

168. डॉ. टण्डन द्वारा निर्मित परीक्षण है–
(1) सामूहिक मानसिक योग्यता–1961
(2) मानसिक योग्यता परीक्षण–1960
(3) वाचिक बुद्धि परीक्षण–1971
(4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

169. डॉ. जलोटा परीक्षण का नाम है–
(1) मानसिक योग्यता सामूहिक परीक्षण
(2) वाचिक बुद्धि परीक्षण
(3) 1 व 2 दोनों
(4) 1 व 2 दोनों नहीं

170. मानसिक लब्धि शब्द का प्रयोग 1912 में किया था–
(1) टर्मन ने (2) गाल्टन ने
(3) स्टर्न ने (4) बिने ने

171. बुद्धि परीक्षण उपयोगी है–
(1) निदानात्मक शिक्षण हेतु
(2) निर्देशन हेतु
(3) परामर्श हेतु
(4) उपर्युक्त सभी

172. निम्न में से कौनसा कथन बच्चे के विकास में परिवेश की भूमिका का समर्थन करता है?
(1) कुछ शिक्षार्थी सूचनाओं का जल्दी प्रक्रमण करते हैं, जबकि उसी कक्षा के अन्य विद्यार्थी ऐसा नहीं कर पाते।
(2) पिछली कुछ दशाब्दियों में बुद्धि–लब्धांक परीक्षा में शिक्षार्थियों के औसत प्रदर्शन में लगातार वृद्धि हुई है।
(3) एकसमान जुड़वाँ बच्चे जिनका लालन–पालन भिन्न घरों में हुआ है, उनकी बुद्धि–लब्धि 0.75 के समान उच्च है।
(4) शारीरिक रूप से स्वस्थ बच्चे अकसर नैतिक रूप से अच्छे पाए जाते हैं।

173. बहुबुद्धि सिद्धान्त निम्नलिखित निहितार्थ देता है, सिवाय–
(1) संवेगात्मक बुद्धि, बुद्धि–लब्धि से सम्बन्धित नहीं है।
(2) बुद्धि प्रक्रमण संक्रियाओं का एक विशिष्ट समुच्चय है, जिसका उपयोग एक व्यक्ति द्वारा समस्या समाधान के लिए किया जाता है।
(3) विषयों को विभिन्न तरीकों से प्रस्तुत किया जा सकता है।
(4) विविध तरीकों से सीखने का आकलन किया जा सकता है।

158.	159.	160.	161.	162.	163.	164.	165.	166.	167.	168.	169.	170.	171.	172.	173.						
(3)	(2)	(2)	(4)	(3)	(1)	(3)	(3)	(1)	(2)	(1)	(1)	(3)	(4)	(2)	(2)						

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

174. दो जुड़वाँ भाइयों मे से एक को सामाजिक-आर्थिक रूप से धनाढ्य परिवार द्वारा गोद लिया जाता है और दूसरे को एक निर्धन परिवार द्वारा। एक वर्ष के बाद उनके बुद्धि-लब्धांक के बारे में निम्नलिखित में से क्या अवलोकित होने की सर्वाधिक सम्भावना है?
(1) धनी सामाजिक-आर्थिक परिवार वाले लड़के की अपेक्षा निर्धन परिवार वाला लड़का अधिक अंक प्राप्त करेगा।
(2) सामाजिक-आर्थिक स्तर बुद्धि-लब्धांक को प्रभावित नहीं करता है।
(3) निर्धन परिवार वाले लड़के की अपेक्षा धनी सामाजिक-आर्थिक परिवार वाला लड़का अधिक अंक प्राप्त करेगा।
(4) दोनों समान रूप से अंक प्राप्त करेंगे।

175. आपको लगता है कि आपकी कक्षा में कुछ बच्चे बहुत तेज गति से सीख रहे हैं और कुछ बहुत धीमी गति से। इस परिस्थिति में आप क्या करेंगे?
(1) तेज गति से सीखने वाले बच्चों को आगे बढ़ने देंगे।
(2) धीमी गति से सीखने वाले बच्चों पर कोई ध्यान नहीं देंगे।
(3) इस बात पर कोई ध्यान नहीं देंगे।
(4) तेज गति से सीखने वाले बच्चों की सहायता धीमी गति से सीखने वाले बच्चों को सीखाने हेतु लेंगे।

176. निम्न में से कौनसा बुद्धिमान बच्चे का लक्षण नहीं है?
(1) वह जो लम्बे निबन्धों को बहुत जल्दी रटने की क्षमता रखता है।
(2) वह जो प्रवाहपूर्ण एवं उचित तरीके से सम्प्रेषण करने की क्षमता रखता है।
(3) वह जो अमूर्त रूप से सोचता है।
(4) वह जो नये परिवेश में स्वयं को समायोजित कर सकता है।

177. निम्नलिखित मे से कौनसी बुद्धि की परिभाषा नहीं है?
(1) बुद्धि, कार्य करने की एक विधि है।
(2) बुद्धि, ज्ञान अर्जन करने की क्षमता है।
(3) जीवन की अपेक्षाकृत नवीन परिस्थितियों से अपना सामंजस्य करने की व्यक्ति की योग्यता ही बुद्धि है।
(4) राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक शक्ति प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त उक्ति बुद्धि है।

178. आजकल बुद्धि-परीक्षण का उपयोग शिक्षा जगत् में हो रहा है। बुद्धि-परीक्षण का निम्नलिखित में से कौनसा उपयोग बालक के विकास के दृष्टिकोण से सही नहीं है?
(1) शैक्षिक मार्गदर्शन
(2) बुद्धि-परीक्षण के परिणाम के आधार पर अधिक बुद्धि वाले बालकों पर अन्य बालकों की तुलना में अधिक ध्यान देना
(3) अच्छी अधिगम प्रणाली के प्रयोग के लिए बुद्धि-परीक्षण करना
(4) बुद्धि-परीक्षण के आधार पर छात्रों का वर्गीकरण करना

179. एक ही कक्षा-शिक्षण का निष्पादन भिन्न-भिन्न होता है। निम्नलिखित में से कौनसा कारण इसके लिए सर्वाधिक उत्तरदायी हो सकता है?
(1) छात्रों की बुद्धि में अन्तर
(2) छात्रों के अभिप्रेरण में अन्तर
(3) छात्रों की रूचि में अन्तर
(4) छात्रों की शारीरिक शक्ति में अन्तर

180. निम्नलिखित में से किस कथन से बुद्धि एवं बुद्धि-परीक्षण के महत्त्व का पता चलता है?
1. व्यावसायिक मार्गदर्शन में बुद्धि-परीक्षण की भूमिका अहम होती है।
2. बुद्धि-परीक्षणों द्वारा प्रत्येक छात्र की सही उन्नति के मार्ग को प्रशस्त किया जाता है।
3. अनुसन्धान के विभिन्न घटकों का चयन करना होता है, तो बुद्धि भी एक आधार होता है, ताकि कम से कम त्रुटि हो।
(1) 1 एवं 2 (2) केवल 2
(3) 2 एवं 3 (4) ये सभी

181. आजकल बुद्धि-परीक्षण का उपयोग शिक्षा जगत् में व्यापक रूप से हो रहा है। निम्नलिखित में से कौनसा शिक्षा जगत् में बुद्धि-परीक्षण के सदुपयोग का एक उदाहरण है?
1. बुद्धि-परीक्षण के आधार पर छात्रवृत्ति सुनिश्चित करना
2. बुद्धि-परीक्षण के आधार पर छात्रों के लिए अधिगम प्रणाली का चयन करना
3. बुद्धि-परीक्षण के आधार पर छात्रों को परामर्श देना
(1) केवल 1
(2) 1 एवं 2
(3) 2 एवं 3
(4) ये सभी

182. बुद्धि के बहुकारक सिद्धान्त के मुख्य समर्थक थॉर्नडाइक थे। निम्नलिखित में से कौनसा कथन इस सिद्धान्त के अनुरूप है?
(1) बुद्धि कई तत्त्वों का समूह होती है और प्रत्येक तत्त्व में कोई सूक्ष्म योग्यता निहित होती है।
(2) कुछ मानसिक क्रियाओं में एक प्रमुख तत्त्व सामान्य रूप से विद्यमान होता है, जो उन क्रियाओं के कई ग्रुप होते हैं, उनमें अपना एक प्रमुख तत्त्व होता है।
(3) व्यक्ति का बौद्धिक व्यवहार अनेक स्वतन्त्र योग्यताओं पर निर्भर करता है, किन्तु इन स्वतन्त्र योग्यताओं का क्षेत्र सीमित होता है।
(4) सभी प्रकार के मानसिक कार्यों में दो प्रकार की मानसिक योग्यताओं की आवश्यकता होती है प्रथम सामान्य मानसिक योग्यता, द्वितीय विशिष्ट मानसिक योग्यता।

183. बुद्धि का द्वि-कारक सिद्धान्त क्या है?
(1) बुद्धि कई तत्त्वों का समूह होती है, और प्रत्येक तत्त्व में कोई सूक्ष्म योग्यता निहित होती है।
(2) कुछ मानसिक क्रियाओं में एक प्रमुख तत्त्व सामान्य रूप से विद्यमान होता है, जो उन क्रियाओं के कई ग्रुप होते हैं, उनमें अपना एक प्रमुख

174.	175.	176.	177.	178.	179.	180.	181.	182.	183.												
(2)	(4)	(1)	(4)	(2)	(1)	(4)	(4)	(1)	(4)												

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

तत्त्व होता है।

(3) व्यक्ति का बौद्धिक व्यवहार अनेक स्वतन्त्र योग्यताओं पर निर्भर करता है, किन्तु इन स्वतन्त्र योग्यताओं का क्षेत्र सीमित होता है।

(4) सभी प्रकार के मानसिक कार्यों में दो प्रकार की मानसिक योग्यताओं की आवश्यकता होती है– प्रथम सामान्य मानसिक योग्यता, द्वितीय विशिष्ट मानसिक योग्यता।

184. एक अच्छे शिक्षक के रूप में व्यक्ति को बुद्धि–परीक्षण के परिणाम जानने के बाद निम्नलिखित में से किस व्यवहार से बचना चाहिए?

(1) परिणाम के आधार पर सुधार के लिए परामर्श देना

(2) परिणाम के आधार पर कम बुद्धि वाले बच्चों का चयन कर उन्हें कठिन कार्य करने से रोकना

(3) बुद्धि–परीक्षण का उपयोग अनुसन्धान में बच्चों का व्यापक सहयोग लेने के लिए करना

(4) शिक्षक को बुद्धि–परीक्षण के परिणाम के आधार पर कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए।

185. आपको अपनी कक्षा में दो मन्दबुद्धि बच्चों को बैठाने के लिए बोला गया है आप–

(1) उन्हें अपने विद्यार्थी के रूप में ग्रहण करने से इन्कार करेंगे।

(2) प्रधानाध्यापक को उन्हें किसी और कक्षा जो कि मन्दबुद्धि बालकों के लिए विशेष रूप से चिह्नित है, में बैठाने के लिए बोलेंगे।

(3) ऐसे विद्यार्थियों को सिखाने की तकनीक सीखेंगे।

(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

****

प्रगण्य प्रकाशन द्वारा CTET एवं प्रत्येक राज्य के TET (UPTET, MP Samvida, BTET, UTET, JTET, HTET, CGTET, HPTET) के लिए मॉडल पेपर की फ्री PDF प्रकाशित की जाती है। मॉडल पेपर की फ्री PDF प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित Whatsapp No. अपने कॉलेज के क्लास ग्रुप या कोचिंग के क्लास ग्रुप या अन्य स्टडी ग्रुप में जोंडे। आपके ग्रुप में मॉडल पेपर भेज दिए जाएँगें।

UPTET - 95301 43210
MP Samvida - 95302 43210
BTET - 95302 43210
UTET - 72209 29294
JTET - 72209 29239
HTET - 72209 29266
CGTET - 72209 28969
HPTET - 72209 28535

अगर आप B.Ed, D.Ed, BSTC या शिक्षण अध्यापन के क्षेत्र में पढ़ाई कर रहे हैं तो आपसे निवेदन है कि निम्नलिखित Whatsapp No. अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में जोड़ें। अगर आपका व्हाट्सएप ग्रुप नहीं बना हुआ है तो कृपया कम से कम 20 विद्यार्थी मिलकर व्हाट्सएप ग्रुप बना लें।

UPTET - 95301 43210
MP Samvida - 95302 43210
BTET - 95302 43210
UTET - 72209 29294
JTET - 72209 29239
HTET - 72209 29266
CGTET - 72209 28969
HPTET - 72209 28535

आपके क्लास के व्हाट्सएप ग्रुप में शिक्षा संबंधी सभी प्रतियोगी परीक्षा के पेपर्स, मॉडल पेपर्स एवं अन्य अध्ययन सामग्री भेजी जाएगी। आपका शुरू से मार्गदर्शन किया जाएगा, ताकि आप प्रतियोगी परीक्षा में अतिशीघ्र सफलता प्राप्त कर सकें।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

184.	185.																				
(2)	(3)																				

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

अध्याय 12

विशिष्ट बालक

12.1 प्रस्तावना

प्रायः प्रत्येक समाज, समुदाय या विद्यालय में कुछ ऐसे बालक होते हैं, जो सामान्य बालकों की अपेक्षा श्रेष्ठ या हीन होते हैं। बालकों के शारीरिक, मानसिक तथा अन्य गुणों में भिन्नता पाई जाती है क्योंकि उनकी आनुवंशिकता तथा वातावरण एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। समूह के अधिकांश बालकों के गुण समूह प्रतिमान के अनुरूप होते हैं। ऐसे बालकों को सामान्य बालक कहते हैं तथा जिन बालकों में समूह प्रतिमानों की अपेक्षा कम या अधिक गुण पाये जाते हैं उन्हें विशिष्ट बालक कहते हैं। ये गुण उनकी बुद्धि,शारीरिक क्षमता, समायोजन, सामाजिक व्यवहार, सवेंग आदि किसी भी एक या अधिक क्षेत्रों से सम्बन्धित हो सकते हैं। ऐसे बालकों में अपनी विलक्षणताओं या विशेषताओं के कारण समायोजन सम्बन्धी कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं। अतः इनके पालन-पोषण और शिक्षा का विशेष प्रबन्ध करना चाहिए।

12.2 विशिष्ट बालक का अर्थ एवं संकल्पना

मनौवैज्ञानिकों एवं शिक्षाविदों द्वारा विशिष्ट बालकों को गुणात्मक एवं परिमाणात्मक रूपों में समझने का प्रयास किया गया है। इनके अनुसार विशिष्ट बालकों में सोचने, समझने, सीखने, समायोजन करने आदि की योग्यतायें सामान्य बालकों से भिन्न होती हैं तथा वे किसी कार्य को अधिक शीघ्रता या अधिक विलम्ब से करते हैं। सामान्य या औसत बालकों से भिन्न होने के परिणामस्वरूप ही इनको अलग से ङ्गविशिष्ट बालकफ के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। विभिन्न दृष्टियों से भिन्नता या विशिष्टता के कारण ऐसे बालकों के अनेक समूह या उपवर्ग भी होते हैं। जैसे-बौद्धिक दृष्टि से विशिष्ट बालक अर्थात् प्रतिभाशाली या मन्द बुद्धि बालक, शारीरिक दृष्टि से विशिष्ट बालक अर्थात् अन्धे, बहरे, विकलांग अथवा वाणी दोष वाले बालक, सामाजिक दृष्टि से विशिष्ट बालक, कुसमायोजित अथवा समस्यात्मक बालक आदि। चूँकि इन सभी उपवर्गों से सम्बन्धित बालकों की भौतिक, सामाजिक, बौद्धिक, शैक्षिक, व्यावहारिक एवं व्यक्तित्व सम्बन्धी परिस्थितियाँ सामान्य बालकों से भिन्न होती हैं अतः इनके लिये विशिष्ट प्रकार की शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक व्यवस्थाओं की आवश्यकता होती है।

विशिष्टता चाहे उच्च कोटि की हो अथवा निम्न कोटि की, दोनों को ही सामान्य विद्यार्थियों के साथ अध्ययन करने में कठिनाई होती है। शिक्षक को भी इन दोनों प्रकार के छात्रों की शिक्षा को उपयोगी तथा सार्थक बनाने के लिये औसत से हटकर कुछ विशेष प्रयास करने पडते हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि श्रेष्ठ छात्र जटिल एवं कठिन समस्याओं को आसानी से हल कर लेते हैं तथा कमजोर छात्र सरल या औसत प्रश्नों को भी सुगमता से हल नहीं कर पाते।

विशिष्ट बालकों की शिक्षा की संकल्पना इसी विचार पर आधारित है कि पहले तो शिक्षक यह पता लगाये कि कक्षा में कौन-कौन से बालक विशिष्ट बालकों की श्रेणी में आते हैं और फिर उनकी क्षमताओं, योग्यताओं, रूचियों, आवश्यकताओं और अभियोग्यताओं के अनुरूप उनकी शिक्षा की समुचित व्यवस्था करे। विशिष्ट विद्यार्थियों में पिछड़े बालक, मानसिक रूप से पिछड़े बालक, बाल अपराधी, प्रतिभावान बालक आदि शामिल हैं।

वास्तव में विशिष्ट बालक शब्द एक वृहद् पद है जिसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की असामान्यताओं से युक्त बालकों के अनेक समूह समाहित रहते हैं।

12.3 विशिष्ट बालक की परिभाषाएँ

विभिन्न विद्वानों ने विशिष्ट बालकों की परिभाषा अपने-अपने तरीके से दी है। कुछ मुख्य परिभाषाएँ इस प्रकार हैं-

1. डन के अनुसार-

विशिष्ट बालक वह है, जो बौद्धिक, शारीरिक सामाजिक अथवा मनोवैज्ञानिक विशेषताओं में इतना भिन्न है कि बहुसंख्यक बालकों के लिये बनाया गया विद्यालय कार्यक्रम उनको सर्वांगीण समायोजन व अनुकूलतम विकास के अवसर उपलब्ध नहीं करा पाता है तथा इसलिये अपनी योग्यताओं के अनुरूप उपलब्धि प्राप्त कर सकने के लिये वे विशेष शिक्षण अथवा कुछ स्थितियों में विशेष सहायक सेवायें अथवा दोनों चाहते हैं।

2. क्रो व क्रो के अनुसार-

विशिष्ट या असाधारण शब्द ऐसे गुणों या व्यक्ति, जिसमें वह गुण है, के लिए प्रयुक्त किया जाता है जो सामान्य व्यक्ति द्वारा प्रदर्शित उन्हीं गुणों से इस सीमा तक विभिन्नता लिए होता है जिसके कारण व्यक्ति विशेष की ओर उसके साथियों को ध्यान देना पड़ता है या दिया जाता है और उसके कारण ही उनकी व्यावहारिक प्रतिक्रियायें तथा कार्य प्रभावित होते हैं।

3. हेक के अनुसार-

विशिष्ट बालक वह है, जो किसी एक अथवा कई गुणों की दृष्टि से सामान्य बालक से पर्याप्त मात्रा में भिन्न होता है।

4. क्रिक के अनुसार-

विशिष्ट बालक वह है जो सामान्य अथवा औसत बालक से मानसिक, शारीरिक तथा सामाजिक विशेषताओं से इतना अधिक भिन्न है कि वह विद्यालय व्यवस्थाओं में संशोधन अथवा विशेष सेवायें अथवा पूरक शिक्षण चाहता है जिससे वह अपनी अधिकतम क्षमता का विकास कर सके।

5. हैरी बाकर के अनुसार-

असाधारण/विशिष्ट बालक वे हैं- जो शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक और सामाजिक दृष्टि से सामान्य गुणों से इस सीमा तक विचलित होते हैं कि उन्हें अपनी

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

अधिकतम क्षमता के अनुसार स्वयं का विकास करने के लिए विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है।

6. क्रुक शैंक के अनुसार–

विशिष्ट बालक वह है जो बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक अथवा संवेगात्मक दृष्टि से सामान्य समझी जाने वाली बुद्धि तथा विकास से इतना भिन्न है कि वह नियमित विद्यालय कार्यक्रम से पूर्ण लाभ नहीं उठा सकता है तथा विशिष्ट कक्षा अथवा पूरक शिक्षण व सेवा चाहता है।

7. टैलफोर्ड एवं सावर के अनुसार–

विशिष्ट बालकों से तात्पर्य उन बालकों से है जो सामान्य बालकों से शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक अथवा सामाजिक लक्षणों में इतने अधिक भिन्न होते हैं कि उनकी योग्यताओं के अनुसार उनके अधिकतम विकास के लिए विशेष सामाजिक एवं शैक्षिक सेवाओं की आवश्यकता होती है।

उपर्युक्त परिभाषाओं का विस्तृत अध्ययन करने के उपरान्त, हम विशिष्ट बालक की परिभाषा इस प्रकार से कर सकते हैं–

विशिष्ट बालक वह है, जो उन बालकों से, जो कि शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक या सामाजिक गुणों में औसत हैं, भिन्न है।

उपर्युक्त विचारों या परिभाषाओं के आधार पर विशिष्ट बालक की अवधारणा को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है तथा यह कहा जा सकता है कि ऐसे बालक सामान्य बालकों से बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक दृष्टियों से इतने अधिक भिन्न होते हैं कि उन्हें विशिष्ट प्रकार की शिक्षा या अनुदेशन की आवश्यकता होती है।

12.4 विशिष्ट बालकों के प्रकार

बालकों के व्यक्तित्व के मुख्य चार पक्ष होते हैं–शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं सामाजिक। विशेष रूप से इन्हीं में किसी बालक की सामान्य अथवा औसत बालकों से भिन्नता ही विशिष्ट बालकों की पहचान होती है। अतः इन चार पक्षों के आधार पर विशिष्ट बालकों का वर्गीकरण करना उपयुक्ततम होगा। इस आधार पर विशिष्ट बालक चार प्रकार के होते हैं–

1. शारीरिक रूप से विशिष्ट बालक

शिक्षा की दृष्टि से इस वर्ग में शारीरिक रूप से विकलांग बालक आते हैं। समायोजन एवं शिक्षा की दृष्टि से इन बालकों की विशेष व्यवस्था करना आवश्यक होता है।

2. मानसिक रूप से विशिष्ट बालक

इस वर्ग में प्रतिभाशाली, बुद्धिमान और गुणवान, पिछड़े अथवा धीमी गति से सीखने वाले और मन्द बुद्धि बालक होते हैं।

3. संवेगात्मक रूप से विशिष्ट बालक

इस वर्ग में अस्थिर, शर्मीले, चिन्ताग्रस्त और क्रोधी बालक आते हैं।

4. सामाजिक रूप से विशिष्ट बालक

इस वर्ग में मुख्य रूप से समस्यात्मक बालक, यथा चोरी करने वाले, झूठ बोलने वाले, मादक द्रव्यों का सेवन करने वाले बालक, अपराधी बालक, वंचित बालक, कुसमायोजित बालक आदि आते हैं।

शिक्षा की दृष्टि से इस अध्याय में उन्हीं विशिष्ट बालकों की चर्चा की जा रही है जिनके लिए शिक्षा के क्षेत्र में विशेष व्यवस्था की आवश्यकता होती है।

12.5 विशिष्ट एवं सामान्य बालक में अन्तर

विशिष्ट एवं सामान्य बालकों में निम्नलिखित अन्तर पाए जाते हैं–

क्र. सं.	विशिष्ट बालक	सामान्य बालक
1.	विशिष्ट बालक प्रायः शारीरिक रूप से अस्वस्थ होते हैं, जैसे–पतले, अत्यधिक लम्बे, पोलियोग्रस्त, लम्बे सिर वाले, अन्धे, कम सुनने वाले तथा मोटे शरीर वाले होते हैं।	सामान्य बालक शारीरिक रूप से स्वस्थ तथा खिलाड़ी शरीर के होते हैं।
2.	ये बालक शारीरिक रूप से ग्रस्त होने के कारण मानसिक बीमारियों से ग्रस्त होते हैं।	सामान्य बालक शारीरिक रूप से स्वस्थ होने के कारण, मानसिक बीमारियों से ग्रस्त नहीं होते हैं जिसके कारण जल्दी तनाव व संघर्ष में नहीं आते हैं।
3.	विशिष्ट बालकों की बुद्धिलब्धि 140 से ज्यादा होती है या फिर औसत या सामान्य बालकों की बुद्धिलब्धि (90–110) से कम होती है।	सामान्य बालकों की बुद्धिलब्धि सामान्यतः 90 से 110 के बीच होती है।
4.	विशिष्ट बालकों का अपने निजों व साथियों के साथ समायोजन करना कठिन होता है।	सामान्य बालक अपने निजों व साथियों के साथ भली–भाँति समायोजन कर लेते है।
5.	विशिष्ट बालक कक्षा में बतायी जाने वाली सूचनाओं को या तो अति शीघ्र सीख लेते हैं या फिर बार–बार समझाने पर भी नहीं समझ पाते हैं।	सामान्य बालक कक्षा में दी गयी सूचनाओं व बातों को भली–भाँति सीख लेते हैं।
6.	विशिष्ट बालक घर, विद्यालय या समाज में अच्छा समायोजन नहीं कर पाते हैं।	सामान्य बालक घर, विद्यालय व समाज में अच्छा समायोजन स्थापित कर लेते हैं।
7.	विशिष्ट बालकों की शैक्षिक उपलब्धि या तो बहुत अच्छी या बहुत न्यून या शून्य होती है जिसके कारण प्रायः असफलता का सामना करते हैं।	सामान्य बालकों की शैक्षिक उपलब्धि अच्छी होती है जिसके कारण असफलता का मुँह नहीं देखना पड़ता है।
8.	विशिष्ट बालक प्रायः अन्तर्मुखी होते हैं और अपने में ही खोये रहते हैं।	सामान्य बालक प्रायः उभयमुखी होते हैं जिसके कारण एक–दूसरे से मेलजोल बढ़ाने में माहिर होते हैं।
9.	विशिष्ट बालक प्रायः अतिआशावादी या प्रायः अति निराशावादी विचार के होते हैं जिसके फलस्वरूप ज्यादा व्यावहारिक नहीं माने जाते हैं।	सामान्य बालक प्रायः आशावादी होते हैं तथा जीवन को व्यावहारिक ढंग से जीने की इच्छा रखते हैं।
10.	विशिष्ट बालकों का संवेगों पर प्रायः नियंत्रण नहीं होता जिसके फलस्वरूप वे प्रेम, क्रोध, ईर्ष्या, घृणा तथा आनन्द आदि को असहज ढंग से प्रदर्शित करते हैं।	सामान्य बालक अपने संवेगों पर नियंत्रण रखने में सफल होते हैं जिसके फलस्वरूप वे प्रेम, क्रोध, ईर्ष्या, घृणा, आनन्द आदि को सहज ढंग से प्रदर्शित करते हैं।
11.	विशिष्ट बालक प्रायः अति महत्वाकांक्षी स्वभाव के होते हैं।	सामान्य बालक अति महत्वाकांक्षी नहीं होते है बल्कि वे मध्यम सोच रखते हैं।
12.	विशिष्ट बालकों में अन्तर्निहित क्षमताओं को प्रस्फुटित करने हेतु विशेष शिक्षा व विशेष सेवाओं की आवश्यकता पड़ती है।	सामान्य बालकों में अन्तर्निहित क्षमताओं को प्रस्फुटित करने हेतु सामान्य शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

12.6 प्रतिभाशाली बालक

प्रतिभाशाली बालक किसी भी समाज अथवा राष्ट्र की अमूल्य निधि होते हैं। इन्हें अनेक प्रकार के नामों से पुकारा जाता है। जैसे–श्रेष्ठ बालक, कुशाग्र बुद्धि वाले बालक, जीनियस, टैलेन्टेड तथा चमकने वाले छात्र आदि। इनकी बुद्धि लब्धि 135 या इससे अधिक होती है। सामान्य वितरण वक्र में यह वक्र के धनात्मक छोर पर स्थित होते हैं। ऐसे बालक किसी भी जाति, समाज, समुदाय, धर्म, आर्थिक स्थिति तथा शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में पाये जा सकते हैं।

12.6.1 प्रतिभाशाली बालक का अर्थ एवं परिभाषा

सामान्यतया औसत स्तर के बालकों से अधिक बुद्धिमान बालकों को प्रतिभाशाली बालक कहा जाता है। अधिक बुद्धिमान होने के कारण प्रतिभाशाली बालक सामान्य बालकों की तुलना में सभी बातों में श्रेष्ठतर होते हैं। प्रतिभाशाली बालकों के विषय में मनोवैज्ञानिकों के भिन्न–भिन्न मत हैं। कुछ मनोवैज्ञानिक उच्च बुद्धि वाले बालकों को प्रतिभाशाली बालक मानते हैं और कुछ मनोवैज्ञानिक किसी क्षेत्र विशेष में उच्च योग्यता रखने वाले बालकों को प्रतिभाशाली बालक मानते हैं, जैसे–साहित्य, कला, संगीत, नृत्य एवं यान्त्रिकी आदि में विशेष योग्यता वाले बालक। कुछ मनोवैज्ञानिक सृजनशील बालकों को ही प्रतिभाशाली बालकों की श्रेणी में रखते हैं।

इन सब विचारों को सम्मिलित कर दिया जाये तो प्रतिभावान बालक का सीधा अर्थ होता है–ऐसा बालक जिसमें विलक्षण बुद्धि होती है और यदि उसके व्यक्तित्व का यथासंभव पूर्ण विकास कर दिया जाये, तो वह अपना समग्र विकास करने के साथ–साथ समाज के विकास में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

प्रतिभाशाली बालक, सामान्य बालकों से सभी बातों में श्रेष्ठतर होता है। उसके विषय में कुछ विद्वानों ने अपना–अपना विचार निम्नलिखित रूप में व्यक्त किया है–

1. टर्मन व ओडन के अनुसार–

प्रतिभाशाली बालक– शारीरिक गठन, सामाजिक समायोजन, व्यक्तित्व के लक्षणों, विद्यालय–उपलब्धि, खेल की सूचनाओं और रूचियों की बहुरूपता में सामान्य बालकों से बहुत श्रेष्ठ होते हैं।

2. फलीगर तथा बिश के अनुसार–

प्रतिभाशाली बालकों की श्रेणी में वे बालक आते हैं जो अपनी श्रेष्ठ बौद्धिक क्षमता एवं क्रियात्मक योग्यता के बल पर शैक्षिक उपलब्धियों में विद्यालय स्तर पर उच्च स्थान प्राप्त करने वाले 15–20 प्रतिशत बालकों में सम्मिलित होते हैं और अथवा किसी विशेष क्षेत्र जैसे–गणित, यांत्रिकी, विज्ञान, कलात्मक अभिव्यक्ति, उच्च स्तरीय प्रतिभा रखते हैं और अपने पर्यावरण से निपटने की अनोखी सृजनात्मक योग्यता रखते हैं।

3. पॉल विटी के अनुसार–

प्रखर बुद्धि बालक वह है जो किसी कार्य को करने के प्रयास में निरन्तर उच्च स्तर बनाये रखता है।

4. कॉलसनिक के अनुसार–

प्रतिभाशाली शब्द उस बालक के लिए प्रयोग किया जाता है जो अपने आयु वर्ग में किसी विशेष योग्यता में श्रेष्ठ होता है और जो योग्यता उसे समाज के उत्थान एवं जीवन के स्तर को उठाने के लिए विशेष योगदान देने वाला बना देती है।

12.6.2 प्रतिभाशाली बालकों की पहचान

यद्यपि सामान्य अवलोकन से ही प्रतिभाशाली बालकों में सामान्य बालकों से भिन्न कुछ महत्त्वपूर्ण विशेषतायें परिलक्षित हो जाती हैं फिर भी इनकी विधिवत पहचान करना आवश्यक है। यूँ किसी भी देश में प्रतिभाशाली बालकों की संख्या उनकी कुल संख्या का लगभग 10% ही होती है पर जब तक इनकी पहचान नहीं की जाती और इन्हें अन्य से अलग नहीं किया जाता तब तक इनकी शिक्षा की विशेष प्रकार से व्यवस्था नहीं की जा सकती।

प्रतिभाशाली बालकों को पहचानने की प्रमुख विधियाँ एवं परीक्षण निम्नलिखित हैं–

1. सामान्य अवलोकन

इसके अन्तर्गत कुछ सामान्य विशेषताओं का सूक्ष्म अवलोकन किया जा सकता है, जैसे–

1. शारीरिक विशेषताओं का निरीक्षण
2. मानसिक विशेषताओं का निरीक्षण
3. सामाजिक समायोजन एवं व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं का निरीक्षण।

2. व्यवस्थित अवलोकन

1. अध्यापक निर्णय
2. अभिभावक एवं मित्रों के अभिमत

3. प्रमापीकृत परीक्षण

इसके अर्न्तगत प्रतिभाशाली बालकों की पहचान हेतु विभिन्न मनोवैज्ञानिकों एवं विद्वानों द्वारा निर्मित प्रमापीकृत एवं विश्वसनीय परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है जिनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं–

1. **बुद्धि परीक्षण** – प्रतिभाशाली बालकों की पहचान के लिये विभिन्न प्रकार के बुद्धि परीक्षणों का प्रयोग किया जा सकता है। ये परीक्षण सामूहिक या व्यक्तिगत तौर पर प्रशासित किये जा सकते हैं तथा आवश्यकतानुसार शाब्दिक एवं अशाब्दिक हो सकते हैं, परन्तु इन परीक्षणों के प्रयोग हेतु शिक्षक का प्रशिक्षित होना अत्यन्त आवश्यक है।
2. **उपलब्धि परीक्षण** – इस प्रकार की परीक्षाओं में विद्यार्थियों की उपलब्धियों का ज्ञान भली–भाँति हो जाता है। उच्च स्तर की उपलब्धि बालकों के प्रतिभावान होने की आशा जाग्रत करती है।
3. **अभिरूचि परीक्षण** –रूचि परीक्षणों के आधार पर बालकों की किसी विशेष क्षेत्र में रूचि के बारे में अनुमान लगाकर उसकी प्रतिभा को उसी क्षेत्र में निखारा जा सकता है। इससे प्रतिभावान बालक अत्यधिक सफलता प्राप्त कर सकते हैं।
4. **रूचि परीक्षण** – रूचि परीक्षणों के आधार पर बालकों की किसी विशेष क्षेत्र में रूचि के बारे में अनुमान लगाकर उसकी प्रतिभा को उसी क्षेत्र में निखारा जा सकता है। इससे प्रतिभावान बालक अत्यधिक सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

www.praganya.org www.praganya.org www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

5. **व्यक्तित्व परीक्षण** – विभिन्न उपलब्ध व्यक्तित्व मापनियों के आधार पर किसी बालक विशेष के व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम ज्ञात कर उसके विशिष्ट अथवा प्रतिभावान होने का आकलन किया जा सकता है।

4. डीहान और कफ की सूची के आधार पर

इन सब विधियों के अतिरिक्त डीहान तथा कफ ने प्रतिभावान बालकों के गुणों की एक ऐसी सूची तैयार की है जिसके आधार पर प्रतिभावान बालकों का पता लगाया जा सकता है। यह सूची निम्नलिखित है–

1. ऐसे बालक सब कुछ आसानी से याद कर लेते हैं।
2. ये स्पष्ट रूप से सोचने, अर्थों को समझने और सम्बन्धों की पहचान करने में श्रेष्ठ होते हैं।
3. सामान्य बुद्धि का प्रयोग अधिक करते हैं।
4. बिना रटे समझने में अधिक विश्वास करते हैं।
5. शब्द ज्ञान बहुत विस्तृत होता है।
6. कठिन कार्यों को आसानी से कर लेते हैं।
7. मौलिक चिन्तन कर सकते हैं।

इनमें से किसी एक अथवा अनेक उपयुक्त विधियों एवं उपकरणों का प्रयोग करके प्रतिभावान बालकों की पहचान की जा सकती है।

12.6.3 प्रतिभाशाली बालकों की विशेषताएँ

प्रतिभाशाली बालकों की विशेषताओं पर मनोवैज्ञानिकों ने अनेक अध्ययन किये हैं। इनमें जोन्स, टर्मन, जेन्किन्स, विटी, हॉलिंगवर्थ, स्किनर, लेविस, ल्यूसेटा तथा हैरिमैन आदि के कार्य महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। इनके निष्कर्षों को सम्मिलित करके प्रतिभाशाली बालकों की निम्नलिखित विशेषताएँ बतलाई जा सकती हैं–

1. शारीरिक विशेषताएँ

1. अधिकतर प्रतिभाशाली बालकों का जन्म के समय भार व लम्बाई औसत बालकों से अधिक होते हैं।
2. प्रतिभाशाली बालकों का मुखमण्डल आभायुक्त एवं ज्ञानेन्द्रियाँ अधिक सक्रिय होती हैं।
3. प्रतिभावान बालक शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ होते हैं।

2. मानसिक विशेषताएँ

1. प्रतिभावान बालकों का व्यक्तित्व, उनका चिंतन, उनकी कार्यशैली और उनकी विशिष्ट प्रतिभा उन्हें समूह में एक विशेष स्थान प्रदान करती है।
2. इनकी मानसिक शक्तियाँ– निरीक्षण, कल्पना, तर्क, स्मृति, विचार, निर्णय आदि बहुत उच्चकोटि की होती है।
3. इन बालकों की बुद्धि लब्धि अधिकांशतः 130 से अधिक होती है।
4. इनके सीखने की गति तीव्र एवं शुद्ध होती है तथा स्मरण शक्ति उच्च स्तर की होती है।
5. ये बालक स्वतंत्र एवं शीघ्र निर्णय लेने में पर्याप्त समर्थ होते हैं।
6. इन बालकों में प्रायः नेतृत्व की क्षमता होती है।
7. ये बालक अपनी कमियों को पहचानते हैं तथा दूसरों के सुझाव आसानी से मान लेते हैं।
8. इनकी विचारधारा अनुगमन तथा अनुकरण पर आधारित न होकर मौलिक होती है।
9. ये मूर्त तथा अमूर्त दोनों प्रकार का चिन्तन करने में सक्षम होते हैं।
10. आमतौर पर इन बालकों पर बुरी संगत का असर नहीं पड़ता, किन्तु कभी–कभी विषम परिस्थितियों से प्रतिक्रियावश ये नकारात्मक चिंतन करने लगते हैं।
11. ये बालक भावी वैज्ञानिक, कवि, साहित्यकार, चिन्तक, विचारक, शिक्षाविद् तथा अनुसंधानकर्ता होते हैं।

3. संवेगात्मक विशेषताएँ

1. ये बालक अपने संवेगों पर नियंत्रण रखने में कुशल होते हैं।
2. ये बालक नैतिक मूल्यों को मानने वाले तथा अनुशासनप्रिय होते हैं।
3. ऐसे बालक अन्धविश्वासी, पूर्वाग्रहों, पक्षपात और कुटिल भावनाओं से दूर रहकर सत्य व तथ्य में विश्वास रखते हैं।
4. ये बालक न तो स्वयं अन्याय करते हैं और न ही दूसरों के अन्याय को सहन कर पाते हैं।
5. ये बालक सामाजिक व्यवहार की दृष्टि से दयालु, उदार, परोपकारी, ईमानदार, कर्त्तव्यपरायण एवं शिष्टाचार प्रिय होते हैं।
6. स्वभाव से ये बालक साहसी, धैर्यवान, आशावादी, आत्मविश्वासी एवं निर्भीक होकर अपना स्वयं का मार्ग खोजने वाले होते हैं।
7. कभी–कभी ये बालक शरारती, नटखट, चंचल और समस्या बालक बन जाते हैं किन्तु यह स्थिति लंबे समय तक नहीं रहती। आयु के अनुसार परिपक्वता आने के साथ ही ये अपनी धीर–गम्भीर स्थिति में आ जाते हैं।

4. सामाजिक समायोजन सम्बन्धी विशेषताएँ

1. इनमें वातावरण के साथ समायोजन, अनुकूलन तथा समस्या समाधान की क्षमता सामान्य से अधिक होती है।
2. प्रतिभाशाली बालकों के कार्य करने एवं रहन–सहन का ढंग अनियमित एवं बेतरतीब होता हैं।
3. इस प्रकार के बालकों में सामान्यीकरण की क्षमता भी अधिक होती है।
4. ये बालक अपनी सृजनात्मक तथा विशिष्ट प्रतिभाओं को परिस्थितियों के विपरीत होने के बावजूद अपनी संघर्ष करने की क्षमता से विकसित करने में समर्थ होते हैं।

12.6.4 प्रतिभाशाली बालक की शिक्षा

प्रतिभाशाली बालकों को किस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए? इसका उत्तर देते हुए हैवगहर्स्ट ने कहा है कि

> प्रतिभाशाली बालकों के लिए शिक्षा का सफल कार्यक्रम वही हो सकता है, जिसका उद्देश्य उनकी विभिन्न योग्यताओं का विकास करना हो।

इस कथन के अनुसार प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा का कार्यक्रम निम्न प्रकार होना चाहिए–

1. सामान्य रूप से कक्षोन्नति की जाए

कुछ मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि प्रतिभाशाली बालकों को एक वर्ष में दो बार

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

कक्षोन्नति दी जानी चाहिए। उसके ठीक विपरीत, दूसरे मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि इस तरह का करना, उनको सीखने की प्रक्रिया के क्रमिक विकास के लाभ से वंचित करना है। उनका विचार भी यह है कि यह कोई आवश्यक नही है कि उनकी सब विषयों में विशेष योग्यता हो ही। इस तरह की दशा में उच्च कक्षा में पहुँचकर उनमें असमायोजन उत्पन्न किया जा सकता है। अतः क्रो एवं क्रो का कहना है कि

> प्रतिभाशाली बालक को सामान्य रूप से विभिन्न कक्षाओं में अध्ययन करना चाहिए।

इसका अर्थ यह है कि प्रतिभाशाली बालकों को वर्ष के अन्त में उसी प्रकार कक्षोन्नति दी जानी चाहिए जिस प्रकार अन्य बालकों को दी जाती है।

2. सामान्य बालकों के साथ शिक्षा दी जाए

कुछ मनोवैज्ञानिकों का विचार हैं कि प्रतिभाशाली बालकों को सामान्य बालकों से अलग विशेष प्रकार की कक्षाओं तथा विशेष प्रकार के विद्यालयों में शिक्षा दी जानी चाहिए। उनके विचार के विरोध में दूसरे मनोवैज्ञानिकों का तर्क है कि इस तरह की कक्षायें तथा विद्यालय, प्रतिभाशाली बालकों में असमायोजन की दोषपूर्ण प्रवृत्ति को सबल बनाते हैं। उन्हें इस प्रवृत्ति से मुक्त रखने तथा उनमें समायोजन के गुण का विकास करने के लिए आवश्यक है कि उनको सामान्य बालकों के साथ ही शिक्षा प्रदान की जाए।

3. विशेष एवं विस्तृत पाठ्यक्रम तैयार की जाए

एक वर्ष में दो बार उन्नति देने के अलावा प्रतिभाशाली बालकों के लिए विशेष प्रकार का तथा विस्तृत पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाना चाहिए। इस पाठ्यक्रम में अधिक तथा कठिन विषय होने चाहिए, ताकि वे अपनी विशेष योग्यताओं के फलस्वरूप अधिक ज्ञान का अर्जन कर सकें।

प्रतिभाशाली बालकों के पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए स्किनर ने कहा है कि –

> इन बालकों के पाठ्यक्रम का निर्माण इस प्रकार किया जाना चाहिए जिससे उनकी मौखिक योग्यता, सामान्य मानसिक योग्यता तथा तर्क, चिन्तन एवं रचनात्मक शक्तियों का अधिक से अधिक विकास हो सके। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उनको खोज, मौखिक तथा स्वतंत्र कार्यों, क्रियात्मक तथा प्रयोगात्मक कार्यों के लिए अच्छे-से-अच्छे अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।

4. शिक्षक को व्यक्तिगत रूप से बालको पर ध्यान देना चाहिए

शिक्षक को प्रतिभाशाली बालकों के प्रति व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना चाहिए। उसे उनको नियमित रूप से परामर्श तथा निर्देशन देना चाहिए। इन विधियों का अनुसरण करके ही वह उनको उनकी विशेष योग्यताओं के अनुसार प्रगति करने के लिए अनुप्राणित कर सकता है।

5. संस्कृति की शिक्षा दी जाए

हॉलिंगवर्थ का कहना है कि–

> प्रतिभाशाली बालकों को अपनी संस्कृति के विकास की शिक्षा दी जानी चाहिए, ताकि वे समाज में अपना उचित स्थान प्राप्त कर सकें।

6. विशेष अध्ययन की सुविधाएँ दी जाए

प्रतिभाशाली बालकों को सामान्य विषयों के अध्ययन में विशेष रूप से रूचि होती है। उनकी इस रूचि का विकास करने तथा उनको अधिक अध्ययन के लिए प्रोत्साहित करने के विचार से हर एक विद्यालय में विभिन्न विषयों की पुस्तकों से सुसज्जित पुस्तकालय होना चाहिए। इस तरह की शैक्षिक सुविधाएँ उनको अधिक ज्ञान को हासिल करने में अपूर्व सहायता प्रदान की करती है।

7. पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाए

प्रतिभाशाली बालकों में रूचियों का बाहुल्य अधिक होता है। उनकी सन्तुष्टि केवल अध्ययन मात्र से ही नही हो सकती है। अतः विद्यालयों को अधिक से अधिक पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का उत्तम आयोजन करना चाहिए।

8. नेतृत्व का प्रशिक्षण दिया जाए

क्रो एवं क्रो का कहना है कि–

> क्योंकि हम प्रतिभाशाली बालक से नेतृत्व की आशा करते हैं, इसलिए उसको विशिष्ट परिस्थितियों में नेतृत्व का अवसर और प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

9. सामाजिक अनुभवों के अवसर प्रदान किये जाए

प्रतिभाशाली बालकों को सामान्य बालकों की सामाजिक क्रियाओं से अलग नहीं रखना चाहिए। इन क्रियाओं में भाग लेकर ही उनको सामाजिक अनुभव प्राप्त हो सकते हैं। ये अनुभव उनको निश्चित रूप से सामाजिक समायोजन करने में सहायता प्रदान कर सकते हैं। इन अनुभवों के अभाव में वे असमायोजित हो सकते हैं। जैसा कि क्रो एवं क्रो ने कहा है कि–

> प्रतिभाशाली बालक को सामाजिक अनुभव प्राप्त करने के अवसर दिये जाने चाहिए, ताकि वह सामाजिक असमायोजन से अपनी रक्षा कर सके।

10. व्यक्तित्व का पूर्ण विकास किया जाए

शेफील ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि प्रतिभाशाली बालक की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य हमेशा उसके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना होना चाहिए। इस दिशा में परिवार, विद्यालय तथा समाज को एक-दूसरे को इस प्रकार सहयोग देना चाहिए कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक उसके व्यक्तित्व का पूर्ण रूपेण विकास हो सके।

प्रतिभाशाली बालकों का शिक्षण करते समय निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखना आवश्यक है–

1. प्रतिभाशाली बालकों को सुनियोजित कार्यक्रम के माध्यम से व्यवस्थित ढंग से कार्यरत रखा जाना चाहिए।
2. इन बालकों के शिक्षण में निगमन, संश्लेषण, प्रयोगशाली ह्यूरिस्टिक एवं प्रोजेक्ट विधियों का प्रयोग करना चाहिए।
3. इन बालकों के सम्मुख स्थूल या प्रत्यक्ष वस्तुओं के स्थान पर गूढ़ प्रत्यय सीधे ही प्रस्तुत किये जा सकते हैं।
4. प्रतिभाशाली बालकों को एक ही समस्या को विभिन्न तरीकों से हल करने के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए।
5. इन बालकों को व्यवस्थित सामग्री के माध्यम से पढ़ाना चाहिए।
6. ऐसे बालकों को कभी-कभी कक्षा को पढ़ाने का कार्य भी सौंपा जाना चाहिए।
7. शिक्षकों की ऐसे बालकों के लिये समय-समय पर शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन की व्यवस्था करनी चाहिए जिससे किसी भी स्तर पर कोई चूक न हो।

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

12.6.5 प्रतिभाशाली बालकों की समस्याओं के कारण

प्रतिभाशाली बालकों की कुछ मूलभूत आवश्यकताएँ होती हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होने के कारण ये समस्याएँ पैदा करते हैं। इनकी आवश्यकताओं को मुख्य रूप से पाँच वर्गों में रखा जा सकता है–

1. ज्ञान अर्जित करने की लालसा
2. सृजनात्मकता एवं प्रतिभा प्रदर्शन की आवश्यकता
3. विशिष्ट योग्यताओं के विकास की आवश्यकता
4. अपने आपको प्रदर्शित करने की अभिलाषा
5. प्रेम, सुरक्षा और सम्मान की आवश्यकता

उपर्युक्त आवश्यकताओं एवं अभिलाषाओं की पूर्ति नहीं होने पर प्रतिभाशाली बालक मानसिक रूप से उद्वेलित हो जाते हैं और संवेगात्मक रूप से अस्थिर हो जाते हैं और इस कारण उनमें कुसमायोजन की प्रवृत्ति का विकास होने लगता है ओर यहीं से समस्याएँ प्रारम्भ होती हैं। इन्हें उचित पर्यावरण की आवश्यकता होती है जिसमें उनकी क्षमताओं एवं योग्यताओं का विकास हो सके और उनकी जिज्ञासाएँ शान्त हो सकें। कभी–कभी ये बालक अधिक प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति के कारण, ज्ञान पिपासा शान्त न होने के कारण और अपनी प्रतिभाओं के प्रकटीकरण के अवसर उपलब्ध न होने के कारण अपने आपको असुरक्षित एवं तिरस्कृत समझते हैं और अभिभावकों एवं शिक्षकों द्वारा भी उनके प्रति यही भावना होने पर वे आक्रामक हो उठते हैं और इस कारण कई समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

इस प्रकार इन बालकों के लिए पर्याप्त सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होने के कारण और उनके प्रति उपेक्षा की भावना होने के कारण ये अपने आपको समायोजित नहीं कर पाते और कुसमायोजन की ओर बढ़ते हैं। इस तरह से उनकी प्रतिभा का उपयोग नहीं होता। अतः इन बालकों पर सभी पक्षों द्वारा विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

12.7 सृजनात्मक बालक

किसी भी समाज व राष्ट्र के विकास में वैज्ञानिकों की भाँति सृजनशील व्यक्तियों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। सृजनात्मकता व्यक्ति का मौलिक गुण है। प्रत्येक व्यक्ति में यह गुण किसी न किसी मात्रा में पाया जाता है। वास्तव में संसार के समस्त प्राणियों में सृजनात्मकता होती है। मानव–जीवन को सुखमय बनाने के लिए नवीन आविष्कार करने तथा समस्याओं का समाधान खोजने के कार्य में सृजनात्मकता या रचनात्मकता बालक के अन्दर वह योग्यता है जो नवीन वस्तु का निर्माण करने, समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने, नवीन परिस्थितियों में समायोजन करने, जीवन में एक अभिनव समझ, सोच और व्यवहार से होता है। विद्यालय में अनेक ऐसे बालक होते हैं जिनकी प्रकृति सृजनात्मक होती है। सृजनात्मक बालकों को उनकी योग्यतानुसार शिक्षा व्यवस्था करना प्रत्येक समाज व राष्ट्र का कर्त्तव्य होता है क्योंकि ऐसे बालक समाज व राष्ट्र की अमूल्य धरोहर होते हैं तथा सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास में अपूर्व योगदान करते हैं।

12.7.1 सृजनात्मकता का अर्थ एवं परिभाषा

सृजनात्मकता व्यक्ति का मौलिक गुण होता है। इसका तात्पर्य–कोई नयी वस्तु बनाना, नये विचार देना, नवीनतम अनुसंधान करना आदि से होता है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने सृजनात्मकता का अर्थ साहसिक चिन्तन, नवीन अनुभव, परम्परागत लीक से हटकर नये रास्ते पर चलना आदि बताया है। मनोवैज्ञानिक क्रो व क्रो का मानना है कि–

> सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।

वेबस्टर शब्दकोष के अनुसार **क्रियेटिविटी** शब्द की उत्पत्ति **केरे** शब्द से हुई मानी जाती है, जिसका तात्पर्य– **अस्तित्व में आना**। इस शब्दकोष में क्रियेट जब एक क्रिया के रूप में प्रयोग होता है तो इसका तात्पर्य– अस्तित्व में लाना अथवा मौलिक रूप में उत्पन्न होना और जब यही शब्द विशेषण के रूप में क्रियेटिव के रूप में प्रयोग किया जाता है, तो उसका अभिप्राय– योग्यता, शक्ति, कल्पना आदि से लिया जाता है।

सृजनात्मकता से सम्बन्धित कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार हैं–

1. बैरन के अनुसार–

> सृजनात्मक बालकों का अर्थ है वे बालक जो पहले से विद्यमान वस्तुओं और तत्त्वों को संयुक्त करके किसी नवीन वस्तु का निर्माण करते हैं।

2. गिलफोर्ड के अनुसार–

> सृजनात्मक बालकों में अधिक सामान्य गुण होते हैं, जिसमें न केवल मौलिकता होती है बल्कि उनमें लचीलापन, प्रवाहमयता तथा प्रेरणा व संयमन के गुण भी सम्मिलित होते हैं।

3. मेडनिक के अनुसार–

> सृजनात्मक चिन्तन में साहचर्य के तत्त्वों का मिश्रण रहता है जो विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए संयोगशील होते हैं या किसी अन्य में लाभदायक होते हैं। नवीन संयोग के विचारों में आपसी दूरी जितनी अधिक होगी, सृजनात्मकता की सम्भावना उतनी ही अधिक होगी।फफ

4. लूथी के अनुसार–

> सृजनात्मकता किसी चीज को वास्तव में उत्पन्न करने, बनाने या अभिव्यक्त करने, जो कम से कम एक भाग में स्वयं से उत्पन्न होती है की योग्यता और सुविधा है।

5. स्टेन के अनुसार–

> सृजनात्मकता वह कार्य है जिसका परिणाम नवीन हो और किसी समय किसी समूह द्वारा उपयोगी और संतोषजनक रूप में स्वीकार किया जाये।

6. डीहान और हेविंगहर्स्ट के अनुसार–

> सृजनात्मकता वह गुण है जो आकर्षित करता है। यह नवीन उत्पादन सम्पूर्ण समाज अथवा केवल उत्पादक व्यक्ति के लिए नवीन हो सकता है।

7. टोरेन्स के अनुसार–

> रचनात्मकता समस्याओं, कठिनाइयों, ज्ञान में अन्तराल, खोये हुए तत्त्व, अव्यवस्था आदि, कठिनाई की पहचान करना, हलों की खोज करना, अनुमान करना या कमियों के लिए परिकल्पनाएँ बनाना इन परिकल्पनाओं का परीक्षण और पुनर्परीक्षण करना और सम्भवतः उन्हें सुधारना और परीक्षण करना और अन्त में परिणामों को देने की प्रक्रिया है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

8. आइजनेक के अनुसार–

सृजनशील बालक नवीन सम्बन्धों के ज्ञान की, इसकी उत्पत्ति में चिन्तन के परम्परागत प्रतिमानों से हटकर असाधारण विचार उत्पन्न करने की योग्यता रखता है।

12.7.2 सृजनात्मक बालकों के लक्षण अथवा विशेषताएँ

सृजनात्मक बालकों में लगभग वे सभी विशेषताएँ होती हैं, जो प्रतिभाशाली बालकों में पाई जाती हैं। मनोवैज्ञानिकों ने सृजनात्मक बालकों का बड़ी बारीकी से अध्ययन किया है और कुछ ऐसी विशुद्ध विशेषताओं को बताया है जो केवल सृजनात्मक बालकों में ही पाई जाती हैं। इनका विवरण इस प्रकार है–

1. मौलिक चिन्तन व प्रस्तुति

सृजनात्मक बालकों में किसी विचार अथवा वस्तु को नया रूप देने और किसी समस्या को नये ढ़ंग से हल करने की प्रवृत्ति होती है और नव निर्माण की शक्ति होती है। ये मौलिक चिन्तन में विश्वास रखते हैं।

2. संवेदनशीलता

सृजनात्मक बालक बहुत संवेदनशील होते हैं, विशेषतः परिवर्तन के प्रति। संवेदनशीलता इनके प्रत्येक कार्य में देखने को मिलती है।

3. प्रवाह

किसी समस्या के हल अथवा किसी वस्तु के निर्माण के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहने को प्रवाह कहते हैं। सृजनात्मक बालक प्रवाही प्रकार के होते हैं।

4. नवीनता

ये बालक सदैव कुछ नया करने के लिये प्रयत्नशील रहते हैं। इनका दृष्टिकोण सामान्य व्यक्तियों से भिन्न होता है।

5. स्व प्रेरण

अधिगम एवं स्वतंत्र निर्णय–सृजनशील बालकों में आत्मविश्वास होता हैं। ये बालक वातावरण से अन्तःक्रिया करते हुये स्वयं प्रेरित होने, स्वयं सीखने एवं स्वतंत्र निर्णय लेने की अद्भुत क्षमता रखते हैं।

6. विस्तारण

किसी विचार की अपने अनुभवों के आधार पर विस्तृत व्याख्या करने को विस्तारण कहते हैं। सृजनात्मक बालकों में भिन्न–भिन्न मात्रा में यह गुण पाया जाता है।

7. पुनर्परिभाषीकरण

पुनर्परिभाषीकरण का अर्थ है किसी प्रचलित परिमाप को नये रूप से परिभाषित करना अर्थात् किसी वस्तु, क्रिया अथवा विचार को पूर्व प्रचलित रूप में प्रस्तुत न कर उसे नये रूप में प्रस्तुत करना। सृजनात्मक बालकों में यह विशेषता भी होती है।

8. नमनीयता

किसी समस्या के अनेक हल प्रस्तुत करने को नमनीयता कहते हैं। ये हल एक–दूसरे से कितने भिन्न हैं और कितने सार्थक हैं यह व्यक्ति की नमनीय क्षमता पर निर्भर करता है। इनके क्रियाकलापों में नमनीयता एवं लचीलेपन का गुण पाया जाता है।

9. आत्म–सन्तुष्ट

ये बालक अपने लक्ष्यों अथवा कार्यों के लिये सतत् प्रयत्नशील रहते हैं तथा अपने सृजनात्मक कार्यों से आत्म–सन्तुष्ट रहकर अकेले ही अपना मार्ग निर्धारित करने में समर्थ होते हैं।

10. निर्भीक एवं आत्मनिर्भर

ये बालक स्वभाव से निर्भीक, साहसी, आत्मनिर्भर एवं परम्परा अथवा लीक से हटकर चलने वाले होते हैं। ये हँसमुख होते हैं तथा विकृतियों और चुनौतियों को स्वीकार करने की हिम्मत रखते हैं।

11. कल्पना प्रधान

ये कल्पना प्रधान होते हैं, जैसा कि आइन्स्टीन ने कहा था–

ज्ञान की अपेक्षा कल्पना अधिक महत्त्वपूर्ण है।

12.7.3 सृजनात्मक बालकों की पहचान

सृजनात्मक बालकों की पहचान करना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि इन्हीं बालकों में से समाज को आगे चलकर उच्चकोटि के दार्शनिक, विचारक, विद्वान, लेखक, अभिनेता, कवि, वैज्ञानिक, नेता तथा खोजकर्ता प्राप्त होते हैं। सृजनात्मक बालकों की पहचान यूँ तो शिक्षक सामान्य रूप से निरीक्षण द्वारा कर लेते हैं परन्तु किस बालक में सृजनात्मकता किस प्रकार की है और किस कोटि की है अर्थात् कम है या अधिक है, यह ज्ञात करने के लिये मनोवैज्ञानिक विधियों से अनेक सृजनात्मक परीक्षण बनाये गये हैं। इनमें से कुछ प्रमुख परीक्षण निम्नलिखित हैं–

1. सृजनात्मक विज्ञान मापनी

इस परीक्षण का निर्माण हॉलैण्ड तथा केण्ट ने 1960 में किया था। इसके द्वारा माध्यमिक स्तर के छात्रों की विज्ञान के क्षेत्र में सृजनात्मकता का मापन किया जा सकता है। इसमें 5 पद हैं।

2. सृजनात्मक कला मापनी

इसका निर्माण भी हॉलैण्ड तथा केण्ट ने ही किया था। इसमें 11 पद हैं तथा यह बालकों की कला सम्बन्धी सृजनात्मकता का मापन करती है।

3. टोरेन्स का सृजनात्मक चिन्तन का मिनेसोटा परीक्षण

यह एक अत्यधिक प्रचलित परीक्षण है, जिसका निर्माण 1958 ई. में टोरेन्स ने किया था। आगे चलकर इममें गिलफोर्ड ने संशोधन किया जिसमें तीन प्रकार की क्रियाएँ सम्मिलित की गईं–

1. शाब्दिक
2. अशाब्दिक
3. कार्य

उपरोक्त सभी सृजनात्मक परीक्षणों की प्रकृति को देखकर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मस्तिष्क और बुद्धि से सम्बन्धित सृजनात्मकता जैसी जटिल मानसिक प्रक्रिया का मापन केवल किसी एक परीक्षण के द्वारा संभव नहीं हो सकता। अतः सृजनात्मकता के प्रत्येक घटक का अलग–अलग विशेष परीक्षणों द्वारा मापन करना अधिक उपयुक्त माना जाता है।

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

12.7.4 सृजनात्मक बालकों के प्रकार

प्रत्येक बालक में कुछ न कुछ रचनात्मक शक्ति अवश्य पाई जाती है क्योंकि रचनात्मकता (सृजनात्मकता) एक स्वाभाविक गुण है। लेकिन इस पर वातावरण का प्रभाव अवश्य पड़ता है। विज्ञान व तकनीकी से लेकर दैनिक कार्य व समाज के प्रत्येक क्षेत्र में रचनात्मकता की आवश्यकता पड़ती है। जीवन के विविध क्षेत्रों के आधार पर रचनात्मक बालक का निम्न रूपों में वर्गीकरण किया जा सकता है–

1. वैज्ञानिक रचनात्मकता

इस प्रकार की रचनात्मकता नये प्रयोग व शोध में पाई जाती है।

2. संगीतात्मक रचनात्मकता

इस प्रकार की रचनात्मकता में नयी धुन, संगीत व लय की झलक दिखाई पड़ती है।

3. सौन्दर्यात्मक रचनात्मकता

इस प्रकार की रचनात्मकता नई विधि में दिखाई देती है।

4. तकनीकी रचनात्मकता

इस प्रकार की रचनात्मकता नये कार्य व तकनीकी में पाई जाती है।

5. साहित्यिक रचनात्मकता

इस प्रकार की रचनात्मकता लेखन, कविता, कहानी आदि में दिखाई देती है।

6. शैक्षिक रचनात्मकता

इस प्रकार की रचनात्मकता शिक्षा में नये प्रयास, दर्शन आदि में दिखाई देती है।

7. कलात्मक रचनात्मकता

इस प्रकार की रचनात्मकता में नई कला की स्पष्ट झलक दिखाई देती है।

8. औद्योगिक रचनात्मकता

इस प्रकार की रचनात्मकता में नया कार्य व उद्योग का विचार आदि आता है।

12.7.5 सृजनात्मक बालकों की शिक्षा

समाज के भिन्न–भिन्न व्यक्तियों में भिन्न–भिन्न प्रकार की सृजनात्मक प्रतिभा होती है। वस्तुतः यह वैयक्तिक भिन्नता ही समाज के बहुमुखी विकास का मूल आधार है। जिस प्रकार हमारे शरीर में हाथ, पैर, मुँह, आँख, नाक, कान, आदि सबके भिन्न–भिन्न कार्य और गुण हैं किन्तु जब सभी अंग सम्मिलित रूप में कार्य करते हैं, तभी हमारा शरीर संचालित होता है और हमारा अस्तित्व कायम रहता है। ठीक उसी प्रकार समाज के भिन्न–भिन्न प्रतिभाओं से सम्पन्न व्यक्ति अपने–अपने गुणों के अनुसार अपना कार्य करते हैं किन्तु जब सबका सम्मिलित योगदान समाज को प्राप्त होता है, तभी समाज विकसित बनता है और आगे बढ़ता है। इसी बिन्दु पर शिक्षा दो प्रकार से सृजनात्मकता का विकास करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है–

1. पृथक्–पृथक् रूप में व्यक्ति की वैयक्तिक सृजनात्मकता का विकास करना।
2. भिन्न–भिन्न प्रकार की सृजनात्मक प्रतिभाओं को समन्वित करना।

अतः बालकों की सृजनात्मकता का विकास करने और उसे समन्वित रूप देने के लिये निम्नलिखित कदम उठाये जा सकते हैं–

1. सर्वप्रथम सभी बालकों को उनकी विशिष्ट प्रतिभाओं के अनुसार उपयुक्त निर्देशन, परामर्श व अन्य प्रकार की सहायता प्रदान की जानी चाहिए।
2. विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं, जैसे– वादविवाद, चित्रकला, कहानी लेखन, कविता, गायन, नृत्य व संगीत प्रतियोगिताएँ आदि आयोजित की जानी चाहिए।
3. बालकों को पाठ्य विषयों, खेलकूद गतिविधियों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा विज्ञान एवं कला प्रदर्शनियों आदि में अपनी रूचि के अनुसार भाग लेने की छूट प्रदान की जानी चाहिए।
4. छात्र अपनी प्रतिभा का समुचित विकास कर सकें, इसके लिये उनका सकारात्मक उत्साहवर्धन अत्यन्त आवश्यक है। इसी प्रकार खराब प्रदर्शन के लिये मनोवैज्ञानिक दण्ड का भी प्रावधान होना चाहिए।
5. छात्रों को अपनी भावनाओं, इच्छाओं, अनुभूतियों और आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति के लिये पूरी स्वतंत्रता प्रदान की जानी चाहिए।
6. प्रत्येक बालक को उसकी वैयक्तिक सृजनात्मक प्रतिभा का विकास करने के समुचित अवसर उपलब्ध कराते हुये सबको एक साथ मिलकर सहयोग के साथ इनका लाभ उठाने के लिये प्रेरित करना चाहिए।

12.8 पिछड़े बालक

सामान्यतया पिछड़े बालकों से तात्पर्य उन बालकों से होता है, जो अधिकांश सामान्य बालकों से किसी प्रतियोगिता में पीछे रह जाते हैं। ये प्रतियोगिता खेल में हो सकती है, शैक्षिक उपलब्धि में हो सकती है, समझदारी में हो सकती है या आर्थिक या सामाजिक क्षेत्र में हो सकती है। परन्तु शिक्षाविदों एवं मनोवैज्ञानिकों ने पिछड़ेपन का अर्थ शैक्षिक पिछड़ेपन से लिया है।

20वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक यह माना जाता था कि बालक मन्दबुद्धि के कारण ही शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ते हैं और तब मन्दबुद्धि बालकों को ही पिछड़े बालक माना जाता था, परन्तु 20 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में कुछ मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन में पाया कि कुछ बालक औसत और औसत से अधिक बुद्धि के होने के बाद भी शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ जाते हैं। अतः उन्होंने मन्दबुद्धि और पिछड़े बालकों में अन्तर स्पष्ट करना शुरू कर दिया।

12.8.1 पिछड़े बालक का अर्थ एवं परिभाषा

विद्यालय अथवा कक्षा में अध्ययन करते हुये जो बालक सामान्य बुद्धि के होते हुये भी शैक्षिक उपलब्धि में पीछे रह जाते हैं, वे पिछड़े बालकों की कोटि में आते हैं। पिछड़ेपन के अनेक कारण हो सकते हैं। शारीरिक कारणों के अतिरिक्त परिवार के कलहपूर्ण, अशिक्षित, दूषित व शोर–शराबा से युक्त वातावरण, परिवार की निर्धनता, बुरे मित्रों की संगति, अयोग्य व निष्ठुर अध्यापक जैसे अनेक कारणों के कारण बालक अपनी शिक्षा को ठीक ढंग से जारी नहीं रख पाते हैं तथा वे पिछड़ जाते हैं।

शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ेपन को भी मनोवैज्ञानिकों ने भिन्न–भिन्न रूप में लिया है। इससे सम्बन्धित कुछ प्रमुख परिभाषाएँ इस प्रकार हैं–

1. सिरिल बर्ट के अनुसार–

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

पिछड़ा बालक वह है, जो अपने विद्यालय जीवन के मध्य में (अर्थात् लगभग साढ़े दस वर्ष की आयु में) अपनी कक्षा से नीचे की कक्षा के उस कार्य को न कर सके, जो उसकी आयु के बालकों के लिए सामान्य कार्य है।

2. शोनेल एवं शोनेल के अनुसार–

पिछड़े बालक उसी जीवन–आयु के अन्य छात्रों की तुलना में विशेष प्रकार की शैक्षिक निम्नता व्यक्त करते हैं।

3. मनोवैज्ञानिक बरटन हॉल के अनुसार–

पिछड़ापन सामान्यतः उन बालकों के लिए प्रयोग किया जाता है जिनकी शैक्षिक उपलब्धियाँ उनकी स्वाभाविक क्षमताओं के स्तर से कम होती हैं।

4. टी.के.एन. मेनन के अनुसार–

भारतीय परिस्थिति में पिछड़ा बालक वह है जो अपनी कक्षा की औसत आयु से एक वर्ष से अधिक बड़ा हो।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर पिछड़े बालक के अर्थ को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है–

ऐसे बालक जो अपनी कक्षा के औसत एवं औसत से निम्नतर कार्यों को नहीं कर पाते हैं तथा कक्षा के अपनी आयु के सामान्य छात्रों से पीछे होते हैं, पिछड़े बालक कहलाते हैं।

वर्तमान में अधिकतर विद्वान शैक्षिक पिछड़ेपन को शैक्षिक लब्धि के आधार पर निश्चित करते हैं। इसकी दृष्टि से जिन बालकों की शैक्षिक लब्धि 85 से कम हो, उन्हें पिछड़े बालकों की श्रेणी में रखा जाना चाहिए।

12.8.2 पिछड़े बालकों के लक्षण या विशेषताएँ

पिछड़े बालकों में निम्नलिखित लक्षण अथवा विशेषताएँ देखने को मिलती हैं–

1. पिछड़े बालकों का आधारभूत लक्षण यह है कि वे विद्यालयी विषयों के अध्ययन और क्रियाओं के प्रशिक्षण में अपनी कक्षा के औसत बालकों से पीछे होते हैं, उनकी शैक्षिक लब्धि औसत बालकों की शैक्षिक लब्धि से कम होती है।
2. पिछड़े बालक मानसिक रूप से अस्वस्थ होते हैं। वे विद्यालय में समायोजन नहीं कर पाते तथा संवेगात्मक रूप से असंतुलित एवं निराशाग्रस्त रहते हैं।
3. ऐसे बालक सामाजिक समायोजन बैठाने में भी कठिनाई का अनुभव करते हैं, उन्हे सदैव दूसरों की मित्रता और सहानुभूति की आवश्यकता होती है।
4. लगभग 20% पिछड़े बालक शारीरिक अक्षमता या दुर्बलता तथा बीमारी से ग्रसित दिखाई देते हैं।
5. इनकी सीखने और समझने की गति सामान्य छात्रों की अपेक्षा धीमी होती है।
6. ये बालक अधिक समय तक अपनी एकाग्रता को कायम नहीं रख सकते।
7. इनमें दूरदर्शिता की कमी होती है और असन्तोष की भावना शीघ्र ही प्रबल हो जाती है।
8. ये किसी भी समस्या पर सूक्ष्म रूप से विचार नहीं कर पाते और समस्या में उलझ कर रह जाते हैं।
9. ये बालक खेलकूद, सामाजिक आयोजनों, सेमिनार तथा प्रतियोगिताओं आदि में भी भाग लेने से कतराते हैं।
10. इन बालकों की बुद्धि लब्धि 75–90 के बीच होती है।
11. इनकी तर्क एवं विवेक शक्ति निम्न स्तर की होती है।
12. समाज तथा स्वयं के प्रति अयथार्थ पूर्ण रवैया रहता है।
13. शीघ्रता एवं शुद्धता से कार्य करने की क्षमता निम्न स्तर की होती है।
14. ये बालक कभी–कभी हिंसक, अपराधी तथा विद्रोही हो जाते हैं।

12.8.3 पिछड़े बालकों की पहचान

पिछड़े बालकों की पहचान सामान्य रूप से उनके आचरण एवं शैक्षिक उपलब्धि देखकर ही की जा सकती है, परन्तु कोई बालक क्यों और कितना पिछड़ा है, इसकी पहचान के लिये निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया जाता है–

1. सामान्य व्यवहार के निरीक्षण द्वारा
2. साक्षात्कार एवं मानक उपलब्धि परीक्षण द्वारा
3. रूचि, बुद्धि एवं व्यक्तित्व परीक्षण द्वारा
4. संचयी अभिलेख द्वारा
5. शैक्षिक लब्धि की गणना
6. अभिवृत्ति परीक्षण द्वारा
7. अभिभावक एवं मित्रों के अभिमत द्वारा

1. पिछड़ेपन के प्रकार

चूँकि बालक विभिन्न कारणों से पिछड़े हुये होते हैं, अतः उनके पिछड़ेपन के रूप भी अलग–अलग होते हैं। पिछड़े हुये बालकों का वर्गीकरण निम्न प्रकार का हो सकता है।

2. शारीरिक पिछड़ापन

जब शरीर के किसी अंग में खराबी या दोष होने के कारण बालक को सोचने, समझने, सीखने एवं कार्य करने में कठिनाई होती है, तो वह पिछड़ जाता है। आँख से ठीक से न देख पाना, कान से कम सुनाई देना, लंगड़ा होना, हकलाना आदि शारीरिक पिछड़ेपन के उदाहरण हैं।

3. शैक्षिक पिछड़ापन

कुछ बालक सामान्य बुद्धि एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ होने पर भी शिक्षा में रूचि नहीं रखते हैं। ऐसे बालक प्रायः कक्षा में पीछे बैठते हैं तथा अवांछित कार्य भी करने लगते हैं। ऐसे बालक शैक्षिक रूप से पिछड़े हुये कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त सामान्य बुद्धि के होते हुये भी कुछ विद्यार्थी शर्मीले, दब्बू एवं झेंपू होते हैं जो प्रायः शिक्षक की दृष्टि से बचने का प्रयास करते रहते हैं। ऐसे बालकों में भी शैक्षिक पिछड़ापन आ जाता है।

4. सामाजिक पिछड़ापन

इस प्रकार का पिछड़ापन समाज या राष्ट्र के पिछड़ेपन के कारण होता है। हमारे देश में जातिवाद, वर्गवाद, अंधविश्वास, कुरीतियाँ और प्रवृत्ति के कारण हमारे छात्र विकसित राष्ट्रों की तुलना में प्रगति में लगभग 50 से 100 तक पीछे हो जाते हैं।

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

5. मानसिक पिछड़ापन

कुछ बालकों में जन्म से ही बुद्धि कम होती है तथा अनेक प्रयासों के बाद भी उनकी बुद्धि का यथोचित विकास नहीं हो पाता है। बुद्धि लब्धि का 80 से कम होना मानसिक पिछड़ापन कहलाता है। इसके अन्तर्गत मंद बुद्धि, हीन बुद्धि, मूढ़ बुद्धि तथा जड़ बुद्धि बालक आते हैं।

6. संवेगात्मक पिछड़ापन

समुचित संवेगात्मक विकास न होने अथवा किसी दुर्घटनावश सांवेगिक असन्तुलन के कारण बालक कक्षा में ठीक से समायोजन नहीं बैठा पाते हैं तथा शिक्षा पर पूरी तरह एकाग्रचित्त नहीं रह पाते। माता-पिता तथा शिक्षक एवं सहपाठियों के प्रेम व सहानुभूति के अभाव में अपने को उपेक्षित समझने के कारण वे प्रायः निराश रहते हैं तथा अन्य विद्यार्थियों से पिछड़ जाते हैं। इसे संवेगात्मक पिछड़ापन कहा जाता है।

12.8.4 पिछड़ेपन या शैक्षिक मन्दता के कारण

कुप्पूस्वामी के शब्दों में-

> शैक्षिक पिछड़ापन अनेक कारणों का परिणाम है। अधिगम में मन्दता उत्पन्न करने के लिए अनेक कारक एक साथ मिल जाते है।

पिछड़ेपन या शैक्षिक मन्दता के प्रमुख कारण निम्नलिखित है-

1. सामान्य से कम शारीरिक विकास का होना

कुछ बालकों का वंशानुक्रम, वातावरण इत्यादि के प्रभावों के कारण सामान्य से कम शारीरिक विकास होता है। इस तरह के बालकों में शारीरिक तथा मानसिक शक्ति की न्यूनता होती है। परिणामतः वे सामान्य बालकों के समान शारीरिक तथा मानसिक परिश्रम नहीं कर सकने के कारण उनसे पीछे रह जाते हैं।

2. शारीरिक दोष का होना

कुछ बालकों में विभिन्न तरह के शारीरिक दोष होते हैं। जैसे- शारीरिक निर्बलता, कम सुनना, तुतलाना, हकलाना, बाँये हाथ से काम करना इत्यादि। इनमें से एक या अधिक शारीरिक दोष बालक को अधिक कार्य नहीं करने देते हैं। परिणामस्वरूप उसकी सीखने की गति मन्द रहती है तथा वह दूसरे बालकों से पिछड़ जाता है।

3. शारीरिक रोग का होना

कुछ बालकों में अस्वस्थ वातावरण, कुपोषण इत्यादि के कारण अनेकों शारीरिक रोग उत्पन्न हो जाते हैं, जैसे- खाँसी, नजला, टॉन्सिल, आँतों की गड़बड़ी, निर्बल पाचन-शक्ति, ग्रन्थियों का ठीक कार्य नहीं करना इत्यादि। ये रोग बालक की शक्ति को क्षीण कर देते हैं, जिसके फलस्वरूप वह थोड़ा सा कार्य करने के बाद ही सिर-दर्द तथा मानसिक थकान का अनुभव करने लगता है। परिणामस्वरूप वह कार्य को स्थगित कर देता है तथा कभी-कभी विद्यालय भी नहीं जा पाता है। ये दोनों बातें उसके पिछड़ेपन में योगदान प्रदान करती हैं।

4. निम्न सामान्य बुद्धि का होना

निम्न सामान्य बुद्धि शैक्षिक पिछड़ेपन तथा मन्दता का गंभीर कारण बेकार होता है। शोनेल का विचार है कि 65 प्रतिशत से 80 प्रतिशत तक पिछड़े बालक मन्दबुद्धि होते हैं तथा शेष को संवेगात्मक एवं सामाजिक असमायोजन के कारण शैक्षिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वैलेन्टाइन का कहना है कि

> बर्ट ने जितने पिछड़े बालकों का अध्ययन किया, उनमें से 95 प्रतिशत की बुद्धि, सामान्य बुद्धि से निम्न थी।

5. परिवार की निर्धनता का होना

परिवार की निर्धनता बालकों की शैक्षिक प्रगति पर तीन प्रकार के विपरीत प्रभाव डालती है। जैसे-

1. बालकों को पर्याप्त तथा पौष्टिक भोजन नहीं मिलता है। फलस्वरूप वे निर्बल हो जाते हैं तथा अधिक परिश्रम नहीं कर पाते हैं,
2. उनको शिक्षा की उत्तम सुविधायें तथा पठन-सामग्री के लिए काफी धन नहीं मिलता है। फलस्वरूप वे धनी परिवार के बालकों के समान शैक्षिक प्रगति नहीं कर पाते हैं,
3. उनको अपने परिवार की जीवन-सम्बन्धी आवश्यकताओं को जुटाने के लिए अपने माता-पिता के साथ या स्वतन्त्र रूप में कोई कार्य करना पड़ता है। फलस्वरूप उन्हें अध्ययन के लिए काफी समय नहीं मिल पाता है।

इस तरह परिवार की निर्धनता, बालकों के पिछड़ेपन की सीमा का विस्तार करती चली जाती है। फलस्वरूप बालक शिक्षा में पिछड़ते जाते हैं।

6. परिवार का बड़ा आकार का होना

कुछ परिवारों में सदस्यों की संख्या तो अधिक होती है लेकिन अनुपात में निवास स्थान का अभाव होता है। यह बात आधुनिक नगरों में विशेष रूप से दिखाई देती है। इस तरह के परिवारों में बालकों को अध्ययन के लिए एकान्त स्थान नहीं मिल पाता है। इसके अलावा उनमें हर घड़ी इतना कोहराम मचा रहता है कि बालकों का पूरी नींद सोना या आराम करना कठिन हो जाता है। ये दोनों कारण उनको अन्य बालकों से पीछे ढकेल देता हैं।

7. परिवार में झगड़ों का होना

कुछ परिवार के सदस्यों में एक-दूसरे से मेल करने का गुण नहीं होता है। अतः वे हमेशा किसी न किसी बात पर लड़ते झगड़ते रहते हैं। इसका फल यह होता है कि बालक चिन्ताग्रस्त तथा असुरक्षित दशा में रहते हैं। फलस्वरूप वे अपने ध्यान को अध्ययन पर केन्द्रित नहीं कर पाते हैं तथा कक्षा में पिछड़ जाते हैं।

8. माता-पिता की बुरी आदत का होना

कुछ माता-पिता ऐसे होते है, जिनमें अनेक बुरी आदतें होती हैं, जैसे-आलस्य, लापरवाही, कामचोरी इत्यादि। उनके हमेशा सम्पर्क में रहने के कारण उनकी बुरी आदतों का उनके बालकों पर काफी प्रभाव पड़ता है। परिणाम स्वरूप वे अध्ययन से जी चुराने लगते हैं, विद्यालय कार्य में लापरवाही करते हैं तथा नियमित रूप से कक्षा में उपस्थित नहीं रहते हैं। इन सब बातों का फल होता है शिक्षा प्राप्त करने में पिछड़ जाना।

9. माता-पिता का शिक्षित न होना

अशिक्षित माता-पिता शिक्षा के महत्त्व को नहीं समझने के कारण उसे अपने बालकों के लिए बेकार समझते हैं। इस तरह माता-पिता के बच्चों के सम्बन्ध में कुप्पूस्वामी ने कहा है कि ङ्ङ्ङऐसे माता-पिता के बच्चों में न केवल शैक्षिक पिछड़ेपन का विकास होता है, वरन् वे शीघ्र ही निरक्षर हो जाते हैं।फफ

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

10. माता–पिता का दृष्टिकोण

कुछ माता–पिता ऐसे होते है जो अपने बालकों के प्रति आवश्यकता से अधिक कठोर तथा कुछ उनकों आवश्यकता से अधिक लाड़–प्यार करते हैं। दोनों तरह के माता–पिता अपने बच्चों में स्वतंत्रता तथा आत्मविश्वास के गुणों का विकास नहीं होने देते हैं। इन गुणों के अभाव में शिक्षा में किसी प्रकार की प्रगति करना असम्भव होता है।

11. विद्यालय में अनुपस्थिति का होना

कुछ बालक ऐसे हैं अनेकों कारणों से विद्यालय में नियमित रूप से उपस्थित नहीं होते हैं, जैसे– बीमारी, देर से विद्यालय प्रवेश, पिता का एक स्थान से दूसरे स्थान पर तबादला आदि–आदि। उनकी अनुपस्थिति में इस तरह की अनेकों बातें पढ़ा दी जाती है, जिसको फिर कभी नहीं पढ़ाया जाता है। अतः इन बातों से बालकों का पिछड़ जाना स्वाभाविक होता है।

12. विद्यालयों का दोषपूर्ण संगठन एवम् वातावरण का होना

जिन विद्यालयों का संगठन तथा वातावरण दोषपूर्ण होता है, वे न केवल बालकों के शैक्षिक पिछड़ेपन में बल्कि शैक्षिक मन्दता में भी योगदान देते हैं। इस तरह के विद्यालयों में पाई जाने वाली कुछ अवांछनीय बाते हैं, जैसे–

1. पाठ्यक्रम के कठोर तथा संकीर्ण होने के कारण बालकों की आवश्यकताओं की आपूर्ति न होना।
2. अध्यापकों के कठोर व्यवहार के कारण बालकों में भय की उत्पत्ति,
3. अयोग्य अध्यापकों द्वारा अमनोवैज्ञानिक तथा परम्परागत शिक्षण विधियों का प्रयोग।
4. निर्देशन के अभाव के कारण बालकों के द्वारा गलत विषयों का चुनाव करना।
5. पुस्तकालय, प्रयोगशाला, पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं तथा शिक्षा की अन्य सुविधाओं के अभाव के कारण बालकों की रूचियों तथा क्षमताओं के विकास के लिए उचित अवसरों की अप्राप्ति।

ये सभी बातें किसी न किसी रूप में बालकों के पिछड़ेपन के लिये उत्तरदायी होती हैं।

12.8.5 पिछड़े बालकों की शिक्षा

शैक्षिक पिछड़ापन मुख्य रूप से आनुवंशिक और वातावरणीय कारणों से उत्पन्न होता है। आनुवांशिक कारणों को पूरी तरह दूर तो नहीं किया जा सकता किन्तु चिकित्सा तथा मनोवैज्ञानिक विधियों से उनमें यथासम्भव सुधार अवश्य किया जा सकता है परन्तु वातावरणीय कारणों पर हम समुचित शिक्षा व्यवस्था द्वारा पर्याप्त नियंत्रण स्थापित कर सकते हैं। इस विषय में कुप्पूस्वामी का निम्न कथन प्रेरणादायी हो सकता है–

> उपचार के तरीके चाहे जो भी हों, हमारा मुख्य कार्य एक बालक विशेष को उसकी परिस्थितियों और प्राकृतिक योग्यताओं द्वारा निश्चित की गई सीमाओं को ध्यान में रखते हुये स्थिति की माँगों से पर्याप्त समायोजन स्थापित करने में सहायता प्रदान करना है।

पिछड़े बालकों को यदि उचित प्रोत्साहन दिया जाये तो उनमें से बहुतों को सामान्य की श्रेणी में लाया जा सकता है। जैसा कि स्टोन्स ने कहा है–

> आजकल पिछड़ेपन के क्षेत्र में किया जाने वाला अधिकांश अनुसंधान यह सिद्ध करता है कि उचित ध्यान दिये जाने पर पिछड़े बालक शिक्षा में प्रगति कर सकते हैं।

अतः पिछड़े हुये बालकों की शिक्षा व्यवस्था तथा उनके पिछड़ेपन को दूर करने के लिये निम्नलिखित उपाय किये जाने चाहिए–

1. पिछड़ेपन की मात्रा और कारणों का पता लगाना

सर्वप्रथम पिछड़े बालकों की मनोवैज्ञानिक परीक्षणों, उपलब्धि परीक्षओं एवं चिकित्सीय जाँच द्वारा उनके पिछड़ेपन की वास्तविक मात्रा एवं कारणों की सही जानकारी प्राप्त करनी आवश्यक है।

2. व्यक्तिगत ध्यान

पिछड़े बालकों की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि ये बालक सम्पन्न बालकों से बहुत पीछे रह जाते हैं और अध्यापक द्वारा दिया गया सामूहिक निर्देशन समझ नहीं पाते हैं। इसके अतिरिक्त इनमें हीन–भावना की ग्रन्थियाँ भी विकसित हो जाती हैं जिसके कारण ये बालक अध्यापक के पास जाते हुये झिझकते हैं। अतः इनकी ओर व्यक्तिगत ध्यान देकर इनकी कुछ हद तक सहायता की जा सकती है।

3. विशेष स्कूलों एवं कक्षाओं की व्यवस्था

पिछड़े बालकों की शिक्षा के लिये विशेष स्कूलों या विशेष कक्षाओं की व्यवस्था से भी इस समस्या पर नियंत्रण पाया जा सकता है। ऐसे छात्रों पर विशेष ध्यान देने के लिये इनकी कक्षा में अधिक से अधिक 20 छात्र होने चाहिए जहाँ ये बालक अपनी रूचि, आवश्यकता व परिस्थिति के अनुरूप शिक्षा प्राप्त कर सकें।

4. विशेष शिक्षण विधि

पिछड़े हुये बालकों के लिये विशेष शिक्षण विधि होनी चाहिए, जिसमें निम्न विशेषताएँ होनी चाहिए–

1. शिक्षण की गति धीमी हो।
2. पाठ की पुनरावृत्ति बार–बार की जाए।
3. स्कूल सामग्री का प्रयोग करने के अवसर दिये जाए।
4. अर्जित ज्ञान का प्रयोग करने के अवसर दिये जाए।
5. शारीरिक क्रियाओं पर बल दिया जाए।
6. योजना विधि को अपनाया जाए आदि।

5. बोधगम्य पाठ्यक्रम

इन बालकों के लिये अलग से सरल एवं बोधगम्य पाठ्यक्रम निर्धारित किए जाने चाहिए जिनका उद्देश्य उन्हें कुशल नागरिक एवं कार्यकर्त्ता बनाना हो।

6. योग्य एवं कर्मठ शिक्षकों की नियुक्ति

पिछड़े बालकों को पढ़ाने के लिये योग्य और प्रशिक्षित शिक्षक होने चाहिए। इन शिक्षकों को विद्यार्थियों से निकट सम्पर्क स्थापित करना चाहिए और इनका व्यवहार अत्यन्त प्रेमपूर्ण, धैर्यपूर्ण एवं सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए। बर्ट के शब्दों में–

> पिछड़े बालकों का शिक्षक साहित्यिक रूचियों वाला मनुष्य होने के बजाय व्यावहारिक मनुष्य होता है। उसकी रूचियाँ पुस्तकीय होने की बजाय मूर्त होती हैं और उनमें शारीरिक कार्य करने की योग्यता होती है

7. हस्त उद्योग

पिछड़े बालक चूँकि शैक्षणिक तौर पर पीछे रह जाते हैं जिसकी वजह से वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सफल नहीं हो पाते अतः उन्हें हस्त–उद्योगों का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इससे उनमें आत्मविश्वास जगेगा और स्कूल की शिक्षा

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

पूरी करने के पश्चात् वे किसी व्यवसाय को शुरू करके स्वयं को स्थापित कर सकते हैं।

8. समाजीकरण में सहायता

पिछड़े बालकों के समुचित विकास के लिये इनका समाजीकरण किया जाना बहुत आवश्यक है। घर और स्कूल में कुसमायोजित बालकों के पुनः समायोजन में अध्यापक सहायता कर सकते हैं। वे उनके माता–पिता से सम्पर्क स्थापित करके और मानसिक तनावों को जानकर स्नेह, प्यार और सुरक्षा तथा विश्वास दिखाकर उनका समायोजन करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। स्किनर व हैरीमैन के शब्दों में–

> पिछड़े बालकों के लिये अध्ययन के विषयों को सामाजिक वातावरण से सम्बन्धित होना चाहिए। इनकी शिक्षा का उद्देश्य बालक में सामाजिकता उत्पन्न करना है।

9. पाठ्य सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था

बालकों के पिछड़ेपन पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिये पाठ्यक्रम के अतिरिक्त पाठ्य–सहगामी क्रियाओं, जैसे–खेल व नाटक प्रतियोगिता, संगीत, कला सिखाने की व्यस्स्था, ध्यान व योग आदि की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि पिछड़े बालक अपनी अन्य योग्यताओं का विकास कर सकें।

10. शिक्षा मनोवैज्ञानिकों की सहायता लेना

पिछड़े बालकों की शिक्षा के लिये अनुभवी शिक्षा मनोवैज्ञानिकों की सेवायें ली जा सकती हैं। ये शिक्षा मनोवैज्ञानिक बालकों और उनके माता–पिता को समय–समय पर आवश्यकतानुसार उचित राय देकर उन्हें पिछड़ेपन से मुक्ति दिला सकते हैं।

11. शैक्षिक व व्यावसायिक निर्देशन की व्यवस्था

पिछड़े बालकों की शिक्षा के लिये विद्यालय में निर्देशन सेवाओं का संगठन किया जाना चाहिए। इससे बालक अपनी शैक्षिक और व्यावसायिक रूपरेखा का समाधान करके सामान्य बालकों की श्रेणी में समायोजित हो सकेंगे।

12. वातावरण सम्बन्धी कारकों पर नियन्त्रण

बालक के सामाजिक, पारिवारिक, मानसिक, संवेगात्मक वातावरण आदि में आवश्यक सुधार करके भी इनके पिछड़ेपन की रोकथाम की जा सकती है, जैसे– इन बालकों के संगी–साथी समुदाय, आस–पड़ोस, सामान्य आदतें, पढ़ाई का ढंग, माता–पिता की शिक्षा आदि।

इस प्रकार पिछड़ेपन के कारणों के निदान, शारीरिक दोषों एवं रोगों के उपचार, पृथक् कक्षा की व्यवस्था, योग्य अध्यापक, सरल पाठ्यक्रम, रुचिकर शिक्षण व्यवस्था, व्यक्तिगत ध्यान, प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार, विशेष प्रोत्साहन, आर्थिक सहायता आदि के माध्यम से पिछड़े बालकों के पिछड़ेपन को दूर किया जा सकता है तथा उनकी शिक्षा की समुचित व्यवस्था की जा सकती है।

12.9 मन्दबुद्धि बालक

इस दुनिया में सामान्य बालकों के अतिरिक्त कुछ ऐसे बालक भी होते हैं जो जन्म से ही बौद्धिक विकास की दृष्टि से कमजोर होते हैं। अपनी बौद्धिक क्षीणता के कारण ही ये बालक अपना दैनिक जीवन भी सामान्य बालकों की तरह नहीं जी पाते। यहाँ तक कि अपनी दैनिक आवश्यकताओं जैसे– नहाना–धोना, भोजन करना, कपड़े पहनना, साफ–सफाई तथा सुरक्षा आदि की पूर्ति के लिये भी इन्हें दूसरों का सहारा लेना पड़ता है। सामान्यतः ऐसे बालकों को मन्दबुद्धि कहा जाता है, किन्तु मानसिक रूप से विकलांग होने के कारण इन्हें मानसिक विकलांग बालक भी कहा जाता है।

12.9.1 मन्द बुद्धि बालक का अर्थ एवं परिभाषा

मन्दबुद्धि बालकों या मन्दबुद्धिपन से अभिप्राय उन बालकों से है जो किसी भी शारीरिक तथा मानसिक रोग के कारण मन्दबुद्धि का प्रदर्शन करते हैं और अपनी आयु के स्तर के अनुसार किसी भी कार्य को करने में असमर्थ होते हैं। मन्दबुद्धि अथवा मानसिक मन्दता को प्रायः बुद्धि परीक्षणों पर बालकों द्वारा किये गये कार्यों के आधार पर परिभाषित किया जाता है। मानसिक मन्दता का पता लगाने के लिये विलियम स्टर्न द्वारा दिये गये बुद्धि लब्धि के सुझाव और टर्मन द्वारा प्रस्तुत किये गये बुद्धि लब्धि के सूत्र के आधार पर कहा जा सकता है कि सामान्य बुद्धि वाले बालकों की बुद्धि लब्धि 90 से 100 के मध्य होती है। जिन बालकों की बुद्धि लब्धि 90 से कम होती है, उन्हें मन्द बुद्धि कहा जाता है और जिनकी बुद्धि लब्धि 90 से जितनी कम होती जाती है, सम्बन्धित बालक की मानसिक मन्दता भी उतनी ही अधिक मानी जाती है।

इस प्रकार मानसिक रूप से पिछड़े या मन्द बुद्धि बालकों की मानसिक योग्यतायें सामान्य बालकों की तुलना में इतनी कम होती हैं कि उन्हें वातावरण के साथ समायोजन बैठाने में अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

बुद्धि लब्धि के आधार पर तय किया हुआ उपरोक्त वर्गीकरण सभी के द्वारा तय किया हुआ वर्गीकरण नहीं है। बुद्धि लब्धि की सीमाएँ विभिन्न हैं, लेकिन सभी इस बात से सहमत हैं कि इन बालकों का बौद्धिक अथवा मानसिक विकास सामान्य बालकों की तुलना में बहुत कम होता है। ये बालक मानसिक क्रियाओं में सामान्य बालकों की बराबरी कभी नहीं कर सकते।

अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ मेण्टल डेफीशिएन्सी द्वारा दी गई परिभाषा से मानसिक मन्दता को और भी अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है–

> मानसिक पिछड़ेपन से तात्पर्य सार्थक रूप से औसत से कम सामान्य बौद्धिक कार्यपरकता से है जो अनुकूलन व्यवहार में कमी के सहगामी के रूप में विद्यमान होती है तथा विकासात्मक अवस्था में परिलक्षित होती है।

1. कुप्पूस्वामी के अनुसार–

> शैक्षिक पिछड़ापन अनेक कारणों का परिणाम है। अधिगम में मन्दता उत्पन्न करने के लिये अनेक कारक एक साथ मिल जाते हैं।

2. ई.ए.डॉल के अनुसार–

> मानसिक कमजोरी सामाजिक अयोग्यता की एक ऐसी अवस्था है जो परिपक्वता के साथ उत्पन्न होती है और बुद्धि का विकास रूकने के परिणामस्वरूप होती है। इसका कारण शारीरिक है। इसे उपचार या प्रशिक्षण के द्वारा ठीक नहीं किया जा सकता।

3. क्रो एवं क्रो के अनुसार–

> जिन बालकों की बुद्धि–लब्धि 70 से कम होती है, उनको मन्द–बुद्धि बालक कहते हैं।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

4. पेज के अनुसार–

पेज ने मानसिक मन्दता को मानसिक अल्पता के रूप में इस प्रकार व्यक्त किया है–

> मानसिक अल्पता सामान्य से निम्न स्तरीय मानसिक विकास की वह दशा है जो बालक में जन्म से ही विद्यमान होती है अथवा प्रारम्भिक बाल्यकाल में उत्पन्न होती है तथा मुख्यतः सीमित बुद्धि एवं सामाजिक अपर्याप्तता के द्वारा परिलक्षित होती है।

5. पोलॉक के अनुसार–

आधुनिक समय में मन्दबुद्धि बालकों से सम्बन्धित उपर्युक्त धारणा में अत्यधिक परिवर्तन हो गया है। इस पर प्रकाश डालते हुए पोलॉक ने कहा है कि

> मन्दबुद्धि बालक को अब क्षीण बुद्धि बालकों के समूह में नहीं रखा जाता है, जिनके लिए कुछ भी नहीं किया जा सकता है। अब हम यह स्वीकार करते हैं कि उनके व्यक्तित्व के उतने ही विभिन्न पहलू होते हैं, जितने सामान्य बालकों के व्यक्तित्व के होते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मन्दबुद्धि बालकों से तात्पर्य उन बालकों से है जिनका मस्तिष्क और बुद्धि इतने कम विकसित होते हैं कि उनमें अनेक मानसिक क्षमताएँ कम विकसित हो पाती हैं और उन्हें पढ़ने–लिखने व समायोजन करने में इतनी कठिनाई होती है कि वे अपने सामान्य जीवन से सम्बन्धित कार्यों जैसे–नित्यकर्म, भोजन, सफाई आदि को करने में असमर्थ होते हैं। ऐसे बालकों का व्यवहार उनके लघु बौद्धिक स्तर का परिचायक होता है।

12.9.2 मन्दबुद्धि बालकों के लक्षण अथवा विशेषताएँ

मन्दबुद्धि बालकों को पहचानने के लिये उनकी विशेषताओं का जानना अत्यन्त आवश्यक हैं। मन्दबुद्धि बालकों की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. इनकी बुद्धि लब्धि 50–75 के बीच होती है।
2. मन्दबुद्धि बालकों में सीखने की क्षमता एवं गति सीमित होती है। ये प्रायः हर कार्य, जैसे– उठना–बैठना, चलना, बोलना सब देर से सीखते हैं।
3. इनमें आत्मविश्वास की कमी होती है एवं संवेगात्मक अस्थिरता पाई जाती है।
4. ऐसे बालकों में शारीरिक एवं वाणी सम्बन्धी दोष पाये जाते हैं।
5. ऐसे बालक सीखी गई बात को नवीन परिस्थितियों में प्रस्तुत करने में प्रायः कठिनाई का अनुभव करते हैं।
6. इनकी मानसिक शक्तियाँ जैसे– चिन्तन, तर्क, कल्पना, विश्लेषण, प्रत्यक्षीकरण, निर्णय क्षमता आदि निम्न स्तर की होती हैं।
7. इनकी मानसिकता स्थायी होती है जिसे उपचार या प्रशिक्षण द्वारा ठीक किया जा सकता है।
8. ये कार्य–कारण सम्बन्धों को समझने में भी असमर्थ होते हैं।
9. ये स्वकेन्द्रित होते हैं तथा अन्य व्यक्तियों या परिजनों की चिन्ता किये बिना केवल अपनी आवश्यकताओं की चिन्ता करते हैं।
10. ऐसे बालकों में मौलिकता एवं सृजनात्मकता का अभाव होता है।
11. ऐसे बालको को प्रत्यक्ष अनुभवों के द्वारा ही कुछ समझाया जा सकता है। इनमें सामान्यीकरण करने की योग्यता भी नहीं होती ।
12. स्कूलों में इनका अधिगम बहुत धीमा होता है जिसके कारण ये निरूत्साहित एवं परेशान हो जाते हैं तथा फिर इन बालकों में स्कूल के प्रति अरूचि का विकास होना स्वाभाविक है।
13. इनकी शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करके इनकी समायोजन क्षमता को बढ़ाया जा सकता है।
14. मन्दबुद्धि बालक अत्यधिक भावुक होते हैं एवं इनका संवेगात्मक नियंत्रण भी बहुत कमजोर होता है।
15. इन्हें सामान्य प्रशिक्षण के द्वारा किसी व्यवसाय के योग्य भी बनाया जा सकता है।
16. मन्दबुद्धि बालक वातावरण के साथ समायोजन सामान्य रूप से नहीं कर पाते हैं।
17. ऐसे बालकों का पारिवारिक, विद्यालयी, सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन सन्तोषजनक नहीं होता है।

12.9.3 मन्दबुद्धि बालकों के प्रकार

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अपने–अपने तरीकों से मन्दबुद्धि बालकों का वर्गीकरण किया है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने चिकित्सा विज्ञान की प्रणाली द्वारा इनका वर्गीकरण किया है। कुछ ने बुद्धि परीक्षणों के आधार पर इन्हें मोरोन्स इम्बेसाइल्स और ईडियट्स के रूप में वर्गीकृत किया है। कुछ मनोवैज्ञानिक इनके वर्गीकरण का आधार समायोजित अथवा अनुकूलित व्यवहार मानते हैं।

वर्तमान समय में समायोजित व्यवहार में कमी और कम बुद्धि–लब्धि दोनों के आधार पर इनका वर्गीकरण किया गया है और शैक्षिक दृष्टि से यह वर्गीकरण उत्तम है। इसे निम्नांकित सारणी में प्रदर्शित किया गया है–

मानसिक मन्दता का स्तर एवं बुद्धि–लब्धि

क्र. सं.	मानसिक मन्दता का स्तर	बुद्धि–लब्धि	
		साइमन–बिने	वैश्लर
1.	अत्यन्त गम्भीर मानसिक मन्दता	20 से नीचे	25 से नीचे
2.	गम्भीर मानसिक मन्दता	20–30	25–39
3.	साधारण मानसिक मन्दता	36–51	40–54
4.	अल्प मानसिक मन्दता	52–67	55–69

1. अल्प मानसिक मन्दता

मन्दबुद्धि बालकों में 85% बालक इस प्रकार की मन्दता से ग्रसित होते हैं। जैसे–जैसे ये बालक बड़े होते हैं, इनकी बुद्धि औसतन 10 वर्ष के सामान्य बालक की बुद्धि के बराबर हो जाती है। इनमें सामाजिक समायोजन की क्षमता वयस्क व्यक्ति की ही तरह होती है, लेकिन इनमें तर्क, चिन्तन, समस्या समाधान एवं सृजनशीलता आदि मानसिक क्षमताओं की कमी होती है। ये बालक अपनी प्रारम्भिक अवस्था (शिशु–बाल्यावस्था) में अपने दैनिक जीवन सम्बन्धी कार्यों को करने का कौशल सामान्य बालकों से एक वर्ष बाद अर्जित करते हैं। विद्यालय में इन्हें मन्द गति से सीखने वाले बालकों के रूप में पहचाना जा सकता है।

2. सामान्य मानसिक मन्दता

कुल मन्द बुद्धि बालकों में से 10% बालक सामान्य मानसिक मन्दता से ग्रस्त होते हैं। ये बालक अपनी वयस्कावस्था प्राप्त करने पर 6 वर्ष के सामान्य बालक

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

की बुद्धि के स्तर को प्राप्त कर लेते हैं। इन बालकों को विभिन्न प्रकार के कौशल, जिन्हें दैनिक चर्या के लिए आवश्यक माना जाता है, का प्रशिक्षण दिया जा सकता है। ये दिखने में कुरूप होते हैं और सामान्यतः सभी क्षेत्रों में इनकी मन्दता दिखाई देती है। ये बोलने का प्रयास तो करते हैं, लेकिन सीखने की गति अत्यन्त धीमी होती है। ये बालक ऐसा कोई भी कार्य नहीं कर सकते, जिसमें पहल, मौलिकता, अमूर्त चिन्तन, स्मृति, सतत् अवधान और पढ़ने एवं सीखने के कौशलों की आवश्यकता होती है।

3. गम्भीर मानसिक मन्दता

इन बालकों का प्रतिशत कुल मन्द बुद्धि बालकों में 3.5 होता है। इनकी बुद्धि 4 वर्ष के बालक की बुद्धि के स्तर से आगे नहीं बढ़ती है। ये बालक जन्म के बाद से ही मन्दित दिखाई देते हैं। इन बालकों में इन्द्रियजन्य ग्राह्यता में कमी दिखाई देती है और अपने आस-पास के पर्यावरण में इनकी कोई रूचि नहीं होती है। ये बालक अपने सामान्य काम-काज के कौशलों को भी अर्जित नहीं कर पाते। इन बालकों को न तो शिक्षित किया जा सकता है और न ही किसी प्रकार का प्रशिक्षण दिया जा सकता है। अधिकतर ये बालक दूसरों पर ही निर्भर रहते हैं।

4. अत्यन्त गम्भीर मानसिक मन्दता

इनका प्रतिशत 1.5 होता है। ये बालक अपनी पूर्ण वयस्क अवस्था तक दो वर्ष से अधिक सामान्य बालक के बराबर के बुद्धि स्तर को भी नहीं प्राप्त कर सकते। ये बालक बौद्धिक क्षमता एवं समायोजन दोनों में ही असमर्थ होते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में इन चार प्रकार के बालकों को तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं-

1. शिक्षा पाने योग्य
2. प्रशिक्षण योग्य
3. पूर्ण रूप से दूसरों पर निर्भर रहने वाले

12.9.4 मन्दबुद्धि बालकों की पहचान

मन्दबुद्धि बालकों को सामान्यतया उनके विशिष्ट लक्षणों या विशेषताओं, उनकी बातचीत, उठने-बैठने, खाने-पीने तथा पढ़ने-लिखने आदि बाह्य व्यवहारों का निरीक्षण करके आसानी से पहचाना जा सकता है। किन्तु शिक्षा मनोविज्ञान केवल उनकी पहचान तक ही सीमित न रहकर उनकी शिक्षा और समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाने की विधियों का भी अध्ययन करता है, इसलिये ऐसे बालकों की बौद्धिक मन्दता की पहचान वैज्ञानिक विधियों से की जानी आवश्यक है। इनकी पहचान के लिये निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का प्रयोग किया जा सकता है-

1. सामान्य अवलोकन

मन्दबुद्धि बालकों के कुछ प्रमुख लक्षण सामान्य अवलोकन अर्थात् उनके कार्य एवं व्यवहार को देखकर ही पता चल जाते हैं। जैसे-

1. विद्यालय तथा समाज में विभिन्न कार्यों को सफलतापूर्वक न कर पाने के कारण ये हीन-भावना से ग्रस्त हो जाते हैं।
2. ऐसे बालक किसी भी कार्य को सीखने में अधिक समय लेते हैं।
3. किसी बात को याद करने के लिये इन्हें बहुत बार दोहराना पड़ता हैं।
4. ये अपने संवेगों पर नियंत्रण नहीं रख पाते हैं।
5. इनकों समायोजन करने में भी कठिनाई होती हैं।
6. ये नवीन संकल्पनाओं और चिन्तन के लिये अयोग्य होते हैं।
7. ये बालक बौद्धिक कार्यों की अपेक्षा शारीरिक कार्य करने में अधिक रूचि दिखाते हैं।

2. व्यवस्थित अवलोकन

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित विधियों के द्वारा मन्दबुद्धि की पहचान की जा सकती है-

1. माता-पिता तथा अभिभावकों द्वारा अनुभूत व्यवहार एवं व्यापक अवलोकन
2. विद्यालय और मनोविज्ञान केन्द्रों में किया जाने वाला निरीक्षण
3. शिक्षक एवं सहपाठियों द्वारा की गई टिप्पणियाँ, आकलन एवं निर्णय
4. बुद्धि परीक्षण
5. संचयी अभिलेख
6. एनेक्डॉटल अभिलेख
7. साक्षात्कार
8. व्यक्ति इतिहास विधि

12.9.5 मानसिक मन्दता के कारण

मनुष्य का मानसिक विकास मूलरूप से दो तत्त्वों पर निर्भर करता है- वंशानुक्रम और पर्यावरण। अतः बालकों की मानसिक मन्दता के कारण भी काफी हद तक इन्हीं कारकों में निहित हैं। मनोवैज्ञानिकों एवं शरीरशास्त्रियों के मतानुसार मानसिक मन्दता जैविक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक दोनों प्रकार के कारकों का परिणाम है। जैविक कारक जन्मजात होते हैं तथा सामाजिक-सांस्कृतिक कारक वातावरण से सम्बन्धित होते हैं। मानसिक पिछड़ेपन के लिये मुख्य रूप से उत्तरदायी कारकों का वर्णन निम्नलिखित है-

1. आनुवंशिक कारक

अनेक मनोवैज्ञानिकों ने शोध के आधार पर यह ज्ञात किया है कि व्यक्ति की बुद्धि पर उसके वंशानुक्रम का पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। गर्भ में आने के समय ही शिशु माता-पिता से उन गुणसूत्रों को ग्रहण करता है, जिनमें उसके शारीरिक, मानसिक विकास की सम्पूर्ण शक्ति निहित होती है। अतः कोई बालक मन्द बुद्धि का होगा या तीव्र बुद्धि का, यह बहुत कुछ उसे माता-पिता से किस प्रकार के गुणसूत्र या जीन्स प्राप्त हुये हैं, पर निर्भर करता है। बुद्धि सम्बन्धी दोषपूर्ण गुणसूत्रों के प्राप्त होने से बालक का स्वस्थ मानसिक विकास नहीं हो पाता जिससे उसमें मानसिक मन्दता आ जाती है। कभी-कभी उच्च बुद्धि के माता-पिता की संतानें भी मन्दबुद्धि हो जाती हैं, यह सब जीन्स पर निर्भर करता है।

2. वातावरणीय कारक

पर्यावरण या वातावरण एक व्यापक शब्द है। इसमें बालक के गर्भकाल से लेकर बाल्यकाल तक के अनेक कारक सम्मिलित होते हैं जिनका वर्णन निम्नलिखित है-

1. **अपरिपक्व जन्म** - अपरिपक्व जन्म लेने वाले बच्चों का शारीरिक भार औसत से कम होता है तथा उनमें कुछ स्नायुविक विकृतियाँ भी होती हैं। अतः समय से पूर्व पैदा होने वाले बच्चों में मानसिक दुर्बलता विकसित होने की सम्भावना अधिक होती है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

2. **भौतिक आघात या चोट** – बालक का जन्म होते समय या बाद में किसी प्रकार की लापरवाही होने या दुर्घटनावश चोट आदि लग जाने के कारण शिशु का मस्तिष्क क्षतिग्रस्त हो सकता है जिससे उसमें मानसिक मन्दता उत्पन्न हो सकती है। जन्म के बाद सिर में गंभीर चोट लगने से भी बालकों का मानसिक विकास मन्द पड़ जाता है।
3. **कुपोषण** – शिशु जब माँ के गर्भ में होता है तो उसका पोषण माँ के शरीर द्वारा होता है। उस दौरान माँ के भोजन में विटामिन, प्रोटीन एवं खनिज तत्त्वों की कमी होने पर माँ के साथ-साथ शिशु को भी पोषक तत्त्व प्राप्त नहीं हो पाते जिससे उसका समुचित विकास नहीं हो पाता तथा उनमें मानसिक दुर्बलता आ जाती है। यदि जन्म के बाद भी बालक का खान-पान व पालन-पोषण उचित विधि से नहीं किया जाता, तब भी बालक की बुद्धि का विकास अवरूद्ध हो जाता है।
4. **ग्रन्थीय विकार** – शरीर शास्त्रियों ने अपने अध्ययनों से यह निष्कर्ष प्राप्त किया है कि गर्भकाल में माता की संवेगात्मक अनुभूतियों का सीधा प्रभाव गर्भस्थ शिशु की ग्रन्थियों पर पड़ता है। ग्रन्थियों का स्त्राव उनकी क्रियाशीलता को प्रभावित करता है। परिणामस्वरूप बच्चे में विभिन्न प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक दोष उत्पन्न हो जाते हैं।
5. **माता-पिता की आयु एवं स्वास्थ्य** – गर्भाधान के समय माता-पिता की आयु बहुत कम या अधिक होने से बालक में बौद्धिक मंदता होने की सम्भावना रहती है। इसके अतिरिक्त यदि गर्भवती माता को पहले से ही कोई संक्रामक रोग है, तो भी इसका प्रभाव गर्भस्थ शिशु पर पड़ता है। ऐसी स्थिति में जन्म के बाद बालक के संक्रामक रोगों से ग्रसित होने की सम्भावना बढ़ जाती है। संक्रामक रोगों से बच्चों में मानसिक दुर्बलता आ जाती है। इसी प्रकार यदि गर्भवती स्त्री पर बार-बार एक्स-रे का प्रयोग किया जाता है, तो गर्भस्थ शिशु पर इसके विकिरण का सीधा प्रभाव पड़ता है, परिणामस्वरूप उसकी कोशिकाओं पर बुरा असर पड़ने के कारण अनेक शारीरिक एवं मानसिक विकृतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।
6. **पारिवारिक वातावरण** – परिवार का दूषित वातावरण भी बालकों के बौद्धिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। माता-पिता द्वारा बच्चों को बहुत अधिक पीटना, उनको उपेक्षित व तिरस्कृत करना, पारिवारिक कलह, झगड़े, आपराधिक गतिविधियाँ, अशिक्षा, निर्धनता आदि कुछ ऐसे कारक हैं, जो बालक में बौद्धिक मन्दता उत्पन्न कर सकते हैं। वाइज ने अपने एक अध्ययन में पाया कि अधिकांश मंदबुद्धि बालकों को परिवार में बहुत कम सुविधायें उपलब्ध थी।

3. संवेगात्मक कारक

मानसिक पिछड़ेपन का शैक्षिक उपलब्धि का पक्ष गहरे संवेगात्मक कारकों के कारण होता है। संवेगों पर नियन्त्रण न कर पाने पर मानसिक सन्तुलन बिगड़ जाता है और बालक कहीं भी समायोजन नहीं कर पाते।

4. सामाजिक-सांस्कृतिक कारक

कुछ समाज शास्त्रियों का मत है कि मानसिक पिछड़ापन परिवार की आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के परिणामस्वरूप होता है। सुविधा-सम्पन्न जीवन, मानव का सभ्य समाज, पुरस्कार व दण्ड का मनोवैज्ञानिक प्रावधान आदि एक ओर यदि बालक का मानसिक विकास करते हैं, तो इनकी अनुपस्थिति मानसिक विकास को भी अवरूद्ध कर देती है।

उपर्युक्त कारकों में से कोई भी कारक मानसिक पिछड़ेपन या मन्दबुद्धिपन को उत्पन्न करने के लिये क्रियाशील हो सकता है। ऐसे बालकों का इलाज सम्भव नहीं होता क्योंकि इस प्रकार के पिछड़ेपन के प्रभाव स्थायी होते हैं। शिक्षा के रूप में इन बालकों को उनके समायोजन के लिये उचित प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

12.9.6 मन्दबुद्धि बालकों की शिक्षा

मन्दबुद्धि बालकों के लिये सामान्य शिक्षा लाभदायक नहीं होती हैं। अतः उन्हें किस प्रकार की शिक्षा दी जाये यह एक विचारणीय प्रश्न है। विकसित देशों में ऐसे बालकों की शिक्षा के लिये अनेक प्रकार के प्रयास किये जा रहे हैं किन्तु हमारे देश में अभी इन बालकों के लिये आवश्यक विशिष्ट शिक्षा कार्यक्रमों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा रहा है। मन्दबुद्धि बालकों की शिक्षा का प्रबन्ध करने के लिये सर्वप्रथम इनकी बौद्धिक मन्दता की वास्तविक पहचान इनके लक्षणों और बुद्धि लब्धि के मापन द्वारा की जाती है। इसके बाद इन्हें दो श्रेणियों में रखकर तदनुरूप शिक्षा की व्यवस्था निम्न प्रकार की जाती है-

1. शिक्षा ग्रहण करने योग्य मंद बुद्धि बालकों की शिक्षा

ऐसे छात्रों की बुद्धि लब्धि 50-90 के मध्य हो सकती है। अतः इनकी शिक्षा के लिये निम्न प्रबन्ध किये जाने चाहिए-

1. इनके लिये पृथक् आवासीय विद्यालय होने चाहिए। ऐसे बालकों की कक्षा में केवल 15-20 छात्र-छात्रायें होने चाहिए, जिससे उन पर व्यक्तिगत ध्यान दिया जा सके।
2. इनके लिये प्रशिक्षित एवं योग्य आया, शिक्षक एवं कर्मचारियों से युक्त विद्यालयों का प्रबन्ध किया जाना चाहिए।
3. इनको पढ़ाने-सिखाने में प्रत्यक्ष विधि का प्रयोग करना चाहिए और साथ ही दृश्य-श्रव्य साधनों का विशेष रूप में प्रयोग करना चाहिए।
4. इनकी शिक्षा में धैर्य व समय की आवश्यकता होती है। ऐसे बालकों के साथ प्रेम, सहानुभूति और सहयोगपूर्ण व्यवहार किया जाये तथा समस्याओं का तुरन्त समाधान किया जाए।
5. इनका पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ तथा उद्देश्य पृथक् रूप से निर्धारित किये जाने चाहिए। इनकी शिक्षा व्यवस्था में अभिभावकों का सक्रिय सहयोग अत्यन्त आवश्यक है।
6. इनकी शिक्षा, पर्यटन, भ्रमण आदि के लिये विभिन्न शैक्षिक एवं समाजसेवी संस्थाओं का सहयोग भी लिया जा सकता है।
7. ऐसे बालकों को परीक्षा के भय से मुक्त रखना चाहिए। इनका मूल्यांकन इनकी निष्पादन गतिविधियों में होने वाले सुधार के आधार पर किया जाना चाहिए।

2. प्रशिक्षण योग्य मंद बुद्धि बालकों की शिक्षा

इन बालकों की बुद्धि लब्धि 25-50 के मध्य होती है, अतः इन्हें किसी भी दशा में सामान्य बालकों के साथ शिक्षित नहीं किया जा सकता। ऐसे बालकों की शिक्षा निम्नलिखित रूप में की जानी चाहिए-

1. इन बालकों के लिये पृथक् आवासीय विद्यालय होने चाहिए।

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

2. इनकी समुचित शिक्षा प्रशिक्षण पर आधारित होती है इसीलिये इनके पाठ्यक्रम में दस्तकारी, हस्तकौशल और विभिन्न उपयोगी वस्तुओं के निर्माण का प्रशिक्षण प्रदान करने वाली क्रियाओं को प्रमुखता दी जानी चाहिए।
3. इनके विद्यालयों में हस्तकौशल सिखाने के लिये प्रशिक्षित प्रशिक्षकों के साथ-साथ हस्तकौशल सम्बन्धी कच्चा माल एवं कार्यशाला होनी चाहिए।
4. इनके लिये स्थूल व आकर्षक सहायक सामग्री का प्रयोग किया जाना चाहिए।
5. इन बालकों को भाषा सम्बन्धी क्रियाओं जैसे-बोलना, लिखना, सुनना आदि में प्रशिक्षण प्रदान करने के लिये भाषा प्रयोगशाला जैसी आधुनिक शैक्षिक तकनीक का प्रयोग किया जाना चाहिए।
6. इन बालकों को दैनिक जीवन के आवश्यक एवं जीवनोपयोगी कार्यों जैसे- अपना नाम लिखना, हस्ताक्षर करना, बाजार से सामान लाना, छोटा-मोटा हिसाब करना आदि में प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
7. इन्हें विभिन्न प्रकार के साधारण रोजगार सम्बन्धी कार्यों में सहयोग करने के लिये प्रेरित करना चाहिए।

मानसिक पिछड़ेपन के अध्ययन से यह बात तो स्पष्ट है कि इन बालकों की चिकित्सा करना आसान कार्य नहीं है। साथ ही शिक्षा के द्वारा इन्हें सामान्य बालकों के समान भी नहीं बनाया जा सकता। किन्तु इनके लिये शिक्षण के कार्यक्रम इस प्रकार से अवश्य नियोजित किये जा सकते हैं कि ये बालक समाज में किसी पर बोझ न बनकर अपने पैरों पर खड़ा होना सीख जायें।

12.10 विकलांग बालक

शारीरिक न्यूनता से ग्रसित या अशक्त या विकलांग बालक वे हैं जिनके शरीर का कोई अंग दूषित होता है। विकलांग बालक को अक्षम बालक या अपंग बालक भी कहा जाता है। ऐसे बालक दैहिक रूप से विकलांग होते हैं। अपंग बालकों की संख्या लम्बी बीमारी से ग्रस्त बालकों की संख्या से अधिक होती है। ऐसे बालकों की ओर सबका ध्यान जाता है। लगातार असफल रहने के कारण ये बालक विद्यालय छोड़ जाते हैं। अपंग बालक और रोगी बालक दोनों ही विशिष्ट बालक कहलाते हैं। ऐसे विशिष्ट बालकों के लिए विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता है।

12.10.1 विकलांग बालक का अर्थ एवं परिभाषा

विकलांग बालक शब्द से तात्पर्य किसी स्थायी शारीरिक दोषों से युक्त बालकों से है। विकलांग बालक वे हैं, जिनमें कुछ शारीरिक दोष या कमियाँ पाई जाती हैं। ऐसे बालक सामान्य बालकों की तुलना में मानसिक, शारीरिक या संवेगात्मक दृष्टि से दोषपूर्ण होते हैं जिसके कारण उनकी उपलब्धियाँ अधूरी रह जाती हैं। विकलांग, अंधे, बहरे तथा वाणी दोषयुक्त बालक विकलांग बालकों की श्रेणी में आते हैं। विकलांग बालकों में शारीरिक दोष अवश्य होता हैं, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि वे मानसिक दृष्टि से भी अयोग्य हों, किन्तु शारीरिक अपंगता के कारण वे हीन भावना से ग्रस्त होते हैं।

कुछ मनोवैज्ञानिकों द्वारा विकलांग बालकों को परिभाषित किया गया है, जो निम्न प्रकार है-

1. डॉ. एस. एस. माथुर के अनुसार-

एक व्यक्ति जो शारीरिक दोष से इस रुप में ग्रसित हो कि वह दोष उसके सामान्य क्रियाओं में भाग लेने में बाधा डालता है, को विकलांग कहा जाता है।

2. क्रो एवं क्रो के अनुसार-

वे बालक जिनके शारीरिक दोष उन्हें सामान्य क्रियाओं को करने से रोकते हैं, अथवा सीमित करते हैं, उन्हें शारीरिक अक्षमता से युक्त बालक कहा जाता है।

3. डी. जी. फोर्स के अनुसार-

जब शारीरिक दोषों के कारण उत्पन्न कठिनाइयों से बालक को सामाजिक परिवर्तन स्वीकृति प्राप्त नहीं होती है तब उससे उत्पन्न मनोवैज्ञानिक दोषों में भी वृद्धि होती है।

12.10.2 विकलांग बालकों के लक्षण तथा विशेषताएँ

शारीरिक रूप से विकलांग बालकों की निम्नांकित विशेषताएँ होती हैं-

1. इन बालकों का या तो कोई अंग कमजोर होता है या क्षतिग्रस्त होता है, अथवा इनकी ज्ञानेन्द्रियों में कोई कमी होती है।
2. ऐसे किसी बालक में एक या एक से अधिक शारीरिक कमियाँ होती हैं।
3. इन बालकों की मानसिक क्षमता एवं योग्यता सामान्य बालकों से कम, बराबर अथवा अधिक हो सकती है।
4. ये बालक सामान्यतया हीनभावना से ग्रसित होते हैं और इस कारण इनकी संवेदनशीलता अत्यधिक होती है।
5. इन बालकों को पर्यावरण में समायोजन करने में कठिनाई आती है।
6. समुचित शिक्षा व्यवस्था द्वारा इनकी हीनभावना को कम किया जा सकता है और इनमें समायोजन की कुशलता का विकास किया जा सकता है।
7. इन बालकों को समुचित प्रशिक्षण द्वारा आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।

12.10.3 विकलांग बालकों के प्रकार

शारीरिक रूप से विकलांग बालकों को सामान्यतः चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

1. अपंग

ये वे बालक होते हैं जिनके शरीर का कोई अंग कमजोर अथवा क्षतिग्रस्त होता है अथवा इनकी हड्डियाँ एवं मांसपेशियाँ कमजोर होती हैं।

2. दृष्टि विकलांग

ये वे बालक होते हैं जिन्हें कम दिखाई देता है या बिल्कुल नहीं दिखाई देता है।

3. श्रवण विकलांग

ये वे बालक होते हैं जिन्हें कम सुनाई देता है।

4. वाणी विकलांग

ये वे बालक होते हैं जो बोलने में हकलाते हैं या तुतलाते हैं अथवा बिल्कुल ही नहीं बोल पाते। जो बालक जन्म से बिल्कुल नहीं सुनते हैं वे प्रायः गूँगे भी होते हैं।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

12.10.4 शारीरिक विकलांगता के कारण

मुख्य रूप से शारीरिक विकलांगता के दो कारण होते हैं–

1. वंशानुक्रमीय कारण

बालक में शारीरिक विकलांगता जन्म से हो सकती है। बालक जन्म से अन्धे, बहरे, गूँगे, लूले एवं लँगड़े हो सकते हैं। यह विकलांगता इन्हें पित्रैकों से मिलती है। शारीरिक अक्षमताएँ क्षतियुक्त पित्रैकों के संयोग से बनती हैं और ये अक्षमताएँ बालक को जन्म से ही मिलती हैं।

2. पर्यावरणीय कारण

पर्यावरण का अर्थ गर्भावस्था से लेकर जन्म के बाद बाल्यावस्था या उससे भी आगे की अवस्था तक ग्रहण किया जाता है। दूषित पर्यावरण अथवा प्रतिकूल परिस्थिति के कारण बालक में शारीरिक विकलांगता आती है। कुछ मुख्य पर्यावरणीय कारण निम्नलिखित हैं–

1. गर्भावस्था में बालक के शारीरिक विकास के लिए आवश्यक तत्त्वों की कमी रह जाने से उसमें कुछ शारीरिक कमी रह जाती है जिसके कारण बालक गर्भ में विकलांग हो जाता है और जन्म के समय उस विकलांगता को लिए जन्म लेता है।
2. जन्म के बाद भी शारीरिक विकास के लिए आवश्यक पोषण की कमी के कारण शिशु में विकलांगता आ जाती है।
3. बालकों में कभी–कभी कुछ बीमारियाँ ऐसी आ जाती हैं जिनके कारण भी वे शारीरिक रूप से विकलांग हो जाते हैं; पोलियो, कैंसर, चेचक आदि ऐसे रोग हैं जिनके कारण बालक विकलांग हो सकता है।
4. दुर्घटना से चोट आने पर भी शारीरिक रूप से बालक विकलांग हो सकता है।
5. नशीले पदार्थ एवं ड्रग्स के सेवन से भी बालकों में शारीरिक विकलांगता आ जाती है।

12.10.5 शारीरिक विकलांग बालकों की पहचान

शारीरिक रूप से विकलांग बालक अलग से ही दिखाई देते हैं, लेकिन उनकी विकलांगता की मात्रा अथवा प्रतिशत कितना है यह तो डॉक्टर ही बता सकता है। कभी–कभी बालक ड्रग्स सेवन आदि की बातें छिपाता भी है। अतः इन बालकों की पहचान निम्नांकित रीतियों से की जा सकती है–

1. निरीक्षण द्वारा
2. माता–पिता से जानकारी
3. मित्रों एवं सहपाठियों से जानकारी
4. डॉक्टरों द्वारा परीक्षण
5. बालक द्वारा जानकारी

12.10.6 शारीरिक विकलांग बालकों की शिक्षा

शारीरिक रूप से विकलांग बालकों की विद्यालय में शिक्षा व्यवस्था करने से पूर्व इनकी पहचान करना आवश्यक है। पहचानने के लिए उपर्युक्त वर्णित विधियों अथवा रीतियों का प्रयोग किया जा सकता है। इन बालकों की पहचान करने के पश्चात् इनका वर्गीकरण किया जाना आवश्यक है। यह वर्गीकरण निम्नांकित चार वर्गों में किया जा सकता है–

1. सामान्य विकलांग
2. अति अपंग
3. अन्धे बालक
4. बहरे व गूँगे बालक

शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों का वर्गीकरण करने के पश्चात् जिन व्याधियों अथवा कमियों का उपचार किया जा सकता है, वह किया जाता है। जैसे कृत्रिम अंग लगाना, आँखों की चिकित्सा करना, विशेष चश्मों का प्रबन्ध करना, ईयर फोन लगवाना, वाणी सुधार केन्द्रों पर भेजकर वाणी सुधार करना आदि।

इन उपागमों को पूरा करने के पश्चात् इन बालकों की शिक्षा व्यवस्था की जाती है। इसके लिए विशेष विद्यालय, विशेष शिक्षक अथवा विशेष शिक्षण विधियों का प्रयोग करना सर्वोत्तम माना गया है। उपर्युक्त शारीरिक रूप से विकलांग बालकों के वर्गीकरण के आधार पर इनकी अलग से शिक्षा व्यवस्था की जा सकती है। इस सन्दर्भ में विचार प्रस्तुत हैं–

1. सामान्य विकलांग बालकों की शिक्षा

सामान्य रूप से विकलांग बालकों की शिक्षा व्यवस्था सामान्य विद्यालयों में सामान्य बालकों के साथ की जा सकती है। हाँ, इनके लिए कुछ विशेष व्यवस्थाएँ विद्यालय अथवा कक्षा में ही रहकर की जा सकती हैं और इनसे व्यवहार करते समय कुछ सावधानियाँ बरती जानी चाहिए। कुछ व्यवस्थाएँ निम्नवत् हो सकती हैं–

1. बैठने के लिए विशेष फर्नीचर की व्यवस्था करना।
2. कम सुनाई देने वाले एवं कम दिखाई देने वाले छात्रों को कक्षा में आगे की पंक्तियों में बैठने की व्यवस्था करना।
3. हकलाने एवं तुतलाने वाले बालकों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना–खिल्ली नहीं उड़ाना।
4. इन बालकों की रूचि के अनुसार पाठ्यसहगामी क्रियाओं की रचना करना।
5. इन बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए विद्यालयी सीमाओं में रहकर उचित अवसरों एवं परिस्थितियों का निर्माण करना।
6. प्रयोगशाला एवं पुस्तकालय में विशेष प्रबन्ध करना।
7. सृजनात्मक योग्यता के विकास के लिए समुचित प्रबन्ध करना।

2. अति अपंग बालकों की शिक्षा

ऐसे बालक जिनकी बुद्धि एवं मानसिक योग्यताएँ सामान्य बालकों के जैसी होती हैं, लेकिन शारीरिक रूप से अधिक अपंग होते हैं, तो इनके लिये पृथक् विद्यालयों की व्यवस्था की जा सकती है। इस सन्दर्भ में निम्नलिखित सुझावों पर ध्यान देना चाहिए–

1. आवासीय विद्यालयों की व्यवस्था करना।
2. कक्षा में संख्या सीमित रखना।
3. बैठने के लिये आवश्यक एवं उचित फर्नीचर की व्यवस्था करना।
4. सीमित पाठ्यक्रम, लेकिन विशेष कौशलों के विकास के पर्याप्त अवसर प्रदान करना।
5. विशेष प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति करना।
6. रोचक शिक्षण विधियों का प्रयोग एवं पढ़ाते समय दृश्य–श्रव्य सामग्री

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

का प्रयोग करना।

7. इनकी समस्याओं को सुनना, समझना एवं प्रेम और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना।
8. इनकी शिक्षा व्यवस्था के लिये सरकारी, गैर सरकारी एवं स्वयंसेवी संस्थाओं से सहयोग लेना।
9. समाज के साथ समायोजन के लिये सामान्य व्यक्तियों के साथ प्रशिक्षण एवं नौकरी की व्यवस्था करना।
10. विशेष परीक्षा व्यवस्था का आयोजन करना जिसमें परीक्षा का भय न हो।

3. अन्धे बालकों की शिक्षा

अन्धे बालकों की शिक्षा की व्यवस्था करने के लिए निम्नांकित सुझावों पर ध्यान देना चाहिए–

1. इन बालकों के लिए अलग से आवासीय विद्यालयों की व्यवस्था करना।
2. प्रत्येक विद्यालय में बालकों की संख्या सीमित होनी चाहिए, ताकि प्रत्येक बालक की व्यक्तिगत सहायता की जा सके।
3. अन्धे बालकों का पाठ्यक्रम सामान्य बालकों के पाठ्यक्रमों से भिन्न होना चाहिए
4. अन्धे बालकों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर उनकी मानसिक क्षमता, योग्यता, रूचि एवं रूझान के अनुसार शिक्षा व्यवस्था करनी चाहिए।
5. इन बालकों के लिए रोजमर्रा की दैनिक क्रियाएँ और उपयोगी कौशलों के प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए।
6. इन बालकों के लिए विशेष प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यवस्था होनी चाहिए।
7. इन बालकों की शिक्षण व्यवस्था के लिए आवश्यक शिक्षण साधनों की व्यवस्था होनी चाहिए।
8. अन्धे बालकों के शिक्षण के लिए ब्रेल विधि का उपयोग किया जाना चाहिए।
9. इन बालकों के साथ प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार किया जाना चाहिए।
10. इन बालकों की शिक्षा व्यवस्था के लिए सरकारी, गैर सरकारी एवं स्वयंसेवी संस्थाओं से सहयोग लेना चाहिए।
11. इन बालकों को परीक्षा के भय से मुक्त रखना चाहिए।

4. बहरे–गूँगे बालकों की शिक्षा

बहरे एवं गूँगे बालकों को पढ़ाना अत्यन्त दुष्कर कार्य है। इनकी शिक्षा व्यवस्था करते समय निम्नलिखित सुझावों पर ध्यान देना चाहिए–

1. इन बालकों के लिए अलग से आवासीय विद्यालयों की व्यवस्था होनी चाहिए।
2. प्रत्येक विद्यालय में सीमित संख्या में बालक होने चाहिए ताकि प्रत्येक बालक की ओर व्यक्तिगत ध्यान दिया जा सके।
3. इन बालकों के लिए पाठ्यक्रम सीमित होना चाहिए। पाठ्यक्रम में दैनिक चर्या के लिए आवश्यक कौशलों के प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए।
4. इन बालकों की शिक्षा के लिए विशेष प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति की जानी चाहिए।
5. इन बालकों को पढ़ाने के लिए आधुनिकतम उपकरणों एवं विधियों का प्रयोग करना चाहिए।
6. इन बालकों के साथ प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।
7. इनकी शिक्षा व्यवस्था के लिए उन अभिभावकों, सरकारी, गैर–सरकारी एवं स्वयंसेवी संस्थाओं से सहयोग लेना चाहिए जो इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं।
8. इन बालकों को परीक्षा के भय से मुक्त किया जाना चाहिए।

12.11 समस्यात्मक बालक

समस्यात्मक बालक ऐसे बालक होते हैं, जो सामान्य बालकों से भिन्न व्यवहार करते हैं तथा अपने ऐसे व्यवहार के कारण ही वे विद्यालय में उचित रूप से समायोजन नहीं कर पाते हैं। अतः ऐसे बालक अपने स्वयं के लिये, माता–पिता, अध्यापक के लिये भी एक समस्या बन जाते हैं जिससे शिक्षा की प्रक्रिया प्रभावित होती है तथा विद्यालय के वातावरण में अनुशासनहीनता की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

12.11.1 समस्यात्मक बालक का अर्थ एवं परिभाषा

समस्यात्मक बालक शब्द का प्रयोग साधारणतः उन बालकों का वर्णन करने के लिए किया जाता है, जिनका व्यवहार या व्यक्तित्व किसी बात में गम्भीर रूप से असामान्य होता है। इससे स्पष्ट है कि बालकों का असामान्य व्यवहार ही समस्या है, जैसे– गाली देना, झूठ बोलना, चोरी करना आदि। ये बालक घर–परिवार, पास–पड़ोस एवं विद्यालय में ऐसा व्यवहार करते हैं जिसे मर्यादानुकूल नहीं कहा जा सकता है। ये बालक बात–बात पर घर के सदस्यों से, पड़ोसियों से एवं विद्यालय में अपने साथियों एवं शिक्षकों से बुरी तरह उलझते हैं और अनुशासन तोड़ने में ये बालक अपनी शान समझते हैं और हर किसी को धमकी देना इनकी आदत होती है। ऐसे बालकों का व्यवहार एवं समायोजन सामान्य बालकों के व्यवहार से भिन्न होता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि इनका व्यवहार असामान्य होता है।

समस्यात्मक बालक की कुछ परिभाषाएँ निमनलिखित हैं–

1. डॉ. एस. एस. माथुर के अनुसार–

समस्या बालक कोई विशेष वर्ग या जाति नहीं है। इस प्रकार से सभी बालक एक या दूसरे रूप में अधिक या कम मात्रा में समस्या बालक हैं।

2. काउफमेन के अनुसार–

समस्या बालक उन बालकों को कहा जाता है जो अपने वातावरण के प्रति सामाजिक रूप से अस्वीकार्य ढंग से या/और व्यक्तिगत रूप से असंतोषजनक तरीके से स्पष्ट ढंग से लम्बे समय से अनुक्रिया करते हैं, परन्तु जिन्हें सामाजिक रूप से स्वीकार्य तथा व्यक्तिगत रूप से सन्तुष्टि देने वाले व्यवहार को सिखाया जा सकता है।

12.11.2 समस्यात्मक बालकों के लक्षण अथवा विशेषताएँ

समस्यात्मक बालकों में पाये जाने वाले कुछ प्रमुख लक्षण निम्नलिखित हैं–

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

1. ये घर-परिवार, विद्यालय, एवं समाज के आदर्शों एवं नियमों पर ध्यान नहीं देते हैं।
2. ये बालक किसी कार्य को न करने के लिए बहाना बनाते हैं एवं अपनी गलतियों को छिपाने के लिए और अधिक गलतियाँ करते हैं।
3. झूठ बोलना, कक्षा से भाग जाना, कक्षा के कार्य में बाधा डालना, आज्ञा का उल्लंघन करना, नशीले पदार्थों का सेवन करना आदि इनकी आदत बन जाते हैं।
4. कुतर्क करना इनके अभ्यास में होता है।
5. ये अपने से बड़ों का कहना नहीं मानते हैं।
6. ये साथियों से झगड़ते है तथा उनमें भय पैदा करते हैं।

12.11.3 समस्यात्मक बालकों के प्रकार

मनोवैज्ञानिकों ने अपने शोध व अध्ययन के आधार पर समस्यात्मक बालकों के निम्नलिखित प्रकार बताए हैं-

1. झूठ बोलने वाले बालक

ऐसे बालक किसी अप्रिय स्थिति से बचने के लिये बात-बात पर झूठ बोलने लगते हैं और जब यही आदत सीमा के बाहर हो जाती है, तो यह एक प्रकार की समस्या बन जाती है। स्ट्रैंग के अनुसार-ङ्कअनेक बालकों की झूठी बातों का मूल कारण भय होता है।फ्फ्र

2. चोरी करने वाले बालक

बहुत से बालकों में चोरी की प्रवृत्ति होती है। अपने घर से, सहपाठियों के बस्तों से, मिलने-जुलने वाले लोगों के पास से वस्तुएँ चुराना उनकी आदत बन जाती है। बालक प्रायः घर में अभाव, गरीबी, माता-पिता की उपेक्षा, बदला, शत्रुता कारणों से ऐसा करने लगते हैं।

3. झगड़ालू बालक

कुछ बालकों में अनावश्यक रूप से झगड़ने की प्रवृत्ति पाई जाती है। ऐसे बालकों को उनकी रूचियों, योग्यताओं तथा आवश्यकताओं के अनुसार सदैव कुछ उपयोगी कार्यों में लगाए रखना चाहिए। ऐसे बालकों का मस्तिष्क प्रायः ऊर्जावान होता है, इसलिए यदि ऐसे बालकों का समुचित मार्गदर्शन किया जाये तो ये भी उन्नतशील बन सकते हैं।

4. पढ़ने में रूचि न लेने वाले बालक-

प्रायः अभिभावक और शिक्षक द्वारा यह कहते हुए सुना जाता है-ङ्कक्या करें हमारा बच्चा पढ़ने में मन ही नहीं लगाता है।फ्फ्र परन्तु यह समस्या बालकों की नहीं है बल्कि इस समस्या का मूल कारण माता-पिता तथा शिक्षकों का बालकों के साथ किया जाने वाला अवैज्ञानिक व्यवहार है। बालकों से उनकी योग्यताओं का सही आकलन किये बिना ही अपेक्षायें की जाती हैं। यदि बालकों की शिक्षा उनकी रूचियों, क्षमताओं, योग्यताओं, आवश्यकताओं और अभियोग्यताओं को ध्यान में रखते हुए संचालित की जाये, तो सभी बच्चे पढ़ने में रूचि लेंगे तथा यह समस्या ही समाप्त हो जायेगी।

5. अनुशासनहीन बालक

अनुशासनहीनता वातावरण के दुष्प्रभावों तथा समुचित शिक्षा प्रणाली के न होने के कारण प्रायः उत्पन्न होती है। प्रभावात्मक तथा मुक्त्यात्मक अनुशासन के मिले-जुले स्वरूप को छात्रों पर लागू करने से इस समस्या को आसानी से दूर किया जा सकता है।

6. भयभीत होने या करने वाले बालक

कई बालक शारीरिक अथवा मानसिक कमजोरियों के कारण या तो अत्यधिक डरपोक होते हैं या दूसरों को डराने में आनन्द अनुभव करते हैं। इसलिये ऐसे बालकों की शारीरिक-मानसिक जाँच करके उनकी कमी को दूर किया जाना चाहिए। उसके उपरान्त ऐसी परिस्थितियों से होने वाले परिणामों से अवगत कराते हुये उन्हें स्वयं अनुभव करने के लिये ऐसे अवसर दिये जाने चाहिए, जिससे वे स्वयं भी इस भय से मुक्त होने के लिये तत्पर हों।

7. अपराधी बालक

आधुनिक युग की प्रमुख समस्या बालकों का अपराधी होना है। आजकल जिस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था है, उससे समाज का वातावरण दूषित हो रहा है। यह समस्या तीव्रता से व्यापक रूप ले रही है।

12.11.4 समस्यात्मक व्यवहार के कारण

बालक के व्यवहार को प्रभावित करने वाले कई कारण होते हैं। इनमें कुछ मुख्य कारण निम्नलिखित हैं-

1. परिवार का वातावरण

बालक को समस्यात्मक बनाने में परिवार के दूषित वातावरण की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। पिता का शराबी होना, सौतेली माँ का होना, माता-पिता का झगड़ालू होना, माता अथवा पिता का चरित्रहीन होना आदि ऐसे कारण है जिनके कारण परिवार के सदस्यों में आपसी क्लेश एवं द्वेष पैदा होता है और उस परिवार के बालक समस्यात्मक बन जाते हैं। इन बालकों में स्वास्थ्य, सुरक्षा, आत्मसम्मान एवं भविष्य की चिन्ताएँ रहती हैं और इनकी पूर्ति में परिवार का वातावरण बाधा उत्पन्न करता है। बालक इन बाधाओं को दूर करने में अक्षम होते हैं और इस कारण कुसमायोजन की ओर बढ़ते हैं और यही से समस्याएँ पैदा होती हैं और बालक समस्यात्मक बनता जाता है।

2. घर का अनुशासन

घर का कठोर अथवा ढीला अनुशासन भी बालकों को समस्यात्मक बना देता है। कठोर अनुशासन से बालकों में आत्मनिर्भरता एवं आत्मबल की कमी आती है और ढीले अनुशासन के कारण बालकों में वांछित एवं मर्यादानुकूल आचरण में कमी आती है और ये बालक समस्यात्मक बन जाते हैं।

3. पास-पड़ोस का पर्यावरण

बालकों पर घर के बाहर के पास-पड़ोस के वातावरण का असर होता है। पास-पड़ोस का संग अच्छा होता है तो बालक में भी अच्छी आदतों का विकास होता है, लेकिन पास-पड़ोस के बालक एवं व्यक्ति व्यसनी, चोरी करने वाले, झूठ बोलने वाले और झगड़ालू आदि होने पर बालकों पर इनका असर होता है और वे भी ऐसे ही बन जाते है। यदि समय पर इन पर ध्यान नहीं दिया जाता है तो ये बालक समस्यात्मक बन जाते हैं।

4. समाज का पर्यावरण

समाज का दूषित वातावरण बालकों को समस्यात्मक बना देता है। ऊँच-नीच,

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

वर्गवाद, जातिवाद, छुआछूत, भ्रष्ट आचरण, स्थानीय राजनैतिक एवं धार्मिक संरक्षण, पक्षपातपूर्ण रवैया आदि ऐसे घातक तत्त्व हैं जो समाज को तो तोड़ते ही हैं बालकों को भी तोड़ देते हैं और समाज के अनावश्यक संरक्षण के कारण वे हर जगह समस्याएँ पैदा करते हैं।

5. विद्यालयी पर्यावरण

विद्यालय का कठोर अनुशासन और कठोर दण्ड बालकों में विद्यालय से भागने, झूठ बोलने, बहाना बनाने जैसे दुर्गुणों को पैदा करते हैं और लम्बे समय तक ऐसा आचरण करने पर ये बालक समस्यात्मक बन जाते हैं। शिक्षकों का आपस में दुर्व्यवहार, शिक्षकों–छात्रों में दुर्व्यवहार, छींटाकशी आदि के कारण भी बालक समस्यात्मक बन जाते हैं। दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति और उबाऊ शिक्षण विधि का शैक्षिक उपलब्धि पर बुरा असर होता है और इस कारण बालकों का व्यवहार धीरे–धीरे समस्यात्मक होता जाता है।

6. मनोवैज्ञानिक कारण

जब बालकों की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं की पूर्ति सही मार्ग द्वारा नहीं होती है तो ये इनकी पूर्ति के लिए गलत मार्ग अपना लेते हैं। धीरे–धीरे इन बालकों में केवल स्वहित एवं स्वसुख की भावना पैदा हो जाती है और इनकी पूर्ति के लिए वे अमर्यादित एवं असामाजिक कार्यों की ओर प्रवृत्त हो जाते हैं, अन्यों के प्रति ये संवेदनहीन हो जाते हैं।

कुछ बालक अनुकरण द्वारा गलत आदतें जल्दी सीखते हैं और इन्हें बार–बार दोहराने पर समस्यात्मक व्यवहार इसके व्यक्तित्व का अंग बन जाता है।

सांवेगिक रूप से अस्थिर बालक भी धीरे–धीरे समस्यात्मक बन जाते हैं। छोटी से छोटी बाधा और प्रतिकूल परिस्थिति आने पर ये अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठते हैं और इस कारण क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, निराशा, दुश्चिन्ता आदि से ग्रस्त हो जाते हैं और इस स्थिति में ये बालक असामान्य व्यवहार करने लगते हैं।

12.11.5 समस्यात्मक बालकों की पहचान

समस्यात्मक बालकों की पहचान बड़े ध्यान से करना आवश्यक है। क्योंकि कुछ बालक प्रारम्भिक अवस्था में समस्यात्मक दिखाई देते हैं लेकिन उनका व्यवहार स्वाभाविक चंचलता के कारण होता है। धीरे–धीरे उनके स्वभाव में गम्भीरता आती जाती है और उनका समस्यात्मक व्यवहार स्वतः ही समाप्त हो जाता है। लेकिन शिक्षक कभी–कभी इन बालकों को समस्यात्मक मान लेते हैं। वैलेन्टाइन बर्च एवं कमिंग्स ने ऐसे बालकों का गहनता से अध्ययन किया और इन्हें समस्यात्मक बालक नहीं माना। इन्होंने अपने अध्ययनों से सिद्ध किया कि कुछ बालक प्रारम्भिक अवस्था में क्रूर, कायर, बेचैन, झक्की, दिवास्वप्न देखने वाले, आक्रामक और जिद्दी स्वभाव के होते हैं, लेकिन उम्र बढ़ने के साथ ये सभी दुर्गुण स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। समस्यात्मक बालकों में ये सभी दुर्गुण होते हैं, लेकिन इनकी पहचान करने के लिए इन्हें निम्नलिखित दो कसौटियों पर कसना आवश्यक होता है–

1. यदि उपर्युक्त दुर्गुणों के कारण बालक की समायोजन करने की क्षमता बुरी तरह प्रभावित हो रही हो।
2. इन बालकों में इन दुर्गुणों के कारण अमर्यादित व्यवहार लम्बे समय से देखा जा रहा हो।

यदि उपर्युक्त लक्षण उनमें पाए जाते हैं, तो उन्हें समस्यात्मक बालक कहा जा सकता है।

बालकों में अमर्यादित अथवा असामान्य व्यवहार किन दुर्गुणों अथवा बुराइयों के कारण और किस सीमा तक विकसित हुआ है, इसकी जानकारी निम्नलिखित विधियों के प्रयोग से की जा सकती है–

1. निरीक्षण
2. माता–पिता से सम्पर्क
3. पड़ौसियों से पूछताछ
4. संचयी अभिलेखों द्वारा

12.11.6 समस्यात्मक बालकों की शिक्षा

समस्यात्मक बालकों के व्यवहार में स्थायित्व नहीं होता है। ऐसे बालक स्वभाव से ऐसे नहीं होते हैं, अतः उनमें सुधार सम्भव है। उनका परिवेश एवं परिस्थितियाँ उन्हें ऐसा व्यवहार करने के लिये विवश करते हैं। जन्म से वे समस्यात्मक नहीं होते हैं, यदि उनको समुचित शिक्षा–दीक्षा, मार्गदर्शन एवं परामर्श प्रदान किया जाये, तो उनमें सुधार हो सकता है। मनोवैज्ञानिक तरीके से इनकी शिक्षा–दीक्षा सम्भव है। ये भी सामान्य बालकों के समान ही होते हैं, इसलिये इनके लिये विशेष कक्षा या विद्यालय की आवश्यकता नहीं होती है। अतः शिक्षा संस्थाओं का वातावरण ऐसा हो जहाँ उनका विकास हो सके।

समस्यात्मक बालकों को बुरी आदतों से छुड़ाने में परिवार एवं विद्यालय की भूमिका को निम्न प्रकार समझा जा सकता है–

1. परिवार की भूमिका

1. बालकों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना माता–पिता का प्रथम दायित्व है। यदि आर्थिक स्थिति अथवा अन्य कारणों से इनकी पूर्ति नहीं हो सकती तो बालकों से सतत् संवाद बनाकर उन्हें अपनी सीमाओं से अवगत कराएँ। परिवार एवं समाज की मर्यादाओं के पालन में क्या लाभ हैं और पालन नहीं करने पर क्या हानि हो सकती है, इससे भी माता–पिता बालकों को अवगत कराएँ।
2. माता–पिता का सबसे महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य है बालकों का सतत् निरीक्षण। बालक किसकी संगति में रहता है, कहाँ–कहाँ जाता है, उसकी भाषा, उसकी चेष्टाएँ एवं उसके व्यवहार में जिस क्षण कोई असामान्यता दिखाई दे तो तुरन्त प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्ण संवाद स्थापित कर उन्हें समझाएँ। प्रेमपूर्ण नियन्त्रण महत्त्वपूर्ण होता है लेकिन आवश्यकता पड़ने पर थोड़ा दण्ड भी दिया जा सकता है।
3. घर का वातावरण स्वस्थ एवं सुखद बनाने में माता–पिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। दुर्व्यसन, दुर्व्यवहार एवं दुराचार से माता–पिता स्वयं बचें; प्रेम, सहानुभूति एवं सहयोगपूर्ण व्यवहार की आदत स्वयं में एवं बालक में विकसित करें।

2. विद्यालय की भूमिका

1. विद्यालय का पर्यावरण स्वच्छ होना चाहिए। पर्यावरण ऐसा हो जिसमें बालक विद्यालय को अपना बड़ा घर समझे, पढ़ने एवं अच्छे व्यवहार

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

के लिए सदैव प्रेरित होता रहे और असन्तुलित संवेगों पर नियन्त्रण रख सके।

2. विद्यालय में सभी शिक्षक आदर्श एवं मर्यादित व्यवहार करें, क्योंकि अधिकतर छात्र उनका अनुकरण करते हैं।
3. विद्यालय में बालकों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सभी साधन-सुविधाएँ उपलब्ध होनी चाहिए।
4. समस्यात्मक बालकों की सामूहिक भर्त्सना एवं सामूहिक प्रताड़ना न की जाए। उन्हें अलग से बुलाकर प्रेम, सहानुभूति एवं सहयोगपूर्ण तरीके से समझाया जाए।
5. इन्हें विद्यालय में अधिक से अधिक जिम्मेदारी के कार्य सौंपे जाएँ, ताकि इनकी शक्ति के दुरूपयोग को रोका जा सके।
6. इन बालकों की अभिक्षमता, रूचि एवं मनोवृत्ति के अनुकूल सहशैक्षिक गतिविधियों का आयोजन किया जाए।
7. योगासन एवं प्राणायाम की क्रियाओं के अभ्यास द्वारा इन बालकों के समस्यात्मक व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सकता है।
8. बालकों में प्रारम्भिक कक्षाओं से ही स्वनिरीक्षण करने की आदत का विकास किया जाए।
9. नैतिक शिक्षा शब्दों से नहीं, आचरण द्वारा दी जाए।
10. इन बालकों की समस्याओं का तुरन्त समाधान किया जाए।

12.12 वंचित बालक

शिक्षाशास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों का ध्यान वंचित बालकों की ओर गया है। इन क्षेत्रों में अनेक अध्ययन किए गए है, जिनमें वंचित होने के दुष्परिणामों का अध्ययन किया गया। इनकी सोच, भावनाओं, रूचियों, अभिवृत्तियों और मनोवृत्तियों का अध्ययन भी शिक्षा और मनोविज्ञान शोध के विषय रहे हैं। बर्नस्टीन, हेविंगहर्स्ट, टानेनबॉम, रोटर, डी. सिन्हा, त्रिपाठी, ए. के. सिंह आदि मनोवैज्ञानिकों ने इन वंचित बालकों का अध्ययन किया।

12.12.1 वंचित बालक का अर्थ व परिभाषा

वंचित बालक वे बालक होते हैं जिन्हें समुचित विकास के लिए आवश्यक न्यूनतम साधन-सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं होती हैं। साधारणतया सभी देशों में समाज में कुछ वर्ग ऐसे मिल ही जाते हैं। इन्हें वंचित वर्ग कहा जाता है और इन वर्गों से सम्बन्धित बालक वंचित बालक कहलाते हैं। मनोविज्ञान में वंचित बालक उन्हें कहा गया है, जो सामाजिक-आर्थिक रूप से तथा सांस्कृतिक रूप से अलाभान्वित समुदाय से आते हैं जो सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक रूप से पिछड़े हुए हैं, इन्हें जीवन की सामान्य सुख-सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं हैं। इन समुदायों से आने वाले बालक वंचित बालक अथवा अलाभान्वित बालक कहलाते हैं।

वंचित बालक की कुछ परिभाषाएँ निम्न प्रकार है-

1. वॉलमैन के अनुसार-

वंचन निम्नस्तरीय जीवन दशा या प्रथकता को घोषित करता है, जो कि कुछ व्यक्तियों को उनके समाज की सांस्कृतिक उपलब्धियों में भाग लेने से रोक देता है।

2. गार्डन के अनुसार-

वंचन बाल्य जीवन में उद्दीपन दशाओं की न्यूनता है।

3. जारोलीमैक व वाल्श के अनुसार-

किसी बालक के सामाजिक दृष्टि से सुविधावंचित होने से हमारा आशय है कि अपने किसी भी प्रकार के सामाजिक जीवन में अन्य बच्चों की तुलना में उसे कम सुविधाएँ प्राप्त हैं।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि-

वंचित बालक वह है, जो सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक वातावरण से प्राप्त होने वाले उन उद्दीपक प्रभावों से वंचित रहता है जो सामान्य बाल विकास के लिए वांछनीय हैं।

12.12.2 वंचित बालकों की विशेषताएँ

शिक्षाशास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों का ध्यान इन वंचित बालकों की ओर गया है। इन क्षेत्रों में अनेक अध्ययन किए गए हैं, जिनमें वंचित होने के दुष्परिणामों का अध्ययन किया गया। इनकी सोच, भावनाओं, रूचियों, अभिवृत्तियों और मनोवृत्तियों का अध्ययन भी शिक्षा और मनोविज्ञान शोध के विषय रहे हैं। बर्नस्टीन, हेविंगहर्स्ट, टानेनबॉम, रोटर, डी. सिन्हा, त्रिपाठी, ए. के. सिंह आदि मनोवैज्ञानिकों ने इन वंचित बालकों का अध्ययन किया। इनके अध्ययन के फलस्वरूप इन बालकों की कुछ सामान्य विशेषताओं का पता चलता है। ये विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. ये बालक सामाजिक एवं आर्थिक स्तर से निम्न परिवारों के सदस्य होते हैं।
2. इन बालकों को विकास के लिए आवश्यक मूलभूत साधन-सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं होती हैं।
3. ये बालक अपने आपको हीन एवं कमजोर समझते हैं।
4. इनका दृष्टिकोण नकारात्मक होता है।
5. इनकी आकांक्षाएँ साधारण होती है।
6. इनमें सीखने के लिए अभिप्रेरणा का अभाव होता है।
7. इनमें दूरदर्शिता की कमी पाई जाती है।
8. इनकी भाषा शिष्ट नहीं होती और अस्पष्ट होती है।
9. इन बालकों का बौद्धिक निष्पादन सीमित एवं अपर्याप्त होता है।
10. गरीबी इनके लिए अभिशाप होती है।
11. समाज के अन्य वर्गों के प्रति इनकी सोच नकारात्मक होती है।
12. इनमें असुरक्षा की भावना अधिक होती है।
13. ये बालक शारीरिक कार्यों, खेल आदि के लिए सक्षम होते हैं।
14. इनमें आत्मप्रेम की भावना प्रबल होती है।

12.12.3 वंचित बालकों की पहचान

भारत में वंचित बालकों में से अधिकांश बालक SC और ST वर्ग के होते हैं। आजादी के कई वर्षों बाद इन वर्गों के कई परिवार ऐसी स्थिति में आ गए हैं कि उन्हें विकास के लिए सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। लेकिन फिर भी कई परिवार अब तक भी वंचित हैं। कौन-से परिवार वंचित हैं इनकी पहचान करना आज के सन्दर्भ में मुश्किल है, क्योंकि सभी वंचित होने से मिलने वाली सरकारी, गैर सरकारी एवं

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं का लाभ उठाना चाहते हैं। इन वर्गों में आने वाले समुदायों के अतिरिक्त भी ऐसे कई परिवार भारत में हैं, जिन्हें वंचित श्रेणी में रखा जा सकता है, उन्हें पहचानने की न तो कोई व्यवस्था है और न ही किसी राजनैतिक अथवा सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं शैक्षिक सर्वेक्षण द्वारा वंचित परिवार एवं उनसे सम्बन्धित बालकों की पहचान की जा सकती है।

12.12.4 वंचित बालकों की शिक्षा

वंचित बालकों की शिक्षा सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित होनी चाहिए। इसके लिए शिक्षा व्यवस्था में निम्नांकित सुझावों पर ध्यान देना चाहिए–

1. विद्यालय में प्रवेश बिना किसी वर्ग, वर्ण, लिंग और जाति के आधार पर होने चाहिए।
2. शिक्षकों को चाहिए कि ऐसे वर्गों के बालकों को मिलने वाली किसी भी तरह की आर्थिक सहायता के बारे में उन्हें अवगत कराएँ।
3. भाषा सुधार, स्वास्थ्य रक्षा एवं व्यावहारिक ज्ञान के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए।
4. इन बालकों की व्यक्तिगत एवं शैक्षिक समस्याओं का समाधान तुरन्त किया जाना चाहिए।
5. इनके माता–पिता साधारणतया अशिक्षित होते हैं। अतः इन्हें प्रौढ़ शिक्षा या किसी अन्य योजना के अन्तर्गत शिक्षित किया जाना चाहिए।
6. जो बालक विद्यालय नहीं आ पाते हैं, उनकी शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए।
7. इन बालकों को संवैधानिक प्रावधानों एवं न्यायिक प्रावधानों से अवगत कराना चाहिए।
8. ये बालक परिवार, पास–पड़ोस एवं विद्यालयों में पढ़ने वाले अन्य वर्गों से सम्बन्धित बालकों के साथ पूर्ण समायोजन कर सकें, इसके लिए निर्देशन कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।
9. इन बालकों में स्वावलंबन एवं आत्मसम्मान की भावना विकसित हो सके, इसके लिए विद्यालयों में तद्नुकूल कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिए।
10. इनके परिवारों का वातावरण शैक्षिक बने इसके लिए शिक्षक एवं अभिभावकों को मिलकर प्रयास करना चाहिए।
11. इसके साथ अन्य वर्गों के छात्रों का व्यवहार सहानुभूति एवं सहयोगपूर्ण होना चाहिए। शिक्षकों को इसके लिए सभी बालकों का सतत् निरीक्षण (प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष) करते रहना चाहिए।
12. सरकार द्वारा आर्थिक सहायता दी जानी चाहिए।
13. शिक्षक का व्यवहार भेदभाव एवं पक्षपात से रहित होना चाहिए।
14. इन बालकों के साथ प्रेम, सहानुभूति एवं सहयोगपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

12.13 कुसमायोजित बालक

कुसमायोजन शब्द अंग्रेजी भाषा के मालएडजस्टेड का हिन्दी रूपान्तर है। यह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है– **माल+एडजस्ट**। **माल** का अर्थ होता है **खराब** तथा **एडजस्ट** का अर्थ होता है **सामंजस्य**। जो बालक अपने व्यक्तित्व विकास की मात्रा में अपनी शारीरिक, मानसिक सामाजिक, संवेगात्मक, आर्थिक एवं नैतिक विकास आदि से सम्बन्धित आवश्यकताओं को पूरा करते हुए अपने सहयोगियों के साथ सामान्य रूप से कार्यों को सम्पन्न करते हैं, वे समायोजित कहे जाते हैं। जिनकी उक्त क्रियायें बहुत अच्छी तरह सम्पन्न होती हैं, वे सुसमायोजित तथा जिनकी खराब तरह से होती हैं, वे कुसमायोजित कहलाते हैं।

12.13.1 कुसमायोजन का अर्थ

कुसमायोजित बालक वे होते हैं, जो सामाजिक प्रतिमानों का पालन नहीं करते हैं। सामान्यतया जिस व्यक्ति का व्यवहार सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा भिन्न होता है, ऐसे व्यक्ति या बालक को सामाजिक परिवेश में अपने को समंजित करने में कठिनाई होती है। ऐसे बालकों का व्यक्तित्व अस्थिर, संवेग अस्पष्ट तथा बौद्धिक स्तर सीमित होता है। उनका प्रत्यक्षीकरण उचित नहीं होता, उनका व्यवहार दूसरों के लिये समस्या बन जाता है।

मनोवैज्ञानिकों ने कुसमायोजित बालकों के बारे में अपने विचार प्रकट किए है, जो निम्न प्रकार है–

1. डूलमान एण्ड क्रेसनर के अनुसार–

असामान्य व्यवहार उन व्यावहारिक तरीकों की सुविधा के लिए नामांकन है, जो सामाजिक अभिलाषाओं को पूरी करने में असफल रहते हैं।

2. कोलमैन के अनुसार–

इनकी प्रमुख विशेषता नैतिक विकास का अभाव है। ऐसे लोग समाज द्वारा एकीकृत मानव व्यवहारों को करने के अयोग्य होते हैं। मूल रूप में ये असामाजिक होते हैं। ये दूसरे व्यक्तियों, समूहों अथवा सामाजिक मूल्यों के प्रति सार्थक रूप से वफादारी के अयोग्य होते हैं।

12.13.2 कुसमायोजित बालको के प्रकार

कुसमायोजित बालकों के प्रकार निम्नलिखित हैं–

1. शारीरिक कुसमायोजित बालक

ये बालक अपने कुछ जन्मजात अथवा वातावरणीय प्रभाव से उत्पन्न शारीरिक विकारों के कारण कुसमायोजित हो जाते है, जैसे हकलाने, रूक–रूक कर बोलने वाले अथवा दुर्घटनावश अंग–भंग हो जाने वाले बालक।

2. मानसिक कुसमायोजित बालक

ऐसे बालक अपनी आनुवंशिक रूप से प्राप्त इच्छाओं, आकाक्षांओं, आदतों, मानसिक शक्तियों के अनुसार और पर्यावरण से प्रतिक्रया के फलस्वरूप बदला, ज़िद, संवेगात्मक उग्रता आदि का प्रदर्शन करते हैं।

3. सामाजिक कुसमायोजित बालक

कुछ बालक सामाजिक नियमों और नैतिक मूल्यों का उल्लंघन करने में विशेष उत्साह प्रदर्शित करते हैं। इन्हें इस कार्य को साहसपूर्ण कार्य मानते हुए इनको ऐसे कार्य में एक विशेष आनन्द मिलता है।

4. शैक्षिक रूप से कुसमायोजित बालक

ऐसे बालक शैक्षिक रूप से कुसमायोजित बालक कहे जा सकते हैं। बालकों का

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

कुसमायोजन अधिकांशतः उनकी शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन का बहुत बड़ा कारण बन जाता है। गंभीर रूप से कुसमायोजित समस्यात्मक बालकों को कभी-कभी विद्यालय से निष्कासन आदि की सजा का शिकार भी होना पड़ जाता है।

12.13.3 कुसमयोजित बालको की पहचान

कुसमायोजित बालकों की पहचान निम्नलिखित विधियों द्वारा की जा सकती है-

1. सामान्य व्यवहार का निरीक्षण
2. संचयी व एनेक्डॉटल अभिलेख
3. व्यक्ति इतिहास विधि
4. शिक्षकों व अभिभावकों से साक्षात्कार
5. मित्रों व पड़ोसियों से पूछताछ
6. मानसिक योग्यता परीक्षण

कुसमायोजित बालकों के व्यवहार का निरीक्षण व पहचान करने के लिये उनके अत्यधिक भय, ईर्ष्या करना, अप्रसन्नता, अपवित्रता, विचारहीनता, कामुकता, अश्लील व्यवहार, बेचैनी, बकवास, हठ आदि लक्षणों पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

12.13.4 कुसमायोजित बालकों की शिक्षा

कुसमायोजित बालकों की शिक्षा के लिये पृथक् रूप से किसी शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता नहीं होती है। थोड़े से प्रयास के उपरान्त इन्हें सरलता से शिक्षित किया जा सकता है। अतः इनकी शिक्षा में निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए-

1. बालकों का व्यवहार सुधारने में अभिभावकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। अतः विद्यालय द्वारा विशेषज्ञों के माध्यम से अभिभावकों को परामर्श उपलब्ध कराना चाहिए। अभिभावकों के सहयोग से बालकों के व्यवहार-विकार में सुधार लाया जा सकता है।
2. शिक्षकों का कर्त्तव्य है कि वे कुसमायोजित बालकों को पहचानें। समय-समय पर उन्हें निर्देशन एवं परामर्श देकर शिक्षक बालकों को स्वयं अपनी समस्याएँ एवं उनके समाधान ढूँढ़ने के लिये प्रेरित करें। यहाँ शिक्षक का व्यवहार मित्रवत् होना चाहिए, जिससे वे कुसमायोजित बालकों का मार्गदर्शन भली-भाँति कर सकें।
3. बालकों को उनकी क्षमताओं के अनुसार उन्नति करने का अवसर देना चाहिए। सुसंगठित पाठ्यक्रम के द्वारा बालकों में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना सम्भव होगा। कुसमायोजित बालकों के व्यवहार को संतुलित करने में पाठ्यक्रम की महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी। शिक्षण पाठ्यक्रम के साथ-साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं एवं भ्रमण आदि के आयोजन की व्यवस्था हो जिससे बालकों को स्वतंत्र रूप से बातचीत करने, प्रश्न पूछने तथा अपने विचार व्यक्त करने के पूर्ण अवसर प्राप्त हो सकें।
4. शिक्षण पद्धति ऐसी हो जो बालकों को कक्षा में बैठने और सुनने-समझने के लिये आकर्षित करे। शिक्षक अपनी सूझ, विवेक एवं आवश्यकता के अनुरूप शिक्षण विधियों का चुनाव कर सकता है। विषय के प्रति बालकों की जिज्ञासा, रूचि, आकर्षण एवं तत्परता को विकसित करने के लिये अध्यापक शिक्षण में सहायक उपकरणों जैसे रेडियो, टीवी, ओवरहेड प्रोजेक्टर, टेप रिकॉर्डर, मॉडल चित्र आदि का उपयोग कर सकता है।
5. कुसमायोजित बालकों में आत्मविश्वास उत्पन्न करने एवं उनके व्यक्तित्व में निखार लाने के उद्देश्य से इन विद्यालयों में शारीरिक, मानसिक एवं अति संवेगात्मक रूप से ग्रसित कुसमायोजित बालकों का बहुमुखी विकास करने के अवसर उपलब्ध होते हैं।

12.14 अधिगम अयोग्य बालक

शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति की सीखने की क्षमता अच्छी होती है। लेकिन कुछ बालक अथवा व्यक्ति ऐसे होते हैं जिन्हें कुछ भी सीखने और समझने में देरी लगती है और कठिनाई होती है। इन बालकों की बुद्धि, मानसिक क्षमताएँ एवं भाषा ज्ञान औसत बालक से कम होता है। ये बालक सीखने की कम क्षमता वाले बालक कहलाते हैं। इन बालकों की शैक्षिक उपलब्धियाँ अन्य सामान्य बालकों से कम होती हैं। इन बालकों के लिए यह कहा जा सकता है कि ये मानसिक रूप से कुछ अपंग होते हैं। इन बालकों में कोई शारीरिक अपंगता नहीं होती, इनकी ज्ञानेन्द्रियाँ एवं कर्मेन्द्रियाँ भी पूर्ण अवस्था में होती हैं, लेकिन इनमें इनके मस्तिष्क के अन्दर कुछ समस्याएँ होती हैं जिसके कारण इन्हें सीखने अथवा समझने में बाधा आती है।

12.14.1 अधिगम अयोग्य बालक का अर्थ एवं परिभाषा

बालकों में अधिगम की अयोग्यता के अर्थ पर विचार करने के लिये हमें इसमें प्रयुक्त अधिगमम और अयोग्य शब्दों को समझना होगा। अधिगम का अर्थ है सीखना। अयोग्य शब्द को अंग्रेजी में Disable कहा जाता है। अयोग्य का अर्थ होता है- अनुपयुक्त अर्थात् अक्षम या असमर्थ आदि। साधारण भाषा में यह अर्थ नालायक, निकम्मा आदि के रूप में भी प्रयोग किया जाता है।

1. मेकर्निट, लेघ, लाइसन व अन्य के अनुसार-

नेशनल ज्वाइण्ट कमेटी फार लर्निंग डिसएबिलिटी के सदस्यों मेकर्निट, लेघ, लाइसन व अन्य ने 1981 में अधिगम अयोग्यता को परिभाषित करते हुए कहा है-

> अधिगम अयोग्यता एक ऐसा मूल शब्द है, जो बालकों के उस समूह को प्रकट करता है, जिन्हें सामान्य रूप से लेखन, पाठन, अध्ययन, श्रवण, तर्क तथा गणित आदि योग्यताओं को सार्थक रूप से करने में कठिनाई अनुभव होती है। ये कठिनाइयाँ व्यक्ति के आन्तरिक केन्द्रीय तंत्रिकातंत्र की विकृत क्रिया प्रणाली के कारण होती हैं।

2. किर्क के अनुसार-

> सीखने की कम क्षमता का अर्थ उन बालकों के लिए नहीं है जो अस्थायी तौर पर सीखने में कठिनाई अनुभव करते हैं लेकिन उनके लिए है जिनकी शिक्षा के क्षेत्र में योग्यता एवं उपलब्धि में काफी अन्तर होता है और यही अन्तर सीखने की कम क्षमता को प्रदर्शित करता है। यह अन्तर मानसिक मन्दता, ज्ञानेन्द्रियों की अपंगता, संवेग अस्थिरता एवं सीखने के लिए अवसरों की कमी के कारण नहीं होता है।

3. लाल एवं जोशी के अनुसार-

> जिन बालकों में सीखने के लिए आवश्यक शारीरिक एवं मानसिक क्षमताएँ औसत बालकों से कम होती हैं और जिन्हें कुछ भी सीखने में कठिनाई होती है, उन्हें सीखने की कम क्षमता वाले बालक कहा जाता है।

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

12.14.2 अधिगम अयोग्य बालकों की प्रकृति और विशेषताएँ

शिक्षा एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में अध्ययनों ने सीखने की कम क्षमता वाले बालकों के व्यक्तित्व की विशेषताओं की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया है। ये विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. इन बालकों में मुख्य रूप से सीखने की कम क्षमता, प्रेरणा की कमी, सामान्यीकरण की क्षमता में कमी, समस्या की योग्यता में कमी और चिन्तन कौशल में कमी के रूप में प्रकट होती है।
2. इन बालकों को भाषा को ग्रहण करने एवं प्रयोग करने में कठिनाई होती है। इसके साथ ही गणितीय योग्यता एवं सामाजिक कौशलों के सीखने एवं प्रयोग करने में भी कठिनाई होती है।
3. इन बालकों को मुख्य रूप से कठिनाई किसी भी चीज को सीखने और उस पर अधिकार करने में आती है। इस स्थिति में इनका व्यवहार मन्दबुद्धि और शारीरिक रूप से विकलांग बालकों जैसा होता है।
4. इन बालकों में सांवेगिक अस्थिरता होती है। इस कारण इनके व्यवहार में मूडीपन, दुश्चिन्ता एवं अस्थिरता दिखाई देती है।
5. ये बालक शारीरिक रूप से स्वस्थ दिखाई देते हैं एवं इनकी ज्ञानेन्द्रियाँ (आँख, नाक, कान आदि) भी स्वस्थ होती हैं।
6. इन बालकों की अभिक्षमता एवं योग्यता और वास्तविक शैक्षिक उपलब्धियों में काफी अन्तर दिखाई देता है।
7. इन बालकों की स्मृति, चिन्तन, अवधान, समझ और गामक क्रियाओं में विकार होने से सामान्य बालकों से इनमें कमी होती है।
8. सीखने की कम क्षमता वाले बालक सीखने की गम्भीर समस्या से ग्रस्त होते हैं।
9. इनमें सीखने की क्षमता अवश्य कम होती है लेकिन ये सीखने में असमर्थ नहीं होते हैं।
10. ये बालक अधिक क्रियाशील होते हैं।

12.14.3 अधिगम अयोग्य बालकों के प्रकार

अधिगम अयोग्य बालकों के प्रकार निम्नलिखित हैं–

1. मानसिक शक्तियों, जैसे–निरीक्षण, तर्क, कल्पना, स्मृति, ध्यान आदि से अक्षम बालक।
2. शारीरिक रूप से अक्षम बालक।
3. लेखन, वाचन, श्रवण आदि कार्यों में अक्षम बालक।
4. भाषा एवं अभिव्यक्ति में अक्षम बालक।
5. साधारण गणित में अक्षम बालक।

12.14.4 अधिगम अयोग्य बालकों की पहचान

अधिगम अयोग्य बालकों की पहचान हेतु निम्नलिखित परीक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है–

1. निरीक्षण
2. रेटिंग स्कैल
3. चेकलिस्ट
4. साक्षात्कार
5. मानक नैदानिक परीक्षण
6. योग्यता परीक्षण
7. उपलब्धि परीक्षण
8. प्रतिदिन की मूल्यांकन प्रक्रिया

12.14.5 अधिगम की अयोग्यता के कारण

शिक्षा एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में हुए शोधों के निष्कर्ष बालकों की कम क्षमता के तीन कारक बताते हैं–

1. आनुवंशिक कारक
2. जैविक कारक
3. पर्यावरणीय कारक

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

1. आनुवंशिक कारक

बालकों में सीखने की कम क्षमता का प्रमुख कारण होता है उनका वंशक्रम। बालकों के माता–पिता एवं अन्य वंशजों के पित्रैकों द्वारा ये बालकों में आते हैं। सांवेगिक अस्थिरता, स्मृति एवं चिन्तन शक्ति में विकार, बोलना और सीखने में कठिनाई, बालकों को पित्रैकों द्वारा प्राप्त होता है। अब तो अमेरिका में शोधकार्यों के आधार पर वैज्ञानिकों ने किस पित्रैक से कौन–सी कमी आती है, की खोज कर ली है। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि बालकों में सीखने की कम क्षमता वंशक्रम से भी आ सकती है। वैसे अन्य कारण भी इसके लिए जिम्मेदार होते हैं, लेकिन वंशक्रम एक प्रमुख कारण है।

2. जैविक कारक

अनेक अध्ययनों ने यह सिद्ध किया है कि बालकों के केन्द्रीय स्नायु संस्थान में गड़बड़ी के कारण बालकों में सीखने की कम क्षमता आती है। यह गड़बड़ी उनके मस्तिष्क, स्पाइनल कोड संचार संस्थान में होती हैं। ये गड़बड़ियाँ दुर्घटना से मस्तिष्क पर चोट के कारण हो सकती हैं अथवा बच्चे के पैदा होने से पहले, होते समय और पैदा होने के बाद ऑक्सीजन की कमी के कारण हो सकती हैं। स्पाइनल कोड और संचार संस्थान पर चोट आने से या क्षतिग्रस्त होने पर भी सीखने की क्षमता कम हो जाती है। बायोकेमिकल इम्बेलेन्स के कारण भी बालकों के केन्द्रीय स्नायु मंडल की क्रिया में विकार आ सकता है और इस कारण भी बालकों में सीखने की कम क्षमता होती है।

3. पर्यावरणीय कारक

बालक अथवा व्यक्ति के शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक पर्यावरण में कमी, अव्यवस्था एवं प्रतिकूलता होने पर उसमें सीखने की क्षमता में कमी आ जाती है। ऐसे कुछ कारण निम्नलिखित हैं–

1. गर्भावस्था में कुपोषण एवं खराब वातावरण के कारण गर्भ में ही बालक पर प्रभाव पड़ता है और वह इस रोग का शिकार हो जाता है।
2. समय पर उचित चिकित्सा एवं पोषण के अभाव में बालकों में सुनने, देखने, स्वाद, छूने, सूँघने आदि की क्षमता में कमी आ जाती है और इसका प्रभाव बालकों की सीखने की क्षमता पर पड़ता है।
3. समय से पूर्व जन्म और जन्म के समय दूषित पर्यावरण के कारण स्नायु संस्थान पर दुष्प्रभाव हो सकता है और इस कारण यह रोग हो सकता है।
4. शिशु अवस्था में ही चोट के कारण स्नायु संस्थान को हानि हो जाने

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

पर यह रोग बालकों में आता है।

5. प्रेरणा में कमी, एकाग्रता में कमी, भाषा कौशल के विकास में कमी आदि के कारण बालक की सीखने की क्षमता कम हो जाती है।
6. सामाजिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण में दोष के कारण भी बालक के सीखने की क्षमता प्रभावित होती है।
7. दोषपूर्ण शैक्षिक व्यवस्था के कारण भी सीखने की क्षमता में कमी आती है।
8. नशीले पदार्थों के सेवन से बालक के मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता है और इस कारण इसका प्रभाव सीखने की क्षमता पर पड़ता है।

12.14.6 अधिगम अयोग्य बालकों की शिक्षा

अधिगम अयोग्य बालकों के लिये निम्न प्रकार की शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिए–

1. सर्वप्रथम बालकों की अयोग्यता विभिन्न परीक्षणों के माध्यमों से पहचानी जानी चाहिए।
2. अयोग्यता की पहचान हो जाने के पश्चात् उसके कारणों का अध्ययन किया जाना चाहिए।
3. ऐसे बालकों की शिक्षा व्यवस्था का निर्धारण करने के लिये अभिभावकों और विशेषज्ञों से निर्देशन व परामर्श किया जाना बहुत आवश्यक होता है।
4. इन बालकों को सामान्य बालकों के साथ शिक्षित किया जाना चाहिए, परन्तु आवश्यकता पड़ने पर इनकी शिक्षा की पृथक् व्यवस्था भी की जानी चाहिए।
5. इनमें आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और आशावादी दृष्टिकोण का विकास करने के लिये इन्हें उपयोगी कौशलों का ज्ञान व उनका अभ्यास कराया जाना चाहिए।
6. इनको स्थूल, रंगीन व आकर्षक सहायक सामग्री की सहायता से पढ़ाया जाना चाहिए।
7. इन्हें ऐसे कार्यों में संलग्न करना चाहिए जिससे इनकी मानसिक शक्तियों का अभ्यास के माध्यम से विकास हो सके।
8. इनके साथ धैर्य, सहानुभूति और प्रेम का व्यवहार किया जाना चाहिए।
9. इन्हें निरीक्षण, सर्वेक्षण, योजनाविधि आदि विधियों से स्व–अनुभव के पर्याप्त अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।
10. इन बालकों को भाषा प्रयोगशाला, अभिक्रमित अनुदेशन और कम्प्यूटर सह अनुदेशन आधुनिक शैक्षिक तकनीकी के माध्यम से स्व–अधिगम के लिये प्रेरित करना चाहिए।
11. इनका मूल्यांकन इनके द्वारा निष्पादित कार्यों के आधार पर किया जाना चाहिए।
12. इनको पुनर्बलन व पृष्ठपोषण के द्वारा अधिगम के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

12.15 अपराधी बालक

जब किसी प्रौढ़ व्यक्ति का व्यवहार सामाजिक नियमों के विरूद्ध या गैरकानूनी होता है, तो उसे अपराधी कहा जाता है किन्तु वही व्यवहार यदि किसी अप्रौढ़ के द्वारा किया जाता है तो उसे बाल अपराध कहा जाता है। बाल अपराध शिक्षा–मनोविज्ञान के क्षेत्र का एक महत्त्वपूर्ण विषय है। इसके अन्तर्गत ऐसे बालकों की गतिविधियों का अध्ययन किया जाता है जो समाज के सामान्य बालकों की धारा से हटकर ऐसे कार्यों में संलिप्त हो जाते हैं जिन्हें समाज व कानून अपराध की श्रेणी में रखता है। अपराध केवल समाज के संतुलन को ही नहीं बिगाड़ता अपितु लोगों के जीवन को भी समाप्त करने में सहायक होता है। अपराध समाज विरोधी गतिविधि है, जिसके कारण ही दण्ड दिया जाता है।

12.15.1 अपराधी बालक का अर्थ एवं परिभाषा

सामान्यतया अपराधी बालक उसे कहा जाता है जो परिवार, समाज, विद्यालय आदि के नियमों के उल्लंघन के साथ राज्य के नियमों का भी उल्लंघन करता है। मनोविज्ञान ने यह शब्द न्यायशास्त्र से ग्रहण किया है। इसमें दो शब्दों का प्रयोग किया जाता है– अपराधी एवं बाल अपराधी। भिन्न–भिन्न देशों में इनका अर्थ एवं परिभाषाएँ अलग–अलग वैध शब्दों में की गई हैं। हमारे देश में इनका अर्थ इंडियन पेनल कोड ओर क्रिमिनल प्रोसीजर कोड के अन्तर्गत दिया गया है। ऐसा व्यक्ति जिसकी उम्र 21 वर्ष या इससे अधिक है और I.PC और Cr. P.C. के धारा के अन्तर्गत किसी न्यायालय द्वारा अपराधी घोषित किया जाता है तो वह कानूनन अपराधी कहलाता है, और जो व्यक्ति 7 वर्ष से 18 वर्ष तक आयु का होता है और न्यायालय द्वारा चिल्ड्रन एक्ट, I.P.C. और Cr. P.C. की किसी धारा के उल्लंघन के कारण अपराधी घोषित किया जाता है तो वह बाल अपराधी कहलाता है।

मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित है–

1. इवान्स के अनुसार–

जब कोई 18 साल से कम आयु का व्यक्ति नैतिक या कानूनी नियमावली का उल्लंघन करता है, तो उसे बाल अपराधी कहा जाता है।

2. पेज के अनुसार–

बालकों एवं किशोरों द्वारा किया गया अपराध जो कानून द्वारा निश्चित आयु के अधीन आते हैं, बाल अपराध कहलाता है।

3. स्किनर ने अनुसार–

किसी नियम के उल्लंघन के रूप में बाल अपराध परिभाषित किया जाता है जो किसी प्रौढ़ द्वारा किये जाने पर अपराध होता है।

4. होली के अनुसार–

वह बालक जो समाज–सम्मत आचरणों का पालन नहीं करता है, अपराधी कहलाता है।

5. गुड के अनुसार–

वह प्रत्येक बालक अपराधी है, जिसका व्यवहार सामान्य प्रचलित सामाजिक व्यवहार से इतना अधिक भिन्न हो जाय कि उसे समाज विरोधी की कोटि में लाना पड़े।

12.15.2 बाल अपराधी के लक्षण अथवा विशेषताएँ

अपराधी बालकों में निम्नांकित लक्षण देखे जा सकते हैं–

1. इनकी आवश्यकताएँ अधिक होती हैं और उच्च आकांक्षा रखने वाले

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

होते हैं और इनकी प्राप्ति के लिए गलत मार्ग अपनाने में संकोच नहीं करते हैं।

2. इन बालकों की समाज एवं विद्यालय के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति होती है और कुण्ठाओं से ग्रसित होते हैं।
3. ये बालक शारीरिक रूप से हृष्ट-पुष्ट होते हैं एवं सामान्य बालकों से इनकी माँसपेशियाँ अधिक विकसित होती हैं।
4. ये बालक आदर्श एवं मूल्यों से कोसों दूर होते हैं और कुतर्कों द्वारा अपना बचाव करते हैं।
5. ये बालक सामाजिक मानदण्डों एवं राज्य के नियमों की परवाह नहीं करते हैं।
6. ये बालक अपनी किसी भी समस्या के समाधान के लिए सीधा एवं सुगम मार्ग अपनाते है चाहे वह अवैध ही क्यों न हो।
7. ये बालक संवेगात्मक रूप से अस्थिर होते हैं। ये स्वभाव से आक्रामक, बेचैन, आवेगशील एवं विध्वंसक होते हैं।
8. ये प्रायः उग्र, दुस्साहसी एवं स्वार्थी प्रवृत्ति के होते हैं।
9. इन बालकों में दूसरों के प्रति वास्तविक प्रेम, स्नेह एवं प्यार नहीं होता है।

12.15.3 बाल-अपराधियों का वर्गीकरण

बाल अपराधियों के वर्गीकरण अनेक मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये गये। फेरी महोदय का वर्गीकरण निम्नलिखित हैं-

1. जन्मजात अपराधी
2. असामान्य अपराधी
3. प्रासंगिक अपराधी
4. व्यभिचारी अपराधी
5. अभ्यस्त अपराधी

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

1. जन्मजात अपराधी

जन्मजात अपराधी की बुद्धि लब्धि काफी कम होती है। वे जड़ और मूढ़ की श्रेणी में आते हैं। ये सदैव निराश, उदास और कुण्ठाग्रस्त दिखायी पड़ते हैं। अपनी हीन भावना को पूरा करने के लिये भयंकर अपराध जैसे- लूट, चोरी, हत्या और बलात्कार आदि कृत्य करते हैं।

2. अभ्यस्त अपराधी

ये बाल अपराधी इतना अधिक असमाजिक कार्य करते हैं कि अपराध करने में अभ्यस्त और निपुण हो जाते हैं। अपराध करने से इन्हें संतोष मिलता है। ये लोग आदतन नशेबाज, वेश्यागामी, चोर और जुआरी होते हैं।

3. असामान्य अपराधी

मनोविकार से ग्रसित बाल अपराधी भी इसी श्रेणी में आते हैं। ऐसे बालक में चेतना एवं ज्ञान शून्य होता है। ऐसे बाल अपराधी आत्महत्या या अन्य व्यक्तियों की हत्या करने में संकोच नहीं करते हैं। इनमें सोचने-समझने की शक्ति भी शून्य होती है।

4. प्रासंगिक अपराधी

ऐसे बाल अपराधी बालकों में चिंतन एवं तर्कशक्ति का अभाव होता है। ये बिना सोचे समझे दूसरों के कहने से लड़ाई-झगड़ा, चोरी, झूठ बोलना या अन्य प्रकार के समाज विरोधी कार्यों में संलिप्त रहते हैं। इन्हें प्रासंगिक अपराधी इसलिए कहते हैं क्योंकि यह प्रसंगवश अपराधी व्यवहार करते हैं।

5. व्यभिचारी अपराधी

जब बालकों में काम शक्ति इतनी अधिक बढ़ जाती है कि वे स्वयं पर नियंत्रण भी नहीं रख पाते हैं, तो व्यभिचारी हो जाते हैं। इनकी कामेच्छा पशुवत् होती है और वे असामाजिक ढ़ंग से अपनी इच्छाओं की पूर्ति का प्रयास करते हैं। ऐसे बाल अपराधी प्रायः बाल मैथुन, पशु मैथुन, विषमलिंगीय मैथुन और हस्तमैथुन आदि करते हैं। अश्लील चित्र खींचना, अपने गुप्तांग देखना और लोगों से छेड़-छाड़ करना इनकी प्रवृत्ति हो जाती है।

12.15.4 बाल अपराध के कारण

बाल अपराध होने के कारकों को मुख्य रूप से तीन वर्गों में रखा जा सकता है-

1. जैविक कारक
2. पर्यावरणीय कारक
3. मनोवैज्ञानिक कारक

1. जैविक कारक

जैविक कारकों में आने वाले मुख्य कारक निम्नलिखित हैं-

1. **वंशानुक्रम** - थॉर्नडाइक, स्वार्ज एवं स्कूलसिंगर ने अपने-अपने अध्ययनों द्वारा यह सिद्ध किया कि बालकों में अपराधवृत्ति उनके माता-पिता अथवा उनके वंशजों से आती है। इनके माता-पिता अथवा चाचा, नाना, मौसा आदि किसी न किसी रूप में अपराधवृत्ति में लिप्त थे और यह अपराधवृत्ति पित्रैकों द्वारा बालकों में आती है।
2. **शरीर गठन** - विलियम शेल्डन ने अपने अध्ययन से इस तथ्य को उजागर किया कि अपराधी व्यवहार और मेसोमॉर्फिक संरचना में सहसम्बन्ध होता है। मेसोमॉर्फिक संरचना वाले बालकों के शरीर की माँसपेशियाँ गठीली एवं मजबूत होती हैं।
3. **XYY क्रोमोसोम्स** - सामान्यतया बालक एंव बालिकाओं का निर्माण दो क्रोमोसोम्स के संयोग से होता है, लेकिन कुछ बालक ऐसे होते हैं जिनमें एक अतिरिक्त Y क्रोमोसोम्स होता है। ऐसे बालकों द्वारा अपराध अधिक किए जाते हैं।

2. पर्यावरणीय कारक

दोषपूर्ण पर्यावरण बालकों को अपराधी बना देता है। ये पर्यावरणीय कारक निम्नलिखित हैं-

1. **परिवार** - बालकों द्वारा अपराधवृत्ति की ओर जाने में परिवार जिम्मेदार होता है। बैण्ड्रा, वाल्टर्स, वेहलर, लेफ्कोविज, ग्रिस्ट एवं वेल्स ने अपने-अपने अध्ययनों द्वारा बालकों की अपराधवृत्ति के लिए परिवार एवं उसके पर्यावरण को जिम्मेदार माना है। इनके अध्ययनों का निष्कर्ष निम्नलिखित है-
   a. माता-पिता द्वारा बालक का तिरस्कार एवं दोषपूर्ण अनुशासन अपराधवृत्ति को जन्म देता है।
   b. माता-पिता द्वारा बालक पर अंकुश न रख पाने से वह अपराध करने लगता है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

c. परिवार के टूटने के कारण (माता-पिता में से एक की मृत्यु अथवा सम्बन्ध विच्छेद) भी बालक अपराधवृत्ति की ओर बढ़ता है।

d. माता-पिता द्वारा पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाने से परिवार के एक बालक को दूसरे से ईर्ष्या, द्वेष एवं दोषपूर्ण स्पर्धा हो जाती है और लगातार पक्षपातपूर्ण घटनाएँ इनमें तीव्रता उत्पन्न कर देती हैं और उपेक्षित बालक अपराध द्वारा अपना सम्मान अन्य समूह में प्राप्त करने का प्रयास करता है।

e. घरेलू झगड़े भी कभी-कभी बालकों को अपराधवृत्ति की ओर धकेलते हैं।

f. माता-पिता अथवा परिवार के किसी सदस्य का आपराधिक व्यवहार भी बालकों को इस ओर प्रवृत्त करता है।

g. घर का नीरस एवं अरूचिपूर्ण वातावरण भी बालकों को अपराधी बना देता है।

h. गरीबी एवं आर्थिक तंगी भी बालक को अपराधवृत्ति की ओर प्रवृत्त करती है।

i. किशोरों को अधिक स्वतन्त्रता देना और उनके क्रियाकलापों का सतत् निरीक्षण न करने से वे अपराध करने लगते हैं।

j. माता-पिता अथवा घनिष्ठ सम्बन्धों की चरित्रहीनता के कारण उत्पन्न कुण्ठा बालक को अपराध की ओर धकेलती है।

2. **पास-पड़ोस का पर्यावरण** – पास-पड़ोस के अपराधी बच्चों एवं व्यक्तियों की संगति के कारण बालक अपराधी हो जाता है। जुआ खेलना, नशीले पदार्थों का सेवन, चोरी, यौन अपराध आदि बालक बुरी संगति से ही सीखता है।

3. **सामाजिक पर्यावरण** – बालक का सामाजिक परिवेश उसके व्यवहार पर प्रभाव डालता है। आज का सामाजिक माहौल मारधाड़, लूट-पाट, बलात्कार, भ्रष्ट आचरण, अवैध समूहों का निर्माण, हड़ताल एवं धरनों का अपराधीकरण आदि का बालक के मन-मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता है और उसे अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति का सरल एवं सुदृढ़ साधन इन आपराधिक कृत्यों में दिखाई देता है और वह इस मार्ग पर चल पड़ता है।

4. **विद्यालय का पर्यावरण** – घर के बाद बालकों पर विद्यालय के पर्यावरण का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। विद्यालय के दूषित पर्यावरण से बालक कुसमायोजन की ओर प्रवृत्त होता है और धीरे-धीरे अपराध की ओर बढ़ता जाता है। विद्यालय का दूषित पर्यावरण निम्नांकित कारणों से हो सकता है-

a. दूषित पाठ्यक्रम।

b. अनुपयुक्त शिक्षण विधियाँ।

c. पाठ्यसहगामी क्रियाओं का दोषपूर्ण आयोजन अथवा इन क्रियाओं का आयोजन नहीं करना।

d. अनुशासनहीन वातावरण।

e. अध्यापकों की आपस में गुटबाजी एवं छात्रों के साथ दुर्भावनापूर्ण व्यवहार करना।

f. कुछ बालकों के साथ अध्यापकों का पक्षपातपूर्ण रवैया और कुछ के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार।

3. मनोवैज्ञानिक कारक

अपराधी बालक कुसमायोजन का शिकार होते हैं। कुसमायोजन के मुख्य कारण हैं बालकों की आवश्यकताओं की पूर्ति न होना। बालकों की शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं सामाजिक आवश्यताएँ होती हैं। इनकी पूर्ति में बाधा आने पर बालकों में कुण्ठा, निराशा, दुश्चिन्ता एवं तनाव पैदा हो जाता है और वे इन्हें दूर करने के लिए ऐसे साधन ढूँढ़ते हैं जिनकी समाज एवं कानून आज्ञा नहीं देता है। धीरे-धीरे वे इसके आदी हो जाते हैं और आपराधिक कृत्यों को करने लगते हैं। मानसिक द्वन्द्व की स्थिति में बालक क्या अच्छा, क्या बुरा, क्या ठीक, क्या गलत है इनका निर्णय नहीं कर पाता और इस कारण वह अपराध करने लगता है।

12.15.5 बाल अपराध का उपचार

बाल अपराध रोकने के दो उपाय हैं, एक अपराध की ओर प्रवृत्त होने से पहले ही ऐसे उपाय करना, जिससे बालक अपराधी न बनें। ऐसे उपायों को प्रतिबन्धात्मक उपाय कहते हैं। फिर भी यदि बालक अपराधी बन जाते हैं, तो उन्हें सुधारने के उपाय करना, जिन्हें उपचारात्मक उपाय कहते हैं।

1. प्रतिबन्धात्मक उपाय

प्रतिबन्धात्मक उपाय ऐसे उपाय हैं जो बालकों को अपराधी बनने से रोकते हैं। इस कार्य के लिए परिवार, समाज एवं विद्यालय के पर्यावरण में सुधार किया जाता है। अतः इन तीनों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।

1. **परिवार की भूमिका** – बालक का प्रथम विद्यालय परिवार होता है। परिवार का वातावरण स्वस्थ होने पर बालक में आपराधिक दुर्गुणों की उत्पत्ति नहीं होती है। परिवार का वातावरण स्वस्थ एवं प्रेरणादायक बनाने हेतु निम्नांकित उपाय किए जाने चाहिए।

   a. परिवार के सदस्यों का आचरण नैतिक एवं विधिसम्मत होना चाहिए।

   b. माता-पिता को चाहिए कि वे बालकों की उचित आवश्यकताओं की पूर्ति में कटौती न करें। अनुचित आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के बारे में बालकों से माता-पिता को सतत् संवाद द्वारा उन्हें जिम्मेदारी देकर एवं प्रेमपूर्ण व्यवहार द्वारा उनसे होने वाली हानियों की व्याख्या कर उन्हें सन्तुष्ट करना चाहिए।

   c. परिवार का वातावरण प्रेमपूर्ण होना चाहिए। मार-पीट, झगड़े, गाली-गलौच आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। माता-पिता को बच्चों के सामने अपना आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए।

   d. माता-पिता को अपने बच्चों की संगति एवं आचरण का सतत् निरीक्षण करना चाहिए। जिस क्षण भी उन्हें अन्यथा आचरण दिखाई दे, उसी समय उसके सम्बन्ध में बातचीत करनी चाहिए।

   e. बच्चों की गलती पर उन्हें डाँटना नहीं चाहिए, वरन् प्रेम, सहानुभूति एवं सहयोगपूर्ण व्यवहार से उन्हें समझाना चाहिए।

2. **समाज की भूमिका** – बालकों के व्यवहार पर समाज में व्याप्त बुराईयों का प्रभाव पड़ता ही है। राज्य का कर्त्तव्य है कि वह समाज में बढ़ती अपराध वृत्तियों को रोके। अपराधियों के लिए उचित दण्ड की व्यवस्था करे और समाज को तोड़ने जैसी प्रवृत्तियों को हवा न दे। अश्लील पोस्टर, शराबखाने, क्लबों की गन्दी प्रवृत्तियाँ आदि पर

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

शासन को प्रतिबन्ध लगाना चाहिए। लूट–पाट, बलात्कार, भ्रष्टाचार, मार–पीट, गन्दी राजनीति, वर्गवाद, जातिवाद आदि को फैलाने वाले व्यक्तियों एवं समूहों पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए और उनको दण्ड देने की प्रक्रिया लम्बी नहीं होनी चाहिए।

3. **विद्यालयों की भूमिका** – विद्यालय बालकों का बड़ा परिवार होता है। यहाँ का पर्यावरण शुद्ध, स्वस्थ एवं प्रेरक होना चाहिए। इसके लिए निम्नांकित प्रयास किए जाने चाहिए–
   a. प्रार्थना सभा का आयोजन औपचारिक न होकर नैतिक एवं सामूहिकता की भावना से परिपूर्ण होना चाहिए।
   b. शिक्षकों को छात्रों के सामने अपने आपको अपने आचरण द्वारा आदर्श एवं मॉडल के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।
   c. शिक्षकों का आपस में एवं छात्रों से व्यवहार प्रेम, सहानुभूति एवं सहयोगपूर्ण होना चाहिए।
   d. विद्यालय का शैक्षिक वातावरण छात्रों की क्षमता, योग्यता एवं रूचि के अनुसार होना चाहिए।
   e. विद्यालय व्यवस्था में छात्रों की सहभागिता एवं जिम्मेदारी बढ़ानी चाहिए।
   f. सहशैक्षिक क्रियाओं का आयोजन छात्रों की रूचि के अनुरूप होना चाहिए।
   g. विद्यालय में छात्रों को स्वतन्त्र चिन्तन के अवसर और सृजनात्मक कार्यों को अभिव्यक्त करने की व्यवस्था होनी चाहिए।
   h. शिक्षकों का सतत् प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण बालकों को कुछ भी गलत करने के लिए रोकता है, इसकी व्यवस्था गम्भीरता से की जानी चाहिए।
   i. विद्यालय में व्यक्तिगत, शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशक की व्यवस्था होनी चाहिए।
   j. छात्रों के साथ सतत् संवाद एवं माता–पिता से सम्पर्क रखना, छात्रों पर अप्रत्यक्ष प्रतिबन्ध का कार्य करता है और इसके कारण छात्र अपराध की राह नहीं पकड़ता है। शिक्षकों को इस उत्तरदायित्व को पूरा करना चाहिए।
   k. छात्रों में स्वमूल्यांकन करने का अभ्यास कराने से वे अपने सही एवं गलत कृत्यों का तर्कपूर्ण विश्लेषण कर सकेंगे और वे स्वयं ही अपराधी वृत्तियों का विरोध करेंगे।

2. उपचारात्मक उपाय

जब बालक अपराधवृत्ति में लिप्त हो जाते हैं तो उनका उपचार करना आवश्यक होता है। मनोवैज्ञानिक फ्रायड ने स्पष्ट किया कि बालकों की अतृप्त इच्छाएँ उनके अचेतन मन–मस्तिष्क में अंकित हो जाती हैं और ये उनके व्यवहार को प्रभावित करती है और उन्हें अपराध प्रवृत्ति की ओर अग्रसित करती हैं। मनोवैज्ञानिकों ने इन अतृप्त इच्छाओं को अचेतन मस्तिष्क से निकालने की विधियों का विकास किया है। इन विधियों में मुख्य निम्नलिखित हैं–

1. **मनोविश्लेषण** – इस विधि में सम्मोहन का प्रयोग कर अतृप्त इच्छाओं का पता लगाया जाता है और तद्नुकूल उपचार किया जाता है।
2. **खेल चिकित्सा** – इस विधि में बालक खेल–खेल में अपनी अपराध प्रवृत्ति को प्रकट करता है और परिणामतः धीरे–धीरे उनकी यह प्रवृत्ति कम होती है।
3. **मनोअभिनय** – इस विधि में नाटकों द्वारा अभिव्यक्ति का अवसर दिया जाता है। बालक अपनी पसन्द की भूमिका निभाते हैं और अपने अन्दर की भावनाओं (हर्ष, क्रोध, घृणा, प्रेम आदि) को प्रकट करते हैं। धीरे–धीरे इन भावनाओं द्वारा प्रकट अपराध अथवा समाज विरोधी वृत्ति को कम किया जाता है।

****

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

1. जो अपनी योग्यताओं, क्षमताओं, व्यक्तित्व तथा व्यवहार सम्बन्धी विशेषताओं की दृष्टि से अपनी आयु के अन्य औसत तथा असामान्य बालकों से बहुत भिन्न होते हैं, कहलाते हैं–
   (1) विशिष्ट बालक (2) पिछड़े बालक
   (3) समस्यात्मक बालक (4) विकलांग बालक

2. विशिष्ट बालक का सम्बन्ध है–
   (1) बुद्धि स्तर से (2) निष्पत्ति स्तर से
   (3) आर्थिक स्तर से (4) सामाजिक स्तर से

3. टर्मन के अनुसार विशिष्ट बालक की विशेषता है–
   (1) उत्तम शारीरिक विकास (2) शैक्षिक विकास
   (3) बौद्धिक विकास (4) इनमें से सभी

4. विशिष्ट बालकों के अन्तर्गत निम्न में से कौनसा बालक आता है?
   (1) प्रतिभाशाली (2) पिछड़ा बालक
   (3) मन्द-बुद्धि बालक (4) उपर्युक्त सभी

5. विशिष्ट बालकों की श्रेणी में आते हैं–
   (1) बौद्धिक रूप से भिन्न बालक
   (2) शारीरिक रूप से भिन्न बालक
   (3) वंचन के आधार पर भिन्न बालक
   (4) उपरोक्त सभी

6. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
   1. विशिष्ट बालकों के लिए पृथक्करण का दर्शन विद्यार्थियों, माता-पिता तथा अध्यापकों को बताया जाना चाहिए।
   2. विशिष्ट या विलक्षण बालकों की आवश्यकताएँ भी विशिष्ट ही होती हैं। अतः उसके लिए दिशा- निर्देशन भी विशिष्ट होना चाहिए।

   उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
   (1) केवल 1
   (2) केवल 2
   (3) 1 और 2
   (4) न तो 1 और न ही 2

7. विशिष्ट बालकों की शिक्षा का/के क्या उद्देश्य है/हैं?
   (1) मानसिक विकास का उद्देश्य
   (2) शारीरिक विकास का उद्देश्य
   (3) व्यावसायिक दक्षता का उद्देश्य
   (4) ये सभी

8. विशिष्ट बालकों को शिक्षा देने हेतु अपनाए जाने वाली प्रणाली है–
   (1) प्रभावक एवं उपयुक्त शिक्षा
   (2) सम्बन्धित पाठ्यक्रम
   (3) विशिष्ट विद्यालय एवं कक्षाएँ
   (4) उपरोक्त सभी

9. विशिष्ट बालकों की पहचान की विधि है–
   (1) सामूहिक निष्पत्ति (2) मानसिक परीक्षण
   (3) स्वास्थ्य परीक्षण (4) उपरोक्त सभी

10. विशिष्ट बालकों के लिए पूर्व पृथक्कीकरण शिक्षा व्यवस्था का उदाहरण है–
    (1) अतिरिक्त कक्षा योजना (2) विशेष कक्षा योजना
    (3) विशेष विद्यालय योजना (4) आवासीय विद्यालय योजना

11. विशिष्ट बालकों के प्रकार हैं–
    1. मानसिक रूप से पिछड़े बालक
    2. शैक्षिक रूप से पिछड़े बालक
    3. प्रतिभावान बालक
    4. सृजनात्मक बालक

    कूट–
    (1) 3 और 4 (2) 1 और 2
    (3) 1,2 और 3 (4) ये सभी

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

12. ..... **प्रतिभाशाली** होने का संकेत नहीं है।
    (1) सृजनात्मक विचार (2) दूसरों के साथ झगड़ना
    (3) अभिव्यक्ति में नवीनता (4) जिज्ञासा

13. प्रतिभाशाली विद्यार्थी–
    (1) स्वभाव के अन्तर्मुखी होते हैं।
    (2) अपनी आवयश्यकताओं को दृढ़तापूर्वक नहीं कह पाते।
    (3) अपने निर्णयों में आत्मनिर्भर होते हैं।
    (4) शिक्षकों से स्वतन्त्र होते हैं।

14. प्रतिभाशाली बालक की विशेषता है–
    (1) सामान्य अध्ययन में रूचि (2) दैनिक कार्यों में समरूपता
    (3) मन्द-बुद्धि बालकों में रूचि (4) मूर्त विषयों में रूचि

15. अधिगम असमर्थी बालक वह है जिसकी–
    (1) बुद्धिलब्धि कम है। (2) बुद्धिलब्धि अधिक है।
    (3) बुद्धिलब्धि औसत है। (4) बुद्धिलब्धि बहुत अधिक है।

16. प्रतिभाशाली शिक्षक ..... होता है।
    (1) अभिसारी चिन्तक (2) अपसारी चिन्तक
    (3) बहिर्मुखी (4) बहुत परिश्रमी

1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.	9.	10.	11.	12.	13.	14.	15.	16.						
(1)	(1)	(3)	(4)	(4)	(3)	(4)	(4)	(4)	(4)	(4)	(2)	(3)	(1)	(1)	(2)						

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

17. अधिगम असमर्थी बालकों की विशेषता होती है–
(1) संवेगात्मक प्रतिरोध (2) चेतना की कमी
(3) स्मृति की कमी (4) ये सभी

18. अधिगम निर्योग्यता का लक्षण है–
(1) भागने की प्रवृत्ति होना
(2) अशान्त, ऊर्जावान एवं विध्वंसक होना
(3) अवधान सम्बन्धी बाधा/विकार
(4) अभिप्रेरणा का अभाव

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

19. वंचित वर्ग के बालकों के अन्तर्गत आते हैं–
(1) अन्धे व अपंग बालक
(2) पूर्ण बधिर या आंशिक बधिर
(3) मन्द–बुद्धि व हकलाने वाले बालक
(4) उपर्युक्त सभी बालक

20. श्रवण क्षतियुक्त बालक वे होते हैं, जो–
(1) न सुन पाते हैं, न देख पाते हैं।
(2) बोलने से पहले श्रवण शक्ति खोने वाले
(3) न बोल पाते हैं, न देख पाते हैं।
(4) इनमें से कोई नहीं

21. सृजनात्मक शिक्षार्थी वह है, जो–
(1) बहुत बुद्धिमान है।
(2) परीक्षा में हर बार अच्छे अंक प्राप्त करने के योग्य है।
(3) पार्श्व (लेट्रल) चिन्तन और समस्या–समाधान में अच्छा है।
(4) ड्रॉइंग और पेन्टिंग में बहुत विलक्षण है।

22. समस्यात्मक बालक है–
(1) झूठ बोलने वाला
(2) चोरी करने वाला
(3) माता–पिता का कहना न मानने वाला
(4) उपरोक्त सभी

23. शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों को सामान्यतः ..... होता है।
(1) डिस्कैल्कुलिया (2) डिस्लेक्सिया
(3) डिस्ग्राफिया (4) डिस्थीमिया

24. एक बच्चा जो ..... से ग्रस्त है, वह **saw** और **was, nuclear** और **unclear** में अन्तर नहीं कर सकता।
(1) शब्द **जंबलिंग विकार** (2) डिस्लेक्सिमिया
(3) डिस्मोरफिया (4) डिस्लेक्सिया

25. कक्षा में तीन बच्चे पोलियोग्रस्त हैं। खेल के कालांश में उन्हें–
(1) एक कोने में बैठना चाहिए, ताकि वे खेल का आनन्द ले सकें।
(2) अन्य बच्चों के साथ उचित खेलों में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
(3) केवल आन्तरिक खेलों में हिस्सा लेने की अनुमति देनी चाहिए।
(4) कक्षा के सभी विद्यार्थियों के साथ खेलने के लिए जोर डालना चाहिए।

26. जब एक शिक्षिका दृष्टिबाधित शिक्षार्थी को कक्षा के अन्य शिक्षार्थियों के साथ सामूहिक गतिविधियों में शामिल करती हैं, तो वह–
(1) कक्षा के लिए सीखने हेतु बाधाएँ उत्पन्न कर रही हैं।
(2) समावेशी शिक्षा की भावना के अनुसार कार्य कर रही हैं।
(3) सभी शिक्षार्थियों में दृष्टिबाधित शिक्षार्थी के प्रति सहानुभूति विकसित करने में मदद कर रही हैं।
(4) दृष्टिबाधित शिक्षार्थी पर सम्भवतः तनाव बढ़ा रही है।

27. श्रवण ह्रास से ग्रसित बच्चे कक्षा में किस सबसे मुख्य नैराश्य (कुण्ठा) का सामना करते हैं?
(1) दूसरों के साथ सम्प्रेषण करने तथा सूचनाओं को बाँटने में अक्षमता
(2) दूसरे विद्यार्थियों के साथ परीक्षा देने में अक्षमता
(3) प्रस्तावित पाठ्य–पुस्तक को पढ़ने की अक्षमता
(4) खेल–कूद में भागीदारिता निभाने में अक्षमता

28. **डिस्लेक्सिया** मुख्य रूप से ..... की समस्या से सम्बन्धित है।
(1) सुनने (2) पढ़ने
(3) बोलने (4) बोलने व सुनने

29. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराई जानी चाहिए–
(1) अन्य सामान्य बच्चों के साथ
(2) विशेष विद्यालयों में विशेष बच्चों के लिए विकसित पद्धतियों द्वारा
(3) विशेष विद्यालयों में
(4) विशेष विद्यालयों में विशेष शिक्षकों द्वारा

30. **डिस्लेक्सिया** किससे सम्बन्धित है?
(1) मानसिक विकार से (2) गणितीय विकार से
(3) पठन विकार से (4) व्यवहार–सम्बन्धी विकार से

31. पाँचवीं कक्षा के **दृष्टिबाधित** विद्यार्थी–
(1) को निचले स्तर के कार्य करने की छूट मिलनी चाहिए।
(2) के माता–पिता और मित्रों द्वारा उसे दैनिक कार्यों को करने में सहायता की जानी चाहिए।
(3) के साथ कक्षा में सामान्य रूप से व्यवहार किया जाना चाहिए और श्रव्य सी.डी. के माध्यम से सहायता उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
(4) के साथ कक्षा में विशेष व्यवहार किया जाना चाहिए।

32. विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की सीखने सम्बन्धी समस्याओं को सम्बोधित करने का सबसे बेहतर तरीका है–
(1) अक्षमता के अनुरूप विभिन्न शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग करना
(2) महँगी और चमकदार सहायक सामग्री का प्रयोग करना

17.	18.	19.	20.	21.	22.	23.	24.	25.	26.	27.	28.	29.	30.	31.	32.			
(4)	(3)	(4)	(2)	(3)	(4)	(3)	(4)	(2)	(2)	(1)	(2)	(1)	(3)	(3)	(1)			

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

(3) सरल और रोचक पाठ्य-पुस्तकों का प्रयोग करना
(4) कहानी कथन पद्धति का प्रयोग करना

33. निःशक्त बच्चों के लिए समेकित शिक्षा की केन्द्र प्रायोजित योजना का उद्देश्य है– ..... में निःशक्त बच्चों को शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराना।
(1) विशेष विद्यालयों
(2) मुक्त विद्यालयों
(3) ब्लाइण्ड रिलीफ एसोसिएशन के विद्यालयों
(4) नियमित विद्यालयों

34. **डिस्थीमिया** है–
(1) गम्भीर तनाव की अवस्था (2) पठन विकार
(3) शब्द जंबलिंग विकार (4) लेखन विकार

35. गणित को समझने की अशक्तता है–
(1) डिस्मोरफिया (2) डिस्कैल्कुलिया
(3) डिस्ग्राफिया (4) डिस्लेक्सिया

36. **डिस्ग्राफिया** मुख्य रूप से ..... की समस्या से सम्बन्धित है।
(1) सुनने (2) पढ़ने
(3) बोलने (4) लिखने

37. निम्नलिखित में से मौखिक रूप से सीखने की अशक्तता कौनसी है?
(1) डिस्ग्राफिया (2) डिस्कैल्कुलिया
(3) अफेज्या (4) डिस्लेक्सिया

38. ..... के अतिरिक्त निम्नलिखित सभी के कारण अधिगम अक्षमता उत्पन्न हो सकती है–
(1) सांस्कृतिक कारक (2) सेरेब्रल डिस्फंक्शन
(3) संवेगात्मक विघ्न (4) व्यवहारगत विघ्न

39. गतिक कौशलों में अधिगम निर्योग्यता ..... कहलाती है।
(1) डिस्फ्रेजिया (2) डिस्प्रेक्सिया
(3) डिस्कैल्कुलिया (4) डिस्लेक्सिया

40. निम्नलिखित में से कौनसी मानसिक मन्दता की विशेषता नहीं है?
(1) बुद्धिलब्धि का 25 से 70 के मध्य होना
(2) धीमी गति से सीखना एवं दैनिक जीवन की क्रियाओं को न कर पाना
(3) वातावरण के साथ अनुकूलन में कठिनाई
(4) अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों का कमजोर होना

41. विद्यार्थियों के अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए निम्नलिखित में से कौनसा तरीका अधिक महत्त्वपूर्ण है?
(1) सह-शैक्षिक क्रियाओं का प्रावधान
(2) अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता
(3) रूचियों की भिन्नता
(4) अध्यापक की भूमिका एवं विद्यालयी वातावरण

42. शारीरिक निर्योग्यता वाले व्यक्ति के लिए निम्न मे से कौनसी युक्ति रक्षा तन्त्र में सबसे सन्तोषजनक होगी?
(1) तादात्मीकरण (2) विवेकीकरण
(3) अतिकल्पना (4) इनमें से कोई नहीं

43. मानसिक स्वास्थ्य और ..... में घनिष्ठ सम्बन्ध है।
(1) अभिवृत्ति (2) स्वीकार्यता
(3) बचने (4) समायोजन

44. **मानसिक स्वास्थ्य के नियमों को खोजना और उन्हें बनाये रखना अध्ययन का केन्द्र बिन्दु है।** यह कथन है–
(1) शैफर का (2) हैडफील्ड का
(3) ड्रेवर का (4) लैडेल का

45. निम्नलिखित में से मानसिक विकार के लक्षणों को सभी दर्शाते हैं, सिवाय–
(1) भग्नाशा के
(2) तनाव के
(3) सम्बन्ध के
(4) चिन्ता के

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

46. **फ** एवं **व**, **म** एवं **न** अक्षरों की ध्वनियों में अन्तर न कर पाना अधिगम की किस समस्या से सम्बन्धित है?
(1) अवधान केन्द्रण से
(2) स्मृति से
(3) प्रत्यक्षीकरण से
(4) इनमें से सभी

47. यदि आपकी कक्षा में कोई बच्चा अधिगम अक्षम हो, तो आप क्या करेंगे?
(1) उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देंगे।
(2) उसकी अक्षमता किस प्रकार की है? यह जानकर उसको सिखाने का प्रयास करेंगे।
(3) उसकी अतिरिक्त कक्षा लेंगे।
(4) उसकी बैठक व्यवस्था कक्षा के बुद्धिमान बच्चों के साथ करेंगे।

48. निम्न में से कौनसा कथन किसी व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को उत्तम रूप से प्रदर्शित करता है?
(1) पूर्ण अभिव्यक्ति, संगतिकरण और सामान्य लक्षण की ओर निर्देशन
(2) मानसिक विकारों का न होना
(3) व्यक्तित्व के विकारों से मुक्ति
(4) इनमें से सभी

www.praganya.org

33.	34.	35.	36.	37.	38.	39.	40.	41.	42.	43.	44.	45.	46.	47.	48.						
(4)	(1)	(2)	(4)	(3)	(1)	(2)	(4)	(4)	(3)	(2)	(3)	(3)	(4)	(2)	(1)						

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

49. निम्नलिखित में से कौनसा संकेत बच्चों में दृष्टि बाधिता की समस्या सूचित नहीं करता?
(1) दिशा-निर्देश के अनुसरण में समस्या
(2) उदासी
(3) ठोकर लगने का भय
(4) दूरी मापने में असमर्थता

50. वाक् बाधित बच्चों का विकास किया जा सकता है, उनको-
(1) कक्षा में अपने विचार को प्रदर्शित करने के लिए प्रोत्साहित करके
(2) सही ध्वनि के उच्चारण के लिए सहायता करके
(3) उनके द्वारा कथित गलतियों को सुनने में सहायता करके
(4) मूल्यांकन के लिए विशेषज्ञ के पास भेजकर

51. **राष्ट्रीय दृष्टि बाधितार्थ संस्थान** (N.I.V.H.) स्थित है-
(1) शिमला में (2) कोलकाता में
(3) देहरादून में (4) दिल्ली में

52. मानसिक रूप से पिछड़े बालकों के लिए निम्न में से कौनसी व्यूह रचना कार्य करेगी?
(1) कार्यों को मूर्त रूप से समझाना
(2) विद्यार्थियों को लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रोत्साहित करना
(3) स्व-अध्ययन के अवसर प्रदान करना
(4) सहायता के लिए बाहर से संसाधनों को प्राप्त करना

53. विकलांग बच्चों की सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या है-
(1) समायोजन की (2) कुरूपता की
(3) मानसिक असन्तुलन की (4) शारीरिक न्यूनता की

54. धीमी गति से सीखने वाले बालक की बुद्धि लब्धि होती है-
(1) 75 से 90 के मध्य
(2) 60 से 70 के मध्य
(3) 100 से 110 के मध्य
(4) 40 से 60 के मध्य

55. शिक्षा पाने में पूर्णतः अयोग्य बालक की बुद्धि लब्धि होती है-
(1) 75 से 90 के मध्य (2) 50 से 70 के मध्य
(3) 0 से 25 के मध्य (4) 25 से 50 के मध्य

56. अन्धे बालक पढ़ सकते हैं-
(1) ब्रेल लिपि (2) सामान्य लिपि
(3) हिन्दी व सामान्य लिपि (4) ये सभी

57. **मानसिक स्वास्थ्य और अधिगम से सफलता का बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है।** यह कथन है-
(1) कुप्पूस्वामी का (2) फ्रैण्डसन का
(3) स्किनर का (4) ड्रेवर का

58. **मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ-वास्तविकता के धरातल पर वातावरण से पर्याप्त सामंजस्य करने की योग्यता है।** यह कथन है-
(1) लैडेल का (2) ड्रेवर का
(3) स्किनर का (4) क्रो एवं क्रो का

59. विकलांग बच्चों के साथ शिक्षक को करना चाहिए-
(1) प्रेमपूर्ण व्यवहार (2) उपेक्षापूर्ण व्यवहार
(3) सामान्य से हेय (4) उदासीनतापूर्ण व्यवहार

60. विकलांग बच्चों को शिक्षित करना-
(1) धन की बर्बादी है। (2) घाटे का सौदा है।
(3) व्यर्थ कार्य है। (4) सामाजिक कर्त्तव्य है।

61. मानसिक रोगों से पीड़ित बालकों की बीमारी के कारणों का अध्ययन निम्न में से किससे किया जाता है?
(1) समाजमिति विधि द्वारा
(2) वैयक्तिक इतिहास विधि द्वारा
(3) नियन्त्रित निरीक्षण विधि द्वारा
(4) मनोमिति विधियों द्वारा

62. बालक के मानसिक स्वास्थ्य के विकास के लिए पाठ्यक्रम होना चाहिए-
(1) अत्यन्त सरल
(2) अत्यधिक बोझिल
(3) क्षमताओं के प्रतिकूल
(4) रुचियों के अनुकूल

63. यदि एक बच्चा 16 को 61 लिखता है तथा 6 और D के मध्य अन्तर नहीं कर पाता, तो यह है-
(1) दृष्टि दोष (2) सीखने में अक्षम
(3) मानसिक दोष (4) मानसिक क्षय

64. विकलांगों को सामान्य शिक्षा व्यवस्था में शिक्षित करना चाहिए, क्योंकि-
(1) वे सहानुभूति के पात्र हैं।
(2) उन्हें सामान्य जीवन में अपने-आपको समायोजित करना है।
(3) उन्हें भी शिक्षित करना आवश्यक है।
(4) उनकी शारीरिक कमजोरी, मानसिक कमजोरी को बढ़ाती है।

65. यूनेस्को ने किस वर्ष को विकलांगों का अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित किया?
(1) 1992 (2) 1985
(3) 1975 (4) 1982

66. समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत आते हैं-
(1) अधिगम अक्षमता वाले बालक
(2) श्रवण दोष वाले बालक
(3) दृष्टि दोष वाले बालक
(4) उपरोक्त सभी

49.	50.	51.	52.	53.	54.	55.	56.	57.	58.	59.	60.	61.	62.	63.	64.	65.	66.				
(1)	(2)	(3)	(2)	(1)	(1)	(3)	(1)	(2)	(1)	(1)	(4)	(2)	(4)	(2)	(2)	(4)	(4)				

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

67. शारीरिक विकलांगता का कारण नहीं है–
(1) चिन्ता (2) जन्मोपरान्त चोट
(3) जन्मपूर्व क्षति (4) आनुवंशिक कारक

68. शारीरिक विकलांगता का कारण है–
(1) भाषा भिन्नता (2) चिन्ता
(3) जन्मोपरान्त क्षति (4) पारिवारिक समस्या

69. विकलांग जन अधिनियम में कुल कितने प्रकार की विकलांगता को चिह्नित किया गया?
(1) 5 (2) 7
(3) 6 (4) 8

70. विकलांग जन अधिनियम कब पारित हुआ?
(1) 1990 (2) 1992
(3) 1995 (4) 1996

71. पोलियोग्रस्त बालक को शारीरिक रूप से विशिष्ट बालकों की किस श्रेणी में रखा जा सकता है?
(1) सांवेगिक रूप से विकलांग (2) गतीय रूप से विकलांग
(3) बहुल विकलांग (4) अन्य

72. जन्मजात शारीरिक विकलांगता का कारक है–
(1) गुणसूत्रों का असामान्य संयोग
(2) भ्रूणावस्था में माँ के शरीर पर दवाओं का असर
(3) माँ का AIDS से ग्रसित होना
(4) उपरोक्त सभी

73. कौनसी संस्था चक्षु विकलांगों के लिए कार्य कराने वाली व्यक्तिगत और सामाजिक संस्थाओं के क्रियाकलापों को समन्वित करती है?
(1) नेशनल एसोसिएशन फॉर द ब्लाइण्ड
(2) दृष्टिहीन विकलांग संस्थान
(3) राष्ट्रीय दृष्टिहीन विकलांग संस्थान
(4) कोई नहीं

74. रीढ़ की हड्डी में विकृति कैसे विरूपण का उदाहरण है?
(1) स्नायुविक विरूपण
(2) बौधिर विरूपण
(3) घोस विरूपण
(4) वंशगत विरूपण

75. भारतीय संविधान के कौनसे अनुच्छेद विकलांग व्यक्तियों के कल्याण से सम्बन्धित है?
(1) 46 व 42 (2) 41 व 46
(3) 42 व 43 (4) 14 व 15

76. रेल मंत्रालय विविध प्रकार से विकलांग व्यक्तियों को किराये में छूट देता है–
(1) 15 से 75% (2) 25 से 50%
(3) 75 से 99% (4) 100%

77. रेल मंत्रालय अन्धे व्यक्तियों को किराये में छूट देता है–
(1) 15 से 75% (2) 25 से 50%
(3) 75 से 99% (4) 100%

78. विश्व विकलांगता दिवस प्रतिवर्ष मनाया जाता है–
(1) मार्च के प्रथम रविवार को
(2) मार्च के द्वितीय रविवार को
(3) मार्च के तृतीय रविवार को
(4) मार्च के चतुर्थ रविवार को

79. राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान स्थित है–
(1) फैजाबाद में (2) हैदराबाद में
(3) मुरादाबाद में (4) होशंगाबाद में

80. आंशिक अन्धता को जन्म देता/देते है/हैं–
(1) धूल (2) धूप
(3) धुआँ (4) ये सभी

81. राष्ट्रीय अपंग विकलांग संस्थान स्थित है–
(1) देहरादून (2) हैदराबाद
(3) मुम्बई (4) कोलकाता

82. राष्ट्रीय श्रवणहीन विकलांग संस्थान स्थित है–
(1) देहरादून (2) हैदराबाद
(3) मुम्बई (4) कोलकाता

83. विकलांग व्यावसायिक पुनर्वास केन्द्रों की संख्या हैं–
(1) 16 (2) 17
(3) 18 (4) 20

84. अपंगता का कारक नहीं है–
(1) बीमारी (2) जन्मजात अनियमितता
(3) मनोरंजन (4) दुर्घटना

85. विकलांगिक एवं अक्षम बालकों के लिए शैक्षिक प्रावधान है–
(1) विशेष कक्षा (2) विशेष अध्यापक
(3) विशेष पाठ्यक्रम (4) उपरोक्त सभी

86. श्रवण क्षतियुक्त बालकों को शिक्षा दी जाती है–
(1) चिह्नित भाषा के द्वारा (2) संकेत भाषा के द्वारा
(3) 1 और 2 दोनों के द्वारा (4) इनमें से कोई नहीं

www.praganya.org

67.	68.	69.	70.	71.	72.	73.	74.	75.	76.	77.	78.	79.	80.	81.	82.	83.	84.	85.	86.		
(1)	(3)	(3)	(3)	(2)	(4)	(1)	(1)	(2)	(1)	(4)	(3)	(2)	(4)	(4)	(3)	(2)	(3)	(4)	(3)		

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

87. श्रवण क्षतियुक्त बालकों की शिक्षा निम्न में से किसके द्वारा नहीं दी जा सकती?
(1) संगीत भाषा (2) चिह्न भाषा
(3) संकेत भाषा (4) ओष्ठ पाठन

88. श्रवण क्षति युक्त बालकों की शैक्षिक सुविधा है–
(1) विडियो टेप्स (2) सुनने की मशीन
(3) फिल्म (4) उपरोक्त सभी

89. अन्धे बालक होते हैं–
(1) दृष्टि एक्यूटी 20/200 होती है।
(2) इनकी आँखे आपरेशन द्वारा ठीक हो सकती है।
(3) अपनी इन्द्रियों पर निर्भर न रहने वाले
(4) इनमें से कोई नहीं

90. दृष्टि सम्बन्धी दोष मानव के किस विकास पर प्रभाव नहीं डालता है?
(1) शारीरिक व मानसिक
(2) शैक्षिक व व्यावसायिक
(3) संवेगात्मक
(4) सांस्कृतिक

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

91. ब्रेल लिपि का प्रयोग किया जाता है–
(1) अन्धे बालकों के लिए
(2) श्रवण दोष युक्त बालकों के लिए
(3) विकलांग बालकों के लिए
(4) इनमें से कोई नहीं

92. शारीरिक रूप से अक्षम बालक निम्न में से किस प्रकार के नहीं होते?
(1) लंगड़े (2) लूले या पोलियो ग्रस्त
(3) जड़ बुद्धि वाले (4) ये सभी

93. बोलने के दोष से सम्बन्धित नहीं है–
(1) आवाज की समस्या (2) हकलाना व तुतलाना
(3) अशुद्ध उच्चारण (4) तेज बोलने वाले

94. मनुष्य की आवाज का वर्णन निम्न में से किसके द्वारा किया जा सकता है?
(1) स्तर, उच्चता, गुण
(2) तेजी, ऊँचाई, स्तर
(3) लय, गम्भीरता, सुरीलापन
(4) इनमें से कोई नहीं

95. बालकों में भाषा दोष व उच्चारण की समस्या को किस आयु में गम्भीरता से लेकर सुधारा जा सकता है?
(1) बाल्यावस्था में (2) किशोरावस्था में
(3) शैशवावस्था में (4) युवावस्था में

96. 100 बालकों में से कितने बालक हकलाने वाले होते हैं?
(1) 6 से 10 (2) 11 से 15
(3) 16 से 20 (4) 21 से 25

97. कक्षा में एक बच्चा अपनी अपंगता के कारण तिरस्कृत कर दिया जाता है। अध्यापक को उसे पढ़ने हेतु अभिप्रेरित करने के लिए उसकी कौनसी आवश्यकता की पूर्ति करनी होगी?
(1) शारीरिक आवश्यकता
(2) सुरक्षा आवश्यकता
(3) सम्बन्ध जोड़ने की आवश्यकता
(4) सम्मान पाने की आवश्यकता

98. यदि कक्षा के कुछ छात्र कमजोर दृष्टि के हो, तो–
(1) उन्हें आगे बिठाया जाना चाहिए।
(2) उन्हें इलाज की सलाह देनी चाहिए।
(3) उनके अभिभावकों को बुलाकर उनके (छात्र) इलाज की सलाह देनी चाहिए।
(4) उनकी परवाह किए बिना अपने कार्य पर ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए।

99. टर्मन के अनुसार मानसिक रूप से विकलांग बालक कहलाते हैं–
(1) 80 से कम बुद्धि लब्धि वाले
(2) 90 से कम बुद्धि लब्धि वाले
(3) 50 से कम बुद्धि लब्धि वाले
(4) 70 से कम बुद्धि लब्धि वाले

100. निम्न में कौनसे युग्म सुमेलित हैं?

1. सम्प्रेषण तकनीक – श्रवण क्षतियुक्त बालकों की सबसे बड़ी समस्या
2. भाषा चिह्न – अमेरिकन चिह्न भाषा
3. शैक्षणिक परिणाम – श्रवण क्षतियुक्त के लिए वाणी की आवश्यकता नहीं
4. सामान्य वर्गीकरण – चिकित्सकीय वर्गीकरण

कूट–
(1) 1 और 2
(2) 2 और 3
(3) 3 और 4
(4) 1 और 4

101. दृष्टि दोषयुक्त बालकों की पहचान किस आधार पर की जाती है?
(1) नेत्र–चिकित्सकीय परीक्षण (2) स्नेलेट चार्ट
(3) जिगर चार्ट (4) ये सभी

87.	88.	89.	90.	91.	92.	93.	94.	95.	96.	97.	98.	99.	100.	101.							
(1)	(4)	(1)	(4)	(1)	(3)	(4)	(1)	(3)	(1)	(3)	(3)	(4)	(1)	(4)							

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

102. निम्नलिखित में से कौनसे युग्म सुमेलित हैं?

1.	श्रवण विकलांगता की मात्रा बहुत ही कम	–	श्रवण प्रतिशतता काफी कम होती है।
2.	आंशिक श्रवण विकलांगता	–	60 से 70 डेसीबल
3.	अधिक श्रवण	–	50 से 80 डेसीबल
4.	पूर्ण	–	91 डेसीबल से अधिक

कूट–
(1) 1 और 2 (2) 2 और 3
(3) 3 और 4 (4) 1 और 4

103. दृष्टिहीन बालकों के व्यवहार में दिखाई देने वाला/वाले लक्षण है/हैं–
(1) तिरछी नजर
(2) चलते समय वस्तुओं तथा व्यक्तियों से टकराना
(3) सिर दर्द की शिकायत
(4) उपरोक्त सभी

104. दृष्टिदोष बालकों की समस्या है–
(1) निम्न दृष्टिलब्धि
(2) धीमा वाणी विकास
(3) सौन्दर्यानुभूति की कमी
(4) ये सभी

105. अन्धापन नियन्त्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रमों की शुरूआत कब हुई?
(1) 1976 (2) 1977
(3) 1990 (4) 1992

106. दृष्टि दुर्बलता के कारण हैं–
(1) जन्म के पूर्व के कारण
(2) जन्म के समय के कारण
(3) जन्म के बाद के कारण
(4) उपरोक्त सभी

107. बहुत कम दृष्टि वाले बालकों को कितन भागों में विभाजित किया जाता है?
(1) 1 (2) 2
(3) 3 (4) 4

108. बहुत कम देखने वाले बालकों की क्या पहचान है?
(1) 20/70 तथा 20/200 के मध्य दृष्टि एक्यूटी वाले बालक
(2) ऐसे बालक, जो गम्भीर तथा बढ़ने वाली दृष्टि सम्बन्धी कठिनाइयों से ग्रस्त हो।
(3) नेत्र सम्बन्धी रोग, जो दृष्टि तीक्ष्णता को प्रभावित करने वाले रोगों से पीड़ित हो।
(4) उपरोक्त सभी

109. नेत्रहीन तथा आंशिक नेत्रहीन बालकों में क्या अन्तर है?
(1) नेत्रहीन बालकों को आसनी से ही प्रारम्भिक अवस्था में पहचाना जा सकता है, जबकि आंशिक रूप से दृष्टिहीन बालक की पहचान कठिन है।
(2) आंशिक तौर पर दृष्टिहीन बालकों की दृष्टि कुछ सीमा तक होती है या पूर्णतया दृष्टिहीन बालक पूरी तरह स्पर्श तथा श्रवण सम्बन्धी अंगों पर निर्भर करता है।
(3) 1 और 2 दोनों
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

110. नेत्रहीन बालकों के लिए शिक्षण सिद्धान्त है–
(1) स्व–क्रिया का सिद्धान्त
(2) अतिरिक्त उद्दीपन का सिद्धान्त
(3) मूर्तता
(4) उपरोक्त सभी

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

111. पूर्ण अन्धे बालकों की शिक्षा का समायोजन किस आधार पर किया जा सकता है?
(1) ब्रेल पद्धति (2) विशिष्ट पाठ्यक्रम
(3) विशिष्ट आवासीय स्कूल (4) ये सभी

112. निम्न दृष्टि वाले बालकों की शिक्षा का समायोजन किया जाता है–
(1) विशिष्ट शिक्षण सामग्री द्वारा
(2) सुनकर दोहराने के अभ्यास द्वारा
(3) कक्ष अनुकूलन द्वारा
(4) ये सभी

113. कैसे छात्र नेत्रहीन की श्रेणी में आते हैं?
(1) दुर्बल या नगण्य दृष्टि वाले छात्र
(2) सबल या नगण्य दृष्टि वाले छात्र
(3) सामान्य चश्मा लगाने वाले छात्र
(4) चश्मा नहीं लगाने वाले छात्र

114. दृष्टि दोष को किस अर्थ में प्रयोग में लाया जाता है?
(1) कानूनी अर्थ में (2) शैक्षिक अर्थ में
(3) 1 और 2 दोनों (4) इनमें से कोई नहीं

115. बधिरता या श्रवणहीनता की पहचान की जाती है–
(1) क्रमबद्ध निरीक्षण द्वारा (2) घड़ी परीक्षण द्वारा
(3) विकासात्मक पैमाने द्वारा (4) उपरोक्त सभी

116. श्रवण दोषयुक्त बालकों की क्या समस्या/समस्याएँ है/हैं?
(1) भाषा सम्बन्धी समस्याएँ
(2) व्यक्तिगत विकास में बाधा
(3) असामान्य संवेगात्मक व्यवहार
(4) उपरोक्त सभी

www.praganya.org

102.	103.	104.	105.	106.	107.	108.	109.	110.	111.	112.	113.	114.	115.	116.	
(4)	(4)	(4)	(1)	(4)	(4)	(4)	(3)	(3)	(4)	(4)	(1)	(3)	(4)	(4)	

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

117. श्रवण विकलांगता का प्रकार हैं–
(1) चालकीय श्रवण विकलांगता (2) सांवेदिक श्रवण विकलांगता
(3) मिश्रित श्रवण विकलांगता (4) उपरोक्त सभी

118. श्रवण विकलांगता के कितने प्रकार है?
(1) 5 (2) 6
(3) 2 (4) 3

119. सांवेदिक श्रवण विकलांगता का/के क्या कारक है/हैं?
(1) शैशवावस्था की आनुवंशिक बधिरता
(2) आर. एच. अपरिपूर्णता
(3) गर्भावस्था में वायरल संक्रमणता
(4) उपरोक्त सभी

120. अधिगम असमर्थी बालकों की विशिष्ट समस्या/समस्याएँ कौनसी है/हैं?
(1) पढ़ने में असमर्थता
(2) लिखने में असमर्थता
(3) सम्प्रेषण और अनुदेशन को समझने की समस्या
(4) उपरोक्त सभी

121. अधिगम असमर्थी बालकों की पहचान के लिए कौनसा परीक्षण उपयुक्त नहीं हैं?
(1) उपलब्धि परीक्षण (2) रूचि परीक्षण
(3) योग्यता परीक्षण (4) मानक निदानात्मक परीक्षण

122. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. भारत में विकलांग पुनर्वास परिषद् की स्थापना वर्ष 1992 में की गई।
2. विकलांग लोगों के लिए समान अवसर समान अधिनियम, 1995 में आया।
3. सामाजिक न्याय तथा अधिकारिता मन्त्रालय विकलांगों से सम्बन्धित नीति नियम बनाता है तथा उन्हें लागू करता है।
4. विकलांगों के लिए राष्ट्रीय नीति की घोषणा वर्ष 2006 में की गई।
उपरोक्त कथनों में कौनसे कथन सही हैं?
(1) 1,2 और 3 (2) 2,3 और 4
(3) 1,3 और 4 (4) ये सभी

123. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. शिक्षकों को अधिगम असमर्थी बालकों के प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करना चाहिए।
2. समस्या के आधार पर पाठ्यक्रम में सुधार होना चाहिए।
3. शिक्षकों को बालकों के साथ औपचारिक तथा अनौपचारिक बैठकें करनी चाहिए।
4. सर्वप्रथम बालक को सीधे तथा सरल कार्य करने चाहिए।
उपरोक्त कथनों में कौनसे कथन सही हैं?
(1) 1,2, और 3 (2) 2,3 और 4
(3) 1,3 और 4 (4) ये सभी

124. प्रमस्तिष्क अंगाघात होने का/के क्या कारण है/हैं?
(1) जेनेटिक गड़बड़ी
(2) क्रोमोजोमल असामान्यता
(3) मस्तिष्क को रक्त की दोषपूर्ण आपूर्ति
(4) उपरोक्त सभी

125. **एक व्यक्ति जिसको कोई ऐसा शारीरिक दोष होता है, जो किसी भी प्रकार से उसे सामान्य क्रियाओं में भाग लेने से रोकता है अथवा उसे सीमित रखता है, उसे हम शारीरिक न्यूनताग्रस्त या विकलांग व्यक्ति कह सकते हैं।** यह कथन किसका है?
(1) क्रो एवं क्रो का (2) वैलेन्टाइन का
(3) स्कीनर का (4) निक्सन का

126. NCERT ने विकलांग शिक्षा के सम्बन्ध में क्या कहा है?
(1) विकलांगता का तात्पर्य अंग विशेष की कार्यक्षमता पर अंकुश है।
(2) विकलांगता जन्मजात हो सकती है।
(3) 1 और 2 दोनों
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

127. जे. एच. बेकर ने विकलांगता के सम्बन्ध में क्या कहा है?
(1) विकलांग व्यक्तियों में किसी प्रकार की शारीरिक निर्बलता हो सकती है।
(2) विकलांगता के कारण व्यक्ति किसी कार्य को या तो पूरा कर सकता है या नहीं।
(3) 1 और 2 दोनों
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

128. क्या मनसमन्दता, विकलांगता में शामिल हो सकती है?
(1) हाँ
(2) नहीं
(3) 1 और 2 दोनों
(4) इनमें से कोई नहीं

129. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. सफलता प्राप्ति में किसी प्रकार की वांछित कमी बालक के विकास तथा परिपक्वता को प्रभावित करती है।
2. उपरोक्त वर्णित विकास तथा परिपक्वता की कमी विकलांगता कहलाती है।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1
(2) केवल 2
(3) 1 और 2 दोनों
(4) न तो 1 और न ही 2

117.	118.	119.	120.	121.	122.	123.	124.	125.	126.	127.	128.	129.	
(1)	(1)	(4)	(4)	(2)	(4)	(4)	(4)	(1)	(3)	(3)	(1)	(3)	

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

130. क्लेमेण्ट ने वर्ष 1966 में अधिगम असमर्थी बालकों की कितनी विशेषताएँ बताई हैं?
(1) 8 (2) 9
(3) 6 (4) 4

131. कौनसे बालकों को शब्द ग्रहण करने व देखने में भी कठिनाई होती है। अर्थात् बिना भावों के समझने, बोलकर पढ़ने में कठिनाई का अनुभव करते हैं?
(1) प्रतिभाशाली बालक (2) समस्यात्मक बालक
(3) अधिगम असमर्थी बालक (4) पिछड़े बालक

132. अधिगम असमर्थी बालकों हेतु सुधारात्मक प्रविधि है–
(1) अभिकृमित अनुदेशन का प्रयोग करे।
(2) बालकों के अधिगम हेतु चित्रों का अधिक प्रयोग करे।
(3) बहु–ज्ञानेन्द्रिय उपागम को अपनाना चाहिए।
(4) उपरोक्त सभी

133. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. विकलांग बालकों को अपने अवकाश के क्षणों का सदुपयोग करना चाहिए।
2. क्योंकि अपनी कुछ कमियों की वजह से वे अपने समय का सदुपयोग नहीं कर पाते हैं।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

134. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. भारत में करीब 25 लाख बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से विकलांग हैं।
2. विकलांगों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए समुचित शिक्षा व्यवस्था करना अनिवार्य है।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1
(2) केवल 2
(3) 1 और 2 दोनों
(4) न तो 1 और न ही 2

135. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. विकलांग बालकों को व्यावसायिक शिक्षण प्रशिक्षण तथा जीविकोपार्जन की व्यवस्था करना अनिवार्य है।
2. विकलांग बालकों के लिए सामान्य शिक्षा के साथ ही विशेष शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

136. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. यह एक सामाजिक अवधारणा है कि विकलांग बालक कुछ भी करने में असमर्थ है।
2. वस्तुतः विकलांग बालक कुछ क्षेत्रों में ही कार्य करने में असमर्थ रहता है।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 दोनों (4) न तो 1 और न ही 2

137. अधिगम असमर्थी बालकों के लिए कौनसा सुझाव असत्य है?
(1) सुलेख में सुधार
(2) अंकगणितीय योग्यता में विकास करना
(3) संवेदनात्मक विकास करना
(4) पाठ्यक्रम सम्बन्धी सुझाव

138. वर्ष 1998 में किसने अपना लेख अधिगम असमर्थी बालकों को शिक्षा आव्यूह के विषय में लिखा है?
(1) क्लेमेण्ट ने
(2) विलियम और हाउन्सेल ने
(3) हवीट तथा फोरनिस ने
(4) कोपिज ने

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

139. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. सामान्य शिक्षक को इसकी जानकारी होनी चाहिए कि उसकी कक्षा में अधिगम असमर्थी बालक हैं।
2. शिक्षक विशेष की सहायता ले सकता है।
3. स्कूल स्तर पर अधिगम असमर्थी बालकों की कार्यक्षमता का विकास करने तथा उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश होनी चाहिए।
4. शिक्षक को अधिगम असमर्थी बालक के लिए अच्छे सामान्य सहपाठी की व्यवस्था करनी चाहिए।
उपरोक्त कथनों में कौनसे कथन सही हैं?
(1) 1,2 और 3 (2) 2,3 और 4
(3) 1,3 और 4 (4) ये सभी

140. अधिगम तथा असमर्थी बालकों की क्या पहचान है?
(1) निरीक्षण (2) भाषा परीक्षण
(3) उपलब्धि (4) ये सभी

141. प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात के कितने प्रकार होते हैं?
(1) 1 (2) 2
(3) 3 (4) 4

142. प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात का/के प्रकार है/हैं–
(1) मस्तिष्क स्तम्भ (2) एथिटोसिस
(3) सटासिया (4) ये सभी

130.	131.	132.	133.	134.	135.	136.	137.	138.	139.	140.	141.	142.		
(2)	(3)	(4)	(3)	(3)	(3)	(3)	(3)	(2)	(4)	(4)	(3)	(4)		

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

143. अधिगम बालकों की असमर्थताओं का क्या कारण हैं?
(1) दोषपूर्ण मस्तिष्कीय कार्यप्रणाली
(2) अर्द्ध-सामान्य शारीरिक विकास
(3) 1 और 2 दोनों
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

144. अधिगम असुविधा युक्त बालक कितने प्रकार के होते हैं?
(1) 2 (2) 3
(3) 4 (4) 5

145. वंचित बालकों की शिक्षा को निम्न में से किस प्रयास द्वारा नहीं बढ़ाया जा सकता है?
(1) सृजनशीलता को प्रोत्साहित करके
(2) शिक्षा के अधिकार द्वारा
(3) जातिगतता को त्याग कर
(4) पब्लिक स्कूलों में दाखिला दिलाकर

146. प्रतिभाशाली शिक्षार्थी (को)-
(1) अधिगम-निर्योग्य नहीं कह सकते।
(2) ऐसे सहयोग की आवश्यकता होती है, जो सामान्यतः विद्यालयों द्वारा उपलब्ध नहीं कराए जाते।
(3) शिक्षक के बिना अपने आप को व्यवस्थित कर लेते हैं।
(4) अन्य शिक्षार्थियों के लिए अच्छे मॉडल बन सकते हैं।

147. प्रतिभाशाली बच्चों के सन्दर्भ में संवर्द्धन का अर्थ है-
(1) शैक्षणिक गतिविधियों के सम्पादन में संवर्द्धन करना
(2) सह-शैक्षणिक गतिविधियों के सम्पादन की गति को बढ़ाना
(3) ऐसे विद्यार्थियों को वतर्मान स्तर/ग्रेड को छोड़कर अगले उच्च स्तर/ग्रेड में प्रोन्नत करना
(4) आकलन की प्रक्रिया का संवर्द्धन करना

148. प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए निम्नलिखित में से कौनसी गतिविधि सर्वाधिक उपयुक्त है?
(1) पाँच पाठों के अन्त में दिए गए अभ्यासों को एक बार में हल करना
(2) शिक्षक दिवस पर कक्षा को पढ़ाना
(3) अभी हाल ही में हुए स्कूल मैच का प्रतिवेदन लिखना
(4) दी गई संकल्पनाओं के आधार पर मौलिक नाटक लिखना

149. प्रतिभाशाली बच्चे-
(1) सामान्यतः शारीरिक रूप से कमजोर होते हैं और सामाजिक अन्तःक्रिया में अच्छे नहीं होते।
(2) सामान्यतः अपने शिक्षकों को पसन्द नहीं करते।
(3) बिना किसी की सहायता के अपने सामर्थ्य का पूर्ण विकास करते हैं।
(4) मानव के लिए महत्त्वपूर्ण किसी भी क्षेत्र में स्वभावतः अच्छा निष्पादन करते हैं।

150. विज्ञान एवं कला प्रदर्शनियाँ, संगीत एवं नृत्य प्रस्तुतियाँ तथा विद्यालय-पत्रिका निकालना, ... के लिए है।
(1) शिक्षार्थियों को सृजनात्मक मार्ग उपलब्ध कराने
(2) विभिन्न व्यवसायों के लिए विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने
(3) विद्यालय का नाम रोशन करने
(4) अभिभावकों को सन्तुष्ट करने

151. शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों की त्रुटियों का अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि वे प्रायः ..... की ओर संकेत करती है।
(1) योग्यताओं के अनुसार समूह बनाने हेतु दिशा-निर्देश
(2) भिन्न प्रकार की पाठ्यचर्या की आवश्यकता
(3) उनके ज्ञान की सीमा
(4) आवश्यक उपचारात्मक युक्तियों

152. प्रतिभाशाली विद्यार्थी अपनी क्षमताओं को तब विकसित कर पाएँगे, जब-
(1) बार-बार उनकी परीक्षा होगी।
(2) वे अन्य विद्यार्थियों के साथ अधिगम-प्रक्रिया से जुड़ते हैं।
(3) उन्हें अन्य विद्यार्थियों से अलग किया जाएगा।
(4) वे निजी कोचिंग कक्षाओं में पढ़ेंगे।

153. आपको अपनी कक्षा में दो मन्द-बुद्धि बच्चों को बैठाने के लिए बोला गया है। आप-
(1) उन्हें अपने विद्यार्थी के रूप में ग्रहण करने से इन्कार करेंगे।
(2) प्रधानाध्यापक से उन्हें किसी और कक्षा में जोकि मन्द-बुद्धि बालकों के लिए विशेष रूप से चिह्नित है, में बैठाने के लिए बोलेंगे
(3) ऐसे विद्यार्थियों को सिखाने की तकनीक सीखेंगे।
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

154. जन्मजात योग्यताओं की तुलना में कम शैक्षिक उपलब्धि होती है-
(1) प्रतिभाशाली बालक की
(2) हाथ-पैर से विकलांग बालक की
(3) पिछड़े बालक की
(4) उपरोक्त सभी की

155. अपनी देखभाल के प्रशिक्षण की आवश्यकता किस बालक को होती है?
(1) प्रतिभाशाली बालक को
(2) मन्द-बुद्धि बालक को
(3) पिछड़ा बालक को
(4) इनमें से कोई नहीं

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

156. ड्रग्स लेने वाले बालकों की पहचान है-
(1) एकान्त में रहना (2) कर्त्तव्य विमुखता
(3) सुस्त रहना (4) ये सभी

143.	144.	145.	146.	147.	148.	149.	150.	151.	152.	153.	154.	155.	156.	
(3)	(2)	(4)	(2)	(3)	(4)	(4)	(1)	(4)	(2)	(3)	(3)	(2)	(3)	

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

157. निम्नलिखित में से कौनसा कथन सत्य है?
(1) व्यक्ति मानसिक दृष्टि से भी भिन्न हो सकते हैं।
(2) सीखने का आधार परिपक्वता नहीं है।
(3) लड़के तथा लड़कियों की रूचियाँ एवं योग्यताएँ एक जैसी होती हैं।
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

158. समायोजन सम्बन्धी समस्या किसके साथ सर्वाधिक होती है?
(1) प्रतिभाशाली बालक
(2) वंचित बालक
(3) मानसिक रूप से पिछड़े बालक
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

159. निम्नलिखित में से कौनसी मन्द-बुद्धि बालक की विशेषता नहीं है?
(1) दूसरों को मित्र बनाने की अधिक इच्छा
(2) मानसिक प्रक्रिया की तीव्रता
(3) सामाजिक असमायोजन
(4) विद्यालय में असफलताओं के कारण निराशा

160. निम्न में से पिछड़े बालक की समस्या है-
(1) स्कूल सम्बन्धी समस्याएँ (2) संवेगात्मक समस्याएँ
(3) सामाजिक समस्याएँ (4) इनमें से सभी

161. प्रतिभावान बालकों की पहचान किस प्रकार की जा सकती है?
(1) बुद्धि परीक्षा द्वारा (2) अभिरूचि परीक्षण द्वारा
(3) उपलब्धि परीक्षण द्वारा (4) इनमें से सभी

162. **पिछड़ा बालक वह है, जो अपने अध्ययन के मध्यकाल में अपने कक्षा कार्य जो अपनी आयु के अनुसार एक कक्षा नीचे का है, करने में असमर्थ रहता है।** उक्त कथन है-
(1) क्रो एवं क्रो का (2) बर्ट का
(3) स्किनर का (4) मनोज बघेला का

163. सृजनात्मक योग्यता वाले बालकों की बुद्धि-
(1) निम्न होती है। (2) प्रखर होती है।
(3) न निम्न और न ही प्रखर (4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

164. विद्यालयों में तीव्र एवं मन्द-बुद्धि बालकों के लिए निम्न में से शैक्षणिक व्यवस्था होनी चाहिए-
(1) अवसर की समानता (2) पाठ्यक्रम में समृद्धि
(3) अहमन्यता को रोकना (4) इनमें से सभी

165. मौलिकता का गुण पाया जाता है-
(1) प्रतिभाशाली बालकों में
(2) सृजनशील बालकों में
(3) धनी परिवार के बालकों में
(4) शिक्षित माता-पिता के बालकों में

166. बालकों के समस्यात्मक व्यवहार का कारण नहीं है-
(1) निर्धनता (2) अत्यधिक लाड़-प्यार
(3) मनोरंजन की सुविधा (4) अनैतिक व्यवहार

167. मानसिक विकास का परिणाम होता है-
(1) बालक की याद करने की योग्यता में वृद्धि
(2) बालक की सामाजिकता में विकास
(3) बालक के द्वारा स्वानुभवों द्वारा लाभ प्राप्ति की योग्यता
(4) उसकी सामान्य योग्यताओं में वृद्धि

168. कक्षा में पढ़ाई में पिछड़े हुए छात्रों के प्रति आपका दृष्टिकोण होगा-
(1) उनके पिछड़ेपन के कारणों को ढूँढ़नें में
(2) सभी का ठेका हमने थोड़े लिया है, यह सोचकर उन पर ध्यान नहीं देंगे।
(3) अन्य छात्रों के समान ही उन्हें समझेंगे।
(4) उन्हें अन्य छात्रों से अलग समझेंगे।

169. एक बालक की बुद्धि लब्धि 150 है, तो वह बालक है-
(1) अति प्रतिभाशाली (2) पिछड़ा बालक
(3) मन्द-बुद्धि बालक (4) असन्तुलित बालक

170. बालकों के समस्यात्मक व्यवहार के उपचार हेतु विधि है-
(1) विद्यालय उपचार विधि (2) परिवार उपचार विधि
(3) सरकार उपचार विधि (4) उपर्युक्त सभी

171. मनस्तापी बालक कितने प्रकार के होते हैं?
(1) 4 (2) 6
(3) 3 (4) 5

172. विकास की अवस्थाओं की दृष्टि से समस्यात्मक बालकों को कितने प्रकारों में बाँटा जा सकता है?
(1) 3 (2) 5
(3) 2 (4) 4

173. निम्न में से पिछड़े बालकों की शिक्षा के स्वरूप में कौनसी बातें सम्मिलित की जानी चाहिए?
(1) विशेष शिक्षण विधियों का प्रयोग
(2) विद्यालय में विशिष्ट कक्षाओं की व्यवस्था
(3) विशेष पाठ्यक्रम की व्यवस्था
(4) उपर्युक्त सभी

174. **कुशाग्र बुद्धि अथवा प्रतिभाशाली बालक वह है, जो निरन्तर किसी भी उचित कार्य-क्षेत्र में अपनी अद्भुत कार्य-कुशलता तथा प्रवीणता का परिचय देता है।** यह कथन किसका है?
(1) हैविंगहर्स्ट का (2) कोलेस्निक का
(3) विटी का (4) ओडन का

www.praganya.org

157.	158.	159.	160.	161.	162.	163.	164.	165.	166.	167.	168.	169.	170.	171.	172.	173.	174.
(1)	(3)	(2)	(4)	(4)	(2)	(3)	(4)	(2)	(3)	(3)	(1)	(1)	(1)	(1)	(2)	(4)	(1)

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

175. मन्द-बुद्धि बालकों की विशेषता नहीं हैं-
(1) सीखने की मन्द गति (2) अमूर्त चिन्तन का अभाव
(3) शारीरिक दोष (4) मौलिकता

176. प्रतिभाशाली बालकों की समस्या/समस्याएँ है/हैं-
(1) गिरोहों में शामिल होना
(2) अध्यापन विधियाँ
(3) स्कूल विषयों और व्यवसायों के चयन की समस्या
(4) उपर्युक्त सभी

177. मानसिक रूप से पिछड़े बालकों की विशेषता होती हैं-
(1) संवेगात्मक रूप से अस्थिर
(2) सीमित रुचियाँ
(3) निरन्तर अव्यवस्था का होना
(4) उपर्युक्त सभी

178. प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षण विधि है-
(1) गतिवर्द्धन (2) सम्पन्नीकरण
(3) विशिष्ट कक्षाएँ (4) इनमें से सभी

179. पिछड़े बालकों को शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी करने के लिए क्या करना चाहिए?
(1) पिछड़ेपन के कारणों की खोज करना
(2) व्यक्तिगत ध्यान
(3) पाठ्यान्तर क्रियाओं की व्यवस्था
(4) उपर्युक्त सभी

180. निम्नलिखित में समस्यात्मक बालक कौन है?
(1) पिछड़े बालक (2) मन्द-बुद्धि बालक
(3) प्रतिभाशाली बालक (4) चोरी करने वाले बालक

181. निम्न में से कौनसी विशेषता पिछड़े बालक की है?
(1) शारीरिक रूप से अयोग्य
(2) अधिगम की क्षमता कम होती है।
(3) सामाजिक व्यवहार में कुशल नहीं होते।
(4) उपर्युक्त तीनों विशेषताएँ

182. बाल अपराध उपचार की मनोवैज्ञानिक विधि नहीं है-
(1) मनोविश्लेषण
(2) मनो अभिनय
(3) खेल द्वारा चिकित्सा
(4) प्रवीक्षण

183. मानसिक दृष्टि से पिछड़े बच्चे आमतौर से अधिक-
(1) संवेदनशील होते हैं। (2) निष्ठावान होते हैं।
(3) शक्तिशाली होते हैं। (4) अनुशासनहीन होते हैं

184. नए एवं अमूल्य विचारों का प्रतिपादन करने की क्षमता को क्या कहते हैं?
(1) अन्तर्दृष्टि (2) बुद्धिमता
(3) सृजनात्मकता (4) ये सभी

185. निम्नलिखित में से सृजनात्मकता का अति आवश्यक भाग कौनसा है?
(1) संवेदना (2) चिन्तन
(3) तार्किकता (4) कल्पना

186. वे बालक जो प्रत्येक क्षेत्र में औसत बालक से अधिक तीव्र, बुद्धिमान, शारीरिक स्फूर्ति वाले एवं जीवन में अधिक सफलता पाने वाले होते हैं, कहलाते हैं-
(1) पिछड़े बालक
(2) प्रतिभाशाली बालक
(3) विकलांग बालक
(4) समस्यात्मक बालक

187. **प्रतिभाशाली बालकों के लिए शिक्षा का सफल एवं उपयोगी कार्यक्रम वह हो सकता है, जिसका उद्देश्य उनकी विभिन्न योग्यताओं का विकास करना हो।** यह कथन है-
(1) हैविगंहर्स्ट का (2) स्किनर का
(3) क्रो एवं क्रो का (4) सिरिल बर्ट का

188. **पिछड़े बालक अपनी आयु के अन्य छात्रों की तुलना में विशेष शैक्षिक निम्नता व्यक्त करते हैं।** यह किसने कहा है?
(1) स्कोनेल एवं स्कोनेल ने
(2) पी. डी. पाठक ने
(3) सिरिल बर्ट ने
(4) उपर्युक्त में से किसी ने नहीं

189. **समस्यात्मक बालक शब्द का प्रयोग साधारणतया उन बालकों के वर्णन हेतु किया जाता है, जिनका व्यवहार अथवा व्यक्तित्व किसी बात में गम्भीर रूप से असामान्य होता है।** यह कथन है-
(1) किन्स का (2) हैण्डरसन का
(3) वैलेन्टाइन का (4) रूडर्स का

190. वे छात्र, जो अपनी बुद्धि तथा कल्पना से नवीन वस्तु का सृजन या निर्माण करते हैं, ऐसे छात्र कहलाते हैं-
(1) प्रतिभाशाली छात्र (2) असाधारण छात्र
(3) सृजनात्मक छात्र (4) अपराधी छात्र

191. मन्द-बुद्धि बालक की बुद्धि-लब्धि होती है-
(1) 130 से अधिक (2) 130 से कम
(3) 60 से अधिक (4) 70 से कम

175.	176.	177.	178.	179.	180.	181.	182.	183.	184.	185.	186.	187.	188.	189.	190.	191.
(4)	(4)	(4)	(4)	(4)	(4)	(4)	(4)	(4)	(3)	(4)	(2)	(1)	(1)	(3)	(3)	(4)

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

192. प्रतिभाशाली बालक की विशेषता होती है–
(1) एक से अधिक विषयों में कमजोर होना
(2) अत्यधिक उत्तेजित होना
(3) अमूर्त चिन्तन की अधिकता होना
(4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

193. जो बालक असामाजिक कार्य करते हैं, ऐसे बालकों की श्रेणी है–
(1) प्रतिभाशाली बालक (2) अपराधी बालक
(3) सामान्य बालक (4) मन्द-बुद्धि बालक

194. **वह बालक पिछड़ा बालक कहलाता है, जो अपने विद्यालय कार्य में अपनी कक्षा से निचली कक्षा का भी कार्य करने में सक्षम नहीं है।** यह परिभाषा है–
(1) क्रो एवं क्रो की (2) बिट्टी की
(3) बर्ट की (4) फ्रायड की

195. 85 I.Q. (बुद्धि लब्धि) वाले बालक को कहते हैं–
(1) प्रतिभावान बालक (2) पिछड़ा बालक
(3) बुद्धिमान बालक (4) अपराधी बालक

196. जड़ बुद्धि (Idiot) बालकों की बुद्धि-लब्धि होती है–
(1) 25 (2) 25-50
(3) 50-75 (4) 75-100

197. मनोसामाजिक रूप से भिन्न बालकों के अन्तर्गत आते हैं–
(1) प्रतिभावान बालक (2) समस्यात्मक बालक
(3) भाषा विकलांग बालक (4) सृजनात्मक बालक

198. मनोसामाजिक रूप से भिन्न बालकों के अन्तर्गत नहीं आते हैं–
(1) समस्यात्मक बालक (2) अपराधी बालक
(3) मानसिक रूप से पिछड़े बालक (4) संवेगात्मक रूप से अशान्त

199. बौद्धिक रूप से भिन्न बालक नहीं है–
(1) शैक्षिक रूप से पिछड़ा (2) सृजनात्मक
(3) प्रतिभावान (4) वंचित बालक

200. 110 से अधिक आई. क्यू. (I.Q.) वाले बालक हैं–
(1) मानसिक रूप से पिछड़े (2) सामान्य
(3) प्रतिभाशाली (4) समस्यात्मक

201. तिरस्कृत बालक की समस्या का क्या कारक हो सकता है?
(1) परिवार का निम्न आर्थिक स्तर
(2) बालक में झूठ बोलने की आदत
(3) बालक के द्वारा कानून की अवेहलना
(4) माता-पिता की आपसी लड़ाई

202. **विशिष्ट प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति क्षीणकाय होते हैं, उनमें आत्मानुभूति की प्रवृत्ति होती है।** यह किसका अभिमत है?
(1) क्रेश्मर का (2) बिश का
(3) ल्यूसिटो का (4) पायने का

203. मानसिक रूप से निरूद्ध बालक कितने प्रकार के होते हैं?
(1) 3 (2) 4
(3) 5 (4) 6

204. **जिन बालकों की बुद्धि लब्धि 70 से कम होती है, उन्हें मन्द-बुद्धि बालक कहते हैं।** यह कथन है–
(1) स्किनर का (2) क्रो व क्रो का
(3) लैमर्ट का (4) फ्रैण्डसन का

205. मानसिक रूप से पिछड़े बालकों की विशेषता नहीं है–
(1) शैक्षिक उपलब्धि सामान्य बालक से कम
(2) पिछड़ेपन का कारण वंशानुगत
(3) पिछड़ेपन का कारण वातावरण
(4) निर्देश देना समस्या नहीं

206. **मन्द-बुद्धि बच्चों की शिक्षा के लिए जन्मजात शक्तियों का विकास एवं स्वस्थ आदतों का निर्माण करना चाहिए।** यह किसका कथन है?
(1) स्किनर का (2) क्रो व क्रो का
(3) लैमर्ट का (4) फ्रैण्डसन का

207. शैक्षिक पिछड़ेपन का कारक नहीं है–
(1) शैक्षिक तत्परता की कमी
(2) शारीरिक तथा इन्द्रियों सम्बन्धी योग्यता
(3) राजनीतिक अस्थिरता
(4) इनमें से कोई नहीं

208. शैक्षिक रूप से पिछड़े बालक का अर्थ होता है–
(1) पढ़ाई में पिछड़ा बालक
(2) घर व समाज में पिछड़ा बालक
(3) मानसिक रूप से पिछड़ा बालक
(4) इनमें से कोई नहीं

209. पिछड़े बालक कितने प्रकार के होते हैं?
(1) 3 (2) 4
(3) 5 (4) 6

210. पिछड़ेपन का प्रकार है–
(1) शारीरिक
(2) मानसिक
(3) संवेगात्मक
(4) उपरोक्त सभी

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

www.praganya.org

192.	193.	194.	195.	196.	197.	198.	199.	200.	201.	202.	203.	204.	205.	206.	207.	208.	209.	210.
(3)	(2)	(3)	(2)	(1)	(2)	(3)	(4)	(3)	(4)	(1)	(2)	(2)	(4)	(4)	(3)	(1)	(3)	(4)

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

211. **प्रतिभावान शब्द का प्रयोग उन 1 प्रतिशत बालकों के लिए किया जाता है, जो सबसे अधिक बुद्धिमान होते हैं।** यह किसका कथन है?
(1) स्किनर व हैरीमैन का (2) टर्मन व औडन का
(3) क्रो व क्रो का (4) बर्ट व हरलॉक का

212. **प्रशासकों में प्रतिभावान बालकों को विशेष शिक्षा प्रदान करने के प्रति बहुत कम इच्छा है।** यह कथन है–
(1) आटो का (2) फ्रैंक विल्सन का
(3) स्किनर का (4) टर्मन का

213. ब्रूनर ने सृजनात्मकता के पक्ष बताए हैं–
(1) 2 (2) 3
(3) 4 (4) 5

214. ब्रूनर के अनुसार सृजनात्मकता का पक्ष है–
(1) नवीनता (2) आश्चर्य
(3) मौलिकता (4) उपरोक्त सभी

215. जैकसन व मैसिक ने सृजनात्मकता के कितने आधार बताए हैं?
(1) 2 (2) 3
(3) 4 (4) 5

216. जैकसन व मैसिक के अनुसार सृजनात्मकता का आधार नहीं है–
(1) नवीनता (2) उचितता
(3) आश्चर्य (4) परिवर्तता

217. क्यूसी ने सृजनात्मकता के कितने पक्ष बताए हैं?
(1) 2 (2) 3
(3) 4 (4) 5

218. क्यूसी के अनुसार सृजनात्मकता का पक्ष है–
(1) बौद्धिक (2) भावनात्मक
(3) 1 और 2 दोनों (4) दोनों में से कोई नहीं

219. ब्रूनर के अनुसार सृजनात्मकता का पक्ष नहीं है–
(1) नवीनता (2) संग्राही
(3) आश्चर्य (4) मौलिकता

220. टोरेन्स के अनुसार सृजनशीलता की कितनी विशेषताएँ हैं?
(1) 80 (2) 84
(3) 90 (4) 94

221. सृजनात्मक चिन्तन परीक्षण से सम्बन्धित नहीं है–
(1) बाकर मेहन्दी (2) टोरेन्स
(3) बी. के. पासी (4) स्किनर

222. सृजनात्मकता के कितने तत्त्व होते हैं?
(1) 2 (2) 3
(3) 4 (4) 5

223. सृजनात्मकता का तत्त्व नहीं है–
(1) प्रभावशीलता (2) मौलिकता
(3) लचीलापन (4) प्रवाह

224. बालक में सृजनात्मक अभिव्यक्ति में निम्न में से क्या प्रभावी नहीं होता है?
(1) राजनीतिक भाषण (2) नाटकीय खेल
(3) रचनात्मक खेल (4) काल्पनिकता

225. **सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।** यह कथन है–
(1) क्रो व क्रो का (2) स्किनर का
(3) पारनीस का (4) लूथी का

226. पासी का सृजनात्मक परीक्षण इन्दौर में किस वर्ष में निर्मित किया गया?
(1) 1970 (2) 1962
(3) 1972 (4) 1982

227. अपचारी बालक कितने प्रकार के होते हैं?
(1) 2 (2) 4
(3) 3 (4) 5

228. अपचारी बालक का प्रकार है–
(1) सम्पत्ति नष्ट करने वाला
(2) दूसरे पर आक्रमण करने वाला
(3) समाज के नियमों का उल्लंघन करने वाला
(4) ये सभी

229. बर्ट ने समस्यात्मक बालकों को कितने भागों में बाँटा है?
(1) 2 (2) 3
(3) 4 (4) 5

230. बालक का **समाज विरोधी कार्य** मूल रूप से किससे प्रभावित होता है?
(1) शारीरिक रूप से (2) मानसिक व भावात्मक रूप से
(3) सामाजिक रूप से (4) राजनीतिक रूप से

231. यदि कक्षा–शिक्षण के दौरान कक्षा के छात्र सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं करते, तो इसका कारण आपके ख्याल से किसमें ढूँढ़ा जा सकता है?
(1) उस विषय में, जो छात्रों को पढ़ाया जा रहा हो।
(2) उस बात में, जो छात्रों को सिखाई जा रही हो।
(3) उस शैली में, जिस शैली से छात्रों को पढ़ाया सिखाया जा रहा हो।
(4) उपर्युक्त सभी

211.	212.	213.	214.	215.	216.	217.	218.	219.	220.	221.	222.	223.	224.	225.	226.	227.	228.	229.	230.	231.
(1)	(1)	(2)	(4)	(3)	(3)	(1)	(3)	(2)	(2)	(4)	(3)	(1)	(1)	(1)	(3)	(3)	(4)	(1)	(4)	(4)

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

232. शरारती बच्चों वाली कक्षा के बारे में आप क्या करेंगे?
(1) कुछ छात्रों को दूसरे सेक्शन में भेजने की सलाह देंगे।
(2) कुछ छात्रों को स्कूल से निकालने की सिफारिश करेंगे।
(3) प्रधानाध्यापक को स्थिति से अवगत करा देंगे।
(4) उस कक्षा के बच्चों को पढ़ाना बन्द कर देंगे।

233. बार-बार कहने के बावजूद कोई छात्र कक्षा में देर से आता है, ऐसी स्थिति में आप क्या उपाय करना पसन्द करेंगे?
(1) उसे कक्षा में नहीं घुसने देंगे।
(2) उसके अभिभावक को इस सम्बन्ध में सूचित करेंगे।
(3) पाठशाला के प्रधानाध्यापक को इसकी सूचना देंगे।
(4) उसकी अनदेखी कर देंगे।

234. यदि आपकी कक्षा का कोई छात्र अनुपस्थित हो, तो आप-
(1) उसके बारे में कक्षा के छात्रों से पूछेंगे।
(2) छात्र के अभिभावक से इसका कारण पूछेंगे।
(3) इस ओर ध्यान देना आवश्यक नहीं समझेंगे।
(4) उस छात्र को दण्ड देंगे।

235. कक्षा में पढ़ाई के समय दो छात्र आपस में बातें करते हैं। आपके ख्याल से उनके इस कार्य से-
(1) उन दोनों को हानि होती है।
(2) सारी कक्षा को हानि होती है।
(3) अध्यापक का ध्यान बँटता है।
(4) उपर्युक्त सभी

236. बाल-अपराध का कारण निम्नलिखित में से कौनसा हो सकता है?
(1) पारिवारिक (2) सामाजिक
(3) शारीरिक (4) ये सभी

237. बाल-अपराधियों को सुधारने के लिए किसकी सहायता लेनी चाहिए?
(1) अपराधियों की (2) शिक्षकों की
(3) मनोचिकित्सकों की (4) इन सभी की

238. किस नियम के अनुसार प्रतिभाशाली माता-पिता की सन्तान निम्न कोटि की होती है?
(1) प्रत्यागमन का नियम
(2) विभिन्नता का नियम
(3) मेण्डल का नियम
(4) इनमें से कोई नहीं

239. निम्नलिखित में से किसे बाल-अपराध की श्रेणी में रखा जा सकता है?
(1) चोरी करना (2) पढ़ने की अरूचि होना
(3) खेल-कूद में मन लगाना (4) इनमें से कोई नहीं

240. बाल-अपराध की रोकथाम के लिए माता-पिता को क्या करना चाहिए?
(1) बच्चों को डाँटना चाहिए।
(2) बच्चों से सहानुभूतिपूर्ण एवं सकारात्मक व्यवहार करना चाहिए।
(3) बच्चों को पीटना चाहिए।
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं।

241. प्रायः प्रतिभाशाली बालक, शिक्षकों की लापरवाही के कारण कुछ परेशानियों में फँस जाते हैं, तो ये परेशानियाँ क्या हो सकती है?
(1) वे निम्न एवं हीनभावना से ग्रस्त हो जाते हैं।
(2) वे बदमिज़ाज एवं अवसादी हो जाते हैं।
(3) वे एकांगी एवं अन्तर्मुखी हो जाते हैं।
(4) वे सामान्य बालकों के प्रति विद्रोही हो जाते हैं।

242. आपके विचार में एक प्रतिभावान छात्र का गुण है-
(1) अध्ययन रूचियाँ
(2) विस्तृत शब्द भण्डार
(3) शारीरिक श्रेष्ठता
(4) उपर्युक्त सभी

243. मन्द-बुद्धि बालकों के लिए उपयोगी सिद्धान्त है-
(1) थॉर्नडाइक का सिद्धान्त
(2) प्रबलन का सिद्धान्त
(3) अन्तर्दृष्टि सिद्धान्त
(4) क्रिया-प्रसूत अनुबन्धन सिद्धान्त

244. मन्द-बुद्धि बालक निम्न में से किनके शिकार होते हैं?
(1) गामक मन्दता के
(2) विलम्बित परिपक्वता के
(3) बौद्धिक रूप से निम्न श्रेणी
(4) उपर्युक्त सभी

245. एक लड़का बार-बार समझाने के बावजूद स्कूल देर से आया है, तो आप-
(1) उसे स्कूल से निकाल देंगे।
(2) इसकी सूचना प्रधानाचार्य को देंगे।
(3) इसकी सूचना उसके माता-पिता को देंगे।
(4) इसके कारणों का पता लगायेंगे।

246. एक विद्यार्थी आपसे अशिष्ट भाषा का प्रयोग करता है, आप उसे-
(1) डाँटेंगे।
(2) उस पर ध्यान नहीं देंगे।
(3) उससे बात नहीं करेंगे।
(4) उसे बात करने का ढंग सीखायेंगे।

www.praganya.org

232.	233.	234.	235.	236.	237.	238.	239.	240.	241.	242.	243.	244.	245.	246.	
(1)	(2)	(2)	(4)	(4)	(3)	(1)	(1)	(2)	(1)	(4)	(1)	(4)	(4)	(4)	

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

247. एक बालक की चोरी की आदत छुड़ाने के लिए आप क्या करेंगे?
(1) उसको डाँटेंगे।
(2) उसे चोरी से होने वाली हानियों से अवगत करायेंगे।
(3) चोरों की होने वाली दुर्दशा को बतायेंगे।
(4) उसके पैसे माँगने पर उसकी आदत की तरफ ध्यान आकर्षित करेंगे।

248. किसी छात्र के अशोभनीय आचरण पर एक शिक्षक को करना चाहिए–
(1) भयंकर क्रोध
(2) कठोर दण्ड का प्रयोग
(3) उपदेश देकर लज्जित करना
(4) उन्हें अपराध बोध कराना

249. सृजनशीलता के पोषण के लिए एक अध्यापक को निम्न में से किस विधि की सहायता लेनी चाहिए?
(1) बेन स्टार्मिंग/विचारवेश (2) व्याख्यान विधि
(3) दृश्य–श्रव्य सामग्री (4) इनमें से सभी

250. एक प्रतिभाशाली बालक के अनुशासनहीन होने की स्थिति में आप–
(1) तटस्थ बने रहेंगे।
(2) उसे दण्ड देंगे।
(3) उसके माता–पिता को बतायेंगे।
(4) उसके कारणों का पता लगायेंगे।

251. **प्रतिभाशाली बालक वह है जो अपने उत्पादन की मात्रा, दर तथा गुणवत्ता में विशिष्ट होता है।** यह कथन दिया गया है–
(1) टर्मन एवं ओडन द्वारा
(2) कैरल एवं मार्टिन्स द्वारा
(3) आर.डब्ल्यू. टेलर द्वारा
(4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

252. कौनसे बालकों को घर के लिए विशेष कार्य दिया जाना चाहिए?
(1) प्रतिभाशाली बालकों को
(2) पिछड़े बालकों को
(3) मानसिक रूप से पिछड़े बालकों को
(4) समस्यात्मक बालकों को

253. **वह बालक जो समाज द्वारा स्वीकृत आचरण का पालन नहीं करता, अपराधी कहलाता है।** यह किसने कहा है?
(1) गिलिन ने (2) स्किनर ने
(3) हीली ने (4) मौरर ने

254. अपराधी बालकों के उपचार की कौनसी विधि नहीं है?
(1) पर्यावरणात्मक विधि (2) मनोवैज्ञानिक विधि
(3) मनोविश्लेषणात्मक विधि (4) प्रश्नावली विधि

255. सृजनशीलता के पोषण हेतु, एक अध्यापक को अपने विद्यार्थियों को रखना चाहिए–
(1) कार्य केन्द्रित
(2) लक्ष्य केन्द्रित
(3) कार्य केन्द्रित एवं लक्ष्य केन्द्रित
(4) पुरस्कार प्रेरित

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

256. समस्या के अर्थ को जानने की योग्यता, वातावरण के दोषो, कमियों एवं रिक्तियों के प्रति सजगता विशेषता है–
(1) प्रतिभाशाली बालकों की (2) सामान्य बालकों की
(3) सृजनशील बालकों की (4) इनमें से कोई नहीं

257. प्रतिभाशाली बालक–
(1) तीव्रता और आसानी से सीखते हैं।
(2) जो सुनते या पढ़ते हैं, बिना रटे कण्ठस्थ कर लेते हैं।
(3) वस्तु चिन्तन करते हैं।
(4) कम समय में हर अभिप्रेरण का अनुसरण करते हैं।

258. मन्द अधिगमकर्ता जिनकी शैक्षिक उपलब्धि सामान्य योग्यता से कम रह जाती है, कहे जाते हैं–
(1) पिछड़े (2) विशेष
(3) बाल–अपराधी (4) मानसिक रूप से कमजोर

259. मन्द–बुद्धि बालकों के लिए कौनसे उपचारी कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं?
(1) पूर्व व्यावसायिक विद्यालय (2) गवेषणात्मक
(3) माध्यमिक (4) ये सभी

260. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. एक समय था जब मनोवैज्ञानिक विकास नहीं हुआ था, तो सभी बालकों को विशिष्ट बालक की श्रेणी में रखा जाता था।
2. जो बालक सामान्य बालक से बहुत अधिक भिन्न होते थे, असामान्य बालक कहलाते थे।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

261. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि इस संसार में कोई भी दो बालक रंग, रूप तथा प्रकृति में एक समान नहीं होते हैं।
2. विशिष्ट बालकों की श्रेणी में प्रखर बुद्धि वाले बालक से लेकर मानसिक तौर पर अक्षम बालकों को रखा जाता है।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

247.	248.	249.	250.	251.	252.	253.	254.	255.	256.	257.	258.	259.	260.	261.	
(4)	(4)	(1)	(4)	(1)	(1)	(3)	(4)	(3)	(3)	(4)	(1)	(4)	(2)	(1)	

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

262. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. विशिष्ट बालकों की श्रेणी में वो बालक होते हैं, जिन्हें सीखने में कठिनाई होती है।
2. एक विशिष्ट बालक वह है, जो शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक तौर पर अन्य बालकों से भिन्न होता है।

उपरोक्त कथनों में कौन–सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

263. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. कानूनों तथा संस्थाओं द्वारा मन्द–बुद्धि बालकों को पीड़ित किया जाता है।
2. न्यूयॉर्क का विशेष शिक्षा विभाग वर्ष 1940 में स्थापित किया गया।
3. यह सृजनात्मक बालकों पर अध्ययन कर रहा है।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) ये सभी

264. ग्रामीण इलाकों में जहाँ व्यावसायिक स्तर पर शिक्षा सम्भव नहीं है, वहाँ मन्द–बुद्धि बालकों के लिए क्या व्यवस्थाएँ की गई हैं?
(1) जूनियर हाईस्कूल कक्षाओं की
(2) सीनियर स्कूलों की कक्षाओं की
(3) प्राथमिक विद्यालयों की
(4) ये सभी

265. मन्द–बुद्धि बालकों के लिए कौनसी योजना चलाई जा रही है?
(1) विशेष कक्षा के लिए जिले में योजना
(2) जूनियर हाईस्कूल की विशेष कक्षाएँ
(3) इमारत तथा सामग्री
(4) उपरोक्त सभी

266. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. प्रारम्भ में विशिष्ट बालकों के लिए शिक्षा की शुरूआत फ्रांस में की गई।
2. विशिष्ट बालकों के लिए वास्तविक रूप से शिक्षा का प्रारम्भ यूरोप में किया गया।
3. विशिष्ट बालक मूलतः अन्य बालकों के समान नहीं होते हैं।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) ये सभी

267. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. विशिष्ट बालकों की विशिष्ट पहचान होती है।
2. विशिष्ट बालकों के लिए व्यक्तिगत निर्देशन की आवश्यकता होती है।
3. विशिष्ट बालकों के लिए विशेष कक्षा की व्यवस्था शिक्षा के आधुनिक दर्शन का मूलाधार है।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) ये सभी

268. **मन्द–बुद्धि बालक को अब क्षीण बुद्धि बालकों के समूह में नहीं रखा जाता है, जिनके लिए कुछ भी नहीं किया जा सकता। अब हम यह स्वीकार करते हैं कि उनके व्यक्तित्व के उतने ही विभिन्न पहलू होते हैं, जितने सामान्य बालकों के व्यक्तित्व के होते हैं।** यह कथन किसका है?
(1) पोलाक एवं पोलाक का (2) स्कीनर का
(3) क्रो एवं क्रो का (4) इनमें से कोई नहीं

269. गम्भीरता मन्दितमना–
(1) जड़ बुद्धि कहलाता है। (2) हीन बुद्धि कहलाता है।
(3) दुर्बल बुद्धि कहलाता है। (4) इनमें से कोई नहीं।

270. स्कीनर ने मन्द–बुद्धि बालकों को कहा है–
(1) अल्पबुद्धि (2) मन्द–बुद्धि
(3) धीमी गति वाला मूढ़ (4) ये सभी

271. मानसिक मन्दता का क्या कारण है?
(1) प्रसव पूर्वकालिक कारण (2) प्रसवोत्तर कारण
(3) 1 और 2 दोनों (4) इनमें से कोई नहीं

272. मन्द–बुद्धिता का क्या उपाय हो सकता है?
(1) बालकों का सम्मान करना
(2) बालकों को एक या दो हस्तशिल्पों की शिक्षा देना
(3) धीमी गति से पाठ पढ़ाना
(4) उपरोक्त सभी

273. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. समाज में आज विशिष्ट बालकों के प्रति जागरूकता बढ़ी है।
2. विशिष्ट बालकों को विशिष्ट शिक्षा तथा विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

274. **जब किसी बालक को विशिष्ट कहकर वर्णित किया जाता है, तो हम उसे औसत बालकों से अधिक लक्षणों के बराबर मानते हैं।** यह कथन किसका है?
(1) फिनर का
(2) सचवार्टज का
(3) 1 और 2 दोनों
(4) इनमें से कोई नहीं

www.praganya.org

262.	263.	264.	265.	266.	267.	268.	269.	270.	271.	272.	273.	274.
(2)	(2)	(1)	(4)	(2)	(4)	(1)	(1)	(4)	(3)	(4)	(1)	(2)

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

275. धीमी गति से सीखने वाले बालकों के लिए क्या सुझाव हो सकते हैं?
(1) उनसे देर तक पाठों में ध्यान लगाने के लिए नहीं कहना।
(2) पाठ को बार-बार दोहराया जाए, जिससे पाठ अच्छी तरह से याद हो।
(3) उनमें आत्मप्रतिष्ठा की भावना जगाई जाए।
(4) उपरोक्त सभी

276. वंचन के आधार पर भिन्न विशिष्ट बालक कितने प्रकार से वंचित होते हैं?
(1) 1 (2) 3
(3) 4 (4) 7

277. मानसिक रूप से पिछड़े बालकों की कक्षा में कितने बालक होने चाहिए?
(1) 5 से 10 (2) 10 से 15
(3) 15 से 20 (4) 20 से 25

278. इनमें से कौन बाल अपराधी तथा किशोर अपराधी बालकों के लिए पुनर्वास तथा शैक्षिक कार्यक्रमों से सम्बन्धित है?
(1) विद्यालय में सन्तोषजनक वातावरण हो।
(2) पारिवारिक वातावरण में भी सुधार होना चाहिए।
(3) अभिभावक सम्मेलनों का आयोजन किया जाना चाहिए।
(4) उपरोक्त सभी

279. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
1. अपराधी बालक लोभी प्रवृत्ति वाले होते हैं।
2. बालक सामान्यतः आकर्षक तथा प्रिय वस्तुओं की चोरी करते हैं।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

280. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
1. अपराधी बालक वर्तमान आनन्द के सिद्धान्त पर कार्य करता है।
2. वह भविष्य की चिन्ता नहीं करता है।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

281. मद्यपान का/के मुख्य कारक है/हैं-
(1) असामान्य व्यक्तित्व
(2) प्रतिकूल परिस्थितियाँ
(3) नगरीकरण तथा औद्योगीकरण
(4) ये सभी

282. टॉरेन्स के अनुसार सृजनात्मकता का/के तत्त्व है/हैं-
(1) मौलिकता (2) विनोदप्रियता
(3) जिज्ञासा (4) ये सभी

283. सृजनात्मक बालक के परीक्षण के लिए किस तकनीक का प्रयोग किया जा सकता है?
(1) वाद-विवाद
(2) मस्तिष्क बौछार
(3) प्रयोगात्मक कल्पनाओं पर वाद-विवाद
(4) कुछ सामान्य वस्तुओं पर प्रशिक्षण

284. सृजनात्मकता का प्रवाह-
(1) किसी विशेष दिशा में होता है।
(2) एक दिशा में नहीं होता है।
(3) चारों दिशाओं में होता है।
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

285. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
1. सृजनात्मक बालकों की समस्या के समाधान में सुझाव ग्रहणशीलता, संवेग तथा पूर्वाग्रह आदि महत्त्वपूर्ण बाधक तत्त्व हैं।
2. सृजनात्मक बालकों के विकास में शिक्षकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1
(2) केवल 2
(3) 1 और 2
(4) न तो 1 और न ही 2

286. सृजनात्मक बालक के लिए शिक्षण की कौनसी तकनीक आवश्यक है?
(1) भूमिका करना (2) शब्द सहचर्य
(3) वाद-विवाद (4) ये सभी

287. कोठारी समिति ने सृजनात्मक बालकों की शिक्षा के लिए कितने कारण बताएँ हैं?
(1) 4 (2) 2
(3) 7 (4) 10

288. कोठारी समिति ने सृजनात्मक बालकों के लिए कौनसे/सा कारण बताए/बताया/है/ हैं?
(1) एक औसत अध्यापक की कमजोरी
(2) शिक्षण ढाँचे का कठोर होना
(3) 1 और 2 दोनों
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

289. सृजनात्मक बालक का/के शिक्षा के उद्देश्य क्या है/हैं?
(1) बौद्धिक वातावरण उत्पन्न करना
(2) विचारों को क्रियान्वित करने की क्षमता का विकास करना
(3) 1 और 2 दोनों
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

275.	276.	277.	278.	279.	280.	281.	282.	283.	284.	285.	286.	287.	288.	289.
(4)	(2)	(3)	(4)	(3)	(3)	(4)	(4)	(3)	(1)	(3)	(4)	(1)	(3)	(3)

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

290. हेवॉर्ड के अनुसार प्रतिभाशाली बालकों को कक्षा में शिक्षक द्वारा दिए गए निर्देश के प्रकार हैं–
(1) प्रत्यक्ष (2) अप्रत्यक्ष
(3) आत्मकेन्द्रित (4) ये सभी

291. प्रतिभाशाली बालकों की कौनसी विशेषता नहीं है?
(1) इनमें नेतृत्व की विशेषताएँ होती हैं।
(2) ऐसे बालक शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में अधिक उपलब्धियाँ प्राप्त करते हैं।
(3) इनमें तर्क करने की योग्यता अधिक होती है।
(4) सामान्य शिक्षण विधियों द्वारा शिक्षण ग्रहण करने में विफलता।

292. शिक्षक सृजनात्मक बालकों की पहचान किस प्रकार कर सकते हैं?
(1) स्वतन्त्र निर्णय क्षमता द्वारा (2) मौलिकता द्वारा
(3) जिज्ञासा द्वारा (4) उपरोक्त सभी

293. निम्नलिखित में से कौनसा कथन असत्य हैं?
(1) पिछड़े बालक सामान्य विद्यालय के पाठ्यक्रम से लाभ उठाने में असमर्थ रहते हैं।
(2) पिछड़े बालक अपने जीवन में निराशा का अनुभव करते हैं।
(3) पिछड़े बालक को सामाजिक समायोजन में बहुत कठिनाई होती है।
(4) पिछड़े बालक सर्वत्र जिज्ञासु दृष्टि रखते हैं।

294. मौलिकता का गुण पाया जाता है–
(1) प्रतिभाशाली बालकों में
(2) सृजनशील बालकों में
(3) धनी परिवारों के बालकों में
(4) शिक्षित माता-पिता के बालकों में

295. प्रतिभाशाली बालक की शिक्षा का/के क्या उपाय है/हैं?
(1) शीघ्र वर्गोन्नति (2) संवर्द्धित पाठ्यक्रम
(3) विशिष्ट कक्षा प्रबन्ध (4) ये सभी

296. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. प्रतिभाशाली व्यक्तियों की मानसिक प्रक्रिया में तीव्रता तथा चिन्तन अधिक होता है।
2. पाठ्यक्रमों में अधिक अभिरूचि होती है।
3. मन्द-बुद्धि या सामान्य बालकों की अभिरूचि कम होती है।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) 1,2 और 3

297. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. प्रतिभाशाली बालक व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान में अधिक सहायक होते हैं।
2. औसत बालकों की तुलना में प्रवीण होते हैं।
3. ये संवेगात्मक तौर पर स्थिर भी होते हैं।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) 1,2 और 3

298. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. प्रतिभाशाली बालक सामान्य ज्ञान में अन्य बालकों से श्रेष्ठ होते हैं।
2. दैनिक कार्य में विविधता लाते हैं।
3. विशाल शब्द कोश वाले होते हैं।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) 1,2 और 3

299. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. मनोवैज्ञानिकों ने प्रतिभाशाली बालक के लिए विविध कसौटियाँ तैयार की हैं।
2. यह सृजनात्मक तथा श्रेष्ठता से कहीं ज्यादा विस्तृत तथा प्रभावशाली है।
3. बुद्धि प्राप्तांक तथा सृजनात्मकता के अलावा शिक्षकों, साथियों, माता-पिता तथा स्वयं के द्वारा उसे प्रतिभाशाली माना जाना आवश्यक है।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) 1,2 और 3

300. एकल अभिभावक वाले बच्चे को पढ़ाते समय शिक्षक को–
(1) इस प्रकार के बच्चे के साथ भिन्न प्रकार से व्यवहार करना चाहिए।
(2) ऐसे बच्चे को कम गृहकार्य देना चाहिए।
(3) स्थिर और एकरूप वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए।
(4) इस तथ्य को अनदेखा करना चाहिए और ऐसे बच्चे के साथ अन्य बच्चों के समान व्यवहार करना चाहिए।

301. विशेष रूप से जरूरतमन्द बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध होना चाहिए–
(1) दूसरे सामान्य बच्चों के साथ
(2) विशेष विद्यालयों में विशेष बच्चों के लिए विकसित विधियों द्वारा
(3) विशेष विद्यालयों में
(4) विशेष विद्यालयों में विशेष शिक्षकों द्वारा

302. असंगठित घर से आने वाला बच्चा सबसे अधिक कठिनाई का अनुभव करेगा–
(1) सुनिर्मित पाठों में (2) स्वतन्त्र अध्ययन में
(3) नियोजित निर्देश में (4) अभ्यास पुस्तिकाओं में

303. एक शिक्षक को अपने विद्यालय में किसे अधिक महत्त्व देना चाहिए?
(1) उच्च वर्ग के बालकों को
(2) सभी को समान महत्त्व देना चाहिए।
(3) अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्रों को
(4) अत्यन्त पिछड़े वर्ग के छात्रों को

www.praganya.org

290.	291.	292.	293.	294.	295.	296.	297.	298.	299.	300.	301.	302.	303.
(4)	(4)	(4)	(4)	(2)	(4)	(4)	(4)	(4)	(3)	(4)	(1)	(2)	(2)

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

304. निम्नलिखित में से कौनसी अनुसूचित जनजाति के छात्रों की प्रमुख समस्या है?
1. अधिकतर परिवारों की निर्धनता
2. विद्यालय में सामान्य वर्ग के छात्रों द्वारा उनको पर्याप्त सम्मान नहीं दिया जाना।
3. इनके समाज में शिक्षा के पर्याप्त प्रचार-प्रसार का अभाव

कूट-
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) केवल 3 (4) ये सभी

305. यदि आपके पास शुल्क मुक्ति का अधिकार हो, तो आप शुल्क मुक्ति का लाभ देंगे-
(1) रिश्तेदारों के बच्चों को (2) तीव्र बुद्धि वाले बच्चों को
(3) निर्धन छात्रों को (4) सिफारिश वाले बच्चों को

306. निर्धन लोगों के बच्चों को शिक्षा हेतु क्या सहायता दी जानी वांछनीय है?
(1) निःशुल्क शिक्षा (2) निःशुल्क पठन सामग्री
(3) निःशुल्क मध्याह्न भोजन (4) उपरोक्त सभी

307. पिछड़े वर्गों में शिक्षा के समान अवसर के पात्र है-
(1) महिलाएँ (2) अनुसूचित जातियाँ
(3) अनुसूचित जनजातियाँ (4) उपरोक्त सभी

308. निःशक्त बालकों की शिक्षा के लिए प्रावधान किया जा सकता है-
(1) समावेशित शिक्षा द्वारा
(2) मुख्य धारा में डालकर
(3) समाकलन द्वारा
(4) इनमें से कोई नहीं

309. **कमजोर वर्ग के बालक** से तात्पर्य है-
(1) ऐसे अभिभावकों के बालकों से, जिनकी वार्षिक आय कम है।
(2) ऐसे अभिभावकों के बालकों से, जो वंचित वर्ग में आते हैं।
(3) ऐसे अभिभावकों के बालकों से, जो गरीबी रेखा से नीचे की सीमा में आते हैं।
(4) ऐसे अभिभावकों के बालकों से, जो सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम सीमा की वार्षिक आय की सीमा से नीचे के वर्ग में आते हैं।

310. निम्न में से कौनसी विशेषता सामाजिक रूप से वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की नहीं है?
(1) बालकों की देखभाल के अनुभव उन्हें स्कूल के लिए प्रभावशाली ढंग से तैयार नहीं करते।
(2) नियमित स्वास्थ्य सम्बन्धी देखभाल नहीं मिलती।
(3) व्यापक एवं विविध अनुभवों को प्राप्त करने का मौका नहीं मिलता।
(4) विद्यालय में अच्छा करने के लिए अभिप्रेरित नहीं किया जाता।

311. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
1. माता-पिता की रूढ़िवादिता और कुरीतियों में अन्धविश्वास का होना।
2. विद्यालयों का अधिक दूरी पर स्थित होना।

उपरोक्त कथनों में कौन वंचित वर्ग की शिक्षा में बाधा है?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

312. वंचित वर्ग की शिक्षा के मार्ग में बाधाएँ हैं-
1. माता-पिता तथा अभिभावक का गरीब होना
2. माता-पिता तथा अभिभावक का निरक्षर होना
3. बालकों का परिवार की आय का साधन होना

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 3
(3) 1 और 2 (4) 1,2 और 3

313. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
1. वर्ष 1960-61 में ढेबर समिति का गठन किया गया था।
2. अनुसूचित जातियों और जनजातियों की शिक्षा की वास्तविकता जानने के लिए ढेबर समिति का गठन किया गया था।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

314. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
1. बाबू जगजीवनराम छात्रावास योजना का उद्देश्य अनुसूचित जाति, जनजाति के बालक और बालिकाओं के लिए छात्रावास की सुविधा उपलब्ध कराना है।
2. शिक्षा के क्षेत्र में सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करने के लिए 26 सितम्बर, 1985 को मानव संसाधन विकास मन्त्रालय की स्थापना की गई थी।
3. लोकतन्त्रात्मक प्रणाली की सफलता के लिए लोगों का शिक्षित होना आवश्यक नहीं है।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 2 (2) 2 और 3
(3) 1 और 2 (4) ये सभी

315. निर्बल वर्ग में शामिल किया गया है-
1. भूमिविहीन मजदूर
2. परिवार, जिनके पास अनार्थिक भूमि की खेतीबाड़ी हो
3. ऐसे समूह, जिन्हें ऐतिहासिक तथा अन्य से पिछड़े व अनुत्पादक क्षेत्रों में रहना पड़ा, जैसे- अनुसूचित जनजाति

कूट-
(1) केवल 1
(2) केवल 2
(3) 1 और 2
(4) 1,2 और 3

304.	305.	306.	307.	308.	309.	310.	311.	312.	313.	314.	315.	
(4)	(3)	(4)	(4)	(1)	(4)	(2)	(3)	(4)	(3)	(3)	(4)	

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

316. **राज्य निर्बल वर्गों के लोगों की शिक्षा व आर्थिक हितों को ध्यानपूर्वक उन्नत करेगा और विशेष रूप से अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों की और उनकी सामाजिक न्याय तथा सभी प्रकार के शोषणों से रक्षा करेगा।** उपरोक्त कथन संविधान के किस अनुच्छेद से सम्बन्धित है?
(1) अनुच्छेद 46 (2) अनुच्छेद 44
(3) अनुच्छेद 49 (4) अनुच्छेद 50

317. निम्नलिखित में से किस अनुच्छेद के अन्तर्गत अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए नौकरी में आरक्षण की व्यवस्था की गई है?
(1) अनुच्छेद 332 (2) अनुच्छेद 342
(3) अनुच्छेद 335 (4) इनमें से कोई नहीं

318. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. जनजातीय क्षेत्रों में विशेष विद्यालय स्थापित किए जाए।
2. जनजातियों की शिक्षा व्यवस्था में हस्तलिपि का विशेष ध्यान दिया जाए।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से ढेबर समिति से सम्बन्धित है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

319. एक शिक्षिका की कक्षा में कुछ शारीरिक विकलांगता वाले बच्चे हैं। निम्नलिखित में से उसके लिए क्या कहना सबसे उचित होगा?
(1) पोलियोग्रस्त बच्चे अब एक गाना प्रस्तुत करेंगे।
(2) पहिया–कुर्सी वाले बच्चे हॉल में जाने के लिए अपने समवयस्क साथी बच्चों से मदद ले सकते हैं।
(3) शारीरिक रूप से असुविधाग्रस्त बच्चे कक्षा में ही कोई वैकल्पिक गतिविधि कर सकते हैं।
(4) मोहन खेल के मैदान में जाने के लिए आप अपनी बैसाखियों का प्रयोग क्यों नहीं करते?

320. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. ढेबर समिति का गठन अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों की शिक्षा की वास्तविक स्थिति जानने के लिए किया गया था।
2. ढेबर समिति ने प्राथमिक शिक्षा के विकास पर बल दिया।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

321. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–
1. पुस्तक बैंक योजना अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के छात्रों के लिए प्रारम्भ की गई थी।
2. यह योजना मेडिकल/इन्जीनियरिंग कॉलेज के छात्रों के लिए प्रारम्भ की गई थी।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

322. अनुसूचित जनजातियों की प्रमुख समस्या है–
(1) आर्थिक पिछड़ापन (2) शैक्षणिक रूप से पिछड़ापन
(3) 1 और 2 दोनों (4) इनमें से कोई नहीं

323. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. अनुसूचित जनजातियों से आशय उन जनजातियों से है, जो संविधान की अनुसूची में विशेष सुविधा प्राप्त करने के लिए सूचीबद्ध की गई हैं।
2. भारत में जनजातियाँ आर्थिक रूप से पिछड़ी हुई हैं।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1
(2) केवल 2
(3) 1 और 2
(4) न तो 1 और न ही 2

324. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति उन व्यक्तियों की विशिष्ट आवश्यकताओं पर ध्यान देकर विषमताओं को दूर करने तथा शैक्षिक अवसरों को समान करने पर बल देती है, जो अब तक समानता से वंचित रहे हैं।
2. पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए शिक्षा कोई साधन नहीं है।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1
(2) केवल 2
(3) 1 और 2
(4) न तो 1 और न ही 2

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

325. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. शिक्षक को समाज की संकीर्णता तथा पिछड़ेपन का ज्ञान होना चाहिए।
2. शिक्षक को बालकों में सामाजिक परिस्थितियों के कारण उत्पन्न हीनता एवं उच्चता की भावना–ग्रन्थियों को नहीं पनपने देना चाहिए।
3. शिक्षक को सभी वर्गों के बच्चों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 2 (2) 2 और 3
(3) 1 और 2 (4) ये सभी

326. आपकी कक्षा का एक छात्र मोहन बोलते समय हकलाता है। आप उसकी शिक्षा के प्रबन्धन हेतु क्या आवश्यक कदम उठाएँगे?
(1) उसमें अध्ययन की गलत आदतों पर नियन्त्रण कराएँगे।
(2) प्रधानाचार्य से उसकी शिकायत करेंगे।
(3) उसको कक्षा से बाहर जाकर पढ़ने को कहेंगे।
(4) विशेष शब्दों के उच्चारण को उससे एक बार में ही पढ़ने को कहेंगे।

www.praganya.org

316.	317.	318.	319.	320.	321.	322.	323.	324.	325.	326.	
(1)	(3)	(3)	(3)	(3)	(3)	(3)	(3)	(1)	(4)	(1)	

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

327. आपकी कक्षा के एक छात्र को बहुत गुस्सा आता है, इस स्थिति में आप क्या करेंगे?
(1) उसका नाम विद्यालय से कटवा देंगे।
(2) उसे बहुत अधिक गृह कार्य देंगे।
(3) उसे शारीरिक दण्ड देंगे जिससे कि वह दोबारा गुस्सा न करे।
(4) कक्षा में शान्त एवं खुशनुमा वातावरण बनाएँगे, ताकि छात्र स्वयं को सुरक्षित महसूस करे।

328. **कोठारी शिक्षा आयोग** ने समतामूलक समाज में कमजोर वर्ग का शोषण कम से कम होने के लिये साधन बताया है–
(1) इस वर्ग को शिक्षा के कुछ साधन उपलब्ध हो।
(2) इस वर्ग के लिए शिक्षा के अवसरों की समानता स्थापित की जाये।
(3) इस वर्ग की शिक्षा के लिए पृथक् से व्यवस्था की जाये।
(4) इस वर्ग के लिए प्राथमिक शिक्षा सुलभ कराई जाये।

329. अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा में भाषा की कठिनाई दूर करने हेतु **ढेबर आयोग** ने क्या सुझाव दिया था?
(1) क्षेत्र–विशेष की बोलियों को कक्षा 1 से 2 में शिक्षा का माध्यम बनाया जाये।
(2) क्षेत्र–विशेष की बोलियों व जनजीवन से सम्बन्धित प्रशिक्षण शिक्षकों को दिया जाये।
(3) मातृभाषा में प्रारम्भिक शिक्षा दी जाये।
(4) उपरोक्त सभी

निर्देश(प्रश्न संख्या 330 से 362)– नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न में एक कथन एवं कारण दिया गया है। ध्यानपूर्वक पढ़कर कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए।

330. **कथन** (A) गर्भावस्था में ही बालकों के शारीरिक विकास के साथ श्रवण क्षमता का विकास होता है।
कारण (R) जन्म के बाद भी श्रवण हड्डियाँ कई कारणों से क्षतिग्रस्त हो सकती है।
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

331. **कथन** (A) जब असामाजिक प्रसव किसी कारण से होता है, तो किसी अंग में पक्षाघात हो सकता हैं।
कारण (R) कर्ण में पक्षाघात होने से बधिरता उत्पन्न हो सकती है।
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

332. **कथन** (A) भारत में करीब 50 लाख बालक शारीरिक तथा मानसिक तौर पर विकलांग है।
कारण (R) विकलांग बालकों का व्यावसायिक शिक्षण, प्रशिक्षण तथा जीविकोपार्जन करना अनिवार्य है।
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

333. **कथन** (A) भारतीय पुनर्वास परिषद् की स्थापना वर्ष 1986 में हुई।
कारण (R) यह विकलांग जनों का शिक्षण, प्रशिक्षण तथा पुनर्वास की व्यवस्था करती है।
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

334. **कथन** (A) विशिष्ट बालकों की क्षमताओं के आधार पर उनके शिक्षण तथा प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए।
कारण (R) उपरोक्त तथ्य विशिष्ट शिक्षा के महत्त्व की ओर इंगित करता है।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

335. **कथन** (A) विशिष्ट बालकों की शिक्षा के उद्देश्य साधारण बालकों के समान ही होते हैं।
कारण (R) एक अक्षम बालक की सभी आवश्यकताएँ सामान्य बालक के समान ही होती हैं।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

336. **कथन** (A) मारिया मॉण्टेसरी ने प्रारम्भिक शिक्षा पर बल दिया।
कारण (R) विशिष्ट बालकों से सम्बन्धित शिक्षा मॉण्टेसरी शिक्षा कहलाती है।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

327.	328.	329.	330.	331.	332.	333.	334.	335.	336.	
(4)	(2)	(4)	(2)	(2)	(4)	(1)	(1)	(2)	(2)	

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

337. **कथन** (A) विशिष्ट बालक सामान्य बालकों को दी जाने वाली शिक्षा से प्रभावित तथा लाभान्वित नहीं होते हैं।
कारण (R) योग्य प्रशिक्षित प्राध्यापकों के अभाव, विद्यालय में कक्षाओं तथा सीटों की उपयुक्त संख्या का अभाव प्रमुख समस्या है।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

338. **कथन** (A) विशिष्ट बालकों की शिक्षा के लिए विशिष्ट व्यवस्था करने की आवश्यकता नहीं होती है।
कारण (R) पहले प्रतिभाशाली बालकों को अपवादी बालक माना जाता था।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

339. **कथन** (A) शारीरिक वृत्ति से ग्रस्त बालक अक्षम बालक कहलाते हैं।
कारण (R) मानसिक तौर पर पिछड़ा बालक मन्द-बुद्धि बालक कहलाता है।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

340. **कथन** (A) जब किसी बालक को विशिष्ट बालक कहा जाता है, तो वह औसत बालकों से अलग लक्षण वाला होता है।
कारण (R) हकलाने वाले या दोषपूर्ण वाणी वाले बालक विशिष्ट बालक कहलाते हैं।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

341. **कथन** (A) विशिष्ट बालकों के लिए शिक्षा व्यवस्था का आरम्भ अमेरिका में किया गया।
कारण (R) इसका वास्तविक आरम्भ यूरोपीय चिकित्सकों ने किया।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

342. **कथन** (A) विशिष्ट बालक मूलतः अन्य बालकों के समान होते हैं।
कारण (R) विशिष्ट बालकों की विशिष्ट पहचान होती है। विशिष्ट बालकों के लिए व्यक्तिगत निर्देशन की आवश्यकता होती है।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

343. **कथन** (A) जिनकी शारीरिक-मानसिक बुद्धि, माँसपेशियों की क्षमताएँ अद्वितीय होती हैं, विशिष्ट बालक कहलाते हैं।
कारण (R) विशिष्ट बालक बड़ी आसानी से अन्य बालकों के मध्य पहचाने जा सकते हैं।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

344. **कथन** (A) प्रारम्भिक स्कूल के सामान्य बालकों में से 10% बालक शारीरिक या मानसिक हीनता से ग्रस्त दिखाई पड़ेंगे।
कारण (R) विशिष्ट बालक सामान्य बालकों के पर्यावरणीय परिवेश में ही पलते हैं।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

345. **कथन** (A) सामान्य कक्षा के उपरान्त अध्यापकों को अपना अधिकतम समय विशिष्ट बालकों को देना चाहिए।
कारण (R) विशिष्ट बालक अधिक-से-अधिक समय विशिष्ट प्राध्यापकों के साथ रहें।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

346. **कथन** (A) विशिष्ट बालक को पूर्णतया विशिष्ट कक्षा में रहना चाहिए।
कारण (R) शिक्षा अभिरूचि के अनुसार होनी चाहिए।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

www.praganya.org

337.	338.	339.	340.	341.	342.	343.	344.	345.	346.		
(1)	(2)	(2)	(2)	(1)	(2)	(2)	(2)	(2)	(2)		

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

347. **कथन** (A) विशिष्ट शिक्षा के लिए विशेष सेवा में समुदाय, राष्ट्र सभी को भाग लेना चाहिए।
कारण (R) सभी प्रकार के विशिष्ट बालकों के लिए विशिष्ट शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

348. **कथन** (A) शहरी तथा ग्रामीण सभी जगहों पर विशिष्ट शिक्षा की व्यवस्था होनी अनिवार्य है।
कारण (R) विशिष्ट बालकों की पूर्व सूची तैयार होनी चाहिए।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

349. **कथन** (A) विशिष्ट बालकों की शिक्षा में स्कूल तथा समुदाय साधनों का सहयोग होना चाहिए।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

350. **कथन** (A) विशिष्ट बालकों को लगातार प्रेरित करते रहने वाले वातावरण की आवश्यकता होती है।
कारण (R) विशिष्ट बालकों में प्रेरणा का अभाव होता है।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

351. **कथन** (A) अपवादी बालक सामान्य कक्षा से लाभान्वित नहीं होते हैं
कारण (R) विशिष्ट बालकों को विशिष्ट पाठ्यक्रमों की आवश्यकता होती है।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

352. **कथन** (A) विशिष्ट बालकों की अभिरूचियाँ सामान्य से भिन्न होती हैं।
कारण (R) अभिरूचि के विकास के लिए उन्हें विशेष शिक्षा की आवश्यकता होती है।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

353. **कथन** (A) सामान्य बालकों की समायोजन कक्षा में परिवार के अन्य सदस्यों का साथ किसी भी परिस्थिति में उचित नहीं है।
कारण (R) विशिष्ट बालकों को विशिष्ट सामाजिक परिस्थितियों में विशेष परिवर्तन की आवश्यकता नहीं होती है।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

354. **कथन** (A) देश का भविष्य अनेकानेक समस्याओं से ग्रसित रहेगा, तो हम विकसित तथा सुरक्षित भविष्य की कल्पना कैसे कर सकते हैं?
कारण (R) आपराधिक बालक, मादक द्रव्यों का सेवन, समाज विरोधी बालक इत्यादि कुछ ऐसी ज्वलन समस्याएँ हैं, जो परिवार, समाज को प्रभावित करती हैं।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

355. **कथन** (A) पाठशाला में बालकों को स्वस्थ मनोरंजन के साधन उपलब्ध कराने चाहिए।
कारण (R) अपराधी बालकों की मनोवृत्ति के सुधार में विलम्ब नहीं होना चाहिए अन्यथा वह गम्भीर रूप धारण कर सकता है।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

356. **कथन** (A) प्रतिभा सम्पन्न बालक प्रायः उच्च बुद्धि–लब्धि के होते हैं।
कारण (R) इनका शब्द भण्डार बहुत विशाल होता है।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

347.	348.	349.	350.	351.	352.	353.	354.	355.	356.		
(2)	(2)	(2)	(1)	(1)	(2)	(4)	(2)	(2)	(2)		

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

357. **कथन** (A) सृजनात्मकता को मापा जा सकता है।
कारण (R) सृजनात्मक बालकों की बुद्धि का स्तर उच्च होता है।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

358. **कथन** (A) प्रतिभावान बालक सामाजिक व्यवहार के मामले में कमजोर होते हैं।
कारण (R) पठन–पाठन में तीव्र क्षमता वाले होते हैं।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

www.praganya.org

359. **कथन** (A) प्रतिभावान बालक संवेगात्मक रूप से स्थिर होने के कारण योजना निर्माण तथा उसके क्रियान्वयन में सहायक होते हैं।
कारण (R) वे अपने कार्यों की तुलना बड़े कार्यों से करते हैं तथा उनमें स्वआलोचना की शक्ति होती है।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

www.praganya.org

360. **कथन** (A) प्रतिभावान बालक शारीरिक स्वास्थ्य, सामाजिक आकार तथा शक्ति में प्रायः अन्य बालकों से अच्छे होते हैं।
कारण (R) ये प्रायः भाषा विकास अभिव्यक्ति में अच्छे होते हैं तथा उनकी सीखने की क्षमता अधिक होती है।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

www.praganya.org

361. **कथन** (A) वैसे बालक प्रतिभाशाली तथा प्रवीण होते हैं, जो मानव व्यवहार के प्रत्येक क्षेत्र में ऐसा उत्तम निष्पादन करते हैं, जो मानव समाज के लिए महत्त्वपूर्ण होता है।
कारण (R) कुशाग्र बुद्धि तथा प्रतिभावान बालक वह है, जो निरन्तर किसी भी कार्य क्षेत्र में कार्यक्षमता का परिचय नहीं दे पाता है।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

362. **कथन** (A) प्रतिभाशाली प्रवीण बालक वह है, जो बुद्धि समेत अन्य सामाजिक क्षेत्रों में श्रेष्ठता प्राप्ति की पर्याप्त क्षमता रखता हो।
कारण (R) प्रतिभाशाली बालक किसी भी कार्य क्षेत्र में अद्भुत प्रवीणता का परिचय देता है।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

363. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. बधिर बालकों के लिए विविध भाषाओं में पत्राचार पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं।
2. अभिभावकों के लिए सम्पर्क प्रशिक्षण कार्यक्रमों की कोई खास आवश्यकता नहीं है।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सत्य है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

364. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. श्रवण क्षतियुक्त बालकों के लिए पृथक् विद्यालयों की व्यवस्था की जानी चाहिए।
2. कम गम्भीर रूप से श्रवण क्षतियुक्तता से पीड़ित बालक कक्षा के अन्तर्गत ही शिक्षा पाते हैं।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

365. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. श्रवण विकलांगता रोकने के लिए बालकों का प्रतिबन्धात्मक टीकाकरण निश्चित समय पर कराया जाए।।
2. निकटतम सम्बन्धियों के साथ वैवाहिक रिश्ते न स्थापित किए जाए।
3. बालकों को जन्म देते समय गर्भवती महिलाएँ प्रशिक्षित दाइयों की ही सेवा ले।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) ये सभी

366. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. श्रवण क्षतियुक्त बालकों को शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन की आवश्यकता है।
2. बालकों की अभिरूचि तथा योग्यता का ध्यान रखना चाहिए।

357.	358.	359.	360.	361.	362.	363.	364.	365.	366.			
(2)	(1)	(1)	(2)	(3)	(3)	(1)	(3)	(4)	(3)			

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

367. सुमेलित कीजिए–

	सूची I		सूची II
A.	विकलांग पुनर्वास परिषद् की स्थापना	1.	2007
B.	भारत द्वारा यू. एन. कन्वेन्शन ऑन द राइट्स ऑफ पर्सन विद डिसएबिलिटी	2.	1968
C.	हस्ताक्षर बाधित बालकों से सम्बन्धित समिति की स्थापना	3.	1986
D.	अमर ज्योति विद्यालय की स्थापना	4.	1981

कूट–

	A	B	C	D
(1)	3	1	2	4
(2)	2	4	1	3
(3)	4	1	2	3
(4)	1	4	3	2

368. निम्न में से कौनसा युग्म सही सुमेलित है?

(1) पैराओलम्पिक खेल – विकलांग जनों के लिए खेलों का आयोजन
(2) पैराओलम्पिक शब्द की उत्पत्ति – अंग्रेजी भाषा से हुई है
(3) पैरा का अर्थ है – आगे ही आगे रहना
(4) पैराओलम्पिक से सम्बन्धित है – क्रिकेट

369. निम्नलिखित में से कौनसा सुमेलित नहीं है?

(1) लखनऊ रिफॉर्मेटरी स्कूल – उत्तर प्रदेश के अपराधी बालकों को रखा जाता है।
(2) हजारीबाग रिफॉर्मेटरी स्कूल – बंगाल, बिहार, ओडिशा के बाल अपराधियों को रखा जाता है।
(3) जबलपुर रिफॉर्मेटरी – मध्य प्रदेश के बाल अपराधियों को रखा जाता है।
(4) सर्टिफाइड स्कूल – सामान्य किस्म के अपराधियों को शामिल किया जाता है।

370. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. अधिगम असमर्थी बालकों के सम्बन्ध में चिकित्सक द्वारा दिए गए छोटे–छोटे सुझावों का प्रयोग करना चाहिए।
2. संकेतों तथा शब्दों को रंगीन बनाया जाना चाहिए।
3. बालकों को सीखाने में चित्रों का अधिकाधिक प्रयोग हो।
4. शब्दों तथा लय में बालकों को गीत सीखाया जाए।

उपरोक्त कथनों में कौनसे कथन सही हैं?
(1) 1,2 और 3 (2) 2,3 और 4
(3) 1,3 और 4 (4) ये सभी

371. तोड़–फोड़ करने वाले नटखट छात्र को सही रास्ते पर लाने के लिए आपका क्या सुझाव है?
(1) उसे कक्षा में सबसे आगे बैठाकर उस पर लगातार नजर रखनी चाहिए।
(2) उसकी सीट कक्षा के एक कोने में निर्धारित कर दी जानी चाहिए।
(3) उसकी प्रवृत्ति के अनुरूप उसे पेड़ों को सींचने, श्यामपट्ट को साफ करने, मिट्टी के खिलौने बनाने आदि जैसे काम में लगाया जाना चाहिए।
(4) जब भी वह नटखटपने की कोई हरकत करे, उससे भरी कक्षा में इसका कारण पूछा जाना चाहिए।

372. आप की कक्षा में कुछ छात्र बहुत तीव्र बुद्धि वाले हैं। कक्षा में पढ़ाई जाने वाली सामग्री में उन्हें कोई चुनौती जैसी बात नहीं मिलती। ऐसे छात्रों के सम्बन्ध में आप क्या करना चाहेंगे?
(1) उनसे कह देंगे कि वे अपनी इच्छा के अनुसार कक्षा में आएँ या न आएँ।
(2) प्रधानाध्यापक से कहेंगे कि उन छात्रों को अगली कक्षा में पढ़ाया जाए।
(3) उन छात्रों को विशेष कार्य देंगे, जो सामान्य कक्षा के छात्रों को दिए जाने वाले कार्य से मुश्किल हो।
(4) उनसे कह देंगे कि वे अपना अधिकांश समय पुस्तकालय में व्यतीत करें।

373. यदि छात्रों के एक समूह में कुछ मन्द–बुद्धि और कुछ प्रतिभाशाली छात्र हैं, तो अध्यापक के लिए क्या बेहतर होगा?
1. शिक्षण के स्तर को ऊँचा रखना, ताकि मन्द–बुद्धि छात्र ऊपर उठकर बराबरी पर आ जाए।
2. शिक्षण के स्तर को नीचे रखना, ताकि प्रत्येक छात्र समझ सके।
3. शिक्षण के स्तर को मध्यम पर रखना, ताकि प्रतिभाशाली छात्रों को अधिक नीरस न लगे।
4. मन्द–बुद्धि छात्रों के लिए अतिरिक्त शिक्षण का प्रबन्ध करना

(1) 1 और 2 (2) 2 और 4
(3) 3 और 4 (4) उपरोक्त में से कोई नहीं

374. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए निम्नलिखित में से कौनसी व्यूह रचना अधिक उपयुक्त है?
(1) अधिकतम बच्चों को सम्मिलित करते हुए कक्षा में चर्चा करना
(2) विद्यार्थियों को सम्मिलित करते हुए अध्यापक द्वारा निर्देशन
(3) सहकारी अधिगम तथा पीअर ट्यूटरिंग (सहपाठियों द्वारा अनुशिक्षण)
(4) अध्यापन के लिए योग्यता आधारित समूहीकरण

367.	368.	369.	370.	371.	372.	373.	374.	
(1)	(1)	(4)	(4)	(4)	(3)	(3)	(3)	

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

375. मानसिक रूप से पिछड़े बच्चों को आप क्या सिखाना पसन्द करेंगे?
(1) नियमित पाठ्यचर्या की पढ़ाई, किन्तु उन्हें काम के लिए दुगुना समय देंगे।
(2) उन्हें आवश्यक बातें रटा देंगे।
(3) उन्हें अकेले यात्रा करने, पैसे खर्च करने, हिसाब रखने जैसे व्यावहारिक क्रियाकलापों के माध्यम से सक्षम बनाएँगे।
(4) उन्हें अपनी पसन्द का कार्य करने देंगे।

376. यदि किसी छोटे बच्चे में अपने आस-पास बैठने वाले अन्य बच्चों की छोटी-छोटी चीजें चुराने की आदत है, तो शिक्षक के रूप में आप इस सम्बन्ध में सबसे पहले क्या उपाय करेंगे?
(1) उस बच्चे को डाँटेंगे और यदि न माने, तो पिटाई करेंगे।
(2) उस बच्चे की आचरण-पुस्तिका में उसकी इस आदत का उल्लेख कर देंगे।
(3) इस बात की ओर ध्यान नहीं देंगे।
(4) बच्चे के माँ-बाप से मिलकर यह जानने की कोशिश करेंगे कि बच्चे की इस आदत का क्या कारण है और तत्पश्चात् दोनों मिलकर आदत छुड़ाने की कोशिश करेंगे।

377. आपके स्कूल में एक ऐसा बच्चा भर्ती होता है, जो सांस्कृतिक दृष्टि से पिछड़े परिवार या पर्यावरण से है। आप-
(1) उसे ऐसी कक्षा में रखेंगे, जिसमें सांस्कृतिक दृष्टि से पिछड़े परिवेश वाले अन्य बच्चे हैं।
(2) किसी अध्यापक को उस बच्चे के पिछड़े सांस्कृतिक परिवेश की जानकारी प्राप्त करने के लिए भेजेंगे।
(3) उसे सामान्य कक्षा में रखेंगे, किन्तु उसके विशेष शिक्षण का प्रबन्ध कर देंगे।
(4) उसे किसी व्यावसायिक शिक्षण में जाने की सलाह देंगे।

378. जब एक निर्योग्य बच्चा पहली बार विद्यालय आता है, तो शिक्षक को क्या करना चाहिए?
(1) बच्चे की निर्योग्यता के अनुसार उसे विशेष विद्यालय में भेजने का प्रस्ताव देना चाहिए।
(2) उसे अन्य विद्यार्थियों से अलग-रखना चाहिए।
(3) सरकारी योजना विकसित करने के लिए बच्चे के माता-पिता के साथ चर्चा करनी चाहिए।
(4) प्रवेश परीक्षा लेनी चाहिए।

379. एक 40 मिनट की कक्षा में सभी विद्यार्थियों व मुख्यतः विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की माँग को पूरा करते हुए आप किस प्रकार पढ़ाएँगे?
(1) वैयक्तिकता पर ध्यान देकर
(2) कक्षा में समांगी समूह बनाकर
(3) सभी विद्यार्थियों के लिए क्रियाकलाप आयोजित कराकर, परन्तु विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए
(4) कक्षा में किसी योग्य विद्यार्थी को जिम्मेदारी सौंपते हुए

380. कोई छात्र गणित में काफी कमजोर है। आप उसकी सहायता के लिए क्या करना चाहेंगे?
(1) प्रधानाध्यापक से इस विषय में परामर्श लेंगे।
(2) उस छात्र के माता-पिता से समुचित परामर्श लेंगे।
(3) उस छात्र से बात करके पता लगाएँगे कि गणित में उसकी क्या दिक्कत है और तत्पश्चात् उसे दूर करेंगे।
(4) कक्षा में गणित में सबसे तेज छात्र को आदेश देंगे कि वह उस कमजोर छात्र की मदद करें।

375.	376.	377.	378.	379.	380.	
(3)	(4)	(3)	(1)	(3)	(3)	

****

अगर आप B.Ed, D.Ed, BSTC या शिक्षण अध्यापन के क्षेत्र में पढ़ाई कर रहे हैं तो आपसे निवेदन है कि निम्नलिखित Whatsapp No. अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में जोड़ें। अगर आपका व्हाट्सएप ग्रुप नहीं बना हुआ है तो कृपया कम से कम 20 विद्यार्थी मिलकर व्हाट्सएप ग्रुप बना लें।

UPTET - 95301 43210
MP Samvida - 95302 43210
BTET - 95302 43210
UTET - 72209 29294
JTET - 72209 29239
HTET - 72209 29266
CGTET - 72209 28969
HPTET - 72209 28535

आपके क्लास के व्हाट्सएप ग्रुप में शिक्षा संबंधी सभी प्रतियोगी परीक्षा के पेपर्स, मॉडल पेपर्स एवं अन्य अध्ययन सामग्री भेजी जाएगी। आपका शुरू से मार्गदर्शन किया जाएगा, ताकि आप प्रतियोगी परीक्षा में अतिशीघ्र सफलता प्राप्त कर सकें।

प्रगण्य प्रकाशन द्वारा CTET एवं प्रत्येक राज्य के TET (UPTET, MP Samvida, BTET, UTET, JTET, HTET, CGTET, HPTET) के लिए मॉडल पेपर की फ्री PDF प्रकाशित की जाती है। मॉडल पेपर की फ्री PDF प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित Whatsapp No. अपने कॉलेज के क्लास ग्रुप या कोचिंग के क्लास ग्रुप या अन्य स्टडी ग्रुप में जोंडे। आपके ग्रुप में मॉडल पेपर भेज दिए जाएँगें।

UPTET - 95301 43210
MP Samvida - 95302 43210
BTET - 95302 43210
UTET - 72209 29294
JTET - 72209 29239
HTET - 72209 29266
CGTET - 72209 28969
HPTET - 72209 28535

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

अध्याय 13

समायोजन

13.1 प्रस्तावना

मनोविज्ञान का विशेष उद्देश्य है व्यक्ति को जीवन में समायोजित करना। दैनिक जीवन में हम सभी प्रायः समायोजन करते हैं। यदि कार में पाँच व्यक्तियों के लिए स्थान है और आठ व्यक्ति सफर कर रहे हैं तो उन्हें कार में समायोजित होना पड़ता है। कक्षा में बीस छात्रों के स्थान पर 25 छात्र भी समायोजित हो जाते हैं। हम जब भी किसी के घर जाते हैं तो वहाँ हमें और घर के सदस्यों को एक-दूसरे के प्रति समायोजित होना पड़ता है। किसी भी नये वातावरण में व्यक्ति को समायोजित होना पड़ता है।

कभी-कभी हमें समायोजन करने में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जो व्यक्ति अपने बाह्य तथा आन्तरिक वातावरण के साथ समायोजन करने में समर्थ होते हैं, वे सफल होते हैं। किन्तु समायोजन स्थापित करने में जिनके सिद्धान्त, आदर्श आदि आड़े आते हैं वे असफल रहते हैं। सफलता असफलता केवल समायोजन के परिणाम हैं। जीवन की समस्याओं का समाधान समायोजन में निहित है। विशेषकर इस चिन्ताओं के युग में जितना सम्भव हो सके उतना ही सीधे और सरल मार्ग से लक्ष्य तक पहुँचने की दक्षता ही समायोजन का आधार है।

13.2 समायोजन का अर्थ

समायोजन का मनोविज्ञान व्यक्ति तथा उसके पर्यावरण के मध्य मधुर सम्बन्धों को बनाये रखने की क्रिया विधियों पर प्रकाश डालता है। इसके अन्तर्गत व्यक्ति के भीतर उसके बाहर पर्यावरण में पाये जाने वाले तत्त्वों के साथ सामंजस्य या तालमेल, कार्य करने के लिए व्यक्ति द्वारा किये गये प्रयासों का अध्ययन मुख्य मुद्दा होता है।

समायोजन के दो अर्थ है- पहला वह प्रक्रिया, जिसमें व्यक्ति अपने और पर्यावरण के बीच सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध प्राप्त करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है और दूसरा सामंजस्यपूर्ण सम्बन्धों की दशा और अवस्था। जीवन में समायोजनों की एक दीर्घ शृंखला को देखा जा सकता है, जिसमें व्यक्ति निरन्तर बाहरी पर्यावरण की मांगों और शारीरिक तथा मानसिक संरचना की आवश्यकता के प्रति समायोजन करता चला जाता है। व्यक्ति लगातार खाता-पीता है, प्रश्रय और स्नेह ढूंढ़ता है, मित्र और उनकी स्वीकृति, सुरक्षा और प्रतिष्ठा खोजता है। जो समायोजन वह करता है, जीवनभर की कल्याण की दृष्टि से हमेशा स्वस्थ और प्रभावकारी नहीं होते, परन्तु जिस क्षण वे किये जाते हैं, व्यक्ति की कुछ आवश्यकतायें पूरी करते नजर आते हैं। इस प्रकार समायोजन वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति आवश्यकताओं और उनकी पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के बीच शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक संतुलन तथा समता का स्तर बनाये रखता है।

13.3 समायोजन की परिभाषाएँ

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा समायोजन की अनेक परिभाषाएँ दी गई है, जिनमें से कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं-

1. एच. सी. स्मिथ के अनुसार-

एक अच्छा समायोजन वह है जो यथार्थपूर्णता के साथ-साथ व्यक्ति को सन्तोष प्रदान करता है। अन्ततोगत्वा, यह व्यक्ति की कुण्ठाओं, उसके तनावों एवं चिन्ताओं, जिन्हें उसे सहन करना पड़ता है, न्यूनातिन्यून बना देती है।

2. मैस्लो तथा मिटिलमैन के अनुसार-

समायोजन व्यक्ति की वह विशेषता है जिसके अनुसार वह अपने जीवन की मुख्य समस्याओं को समझता है, उनकी प्रतिक्रिया करता है एवं उनका समाधान करता है।

3. जेम्स सी. कोलमैन के अनुसार-

समायोजन अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने तथा खिंचावों से निपटने के लिए व्यक्ति द्वारा किये प्रयासों का परिणाम है।

4. क्रो तथा क्रो के अनुसार-

मानवीय अन्तर्नोद तथा अंतर्प्रेरणाएँ व्यक्ति को कुछ निश्चित लक्ष्यों एवं हितों की ओर उत्प्रेरित करती है। ऐसी दशा में फलीभूत यह व्यवहार जो व्यक्ति तथा समाज दोनों के लिए तुष्टिकरण होता है, समायोजन कहा जाता है।

5. लॉरेन्स एफ. शैफर के अनुसार-

समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक जीवित प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की तुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में एक सन्तुलन बनाये रखता है।

6. अल्फ्रेड एडलर के अनुसार-

सामान्य या समायोजित मनुष्य वह है जो समाज में रहता है तथा जिसकी जीवन शैली इस रूप में अभ्यनुकूलित है कि समाज उसके कार्य से विशेष रूप से लाभान्वित होता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उसमें अपने समक्ष उपस्थित होने वाली समस्याओं तथा कठिनाइयों का सामना करने हेतु पर्याप्त ऊर्जा एवं साहस होता है। इसके विपरीत असमायोजित, एक असामान्य व्यक्ति में इन दोनों ही गुणों का अभाव होता है। वे जीवन के प्रतिदिन कृत्यों को पूरा करने में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों ही दृष्टियों से समायोजित नहीं होते हैं।

7. गेट्स के अनुसार-

समायोजन जीवन में निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने तथा वातावरण के बीच संतुलित संबंध रखने के लिए अपने व्यवहारों में परिवर्तन करता है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

8. बोरिंग तथा अन्य के अनुसार–

समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीवित प्राणी अपनी आवश्कताओं तथा इन आवश्यकताओं को संतुष्ट करने वाली परिस्थितियों के साथ संतुलन स्थापित करता है।

9. आइजनेक तथा अन्य के अनुसार–

समायोजन एक ऐसी अवस्था है जिसमें एक ओर व्यक्ति की आवश्यकताएँ तथा दूसरी ओर पर्यावरण सम्बन्धी दावों की पूर्ण सन्तुष्टि होती है अथवा यह वह प्रक्रिया है जिसमें इन दोनों के मध्य सामंजस्य स्थापित हो जाता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि समायोजन का अर्थ उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा व्यक्ति अन्य व्यक्तियों एवं अपने पर्यावरण के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित करता है तथा अपनी आवश्यकताओं एवं उनकी सन्तुष्टि करने वाली परिस्थितियों के साथ सन्तुलन स्थापित करता है।

13.4 समायोजन की विशेषताएँ

समायोजन एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसमें विश्लेषण के आधार पर पाँच विशेषताएँ पाई जाती हैं–

1. समायोजन एक निरन्तर प्रक्रिया है

व्यक्ति जीवन में एक बार समायोजन नहीं करता वरन् आवश्यकता पड़ने पर वह बार–बार समायोजन करता है। पूर्ति करते समय उसके सम्मुख अनेक बाधायें उत्पन्न होती हैं और वह उनको दूर करने पर ही अपनी आवश्यकता पूर्ण कर पाता और स्वयं को समायोजित कर पाता है। एक आवश्यकता पूर्ण होने के पश्चात् या साथ ही दूसरी आवश्यकता आरम्भ हो जाती है। इस प्रकार यह कभी न अन्त होने वाला क्रम है।

2. प्रेरणा

समायोजन की प्रक्रिया व्यक्ति में उपस्थित प्रेरणा या आवश्यकता से आरम्भ होती है।

3. समायोजन व्यक्ति से सम्बन्धित है

व्यक्तियों में व्यक्तिगत भिन्नतायें पायी जाती हैं। अतः एक ही वातावरण में दो व्यक्ति भिन्न–भिन्न रूप से समायोजित होते हैं। जब वातावरण की परिस्थितियाँ आवश्यकताओं की सन्तुष्टि में बाधक होती है, तो व्यक्ति अपनी बाह्य व आन्तरिक मांगों के साथ–साथ कुण्ठित हो जाता है और वह अपने जीवन मूल्यों, सामाजिक मानकों, अभिवृत्तियों, पूर्वामहों के आधार पर समायोजित होने का प्रयास करता है। ये उन्हीं व्यक्तियों को ज्ञात होती है जो समायोजन कर रहे हैं।

4. विविध अनुक्रियाएँ

आवश्यकता की पूर्ति में बाधा उत्पन्न होने पर व्यक्ति प्रतिक्रिया स्वरूप अनेक प्रकार की प्रतिक्रियायें करता है। ये अनुक्रियायें सामान्य भी होती हैं और असामान्य भी। यदि इन अनुक्रियाओं के फलस्वरूप व्यक्ति का वातावरण के साथ समायोजन हो जाता है तो समायोजन की समस्या हल हो जाती है।

5. समायोजन संस्कृतियों के अनुसार भिन्न होता है

कोई व्यक्ति जो किसी एक समाज में किसी विशिष्ट सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में सुसमायोजित माना जाता है, वह किसी भिन्न समाज में भिन्न सांस्कृतिक विन्यास में वैसा नहीं माना जाता है। जैसे– किसी धर्म के विशेष मत के नग्न रहने वाले पुरूष अथवा जनजातीय संस्कृतियों के अर्द्धनग्न नारी एवं पुरूष भिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले भिन्न समाजों में समायोजित नहीं भी समझे जा सकते हैं।

13.5 समायोजित व्यक्ति के गुण एवं विशेषताएँ

एक भली–भाँति समायोजित कहे जाने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व व व्यवहार में निम्न विशेषताएँ पाई जाती हैं–

1. शारीरिक दृष्टि से समायोजित

शारीरिक रूप से व्यक्ति अगर स्वस्थ हो तथा उसका शारीरिक विकास, भार, ऊँचाई, अंग–प्रत्यंगों का विकास आदि अपनी आयु के अनुसार सामान्य ढंग से चलता रहे तो उसे अपने आप से तथा अपने वातावरण के साथ समायोजन करने में बहुत सुविधा होती है। समायोजित कहे जाने वाले बालक में शारीरिक स्वास्थ्य एवं विकास सम्बन्धी यह विशेषता पाई जाती है।

2. संवेगात्मक रूप से समायोजित

एक समायोजित व्यक्ति का संवेगात्मक व्यवहार काफी सन्तुलित होता है। वह अपने संवेगों की उचित अभिव्यक्ति को उचित ढंग से सीख लेता है। किस तरह, कितनी मात्रा, में किस प्रकार के संवेगों की अभिव्यक्ति की जाए, इस प्रकार की व्यवहार कुशलता तथा संवेगात्मक नियंत्रण की उसमें उपस्थिति पाई जाती है।

3. अपनी अच्छाइयों तथा कमजोरियों का ज्ञान

भली–भाँति समायोजित व्यक्ति यह जानता है कि उसकी अपनी योग्यताओं तथा क्षमताओं का क्या स्तर है, किन बातों में वह आगे है तथा किन में पीछे। अपने आपको इस प्रकार तोलकर ही वह आगे बढ़ता है और इसलिए न तो वह जो नहीं कर सकता था उसे करके प्रसन्न होता है और न जो वह कर सकता था उसे न करके पछताता है। एक समायोजित व्यक्ति स्वभाव से दूसरों में उनकी अच्छाइयों के ही दर्शन करता है, उनकी बुराइयों तथा दोषों का अन्वेषण कर उनका दुष्प्रचार नहीं करता।

4. व्यवहार का लचीलापन

समायोजित व्यक्ति का रूख, व्यवहार तथा दृष्टिकोण अड़िग नहीं होता। जिस तरह का माहौल या परिस्थितियाँ होती हैं उन्हीं के अनुसार अपने स्वभाव तथा कार्यशैली में परिवर्तन लाने की उनमें पर्याप्त क्षमता पाई जाती है।

5. अपने वातावरण सम्बन्धी परिस्थितियों से सन्तुष्टि

अपने घर, परिवार, पास–पड़ोस, विद्यालय में उसे जो भी परिस्थितियाँ और माहौल, उसके रहन–सहन, लालन–पालन, खेल–कूद, मनोरंजन तथा शिक्षा के लिए मिलता है उसमें वह सन्तुष्टि का अनुभव करता है तथा बिना वजह किसी अभाव का रोना नहीं रोते रहता। वह जो भी काम करता है, जहाँ भी करता है और जिनके सम्पर्क में आता है उससे उसे कोई भी शिकायत करते नहीं पाया जाता।

6. परिस्थितियों से संघर्ष करने की क्षमता

अनुकूल परिस्थितियों में तो सभी जी लेते हैं और सन्तुष्टि का अनुभव कर लेते हैं। परीक्षा तो विपरीत परिस्थितियों में ही होती है। इस प्रकार की परिस्थितियों से समझौता करने के लिए पर्याप्त धैर्य रखने के साथ–साथ समायोजित व्यक्ति

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

में यह भी विशेषता पाई जाती है कि वह परिस्थितियों का मुकाबला कर उन्हें अपने अनुकूल बनाने के लिए भी तैयार रहता है। उसकी संकल्प तथा इच्छा शक्ति प्रबल होती है। अतः वह प्रतिकूल परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होता।

7. अपने आपको पर्याप्त सम्मान देना तथा दूसरों का भी सम्मान करना

भली-भाँति समायोजित व्यक्ति जो कुछ भी अपने व्यक्तित्व में होता है उससे सन्तुष्ट रहने का प्रयत्न करता है तथा अपने आत्म का पर्याप्त सम्मान करते हुए जैसा भी रंगरूप, कद काठी, योग्यताएँ तथा क्षमताएँ उसके पास होती हैं उन्हीं को अपनी शक्ति मानकर उनकी कद्र करता है तथा जो कुछ नहीं है उसकी दूसरों से तुलना कर व्यर्थ में परेशान नहीं होता है। अपने आत्म का सम्मान करते हुए दूसरों को पर्याप्त सम्मान देने का प्रयत्न करता रहता है और किसी तरह भी उनकी भावनाओं को चोट नहीं पहुँचाता है।

8. सामाजिक रूप से समायोजित

एक भली-भाँति समायोजित व्यक्ति सामाजिक विकास तथा सामाजिकता की दृष्टि से अपनी आयु के अनुसार ठीक प्रगति करता हुआ पाया जाता है। दूसरे बच्चों के साथ खेलने, मित्रता बढ़ाने तथा सामाजिक क्रियाओं में भाग लेने में उसकी रूचि होती है। धीरे-धीरे वह समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों को समझने लगता है। अपने सामाजिक परिवेश को अच्छी तरह पहचानने की उसमें क्षमता आ जाती है तथा अच्छा सामाजिक जीवन बिताने से सम्बन्धित गुणों और कुशलताओं के अर्जन की ओर वह कदम बढ़ाने लगता है।

9. महत्त्वाकांक्षा का उचित स्तर

जीवन में बहुत कुछ पाना तो सभी चाहते हैं, परन्तु समझदारी इसी में होती है कि अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को अपनी योग्यताओं, सीमाओं तथा परिस्थितियों के संदर्भ में ही संतुलित करके रखा जाए। एक समायोजित व्यक्ति इसी प्रकार का संतुलन बनाए रखने का प्रयत्न करता है और इसीलिए अनावश्यक चिंता, परेशानी तथा निराशा का शिकार होने से बचा रहता है।

10. मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति

मूलभूत शारीरिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति किसी भी व्यक्ति के समायोजन के लिए काफी आवश्यक मानी जाती है। अगर किसी कारण किसी आवश्यकता की पूर्ति में कोई कमी रहती भी है तो उसकी चुभन को दूसरे वर्ग की आवश्यकताओं की पूर्ति से पूरा किया जाता रहता है। गरीबी तथा अभावों की चुभन को स्नेह प्यार के मरहम तथा सुरक्षा के कवच से कम किया जा सकता है। भली-भाँति समायोजित व्यक्ति के साथ यही होता है। उसकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में या तो कोई बाधा नहीं आती और अगर आती भी है, तो उसकी उन्हें भविष्य में पूरा होने की आशा बंधी रहती है।

13.6 समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक

बालक के समायोजन को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं-

1. मानसिक स्वास्थ्य

बालक के मानसिक स्वास्थ्य का बालक के समायोजन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि बालक मानसिक रूप से स्वस्थ है तो उसका समाज एवं अन्य व्यक्तियों तथा परिस्थितियों के साथ अच्छा समायोजन होगा। इसके विपरीत यदि बालक का मानसिक स्वास्थ्य खराब हो तो उसका संतुलन बिगड़ जाता है।

2. भग्नाशा या कुण्ठा

भग्नाशा या कुण्ठा संवेगात्मक तनाव है, जो इच्छा या आवश्यकता में अवरोध आ जाने से उत्पन्न होता है। इस तनाव के कारण बालक का समायोजन बिगड़ जाता है।

3. मानसिक संघर्ष

मानसिक संघर्ष उस समय उत्पन्न होता हैं, जब एक व्यक्ति को पर्यावरण की उन शक्तियों का सामना तब करना पड़ता है, जब उसको स्वयं की रूचियों और इच्छाओं के विपरीत कार्य करना पड़ता है। जब मानसिक द्वन्द्व उत्पन्न होता है, तो बालक का समायोजन प्रभावित होता है।

4. मानसिक तनाव

मानसिक तनाव से बालक का समायोजन प्रभावित होता है। मानसिक तनाव का अर्थ उस संघर्षात्मक स्थिति से है, जो विरोधी या विपरीत मनोवृत्तियों को उत्पन्न करती हैं। वस्तुतः तनाव असन्तुलन की वह दशा है, जो प्राणी को उत्तेजित दशा का अन्त करने के लिए कोई कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। तनाव उत्पन्न होने पर मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है और परिणामस्वरूप बालक या व्यक्ति का समायोजन बुरी तरह प्रभावित होता है।

5. अपमान

अपमान भी व्यक्ति के सन्तुलन को बिगाड़ देता है। अपमानजनक परिस्थितियों का सामना होने पर व्यक्ति की संवेगात्मक स्थिति में उथल-पुथल मच जाती है, जो आगे चलकर उसके समायोजन पर बुरा प्रभाव डालती है।

6. स्नायु रोगों

स्नायु रोगों से भी एक व्यक्ति का समायोजन प्रभावित होता है। स्नायु रोगों से ग्रस्त व्यक्ति अन्य लोगों से समायोजित हो नहीं पाता।

7. शारीरिक रोग एवं कमी

शारीरिक रोग भी समायोजन पर विपरीत प्रभाव डालते हैं। शारीरिक अक्षमता एवं कमी से समायोजन बिगड़ता है। इसीलिए प्रायः रोगी, विकलांग या अशक्त व्यक्तियों का अन्य लोगों से समायोजन ठीक नहीं हो पाता।

8. अन्य कारक

असफलता, हीनभावना, आत्म-ग्लानि, अहंकार, कुण्ठा, चिन्ता, आकांक्षाएँ आदि कारक भी एक व्यक्ति के समायोजन को प्रभावित करते हैं।

13.7 समायोजन के प्रकार

समायोजन तीन प्रकार का होता है, जो निम्नलिखित हैं-

1. जैविक समायोजन
2. सामाजिक पर्यावरण के साथ समायोजन
3. स्वयं के साथ समायोजन

1. जैविक समायोजन

जैविक समायोजन को अनुकूलन भी कहा जाता है। यह समायोजन बुनियादी प्रकार का समायोजन है। जब प्राणी अपनी प्राकृतिक परिस्थितियों के साथ

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

अनुकूलन करता है तो उसे हम जैव–समायोजन की संज्ञा देते हैं। इस प्रकार का समायोजन जीवित रहने के लिए जरूरी होता है। हम हवा में श्वास लेते हैं ताकि जीवित रह सकें। हम अपनी शीत व गर्मी से रक्षा करने के लिए आवास बनाते हैं। ये कार्य हमारे समायोजन के प्रतीक हैं।

2. सामाजिक पर्यावरण के साथ समायोजन

यह समायोजन समाज के अन्य लोगों के साथ किया जाता है। यह समायोजन परिस्थिति दर परिस्थिति भिन्न होता है। उदाहरण के लिए लड़कियों के समूह में बातचीत किसी लड़के के आने पर एकदम बदल जाती है। लोगों के साथ समायोजन निष्क्रिय, आक्रामक या विचारशील प्रकार का हो सकता है।

3. स्वयं के साथ समायोजन

अपने साथ सकारात्मक समायोजन का अर्थ है जीवन में सन्तुष्टि। यह समायोजन व्यक्ति अपने ही साथ करता है, पर यह बड़ा चुनौतीपूर्ण होता है। व्यक्तिगत आवश्यकताएँ ऐसी होती हैं कि उनका आपस में मेल नहीं होता। इससे व्यक्ति में अन्दर अन्तर्द्वन्द्व आरम्भ हो जाता है। उदाहरणार्थ परीक्षा पूर्व रात्रि में एक विद्यार्थी सो नहीं पाता क्योंकि उसने परीक्षा की तैयारी अच्छी नहीं की। हमारे कई उद्देश्य पूरे नहीं होते और हमें असफलताओं के साथ समायोजन करना पड़ता है। हमें अपनी कमियों के साथ भी समायोजन करना पड़ता है। ये सब अपने स्वयं के साथ समायोजन के उदाहरण हैं।

13.8 समायोजन के सोपान

समायोजन प्रक्रिया हेतु तीन सोपान बताए गए हैं, जो निम्न प्रकार हैं–

1. समस्या का अंकन

व्यक्ति के सामने जैसे ही आवश्यकता उत्पन्न होती है, उसके लिए तत्सम्बन्धी समस्यायें उत्पन्न होती हैं। व्यक्ति इन समस्याओं का वर्ग करता है, विशिष्ट वर्ग में रखता है, उसके समाधान क्षेत्र तलाशता है तथा उस समस्या की गम्भीरता का निर्धारण करता है।

2. निर्णय–निर्माण

समस्या की गम्भीरता तथा वर्गीकरण के बाद उस समस्या के समाधान हेतु आवश्यक समाधानों की सूची तैयार की जाती है तथा प्रत्येक समाधान का आवश्यकता के सन्दर्भ में मूल्यांकन किया जाता है।

3. क्रियान्वयन

समुचित समाधान के सम्बन्ध में निर्णय लेकर चयन करने के उपरान्त उस समाधान को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति क्रियायें प्रारम्भ कर देता है। इस अवस्था में क्रियान्वयन के समय जो कठिनाइयाँ आती हैं उनके अनुसार वह अपनी क्रियाओं में आवश्यक संशोधन भी करता चलता है।

13.9 समायोजन में माता–पिता एवं शिक्षक की भूमिका

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का विकास करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। इस उद्देश्य की प्राप्ति तब सम्भव होती है, जब बालक भयमुक्त, चिन्तामुक्त एवं तनाव रहित होकर शिक्षा ग्रहण करता है। बच्चों को चिन्ता, कुण्ठा एवं तनाव से मुक्ति दिलाने में माता–पिता तथा अध्यापकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है।

13.9.1 माता-पिता की भूमिका

बच्चों के समायोजन में माता–पिता निम्नांकित रूप से उनकी सहायता कर सकते हैं–

1. बालक के प्रति प्रेम एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार

बच्चों से प्रेम एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार करने से और उनसे सतत् संवाद बनाए रखने से वे भग्नाशा, निराशा, तनाव आदि स्थितियों से बचे रहते हैं।

2. समायोजन प्रक्रिया को अपनाना

यदि बच्चे किसी भी क्षेत्र में समायोजित नहीं हो पा रहे हों या कुसमायोजन की ओर बढ़ रहे हों, तो माता–पिता को चाहिए कि वे समायोजन की प्रक्रिया को अपनाकर उनका सहयोग करें।

3. आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करना

माता–पिता को चाहिए कि वे अपने बालकों की शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के लिए उनकी अभिक्षमता, रूचि एवं रूझान के अनुकूल सभी सुविधाएँ प्रदान करें।

4. परिवार का वातावरण

माता–पिता का दायित्व है कि वे अपने परिवार का वातावरण शान्ति एवं स्नेहपूर्ण बनाए रखें। परिवार के सदस्यों का आपस में स्नेहपूर्ण व्यवहार होना चाहिए, वे दुर्व्यसनों से दूर रहें और प्रत्येक व्यक्ति, वस्तु, घटना एवं क्रिया के प्रति सकारात्मक सोच रखें।

13.9.2 शिक्षक की भूमिका

बच्चों के समायोजन में अध्यापक एवं विद्यालय निम्नांकित रूप से सहायता प्रदान कर सकते हैं–

1. स्नेहपूर्ण व्यवहार

बालकों के साथ अध्यापक को स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। छात्रों से बिना भेदभाव के नम्र, शिष्ट एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करने से उनका मन–मस्तिष्क, स्वस्थ एवं प्रसन्न रहता है। यह स्थिति उन्हें भग्नाशा, तनाव आदि से मुक्ति दिलाने में सहायक सिद्ध होती है और वे प्रत्येक बाधा का साहसपूर्वक सामना कर समायोजन करने में सफल होते हैं।

2. अच्छा वातावरण

विद्यालय एवं कक्षा का अच्छा एवं अनुकूल वातावरण बच्चों के समायोजन में सहायक सिद्ध होता है। नियमित शारीरिक शिक्षा, विश्राम, खेलकूद व्यायाम, स्वच्छता, शुद्ध वायु, प्रकाश और भौतिक साधन–सुविधाएँ बच्चों के मन–मस्तिष्क को स्वस्थ एवं सजग रखते हैं। इससे उन्हें किसी भी परिस्थिति में समायोजन करने में सहायता मिलती है।

3. पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन

विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के रूप में सामूहिक एवं व्यक्तिगत प्रवृत्तियों का आयोजन किया जाना चाहिए। इन प्रवृत्तियों का निर्धारण छात्रों की

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

अभिक्षमता, रूचि एवं रूझान आदि में विभिन्नता को ध्यान में रखकर करना चाहिए। इससे छात्रों को अपनी क्षमता एवं योग्यता के विकास के अवसर मिलते हैं और उनकी मूल प्रवृत्तियों एवं इच्छाओं को स्वस्थ रूप में व्यक्त होने के अवसर मिलते हैं। इस प्रकार छात्रों में होने वाली कुण्ठा एवं निराशा आदि को कम किया जा सकता है।

4. सन्तुलित गृहकार्य

अध्यापक को बालक की क्षमता के अनुरूप गृहकार्य देना चाहिए। गृहकार्य में कुछ प्रायोगिक कार्य एवं प्रयोजनाओं का समावेश करने से बच्चों की गृहकार्य करने में रूचि बनी रहती है। इस प्रकार उन्हें गृहकार्य से होने वाले तनाव से मुक्ति मिलती है।

5. बालकेन्द्रित शिक्षण विधियों का प्रयोग

अध्यापक को कक्षा में पढ़ाते समय नवीन मनोवैज्ञानिक शिक्षण–विधियों का प्रयोग करना चाहिए जो कि क्रिया, व्यवहार, अभ्यास, स्वानुभव तथा स्वतन्त्रता के सिद्धातों पर आधारित हों। आगमन विधि, विश्लेषण विधि, खोज विधि, समस्या समाधान विधि और प्रयोजना विधि आदि का प्रयोग करना छात्रों के लिए हितकर होता है। इन विधियों के प्रयोग से छात्र मन–मस्तिष्क से सकारात्मक सीखने में व्यस्त हो जाते हैं और इस प्रकार उन्हें मानसिक विकारों से दूर रखा जा सकता है।

6. निर्देशन कार्यक्रम का आयोजन

छात्रों की क्षमता, योग्यता एवं रूचि के अनुसार उन्हें समय–समय पर व्यक्तिगत, शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन देने की व्यवस्था होनी चाहिए। निर्देशन कार्यक्रम छात्रों की शिक्षण प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

माता–पिता एवं अध्यापक अपने उत्तरदायित्व का ठीक प्रकार से निर्वहन करें तो छात्रों के कुसमायोजन की समस्या को आसानी से हल किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए उनका भी मानसिक स्वास्थ्य ठीक होना चाहिए, और उनका व्यवहार बच्चों के साथ प्रेम, सहानुभूति एवं सहयोगपूर्ण होना चाहिए।

7. उच्च आदर्शों का प्रस्तुतीकरण

छात्रों के सामने धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में उच्च स्थिति को प्राप्त महापुरूषों के जीवन चरित्र, उनके आदर्श, उनका समाज एवं देश के प्रति समर्पण आदि को प्रस्तुत करना चाहिए। इससे छात्र केवल स्वहित की इच्छा से ऊपर उठकर परहित की भावना की ओर प्रवृत्त हो सकते हैं। कई समस्याएँ इस भावना के विकास से तिरोहित हो जाती हैं और छात्र पर्यावरण के साथ अच्छा समायोजन कर सकते हैं।

13.10 समायोजन की विधियाँ

बच्चों में निरन्तर रहने वाली भग्नाशा, तनाव या अन्तर्द्वन्द्व कष्टदायी होने के साथ शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक होते हैं। बच्चों को इन कष्टदायी स्थितियों से दूर रखने का प्रयत्न करना चाहिए फिर भी यदि किन्हीं कारणों से इनका शिकार हो जाते हैं तो इन्हें कम अथवा समाप्त करने के हर सम्भव उपाय करने चाहिए। मनोवैज्ञानिकों ने इन्हें कम करने के लिए कुछ विधियों का वर्णन किया है। इन विधियों का प्रयोग करने से बच्चों की भग्नाशा, द्वन्द्व एवं तनाव की स्थिति में कमी आती है और वे पर्यावरण के साथ समायोजन करने में समर्थ होते हैं। मनोवैज्ञानिक इन्हें समायोजन की **रक्षात्मक युक्तियाँ** भी कहते हैं। इन विधियों को निम्नलिखित चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–

1. प्रत्यक्ष विधियाँ
2. अप्रत्यक्ष विधियाँ
3. क्षतिपूरक विधियाँ
4. आक्रामक विधियाँ

13.10.1 प्रत्यक्ष विधियाँ

प्रत्यक्ष विधियाँ वे विधियाँ हैं, जिनके द्वारा बालक अथवा व्यक्ति चेतनावस्था में अपने मानसिक तनाव को दूर करने का प्रयास करता है। इन विधियों में वह अपनी तर्क एवं चिन्तन शक्ति का प्रयोग करता है। इन प्रत्यक्ष विधियों में मुख्य उपाय हैं–

1. प्रयत्न में सुधार

इस विधि में बालक अपनी आवश्यकताओं एवं इच्छाओं की पूर्ति में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए अतिरिक्त प्रयत्न करता है। अपने लक्ष्य की प्राप्ति में आने वाली बाधाओं को वह चुनौती के रूप में स्वीकार करता है और दोगुने उत्साह से प्रयत्न कर अपनी बाधाओं को हटाता है और तनाव से मुक्ति पाता है। जैसे– यदि कोई बालक एम.बी.ए. करना चाहता है, परन्तु वह अंग्रेजी भाषा ज्ञान के अभाव में चयन परीक्षा में सफल नहीं हो पाता है और चयन परीक्षा में सफलता प्राप्त करने हेतु वह वर्षभर सतत् अभ्यास कर अंग्रेजी भाषा का ज्ञान प्राप्त कर लेता है और वर्ष के अन्त में आयोजित एम.बी.ए. की चयन परीक्षा में सम्मिलित होकर उसमें सफल होता है तो उसे प्रयत्न द्वारा सुधार कहा जाता है।

2. मार्गान्तीकरण

इस विधि में बालक अपने लक्ष्य की प्राप्ति में आई रूकावट या बाधा को अनेक प्रयत्नों द्वारा दूर नहीं कर पाता तो वह उसी के समरूप ऐसा लक्ष्य निर्धारित करता है जो उसकी इच्छा एवं अहंकार की सन्तुष्टि करता है और वह उसके लिए प्रयत्न करता है और उसमें सफलता प्राप्त कर अपने मानसिक तनाव को दूर करता है। जैसे– एक व्यक्ति आइ.ए.एस. ऑफीसर बनना चाहता है। इसके लिए अनेक प्रयत्न करता है, लेकिन उसे सफलता नहीं मिलती। इसके पश्चात् वह अपना मूल्यांकन करता है और इन्जीनियर बनने का लक्ष्य निर्धारित करता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वह प्रयत्न करता है और उसे प्राप्त करता है। इस प्रकार वह अपने तनाव को दूर करता है।

3. समर्पण

इस विधि में बालक अपने सारे प्रयत्नों द्वारा लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर पाता है तो वह इसे नियति मानकर एक ऐसा लक्ष्य निर्धारित करता है जिसे वह आसानी से प्राप्त कर सकता है। जब वह अल्प प्रयास में इस लक्ष्य को प्राप्त कर कर लेता है तो उसी से प्रसन्न होकर अपने आपको सन्तुष्ट कर लेता है और वह अपने तनाव को दूर करता है। जैसे– आइ.ए.एस. ऑफीसर बनने के लिए अनेक प्रयत्न करने के बाद भी किसी व्यक्ति को सफलता नहीं मिलती है तो वह यह मान लेता है उसके भाग्य में यह बनना नहीं लिखा है और वह कोई छोटी–मोटी नौकरी ढूँढ़ लेता है और उसी से सन्तुष्ट हो जाता है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

4. विश्लेषण एवं निर्णय

जब व्यक्ति के सामने परस्पर विरोधी एक से अधिक लक्ष्य होते हैं, तो वह यह निर्णय नहीं कर पाता है कि किसे स्वीकार करे और किसे छोड़ दे। इस विधि में वह अपने सामने उपस्थित सभी परिस्थितियों का, अपनी क्षमता एवं योग्यता का एवं उचित-अनुचित का तर्क, बुद्धि एवं चिन्तन द्वारा विश्लेषण करता है, विरोधी लक्ष्यों के गुण-दोषों का विवेचन करता है और अपने एवं अन्य के पूर्व के अनुभवों का लाभ उठाते हुए जो उचित है उसका निर्णय करता है। जैसे- आई.ए.एस. की सहायक सेवाओं के लिए कोई व्यक्ति सफल हो जाता है। उसके सामने दो विकल्प होते हैं- एक वित्त अधिकारी का पद ग्रहण करना और दूसरा प्रशासनिक सेवा में कोई नियुक्ति लेना। दोनों में से किसका चयन करना ठीक होगा, इसके लिए वह सभी परिस्थितियों का विश्लेषण करता है और अपनी अभिक्षमता एवं मनोवृत्ति के अनुसार एक का चयन करता है।

www.praganya.org

13.10.2 अप्रत्यक्ष विधियाँ

अप्रत्यक्ष विधियाँ वे विधियाँ हैं, जिन्हें व्यक्ति अचेतन रूप में अपनाता है। तनाव से उत्पन्न दुःखद अनुभूतियों से बचने के लिए व्यक्ति के अचेतन मन में कुछ प्रक्रियाएँ चलती हैं जो स्वतः ही होती रहती हैं। व्यक्ति को इनका ज्ञान भी नहीं हो पाता और इन प्रक्रियाओं को वह अपने मन में कल्पना के द्वारा चलाता रहता है। इससे उसका तनाव अस्थायी रूप से कम हो जाता है। इन प्रक्रियाओं द्वारा तनाव से होने वाली दुःखद अनुभूतियाँ कम होती हैं, अतः इन्हें रक्षात्मक युक्तियाँ भी कहा जाता है। समायोजन करने की अथवा तनाव कम करने की महत्त्वपूर्ण रक्षात्मक युक्तियाँ निम्न हैं-

www.praganya.org

1. दमन

दमन का अर्थ है- इच्छाओं अथवा कामनाओं को स्वतन्त्र रूप से प्रकट न होने देना। इस युक्ति में व्यक्ति अपनी दुःखद अनुभूतियों, द्वन्द्व एवं अवांछनीय इच्छाओं को अपने अचेतन मन में दबा देता है। ऐसा माना जाता है कि जन्मजात प्रेरकों पर आधारित व्यवहार प्रायः समाज विरोधी होते हैं, उनमें नैतिकता एवं आदर्श विरोधी तत्त्व रहते हैं। अतः व्यक्ति इन समाज विरोधी इच्छाओं का दमन कर देता है।

www.praganya.org

2. प्रतिगमन

प्रतिगमन का अर्थ है पीछे लौटना। इस युक्ति में व्यक्ति अपने असन्तोष, तनाव एवं दुःखद स्थिति अथवा अनुभूति से मुक्ति पाने के लिए अपने उन पूर्व अनुभवों और प्रक्रियाओं की ओर लौट जाता है जिन्हें वह बाल्यावस्था में किया करता था। जैसे- कोई व्यक्ति प्यार में असफल होने पर अपनी इच्छाओं को प्रकट करने के लिए गुड़िया से प्रेम प्रदर्शित करता है अथवा प्रौढ़ व्यक्ति कभी-कभी बच्चों जैसा व्यवहार- रोना, चिल्लाना, पैर पटकना, मुँह बनाना और तुतला कर बोलना आदि करने लगता है।

3. शोधन

शोधन का सामान्य अर्थ है शुद्ध करना। मनोवैज्ञानिक भाषा में यहाँ शोधन को एक युक्ति के रूप में प्रयुक्त किया गया है जिसका तात्पर्य है- अचेतन मन की वह मानसिक प्रक्रिया जिसके द्वारा व्यक्ति की अवांछनीय आवश्यकताओं एवं इच्छाओं को ऐसे कृत्रिम पक्ष की ओर मोड़ दिया जाता है जिसे समाज की स्वीकृति प्राप्त होती है। जैसे- किसी व्यक्ति द्वारा अपनी काम प्रवृत्ति को कला, संगीत, धर्म और दर्शन की ओर मोड़ देना।

4. पलायन

पलायन का अर्थ है- पीछे हटना। इस युक्ति में व्यक्ति दुःखद या तनाव उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों से अपने आपको अलग कर लेता है। जैसे- किसी छात्र द्वारा विद्यालय में किसी समूह द्वारा बार-बार अवहेलना करने, उसका मजाक बनाने या चिढ़ाने पर उक्त समूह को छोड़कर दूसरे समूह में सम्मिलित होना।

5. दिवास्वप्न

दिवास्वप्न का अर्थ है- कल्पना जगत् में विचरण करना। इस युक्ति द्वारा व्यक्ति अपनी दुःखद अनुभूतियों से छुटकारा पाने के लिए वर्तमान से हटकर कल्पना लोक में विचरण करने लगता है और इससे उसे सुखद अनुभूति होती है। दिवास्वप्न द्वारा वह अपनी असफलताओं एवं तनाव की स्थितियों को सफलता एवं सुखद स्थितियों में बदल देता है और कुछ समय के लिए संतोष का अनुभव करता है एवं अपने मानसिक तनाव को कम करता है। जैसे- परीक्षा में बार-बार असफल होने वाला छात्र कल्पना में अपने आपको सफलतम एवं योग्य अधिकारी के रूप में देख सकता है।

6. तादात्मीकरण

तादात्मीकरण का सामान्य अर्थ है- अपने को किसी के जैसा समझना। इस युक्ति द्वारा असफल व्यक्ति अपने आपका किसी सफल एवं गुणवान् व्यक्ति के साथ तादात्मय स्थापित कर उसके गुणों एवं कृत्यों को अपने में देखने लगता है। यह प्रवृत्ति सामान्यतः सभी व्यक्तियों में पाई जाती है। जैसे- कोई बालक अपनी उपलब्धि की न्यूनता को अपने विद्वान् पिता के नाम से यह कहकर छिपाता है कि मैं अमुक विद्वान् का पुत्र हूँ। यहाँ वह अपने स्वयं के गुण-अवगुण को छिपाने का प्रयास करता है। अपनी कमजोरी छिपाने के लिए कभी-कभी व्यक्ति अपने खानदान के नाम से अपना परिचय देते हैं। इस तादात्मीकरण के कारण व्यक्ति में हीनता के भाव कम हो जाते हैं और तनाव में कमी आती है।

7. आश्रित होना

आश्रित होने का अर्थ है समर्पित होना। जब व्यक्ति अपने सारे प्रयासों के बाद भी असफल होता है तो अपने तनाव को कम करने के लिए किसी सबल अथवा अधिक बुद्धिमान व्यक्ति के सामने समर्पण कर देता है और उसके कहे अनुसार अपने क्रियाकलाप करने लगता है। इस युक्ति से व्यक्ति का तनाव तो दूर होता ही है साथ ही दोनों के सम्मिलित प्रयास से कई समस्याएँ भी हल की जा सकती हैं।

8. औचित्य स्थापन

औचित्य स्थापन का अर्थ होता है- किसी कारण की खोज करना। इस युक्ति में व्यक्ति अपनी असफलता के लिए वास्तविक कारण को न देखकर कोई ऐसा कारण ढूँढ़ता है जो उसे कम तकलीफ देता है। जैसे- विद्यालय में देरी से आने पर छात्र अपनी घड़ी को दोष देता है कि वह धीमी चल रही है या वह खराब हो गई है।

9. प्रक्षेपण

प्रक्षेपण का सामान्य अर्थ है- किसी पर फेंकना या डालना। इस युक्ति में व्यक्ति अपनी असफलता का दोष किसी अन्य पर डाल देता है और इस प्रकार

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

अपने तनाव को कम करता है। जैसे– साक्षात्कार में असफल होने पर अपनी कमी को साक्षात्कार लेने वाले व्यक्तियों पर यह कहकर डाल देना कि उन्होंने पक्षपात किया है अथवा उन्होंने तो पहले ही तय कर रखा था कि किसका चयन करना है।

13.10.3 क्षतिपूरक विधियाँ

ऐसी विधियाँ, जिनमें व्यक्ति एक क्षेत्र की कमी को दूसरे क्षेत्र में कुशलता प्राप्त करके अथवा उसी क्षेत्र में अधिक परिश्रम करके पूरा करता है, क्षतिपूरक विधियाँ कहलाती है। इस विधि से तात्पर्य अतिरिक्त शक्ति का गुणों के विकास में प्रयोग करना है, जिससे कि वास्तविक या काल्पनिक असफलता के कारण उत्पन्न तनावों को कम किया जा सके। जैसे– बालक परीक्षा में असफल होने पर अगली परीक्षा के लिए रात–दिन परिश्रम करता है और अच्छे अंक प्राप्त करता है, अथवा एक अच्छा खिलाड़ी न बनने पर वह कुशल वक्ता एवं नेता बनकर अपने तनाव को दूर करता है।

13.10.4 आक्रामक विधियाँ

आक्रामक विधियाँ वे विधियाँ हैं, जिनमें व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं एवं इच्छाओं की पूर्ति में बाधक बने तत्त्वों को चोट अथवा हानि पहुँचाकर दूर करता है और मानसिक सन्तोष प्राप्त करता है। आक्रामकता प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों रूप में हो सकती है। प्रत्यक्ष आक्रामकता में व्यक्ति स्वयं बाधाओं को चोट न पहुँचाकर अन्य तत्त्वों को हानि पहुँचाता है। जैसे– परीक्षा में नकल करते पकड़े जाने पर छात्र द्वारा निरीक्षक पर आक्रमण करना (प्रत्यक्ष आक्रामकता) अथवा निरीक्षक पर हमला न कर बाहर आकर अपने मित्रों, छोटे भाई बहिनों पर गुस्से को उतारना (अप्रत्यक्ष आक्रामकता)।

13.11 कुसमायोजन

कुसमायोजन वह प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक आवश्यकताओं को सफलतापूर्वक सन्तुष्ट करने में असफल होता है। वह व्यक्तिगत आवश्यकताओं और समाज की आशानुरूप आवश्यकताओं के मध्य सन्तुलन नहीं रख पाता है, और उसका मनो–सामंजस्य बिगड़ जाता है।

कुसमायोजित बालक वह बालक होता है जो अपने आपको अपने वातावरण में समायोजित नहीं कर सकता। जिससे उसका अधिगम प्रभावित होता है और अच्छी उपलब्धि नहीं दर्शाता।

कुसमायोजन जीवन की समस्याओं में स्वयं को अपनी परिस्थिति से अनुकूलित न कर पाने के कारण होता है। जीवन की मुख्य समस्याओं को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

1. वे समस्याएँ, जो शारीरिक और भौतिक आवश्यकताओं से उत्पन्न होती है और जिनका सम्बन्ध भोजन, प्रश्रय, आवास, भौतिक संकटों से संरक्षण आदि से होता है।
2. वे समस्याएँ, जो मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं से पैदा होती है, जैसे– सुख–सुविधा, सन्तोष और कष्ट से मुक्ति की आवश्यकता, स्वीकृति, स्वतन्त्रता, आत्मसम्मान, सफलता और सिद्धि की आवश्यकता और सुरक्षा, स्नेह, अपने साथी से आदर और तदीयत्व की भावना की आवश्यकता।
3. वे समस्याएँ, जो व्यक्ति के सामाजिक और सांस्कृतिक पर्यावरण से सामाजिक रीति–रिवाजों और निषेध से सामाजिक माँगों और प्रतिबन्ध से समाज में निहित संघर्षों से उत्पन्न होती है।

समायोजन की समस्या की अधिकता ऐसी आवश्यकता के प्राबल्य और तीव्रता पर निर्भर करती है, जिसकी पुष्टि नहीं हो पाती है। किस सीमा तक उसकी तुष्टि कठिन हो रही है, किस हद तक उसकी तुष्टि का अभाव अन्य प्रचंड और आधारभूत आवश्यकताओं की पुष्टि को प्रभावित कर रहा है, तनाव और मौसम की कठिनाइयों का जोर सहन करने की व्यक्ति सम्भावी क्षमताएँ किस हद तक पर्यावरण की आवश्यक पूर्ति के अनुकूल हैं, उसका आत्म प्रत्यय जो उसकी आवश्यकताओं की कुण्ठा की चेतना को प्रभावित करता है उसकी सामाजिक भावना जो कि उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति दूसरों की द्वैध आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधा नहीं डालती आदि समस्याएँ और अन्य जटिलताएँ सामने आ सकती हैं।

13.12 कुसमायोजन के रूप

व्यावहारिक जगत् में समायोजन का मार्ग व्यक्ति के लिए अनेक बाधाओं कष्टकारक परिस्थितियों से परिपूर्ण रहता है। समायोजन के मार्ग में आने वाली इस प्रकार की प्रतिकूल परिस्थितियाँ तथा बाधाएँ मुख्यतः तीन प्रकार की होती हैं, जो निम्न प्रकार हैं–

1. भग्नाशा या कुण्ठा
2. तनाव
3. अन्तर्द्वन्द्व।

13.13 भग्नाशा

यह सार्वभौमिक सत्य है कि व्यक्ति की अनेक इच्छाएँ तथा आवश्यकताएँ होती हैं। वह उनको सन्तुष्ट करने का हमेशा प्रयत्न करता है, लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि वह इस तरह के प्रयास में सफल ही हो। उसके मार्ग में अनेक बाधाएँ आ सकती हैं। ये बाधाएँ उसकी आशाओं को पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से भंग कर सकती हैं। इस तरह की दशा में वह भग्नाशा का अनुभव करने लगता है। जैसे– हम प्रातःकाल चार बजे की गाड़ी से पटना जाना चाहते हैं। हम समय से पहले उठने के लिए अलार्म घड़ी में चाबी लगा देते हैं, लेकिन वह बजती नहीं है। अतः हम जाग नहीं पाते हैं तथा पटना जाने से रूक जाते हैं। या मान लिया जाए कि हम समय पर स्टेशन पहुँच जाते हैं, लेकिन भीड़ के कारण हमें टिकट नहीं मिल पाती है या हम गाड़ी में नहीं बैठ पाते हैं तथा वह चली जाती है। दोनों दशाओं में पटना जाने की हमारी इच्छा में अवरोध उत्पन्न हो जाता है। वह पूर्ण नहीं होता है, जिसके फलस्वरूप हम भग्नाशा का शिकार हो जाते हैं।

इस तरह, हम कह सकते हैं कि भग्नाशा, तनाव तथा असमायोजन की वह दशा है, जो हमारी किसी इच्छा या आवश्यकता के मार्ग में बाधा आने से उत्पन्न होती है।

भग्नाशा के अर्थ को अधिक स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित परिभाषाएँ दी जा रही हैं–

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

1. गुड के अनुसार–

किसी इच्छा या आवश्यकता में बाधा पड़ने से उत्पन्न होने वाला संवेगात्मक तनाव।

2. कोलेसनिक के अनुसार–

भग्नाशा उस आवश्यकता की पूर्ति या लक्ष्य की प्राप्ति में अवरूद्ध होने या निष्फल होने की भावना है, जिसे व्यक्ति महत्त्वपूर्ण समझता है।

13.13.1 भग्नाशा के प्रकार

भग्नाशा दो प्रकार की होती है–

1. बाह्य भग्नाशा

बाह्य भग्नाशा उस परिस्थिति का फल होता है, जिसमें कोई बाह्य बाधा व्यक्ति को अपना लक्ष्य प्राप्त करने से रोकती है। जैसे– भौतिक बाधाओं, नियमों, कानूनों या दूसरों के अधिकारों या इच्छाओं के परिणामस्वरूप बाहरी भग्नाशा हो सकती है।

2. आन्तरिक भग्नाशा

आन्तरिक भग्नाशा उस बाधा का फल होता है, जो स्वयं व्यक्ति में पाई जाती है। जैसे– भय जो व्यक्ति को अपना लक्ष्य प्राप्त करने से रोकता है या व्यक्तिगत कमियों (जैसे– पर्याप्त ज्ञान, शक्ति, साहस या कुशलता का अभाव) के परिणामस्वरूप आन्तरिक भग्नाशा हो सकती है।

13.13.2 भग्नाशा एवं व्यवहार

प्रायः भग्नाशा की दशा में बालक चार प्रकार का व्यवहार करता है–

1. वह आक्रमणकारी बन जाता है।
2. वह आत्मसमर्पण कर देता है।
3. वह कुछ समय के लिए एकांतवासी बन जाता है।
4. वह किसी रोग से ग्रस्त होने का विचार करता है, लेकिन यह कोई आवश्यक नहीं है कि इस प्रकार का कोई व्यवहार करने वाला बालक भग्नाशा का शिकार होता है।

इस विचार की पुष्टि करते हुए मोर्स एवं विंगो ने कहा है कि–

जो व्यक्ति, भग्नाशा का शिकार होता है, वह इन चारों प्रकार के व्यवहार में किसी प्रकार का व्यवहार करता है, पर यह आवश्यक नहीं है कि इन चारों प्रकार के व्यवहारों में से किसी प्रकार का व्यवहार करने वाला व्यक्ति, भग्नाशा का शिकार है।

13.13.3 भग्नाशा के कारण

गेट्स एवं अन्य के अनुसार, भग्नाशा के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं–

1. शारीरिक दोष के कारण

व्यक्ति के शारीरिक दोष उसकी इच्छाओं पर वज्र प्रहार करते हैं। बहरा बालक संगीत के आनंद से वंचित रह जाता है। अंधा बालक प्रकृति के सौन्दर्य का अनुभव नहीं कर सकता है। इस प्रकार, शरीर के दोष व्यक्ति की आकांक्षाओं को अपूर्ण रखकर उसे भग्नाशा का शिकार बना देते हैं।

2. नैतिक आदर्श का कारण

व्यक्ति के नैतिक आदर्श उसकी इच्छा में अवरोध उत्पन्न करते हैं। वह अपने क्षुधा–पीड़ित बच्चों का पेट भरने के लिए चोरी करना चाहता है, लेकिन उनका नैतिक आदर्श उसे इस तरह का कार्य करने की आज्ञा नहीं देता है। अतः उसमें भग्नाशा उत्पन्न हो जाती है।

3. भौतिक वातावरण का कारण

व्यक्ति की भोजन–सम्बन्धी अनेक आधारभूत आवश्यकताएँ होती हैं, पर भौतिक वातावरण उनकी पूर्ति में बाधा उपस्थित कर सकता है। बाढ़, अकाल या भूचाल के कारण फसल नष्ट हो जाती है। परिणामस्वरूप व्यक्ति में भग्नाशा की उत्पत्ति स्वाभाविक है।

4. सामाजिक वातावरण का कारण

समाज का सदस्य होने के कारण व्यक्ति को सामाजिक वातावरण में अनुकूलन करना पड़ता है। उसे समाज के नियमों, आदर्शों, परम्पराओं और मान्यताओं के विरूद्ध आचरण करने का अधिकार नहीं होता है। भारत में शूद्रों, जर्मनी में यहूदियों, अमरीका में नीग्रो जाति के लोगों को समाज के नियम ज्यादा अधिकार प्रदान नहीं करते हैं। स्वतन्त्रता के आधुनिक युग में इस प्रकार के प्रतिबंध उनको भग्नाशा का शिकार बना देते हैं।

5. विरोधी इच्छाओं का कारण

व्यक्ति की दो विरोधी इच्छाओं में से मात्र एक ही पूरी हो सकती है। जैसे– एक नवयुवक विवाह भी करना चाहता है और विदेश जाकर उच्च अध्ययन भी करना चाहता है। एक नवयुवती नौकरी भी करना चाहती है और अपने भ्रमण करने वाले पति के साथ रहना भी चाहती है। ये दोनों केवल अपनी एक ही इच्छा पूरी कर पाते हैं। अतः दूसरी इच्छा उनमें भग्नाशा उत्पन्न कर देती है।

6. विरोधी उद्देश्य का कारण

व्यक्ति अपने दो विरोधी उद्देश्यों में से केवल एक को ही प्राप्त कर सकता है। जैसे– एक युवती अपने दो प्रेमियों के साथ जीवन व्यतीत करने के उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल सिद्ध नहीं हो सकती है। वह उनमें से केवल एक का चुनाव कर सकती है। इस तरह अप्राप्य उद्देश्य उसकी भग्नाशा का करण बन जाता है।

7. अन्य व्यक्ति का कारण

व्यक्ति की कुछ इच्छाओं में दूसरे लोग बाधा उपस्थित करते हैं। बच्चे मेला, तमाशा या सिनेमा देखने जाना चाहते हैं, पर उनको अपने माता–पिता की आज्ञा नहीं मिलती है। बच्चों की इच्छाएँ अवरोध के कारण पूरी नहीं होती हैं। अतः वे भग्नाशा का शिकार हो जाते हैं।

8. आर्थिक बाधा का कारण

आर्थिक बाधा व्यक्ति की इच्छाओं और आवश्यकताओं के मार्ग में प्रबल अवरोध उत्पन्न करती है। धनाभाव के कारण उसे भरपेट भोजन और पहनने को कपड़े नसीब नहीं होते हैं। अतः वह भग्नाशा की चरम सीमा पर पहुँचकर समाज के विरूद्ध विद्रोह करता है। फ्रांस और रूस की क्रान्तियाँ इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं।

निष्कर्षतः भग्नाशा या कुण्ठा का मनुष्य के व्यक्तित्व तथा जीवन व्यवहार पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति के विकास में भग्नाशा अनेकों बाधाएँ उत्पन्न करती है। व्यक्ति की भावात्मक दशा अस्थिर हो जाती है तथा असंतुलन बढ़ने के कारण व्यवहार अस्थिर तथा असंयत हो जाता है। असामान्यता प्रकट

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

होती है तथा असामाजिकता विकसित होने लगती है। मानसिक तनाव बढ़ते हैं तथा व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य विकृत होने लगता है।

इस तरह की स्थिति में यह आवश्यक है कि भग्नाशा के कारणों की खोज की जाए तथा उन्हें दूर करके व्यक्ति को मानसिक रूप से स्वस्थ बनाने का भरपूर प्रयास किया जाए।

13.14 तनाव

तनाव व्यक्ति की शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक दशा होती है। यह उसमें उत्तेजना तथा असंतुलन उत्पन्न कर देता है तथा उसे परिस्थिति का सामना करने के लिए क्रियाशील बनाता है। जैसे– जब व्यक्ति को भूख लगती है, तब उसमें तनाव उत्पन्न हो जाता है। उसकी भूख जितनी अधिक होती जाती है उतनी ही अधिक उसमें तनाव होता जाता है। यह तनाव उसे भोजन की खोज करने के लिए क्रियाशील बनाती है। जब उसे भोजन मिल जाता है तथा अपनी भूख को शान्त कर लेता है, तब उसकी असन्तुलित दशा में सन्तुलन आ जाता है तथा उसमें उत्पन्न होने वाला तनाव समाप्त हो जाता है। भोजन की आवश्यकता के अलावा, तनाव के और भी अनेक कारण हो सकते हैं, जैसे– इच्छा, लक्ष्य, अपमान, शारीरिक दोष इत्यादि।

तनाव की निम्नलिखित परिभाषाएँ दी जा सकती हैं–

1. गेट्स व अन्य के अनुसार–

तनाव असंतुलन की दशा है, जो प्राणी को अपनी उत्तेजित दशा का अंत करने के लिए कोई कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं।

2. ड्रेवर के अनुसार–

संतुलन के नष्ट होने की सामान्य भावना और परिस्थिति के किसी अत्यधिक संकटपूर्ण कारक का सामना करने के लिए व्यवहार में परिवर्तन करने की तत्परता।

13.15 अन्तर्द्वन्द्व

व्यक्ति की समायोजन क्रिया को प्रभावित करने वाला कुण्ठा के अतिरिक्त दूसरा कारण अन्तर्द्वन्द्व भी है। मानव जीवन में आरम्भ से ही अन्तर्द्वन्द्व की परिस्थितियाँ जन्म लेती रहती हैं। एक शिशु भी अन्तर्द्वन्द्व से अछूता नहीं रहता है, जब वह यह अनुभव करता है कि माँ उसे खेलने देगी या नहीं, दूध पिलाएगी या नहीं, खिलौना खेलने को देगी या नहीं अथवा उससे प्रेम करेगी या नहीं। जब पिता बालक को बाहर खेलने से मना करते हैं, तो बालक यह अनुभव करता है कि वह बाहर खेलने जाए या नहीं। क्या करूँ और क्या न करूँ बस यही स्थिति अन्तर्द्वन्द्व है।

कुछ विद्वानों ने अन्तर्द्वन्द्व को निम्न प्रकार परिभाषित किया है–

1. लेजारस के अनुसार–

अन्तर्द्वन्द्व उस समय उत्पन्न होता है, जब एक व्यक्ति को दो असंगत अथवा पारस्परिक रूप से विरोधी आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रायः एक ही समय पर पूरा करना होता है, अथवा जब विवश होकर एक आवश्यकता की पूर्ति करने पर दूसरी आवश्यकता की पूर्ति कर पाना असंभव ही हो जता है।

2. वोरिंग तथा अन्य के अनुसार–

अन्तर्द्वन्द्व व्यक्ति की वह अवस्था है जिसमें विरोधी तथ्य, समान शक्तियाँ, प्रेरणाएँ एक ही समय में कार्यरत होती हैं।

इस प्रकार यह निष्कर्ष निकलता है कि अन्तर्द्वन्द्व एक गम्भीर दुविधा की स्थिति है, क्योंकि अन्तर्द्वन्द्व दो परस्पर विरोधी आवश्यकताओं के प्रति कार्य पद्धति की संक्रिया है।

13.15.1 अन्तर्द्वन्द्व की अवस्थाएँ

मनोवैज्ञानिक कर्ट लेविन के अनुसार, चेतन स्तर पर अन्तर्द्वन्द्व की निम्नलिखित अवस्थाएँ होती हैं–

1. उपागम–उपागम अन्तर्द्वन्द्व
2. परिहार–परिहार अन्तर्द्वन्द्व
3. उपागम–परिहार अन्तर्द्वन्द्व
4. द्विमुखीय उपागम–परिहार अन्तर्द्वन्द्व

1. उपागम–उपागम अन्तर्द्वन्द्व

इस प्रकार के अन्तर्द्वन्द्व में व्यक्ति के मन में यह दुविधा रहती है कि वह दो समान लक्ष्यों में से किसे स्वीकार करे। किसी नवयुवती के समक्ष यदि दो ऐसे प्रस्ताव हैं कि विवाह के लिए दोनों एकदम आकर्षक हैं तब वह युवती इस मानसिक उलझन या अन्तर्द्वन्द्व में फंस जाती है कि वह किसे स्वीकार करे तथा किसे अस्वीकार करे। जैसे– एक प्रस्ताव में स्वस्थ, सुन्दर व आकर्षक युवक है, परन्तु सामान्य परिवार से है तथा दूसरे प्रस्ताव में सरकारी अधिकारी है, परन्तु साधारण सा युवक है। ऐसी स्थिति में उसके सामने यह द्वन्द्व उत्पन्न हो जाता है कि वह किसे स्वीकार करे तथा किसे अस्वीकार करे।

2. परिहार–परिहार अन्तर्द्वन्द्व

इस प्रकार के अन्तर्द्वन्द्व में व्यक्ति के मन में यह दुविधा होती है कि दो समान संकटों में से किसका चयन करे। व्यावहारिक जीवन में ऐसी संकट की परिस्थितियाँ आती हैं। जैसे– एक बीमार बेटे से उसकी माँ कड़वी दवा लेने या फिर उसके स्थान पर इंजेक्शन लगवाने के लिए पूछती है तब बेटा स्वाभाविक रूप से दोनों कष्टकारक परिस्थितियों में से किसी को भी स्वीकार करने को तैयार नहीं होना चाहता, परन्तु संकट निवारण के लिए इस परिस्थिति से बचने का कोई हल भी नहीं है। पारिवारिक मामलों में भी कभी–कभी इसी प्रकार की अन्तर्द्वन्द्व की अवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं, जब माँ (सास) तथा पत्नी (बहू) में टकराहट के चलते किसका पक्ष लिया जाए, क्योंकि माँ का पक्ष लेने पर पत्नी का प्रकोप तथा पत्नी का पक्ष लेने पर माँ के दिल को ठेस पहुँचने की परिस्थिति उत्पन्न होती है। दोनों ही लक्ष्यों के प्रति परिहार–परिहार की स्थिति बनती है।

3. उपागम–परिहार अन्तर्द्वन्द्व

यह अन्तर्द्वन्द्व उस समय उत्पन्न होता है, जब किसी व्यक्ति के सामने दो विरोधी लक्ष्य एक साथ सम्मिलित होकर व्यवहार में अन्तर्द्वन्द्वात्मक अवस्था उत्पन्न कर देते हैं। इस अन्तर्द्वन्द्व में व्यक्ति उपागम की ओर आकर्षित होकर बढ़ना चाहता है, परन्तु उसमें उसे भयप्रद परिस्थिति का प्रत्यक्षीकरण होता है। जैसे– एक मधुमेह के रोगी के सामने स्वादिष्ट मिठाई का होना तथा साथ ही उसके सेवन से रोग का बढ़ना इस प्रकार के अन्तर्द्वन्द्व का उदाहरण है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

4. द्विस्तरीय उपागम-परिहार अन्तर्द्वन्द्व

इस प्रकार के अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति में व्यक्ति ऐसी दो सुविधाओं में फंस जाता है कि उसे किसी भी प्रकार का निर्णय लेने में सन्तुष्टि के साथ-साथ निश्चित रूप से असन्तुष्टि भी मिलती है। कोई विद्यार्थी जब खेल में भी दक्षता हासिल करना चाहे और साथ ही साथ उच्च श्रेणी से अपनी परीक्षा भी पास करना चाहे तब उसके सम्मुख द्विस्तरीय प्रकार का उपागम-परिहार अन्तर्द्वन्द्व रहता है। खेल में दक्ष होने पर महाविद्यालय में लोकप्रियता, परन्तु खेल में अधिक समय देने पर परीक्षा में उच्च श्रेणी न आने का भय। दूसरी ओर शैक्षिक उपलब्धि से माता-पिता का अनुमोदन, परन्तु अध्ययन में रत रहने पर मित्रों से दूरी।

उपर्युक्त विभिन्न प्रकार के अन्तर्द्वन्द्वों को साधारण युवक तथा युवतियाँ एवं विद्यार्थी अनुभव के अभाव में तथा शीघ्र निर्णय न ले पाने की स्थिति में अन्तर्द्वन्द्व में फंसकर मनो-शारीरिक बीमारियों के शिकार हो जाते हैं तथा जीवन का सुव्यवस्थित मार्ग तय नहीं कर पाते हैं। अतः भविष्य अंधकारमय हो जाता है। ऐसी स्थिति में मनोवैज्ञानिक तथा मनोपचारी का निर्देशन अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अन्तर्द्वन्द्वों का स्वरूप अचेतन स्तर पर भी होता है, जिसमें इदम् एवं अहम् के साथ इदम् एवं नैतिक मन देखा जाता है। सांसारिक तथा व्यावहारिक जीवन में इदम् एवं नैतिक मन की कठोर प्रवृत्तियाँ प्रायः कुसमायोजन की ओर उन्मुख रहती हैं।

13.16 कुसमायोजन के कारण

यह बात पूरी तरह सच है कि एक व्यक्ति उस समय तक या उतनी ही सीमा तक पूरी तरह समायोजित रहता है, जब तक कि उसकी मूलभूत आवश्यकताओं (शारीरिक तथा सामाजिक-मनोवैज्ञानिक) की उसकी अपनी दृष्टि से पूर्ति होती रहे अथवा उसे उनके पूरे होने की आशा बनी रहे। जैसे ही उसे यह आभास होने लगता है कि उसकी इन आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधा आ रही है, वह निराश होकर कुसमायोजन का शिकार बन जाता है। इस तरह व्यक्ति के अपने आप से तथा अपने वातावरण से कुसमायोजित होने सम्बन्धी कारणों के तार उसकी अपनी वैयक्तिकता तथा वातावरण सम्बन्धी प्रभावों से जुड़े रहते हैं। इस प्रकार के कारणों का संक्षिप्त वर्णन निम्न प्रकार है-

13.16.1 वैयक्तिक कारण

कुसमायोजन के कुछ प्रमुख वैयक्तिक कारण निम्नलिखित है-

1. वंशानुगत कारण

बालक के कुसमायोजन से ग्रस्त होने के पीछे कुछ ऐसे कारण भी हो सकते हैं जिनके लिए वंशानुक्रम सम्बन्धी कारक उत्तरदायी हों। वह वंशानुक्रम की विरासत के रूप में ऐसे दोषपूर्ण एवं विकारग्रस्त मानसिक तंत्र, शारीरिक ढाँचे, शारीरिक संरचना सम्बन्धी दोष, अक्षमताओं, कुरूपता तथा अपंगता को लेकर पैदा हो सकता है, जो आगे चलकर उसमें विभिन्न प्रकार की हीनता, निष्क्रियता, नैराश्य भावनाओं आदि को जन्म देकर उसकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में विविध प्रकार की बाधाओं को खड़ी करती रहें।

2. शारीरिक कारण

कुसमायोजन के बहुत से मामलों के पीछे शारीरिक कारण पाये जाते हैं। शारीरिक दुर्बलता, शारीरिक अपंगता या अक्षमता, शारीरिक अस्वस्थता, असाध्य बीमारियों से ग्रस्त और परेशान व्यक्ति कुसमायोजन का शिकार हो सकता है। कारण स्पष्ट है कि व्यक्ति को शारीरिक दृष्टि से चैन नहीं मिलता तो ऐसी परेशानी और विषम परिस्थिति उसे अपने आप से तथा अपने वातावरण से ठीक तरह समायोजित होने में एक बड़ी बाधा पैदा कर देती है। उसमे हीनता और निराशा के भाव घर करने लगते हैं फिर उसके पैर धीरे-धीरे कुसमायोजन की ओर बढ़ने लगते हैं।

3. व्यक्ति की अपनी प्रकृति और स्वभाव से सम्बन्धित कारण

कुछ व्यक्तियों की अपनी प्रकृति और स्वभाव ही ऐसा होता है कि जिसकी वजह से वे अपने आप से तथा अपने वातावरण के साथ समायोजित होने में प्रायः असफल ही रहते हैं। इस प्रकार के कुछ कारण निम्न हो सकते हैं-

1. जीवन के ऐसे लक्ष्य, उद्देश्य एवं आदर्श जो वास्तविकता से काफी परे हों।
2. सामाजिक परिपक्वता एवं समायोजन का अभाव, संवेगात्मक परिपक्वता का अभाव तथा संवेगों पर उचित नियंत्रण रखने सम्बन्धी अक्षमता।
3. आकांक्षा तथा महत्त्वाकांक्षा का उचित स्तर बनाए रखने सम्बन्धी असफलता।
4. विपरीत इच्छाओं का शिकार होना तथा विविध प्रकार के अन्तर्द्वन्द्वों से ग्रस्त रहना।
5. निराशाजन्य भावों और कुण्ठाओं का होना।

13.16.2 वातावरण जनित कारण

सामान्यतया कुसमायोजन सम्बन्धी समस्याओं के पीछे प्रायः वातावरण सम्बन्धी कारकों का ही अधिक सक्रिय योगदान पाया जाता है। शायद इसके पीछे यही बात ज्यादा काम करती हुई पाई जाती है कि कुसमायोजन की समस्या मूलरूप से व्यवहार जनित समस्या है और व्यवहार को बनाने एवं बिगाड़ने में वातावरण की शक्तियों की ही अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। अतः वातावरण की शक्तियों को ही कुसमायोजन को जन्म देने तथा पल्लवित एवं पोषित करने का एक बड़ा कारण माना जाना चाहिए। फिर वातावरण की शक्तियाँ व्यक्ति के विकास और समायोजन को प्रभावित करने के लिए उपस्थित भी काफी लम्बे समय तक रहती हैं। जब से बालक की जीवनलीला अपनी माता के गर्भ में शुरू होती है, तब से लेकर मृत्युपर्यन्त वह वातावरण की शक्तियों का ही शिकार रहता है। ऐसे में यदि उसके हिस्से दोषपूर्ण एवं प्रतिकूल वातावरण आ जाए, तो उसे कुसमायोजन का शिकार होते देर नहीं लगती। कुसमायोजन के लिए उत्तरदायी इस तरह की प्रतिकूल वातावरणजन्य परिस्थितियाँ निम्नलिखित हो सकती है-

1. माता-पिता, अभिभावकों, परिजनों, समाज के अन्य सम्मानित सदस्यों तथा अपने से बड़े बालकों का बालक के प्रति अनुचित व्यवहार।
2. असंतोषजनक तथा दोषपूर्ण पारिवारिक वातावरण जिसके पीछे

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

माता-पिता के आपसी झगड़े, परिवार के व्यक्तियों का असामाजिक एवं अपराधी चरित्र, माता-पिता के बीच सम्बन्ध विच्छेद, सौतेली माता या पिता से मिलने वाला अनुचित व्यवहार आदि विविध कारकों का योगदान हो सकता है।

3. पास-पड़ोस, मोहल्ले, समुदाय तथा समाज में व्याप्त ऐसी परिस्थितियाँ तथा दोषपूर्ण वातावरण जिनके परिणामस्वरूप बालकों में अनुचित एवं असामाजिक आदतों को पनपने का अवसर मिले या उनकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में ऐसी बाधाएँ खड़ी हो जाएँ कि उनके पैर कुसमायोजन की ओर बढ़ने लगे।
4. विद्यालय में मिलने वाला दोषपूर्ण वातावरण एवं विषम परिस्थितियाँ जिनमें अध्यापकों का बालकों के साथ अनुचित व्यवहार, साथी विद्यार्थियों से अलगाव, दोषपूर्ण पाठ्यक्रम तथा पढ़ने-पढ़ाने की अरूचिपूर्ण एवं त्रुटिजन्य विधियाँ, पाठान्तर क्रियाओं का अभाव, नियमों के परिपालन में बहुत अधिक कठोरता एवं तानाशाही रवैया आदि बातें शामिल हो सकती है।

13.17 कुसमायोजन का निराकरण

कुसमायोजन के निराकरण हेतु निम्नलिखित साधन अपनाये जा सकते हैं-

1. मूल प्रवृत्तियों की सन्तुष्टि

यदि बालक-बालिकाओं की मूल-प्रवृत्तियाँ सन्तुष्ट होगी, तो वे कुसमायोजित नहीं होंगे। मास्लो ने मूल-प्रवृत्तियों का क्रम निम्न प्रकार से निर्धारित किया है-

1. दैहिक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि
2. दुःख और संकट से बचने की प्रवृत्ति
3. स्नेह, आत्म-सम्मान आदि की इच्छा

यदि किसी व्यक्ति को संकट की स्थिति का सामना करना पड़ता है, तो वह ऐसा तभी कर सकेगा, जब उसकी शारीरिक आवश्यकताएँ सन्तुष्ट होंगी। यदि कोई बालक निर्धनता के कारण भूखा है और अध्यापक उसे दण्ड देता है, तो वह दण्ड उसके लिये असहनीय हो जाएगा। ऐसे ही कोई किशोर अपने आत्म-सम्मान को तभी ठेस लगने देगा, जब उसे अपने परिवार तथा मित्रों आदि से स्नेह की आशा होगी।

2. वास्तविकता को ध्यान में रखना

माता-पिता तथा अध्यापक को वास्तविकता को ध्यान में रखकर ही बालक-बालिकाओं के प्रति अपना व्यवहार निर्धारित करना चाहिए। सीता तीन-चार वर्ष की गीता को जल लाने के लिये कहती है। गीता काँच के गिलास में जल भर कर लाती है और गिलास गिरा देती है। सीता द्वारा गीता को इसके लिए दण्ड दिया जाता है। इस प्रकार सीता वास्तविकता को ध्यान में नहीं रखती। इससे गीता कुण्ठाग्रस्त होगी, परन्तु यदि यही गिलास कोई दस वर्ष की बालिका गिराती है, तो उसे दण्ड दिया जा सकता है।

3. स्नेह और सुरक्षा देना

परिवार में स्नेह और सुरक्षा प्राप्त होने पर बालक-बालिकाएँ परिस्थितियों का सामना भली प्रकार कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में जॉन, जरसील्ड और मायास का अध्ययन बड़ा रोचक और महत्त्वपूर्ण है। द्वितीय महायुद्ध का समय था। बम गिराये जा रहे थे। मकान धूँ-धूँ कर जल रहे थे और उनकी दीवारें और छतें गिर रही थी। लोग भाग रहे थे, चिल्ला रहे थे, शव इधर-उधर बिखरे पड़े थे। ऐसी स्थिति में बालक-बालिकाओं का डरना स्वभाविक ही था। अध्ययन में परिलक्षित किया गया कि जिन बालकों को माता-पिता का स्नेह तथा सुरक्षा प्राप्त थे, वे कम डरे।

जिन विद्यार्थियों को अपने परिवार में स्नेह और सुरक्षा प्राप्त नहीं होती, उन्हें विद्यालय में स्नेह और सुरक्षा प्राप्त होनी चाहिए। सबसे पहले तो अध्ययन में सुरक्षा की भावना रहनी चाहिए। यदि कोई बड़ा नेता या निरीक्षक विद्यालय में आ रहा है, तो अध्यापक को तनाव में आने की कोई आवश्यकता नहीं। यदि अध्यापक ने सुरक्षा का अनुभव न किया, तो बालकों पर भी उसका बुरा प्रभाव पड़ेगा।

4. तनावपूर्ण स्थिति से बचाना

माता-पिता तथा अध्यापकों को बालक-बालिकाओं को तनावपूर्ण स्थिति से बचाने का प्रयास करना चाहिए। जब प्रतिस्पर्द्धात्मक प्रतियोगिताओं को आवश्यकता से अधिक महत्त्व दिया जाता है, तो उसका परिणाम दुःखद होता है। जो विद्यार्थी प्रतियोगिता में असफल रहते हैं, वे तनाव की स्थिति में रहते हैं। अध्यापक को ऐसा प्रशिक्षण देना चाहिए कि छात्र-छात्राएँ सफलता को भी धैर्य से सहन कर सकें। व्यक्ति को जीवन में हर समय तो सफलता मिलती नहीं, अतः उसे विपरीत परिस्थिति या असफलता में भी समायोजन करना आना चाहिए।

कई बार दण्ड देने से भी विद्यार्थियों में तनाव उत्पन्न हो जाता है। इसलिए दण्ड का प्रयोग कम से कम किया जाए। कई बार विद्यार्थियों को थोड़ा-सा डाँट देना भी यथेष्ट होगा।

5. अभिव्यक्ति के अवसर देना

बालक-बालिकाओं को अभिव्यक्ति के अधिक से अधिक अवसर दिये जाने चाहिए। अभिव्यक्ति से तनाव और कुण्ठा में कमी आ जाती है। आक्रामकता की भावना की अभिव्यक्ति खेलकूद द्वारा तथा मौनवृत्ति की अभिव्यक्ति संगीत, नृत्य तथा अन्य कलाओं के माध्यम से हो सकती है। जितनी अधिक मात्रा में संवेगों की अभिव्यक्ति होगी, उतनी अधिक मात्रा में कुण्ठा कम होगी। कई संवेगों की अभिव्यक्ति उदात्तीकरण के द्वारा हो सकती है।

13.17.1 मानसिक रूप से अस्वस्थ बालकों हेतु उपाय

सामान्य मानसिक स्वास्थ्य वाला तथा मानसिक असन्तुलन से ग्रस्त व्यक्ति दोनों ही आत्म-सुरक्षा अभियान्त्रिकियों का सहारा लेते हैं, किन्तु मानसिक रूप से अस्वस्थ (असन्तुलित व्यक्तित्व) व्यक्ति इन अभियान्त्रिकियों का सीमा से कहीं अधिक प्रयोग करते हैं। विद्यालय तथा शिक्षक इस दिशा में बहुत कुछ कर सकते हैं। इस प्रकार के छात्रों को भग्नाशा का शिकार न होना पड़े, इस दिशा में अध्यापक तथा विद्यालय निम्नलिखित कार्य कर सकते हैं-

1. बालकों के शारीरिक स्वास्थ्य की ओर ध्यान दिया जाए। इस हेतु विद्यालय में उचित मात्रा में खेल-कूद की सुविधा हो।
2. समुचित संवेगात्मक विकास हो, इस हेतु प्रयास किये जाए। अध्यापक स्वयं संवेगात्मक रूप से सन्तुलित हों तथा वे छात्रों के संवेगों पर

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

समुचित ध्यान दें।

3. अध्यापक का व्यवहार स्नेहपूर्ण तथा सहयोगात्मक हो। शिक्षक किसी भी परिस्थिति में द्वेष-भावना से पक्षपात न करें।
4. अध्यापकों के व्यवहारों में एकरूपता होनी चाहिए। उसके काम, व्यवहार तथा कथनी में अन्तर नहीं होना चाहिए।
5. छात्रों के आकांक्षा-भार को समुचित स्तर पर रखा जाए। इस हेतु उनकी क्षमता, रूचि तथा अभियोग्यताओं को ध्यान में रखा जाए।
6. हानिकारक प्रतिस्पर्धाओं पर नियन्त्रण लगाया जाए।
7. प्रयास किये जाए कि छात्र आत्म-सुरक्षा अभियान्त्रिकियों का कम से कम प्रयोग करें।
8. उनका पाठ्यक्रम उनके अनुकूल हो, शिक्षण विधियाँ अनुकूल हो तथा उन्हें शिक्षण अधिगम के लिए पर्याप्त सुविधाएँ दी जाए।
9. छात्रों को पर्याप्त स्वतन्त्रता दी जाए तथा स्वानुशासन की व्यवस्था की जाए।
10. शैक्षिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत तथा यौन-निर्देशन की समुचित व्यवस्था हो।
11. विद्यालय बालकों के मानसिक स्वास्थ्य को ठीक रखने की दिशा में उक्त कार्यों के अलावा और भी अनेक कार्य कर सकता है। इनके लिए सम्पूर्ण विद्यालय को एकजुट होकर कार्य करना होगा।
12. नैतिक शिक्षा की व्यवस्था की जाए।
13. अध्यापकों का मानसिक स्वास्थ्य सन्तुलित हो।
14. पाठ्यक्रम आधुनिकतम रखा जाए।

****

अगर आप B.Ed, D.Ed, BSTC या शिक्षण अध्यापन के क्षेत्र में पढ़ाई कर रहे हैं तो आपसे निवेदन है कि निम्नलिखित Whatsapp No. अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में जोड़ें। अगर आपका व्हाट्सएप ग्रुप नहीं बना हुआ है तो कृपया कम से कम 20 विद्यार्थी मिलकर व्हाट्सएप ग्रुप बना लें।

UPTET	-	95301 43210
MP Samvida	-	95302 43210
BTET	-	95302 43210
UTET	-	72209 29294
JTET	-	72209 29239
HTET	-	72209 29266
CGTET	-	72209 28969
HPTET	-	72209 28535

आपके क्लास के व्हाट्सएप ग्रुप में शिक्षा संबंधी सभी प्रतियोगी परीक्षा के पेपर्स, मॉडल पेपर्स एवं अन्य अध्ययन सामग्री भेजी जाएगी। आपका शुरू से मार्गदर्शन किया जाएगा, ताकि आप प्रतियोगी परीक्षा में अतिशीघ्र सफलता प्राप्त कर सकें।

www.praganya.org

अभ्यासार्थ प्रश्न

1. समायोजन की प्रक्रिया है–
   (1) गतिशील (2) स्थिर
   (3) स्थानापन्न (4) मानसिक

2. समायोजन से तात्पर्य स्वयं का विभिन्न परिस्थितियों में अनुकूलन करना है, ताकि ..... को सन्तुष्ट किया जा सके।
   (1) दूसरों (2) प्रेरकों
   (3) उद्देश्यों को (4) आवश्यकताओं

3. **अच्छा समायोजन वह है, जो यथार्थ पर आधारित तथा सन्तोष देने वाला होता है।** यह कथन है–
   (1) गेट्स का (2) स्मिथ का
   (3) कोलमैन का (4) स्किनर का

4. समायोजन के क्षेत्रों में सम्मिलित है–
   (1) गृह समायोजन (2) शैक्षिक समायोजन
   (3) स्वास्थ्य समायोजन (4) उपर्युक्त सभी

5. समायोजन को प्रभावित करने वाला/वाले तत्त्व है/हैं–
   (1) शारीरिक दोष (2) असफलता
   (3) दण्ड (4) उपर्युक्त सभी

6. समायोजन के प्रकार हैं–
   (1) रचनात्मक समायोजन
   (2) मानसिक मनोरचनाएँ
   (3) स्थानापन्न समायोजन
   (4) उपर्युक्त सभी

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

7. समायोजन भंग हो जाता है–
   (1) संघर्ष से (2) भग्नाशा से
   (3) मानसिक तनाव से (4) सभी से

8. समायोजन नहीं कर पाने का कारण है–
   (1) द्वन्द्व (2) तनाव
   (3) कुण्ठा (4) उपर्युक्त सभी

9. समायोजित व्यक्ति की विशेषता नहीं है–
   (1) सामाजिकता
   (2) उचित संतुलन
   (3) स्पष्ट लक्ष्य
   (4) कुण्ठा, द्वेष, बदले की भावना से ग्रस्त

1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.	9	
(1)	(4)	(2)	(4)	(4)	(4)	(4)	(4)	(4)	

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

10. समायोजित व्यक्ति की विशेषता है–
(1) स्वयं एवं वातावरण के मध्य उचित सन्तुलन
(2) स्पष्ट एवं निश्चित लक्ष्य
(3) सामाजिकता की भावना
(4) उक्त सभी

11. समायोजन का प्रत्यक्ष उपाय है–
(1) लक्ष्यों का प्रतिस्थापन (2) बाधाओं को दूर करना
(3) अन्य मार्ग खोजना (4) उपरोक्त सभी

12. समायोजन का अप्रत्यक्ष उपाय है–
(1) प्रक्षेपण (2) दिवास्वप्न
(3) दमन (4) उपरोक्त सभी

13. **अचेतन मन समायोजन का आधार है।** यह कहा है–
(1) फ्रायड ने (2) एडलर ने
(3) वुड ने (4) जुंग ने

14. बालक के समायोजन को प्रभावित करने वाला कारक है–
(1) शारीरिक अक्षमता (2) भग्नाशा
(3) मानसिक द्वन्द्व एवं तनाव (4) उपर्युक्त सभी

15. समायोजन करने वाले व्यक्ति का लक्षण है–
(1) सन्तुलन
(2) सन्तुष्टि एवं सुख
(3) समाज व अन्य व्यक्तियों का ध्यान
(4) उपरोक्त सभी

16. समायोजन हेतु अध्यापक का कर्त्तव्य है–
(1) मैत्रीपूर्ण व्यवहार
(2) व्यावसायिक शिक्षा
(3) नैतिक शिक्षा
(4) उपर्युक्त सभी

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

17. समायोजन हेतु आवश्यक है–
(1) अच्छी आदतों का विकास (2) पारिवारिक सहयोग
(3) सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार (4) उपरोक्त सभी

18. बच्चों में संवेगात्मक समायोजन प्रभावी होता है–
(1) व्यक्तित्व निर्माण में (2) कक्षा शिक्षण में
(3) अनुशासन में (4) इनमें से सभी

19. समायोजन दूषित होता है–
(1) कुण्ठा से (2) संघर्ष से
(3) उपर्युक्त दोनों (4) धन से

20. समायोजित व्यक्ति का गुण नहीं है–
(1) छिद्रान्वेषी प्रकृति का न होना
(2) सामाजिक रूप से समायोजित
(3) उचित महत्त्वाकांक्षा स्तर का न होना
(4) मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करना

21. समायोजन की विधि है–
(1) उदात्तीकरण (2) प्रक्षेपण
(3) प्रतिगमन (4) उपर्युक्त सभी

22. एक समायोजित व्यक्ति की विशेषता नहीं है–
(1) उत्तरदायित्व की स्वीकृति
(2) उचित संवेगों का प्रदर्शन
(3) वैयक्तिक उद्देश्यों का प्रदर्शन
(4) दूसरों के साथ सम्बन्ध बनाने की योग्यता

23. समायोजित बालक की विशेषता नहीं है–
(1) संवेगों का प्रदर्शन
(2) वैयक्तिक उद्देश्यों का प्रदर्शन
(3) उत्तरदायित्व की स्वीकृति
(4) दूसरों के साथ सम्बन्ध बनाने की योग्यता

24. व्यक्तित्व का कुसमायोजन प्रकट होता है–
(1) झगड़ालू प्रवृत्तियों में (2) पलायनवादी प्रवृत्तियों में
(3) आक्रमणकारी के रूप में (4) उपर्युक्त सभी में

25. कल्पना की अधिकता के कारण दिवास्वप्न देखने वालों को कहते हैं–
(1) समायोजित व्यक्ति
(2) असमायोजित व्यक्ति
(3) बुद्धिमान व्यक्ति
(4) उपर्युक्त सभी

26. विद्यालय में शिक्षक बालकों के समायोजन के लिए कौनसा कार्य नहीं करेगा?
(1) व्यक्तिगत शिक्षण की व्यवस्था करना।
(2) संवेगात्मक स्थिरता लाने का प्रयास करना।
(3) कठोर दण्ड देकर कार्य करवाना।
(4) सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना।

27. फैटनवाहिक ने कितने प्रतिशत शिक्षकों को असमायोजित पाया?
(1) 8.8% (2) 10%
(3) 20% (4) 23%

28. कुसमायोजित बालकों का लक्षण नहीं है–
(1) दिवा स्वप्न (2) प्रसन्न रहना
(3) मृत्यु भय (4) हीन भावना

10.	11.	12.	13.	14.	15.	16.	17.	18.	19.	20.	21.	22.	23.	24.	25.	26.	27.	28.			
(4)	(4)	(4)	(1)	(4)	(4)	(4)	(4)	(4)	(3)	(3)	(4)	(3)	(2)	(4)	(2)	(3)	(1)	(2)			

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

29. असमायोजन का मुख्य कारण है–
(1) सौहार्द्रपूर्ण वातावरण का अभाव
(2) विद्यालय न जाना
(3) माता–पिता की गरीबी
(4) उच्च शिक्षा की कमी

30. बालकों के कुसमायोजित होने के कारण हैं–
(1) आनुवंशिक कारण
(2) शारीरिक कारण
(3) स्वभावगत एवं संवेगात्मक कारण
(4) उपर्युक्त सभी

31. सौतेली माँ के बच्चों में असमायोजन का मुख्य कारण होता है–
(1) प्रेम युक्त मान्यता व अपनत्व का अभाव
(2) खण्डित व्यक्तित्व
(3) मन्द बुद्धि
(4) निम्न–निष्पत्ति

32. जब बालक अपनी असफलताओं के दोष को किसी ओर के ऊपर लादने की कोशिश करके अपने तनाव को कम करने का प्रयास करता है, वह विधि कहलाती है–
(1) रचनात्मक समायोजन (2) मानसिक मनोरचनाएँ
(3) स्थानापन्न समायोजन (4) उपर्युक्त सभी

33. निम्न में से कुसमायोजित बालक है–
(1) परिवेश के अनुकूल स्वयं को स्थापित करने में असमर्थ होता है।
(2) असामाजिक, स्वार्थी व सर्वथा दुःखी होता है।
(3) साधारण सी बाधा उत्पन्न होने पर मानसिक सन्तुलन खो देता है।
(4) उपर्युक्त सभी

34. जिसमें चिन्ता का सुपरिचित रूप दिखाई देता है–
(1) फोबिया (2) स्वप्न
(3) कल्पनाएँ (4) अस्त–व्यस्त विचार

35. ऐसी युक्तियाँ अथवा व्यवहार जिनका प्रयोग व्यक्ति अवचेतन रूप से अपने आपको अपनी चिन्ता और कमियों से मुक्ति दिलाकर आत्म या अहं की रक्षा हेतु करता है, उन्हें कहते हैं–
(1) दुश्चिन्ता (2) समायोजन
(3) रक्षात्मक युक्तियाँ (4) उपाय

36. **अप्रत्यक्ष विधियों का प्रयोग केवल दुःख पूर्ण अनुभूतियों या तनाव को कम करने के लिए किया जाता है।** यह कथन है–
(1) फ्रायड का (2) क्रो व क्रो का
(3) गेट्स व अन्य का (4) किसी का नहीं

37. **Maladjustment** का शाब्दिक अर्थ होता है–
(1) समायोजन (2) कुसमायोजन
(3) सन्तुलित (4) असन्तुलित

38. **Maladjustment** शब्द का निर्माण अंग्रेजी के निम्न दो शब्दों के मिलने से हुआ है–
(1) Mal+djust (2) Mal+adjustment
(3) Mal+adjusted (4) Malad+justment

39. कुसमायोजित बालक–
(1) तनावयुक्त होता है। (2) पूर्ण स्वस्थ होता है।
(3) पढ़ने में तीव्र होता है। (4) प्रसन्नचित होता है।

40. शिक्षक के कुसमायोजन को प्रकट करने वाला उदाहरण है–
(1) छात्रों के साथ क्रूर व्यवहार
(2) आत्मविश्वास में कमी
(3) शिक्षक मित्रों में दोष निकालना
(4) उपर्युक्त सभी

41. व्यक्ति के मानसिक तनाव को कम करने की प्रत्यक्ष विधि है–
(1) तादात्मय स्थापित करना (2) औचित्य स्थापन
(3) बाधा दूर करना (4) आश्रित होना

42. कुसमायोजित में दो प्रकार के प्रत्युत्तर निहित रहते हैं–
(1) शारीरिक एवं मानसिक
(2) मानसिक एवं व्यावहारिक
(3) व्यवहारिक एवं शारीरिक
(4) व्यावहारिक एवं सामाजिक

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

43. **दमन वह प्रतिक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपनी चेतना से उन विचारों तथा आवेगों को हटा देता है, जो चिन्ता को उत्तेजित करते है।** यह कथन है–
(1) बरनार्ड का (2) फ्रायड का
(3) विलियम जोन्स का (4) मैक्डूगल का

44. मानसिक तनाव को कम करने का उपाय है–
(1) औचित्य स्थापन (2) प्रक्षेपण
(3) तादात्मीकरण (4) उपरोक्त सभी

45. क्रोध पर नियन्त्रण पाने हेतु बालकों को अभ्यास कराना चाहिए–
(1) आत्मचेतना का (2) आत्म प्रेरण का
(3) आत्म–नियन्त्रण का (4) आत्मानुभूति का

46. तनाव को कम करने का अप्रत्यक्ष उपाय कौनसा है?
(1) तादात्मीकरण (2) लक्ष्यों का प्रतिस्थापन
(3) बाधा का निवारण (4) निर्णय

29.	30.	31.	32.	33.	34.	35.	36.	37.	38.	39.	40.	41.	42.	43.	44.	45.	46.				
(1)	(4)	(1)	(3)	(4)	(4)	(3)	(3)	(2)	(2)	(1)	(4)	(3)	(2)	(2)	(4)	(3)	(1)				

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

47. **संघर्ष का अर्थ है– विरोध और विपरीत इच्छाओं में तनाव के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली कष्टदायक संवेगात्मक दशा।** यह किसका कथन है?
(1) डगलस व हॉलैण्ड का (2) कोलेसनिक का
(3) क्रो व क्रो का (4) गेट्स व अन्य का

48. किशोर के समायोजन की प्रक्रिया में शिक्षक का योगदान है–
(1) कमजोरियों का ज्ञान न कराना
(2) मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति न करना
(3) आकांक्षा का उचित स्तर तय करना
(4) समस्या का समाधन न करना

49. किस सिद्धान्त के अनुसार हमें दुःखद और अपमानजनक घटनाओं को याद नहीं रखना चाहिए?
(1) बाधा का सिद्धान्त (2) दमन का सिद्धान्त
(3) अनभ्यास का सिद्धान्त (4) उक्त कोई नहीं

50. भग्नाशा की स्थिति में बालक निम्न में से कौनसा व्यवहार प्रदर्शित नहीं करता?
(1) गृहत्याग करना
(2) आक्रमणकारी व्यवहार
(3) बीमार होने की कहना
(4) आत्मसमर्पण करना

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

51. परीक्षा में असफल होने का कारण बालक ने कठिन प्रश्न-पत्र एवं परीक्षक द्वारा कॉपी ठीक से नहीं जाँचना बताया। यह कुसमायोजन की कौनसी रक्षायुक्ति है?
(1) पलायन (2) प्रत्यावर्तन
(3) प्रक्षेपण (4) क्षतिपूर्ति

52. कुसमायोजित व्यक्तित्व के लक्षण हैं–
(1) अनिश्चित मन एवं अस्थिर बुद्धि
(2) घृणा, द्वेष एवं बदले की भावना
(3) उद्देश्य अस्पष्ट एवं अनिश्चित
(4) उक्त सभी

53. भग्नाशा (कुण्ठा) उत्पन्न होने का व्यक्तिगत कारण नहीं है–
(1) अपंगता (2) रीति-रिवाज
(3) बहरापन (4) भय

54. **किसी बात को भली-भाँति याद रखने के लिए अच्छी तरह सीख लेना आधी से अधिक लड़ाई जीत लेना है।** यह कथन किसका है?
(1) गिलफोर्ड का (2) रायबर्न का
(3) वुडवर्थ का (4) जेम्स का

55. कार्ल रोजर्स के अनुसार कुसमायोजन का आधार वैषम्य है–
(1) इदम् तथा पराहम् के मध्य
(2) वास्तविक स्व तथा आदर्श स्व के मध्य
(3) स्व तथा वातावरण के मध्य
(4) अचेतन तथा चेतन के मध्य

56. निम्नलिखित में से समायोजन की विधि है–
(1) प्रतिगमन (2) दिवास्वप्न
(3) औचित्य स्थापन (4) उपर्युक्त सभी

57. **समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच सन्तुलित सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।** यह परिभाषा दी है–
(1) बोरिंग व लैंगफेल्ड ने (2) गेट्स व अन्य ने
(3) ब्लेयर ने (4) सिम्पसन ने

58. मोहन की घर खरीदने की इच्छा पूरी न होने पर उसने घर खरीदने की इच्छा का त्याग कर दिया। उसने समायोजन की किस युक्ति का प्रयोग किया?
(1) दमन (2) औचित्य स्थापन
(3) आत्मीकरण (4) दिवास्वप्न

59. निम्न में से समायोजन की युक्ति नहीं है–
(1) तादात्मीकरण (2) औचित्य स्थापन
(3) दमन (4) उपदेश वाचन

60. निषेधात्मक समायोजन का अर्थ है–
(1) अनुक्रिया न करके सीखना (2) अनुक्रिया द्वारा सीखना
(3) सीख कर अनुक्रिया करना (4) उपरोक्त में से कोई नहीं

61. जब व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती और उसमें बाधा उत्पन्न होती है, तो इस परिस्थिति को कहा जाता है–
(1) भग्नाशा
(2) अभिप्रेरणा
(3) मानसिक संघर्ष
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

62. जिसके द्वारा इच्छाओं, असहनीय स्मृतियों आदि को चेतना से अलग कर दिया जाता है, कहलाता है–
(1) उदात्तीकरण (2) विस्थापन
(3) दमन (4) आत्मीकरण

63. व्यक्ति के अन्तर्द्वन्द्व के समाधान में प्रमुख स्थान है–
(1) उदात्तीकरण का (2) आत्मीकरण का
(3) दमन का (4) विस्थापन का

47.	48.	49.	50.	51.	52.	53.	54.	55.	56.	57.	58.	59.	60.	61.	62.	63.					
(1)	(3)	(2)	(4)	(3)	(4)	(2)	(1)	(2)	(4)	(2)	(1)	(4)	(1)	(1)	(3)	(1)					

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

64. **दबाव एक प्रकार की मनोवैज्ञानिक प्रतिबल अवस्था है जिसमें व्यक्ति यह अनुभव करता है कि उसे एक विशिष्ट भावना के अनुसार रहना या व्यवहार करना है।** दबाव की यह परिभाषा किसने प्रस्तुत की है?
(1) सियर्स ने (2) मौरिस ने
(3) लेविन ने (4) कौलमैन ने

65. भग्नाशा का सबसे बड़ा आन्तरिक कारण माना जाता है–
(1) नैतिक आदर्श
(2) मानसिक संघर्ष
(3) परिस्थिति
(4) असंगत आवश्यकताएँ

66. पढ़ाई में कमजोर छात्र खेलकूद में परिश्रम कर अपनी कमी को पूरा कर लेता है। यह समायोजन उपाय है–
(1) तादात्मीकरण (2) आक्रामकता
(3) क्षतिपूर्ति (4) पलायन

67. **भय और आशंका की सामान्यीकृत अनुभूति ही दुश्चिन्ता है।** यह परिभाषा प्रस्तुत की है–
(1) कौलमैन ने (2) लेविन ने
(3) सियर्स ने (4) मौरिस ने

68. चिन्ता–तनाव–दबाव–कुण्ठा–भग्नाशा है–
(1) युक्तियाँ (2) मानसिक रोग
(3) दबाव (4) तनाव

69. जब व्यक्ति समय की माँग के अनुरूप कार्य नहीं कर पाता है, तो शिकार हो जाता है–
(1) तनाव का (2) दुश्चिन्ता का
(3) कुण्ठा का (4) दबाव का

70. जब व्यक्ति के अचेतन मन में दमित इच्छा चेतन में आकर उसे परेशान करें, तो वह शिकार हो जाता है–
(1) कुण्ठा का (2) तनाव का
(3) दुश्चिन्ता का (4) दबाव का

71. जब व्यक्ति को बार–बार प्रयास करने पर भी सफलता नहीं मिलती, तो वह शिकार हो जाता है–
(1) दबाव का (2) तनाव का
(3) दुश्चिन्ता का (4) कुण्ठा का

72. एक व्यक्ति अपना परिचय किसी बहुत बड़े नेता से स्थापित करके देता है। यह समायोजन युक्ति है–
(1) प्रक्षेपण (2) तादात्मीकरण
(3) कुण्ठा (4) प्रशंसा

73. **भग्नाशा उस आवश्यकता की पूर्ति या लक्ष्य की प्राप्ति में अवरूद्ध होने या निष्फल होने की भावना है, जिसे व्यक्ति महत्त्वपूर्ण समझता है।** यह परिभाषा है–
(1) विंगो की (2) कोलेसनिक की
(3) मोर्स की (4) गुड की

74. मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया–
(1) एडलर ने (2) ट्रेवर्स ने
(3) क्लिफोर्ड बीयर्स ने (4) उपर्युक्त सभी

75. मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान शब्द का प्रयोग किस सन् में किया गया?
(1) 1904 (2) 1911
(3) 1908 (4) 1913

76. **समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीव अपनी आवश्यकता और इन आवश्यकता और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन स्थापित करता है।** यह परिभाषा प्रस्तुत की है–
(1) शेफर ने (2) गेट्स ने
(3) आइजेंक ने (4) बेरिंग ने

77. आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने वाली प्रक्रिया का नाम है–
(1) कुसमायोजन (2) बुद्धि
(3) समायोजन (4) अधिगम

78. कुसमायोजित व्यक्ति को प्रभावित करने वाला कारक है–
(1) वातावरणीय कारक (2) शारीरिक कारक
(3) वंशानुगत कारक (4) उपर्युक्त सभी

79. कुसमायोजित व्यक्ति का लक्षण नहीं है–
(1) हीनता की भावना से ग्रसित (2) आत्म नियंत्रण का अभाव
(3) क्रोध द्वेष व बदले की भावना (4) वातावरण के प्रति संतोष

80. **कुण्ठा से अभिप्राय किसी भी इच्छा या आवश्यकता की पूर्ति में आने वाली बाधा से उत्पन्न संवेगात्मक तनाव से है।** कुण्ठा की यह परिभाषा किसने प्रस्तुत की है?
(1) युंग ने (2) गुड ने
(3) फ्रायड ने (4) शेफर ने

81. व्यक्ति द्वारा किये गए प्रयासों पर जब विफलता का आधिपत्य रहता है, ऐसी स्थिति में वह शिकार हो जाता है–
(1) भग्नाशा या कुण्ठा का (2) दुश्चिन्ता का
(3) दबाव का (4) तनाव का

www.praganya.org

64.	65.	66.	67.	68.	69.	70.	71.	72.	73.	74.	75.	76.	77.	78.	79.	80.	81.				
(2)	(2)	(3)	(1)	(2)	(1)	(3)	(4)	(2)	(2)	(3)	(3)	(1)	(3)	(4)	(4)	(2)	(1)				

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

82. **कुंठा को किसी भी अभिप्रेरक की सन्तुष्टि में आने वाली बाधा के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली स्थिति के रूप में जाना जा सकता है।** यह परिभाषा प्रस्तुत की–
(1) युंग ने (2) कैरोल ने
(3) गुड ने (4) शेफर ने

83. कुण्ठा उत्पन्न होने के कारण हैं–
(1) सामाजिक कारक (2) आर्थिक कारक
(3) भौतिक कारक (4) उपर्युक्त सभी

84. दो या दो से अधिक विरोधी व्यवहारों का अवतरण होने पर व्यक्ति शिकार हो जाता है–
(1) अन्तर्द्वन्द्व का (2) तनाव का
(3) कुण्ठा का (4) दबाव का

85. **अन्तर्द्वन्द्व एक ऐसी पीड़ादायक संवेगात्मक अवस्था है जो एक दूसरों को काटने वाली और विरोधी इच्छाओं से उत्पन्न तनाव के कारण अस्तित्व में आती है।** यह परिभाषा प्रस्तुत की–
(1) डगलस और हौलेण्ड ने (2) युंग ने
(3) फ्रायड ने (4) शेफर ने

86. **तनाव असन्तुलन की दशा है जो प्राणी को अपनी उत्तेजित दशा का अन्त करने के लिए कोई कार्य करने हेतु प्रेरित करती है।** यह परिभाषा प्रस्तुत की है–
(1) गेट्स ने (2) ड्रेवर ने
(3) कॉलमैन ने (4) युंग ने

87. **तनाव का अर्थ है संतुलन के नष्ट होने की सामान्य भावना और परिस्थिति के किसी अत्यधिक संकटपूर्ण कारक का सामना करने के लिए व्यवहार में परिवर्तन करने की तत्परता।** यह परिभाषा प्रस्तुत की है–
(1) कॉलमैन ने (2) गेट्स ने
(3) ड्रेवर ने (4) युंग ने

88. **मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का अभिप्राय, मानसिक स्वास्थ्य के नियमों को खोजना और उसके संरक्षण के लिए उपाय करना है।** यह परिभाषा प्रस्तुत की है–
(1) ड्रेवर ने (2) गेट्स ने
(3) क्रो एवे क्रो ने (4) इनमें से कोई नहीं

89. **मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान वह विज्ञान है जिसका सम्बन्ध मानस कल्याण से है।** यह परिभाषा प्रस्तुत की है–
(1) गेट्स ने (2) क्रो एवं क्रो ने
(3) ड्रेवर ने (4) इनमें से कोई नहीं

90. **मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान मुख्य रूप से अधिक स्वस्थ मानव सम्बन्धों के विकास से सम्बन्धित है। इसका अर्थ मानव के व्यवहार के सम्बन्ध में अर्जित ज्ञान को दैनिक जीवन में प्रयोग करने से सम्बन्धित है।** यह परिभाषा प्रस्तुत की है–
(1) युंग ने (2) ड्रेवर ने
(3) स्किनर ने (4) फ्रायड ने

91. **किसी के दुःख में दुखी होकर स्वयं उसके जैसा अनुभव करना।** यह रक्षायुक्ति कहलाती है–
(1) दमन (2) आत्मसातीकरण
(3) अन्तःक्षेपण (4) शमन

92. मानसिक थकान का लक्षण है–
(1) उदात्तीकरण (2) शरीर में दर्द
(3) तेज व कठिन श्वास आना (4) ध्यान केन्द्रित न होना

93. निम्न में से कौनसा युग्म सुमेलित नहीं है?
(1) अन्तर्मुखी – स्वयं अपने में रहना
(2) प्रतिगमन – पुरानी आदतों में लौटना
(3) युक्तिकरण – अपना गुस्सा दूसरों पर उतारना
(4) प्रक्षेपण – अपनी गलती दूसरों पर डालना

94. हकलाने का मनोवैज्ञानिक कारण है–
(1) त्रुटिपूर्ण वाक्शैली
(2) घर तथा विद्यालय का तनावपूर्ण वातावरण
(3) संवेगों का तीव्र प्रवाह
(4) शब्द भण्डार अपर्याप्त होना

95. झूठ बोलने की आदत मनोरोग को कहा जाता है–
(1) फोबिया (2) इलूजन
(3) मिथोमैनिया (4) हिस्टीरिया

96. भग्नाशा की दशा में छात्र का व्यवहार नहीं होता है–
(1) गृह त्याग करना
(2) आत्मसम्पूर्ण/एकान्तवासी
(3) आक्रमणकारी व्यवहार
(4) रोगग्रस्त होने की बातें करना

97. भय का प्रकाशन कितने प्रकार से होता है?
(1) तीन (2) दो
(3) एक (4) विविध

98. प्रत्यक्ष एवं विषयगत खतरे के प्रति प्रतिक्रिया है–
(1) चिन्ता (2) वाद-विवाद
(3) भय (4) हर्ष

82.	83.	84.	85.	86.	87.	88.	89.	90.	91.	92.	93.	94.	95.	96.	97.	98.					
(2)	(4)	(1)	(1)	(1)	(3)	(1)	(2)	(3)	(3)	(4)	(3)	(3)	(3)	(2)	(4)	(3)					

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

99. कल्पना की अधिकता के कारण दिवास्वप्न देखने वालों को कहते हैं–
(1) बुद्धिमान व्यक्ति (2) असमायोजित व्यक्ति
(3) समायोजित व्यक्ति (4) उपरोक्त सभी

100. बालक के मानसिक रूप से अस्वस्थ होने का कारण है–
(1) पारिवारिक वातावरण (2) विद्यालय का वातावरण
(3) सामाजिक वातावरण (4) उपरोक्त सभी

101. शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा करने वाला कारक है–
(1) कठोर अनुशासन (2) अपर्याप्त वेतन
(3) पारिवारिक कठिनाइयाँ (4) समाज द्वारा सम्मान

102. समस्यात्मक शिक्षकों में निम्नलिखित लक्षण का अभाव होता है–
(1) योजनाबद्ध कक्षा अध्यापन
(2) वर्तमान यथार्थ के प्रति सन्तुष्टि
(3) अतार्किक व्यवहार
(4) प्रभावी कर्त्तव्य-निर्वाह

103. मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति की विशेषता होती है–
(1) आत्मविश्वास (2) जीवन के लक्ष्य चुनाव
(3) समायोजनशीलता (4) उपरोक्त सभी

104. शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य को दूषित करने वाला कारण है–
(1) पारिवारिक कठिनाई
(2) नौकरी की सुरक्षा
(3) अपर्याप्त वेतन
(4) उपरोक्त सभी

105. विद्यालय में मानसिक स्वास्थ्य की खराबी का कारण है–
(1) समायोजनशीलता (2) जीवन के लक्ष्य चुनाव
(3) आत्मविश्वास (4) उपरोक्त सभी

106. **श्रेष्ठता प्राप्ति समायोजन का आधार है।** यह कथन है–
(1) एडलर का (2) वुड का
(3) स्किनर का (4) फ्रायड का

107. **आत्मसिद्धि समायोजन का आधार है।** यह कथन है–
(1) फ्रायड का (2) जुंग का
(3) एडलर का (4) वुड का

108. फ्रायड के अनुसार सही है–
(1) अचेतन मन समायोजन का आधार है।
(2) लिबिडो प्रवृत्ति समायोजन का आधार है।
(3) अवस्था समायोजन का आधार है।
(4) उपरोक्त सभी

109. प्रतियोगिता के समय उत्पन्न होता है–
(1) तनाव (2) द्वन्द्व
(3) दुश्चिन्ता (4) दबाव

110. बालक के असमायोजन का कारण होता है–
(1) वंश परम्परा (2) निर्धनता
(3) मानसिक आघात (4) उपरोक्त सभी

111. **असमायोजन, व्यक्ति और उसके वातावरण में असन्तुलन का उल्लेख है।** यह कथन है–
(1) वुड का (2) गेट्स का
(3) वेल्ड का (4) बोरिंग का

112. समायोजन मुख्य रूप से–
(1) व्यक्ति की आन्तरिक शक्तियों पर निर्भर होता है।
(2) पर्यावरण की अनुकूलता पर निर्भर होता है।
(3) उपरोक्त दोनों पर
(4) इनमें से कोई नहीं

113. मानसिक थकान के लक्षण हैं–
(1) कार्य के प्रति उत्साह न होना
(2) शरीर का शिथिल होना
(3) मुँह से साँस लेना
(4) मुँह का खुला रहना

114. बालक में **नाखून या कलम चबाना** जैसी आदतों को शिक्षक छुड़वा सकता है–
(1) प्रत्यक्ष आलोचना से (2) अप्रत्यक्ष आलोचना से
(3) सुझाव देकर (4) समझाकर

115. मनुष्य में क्रोध का प्रकाशन कितनी दशाओं में दिखाई देता है?
(1) तीन (2) दो
(3) एक (4) विविध

116. जिन्हें व्यक्ति तनाव, दुश्चिन्ता, कुण्ठा आदि से बचने या उनके साथ समायोजन हेतु अपनाता है, वे साधन कहलाते हैं–
(1) आत्म-सुरक्षा अभियान्त्रिकियाँ
(2) समायोजन तन्त्र
(3) मानसिक मनोरचनाएँ
(4) उपरोक्त सभी

117. प्रेक्षण समायोजन का एक अप्रत्यक्ष उपाय है, जिसका तात्पर्य है–
(1) अपनी असफलताओं का दोष दूसरों पर मढ़ना
(2) प्रत्यक्ष करके देखना
(3) वस्तुओं को फेरना
(4) इनमें से कोई नहीं

www.praganya.org

99.	100.	101.	102.	103.	104.	105.	106.	107.	108.	109.	110.	111.	112.	113.	114.	115.	116.	117.
(2)	(4)	(4)	(1)	(4)	(4)	(4)	(1)	(2)	(4)	(2)	(4)	(2)	(3)	(1)	(2)	(4)	(4)	(1)

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

118. बालकों में भय की भावना दूर करने का सर्वोत्तम उपाय है–
(1) बालक को उपदेश देने चाहिए।
(2) उसे अकेले छोड़ देना चाहिए।
(3) उसमें आत्मविश्वास पैदा करना चाहिए।
(4) उसका डॉक्टर से इलाज कराना चाहिए।

119. एक गुब्बारे वाला गुब्बारे बेचने के लिए बच्चे के घर के सामने लाता है। बच्चा उससे गुब्बारा लेना चाहता है, परन्तु उसकी माँ उसे गुब्बारे के लिए मना करती है तथा उसे गुब्बारा लेने से वंचित कर देती है। गुब्बारा न पाने से बच्चे में उत्पन्न मानसिक स्थिति को मनोविज्ञान की भाषा में क्या कहा जाएगा?
(1) अन्तर्द्वन्द्व (2) कुण्ठा
(3) अवरोध (4) आवेग

120. जब व्यक्ति निराशा द्वारा उत्पन्न चिन्ता के कारण अपने प्रारम्भिक अथवा आदिम रूपों में वापस चला जाता है, तब–
(1) प्रतिगमन देखने को मिलता है।
(2) तादात्मय देखने को मिलता है।
(3) पृथक्ककरण देखने को मिलता है।
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

****

प्रगण्य प्रकाशन द्वारा CTET एवं प्रत्येक राज्य के TET (UPTET, MP Samvida, BTET, UTET, JTET, HTET, CGTET, HPTET) के लिए मॉडल पेपर की फ्री PDF प्रकाशित की जाती है। मॉडल पेपर की फ्री PDF प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित Whatsapp No. अपने कॉलेज के क्लास ग्रुप या कोचिंग के क्लास ग्रुप या अन्य स्टडी ग्रुप में जोंडे। आपके ग्रुप में मॉडल पेपर भेज दिए जाएँगें।

UPTET - 95301 43210
MP Samvida - 95302 43210
BTET - 95302 43210
UTET - 72209 29294
JTET - 72209 29239
HTET - 72209 29266
CGTET - 72209 28969
HPTET - 72209 28535

अगर आप B.Ed, D.Ed, BSTC या शिक्षण अध्यापन के क्षेत्र में पढ़ाई कर रहे हैं तो आपसे निवेदन है कि निम्नलिखित Whatsapp No. अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में जोड़ें। अगर आपका व्हाट्सएप ग्रुप नहीं बना हुआ है तो कृपया कम से कम 20 विद्यार्थी मिलकर व्हाट्सएप ग्रुप बना लें।

UPTET - 95301 43210
MP Samvida - 95302 43210
BTET - 95302 43210
UTET - 72209 29294
JTET - 72209 29239
HTET - 72209 29266
CGTET - 72209 28969
HPTET - 72209 28535

आपके क्लास के व्हाट्सएप ग्रुप में शिक्षा संबंधी सभी प्रतियोगी परीक्षा के पेपर्स, मॉडल पेपर्स एवं अन्य अध्ययन सामग्री भेजी जाएगी। आपका शुरू से मार्गदर्शन किया जाएगा, ताकि आप प्रतियोगी परीक्षा में अतिशीघ्र सफलता प्राप्त कर सकें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

118.	119.	120.	
(3)	(2)	(1)	

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

अध्याय 14

शिक्षण अधिगम की मूल प्रक्रियाएँ

1.1 प्रस्तावना

शिक्षण शिक्षा का एक साधन है एवं इसका विशेष कार्य ज्ञान तथा निपुणता प्रदान करना है। साधारण शब्दों में शिक्षण का अर्थ, शिक्षक वर्ग द्वारा अपनाया गया व्यवसाय या किसी व्यक्ति को कुछ शिक्षण या कुछ विशेष ज्ञान, कौशल, रूचियों तथा अभिरूचियों आदि को प्राप्त करने के लिए प्रदान की जाने वाली सहायता से लिया जाता है। दूसरी ओर, शिक्षण जीवन की सफलता का आधार है। आधुनिक मनुष्य जो कुछ भी है तथा जो भी उसके पास है, वह सब शिक्षण के परिणाम स्वरूप ही है। समूचे मानवीय व्यवहार को, उसकी अधिगम प्रक्रिया द्वारा खोजा जा सकता है। ये दोनों धारणाएँ, शिक्षा की महत्त्वपूर्ण धारणाएँ है। शिक्षण एक सामाजिक तथ्य है। दोनों में अटूट सम्बन्ध भी है। इस पाठ में इन धारणाओं/प्रत्ययों पर विस्तारपूर्वक विचार किया जाएगा।

1.2 शिक्षण का अर्थ

एक साधारण व्यक्ति के लिए, शिक्षण का अर्थ सुव्यवस्थित विधि द्वारा शिक्षण प्रदान करना है। जो एक निशिचित समय, निश्चित व्यक्ति द्वारा, एक निश्चित स्थान पर सम्पन्न किया जाता है। यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को कुछ परामर्श प्रदान कर रहा होता है, तो उसे शिक्षण ही माना जाता है।

परम्परागत रूप से, शिक्षण का अभिप्राय ऐसी क्रिया से लिया जाता है जिसके द्वारा, कक्षा कक्ष में शिक्षक सूचनाएँ तथा ज्ञान, शिक्षार्थियों को वितरित करता है। साधारण रूप से इसे कुछ बताने से समानता प्रदान की जाती है, परन्तु शिक्षण की इस परम्परागत व्याख्या से आधुनिक विद्वान सहमत नहीं है। आधुनिक अनुसन्धानों एवं अनुभवों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि शिक्षण प्रक्रिया इतनी साधारण तथा सरल स्तरीय प्रक्रिया नहीं है। यह एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण में घटित होने वाली एक अत्यन्त जटिल, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक प्रक्रिया है। परिणामतः शिक्षण की परम्परागत धारणा, आधुनिक विचारकों द्वारा पूर्णतः उपेक्षित कर दी गई है।

शिक्षण के परिवर्तित प्रत्यय अनुसार, शिक्षण का लक्ष्य बच्चे को आवश्यक ज्ञान, कौशल एवं समाज में रहने की आवश्यक विधियों को सीखने तथा ग्रहण करने के योग्य बनाना है। शिक्षण को अब तक एक ऐसी प्रक्रिया माना जाता है जिसके द्वारा, क्रियाओं के एक समूह द्वारा बच्चे के व्यवहार में एक नियोजित परिवर्तन उत्पन्न किया जाता है। इस प्रक्रिया को बच्चे की उन्नति के लिए प्रयोग किया जाता है। इसका प्रमुख उद्देश्य बच्चे को उसके वातावरण के साथ प्रभावशाली ढंग द्वारा प्रतिक्रिया का शिक्षण प्रदान करना है। यह एक कार्य केन्द्रित प्रक्रिया है, जिसके लक्ष्य पूर्व निर्धारित होते हैं।

1.3 शिक्षण की परिभाषाएँ

शिक्षण चूँकि सामाजिक तथा सांस्कृतिक वातावरण से घटित होने वाली एक अत्यन्त जटिल, सांस्कृतिक एवं नैतिक प्रक्रिया है, इसका स्वरूप तथा संगठन, उस समाज के सामाजिक तथा सांस्कृतिक रूप के अनुसार परिवर्तित होता रहता है, जिसमें यह घटित होती रहती है। ऐसी परिस्थिति में, शिक्षण शब्द की पारिभाषिक शब्दावली में भी निरन्तर परिवर्तन होता रहता है।

साधारण अर्थों में, शिक्षण कक्षा की परिस्थिति में, विद्यार्थियों को परामर्श तथा निर्देश देने की प्रक्रिया हैं। यह शिक्षण की परम्परागत धारणा है। शिक्षक श्रेणी में उपस्थित होकर, परामर्श तथा निर्देश प्रदान करता है अथवा एक या दो व्यक्ति एक पाठ्य पुस्तक से पठन करते हैं। इस परम्परागत धारणा को वर्तमान में उपेक्षित कर दिया गया है।

प्रत्येक शिक्षाशास्त्री शिक्षण सम्बन्धी अपनी विशिष्ट एवं भिन्न धारणा रखता है। यहाँ पर शिक्षण की कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाएँ दी जा रही हैं–

1. मौरीसन के अनुसार–

शिक्षण, एक पूर्ण परिपक्व, व्यक्तित्व तथा कम परिपक्व व्यक्तित्व के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध है, जिसमें कम परिपक्व व्यक्तित्व को शैक्षिक क्षेत्र में अग्रसर किया जाता है।

2. प्रो. पाठक तथा त्यागी के अनुसार–

व्यापक रूप में शिक्षण का अर्थ है बालक को इस योग्य बनाना कि वह अपने भौतिक तथा सामाजिक वातावरण के साथ समायोजन स्थापित कर सकें।

3. बी. एफ. स्किनर के अनुसार–

शिक्षण उन आवश्यक परिस्थितियों की व्यवस्था है जिनके अधीन छात्र सीखते हैं। वे स्वाभाविक वातावरण में शिक्षण के बिना ही सीखते हैं, परन्तु शिक्षक उन विशेष परिस्थितियों की व्यवस्था करते हैं जो सीखने के कार्य को तेज करती हैं। साथ ही जो व्यवहार के प्रकटीकरण को त्वरित बनाती हैं और जो अन्यथा धीरे–धीरे प्राप्त होती या उस व्यवहार के प्रकटीकरण को निश्चित बनाती हैं जो इसके बिना कभी घटित हो ही नहीं सकता था।

4. जैक्सन के अनुसार–

शिक्षण दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य पारस्परिक व्यवहार है जिसके अन्तर्गत एक व्यक्ति (शिक्षक) दूसरे सहभागियों (विद्यार्थियों) में विशेष परिवर्तन उत्पन्न करना चाहता है।

5. चौहान के अनुसार–

शिक्षण का उद्देश्य बालक को अधिगम के लिए प्रेरित करना तथा ज्ञान प्रदान करना है। इसका मुख्य उद्देश्य, बच्चे की वातावरण के प्रति प्रभावित प्रतिक्रिया को प्रकट करने में सहायता करना है। यह परिभाषा शिक्षण की परम्परागत परिभाषाओं से कुछ भिन्न है।

6. शेफर के अनुसार–

शेफर ने शिक्षण की जो परिभाषा दी है उसमें छात्रों के बौद्धिक स्तर को भी महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उन्होंने लिखा है कि–

> शिक्षण एक क्रिया है जो छात्रों की बौद्धिक शक्ति एवं स्वतन्त्र निर्णय–शक्ति की क्षमता का सम्मान करते हुए उसका आभास कराती है।

7. स्मिथ के अनुसार–

स्मिथ ने शिक्षण को अधिगम के लिए की जाने वाली क्रियाओं की एक प्रणाली कहा है। उसके अनुसार–

> इस प्रणाली में एक अभिकर्ता एक लक्ष्य एवं एक ऐसी परिस्थिति सम्मिलित है, जिसमें दो प्रकार के कार्यो के समूह होते हैं– प्रथम वह जिन पर अभिकर्ता का कोई नियन्त्रण नहीं होता जैसे कि श्रेणी का आकार, विद्यार्थियों के भौतिक लक्षण कक्षा का आकार आदि एवं द्वितीय वह सुधार कर सकता है, जैसे कि प्रश्न पूछने की विधि एवं ज्ञान प्राप्ति की विधि आदि।

8. ब्लूम के अनुसार–

> शिक्षण क्रियाएँ, जैसे कि भाषण, प्रश्नोतर एवं नियुक्तियों का लक्ष्य, ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करना हैं।

9. एडमण्ड ऐमिडान के अनुसार–

> शिक्षण एक अन्तःप्रक्रिया है, जिसमें मुख्यतः कक्षा वार्ता होती है, जो शिक्षक व छात्रों के मध्य कुछ परिभाषित की जा सकने वाली क्रियाओं के माध्यम से घटित होती है।फ्फ

10. गेट्स अधिगम के अनुसार–

> अनुभव द्वारा व्यवहार में रूपान्तर लाना ही अधिगम हैं।

11. क्लार्क के अनुसार–

क्लार्क ने शिक्षण प्रक्रिया को बच्चे के व्यवहार परिवर्तन से सम्बन्धित किया है। उसके अनुसार–

> शिक्षण से अभिप्राय उन क्रियाओं से है, जिनका प्रस्तुतीकरण एवं संरचना, विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन उत्पन्न करने के लिए किया जाता है।

12. डॉ. राधाकृष्णन् के अनुसार–

> शिक्षा को मनुष्य और सम्पूर्ण समाज का निर्माण करना चाहिए। इस कार्य को किये बिना अनुर्वर और अपूर्ण है।

13. बर्टन के अनुसार–

बर्टन द्वारा शिक्षण की प्रस्तुत की गई परिभाषा अधिक व्यापक एवं उचित है। उसके अनुसार–

> शिक्षण से अधिगम के कार्य में प्रेरणा, मार्गदर्शन, निर्देशन एवं उत्साह है।

इस परिभाषा के अनुसार शिक्षण के चार पक्ष हैं, जो निम्नलिखित हैं–

1. **उत्तेजना**– इसका अर्थ है, विद्यार्थियों में नवीन विषयों के प्रति अधिगम के लिए प्रेरणा उत्पन्न करना। इसका उद्देश्य बच्चे को अधिगम के लिए तत्पर बनाना है, ताकि उसके भीतर सीखने की इच्छा प्रबल हो सके। इसके लिए पुरस्कार, प्रशंसा, स्वास्थ्यवर्धक प्रतियोगिताओं आदि का प्रयोग किया जा सकता है।
2. **मार्गदर्शन/निर्देशन**– इसका अर्थ होता है, विद्यार्थी को मार्गदर्शन प्रदान करना ताकि वह अपनी योग्यताओं का उचित अनुमान लगा सके तथा प्रयोग कर सके। अपने दृष्टिकोण तथा ज्ञान में अधिक से अधिक वृद्धि कर सके, जिसके द्वारा वह अपने बाह्य वातावरण सामन्जस्य स्थापित कर सके।
3. **दिशा–निर्देशन**– इसका अर्थ होता है कि शिक्षण एक लक्ष्य–प्रधान प्रक्रिया है एवं यह पूर्व–निश्चित व्यवहार को निर्धारित करती है। क्रियाएँ भी नियन्त्रणाधीन होती है। समय की बचत होती है तथा अधिगम में निपुणता उत्पन्न होती है।
4. **अधिगम के प्रति प्रोत्साहन**– यह विद्यार्थी को प्रोत्साहित करती है, ताकि वह अधिक से अधिक ज्ञान एकत्रित कर सकें।

इस प्रकार बहुत से विद्धानों ने शिक्षण की अनेक परिभाषाएँ दी है। वास्तव में शिक्षण एक त्रिमुखी प्रक्रिया है, जिसके अन्तर्गत शिक्षक, शिक्षार्थी एवं शिक्षण अधिगम स्थितियों की ऐसी कार्यशील सहभागिता सम्मिलित है, जो विद्यार्थी के व्यवहार में सुधार पैदा करने में सहायक होती है। शिक्षण की प्रक्रिया, शिक्षार्थी एवं विषय–वस्तु को एकत्रित करती हैं। यह व्यक्ति की क्रिया का एक उदाहरण है, जिसका लक्ष्य व्यक्ति की क्रियाशक्ति की योग्यता में वृद्धि करना है।

1.4 शिक्षण की विशेषताएँ एवं प्रकृति

एक विचारानुसार, शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जो शिक्षा के तीन मुख्य बिन्दुओं, शिक्षक, शिक्षार्थी एवं विषय–वस्तु में सम्बन्ध स्थापित करती है। इसके द्वारा, शिक्षक, शिक्षार्थी तथा विषय–वस्तु को एकत्रित करता है। शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों इसमें क्रियाशील होते हैं, प्रथम शिक्षण में तथा द्वितीय अधिगम में। शिक्षण की प्रकृति, उसकी अग्रांकित विशेषताओं से दृष्टिगत होती है।

1. ज्ञान प्रदान करना

अधिकांशतः वस्तुएँ ऐसी है, जिन्हें विद्यार्थी स्वयं नहीं ढूँढ सकते। अधिकांश वस्तुएँ ऐसी भी है, जिनके विषय में वे कुछ नहीं जान सकते, अगर उन्हें बताया न जाए। अनेक वस्तुओं के उपयोग के विषय में भी उन्हें ज्ञान नहीं होता। अतः इन वस्तुओं के प्रयोग सम्बन्धी उन्हें ज्ञान देना पड़ता है। इस प्रकार, शिक्षण का एक आवश्यक कार्य, ज्ञान एवं जानकारी का संचार करना है।

2. अधिगम उत्पन्न करना

यह विचार अनुचित है कि ज्ञान धन की भाँति, एक व्यक्ति से, अन्य व्यक्ति के पास चला जाएगा। ज्ञान केवल तभी प्राप्त होता है जब, विद्यार्थी उसे प्राप्त करने के लिए तत्पर होते है। वास्तविक शिक्षण, बच्चे को किसी विधि या किसी ढंग द्वारा, स्वयं अधिगम के लिए प्रेरित करता है। शिक्षक एक माध्यम है, जो उसे अधिगम एवं स्वयं कार्य करने में सहायता प्रदान करता है।

3. अनेक क्रियाओं का सम्मिश्रण

शिक्षण अनेक क्रियाओं का मिश्रण है, जैसे कि विषय–वस्तु का प्रस्तुतीकरण, व्याख्या, पूछ–ताछ, अभिप्रेरणा एवं मूल्यांकन आदि। ये क्रियाएँ यद्यपि परस्पर सम्बन्धित है, तथापि इनका अस्तित्व भिन्न प्रकार है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

4. स्वतन्त्र प्रक्रिया नहीं

शिक्षण एक स्वतन्त्र प्रक्रिया नहीं है। यह किसी सामाजिक प्रबन्ध में अस्तित्व रखती है। इसमें शिक्षण, व्यक्ति या समूह के व्यावहारिक शोध का लक्ष्य रखता है।

5. संचार कौशलों द्वारा प्रभावित

शिक्षण प्रक्रिया को, विभिन्न प्रकार के संचार कौशल प्रभावित करते हैं। जितना उत्तम संचार कौशल होगा, उतनी ही उत्तम शिक्षण प्रक्रिया होगी।

6. परिवर्तनशील प्रकृति

शिक्षण सदैव परिवर्तनशील प्रक्रिया में से गुजरता रहता है। यह सदैव जीवन के सामाजिक प्रबन्ध एवं सांस्कृतिक वातावरण से सम्बन्धित होता है। समय की गति के साथ-साथ, सामाजिक मूल्य तथा आदर्श परिवर्तित होते रहते हैं, इसलिए शिक्षण भी सदैव परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजरता रहता है।

7. वातावरण के प्रति प्रतिक्रिया

शिक्षण, बच्चे को अपने वातावरण के प्रति प्रभावशाली विधि द्वारा प्रतिक्रिया अपनाने में सहायता प्रदान करता है। फ्रीमैन के अनुसार,

> ये वह नहीं है जो बच्चे को प्रस्तुत किया जाता है या जो शिक्षा प्रदान करता है बल्कि ये उसकी इसके प्रति प्रतिक्रिया है, जो उसे शिक्षित करती है।

8. वातावरण के प्रति अनुकूलता

बालक जन्म से ही किसी न किसी विधि द्वारा, अपने भौतिक एवं सामाजिक वातावरण के प्रति प्रतिक्रिया करता है। उसकी ये प्रतिक्रियाएँ दो प्रकार की होती है लाभप्रद एवं हानिप्रद। शिक्षक को चाहिए कि वह बच्चे के सफल अनुकूलन में सहायता प्रदान करे। यह दो विधियों द्वारा हो सकती है। कभी-कभी हम वातावरण को परिवर्तित करते या ढालते हैं एवं किसी समय हम बच्चे को शक्तिशाली भी बनाते है। शिक्षण को चाहिए कि वे बच्चे को सामाजिक रूप से प्रभावशाली बनाए। अन्य शब्दों में, समाज का एक योग्य नागरिक बनाए।

9. संवेगों की शिक्षा

रेबर्म के अनुसार, शिक्षण बच्चों के संवेगात्मक जीवन को शिक्षा एवं उत्साह प्रदान करने वाली प्रक्रिया है। शिक्षण के द्वारा बच्चों को प्रेममयी एवं स्वतन्त्र वातावरण प्रदान करना चाहिए तथा उनके संवेगात्मक जीवन को विकसित करना चाहिए। उन्हें ऐसी क्रियाएँ करनी चाहिए, जिनसे जन्मजात प्रवृत्तियों को लाभप्रद कार्यों की ओर अग्रसर किया जा सके।

10. औपचारिक एवं अनौपचारिक

शिक्षण औपचारिक एवं अनौपचारिक, दोनों प्रकारों का होता है। कक्षा में शिक्षण औपचारिक विधि द्वारा होता है एवं कक्षा से बाहर का शिक्षण अनौपचारिक होता है। दोनों प्रकार के शिक्षण परस्पर सहायक होते हैं।

11. चेतन एवं अचेतन

शिक्षण, सचेत एवं अचेत दोनों प्रक्रिया है। इसका अधिक प्रभावशाली भाग वह है जिसे अचेत कहा जाता है अधिकतर बच्चों की क्रियाओं को यही नियन्त्रित करता है। विद्यार्थी तथा शिक्षक के मध्य वैयक्तिक सम्बन्ध विद्यार्थी की वृद्धि एवं उन्नति को अत्यन्त प्रभावित करते है।

12. कौशलपूर्ण व्यवसाय

शिक्षण एक कठिन एवं जटिल प्रक्रिया है। प्रत्येक व्यक्ति इसमें सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। सफलता प्राप्त करने के लिए उसे उचित परिस्थितियों का निर्माण करने के लिए, शिक्षण एवं अनुदेशन की विभिन्न साधारण विधियों तथा प्रणालियों का ज्ञान होना चाहिए। उसे शिक्षा के साधारण उद्देश्यों के विषय में भी ज्ञान होना चाहिए।

13. तैयारी का साधन

यद्यपि शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य भविष्य की तैयारी नहीं है, तथापि यह इसका महत्त्वपूर्ण उद्देश्य माना जाता है। शिक्षण का उद्देश्य अपरिपक्व बच्चे को शारीरिक, बौद्धिक संवेगात्मक तथा आत्मिक स्तर पर उन्नत करना है, ताकि वह प्रभावशाली विधि द्वारा, सामुदायिक जीवन में भाग ले सकें।

14. उत्तेजनापूर्ण एवं उत्साहपूर्ण

शिक्षण को बच्चे में उत्साह उत्पन्न करना चाहिए। उसे बच्चे की प्राकृतिक इच्छाओं कार्य करने एवं क्रियाशील रहने आदि का विकास करके, उसे सदैव उत्साहित करते रहना चाहिए।

15. मार्गदर्शन

शिक्षण का कार्य विद्यार्थियों को उचित समय पर, उचित विधि द्वारा एवं उचित वस्तुओं के विषय में शिक्षा प्रदान करना है। शिक्षण को इस प्रकार बच्चों का मार्गदर्शन करना चाहिए कि उसका समय, सामग्री एवं शक्ति नष्ट न हो।

16. योजनाबद्ध प्रक्रिया

शिक्षण एक योजनाबद्ध तथा नियमित प्रक्रिया है। एक विशिष्ट योजनानुसार इसे संगठित किया जाता है।

17. प्रभावशाली व्यवहार

शिक्षण एक प्रभावशाली व्यवहार है, जो दूसरों के व्यवहार को परिवर्तित करने में सहायक होता है।

18. एक पक्षीय मार्ग नहीं

शिक्षण एक पक्षीय नहीं है। यह शिक्षक एवं अनेकों विद्यार्थियों के मध्य एक अंतर्क्रिया है। इसे द्विपक्षीय प्रक्रिया, जिसमें शिक्षक एवं विद्यार्थी सक्रिय होते हैं, भी कहा जाता है। वर्तमान में इसे त्रिपक्षीय प्रक्रिया विद्यार्थी, शिक्षक एवं वातावरण के मध्य होने वाली अन्तर्क्रिया का नाम भी प्रदान किया गया है।

19. कला भी एवं विज्ञान भी

शिक्षण की प्रकृति कला प्रधान भी है तथा विज्ञान-प्रधान भी। कुछ व्यक्ति जन्मजात शिक्षक होते हैं। उनके लिए शिक्षण एक मिशन होता है। वे अपनी कला के द्वारा, अपरिपक्व बच्चे के अस्तित्व को मूर्तिकार की भाँति तराश कर उसे एक नवीन एवं संशोधित रूप प्रदान करते हैं, परन्तु इसमें प्रयोग की जाने वाली विशेष तकनीकी एवं कौशल आदि, इसे विज्ञान का रूप देते हैं। इनमें निपुणता प्राप्त कर, एक उत्तम शिक्षक बना जा सकता है। सिल्वरमैन ने सही ही कहा है कि शिक्षण चिकित्सा की भाँति ही एक कला है, क्योंकि इसमें शिष्टता के साथ-साथ सृजनात्मकता की भी आवश्यकता होती है, यह विज्ञान भी है, क्योंकि इसमें अनेक तकनीकी एवं कौशलों का प्रयोग किया जाता है। जिनका क्रमबद्ध

अध्ययन करना होता है एवं उन्हें विकसित करना होता है।

20. निदानात्मक प्रवृत्ति

शिक्षण का सम्पूर्ण कार्य विद्यार्थियों की कमियों, शक्तियों, योग्यताओं आदि से परिचित होना है। यह एक चिकित्सक के कार्य के समान ही होता है, जो सर्वप्रथम रोग की पड़ताल करता है, तत्पश्चात् उसका निदान करता है। शिक्षण का कार्य भी ऐसा ही होता है।

21. एक समाज सेवा

शिक्षण के व्यवसाय को समाज सेवा एवं शिक्षक को समाज सेवक होने का सम्मान प्राप्त है। हँग तथा डंकन ने शिक्षण को एक अद्वितीय, व्यावसायिक एवं तर्कशील मानवीय प्रक्रिया माना है, जिसके अन्तर्गत एक सृजनात्मक एवं कल्पनात्मक व्यक्ति, अपने ज्ञान को अन्य लोगों के हितों के लिए प्रयोग करता है। यह पूर्णतः सत्य है कि किसी समाज तथा राष्ट्र का भविष्य, शिक्षक के हाथों में होता है एवं उसे सामाजिक विधियों द्वारा आकार प्रदान करता है।

1.5 शिक्षण एवं समानार्थक धारणाओं/प्रत्ययों की विभिन्नता

शिक्षण की धारणा को पूर्णतः आत्मसात करने के लिए, उसे उसकी कुछ समानार्थक धारणाओं, जैसे कि अनुबन्धन, प्रशिक्षण, अनुदेशन एवं प्रतिपादन से पृथक् करना आवश्यक है। यद्यपि ये धारणाएँ, शिक्षण से मिलती-जुलती है, तथापि वास्तव में ये, शिक्षण की किसी एक प्रणाली या अन्य प्रणाली को दर्शाती है। शिक्षण एक व्यापक धारणा है तथा ये सभी उसके भिन्न-भिन्न भाग है, जो किसी विशिष्ट प्रकार के शिक्षण को ही प्रकट करते हैं। ये शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों को अपनी-अपनी विधियों द्वारा पूर्ण करते हैं।

1. अनुबन्धन

अनुबन्धन को शिक्षण के निम्नतम एवं प्राथमिक स्तर के प्रतिनिधि के रूप में मान्यता दी जाती है। इसमें मानसिक शक्तियों की उन्नति की कम सम्भावना है। जब किसी पशु का, किसी आदेश जैसे कि घण्टी की ध्वनि आदि द्वारा आवश्यक क्रिया, जैसे कि हाथ उठाना, पैर हिलाना या कोई विशेष क्रिया आदि करने की शिक्षा दी जाती है, तो इस प्रकार के अध्ययन को अनुबन्धन कहा जाता है। इस प्रकार अनुबन्धन द्वारा मानव को चेतावनी, संकेत या निर्देश आदि का पालन करने की शिक्षा प्रदान की जा सकती है। यह स्वचालित होती है। इसे स्वभावों का निर्माण भी कहा जाता है। इस प्रकार बच्चों में ऐच्छिक क्रियाओं एवं उत्तम प्रवृत्तियों का निर्माण किया जा सकता है।

2. प्रशिक्षण

प्रशिक्षण, अनुबन्धन से कुछ अधिक उच्च शिक्षण है। प्रशिक्षण साधारणतः पशुओं को प्रदान किया जाता है, जबकि व्यक्ति को शिक्षित किया जाता है। प्रशिक्षण शिक्षण की संकुचित धारणा है।

प्रशिक्षण द्वारा भिन्न-भिन्न कौशलों के अधिगम, चरित्र-निर्माण एवं व्यवहार को सुयोग्य बनाने में सहायता मिलती है। यह किसी विशिष्ट योग्यता या कौशल का विकास करती है। यह मौखिक पुस्तकों के पठन या सुझावों को सुनने से नहीं आती। इसके लिए निरन्तर अभ्यास एवं किसी उचित योग्यता या दक्षता का ज्ञान रखने वाले मार्गदर्शक की आवश्यकता पड़ती है, जो अपने कार्य का प्रतिरूप प्रस्तुत कर सके। एक प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति, शिक्षण की मौलिक संरचना को समझने के पश्चात्, अनेकों उपकरणों पर अनेक प्रकार के कार्यों को उत्तम ढंग से कर सकता है। शिक्षण की अपेक्षा में प्रशिक्षण में बहुत कम शिष्टता की आवश्यकता होती है। प्रशिक्षण द्वारा सरल व्यवहार उत्पन्न किया जा सकता है। परन्तु जटिल व्यवहार उत्पन्न नहीं किया जा सकता।

3. अनुदेशन

अनुदेशन को अनुबन्धन एवं प्रशिक्षण से उच्च स्थान प्राप्त है। इसका सम्बन्ध ज्ञान के विकास एवं व्यक्ति के बोध से होता है। यह किसी विषय-वस्तु प्रक्रिया या प्रणाली के विषय में ज्ञान तथा बोध उत्पन्न करता है। शिक्षण के अनेकों उद्देश्यों में से, ज्ञान एवं बोध उत्पन्न करना, पूर्णत् तुच्छ एवं महत्त्वहीन है।

अनुदेशन, व्यक्ति के केवल बौद्धिक विकास, से सम्बन्ध रखता है, जबकि शिक्षण का उद्देश्य एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण है। अनुदेशन में बच्चे की रूचियों एवं उसके मानसिक स्तर को, साधारणतः उपेक्षित कर दिया जाता है, जबकि शिक्षण में बच्चे की रूचियों एवं उसके मानसिक स्तर की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसके अतिरिक्त शिक्षण में, शिक्षक तथा विद्यार्थियों के मध्य, परस्पर प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है तथा उनके मध्य अंतर्क्रिया होती है परन्तु अनुदेशन में ऐसा नहीं होता। इसमें शिक्षक के अभाव में अन्य शिक्षण साधनों द्वारा भी निर्देश प्रदान किए जा सकते हैं।

4. उपदेश/प्रतिपादन

यह शिक्षण का उच्चतम स्तर है। इसकी सहायता से, व्यक्ति के अस्तित्व में, आदर्शो एवं मूल्यों की स्थापना की जा सकती है। इसके लिए अधिक निपुणता एवं ज्ञान की आवश्यकता होती है। इसके द्वारा, विश्वासों तथा विचारों को तराशा या शोधित किया जा सकता है। व्यक्ति के मस्तिष्क में विद्यमान पूर्व विचारों को हटा कर, नवीन विचारों को उत्पन्न किया जाता है। महापुरुष, गुरु, सफल राजनीतिज्ञ, समूहों तथा दलों के राजनीतिज्ञ आदि, प्रतिपादन की आड़ में लोगों को अपनी विचारधारा, चिन्तन मान्यताओं, विश्वासों एवं कार्यशैली के रंग में रंगने में योग्य हो जाते है। शिक्षक भी इसे अपनी शिक्षण प्रणाली में सम्मिलित कर सकता है। इस प्रकार, प्रतिपादन शिक्षण का एक अंग बन जाता है। उपदेश प्रदान करने के लिए, लघु श्रेणियाँ औपचारिक होती है। इसमें औपचारिकता से नहीं बचा जा सकता। शिक्षण औपचारिक, अनौपचारिक एवं अशौपचारिक भी हो सकता है। शिक्षण, प्रतिपादन की प्रणाली के अभाव में भी सम्भव है। यह शिक्षण की एक विधि ही है।

अन्त में कहा जा सकता है कि अनुबन्ध, प्रशिक्षण, अनुदेशन एवं उपदेश शिक्षण के विभिन्न स्तरों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन सभी को शिक्षण का अंग तो माना जा सकता हैं, परन्तु शिक्षण नहीं। यद्यपि ये सभी अंग, परस्पर भिन्न है, किन्तु असम्बन्धित नहीं है। शिक्षण प्रक्रिया में, इनमें से किसी एक का भी शिक्षण प्रणाली के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

1.6 शिक्षण की संरचना

सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया में विभिन्न क्रियाएँ की जाती है। इन क्रियाओं को तीन वर्गो में विभाजित किया जा सकता है। अन्य शब्दों में, शिक्षण को त्रि-मुखीय प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया जा सकता है। शिक्षण क्रियाओं के ये तीनों पक्ष अधोलिखित है।

1. चिह्न एवं संकेत

शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया में चिह्नों एवं संकेतों का प्रयोग करता है। विद्यार्थी उन्हें समझते हैं। शिक्षक द्वारा प्रयोग किए गए चिह्नों एवं संकेतों की विद्यार्थी व्याख्या करते हैं तथा संचार में उनका प्रयोग भी करते है। पाठ्य-सामग्री के प्रस्तुतीकरण एवं मूल्यांकन में इन चिह्नों तथा संकेतों का अधिक उपयोग होता है। इस प्रकार, शिक्षण प्रक्रिया एवं मूल्यांकन सरल हो जाते हैं।

2. शिक्षण एवं तर्क

शिक्षण-प्रक्रिया में चिह्नों एवं संकेतों के माध्यम से अनुदेशन किया जाता है। इसके अतिरिक्त शिक्षण के समय भाषा का प्रयोग भी किया जाता है। भाषा के अभाव में शिक्षण सम्भव नहीं है। शिक्षण भाषा-विज्ञान की ही प्रक्रिया है। भाषा के प्रयोग द्वारा ही शिक्षक निर्देश देता है। घटनाओं का वर्णन एवं व्याख्या करता है। शिक्षक तथा विद्यार्थियों में भाषा के अभाव में अन्तर्क्रिया नहीं हो सकती, भाषा द्वारा ही वह शिक्षण आरम्भ करता है तथा अन्त में उद्देश्य प्राप्ति में सफलता प्राप्त करता है। शिक्षण संरचना में भाषा का प्रमुख स्थान है।

3. शिक्षक एवं तर्क

शिक्षण प्रक्रिया में भाषा एवं तर्क, दोनों ही सम्मिलित हैं। शिक्षण के लिए तर्क विशेषतः उपयोगी है। उसे पाठ्य-वस्तु की लघु इकाईयों को सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने के लिए तर्क का आश्रय लेना पड़ता है। शिक्षण क्रियाओं की व्यवस्था तर्कपूर्ण विधि द्वारा ही की जाती है। इस प्रकार शिक्षण प्रक्रिया की योजना व्यवस्था, नियन्त्रण एवं मूल्यांकन में तर्क का होना अत्यन्त आवश्यक है।

इस प्रकार हम देखते हैं। कि शिक्षण के इन तीनों पक्षों को एकत्रित करके सम्पूर्ण शिक्षण कहा जाता है। शिक्षण प्रक्रिया के बोध के लिए एवं उसकी व्यवस्था करने में इन तीनों पक्षों का विशेष महत्त्व है।

1.7 शिक्षण की क्रियाएँ

ये वे क्रियाएँ है, जो एक शिक्षक, कक्षा कक्ष में शिक्षण के समय करता है। इन शिक्षण क्रियाओं या कार्यों को समूहों में विभाजित करने की अनेक विधियाँ है। स्मिथ ने इन क्रियाओं को ज्ञानात्मक एवं प्रभावशाली शिक्षण क्रियाओं में विभाजित किया है। थॉमस ग्रीन ने इन शिक्षण क्रियाओं को निम्नांकित तीन वर्गों में विभाजित किया है।

1. तर्कपूर्ण शिक्षण क्रियाएँ

इनका सम्बन्ध प्रमुख रूप से चिन्तन एवं तर्क से है। ग्रीन ने इसमें शिक्षण के आठ तर्कपूर्ण कार्य सम्मिलित किए हैं-

1. व्याख्या
2. उपसंहारिता
3. निष्कर्ष निकालना
4. कारण प्रदान करना
5. प्रमाण एकत्रित करना
6. प्रदर्शनी
7. परिभाषित करना
8. तुलना करना

2. योजनात्मक क्रियाएँ

ये क्रियाएँ हैं जो प्रमुख रूप से शिक्षण की योजना या विषय-वस्तु के संगठन के लिए अपनायी गई योजनाओं या शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों को दिशा-निर्देशन प्रदान करने के लिए प्रयोग की जाती हैं। ग्रीन ने इसमें सात क्रियाएँ सम्मिलित की है।

1. प्रेरणाप्रद
2. परामर्शकारी
3. मूल्यांकन करना
4. नियोजन
5. प्रोत्साहित करना
6. अनुशासन का निर्माण एवं
7. प्रश्न पूछना

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

3. अनुदेशात्मक क्रियाएँ

ये क्रियाएँ हैं जो प्रमुख रूप से, संस्था या विद्यालय द्वारा शिक्षक के कार्य को संगठित करने की विधि से सम्बन्धित है। ग्रीन ने इनके अन्तर्गत सात प्रकार की क्रियाएँ सम्मिलित की हैं-

1. धनार्जन
2. हॉल की देख रेख
3. सभाओं में उपस्थित होना
4. उपस्थिति लगाना
5. अभिभावकों से मेल-जोल
6. सूचनाओं का निर्माण
7. निरीक्षण करना

1.8 शिक्षण के उद्देश्य

शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थी को सहायता प्रदान करना है, जिसके द्वारा वह उत्तम विचारक एवं उत्तम कार्यकर्त्ता बन सकें।
2. शिक्षण का उद्देश्य एक सम्पूर्ण मानव का निर्माण है, जिसमें उसके अस्तित्व का प्रत्येक पक्ष पूर्णतः विकसित हो सके।
3. विद्यार्थियों को इस प्रकार सहायता प्रदान करना कि वे अपनी अनुभूतियों एवं प्रत्यक्ष कारणों से समायोजन करते हुए वास्तविकता का बोध प्राप्त कर सके।
4. विद्यार्थी अपने आन्तरिक एवं बाह्य अनुभवों से सामन्जस्य उत्पन्न कर सके।
5. किसी भी समय, किसी की, किसी भी रूप में सहायता कर सके, जिसमें वे स्वयं नवीन अनुभव कर सके तथा रचानात्मक कार्य कर सके।

6. विद्यार्थियों में यह गुण उत्पन्न करना कि ये स्वयं उचित निर्णय ले सके।

1.9 शिक्षण के प्रकार

शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है। इस पर हमारे समाज की दार्शनिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक विचारधाराओं का प्रभाव पड़ता है। परिणामतः शिक्षण के अनेक उद्देश्य बन जाते हैं। इसका विभाजन भी अनेक दृष्टिकोणों के आधार पर किया जाता है। इन्हें निम्नलिखित दृष्टिकोणों के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है–

1. शिक्षण के उद्देश्यों का दृष्टिकोण

शिक्षण के तीन प्रकार के उद्देश्य होते हैं, जिनकी प्राप्ति के लिए विभिन्न प्रकार के शिक्षण की व्यवस्था की जाती है–

1. ज्ञानात्मक शिक्षण
2. भावात्मक शिक्षण
3. क्रियात्मक शिक्षण

2. शिक्षण स्तरों का दृष्टिकोण

शिक्षण एक निरन्तर गतिशील क्रिया मानी जाती है। जिसके अन्तर्गत, विचारहीन एवं उच्च विचारात्मक क्रियाएँ की जाती है। इस शृंखला को तीन स्तरों में विभाजित किया गया है–

1. स्मृति स्तर
2. बौद्धिक स्तर
3. चिन्तन स्तर

3. शिक्षण सरंचना का दृष्टिकोण

शिक्षण, विद्यार्थियों को नवीन ज्ञान प्रदान करने के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों की निदानात्मक प्रकृति के आधार पर उपचारात्मक शिक्षण भी किया जाता है। इस दृष्टि से शिक्षण दो प्रकार का है–

1. वर्णनात्मक शिक्षण
2. उपचारात्मक शिक्षण

4. शिक्षण व्यवस्था का दृष्टिकोण

शिक्षण की व्यवस्था निश्चित एवं अनिश्चित कार्यक्रमों के अनुसार की जाती है। इस प्रकार व्यवस्थापक दृष्टिकोण से शिक्षण तीन प्रकार का है–

1. औपचारिक शिक्षण
2. अनौपचारिक शिक्षण
3. अंशौपचारिक शिक्षण

5. शिक्षण क्रियाओं का दृष्टिकोण

शिक्षण के अन्तर्गत अनेक प्रकार की क्रियाएँ की जाती हैं। उन्हें तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है–

1. प्रस्तुतीकरण से सम्बन्धित शिक्षण
2. प्रदर्शन से सम्बन्धित शिक्षण
3. कार्य सम्बन्धित शिक्षण

6. प्रशासन के अनुसार शिक्षण के प्रकार

शिक्षण पर प्रशासन प्रणाली का अधिक प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक प्रशासन प्रणाली का अपना भिन्न प्रकार का शिक्षण होता है–

1. एकतान्त्रिक शिक्षण
2. लोकतान्त्रिक शिक्षण
3. हस्तक्षेपरहित शिक्षण

1.10 उत्तम शिक्षण की विशेषताएँ

एक उत्तम शिक्षण की विशेषताएँ शिक्षक के गुणों से सम्बन्धित होती है। एक प्रभावशाली शिक्षक में तीन प्रकार के गुण होते है– पूर्व कारक, प्रक्रिया कारक एवं उत्पादन कारक। शिक्षण प्रभावशीलता का सम्बन्ध प्रक्रिया कारक या अवस्था से होता है।

उत्तम शिक्षक की विशेषताओं का उल्लेख समाज तथा प्रशासन के सन्दर्भ में ही किया जा सकता है। प्रत्येक प्रशासन प्रणाली के उत्तम शिक्षण की विशेषताएँ भिन्न–भिन्न होती है। एक लोकतान्त्रिक व्यवस्था वाले राष्ट्र अर्थात् भारत में उत्तम शिक्षण की निम्नलिखित विशेषताएँ होनी चाहिए–

1. उत्तम शिक्षण अधिगम के लिए प्रेरित करता है

उत्तम शिक्षण बच्चे को स्वयं अधिगम के योग्य बनाता है। यह बच्चे के मस्तिष्क की पूर्ति सूचनाओं से नहीं करता अपितु यह बच्चे को कुछ क्रियाओं के योग्य बनाता है, जिससे स्वाभाविक रूप से अधिगम प्राप्त होता है।

2. उत्तम शिक्षण आवश्यक एवं चयनित सामग्री प्रदान करता है

एक उत्तम शिक्षक पुस्तकों तथा अनुभवों से प्राप्त सम्पूर्ण सामग्री को एक ही समय पढ़ाने का प्रयास नहीं करता। वह केवल आवश्यक एवं चयनित सामग्री ही प्रस्तुत करता है। जो विद्यार्थियों को एक उचित जीवनयापन एवं समाज का एक उत्तरदायी नागरिक बनने में सहायता करती है।

3. उत्तम शिक्षण क्रियाशीलता के अवसर प्रदान करता है

बालक जन्म से ही क्रियाशील होता है। सुस्त बच्चा भौतिक एवं मानसिक रूप से रोगी हो सकता है। एक उत्तम अध्यापक विद्यार्थियों को सक्रिय बनाता है। उन्हें अनुशासित रखने का यह एक उत्तम ढंग है।

4. उत्तम शिक्षण नियोजित होता है

एक अच्छा शिक्षक सावधानी पूर्वक बच्चों की मानसिक अवस्था का अध्ययन करता है, तथा वैयक्तिक भिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए, उनके लिए विषय–वस्तु का निर्माण करता है। एक असंगठित पाठ्य सदैव असफल होता है, जिसके परिणामस्वरूप समय, शक्ति एवं धन की हानि होती है।

5. उत्तम शिक्षण बच्चे का वातावरण के साथ समायोजन बनाने में सहायता करता है

मानव सदियों से प्राकृतिक शक्तियों के विरूद्ध संघर्ष कर रहा है। उससे यह उम्मीद की जाती है कि या तो वह स्वयं को इन प्राकृतिक शक्तियों के अनुसार अनुकूलित करे या फिर इन शक्तियों को अपने अनुकूल कर ले। एक उत्तम शिक्षण, बच्चे को दोनों दिशाओं के लिए तैयार करता है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

6. उत्तम शिक्षण बच्चे को प्रेरित करता है

एक उत्तम शिक्षक अपने विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान करता है। वह अपने व्यक्तित्व के गुणों तथा क्रियाओं द्वारा बच्चों को प्रभावित करता है तथा शिक्षा के लिए प्रेरणा दे कर, तैयार करता है।

7. उत्तम शिक्षण सहानुभूति एवं सहृदयतापूर्ण होता है

एक उत्तम शिक्षक कक्षा में प्रेममयी वातावरण का निर्माण करता है। वह अपने विद्यार्थियों की भावनात्मक स्थिरता एवं सुरक्षा का ध्यान रखता है। वह उनके साथ सहानुभूति प्रेम एवं सहृदयता पूर्ण व्यवहार करता है। वह न तो उन्हें दण्डित करता है तथा न ही उन पर क्रोधित होता है।

8. उत्तम शिक्षण सहयोगी होता है

उत्तम शिक्षण एक क्रियाशील एवं जीवन्त प्रक्रिया है। एक उत्तम शिक्षक, अपने विद्यार्थियों के सहयोग की माँग करता है।

9. उत्तम शिक्षण लोकतान्त्रिक होता है

एक उत्तम शिक्षक सदैव अपने विद्यार्थियों की वैयक्तिकता का सम्मान करता है। वह उन्हें स्वयं से तुच्छ नहीं मानता। वह सदैव लोकतान्त्रिक विचार, आदर्श, विषय–वस्तु, विधियाँ तथा उद्देश्य अपने सम्मुख रखता है एवं उनका अनुसरण करके ही कार्य करता है।

10. उत्तम शिक्षण प्रगतिशील होता है

एक उत्तम शिक्षक निरन्तर अपनी तकनीकी एवं विधियों में परिवर्तन करता रहता है। यह परिवर्तन सकारात्मक होना चाहिए। वह बच्चे के जीवन में आवश्यक एवं उचित प्रगति करने में सहायता प्रदान करता है।

11. उत्तम शिक्षण भावनात्मक स्थिरता की ओर अग्रसर करता है

बच्चे में बहुत सी शक्तिशाली प्रवृत्तियाँ होती है जो अपनी संतुष्टि की माँग करती है। एक उत्तम शिक्षक को यह ज्ञात होता है कि यदि उन प्रवृत्तियाँ को उचित दिशा में अग्रसर न किया गया, तो ये बच्चे के लिए हानिकारक सिद्ध होंगी। इसलिए वह बच्चे को ऐसे अवसर प्रदान करता है, जिनके द्वारा उनकी जन्मजात प्रवृत्तियों को उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो सके।

12. उत्तम शिक्षण निदानात्मक एवं उपचारात्मक होता है

एक उत्तम शिक्षक, विभिन्न मापदण्डों का प्रयोग करके, बच्चे की रूचियों, अभिरूचियों, बुद्धिमता एवं अन्य गुणों की जानकारी प्राप्त करता है तथा उसके अनुसार अपने कार्य को नियोजित करता है।

13. उत्तम शिक्षण बच्चे को भविष्य के लिए तैयार करता है

एक उत्तम शिक्षण बच्चे के अस्तित्व के सभी पक्षों को उन्नत करके, उसे आत्म–निर्भर बनाता है। इससे उसका भविष्य, सुरक्षित बनता है।

14. उत्तम शिक्षण शिक्षार्थी को स्वतन्त्र बनाता है

उत्तम शिक्षण विद्यार्थी को स्वतन्त्र बनाता है। वह इस योग्य हो जाता है कि किसी भी समस्या का स्वयं समाधान कर सकें। उसे किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता।

15. उत्तम शिक्षण मस्तिष्क पर बोझ नहीं डालता

उत्तम शिक्षण अधिगम प्राप्तकर्ता के मस्तिष्क को भरने या उस पर किसी प्रकार का बोझ लादने का कार्य नहीं। वास्तव में यह तो मस्तिष्क से किसी नवीन वस्तु को हटाने जैसा है।

1.11 शिक्षण अधिगम की धारणा

शिक्षण का मुख्य कार्य विद्यार्थियों को अधिगम की सुविधा प्रदान करना है। आधुनिक विचारधारा के अनुसार अधिगम एक धारणा है। शिक्षक की धारणा तब तक अपूर्ण है जब तक अधिगम को उसके साथ उल्लेखित न किया जाए।

बी.ओ. स्मिथ ने शिक्षण को एक प्रक्रिया माना है, जो अधिगम उत्पन्न करती है। जहाँ शिक्षण है, वहाँ अधिगम अवश्य होगा, किन्तु जहाँ अधिगम है, वहाँ यह आवश्यक नहीं कि शिक्षण भी होगा। स्मिथ, शिक्षण एवं अधिगम को दो पूर्णतः विभिन्न धारणाएँ मानता है। किन्तु उसका यह पूर्ण विश्वास है कि शिक्षण की क्रियाओं का विश्लेषण, अधिगम के स्वरूपों के अभाव में नहीं हो सकता।

क्लार्क की धारणा है कि अधिगम एक स्थायी व्यावहारिक परिवर्तन है, उस पर परिपक्वता का प्रभाव नहीं पड़ता एवं शिक्षण वह प्रक्रिया है, जो विद्यार्थियों के व्यवहार में स्थायी परिवर्तन उत्पन्न करती है। इस प्रकार शिक्षण की उपलब्धि का मापदण्ड अधिगम ही है।

एन.एल. गेज का मत है कि शिक्षण एवं अधिगम की धारणाओं में अन्तर किया जा सकता है, किन्तु शिक्षण प्रक्रिया का अधिगम से सामंजस्य अवश्य होना चाहिए, तभी वह प्रभावशाली हो सकती है। इस सन्दर्भ में शिक्षण अधिगम को एक भिन्न धारणा मानना चाहिए। शिक्षण अधिगम को निम्न प्रकार परिभाषित किया जा सकता है–

> शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, शिक्षक एवं विद्यार्थियों के मध्य एक अन्तर्क्रिया है, जहाँ उनके द्वारा परस्पर सूचना वितरित करने एवं प्राप्त करने के परिणामस्वरूप कुछ व्यावहारिक परिवर्तन होते है।

गेज के अनुसार–

> शिक्षण एवं अधिगम की प्रक्रियाओं का परस्पर सामंजस्य स्थापित करना चाहिए ताकि शैक्षिक क्षेत्र में कुछ उत्तम घटित हो सके। हमें प्रभावशाली शिक्षण के लिए, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को एक प्रक्रिया मानना चाहिए।

अधिगम को साधारण रूप में क्रियाओं एवं परिस्थितियों द्वारा शिक्षार्थी के व्यवहार में प्रगतिशील परिवर्तन उत्पन्न करना कहा जाता है। शिक्षण प्रक्रिया का कार्य उन उचित परिस्थितियों का निर्माण करना है। जो अधिगम उत्पन्न करती है। स्मिथ ने शिक्षण की क्रियाओं को प्रणाली की संज्ञा दी है, जो अधिगम उत्पन्न करती है। इससे ज्ञात होता है कि शिक्षण के लिए शिक्षा आवश्यक है एवं अधिगम परिस्थितियों को प्रभावशाली शिक्षण के लिए उत्पन्न किया जाना आवश्यक है। परिणामतः वर्तमान में शिक्षण अधिगम की धारणा पर अत्यन्त बल दिया जाने लगा है।

1.12 शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

यह सत्य है कि शिक्षण एवं अधिगम दो भिन्न–भिन्न धारणाएँ है तथा एक–दूसरे से स्वतन्त्र कार्य भी कर सकते हैं, किन्तु शिक्षा–प्रक्रिया के उत्तम परिणाम प्राप्त करने के लिए इनमें सामंजस्य उत्पन्न करना अति आवश्यक है। इन्हें परस्पर निकट आना चाहिए एवं मिल–जुल कर कार्य करना चाहिए। इनके संश्लेषण को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की संज्ञा प्रदान की गई है। ये दो नहीं, बल्कि एक विशिष्ट प्रत्यय है। इस प्रक्रिया द्वारा शिक्षार्थी के व्यवहार में परिवर्तन उत्पन्न होता है, स्रोतों का हल नहीं होता।

1.13 शिक्षण एवं अधिगम का सम्बन्ध

शैक्षिक क्षेत्र में शिक्षण एवं अधिगम सदैव साथ-साथ गतिशील रहते है। शिक्षण का मुख्य उद्देश्य अधिगम को प्रभावित करना है। जहाँ शिक्षण किया जाता है, वहाँ अधिगम क्रियाएँ अवश्य होती है। शिक्षण का मुख्य कार्य, विद्यार्थियों को अधिगम की सुविधा प्रदान करना है। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में, शिक्षण अधिगम का पूरक है। ये दोनों एक ही सिक्के के दो विभिन्न पहलू है। वास्तव में, यह शिक्षण ही है, जिसका परिणाम अधिगम होता है।

अधिगम एवं शिक्षण में निकटतम सम्बन्ध है। वास्तव में यह एक सम्पूर्ण प्रक्रिया के दो पक्ष है। जो शिक्षक, शिक्षार्थी, विषय-वस्तु एवं अनुदेशनात्मक सामग्री के इर्द-गिर्द घूमते है। शिक्षण की सम्पूर्ण क्रियाओं का केन्द्र, ऐच्छिक अधिगम उत्पन्न करना होता है। अन्य शब्दों में, शिक्षण अधिगम को उत्पन्न करने का कारण है।

1. जीवनपर्यन्त गतिशील प्रक्रियाएँ

शिक्षण की भाँति अधिगम भी गतिशील प्रक्रिया है। हम किसी से भी, कुछ भी सीख सकते हैं।

2. शिक्षण प्रक्रिया एवं अधिगम के अंगों के मध्य निकटतम सम्बन्ध

यदि हम अधिगम के अंगों तथा शिक्षण प्रक्रिया की तुलना करें तो ज्ञात होता है कि दोनों में गहन सम्बन्ध हैं। शिक्षण में शिक्षार्थी के लिए ज्ञान, कौशलों तथा मनोवृत्तियों को प्राप्त करने के लिए योजनात्मक प्रयत्न किए जाते हैं। शिक्षण भले ही अधिगम उत्पन्न करे या न करे, किन्तु प्रभावशाली शिक्षण वहीं होता है जो अधिगम का सृजन करता है।

3. प्रथम अन्त है एवं द्वितीय माध्यम

शिक्षण एक माध्यम है एवं अधिगम उसका परिणाम है।

4. शिक्षण के नियम, अधिगम नियमों पर आधारित होते हैं

शिक्षण एवं अधिगम दोनों के विभिन्न नियम हैं, किन्तु साधारणतः यह दोनों पारस्परिक नियमों पर निर्भर हैं। शिक्षण अधिगम के नियमों से सहायता प्राप्त करता है तथा अधिगम, शिक्षण के नियमों से सहायता प्राप्त करता है। सिम्पसन के अनुसार शिक्षण के कुछ महत्त्वपूर्ण नियम जो अधिगम के नियमों पर आधारित हैं, वे हैं- पूर्णतः योजनाबद्ध, लोकतान्त्रिक, सहानुभूतिपूर्ण एवं सहयोगी, उत्तेजनापूर्ण, निदानात्मक एवं शिक्षार्थी के पूर्व ज्ञान एवं अनुभवों को ध्यान में रखने वाला होता है।

5. शिक्षण के सिद्धान्त, अधिगम के सिद्धान्तों पर आधारित है

मनोविज्ञान में अधिगम के अनेक सिद्धान्त है, जैसे- प्रयत्न एवं त्रुटि शिक्षा सिद्धान्त, अनुबन्धन का सिद्धान्त, अन्तर्दृष्टि सिद्धान्त आदि। क्रोनबाच के मतानुसार, शिक्षण के सिद्धान्तों को अधिगम के सिद्धान्तों पर आधारित किया जा सकता है। शिक्षण सिद्धान्तों को अधिगम के सिद्धान्तों पर आधारित किया गया है।

अधिगम सिद्धान्तों ने अधिगम के कुछ नियम प्रदान किए हैं, जिनके ऊपर शिक्षण के सिद्धान्तों को आधारित किया जा सकता है। ये नियम है- अधिगम, उद्देश्य केन्द्रित, क्रियाशील एवं सृजनात्मक अनुकूलन से प्रेरित आदि। इस प्रकार अधिगम के नियमों का प्रयोग करके, शिक्षण प्रक्रिया में सुधार उत्पन्न किया जा सकता है, जो शिक्षार्थी द्वारा भविष्य में दृष्टिगत गहन अधिगम के परिणामस्वरूप दृष्टिगत होता है।

6. दोनों कलाएँ हैं

शिक्षण विशेषतः एक कला है। जब कोई शिक्षक इस कला को प्राप्त कर लेता है, तो यह कार्य उसके लिए सुगम एवं प्रेमपूर्ण हो जाता है। इस प्रकार अधिगम भी एक कला है। यदि कोई इसके लिए प्रेम उत्पन्न कर लेता है, तो अधिगम की प्रक्रिया उसके लिए न केवल उत्साहपूर्ण हो जाती है, बल्कि रूचिप्रद भी हो जाती है।

1.14 शिक्षण एवं अधिगम में अन्तर

शिक्षण एवं अधिगम दो भिन्न-भिन्न धारणाएँ हैं। उपरोक्त समानाताओं के अतिरिक्त इनमें निम्नलिखित असमान्ताएँ दृष्टिगत होती है-

1. साधारण रूप से शिक्षक की क्रियाओं को शिक्षण एवं विद्यार्थियों की क्रियाओं को अधिगम कहा जाता है।
2. शिक्षण एक सामाजिक कार्य है जबकि अधिगम, एक व्यक्तिगत कार्य है। अधिगम में शिक्षार्थी की प्राथमिकता एक केन्द्रीय बिन्दु है।
3. शिक्षण एक कार्य केन्द्रित प्रक्रिया है, जबकि अधिगम एक प्राप्ति-केन्द्रित क्रिया हैं। शिक्षण क्रियाओं की एक प्रणाली है, जिसका परिणाम अधिगम होता है।
4. शिक्षण क्रियाओं के एक नेटवर्क (जाल) का प्रयोग करता है जैसे कि भाषण, प्रदर्शनी, निर्देशन आदि, जो अन्तर्क्रियात्मक प्रक्रिया का रूप प्रदान करता है। दूसरी ओर अधिगम एक एकाकी कार्य है अर्थात् एकाकी वैयक्तिक क्रिया।
5. शिक्षण स्वतन्त्र प्रक्रिया नहीं है, जबकि अधिगम एक स्वतन्त्र प्रक्रिया है। बेशक कई बार शिक्षा भी स्वतन्त्र प्रक्रिया नहीं होती।
6. शिक्षण एवं अधिगम औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रकार के हो सकते हैं, किन्तु शिक्षण विशेषतः औपचारिक प्रक्रिया होती है तथा अधिगम अनौपचारिक होता है।
7. शिक्षण एक सजीव प्रक्रिया है, इससे संचार व्यवस्था प्रबल होती है। अधिगम में संचार कौशलों का प्रयोग नहीं किया जाता।
8. शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक एवं शिक्षार्थी, दोनों के व्यवहार में परिवर्तन किया जा सकता है, किन्तु अधिगम प्रक्रिया में, केवल शिक्षार्थी के व्यवहार में ही परिवर्तन किया जा सकता है।
9. शिक्षण एक पक्षीय प्रक्रिया नहीं है, किन्तु अधिगम एक पक्षीय हो सकता है। शिक्षण में शिक्षक एवं विद्यार्थियों में अन्तर्क्रिया होती है, जबकि अधिगम पूर्णतः अन्तर्क्रिया से रहित एक पक्षीय क्रिया हो सकती है।
10. सम्पूर्ण शिक्षण अधिगम नहीं है। यह अनिवार्य नहीं कि कोई भी शिक्षण कार्य, किसी न किसी प्रकार के अधिगम में समाप्त हो। हम अनुभवों, स्वाध्याय, स्वशिक्षा आदि द्वारा भी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

इन असमानताओं को देखते हुए स्मिथ ने कहा था-

यह अनिवार्य नहीं कि अधिगम, शिक्षण द्वारा ही उत्पन्न हो, क्योंकि शिक्षण एक वस्तु है एवं अधिगम इससे पूर्णतः भिन्न वस्तु है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

1.15 शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की आवश्यकता/महत्त्व

बर्टन के अनुसार, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की आवश्यकता निम्नांकित कारणों के परिणामस्वरूप है–

1. शिक्षण तभी प्रभावशाली हो सकता है, जब इसे अधिगम की प्रक्रिया से सम्बन्धित करते हैं।
2. शिक्षण लक्ष्य प्रधान प्रक्रिया है। इसी कारण उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप से निर्धारित करके, शिक्षण की ऐसी क्रियाओं की व्यवस्था की जा सकती है, जो सम्भावित व्यवहार परिवर्तन उत्पन्न करने में सफल हो सके। सम्भावित व्यवहार परिवर्तन ही अधिगम है।
3. शिक्षण सिद्धान्तों का प्रतिपादन, अधिगम सिद्धान्तों की सहायता द्वारा किया जा सकता है।
4. शिक्षण के उद्देश्य तब तक पूर्ण नहीं हो सकते, जब तक उन्हें अधिगम की परिस्थितियों से सम्बन्धित न किया जाए।
5. अधिगम की कुछ उपयुक्त स्थितियों को उत्पन्न करने के लिए हमें शिक्षण सहायक सामग्री का निर्माण एवं प्रयोग करना होगा।
6. अनुकूल एवं प्रभावशाली शिक्षण के लिए, उपयुक्त अधिगम की स्थिति एवं अवस्था को उत्पन्न करना चाहिए।
7. सम्बन्धों के ज्ञान में एक निपुण शिक्षण के लिए ऐच्छिक प्रवृत्ति के शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान कर वैसे ही शिक्षक तैयार किए जा सकते हैं।
8. दोनों के सम्बन्धों की धारणा शिक्षा के सिद्धान्तों, लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को उचित परिप्रेक्ष्य में समझने में सहायक होगी।
9. अधिगम अनुभव में शिक्षार्थी का केन्द्रीय स्थान होता है। इसी कारण शिक्षण द्वारा शिक्षार्थी की प्रकृति को ध्यान में रखना आवश्यक है।
10. अधिगम सिद्धान्तों से स्पष्ट होता है कि बुद्धि या योग्यता आदि के सम्बन्ध में वैयक्तिक भिन्नताओं का अस्तित्व होता है। इसी कारण विशिष्ट बच्चों की देखभाल के लिए विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है।
11. शिक्षा के अधिकांश सिद्धान्तों में अभिप्रेरणा को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। अभिप्रेरणा को चार कारक प्रभावित करते हैं– जागृति, सम्भावना, उत्साह एवं अनुशासन, ये कारक परस्पर अंतर्सम्बन्धित एवं अंतः निर्भर है। शिक्षक को पुरस्कार एवं दण्ड का प्रयोग विद्यार्थियों के व्यवहार को नियन्त्रित करने के लिए किया जाना चाहिए।
12. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का ज्ञान सेवाकालीन एवं पूर्व सेवाकालीन दोनों प्रकार के शिक्षकों के लिए अत्यन्त लाभदायक है। छात्र–शिक्षकों को इसकी आवश्यकता पाठ्य–बिन्दुओं की तैयारी के लिए होती है। सेवाकालीन शिक्षक शिक्षण क्रियाओं का नियोजन करता है, जो उचित अधिगम परिस्थितियों का निर्माण करके, शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होती है।
13. अधिगम के स्थानान्तरण को अनुभवों के साधारणीकरण एवं एक समान कारकों के सिद्धान्तों को प्रयोग करके शोधित किया जा सकता है।
14. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सम्पूर्ण शिक्षण एवं अधिगम में केन्द्रीय तत्त्व है। यह परिवर्तन उत्पन्न करने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा आवश्यक अधिगम को प्राप्त किया जा सकता है। इसमें शिक्षक एवं विद्यार्थी के प्रयत्न सम्मिलित हैं एवं प्रक्रिया के परिणामस्वरूप विद्यार्थी के व्यवहार में परिवर्तन उत्पन्न होता है।

एक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया अवश्य प्रभावशाली एवं निपुण होनी चाहिए। शिक्षण प्रभावशीलता की धारणा, विद्यार्थियों की प्राप्तियों से सम्बन्धित है। प्रभावशीलता का अर्थ है– पूर्व निर्धारित परिणामों की प्राप्ति। यह समय, व्यय एवं प्रयत्नों जैसे कारकों की अवहेलना करके आवश्यक अधिगम को निर्मित करता है। इस प्रक्रिया को मूल्य–प्रभावशीलता आदि के लिए स्थापित करना आवश्यक है।

1.16 शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कारक

एन. एल. गेज का विश्वास है कि शिक्षा मनोविज्ञान का केन्द्र बिन्दु शिक्षण होना चाहिए, जबकि शिक्षा मनोविज्ञान का केन्द्र बिन्दु अधिगम होता है। शिक्षण में मनोवैज्ञानिक कारकों का प्रयोग किया जाता है, जिससे छात्रों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन किया जा सकता है। गेज ने मनोवैज्ञानिक कारकों को तीन प्रकार का बतलाया है–

1. व्यवहार परिवर्तन करने वाले कारक
2. अधिगम परिस्थितियाँ (कारक के रूप में)
3. ज्ञानात्मक कारक

1. व्यवहार परिवर्तन करने वाले कारक

व्यवहार परिवर्तन में मनोविज्ञान की शक्तियों में अभिप्रेरणा का विशेष महत्त्व है। अभिप्रेरणा के बिना कोई अधिगम नहीं हो सकता। अतः शिक्षण में अभिप्रेरणा की व्यवस्था करना नितान्त आवश्यक होता है। अभिप्रेरणा आन्तरिक शक्ति होती है, जो छात्रों के व्यवहारों के लिये शक्ति प्रदान करती है और उनकी अनुक्रियाओं को तीव्र करती है। प्रभावशाली कक्षा–शिक्षण समुचित अभिप्रेरणाओं के प्रयुक्त करने पर निर्भर होता है। अभिप्रेरणा का रूप बाह्य तथा आन्तरिक दोनों ही होता है। छोटे बालकों के लिये बाह्य अभिप्रेरणा, किशोरों के लिये बाह्य एवं आन्तरिक दोनों तथा प्रौढ़ छात्रों के लिए आन्तरिक प्रेरणा अधिक प्रभावशाली होती हैं। व्यवहार परिवर्तन में वातावरण को अधिक महत्त्व दिया जाता है। शिक्षण को क्रियाओं द्वारा ऐसा वातावरण उत्पन्न करना चाहिये जिससे छात्र अपेक्षित अनुक्रियाएँ कर सके।

मनोवैज्ञानिक आन्तरिक अभिप्रेरणा को अधिक महत्त्वपूर्ण मानते हैं, क्योंकि इनके द्वारा व्यवहार–परिवर्तन स्थायी होता है। शिक्षण में छात्रों के कार्यों की प्रशंसा करना, अच्छे कार्यों के लिये पारितोषिक देना, परीक्षा में सफलता प्राप्त करना, छात्रों के गृह–कार्यों का अंकन करना अथवा ग्रेड देना आदि क्रियाएँ छात्रों के व्यवहार परिवर्तन में सहायक होती है। प्रौढ़ छात्रों के आकांक्षा स्तर को ऊँचा करने से उनकी निष्पत्तियों में वृद्धि होती है। आकांक्षा स्तर अभिप्रेरणा का कार्य करता है। अध्ययन कार्य में अधिक लगन हो जाती है।

अनुदेशन की नवीन आव्यूह की प्रमुख विशेषता यह है कि वे छात्रों की अनुक्रियाओं को पुनर्बलन प्रदान करती हैं, उनकी अनुक्रिया को तीव्र करती है

और अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन में सहायक होती है।

2. अधिगम परिस्थितियाँ (कारक के रूप में)

बिलियम एच. बर्टन तथा एन. एल. गेज का मत है कि कोई भी अधिगम का सिद्धान्त अपने में पूर्ण नहीं है, जो अधिगम की व्यापक व्याख्या करता हो, क्योंकि अधिगम सिद्धान्त की अपेक्षा उसके प्रयोग की परिस्थिति अधिक महत्त्वपूर्ण है। शिक्षण में अधिगम सिद्धान्त उतने उपयोगी सिद्ध नहीं हो सके, जितनी की अधिगम परिस्थितियाँ सफल रही है। गेने ने अपनी पुस्तक में आठ अधिगम की परिस्थितियों का उल्लेख किया है। शिक्षण की युक्तियों के प्रयोग की दृष्टि से आई. के. डेवीज ने पाँच अधिगम परिस्थितियों को महत्त्व दिया है।

शिक्षण क्रियाओं का लक्ष्य समुचित अधिगम परिस्थितियाँ उत्पन्न करना है। मनोवैज्ञानिकों ने अधिगम सिद्धान्तों के प्रतिपादन के लिये विशिष्ट परिस्थितियाँ उत्पन्न की हैं। शिक्षण की क्रिया का सम्बन्ध अधिगम के स्वरूपों से घनिष्ठ रूप में होता है। अधिगम परिस्थितियाँ छात्रों के व्यवहार परिवर्तन के लिये उत्तरदायी होती है।

3. ज्ञानात्मक कारक

मानव व्यवहार तीन प्रकार के होते हैं– ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक। शिक्षण की समस्त प्रक्रियाओं का लक्ष्य इन्हीं तीन पक्षों का अधिकतम विकास करना है। अधिगम के भी यही तीन रूप माने जाते हैं। शिक्षण में जिन प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है वह भी तीन ही प्रकार की होती है–

1. ज्ञान के लिये पद्धतियाँ–जैसे व्याख्यान
2. करने के लिये पद्धतियाँ–जैसे प्रयोगात्मक
3. अनुभूति के लिये पद्धतियाँ–जैसे नाटक, चलचित्र

इस प्रकार शिक्षण में जो क्रियायें की जाती हैं वे तीन प्रकार की होती हैं जिनका सम्बन्ध ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक पक्षों के विकास से होता है। ज्ञानात्मक पक्ष के अधिकतम विकास के लिये स्मृति स्तर से चिन्तन स्तर तक के शिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिये। शिक्षण के विभिन्न स्तरों के शिक्षण से विभिन्न अधिगम, परिस्थितियाँ उत्पन्न की जाती हैं, जिनसे ब्लूम के ज्ञान उद्देश्य से मूल्यांकन अथवा सृजनात्मक उद्देश्यों तक विकास किया जाता है।

1.17 शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का शिक्षा में योगदान

शिक्षण अधिगम प्रकिया आज शिक्षण व्यवसाय का महत्त्वपूर्ण अंग बन गई है। इसका योगदान इस प्रकार है–

1. यह नवीन अधिगम पर बल देती है।
2. शिक्षा को द्विमुखी प्रक्रिया की अन्तःक्रिया के रूप में स्वीकार करती है।
3. शिक्षण के अनेक प्रारूप विकसित हुए हैं।
4. बालकों के गुणों का अधिगम में उपयोग किया जाता है।
5. अनेक नवीन प्रत्ययों का विकास इसके द्वारा होता है।
6. शिक्षण की दशाओं में इस अभिगमन के द्वारा परिवर्तन हुआ है।
7. सीखने की दशाओं में भी परिवर्तन आया है। अधिगम हेतु परिपक्वता पर ध्यान दिया जाने लगा है।
8. अनेक प्रकार के शैक्षिक आविष्कार हुए हैं।
9. अभिप्रेरणा की आन्तरिक रचना, योग्यता तथा उद्दीपन में भी अन्तर आया है।
10. अधिगम की विभिन्न शैलियाँ विकसित हुई हैं।
11. विषयों के शिक्षण में अर्थ ग्रहण को महत्त्व दिया जाने लगा है।
12. शैक्षिक लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से निर्धारित किया जाने लगा है।
13. सार्थक अधिगम पर बल दिया जाने लगा है।
14. मानव की ज्ञान तथा बौद्धिक योग्यता तथा क्षमता का विकास किया जाने लगा है।
15. शिक्षा सन्दर्भ सामाजिक हो गया है।
16. शिक्षण दर्शन एवं सिद्धान्तों का निर्माण होने लगा है।

मारिस एल. बिग के शब्दों में, विवेकपूर्ण चिंतन जो सही क्रियाओं को जन्म देगा संकल्प एवं इच्छाशक्ति के मूल से अनुप्राणित होता है। जो अध्यापक विचारों की सही शृंखला का निर्माण करता है, वह सही आचरण का अनुसरण करता है। अतः निर्देश का वास्तविक कार्य ज्ञान देना मात्र नहीं है, अपितु आन्तरिक अनुशासन या संकल्प को प्रस्तुत विचारों के अनुसार ढ़ालना है।

1.18 निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षण एवं अधिगम परस्पर सम्बन्धित एवं आधारित है। शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक एवं अधिगम समान स्तरीय है। जिस प्रकार का शिक्षण होगा उसी प्रकार अधिगम होगा। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में, शिक्षण अधिगम का पूरक है तथा ये एक सिक्के के दो पहलू हैं, किन्तु इन दोनों धारणाओं की असमानताओं से सिद्ध होता है कि शिक्षण एवं अधिगम, दो विभिन्न क्रियाएँ हैं। शिक्षण एक सामाजिक सिद्धान्त है एवं अधिगम एक मनोवैज्ञानिक। इनका विश्लेषण अनुभाविक एवं वैज्ञानिक, दोनों रूपों में किया जा सकता है। दोनों के लिए भिन्न–भिन्न सिद्धान्त एवं नियम है, किन्तु दोनों पारस्परिक सिद्धान्तों पर आधारित हैं। यही दोनों की विडम्बना है। अधिगम, शिक्षण के सिद्धान्तों की सहायता प्राप्त करता है। दोनों परस्पर बोध में सहायक है।

इस प्रकार, उपरोक्त विवेचना के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यद्यपि शिक्षण एवं अधिगम में कुछ समानताएँ तथा कुछ असमानताएँ हैं, तथापि ये दोनों प्रक्रियाएँ पारस्परिक रूप से पूर्णतः सम्बन्धित हैं।

****

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक
का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण
प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती
है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री
PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट
www.praganya.org
से ही डाउनलोड करें।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

अभ्यासार्थ प्रश्न

1. विद्यालयी स्तर पर शिक्षण से तात्पर्य है–
(1) पाठ्य–पुस्तकों में दी गई सूचनाएँ प्रदान करना
(2) प्रश्न पूछना एवं परीक्षा लेना
(3) अच्छे अंकों के साथ परीक्षा में पास होने के लिए छात्रों को तैयार करना
(4) उनके चहुँमुखी विकास के लिए उनकी प्रतिभाओं को विकसित करना

2. शिक्षण का सत्तावादी स्तर है–
(1) शिक्षक केन्द्रित (2) छात्र केन्द्रित
(3) प्रधानाध्यापक केन्द्रित (4) अनुभव केन्द्रित

3. प्रभावी शिक्षण–प्रक्रिया में सबसे महत्त्वपूर्ण कारक है–
(1) शिक्षक एवं विद्यार्थियों द्वारा प्रदर्शित समय की पाबन्दी
(2) शिक्षक द्वारा विषय पर अधिकार
(3) शिक्षक–विद्यार्थी संवाद
(4) पाठ्यक्रमों का समय पर पूर्ण होना

4. आज शिक्षण है, एक–
(1) सम्माननीय व्यवसाय (2) चुनौतीपूर्ण व्यवसाय
(3) आरामदायक व्यवसाय (4) आसान व्यवसाय

5. प्रभावी शिक्षण प्रक्रिया का न्यूनतम सम्बन्ध होता है–
(1) रटन्त विद्या से (2) गृहकार्य से
(3) समूह–चर्चा से (4) समस्या–समाधान से

6. कक्षा शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु अत्यावश्यक है–
(1) दैनिक पाठ योजना (2) इकाई योजना
(3) संस्थागत योजना (4) त्रैमासिक योजना

7. शिक्षण–अधिगम के मध्य सम्बन्ध है–
(1) शिक्षण सोद्देश्य प्रक्रिया है, जो अपेक्षित अधिगम तक पहुँचाती है।
(2) शिक्षण व अधिगम के योग से प्रभावी शिक्षा का विकास होता है।
(3) शिक्षण सिद्धान्तों के विकास में अधिगम सिद्धान्तों का अत्यधिक महत्त्व है।
(4) उपर्युक्त सभी

8. एक शिक्षक का शिक्षण सर्वाधिक प्रभावी होगा–
(1) गाँव या कस्बों में (2) शहरों में
(3) कहीं भी (4) अपने क्षेत्र में

9. **शिक्षण एक सम्बन्ध है, जो विद्यार्थी के विकास में सहायता देता है।** यह परिभाषा है–
(1) एन. एल. गेज की (2) रायबर्न की
(3) क्लार्क की (4) ब्रूबेकर की

10. शिक्षण प्रक्रिया में चरों की संख्या है–
(1) चार (2) दो
(3) दस (4) तीन

11. शिक्षण का पहला चरण है–
(1) पहले से योजना बनाना
(2) पाठ्य–सामग्री को सुसंगठित करना
(3) विद्यार्थियों के बैकग्राउण्ड को जानना
(4) कोई नहीं

12. आपका **व्यक्तिगत शिक्षण** से क्या अभिप्राय है?
(1) बालकों को प्राइवेट ट्यूशन देना
(2) बालकों को उनकी योग्यता के क्रम में पढ़ाना
(3) बालकों को एक–एक करके पढ़ाना
(4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

13. एक शिक्षक का प्रथम कर्त्तव्य है–
(1) विद्यालय का विकास (2) राष्ट्र का विकास
(3) स्वयं का विकास (4) बालक का विकास

14. निम्नलिखित में से ..... के अतिरिक्त सभी के कारण अधिगम अक्षमता उत्पन्न हो सकती है।
(1) शिक्षक की शिक्षण–शैली
(2) जन्म से पहले माँ द्वारा मदिरा–सेवन
(3) मन्दबुद्धिता
(4) शैशवकाल के समय दिमागी बुखार

15. गेज के अनुसार, शिक्षण की प्रक्रिया मुख्यतया है–
(1) सामाजिक (2) शारीरिक
(3) विश्लेषणात्मक (4) मनोवैज्ञानिक

16. प्रभावी शिक्षण के लिए सर्वाधिक आवश्यक है–
(1) व्यक्ति का व्यक्तित्व (2) उसकी अभिव्यक्ति क्षमता
(3) उसका ज्ञान (4) उसका समर्पण

17. एक उत्तम शिक्षण की विशेषता है–
(1) प्रजातान्त्रिक आदर्शों के प्रति अनुकूलन
(2) अपेक्षित सूचनाओं का आदान–प्रदान करना
(3) निर्देशात्मकता
(4) उपर्युक्त सभी

18. एक सशक्त विद्यालय अपने शिक्षकों में निम्नलिखित योग्यताओ में से किसे सर्वाधिक बढ़ावा देगा?
(1) प्रतिस्पर्धात्मक अभिवृत्ति (2) परीक्षण करने की प्रवृत्ति
(3) स्मृति (4) अनुशासित स्वभाव

1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.	9.	10.	11.	12.	13.	14.	15.	16.	17.	18.				
(4)	(1)	(4)	(2)	(1)	(1)	(4)	(4)	(2)	(4)	(1)	(2)	(4)	(1)	(3)	(3)	(4)	(1)				

19. शिक्षण अधिगम के अन्तर्गत शिक्षक का प्रमुख कार्य है–
(1) बालक को सीखने के लिए अभिप्रेरित करना
(2) बालक को पढ़ाना
(3) बालक को खेलने से रोककर उसे अध्ययन में लगाना
(4) बालक को केवल पाठ्य-पुस्तक से पढ़ने के लिए प्रेरित करना

20. निम्न में से कौन शिक्षण-अधिगम का स्तर नहीं है?
(1) विभेदीकरण स्तर (2) स्मृति स्तर
(3) चिन्तनशील स्तर (4) समझ स्तर

21. शिक्षण प्रक्रिया की प्रमुख तीन प्रावस्थाओं में से किस प्रावस्था में शिक्षण कार्य सम्पादित किया जाता है?
(1) क्रियापश्च प्रावस्था
(2) अंतःक्रिया प्रावस्था
(3) क्रिया पूर्व प्रावस्था
(4) इनमें से कोई नहीं

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

22. अन्तरपरक अनुदेशन है–
(1) शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समूहीकरण के विविध रूपों का प्रयोग करना
(2) कक्षा में प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए कुछ अलग करना
(3) अव्यवस्थित अथवा स्वच्छन्द शिक्षार्थी गतिविधियाँ
(4) ऐसे समूहों का प्रयोग जो कभी नहीं बदलते

23. शिक्षण को आप मानते हैं–
(1) एक अन्तः प्रक्रिया
(2) सीखने में सहायक प्रक्रिया
(3) एक परिपक्व एवं दूसरे अपरिपक्व व्यक्ति के मध्य सम्बन्ध
(4) उपर्युक्त सभी

24. **गतिविधि आधारित शिक्षण** ..... पर बल देता है।
(1) अनुशासित कक्षा
(2) सुनिश्चित समय-अवधि में गतिविधि पूरी करने
(3) सभी विद्यार्थियों द्वारा सक्रिय भागीदारिता
(4) गतिविधि के समाप्त होने के बाद परीक्षा लेने

25. एक शिक्षिका अपने-आप से कभी प्रश्नों के उत्तर नहीं देती। वह अपने विद्यार्थियों को उत्तर देने के लिए समूह चर्चाएँ और सहयोगात्मक अधिगम अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह उपागम ..... के सिद्धान्त पर आधारित है।
(1) सक्रिय भागीदारिता
(2) अनुदेशात्मक सामग्री के उचित संगठन
(3) अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करना और भूमिका-प्रतिरूप बनना
(4) सीखने की तत्परता

26. शिक्षण क्रिया तब तक अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सकती, जब तक छात्र–
(1) अनुशासित न हो (2) निष्ठावान न हो
(3) इसके लिए इच्छुक न हो (4) अन्वेषी न हो

27. एक शिक्षक को अपने विद्यार्थियों की क्षमताओं को समझने का प्रयास करना चाहिए। निम्नलिखित में से कौनसा क्षेत्र इस उद्देश्य के साथ सम्बद्ध है?
(1) शिक्षा समाजशास्त्र (2) सामाजिक दर्शन
(3) मीडिया मनोविज्ञान (4) शिक्षा मनोविज्ञान

28. बच्चे के विकास के सिद्धान्तों को समझना शिक्षक की सहायता करता है–
(1) शिक्षार्थी की आर्थिक पृष्ठभूमि को पहचानने में
(2) शिक्षार्थियों को क्या पढ़ाना चाहिए? यह औचित्य स्थापित करने में
(3) शिक्षार्थियों की भिन्न अधिगम-शैलियों को प्रभावी रूप में सम्बोधित करने में
(4) शिक्षार्थी के सामाजिक स्तर को पहचानने में

29. एक शिक्षक द्वारा बच्चों को सिखाते समय निम्नलिखित में से किस पर ध्यान देना चाहिए?
1. कक्षा के प्रकार
2. शिक्षण पद्धति एवं निर्देशन
3. बालकों के वर्गीकरण पर
(1) केवल 1 (2) 1 एवं 2
(3) 2 एवं 3 (4) ये सभी

30. ..... परिस्थितियों के अन्तर्गत वे परिस्थितियाँ आती हैं, जिनके द्वारा छात्र ..... कर नवीन ज्ञान, कौशल तथा अभिवृत्ति अर्जित करता है।
(1) शिक्षण; प्रयोग (2) शिक्षण; अन्तःक्रिया
(3) अधिगम; अन्तःक्रिया (4) अधिगम; प्रयोग

31. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अधिगमकर्ता से सम्बन्धित निम्नलिखित में से किस सिद्धान्त का पालन किया जाता है?
1. व्यक्तिगत विभिन्नता का सिद्धान्त
2. छात्र केन्द्रिता का सिद्धान्त
3. सक्रिय सहयोग का सिद्धान्त
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) केवल 3 (4) उपरोक्त सभी

32. शिक्षक की सबसे मुख्य जिम्मेदारी है–
(1) पाठ-योजना तैयार करना और उसके अनुसार पढ़ाना
(2) यथासम्भव क्रियाकलापों का आयोजन करना
(3) कठोर अनुशासन बनाए रखना
(4) विद्यार्थियों की विभिन्न अधिगम शैलियों के अनुसार सीखने के मौके उपलब्ध कराना

19.	20.	21.	22.	23.	24.	25.	26.	27.	28.	29.	30.	31.	32.								
(1)	(1)	(2)	(1)	(4)	(3)	(1)	(3)	(4)	(3)	(4)	(3)	(4)	(4)								

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

33. अध्यापन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी के ..... को उचित दिशा में प्रभावित करना अर्थात उसके ..... को उचित दिशा में प्रभावी बनाना होता है।
(1) व्यक्तित्व; ज्ञान (2) व्यवहार; अधिगम
(3) व्यक्तित्व; परीक्षाफल (4) व्यवहार; विद्यालय

34. अभिक्रमित अनुदेशन का जन्म माना जाता है–
(1) ऑपरेन्ट कन्डीशनिंग से (2) क्लासीकल कन्डीशनिंग से
(3) उद्दीपन अनुक्रिया अधिगम से (4) 2 एवं 3 से

35. अधिगम की प्रकिया में निम्नलिखित में से कौनसी विशेषता होती है?
(1) व्यवहार में परिवर्तन (2) परिपक्वन से नहीं
(3) अर्जित (4) उपरोक्त सभी

36. शिक्षक को कक्षा–शिक्षण के दौरान इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि–
(1) छात्र प्रसन्नतापूर्वक पढ़ें।
(2) कोई छात्र इधर–उधर ध्यान न दे।
(3) पाठ पढ़ाने का कार्य कालांश के समय में पूरा हो जाए।
(4) उपर्युक्त सभी

37. वृहद् कक्षा शिक्षण सम्बन्धित है–
(1) बड़े–बड़े कक्षा कक्ष से
(2) शिक्षकों की अधिकता से
(3) छात्रों के कम होने से
(4) कक्षा में निर्धारित छात्रों की संख्या से अधिक छात्र

38. सर्वप्रथम सूक्ष्म अध्यापन का प्रारम्भ किया गया–
(1) 1965 में (2) 1942 में
(3) 1967 में (4) 1963 में

39. **प्रश्न कौशल के ऊपर समस्त शैक्षणिक क्रिया की कुंजी निर्भर करती है।** यह परिभाषा है–
(1) कॉलविन की (2) पार्कर की
(3) एलेन की (4) क्विलिन तथा हन्ना की

40. **प्रश्न सबसे बड़ा उत्तेजक है और यह अध्यापक को शीघ्र ही उपलब्ध हो जाता है।** यह कहा है–
(1) जॉन डीवी ने (2) कॉलविन ने
(3) टी. रेमन्ट ने (4) उपरोक्त में से कोई नहीं

41. निम्नलिखित में से अच्छे प्रश्नों की विशेषता नहीं है–
(1) स्पष्टता होना (2) निश्चितता नहीं होना
(3) विशिष्टता होना (4) सोद्देश्य होना

42. आपको शिक्षण प्रशिक्षण से क्या लाभ होगा?
(1) नौकरी मिल जाएगी। (2) प्रमाण–पत्र मिल जाएगा।
(3) सांसारिक ज्ञान बढ़ेगा। (4) शिक्षण की योग्यता बढ़ेगी।

43. शिक्षण की निम्नलिखित तकनीकों में से किसमें मूल प्रावृत्तिक–अभिप्रेरण का गुण पाया जाता है?
(1) कथन–तकनीक
(2) छात्रों से अन्योन्यक्रिया
(3) छात्रों को करके सीखने के लिए कहना
(4) खेल–पद्धति

44. निम्न में से कौन आत्म अनुदेशन पदार्थ का उदाहरण है?
(1) अभिक्रमित अनुदेशन (2) कम्प्यूटर सहायी अनुदेशन
(3) शिक्षण मशीन (4) उपरोक्त सभी

45. निम्न में से अनुदेशन प्रौद्योगिकी की विषय वस्तु नहीं है–
(1) अभिक्रमित अनुदेशन (2) समूह शिक्षण
(3) उअख/उअङ (4) मीडिया तथा छपाई उदाहरण

46. अभिक्रमित अनुदेशन का विचार सर्वप्रथम दिया गया था–
(1) प्रेसी द्वारा (2) स्किनर द्वारा
(3) रेमन्ट द्वारा (4) स्काउडर द्वारा

47. अभिक्रमित अधिगम में अधिगमकर्ता के व्यवहार को ढाला जाता है–
(1) पुनर्बलन द्वारा (2) नियन्त्रण द्वारा
(3) शृंखला क्रिया द्वारा (4) उपरोक्त कोई नहीं

48. अध्यापक प्रशिक्षण इस दृष्टि से उपयोगी है कि इससे–
(1) शिक्षण के सिद्धान्तों का ज्ञान मिलता है।
(2) शिक्षण–कौशलों का बोध होता है।
(3) शिक्षण–प्रक्रिया को एक दिशा मिलती है।
(4) प्रोन्नति के अवसर प्राप्त होते हैं।

49. अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों को कौनसी संस्था मान्यता प्रदान करती है?
(1) एन.सी.टी.ई. (2) एन.सी.ई.आर.टी.
(3) ए.आइ.सी.टी.ई. (4) एस.सी.ई.आर.टी.

50. स्मृति स्तर के शिक्षण में प्रयुक्त परीक्षण है–
(1) वस्तुनिष्ठ परीक्षण (2) निबन्धात्मक परीक्षण
(3) मौखिक परीक्षण (4) उपरोक्त तीनों

51. बोध स्तर के शिक्षण में प्रयुक्त परीक्षण है–
(1) शिक्षण में तार्किक क्रम बनाये रखना चाहिये।
(2) छात्रों को नियमित पृष्ठापोषण दिया जाना चाहिये।
(3) छात्रों के आकांक्षा स्तर को बढ़ाना चाहिये।
(4) उपरोक्त सभी

33.	34.	35.	36.	37.	38.	39.	40.	41.	42.	43.	44.	45.	46.	47.	48.	49.	50.	51.			
(2)	(1)	(4)	(4)	(4)	(4)	(3)	(2)	(2)	(4)	(2)	(4)	(4)	(1)	(1)	(2)	(1)	(4)	(4)			

52. शिक्षण रणनीति में निम्न में से किस पर बल दिया जाता है?
(1) मनोविज्ञान के अनुप्रयोग पर
(2) प्राकृतिक विज्ञान के अनुप्रयोग पर
(3) प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग पर
(4) उपरोक्त सभी

53. सेवा–कालीन शिक्षक प्रशिक्षण का उद्देश्य है–
(1) शिक्षकों का बौद्धिक विकास
(2) कुछ समय के लिए कार्य मुक्ति
(3) शिक्षक को तरोताजा करना
(4) नई–नई तकनीकी का ज्ञान करना

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

54. शिक्षण आपके लिए है–
(1) रोजगार का साधन
(2) समाज सेवा का साधन
(3) आदर प्राप्त करने का साधन
(4) आत्म–सन्तोष प्राप्ति का साधन

55. शिक्षण की प्रकृति से सम्बन्धित निम्नलिखित कथनों में से सत्य कथन चुनें–
1. शिक्षण की प्रकृति कलात्मक तथा वैज्ञानिक दोनों ही है।
2. शिक्षण नियोजन तथा मूल्यांकन क्रियाओं की प्रकृति वैज्ञानिक अधिक है।
3. शिक्षण का प्रक्रिया पक्ष कलात्मक है।
4. शिक्षक अपने कौशल का प्रयोग करता है।
कूट–
(1) 1, 2 और 3 (2) 3 और 4
(3) 1, 3 और 4 (4) ये सभी

56. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. शिक्षण और प्रशिक्षण एक नहीं हैं। प्रशिक्षण तो शिक्षण का ही एक अंग मात्र है।
2. प्रशिक्षण में जितना अधिक से अधिक बुद्धि का प्रदर्शन होगा, प्रशिक्षण उतना ही शिक्षण प्रक्रिया के निकट होता चला जाएगा।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

57. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. प्रशिक्षण द्वारा कुशल कारीगर पैदा किया जा सकता है।
2. प्रशिक्षण द्वारा व्यक्ति को शिक्षा के आगामी उच्च स्तरों पर ले जाया जा सकता है।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

58. अध्यापक बनने के लिए टीचर्स ट्रेनिंग क्यों जरूरी हैं?
(1) इस काम के लिए इस परीक्षा का पास करना जरूरी है।
(2) इस ट्रेनिंग से अध्यापक को मान्यता मिलती है।
(3) इस ट्रेनिंग से उसे कक्षा–शिक्षण के मूल/आवश्यक सिद्धान्तों का ज्ञान हो जाता है।
(4) इस ट्रेनिंग से अध्यापक की अभिरूचि का पता लगता है।

59. **कथन** अनुदेशन का प्रयोग केवल ज्ञानात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु करते हैं।
कारण अनुदेशन में छात्रों एवं शिक्षकों के मध्य अन्तःक्रिया का होना आवश्यक नहीं।
कूट–
(1) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या है।
(2) कथन और कारण दोनों सही हैं, परन्तु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं है।
(3) कथन सही है, किन्तु कारण गलत है।
(4) कथन गलत है, किन्तु कारण सही है।

60. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. जब हम अनुदेशन की क्रिया में रहते हैं, तब हम शिक्षण की प्रक्रिया में भी लगे रहते हैं।
2. जब कभी भी हम शिक्षण कर रहे होते हैं, तब हम अनुदेशन भी देते हैं।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

61. अनुदेशन की क्या विशेषता होती है?
(1) परिस्थिति केन्द्रित (2) विषय–वस्तु केन्द्रित
(3) छात्र केन्द्रित (4) शिक्षक केन्द्रित

62. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. अनुदेशन सदैव छात्र केन्द्रित होता है।
2. शिक्षण आवश्यकतानुसार छात्र केन्द्रित, विषय–वस्तु केन्द्रित या शिक्षक केन्द्रित हो सकता है।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

63. अनुदेशन से आशय है–
(1) छात्रों को सूचना प्रदान करना (2) मनोरंजन प्रदान करना
(3) विद्या प्रदान करना (4) इनमें से कोई नहीं

64. निम्न में से कौन शिक्षण कुशलता से सम्बन्धित है?
(1) श्यामपट्ट पर लिखना (2) प्रश्नों को हल करना
(3) प्रश्न पूछना (4) उपर्युक्त सभी

52.	53.	54.	55.	56.	57.	58.	59.	60.	61.	62.	63.	64.									
(4)	(4)	(4)	(4)	(3)	(1)	(3)	(1)	(1)	(2)	(3)	(1)	(4)									

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

65. कौशल को सीखने में पहली अवस्था होती है–
(1) यथार्थता (2) चालाकी
(3) समन्वयन (4) अनुकरण

66. पुनर्बलन कौशल को हम क्यों प्रस्तुत करते हैं?
(1) छात्रों के प्रोत्साहन हेतु (2) शिक्षण के अग्रसरण हेतु
(3) अधिगम रूचिकर बनाने हेतु (4) उपरोक्त सभी

67. शिक्षण कौशल को अध्यापक प्रयुक्त करता है–
(1) कक्षा के अन्दर (2) कक्षा के बाहर
(3) दोनों में ही (4) कोई नहीं

68. शिक्षण कौशलों की कुल संख्या है–
(1) 24 (2) 23
(3) 22 (4) 26

69. शिक्षण कौशलों के विकास व सुधार की प्रविधि है–
(1) अनुकरणीय प्रशिक्षण (2) सूक्ष्म शिक्षण
(3) प्रशिक्षण समूह (4) अन्तःक्रिया विश्लेषण

70. शिक्षण कौशलों का अर्थ है–
(1) अनुदेशात्मक क्रियाएँ (2) शिक्षण क्रियाएँ
(3) शिक्षण व्यवहार (4) उपरोक्त सभी

71. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि–
(1) बच्चों की विकास दर भिन्न होती है और वे भिन्न तरीकों से सीख सकते हैं।
(2) शिक्षार्थी हमेशा समूहों में ही बेहतर सीखते हैं।
(3) शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में ऐसा ही बताया गया है।
(4) इससे प्रत्येक शिक्षार्थी को अनुशासित करने के लिए शिक्षकों को बेहतर अवसर मिलते हैं।

72. निम्नलिखित में से कौनसा कथन शिक्षण सफलता के लिए सर्वाधिक अनिवार्य है?
(1) शिक्षण के साथ-साथ कोई अंशकालिक कार्य किया जाए, ताकि आमदनी उत्तम हो सके।
(2) शिक्षक को विद्यालय में अनेक शैक्षिक सम्मान प्राप्त हुए हो।
(3) शिक्षक की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उत्तम हो।
(4) शिक्षक का विषय ज्ञान उत्तम हो।

73. प्रभावी शिक्षण हेतु शिक्षक **तत्परता के नियम** का अनुपालन करता है। इसका अर्थ है–
(1) बालक जिस कार्य को सीखने को तैयार है, वह उसे सीख लेगा।
(2) अध्यापक को छात्र की शंका समाधान हेतु तत्पर रहना चाहिए।
(3) ज्ञान तत्परता से नहीं, क्रिया-प्रतिक्रिया से आता है।
(4) त्वरित शिक्षण-त्वरित अधिगम।

74. यदि शिक्षार्थी पाठ के दौरान लगातार गलतियाँ करते हैं, तो शिक्षक को–
(1) अनुदेशन, कार्य, समय-सारिणी अथवा बैठने की व्यवस्था में परिवर्तन करना चाहिए।
(2) पाठ को कुछ समय के लिए छोड़ देना चाहिए और कुछ समय के बाद वापस जाना चाहिए।
(3) गलतियाँ करने वाले शिक्षार्थियों की पहचान करनी चाहिए और इस बारे में प्राचार्य से बात करनी चाहिए।
(4) गलतियाँ करने वाले शिक्षार्थियों को कक्षा-कक्ष से बाहर खड़ा कर देना चाहिए।

75. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. शिक्षण एक अन्तःप्रक्रिया है, जो शिक्षक तथा छात्रों के मध्य विशेष कार्य के लिए संचालित होती है।
2. शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसे व्यक्ति अपने जीविकोपार्जन का साधन बनाते हैं, जिन्हें शिक्षक कहते हैं।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

76. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए
1. शिक्षण एक सोद्देश्य प्रक्रिया है, जो किन्हीं विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए की जाती है।
2. शिक्षण एक विकासात्मक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा बालकों का विकास किया जाता है और उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाया जाता है।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

77. एक पी. टी. आई. क्रिकेट के खेल में अपने शिक्षार्थियों के क्षेत्ररक्षण को सुधारना चाहता है। निम्न में से कौनसी युक्ति शिक्षार्थियों को अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सर्वाधिक सहायक है?
(1) शिक्षार्थियों को क्षेत्ररक्षण का अधिक अभ्यास करवाना
(2) शिक्षार्थियों को यह बताना कि क्षेत्ररक्षण सीखना उनके लिए किस प्रकार महत्त्वपूर्ण है।
(3) बेहतर क्षेत्ररक्षण और सफलता की दर के पीछे के तर्क को स्पष्ट करना।
(4) क्षेत्ररक्षण को प्रदर्शित करना और शिक्षार्थी अवलोकन करेंगे।

78. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की दृष्टि से एक अच्छा शिक्षक वह है, जो–
(1) कक्षा में बातचीत रोकने में सफल हो जाता है।
(2) बातें करने वालों को दण्डित करता है।
(3) उदासीन है।
(4) जो सोचता है कि बातचीत का सीखने के संसाधन के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

65.	66.	67.	68.	69.	70.	71.	72.	73.	74.	75.	76.	77.	78.								
(4)	(4)	(3)	(2)	(2)	(4)	(1)	(4)	(1)	(1)	(1)	(3)	(1)	(4)								

79. एक शिक्षक को–
(1) व्याख्यान पर अधिक ध्यान देना चाहिए और ज्ञान के लिए आधार उपलब्ध कराना चाहिए।
(2) शिक्षार्थियों द्वारा की गई त्रुटियों को एक भयंकर भूल के रूप में लेना चाहिए और प्रत्येक त्रुटि के लिए गम्भीर टिप्पणी देनी चाहिए।
(3) शिक्षार्थी कितनी बार गलती करने से बचता है, इसे सफलता के माप के रूप में लेना चाहिए।
(4) जब शिक्षार्थी विचारों को सम्प्रेषित करने की कोशिश कर रहे हो, तब उन्हें ठीक नहीं करना चाहिए।

80. शिक्षण में पाठ्यक्रम सम्बन्धी क्रियाओं का प्रयोग–
(1) शिक्षण को आसान बनाने के लिए किया जाता है।
(2) शिक्षण को रोचक, सुग्राही एवं प्रभावशाली बनाने के लिए किया जाता है।
(3) शिक्षण को आकर्षक बनाने के लिए किया जाता है।
(4) शिक्षक को सहायता देने के लिए किया जाता है।

81. निम्नलिखित में से समय क्रम के अनुसार शैक्षणिक योजना निर्माण का प्रथम चरण कौनसा है?
(1) शिक्षण की सम्पूर्ण योजनाओं का निर्माण
(2) दैनिक पाठों की सूक्ष्म पाठ योजनाओं का निर्माण
(3) वृहद् इकाई पाठ योजनाओं का निर्माण
(4) शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण

82. निम्नलिखित में से अन्तःविषयी अनुदेशन का सर्वोत्कृष्ट लाभ यह है कि–
(1) विद्यार्थियों को सीखे गए ज्ञान को बहु–सन्दर्भों में अनुप्रयोग करने और सामान्यीकृत करने के अवसर दिए जाते हैं।
(2) प्रकरणों की विविधता, जिन्हें परम्परागत पाठ्यचर्या से सम्बोधित किए जाने की आवश्यकता है, से शिक्षकों के अभिभूत होने की कम सम्भावना होती है।
(3) विद्यार्थियों में विभिन्न विषय क्षेत्रों के विशेष प्रकरणों के प्रति नापसन्दगी विकसित होने की कम सम्भावना होती है।
(4) पाठ–योजना बनाने और गतिविधियों में शिक्षकों को अधिक लचीलेपन की अनुमति होती है।

83. कक्षा में शिक्षक का महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व है–
(1) विद्यालय प्रशासन का मूल्यांकन करना
(2) अन्य शिक्षकों के साथ सहयोग करना
(3) कक्षा को सामूहिक रूप से निर्देशित करना
(4) विषय वस्तु के ज्ञान को सम्प्रेषित करना

84. यदि शिक्षक कक्षा में शिक्षण के समय कोई गम्भीर त्रुटि कर जाता है, तो उसे निम्नलिखित कार्य करना चाहिए–
(1) वह अपनी त्रुटि को तुरन्त स्वीकार कर ले।
(2) वह उसे भुलाने का प्रयास करे।
(3) त्रुटि करे और भूल जाए।
(4) उसके प्रति अज्ञानी बन जाए।

****

अगर आप B.Ed, D.Ed, BSTC या शिक्षण अध्यापन के क्षेत्र में पढ़ाई कर रहे हैं तो आपसे निवेदन है कि निम्नलिखित Whatsapp No. अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में जोड़ें। अगर आपका व्हाट्सएप ग्रुप नहीं बना हुआ है तो कृपया कम से कम 20 विद्यार्थी मिलकर व्हाट्सएप ग्रुप बना लें।

UPTET - 95301 43210
MP Samvida - 95302 43210
BTET - 95302 43210
UTET - 72209 29294
JTET - 72209 29239
HTET - 72209 29266
CGTET - 72209 28969
HPTET - 72209 28535

आपके क्लास के व्हाट्सएप ग्रुप में शिक्षा संबंधी सभी प्रतियोगी परीक्षा के पेपर्स, मॉडल पेपर्स एवं अन्य अध्ययन सामग्री भेजी जाएगी। आपका शुरू से मार्गदर्शन किया जाएगा, ताकि आप प्रतियोगी परीक्षा में अतिशीघ्र सफलता प्राप्त कर सकें।

प्रगण्य प्रकाशन द्वारा CTET एवं प्रत्येक राज्य के TET (UPTET, MP Samvida, BTET, UTET, JTET, HTET, CGTET, HPTET) के लिए मॉडल पेपर की फ्री PDF प्रकाशित की जाती है। मॉडल पेपर की फ्री PDF प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित Whatsapp No. अपने कॉलेज के क्लास ग्रुप या कोचिंग के क्लास ग्रुप या अन्य स्टडी ग्रुप में जोंडे। आपके ग्रुप में मॉडल पेपर भेज दिए जाएँगें।

UPTET - 95301 43210
MP Samvida - 95302 43210
BTET - 95302 43210
UTET - 72209 29294
JTET - 72209 29239
HTET - 72209 29266
CGTET - 72209 28969
HPTET - 72209 28535

79.	80.	81.	82.	83.	84.																
(4)	(2)	(4)	(1)	(4)	(1)																

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org समूह द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के संबंधाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित हैं।

अध्याय 15

शिक्षण अधिगम की व्यूह रचना एवं विधियाँ

15.1 प्रस्तावना

व्यूह रचना या स्ट्रेटिजी शब्द का प्रचलन सैन्य विज्ञान और युद्ध कला में काफी मात्रा में किया जाता है। द्रोणाचार्य ने महाभारत के युद्ध में अभिमन्यु को घेरकर पांडवों को परास्त करने के लिए चक्रव्यूह नामक व्यूह रचना का ही आयोजन किया था। अतः युद्ध कला में इसे ऐसी प्रभावी योजनाओं और विशेष कार्य पद्धतियों के रूप में समझा तथा प्रयोग में लाया जाता है, जिनके द्वारा युद्ध को अपने पक्ष में करने में सफलता मिलती है। एक शतरंज का खिलाड़ी भी प्रभावी व्यूह रचना के सहारे ही शतरंज की बाजी जीतता है। इसी क्रम का अनुसरण करते हुए एक अध्यापक के लिए भी यही जाना और समझा जा सकता है कि उसे अगर अपनी शिक्षण यात्रा में सफलता अर्जित करनी है, तो उसे उचित और प्रभावपूर्ण शिक्षण व्यूह रचनाओं का ठीक तरह उपयोग करने में कुशलता अर्जित कर लेनी चाहिए।

www.praganya.org

15.2 शिक्षण व्यूह रचना का अर्थ एवं परिभाषा

सरल शब्दों में शिक्षण व्यूह रचनाओं से तात्पर्य ऐसी व्यूह रचनाओं या नीतियों से है, जिसे शिक्षकों द्वारा अपने शिक्षण या अनुदेशन में निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु काम में लाया जाता है। शिक्षण व्यूह रचना शब्द आँग्ल भाषा के शब्द स्ट्रेटिजी का हिन्दी रूपान्तर है। **स्ट्रेटिजी** शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के शब्द **स्ट्रेटिजिआ** से हुई है, जिसके आधार पर स्ट्रेटिजी को किसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अपनाई जाने वाली एक विशिष्ट कार्य पद्धति या योजना के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

www.praganya.org

शिक्षण व्यूह रचनाओं से अभिप्राय एक शिक्षक द्वारा विशेष रूप से निर्मित और अपनाई गई उन सभी योजनाओं, विशिष्ट कार्य पद्धतियों तथा साधनों से है, जिनके द्वारा वह अपने विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन कर उन्हें निर्धारित शिक्षण अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति में अधिक से अधिक सहायता प्रदान कर सके। ठीक इसी प्रकार की अभिव्यक्ति शिक्षण व्यूह रचना पद को परिभाषित करने में प्रसिद्ध लेखक ई स्टोंस तथा मौरिस ने अपनी पुस्तक **टीचिंग प्रैक्टिस–प्रोबलम्स एण्ड पर्सपेक्टिव्ज** द्वारा की है। उनका कथन है कि–

> शिक्षण व्यूह रचना से तात्पर्य किसी पाठ के शिक्षण हेतु अपनाई गई उस सामान्यीकृत योजना से है जिसमें संरचना, अनुदेशनात्मक उद्देश्यों के रूप में वांछित विद्यार्थी व्यवहार तथा व्यूह रचना को प्रयोग में लाने के लिए आवश्यक युक्तियों की रूपरेखा का समावेश हो।

www.praganya.org

15.3 शिक्षण व्यूह रचनाओं की मुख्य विशेषताएँ

शिक्षण व्यूह रचनाओं के अर्थ एवं परिभाषा सम्बन्धी उपर्युक्त विवरण की समीक्षा हमें इनकी निम्न मुख्य विशेषताओं एवं प्रकृति से परिचित कराने में सहायक सिद्ध हो सकती है–

1. शिक्षण व्यूह रचनाएँ ऐसी सामान्यीकृत योजनाओं, विधियों एवं तरीकों का प्रतिनिधित्व करती हैं जिनके द्वारा किसी भी विशेष शिक्षण कार्य अथवा शिक्षण पाठ को पढ़ाने के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है।
2. इससे शिक्षण कार्य या पाठ को पढ़ाने के द्वारा निर्धारित शिक्षण–अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है।
3. शिक्षण व्यूह रचनाओं का चयन और उपयोग विद्यार्थियों को शिक्षण–अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति कराने हेतु किया जाता है।
4. शिक्षण व्यूह रचनाओं के द्वारा कोई ऐसी कार्य योजना, पद्धति, प्रारूप या शिक्षण–अधिगम संरचना प्रस्तुत की जाती है जिसके अनुगमन से निर्धारित शिक्षण–अधिगम उद्देश्यों की प्रभावी ढंग से उपलब्धि ठीक तरह सम्भव हो सकती है।
5. शिक्षण व्यूह रचनाओं को ठीक तरह से उपयोग में लाने के लिए अच्छी तरह नियोजित शिक्षण युक्तियों की जरूरत पड़ती है। दूसरे शब्दों में, शिक्षण युक्तियाँ किसी एक शिक्षण व्यूह–रचना का एक अभिन्न अंग होती है।
6. किसी भी शिक्षण व्यूह रचना द्वारा सम्पादित शिक्षण–अधिगम संरचना को निम्न आकृति से भलीभाँति प्रदर्शित किया जा सकता है–

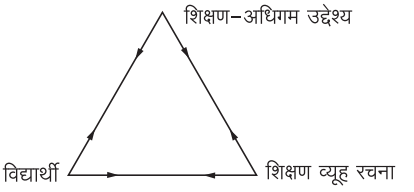

शिक्षण–अधिगम संरचना के प्रारूप को प्रदर्शित करने वाली उपर्युक्त चित्रात्मक आकृति से विभिन्न बातों की जानकारी मिलती है–

1. एक शिक्षण व्यूह रचना का निर्माण और उपयोग विद्यार्थियों को निर्धारित शिक्षण–अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता करने हेतु किया जाता है।
2. किसी भी व्यूह रचना का निर्माण और उपयोग इस दृष्टि से किया जाता है कि उसके द्वारा विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, योग्यताओं तथा रूचियों, विद्यार्थियों को पढ़ने हेतु मिलने वाली अधिगम परिस्थितियों तथा सुविधाओं और उनके द्वारा प्राप्त किए जाने वाले अधिगम उद्देश्यों सभी का ठीक से ध्यान रखा जा सके।
3. विद्यार्थियों से मिलने वाले पृष्ठपोषण के आधार पर शिक्षण व्यूह रचना में उचित संशोधन करते रहने का प्रावधान रखा जाता है।
4. शिक्षण–अधिगम उद्देश्य किसी भी शिक्षण–अधिगम संरचना के केन्द्रीय बिन्दु और लक्ष्य होते हैं, परन्तु ये पूरी तरह स्थिर और अपरिवर्तनशील हो यह बात जरूरी नहीं है। विद्यार्थियों, शिक्षण–अधिगम वातावरण तथा शिक्षण व्यूह रचना के उपयोग सम्बन्धी परिणामों के आधार पर इनमें यथानुकूल परिवर्तन किया जा सकता है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

15.4 शिक्षण व्यूह रचनाओं तथा शिक्षण विधियों में अन्तर

शिक्षण विधियाँ क्या होती हैं, हम सभी इस बात से भलीभाँति परिचित हैं। कक्षा में विद्यार्थियों को पढ़ाने हेतु अध्यापक प्रायः इन शिक्षण विधियों जैसे व्याख्यान विधि, प्रदर्शन विधि, आगमन विधि, निगमन विधि, अन्वेषण विधि, समस्या समाधान विधि आदि का प्रयोग करते रहते हैं। कोई भी विधि जो एक शिक्षक द्वारा अपने शिक्षण हेतु प्रयोग में लाई जाती है उसका यही प्रयोजन होता है कि उसके द्वारा विषयवस्तु को अच्छे से अच्छे ढंग से विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत किया जाए। इसलिए किसी विशेष विधि का चयन और उपयोग इसलिए किया जाता है कि उसके द्वारा पाठ्यक्रम से सम्बन्धित किसी एक प्रकार की विषय सामग्री को एक विशेष उपयुक्त ढ़ंग से प्रस्तुत करने में सहायता मिल सके। इसके विपरीत व्यूह रचना का चयन और उपयोग मात्र किसी विषयवस्तु के प्रभावी ढंग से प्रस्तुतीकरण के लिए ही नहीं होता, बल्कि उसके द्वारा निर्धारित शिक्षण–अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति को भी अपना लक्ष्य बनाया जाता है। इस प्रकार शिक्षण व्यूह रचना का उपयोग क्षेत्र और उसकी संरचना शिक्षण विधि की तुलना में कहीं अधिक विस्तृत होती है। इन दोनों के बीच के अन्तर को निम्न विवरण द्वारा अच्छी तरह समझा जा सकता है–

क्र. सं.	शिक्षण विधि	शिक्षण व्यूह रचना
1.	शिक्षण विधि से किसी विषयवस्तु विशेष को इस ढंग से प्रस्तुत करने में मदद मिलती है कि उसे उचित ढ़ंग से ग्रहण करने और भलीभाँति समझाने में सहायता मिल सके।	शिक्षण व्यूह रचना से इस प्रकार के शिक्षण–अधिगम वातावरण के निर्माण में सहायता मिलती है कि जिससे निर्धारित शिक्षण–अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति में विद्यार्थियों की उचित सहायता की जा सके।
2.	शिक्षण विधि के नाम से प्रचलित यह पद काफी पुराना है और इसका सम्बन्ध शिक्षण विज्ञान से है।	शिक्षण व्यूह रचना के नाम से प्रचलित यह पद अपेक्षाकृत नया है और इसका सम्बन्ध सैन्य विज्ञान और शैक्षिक तकनीकी से है।
3.	शिक्षण कार्य के सम्पादन हेतु किसी भी शिक्षण विधि का चयन विषयवस्तु विशेष की प्रकृति पर निर्भर करता है।	शिक्षण–अधिगम उद्देश्यों की प्रकृति ही यह निर्धारित करती है कि उनकी प्राप्ति हेतु किस प्रकार की व्यूह रचना काम में ली जाए।
4.	शिक्षण विधि इस धारणा पर आधारित है कि शिक्षण एक कला है।	शिक्षण व्यूह रचना इस मान्यता पर आधारित है कि शिक्षण विज्ञान है और इसकी प्रकृति काफी तकनीकी युक्त है।
5.	कोई शिक्षण विधि कितनी प्रभावशाली है इसका निर्धारण इस आधार पर किया जाता है कि विद्यार्थियों द्वारा विषयवस्तु पर कितना अधिकार है और यह पता लगाने के लिए उपलब्धि परीक्षाओं का प्रयोग किया जाता है।	कोई शिक्षण व्यूह रचना कितनी प्रभावशाली है इसका निर्धारण इस बात के आधार पर किया जाता है कि निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति किस रूप में की जा सकी है और इसका पता लगाने हेतु मानदण्ड संदर्भित परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है।
6.	शिक्षण विधि में इस बात पर जोर दिया जाता है कि विषयवस्तु के उचित प्रस्तुतीकरण हेतु किस प्रकार के शैक्षणिक कदम उठाए जाएँ।	शिक्षण व्यूह रचना में इस बात पर जोर दिया जाता है कि शिक्षण–अधिगम वातावरण के उचित आयोजन हेतु किस प्रकार की शैक्षणिक गतिविधियाँ सम्पन्न की जाएँ।
7.	शिक्षण विधि के तहत उठाए गए कदम बहुत कुछ निश्चित और अपरिवर्तनशील होते हैं। सामान्यतः इनके प्रारूपों में परिवर्तन करने की कोई बात आसानी से नहीं उठती।	शिक्षण व्यूह रचना उपयोग की दृष्टि से काफी लचीली होती है। उपलब्ध शिक्षण–अधिगम परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में निर्धारित शिक्षण–अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु इनमें आवश्यक संशोधन किए जा सकते हैं।
8.	शिक्षण विधि में उसके प्रभावपूर्ण उपयोग हेतु शिक्षण तकनीकों और सहायक सामग्री का प्रयोग किया जा सकता है।	इस सन्दर्भ में यह व्यूह रचना बहुत अधिक व्यापक होती है क्योंकि इसके प्रयोग हेतु विविध विधियों, तकनीकों, साधनों और उपकरणों, युक्तियों आदि की सहायता लेना आवश्यक होता है ताकि उनकी सहायता से शिक्षण–अधिगम गतिविधियों और उपयुक्त वातावरण का आयोजन भलीभाँति किया जा सके।

व्यावहारिक दृष्टि से शिक्षण विधियों और शिक्षण व्यूह रचनाओं के बीच दिखाई पड़ने वाला यह अन्तर अपने आप में काफी कम होता चला जाता है, क्योंकि इन दोनों का उद्देश्य शिक्षण कार्य को जितना अधिक हो सके, उतना प्रभावपूर्ण बनाना होता है। यही कारण है कि शिक्षण विधियों और व्यूह रचनाओं दोनों के ही वर्गीकरण में एक जैसी नामावली, व्याख्यान, प्रदर्शन, प्रश्नोत्तर, समस्या समाधान, अन्वेषण परियोजना आदि देखने को मिलती है, परन्तु फिर भी शिक्षण विधियों और व्यूह रचनाओं के बीच विद्यमान अन्तर काफी स्पष्ट रूप से अनुभव किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, व्याख्यान विधि एक व्याख्यान व्यूह रचना का रूप उस समय भलीभाँति धारण करती हुई देखी जा सकती है, जब यह मात्र विषय प्रस्तुतीकरण का ढंग न बनकर निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति में अच्छी तरह सहायक हो सके। यही बात अन्य विधियों के लिए भी लागू हो सकती है। वे विधि तभी तक रहती हैं, जब तक उन्हें मात्र विषय विशेष के प्रस्तुतीकरण हेतु एक विशेष तरीके या साधन के रूप में इस्तेमाल किया जाता रहता है।

15.5 शिक्षण युक्तियों का अर्थ एवं परिभाषा

शिक्षण युक्तियाँ कक्षा में पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण का साधन हैं। एक शिक्षण विधि में अनेक युक्तियों का उपयोग किया जाता है तभी पाठ्यवस्तु का प्रस्तुतीकरण प्रभावशाली ढंग से हो पाता है। इन्हें शिक्षण प्रक्रिया की सहायक प्रणाली माना जाता है। शिक्षण विधि के उपयोग में इन्हीं युक्तियों की सहायता ली जाती है। इनके उपयोग से शिक्षण विधि सार्थक एवं व्यावहारिक हो पाती है।

शिक्षण युक्तियाँ पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण का तार्किक एवं व्यावहारिक साधन है। पाठ्यवस्तु के तत्वों का प्रस्तुतीकरण इन्हीं युक्तियों द्वारा किया जाता है। प्रत्येक युक्ति में अनेक क्रियाएँ की जाती है। इन युक्तियों की सहायता से अनुदेशनात्मक प्रक्रिया का संचालन कक्षा में किया जाता है।

किसी शिक्षण व्यूह रचना को भलीभाँति उपयोग में लाने हेतु शिक्षण युक्तियों का प्रयोग उसी तरह आवश्यक होता है, जैसे कि किसी भी शिक्षण विधि की सफलता हेतु उचित शिक्षण तकनीकों और शिक्षण साधनों के इस्तेमाल की जरूरत अनुभव की जाती है। शिक्षण युक्तियों को परिभाषित करते हुए प्रसिद्ध विद्वान ई. स्टोंस तथा एस. मोरिस (1972) ने निम्न विचार व्यक्त किए हैं–

> शिक्षण युक्तियाँ लक्ष्य निर्धारित, प्रभावित और प्रभावित किए जा सकने वाले शिक्षक व्यवहार का प्रतिनिधित्व करती हैं, उस व्यवहार का जिसका वह किसी अनुदेशनात्मक परिस्थिति के दौरान किसी व्यूह रचना के निर्माण हेतु प्रयोग करता है। इन्हें शिक्षक व्यवहार की उन इकाइयों के रूप में भी जाना जा सकता है जिनकी सहायता से शिक्षक समय–समय पर कक्षा के विद्यार्थियों के साथ निभाई जाने वाली विभिन्न अनुदेशनात्मक भूमिकाओं का निर्वाह करता है अथवा शिक्षक व्यवहार के ऐसे अवयवों के रूप में भी जाना जा सकता है, जिसके माध्यम से शिक्षक, शिक्षार्थी और विषयवस्तु में पारस्परिक अंतःक्रिया चलती रहती है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

15.6 शिक्षण युक्तियों की प्रकृति व विशेषताएँ

शिक्षण युक्तियों की प्रकृति और विशेषताओं का वर्णन निम्न प्रकार है–

1. शिक्षण युक्तियाँ शिक्षक की उन गतिविधियों व व्यवहार का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिनको वह किसी विशेष शिक्षण व्यूह रचना के आयोजन और प्रयोग हेतु काम में लाता है।
2. शिक्षण युक्तियाँ शिक्षक व्यवहार की वे मूलभूत ईकाइयाँ होती हैं, जो निर्धारित शिक्षण अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु उचित अधिगम संरचना के निर्माण में सहायक सिद्ध होती हैं।
3. शिक्षण युक्तियाँ समय–समय पर शिक्षण व्यूह रचना के सम्पादन हेतु एक शिक्षक को उसके विभिन्न अनुदेशनात्मक भूमिकाओं के निभाने में मदद करती हैं।
4. शिक्षण युक्तियों में वे सभी शाब्दिक और अशाब्दिक शिक्षक व्यवहार एवं गतिविधियाँ शामिल हो सकती हैं, जिनकी सहायता से शिक्षक, शिक्षार्थी और विषयवस्तु के बीच स्वस्थ अंतःक्रिया होते रहने में मदद मिलती है।
5. शिक्षण युक्तियाँ विद्यार्थियों को निर्धारित अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु उचित अधिगम संरचना के निर्माण में सहयोगी सिद्ध होती हैं।
6. शिक्षण युक्तियों का अमूर्त रूप होता है। कक्षा की क्रियाओं से युक्ति का बोध होता है।
7. पाठ्यवस्तु के तत्त्वों का कक्षा में प्रस्तुतीकरण का साधन है।
8. इनका उपयोग शिक्षण में प्रभावशाली एवं रूचिकर होता है।
9. इसे शिक्षण प्रक्रिया की सहायक प्रणाली मानते हैं।
10. इनके उपयोग से बहु–इन्द्रिय अनुभव प्रदान किये जाते हैं।

www.praganya.org

15.7 शिक्षण युक्तियों का महत्त्व एवं उपयोगिता

उपर्युक्त विवेचन से शिक्षण युक्तियों के महत्त्व का बोध होता है। शिक्षण युक्तियों का सजीव शिक्षण प्रक्रिया अथवा अन्तःप्रक्रिया अवस्था में विशेष महत्त्व है। शिक्षण युक्तियों के महत्त्व को निम्न प्रकार समझा जा सकता है–

1. शिक्षण युक्तियों की सहायता से शिक्षण आयाम, विधियों तथा प्रविधियों का सम्पादन किया जाता है।
2. शिक्षण युक्तियों से कक्षा में तीन प्रकार की क्रियाएँ की जाती हैं–
   a. प्रदर्शन की क्रियाएँ
   b. कथन या शाब्दिक क्रियाएँ
   c. निष्पादन की क्रियाएँ
3. शिक्षण की पूर्व अवस्था में अनुदेशनात्मक प्रक्रिया के नियोजन में इन्हें सम्मिलित किया जाता है।
4. कक्षा की अन्तः प्रक्रिया अवस्था का सृजन युक्तियों की सहायता से किया जाता है।
5. कक्षा में इन युक्तियों की सहायता से अधिगम परिस्थितियों को उत्पन्न किया जाता है जिससे छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन किया जाता है।
6. कक्षा के वातावरण को प्रभावशाली तथा उपयोगी इन्हीं युक्तियों से किया जाता है।
7. कक्षा में विभिन्न युक्तियों से छात्रों की ज्ञानेन्द्रियों को क्रियाशील किया जाता है और वास्तविक ज्ञान प्रदान किया जाता है।

www.praganya.org

शिक्षण युक्तियाँ शिक्षकों एवं छात्रों, दोनों के लिए समान रुप से उपयोगी है। शिक्षकों एवं छात्रों के लिए इनकी उपयोगिता को निम्न प्रकार समझा जा सकता है–

15.7.1 शिक्षकों हेतु उपयोगिता

1. कार्य–संरचना के आधार पर समुचित शिक्षण युक्तियों का चयन किया जा सकता है।
2. विभिन्न कक्षाओं के सीखने के उद्देश्यों तथा विभिन्न कक्षाओं के अधिगम स्वरूपों के सम्बन्ध को प्रदर्शित किया जा सकता है।
3. कार्य की आन्तरिक रचना के प्रयोग से छात्रों की बोधगम्यता की गहनता में वृद्धि की जा सकती है। शिक्षक प्रस्तुतीकरण में छात्रों के व्यवहार–परिवर्तन क्रम का समुचित प्रयोग कर सकता है।
4. सूचनाओं एवं तथ्यों को इस प्रकार प्रस्तुत कर सकता है कि छात्र उन्हें अधिक समय तक स्मरण रख सकते हैं।

15.7.2 छात्रों हेतु उपयोगिता

1. कक्षा तथा कार्य–संरचना के आधार पर समुचित अधिगम युक्तियों का चयन कर सकता है।
2. विभिन्न कक्षाओं के सीखने के उद्देश्यों तथा विभिन्न कक्षाओं के स्वरूपों के सम्बन्ध का प्रत्यक्षीकरण कर सकता है।
3. कार्य की आन्तरिक संरचना के प्रयोग से छात्र बोधगम्यता की गहनता में वृद्धि कर सकते हैं। छात्र सीखने में अपने व्यवहार–परिवर्तन के क्रम का समुचित लाभ उठा सकते हैं।
4. जिन तथ्यों एवं सूचनाओं को सीखा है उन्हें छात्र अधिक समय तक स्मरण रख सकते हैं। कार्य तथा ज्ञान की संरचना का स्वरूप छात्रों की आवश्यकताओं तथा योग्यताओं के आधार पर निर्धारित किया जा सकता है।

15.8 शिक्षण व्यूह रचना और शिक्षण युक्तियों में अन्तर

शिक्षण व्यूह रचना और शिक्षण युक्तियों में निहित अन्तर को निम्न विवरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

क्र.सं.	शिक्षण व्यूह रचना	शिक्षण युक्तियाँ
1.	शिक्षण व्यूह रचना लक्ष्य निर्देशित होती हैं और यह लक्ष्य, निर्धारित शिक्षण अधिगम उद्देश्यों की उपलब्धि करना होता है।	शिक्षण युक्तियाँ शिक्षक की उन गतिविधियों एवं व्यवहार का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिन्हें निर्धारित शिक्षण–अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निर्मित और उपयोग में लाया जाता है।
2.	शिक्षण व्यूह रचना में शिक्षक और शिक्षार्थी की वे सभी गतिविधियाँ शामिल होती हैं जिनसे निर्धारित शिक्षण–अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु उचित शिक्षण–अधिगम निर्माण में सहायता मिलती है।	शिक्षण युक्तियों का सम्बन्ध केवल उन शिक्षक गतिविधियों एवं व्यवहार से होता है, जिनके द्वारा उचित अधिगम संरचना के आयोजन में मदद मिलती है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

3.	शिक्षण उद्देश्य और शिक्षण कार्य विश्लेषण ये दोनों ही किसी शिक्षण व्यूह रचना के काफी महत्त्वपूर्ण आधारभूत तत्व होते हैं।	उचित अधिगम संरचना का निर्माण–शिक्षण युक्तियों हेतु एक केन्द्रीभूत तत्त्व का कार्य करता है।
4.	शिक्षण व्यूह रचना, शिक्षण युक्तियों की तुलना में काफी कुछ ज्यादा विस्तृत और गहन सम्प्रत्यय है। इसमें वह सभी कुछ शामिल किया जा सकता है, जिससे एक शिक्षक को अपने शिक्षण उत्तरदायित्व यानी शिक्षण–अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति में यथानुकूल सहायता प्राप्त हो सके। इस दृष्टि से एक शिक्षक व्यूह रचना में उन सभी विभिन्न शिक्षण विधियों, शिक्षण तकनीकों, शिक्षक सहायक सामग्री व शिक्षण युक्तियों को समाविष्ट होते हुए देखा जा सकता है जिनके द्वारा एक व्यापक शिक्षण–अधिगम की संरचना कर निर्धारित शिक्षण–अधिगम उद्देश्यों की प्रभावपूर्ण उपलब्धि का कार्य सम्पन्न किया जा सके।	शिक्षण युक्ति शिक्षण व्यूह रचना की तुलना में काफी छोटा और सीमित संप्रत्यय है। यह वास्तव में शिक्षक व्यवहार के उस छोटे से अंश, अवयव या इकाई का प्रतिनिधित्व करता है, जिसकी सहायता से उसे अपने शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता मिलती है।

15.9 शिक्षण प्रविधियों का अर्थ एवं परिभाषा

शिक्षण एक अति कौशल युक्त कार्य है। एक शिक्षक को अपने शिक्षण कार्य को अच्छी तरह पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार की योग्यताओं, क्षमताओं तथा कुशलताओं की आवश्यकता होती है। शिक्षण प्रविधियों की गिनती उन्हीं परम आवश्यकताओं में होती है, जिनसे युक्त होना एक शिक्षक के लिए अपने कार्य में सफलता प्राप्ति हेतु अनिवार्य होता है। चाहे उसे अपने विद्यार्थियों को पढ़ने हेतु तैयार करना हो, विषयवस्तु को भलीभाँति प्रस्तुत करके छात्रों के मस्तिष्क में बिठाना हो अथवा अपने शिक्षण कार्य का मूल्यांकन करना हो, इन सभी कार्यों में उचित सफलता प्राप्त करने के लिए उसे शिक्षण विधियों के अतिरिक्त जिन विशेष तरीकों, नीतियों, कुशलताओं एवं साधनों इत्यादि का प्रयोग करना होता है शिक्षण तकनीकी की भाषा में मोटे तौर पर इन्हीं को शिक्षण प्रविधियों की संज्ञा दी जा सकती है।

शिक्षण प्रविधियों से अभिप्रायः उन अतिरिक्त साधनों से है, जिनका प्रयोग शिक्षक द्वारा अपने शिक्षण को अधिक प्रभावपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए किया जाता है। इनके द्वारा उसे अपने शिक्षण उद्देश्यों को अच्छी तरह प्राप्त करने में पूरी–पूरी सहायता मिलती है। अपने शिक्षण के दौरान जब एक अध्यापक सम्बन्धित विषयवस्तु का विवरण देता है, वर्णन करता है, दृष्टान्त देता है, प्रदर्शन करता है, प्रश्न पूछता है और अपने विद्यार्थियों को विचार–विमर्श, विचारगोष्ठी तथा कार्यशाला जैसे कार्यों में संलग्न करता है अथवा उन्हें अभ्यास कार्य एवं गृहकार्य देकर पढ़ाई हुई बातों का अभ्यास एवं पुनरावृत्ति कराता है तब यह कहा जाता है कि वह अपने शिक्षण कार्य में शिक्षण प्रविधियों का प्रयोग कर रहा है।

उपर्युक्त पंक्तियों के आधार पर शिक्षण प्रविधियों को निम्न प्रकार परिभाषित किया जा सकता है–

> शिक्षण प्रविधियों से तात्पर्य उन विशिष्ट योजनाओं, कार्य प्रणालियों, तरकीबों, साधनों अथवा कौशलों से होता है, जिन्हें एक अध्यापक द्वारा आवश्यकतानुसार समय–समय पर अपने शिक्षण के दौरान प्रयुक्त किया जाता है जिससे शिक्षण उद्देश्यों को सरलता और सफलतापूर्वक प्राप्त किया जा सके।

एक अच्छे मिस्त्री या कारीगर के बारे में यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि वह सदैव अच्छे औजारों का उचित समय पर उचित रूप से उपयोग करता है। यही बात एक अच्छे अध्यापक के लिए है। अध्यापक कार्य में उसकी सफलता भी इसी बात में निहित है कि वह किस तरह से उचित समय पर उचित रूप में उचित शिक्षण प्रविधियों का अपने शिक्षण कार्य के लिए उपयोग करता है। प्रसिद्ध विद्वान ए. एच. गारलिक के अनुसार–

> शिक्षण प्रविधियाँ तो शिक्षक के औजार हैं और यदि कार्य अच्छी तरह करना है तो उचित औजारों को उचित रूप में काम लाना ही होगा।

15.10 शिक्षण विधि और शिक्षण प्रविधि में अन्तर

मोटे तौर पर देखने में शिक्षण विधि और शिक्षण प्रविधि शब्दों में कोई अन्तर नजर नहीं आता, इसलिए प्रायः दोनों को एक ही अर्थ में प्रयोग कर लिया जाता है। शिक्षण विधि एवं शिक्षण प्रविधि के बीच अन्तर निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है–

1. शिक्षण विधि जैसे आगमन, निगमन, विश्लेषणात्मक एवं अनुसन्धान विधि आदि एक अध्यापक को इस रूप में सहायता पहुँचाती है कि वह अपने शिक्षण कार्य को पूर्णतया व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध रूप में सम्पन्न कर सके। एक अध्यापक अपने विषय की सामग्री को किसी विशेष शिक्षण विधि के द्वारा ही प्रस्तुत करता है। विषय सामग्री और शिक्षण विधि इनको एक दूसरे से पृथक् नहीं किया जा सकता। जैसी विषय सामग्री होती है उसी के अनुरूप शिक्षण विधि का चुनाव एवं उपयोग किया जाता है। इसलिए विषयवस्तु के प्रस्तुतीकरण में शिक्षण विधियों को ऐसा नहीं समझा जाता है कि वे कोई बाहर की वस्तु हैं अथवा उन्हें ऊपर से कोई अतिरिक्त रूप में शिक्षक के द्वारा प्रयोग में लाया जा रहा है। इसके विपरीत शिक्षण प्रविधियाँ और विषयवस्तु के प्रस्तुतीकरण में इस प्रकार का सामीप्य और सम्बन्ध नजर नहीं आता। विषयवस्तु के प्रस्तुतीकरण में उनका उपयोग अनिवार्य नहीं है। एक अध्यापक चाहे तो बिना उनकी सहायता से किसी उचित विधि का उपयोग करते हुए अपने विषय की सामग्री को प्रस्तुत कर सकता है।
2. अध्यापक शिक्षण प्रविधियों का प्रयोग समय–समय पर शिक्षण विधियों को प्रयोग में लाते हुए अतिरिक्त रूप से इसलिए करता है कि इससे उसे अपने शिक्षण उद्देश्यों को भलीभाँति प्राप्त करने में उपयुक्त सहायता मिलती है। इस रूप में शिक्षण प्रविधियाँ शिक्षण विधियों की तुलना में बाह्य और अतिरिक्त साधनों अथवा शिक्षण उपकरणों के रूप में हमारे सामने आती हैं, जिनके द्वारा एक शिक्षक को अपने शिक्षण को अधिक यथार्थ, प्रभावपूर्ण एवं उपयोगी बनाने में अधिक से अधिक सहायता मिलती है।
3. शिक्षण कार्य हेतु शिक्षण विधि अपने आप में पूर्ण होती है। उसका प्रयोग बिल्कुल स्वतन्त्र रूप से किया जा सकता है, जबकि केवल शिक्षण प्रविधि के सहारे एक अध्यापक अपने विषय–सामग्री का शिक्षण नहीं कर सकता, उसे कोई शिक्षण विधि ही काम में लानी होती है। शिक्षण प्रविधि तो उसके शिक्षण कार्य में अतिरिक्त रूप से ही सहायता करने के काम में आती है अर्थात् दूसरे शब्दों में शिक्षण

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

प्रविधियाँ, शिक्षण विधियों की पूरक होती हैं, जिन्हें कोई अध्यापक किसी शिक्षण विधि का प्रयोग करते हुए अतिरिक्त रूप से इसलिए काम में लाता है ताकि शिक्षण उद्देश्यों को सरलता से प्राप्त किया जा सके। उदाहरण के लिए भाषा में व्याकरण सम्बन्धी प्रकरण **विशेषण और उसके प्रकार** को पढ़ाने हेतु आगमन विधि का प्रयोग करना अपने आप में पूर्ण है, परन्तु इसे और अच्छी तरह पढ़ाने हेतु ही अध्यापक द्वारा कुछ उचित प्रविधियों जैसे वर्णन, व्याख्या तथा दृष्टान्त आदि का उपयोग किया जाता है। इस तरह प्रविधियाँ, विधियों को और अधिक सार्थक और प्रभावपूर्ण बनाने हेतु ही काम में लायी जाती है, स्वतन्त्र रूप से शिक्षण कार्य इनके द्वारा सम्पन्न नहीं किया जाता।

4. शिक्षण विधि में **कैसे** की भावना कार्यशील होती है जबकि शिक्षण प्रविधि में **किसके साथ** का मुख्य भाव निहित होता है। शिक्षण प्रविधियों में मनोवैज्ञानिक एवं तार्किक पक्षों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। मनोवैज्ञानिक पक्ष के अनुसार शिक्षण प्रविधि का चुनाव शिक्षार्थी की रूचि, मनोवृत्ति, आवश्यकता एवं बौद्धिक परिपक्वता को दृष्टिगत रखते हुए किया जाता है। तार्किक पक्ष के अनुसार शिक्षण प्रविधि को क्रमबद्ध एवं तर्कपूर्ण ढंग से शिक्षण की प्रक्रिया में जोड़ा जाता है।
5. अध्यापक अपनी शिक्षण विधि के आधार पर शिक्षण का एक व्यापक स्वरूप निश्चित कर लेता है, किन्तु शिक्षण उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उसे अनेक शिक्षण प्रविधियों को अविलम्ब ग्रहण करना पड़ता है।
6. शिक्षण विधि के अन्तर्गत शिक्षण की दिशा एवं गति निर्धारित होती है और उसका सीधा सम्बन्ध शिक्षण–उद्देश्य से होता है, किन्तु शिक्षण प्रविधि का सम्बन्ध शिक्षण की मुख्य विधि अथवा पद्धति से होता है।
7. शिक्षण प्रविधियों का शिक्षण उद्देश्य से प्रत्यक्ष सम्बन्ध न होकर परोक्ष सम्बन्ध होता है।

15.11 शिक्षण विधियों एवं प्रविधियों के प्रकार

शिक्षण विधियों एवं शिक्षण प्रविधियों का वर्गीकरण निम्न प्रकार किया जा सकता है–

15.11.1 शिक्षण विधियाँ

1. योजना विधि
2. प्रश्न विधि
3. अनुवर्ग शिक्षण विधि
4. शैक्षिक खेल विधि
5. अनुकरणीय विधि
6. निरीक्षण विधि
7. पाठ–प्रदर्शन विधि
8. खोज विधि
9. ब्रेन स्टारमिंग
10. परिपृच्छा विधि

15.11.2 शिक्षण प्रविधियाँ

1. विवरण प्रविधि
2. वर्णन प्रविधि
3. व्याख्या प्रविधि
4. ड्रिल प्रविधि
5. पुनः अभ्यास प्रविधि
6. अन्वेषण प्रविधि

इन विधियों तथा प्रविधियों की विस्तृत व्याख्या इस अध्याय में दी गई है।

15.12 योजना शिक्षण विधि

योजना विधि शिक्षण की नवीन विधि मानी जाती है। इसका विकास शिक्षा में सामाजिक प्रवृत्ति के फलस्वरूप हुआ है। शिक्षा इस प्रकार की दी जानी चाहिए जो जीवन को समर्थ बना सके। इसके प्रवर्तक डब्ल्यू. एच. किलपैट्रिक जॉन डीवी के शिष्य थे। यह विधि अनुभव–केन्द्रित होती है। बालकों के समाजीकरण पर विशेष बल देती है। सामाजिक विषयों के शिक्षण में इसे भली प्रकार प्रयुक्त किया जा सकता है।

15.12.1 स्वरूप

इसका स्वरूप इस प्रकार है–

1. छात्रों के जीवन से सम्बन्धित समस्याओं को वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। छात्र समस्या की अनुभूति करते हैं।
2. समस्या समाधान के लिये योजना तैयार की जाती है।
3. इसके लिये अनेक सूचनाओं को एकत्रित किया जाता है।
4. शिक्षक केवल निर्देशन का कार्य करता है। छात्र स्वयं विषयवस्तु सामग्री का अध्ययन करके समस्या का समाधान करते हैं।

15.12.2 अधिनियम

यह विधि निम्नलिखित अधिनियमों पर आधारित है–

1. छात्रों में सामाजिक गुणों तथा सहयोग की भावना का विकास होता है, क्योंकि उन्हें समूह में कार्य करना पड़ता है।
2. छात्र अधिक क्रियाशील रहता है तथा स्वयं अनुभव करके सीखता है।
3. इसमें उपयोगिता को विशेष महत्त्व दिया जाता है।
4. समस्या का सम्बन्ध छात्रों के जीवन से होता है।
5. छात्र स्वतन्त्र वातावरण में स्वाभाविक रूप से कार्य करता है।
6. अधिगम परिस्थिति में कृत्रिमता नहीं होती है।

15.12.3 योजना के रूप

किलपैट्रिक ने योजनाओं को चार वर्गों में विभाजित किया है–

1. रचनात्मक

जिसमें छात्र किसी कार्य को सम्पन्न कर सकें।

2. समस्या

केन्द्रित छात्रों के समक्ष समस्या प्रस्तुत की जाये, जिससे वे उसके समाधान ढूँढने का प्रयास कर सकें।

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

3. सामूहिक अभ्यास

छात्रों को ऐसा कार्य दिया जाये, जिसे वे सामूहिक रूप में अभ्यास करके पूरा कर सकें।

4. कलात्मक

ऐसी समस्याओं का समाधान करके, जिससे उनकी सौन्दर्यानुभूति की क्षमताओं का विकास हो सके।

15.12.4 योजना के सोपान

सभी प्रकार की योजनाओं में निम्नलिखित सोपानों का अनुसरण किया जाता है–

1. प्रथम सोपान – छात्रों के जीवन से सम्बन्धित समस्या का चयन।
2. द्वितीय सोपान – समस्या चयन तथा उसके स्वरूप को समझना।
3. तृतीय सोपान – समस्या समाधान के लिये योजना तैयार करना।
4. चतुर्थ सोपान – योजना को क्रियान्वित करना।
5. पंचम सोपान – योजना का मूल्यांकन करना।
6. षष्टम सोपान – योजना का आलेख तैयार करना।

15.12.5 विशेषताएँ

इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

1. छात्रों को मौलिक चिन्तन, क्रियाओं तथा अनुभवों द्वारा सीखने का अवसर मिलता है।
2. छात्रों को नवीन ज्ञान जीवन से सम्बन्धित करके दिया जाता है। इसलिये यह अधिक उपयोगी होता है, छात्र रूचि लेते हैं।
3. छात्रों में सूझ की क्षमताओं का विकास होता है।
4. मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक अधिनियमों पर आधारित है।
5. विद्यालय के सभी विषयों को समन्वित रूप में पढ़ाया जाता है। इससे बोधगम्यता अधिक होती है।
6. छात्र में ज्ञान के साथ सामाजिक गुणों का विकास होता है।

15.12.6 सीमाएँ

इसकी सीमाएँ निम्न प्रकार हैं–

1. विषयों को क्रमबद्ध रूप में नहीं दिया जाता है।
2. योजनाओं को वास्तविक रूप देने के लिये अधिक व्यय करना होता है।
3. सभी विषयों तथा विषय की समस्त पाठ्यवस्तु के लिये योजना विधि प्रयुक्त नहीं की जा सकती है।
4. सभी सामाजिक गुणों का विकास नहीं किया जा सकता है। अधिगम के सभी उद्देश्यों को प्राप्त नहीं किया जा सकता है।
5. उच्च कक्षाओं में इसे प्रयोग नहीं किया जा सकता है।
6. विषयों का ज्ञान क्रमबद्ध रूप में नहीं दिया जाता है।

15.12.7 सुझाव

इसके प्रयोग में निम्नलिखित सावधानियाँ रखनी चाहिए–

1. कृषि विद्यालयों में इसका प्रयोग करना चाहिए।
2. तकनीकी प्रशिक्षण संस्थाओं में प्रयोग करना चाहिए।
3. योजना की समस्या मितव्ययी होनी चाहिए।
4. इसको एक सहायक शिक्षण विधि के रूप में प्रयोग करना चाहिए।

15.13 प्रश्न विधि

शिक्षण प्रक्रिया में प्रश्नों का प्रयोग कई उद्देश्यों से किया जाता है। कभी–कभी प्रश्नों द्वारा अभिप्रेरण जाग्रत किया जाता है। प्रश्नों को बनाना तथा पूछना एक कला है। एक कुशल अध्यापक वह होता है जो कुशल प्रश्नकर्त्ता है। टी. रेमण्ट के मतानुसार–

> प्रत्येक शिक्षक की यह आकांक्षा होनी चाहिए कि वह सही एवं सुन्दर प्रश्न करने की योग्यता प्राप्त करे।

प्रश्नों के माध्यम से बालक के मस्तिष्क को क्रियाशील बनाया जाता है। इसके अतिरिक्त प्रश्नों का उपयोग निम्नलिखित उद्देश्यों के लिये किया जाता है–

1. बालक के पूर्वज्ञान, मनोदशा, रूचि एवं समस्याओं से अवगत होने के लिये।
2. बालक की रूचि एवं ध्यान को आकर्षित करने के निमित्त।
3. बालक के पूर्व अनुभवों को नवीन अनुभवों से जोड़ने की दृष्टि से।
4. बालक के बौद्धिक विकास एवं उपलब्धियों को एक निश्चित गति एवं दिशा प्रदान करने के लिये।
5. बालक की विचार एवं विश्लेषण शक्ति को विकसित करने के निमित्त।
6. पाठ्यवस्तु की पुनरावृत्ति एवं भली प्रकार व्याख्या प्रस्तुत करने की दृष्टि से।
7. प्राप्त ज्ञान तथा अनुभव का मूल्यांकन करने के लिये इस दृष्टि से पूछे जाने वाले प्रश्नों को परीक्षात्मक प्रश्न की संज्ञा दी जाती है।

15.13.1 प्रश्नों के प्रकार

साधारणतः प्रश्नों के दो प्रकार होते हैं–

1. शिक्षात्मक प्रश्न
2. परीक्षात्मक प्रश्न

शिक्षात्मक प्रश्नों का प्रयोग पाठ को विकसित करने, नवीन ज्ञान तथा अनुभवों को बालक तक पहुँचाने एवं विषय की वास्तविक अनुभूति जगाने के लिए किया जाता है, जबकि परीक्षात्मक प्रश्न विषय पर अधिकार, पूर्वज्ञान तथा वर्तमान उपलब्धि की जाँच करने के लिये किए जाते हैं। प्रत्येक परीक्षा में प्रश्नों का प्रयोग अपरिहार्य तथा अवश्यम्भावी है। रस्क के अनुसार–

> शिक्षात्मक प्रश्नों द्वारा विचार–क्रिया विकसित होती है तथा परीक्षात्मक प्रश्नों द्वारा स्मृति पक्ष को बढ़ावा मिलता है।

कहने का अभिप्राय यह है कि शिक्षात्मक प्रश्नों की सहायता से छात्र की विचार एवं कल्पना शक्ति तथा परीक्षात्मक प्रश्नों के माध्यम से उसकी स्मृति शक्ति का विकास मुख्य लक्ष्य होता है। किसी पाठ को पढ़ाते समय सामान्यतः निम्नलिखित स्तरों पर प्रश्नों का प्रयोग आवश्यक है–

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

1. प्रस्तावना प्रश्न के स्तर पर

जब पाठ को प्रारम्भ करना हो, तो विषय की भूमिका तथा आरम्भिक पृष्ठभूमि निर्मित करने के लिये प्रश्नों की सहायता ली जाती है।

2. विकासात्मक प्रश्न स्तर पर

जब पाठ आरम्भ हो जाता है, तो विषय का प्रस्तुतीकरण करने की दृष्टि से प्रश्नों का पूछा जाना आवश्यक होता है। ऐसे प्रश्न पाठ के तार्किक विकास के लिये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

3. पुनरावृत्ति प्रश्न के स्तर पर

विषय को दोहराने एवं उस पर अभ्यास कराने के लिये प्रश्नों का पूछा जाना लाभदायक होता है। डेविस के अनुसार–

> प्रश्नों का मुख्य लक्ष्य है– ज्ञान को ठोस करना, विचारों को यथास्थान रखना तथा सुव्यवस्थित रूप देना।

4. पाठ के मूल्यांकन के स्तर पर

जब पूरे पाठ के मूल्यांकन की अवस्था आती है, तो प्रश्नों की सहायता लेनी पड़ती है। इस स्तर पर निबन्धनात्मक रूप तथा वस्तुनिष्ठ रूप दोनों ही प्रकार के प्रश्नों का प्रयोग करना आवश्यक होता है।

15.13.2 अच्छे प्रश्नों के लक्षण

कुशल एवं प्रभावशाली शिक्षण के लिये अच्छे प्रश्नों का प्रयोग नितान्त आवश्यक है। अच्छे प्रश्नों को निर्मित करने के लिये शिक्षक में सूझ–बूझ, अभ्यास मानसिक क्षमता तथा शिक्षण की समस्याओं को भली प्रकार समझने की योग्यता का होना अपेक्षित है। शिक्षण एक अत्यन्त गत्यात्मक प्रक्रिया है। अतः अच्छे प्रश्नों के बिना शिक्षण यन्त्रवत् एवं रूढ़िवादी बन जाता है। इस दृष्टि से अच्छे प्रश्नों की विशेषताओं से अवगत होना आवश्यक है। अच्छे प्रश्नों के मुख्य लक्षण इस प्रकार हैं–

1. अच्छे प्रश्नों की परिभाषा सरल, शुद्ध तथा स्पष्ट होती है। बालक उन प्रश्नों को समझने में कठिनाई का अनुभव नहीं करता है।
2. अच्छे प्रश्नों का स्वरूप संक्षिप्त तथा सीधा होता है। उनमें सरल वाक्य ही अधिकतर प्रयुक्त होते हैं।
3. अच्छे प्रश्नों का अर्थ निश्चित होता है। उनमें कई अर्थ या भाव प्रतिध्वनित नहीं होते।
4. अच्छे प्रश्नों के उत्तर विचारोत्तेजक एवं बालक की मानसिक प्रौढ़ता के अनुकूल होते हैं। इनके उत्तर निकालने में कोई कठिनाई नहीं उत्पन्न होती।
5. अच्छे प्रश्नों का परस्पर सम्बन्ध क्रमिक तथा व्यवस्थापूर्ण होता है। वे एक दूसरे से क्रमपूर्वक जुड़े होते हैं।
6. अच्छे प्रश्नों की उपयुक्तता बालक की मानसिक योग्यता, रूचि, विकास की अवस्था तथा विषय की दृष्टि से पर्याप्त रूप में होती है।

15.13.3 प्रश्नों के कुछ दोषपूर्ण रूप

शिक्षण क्रिया को अप्रभावपूर्ण बनाने में दोषपूर्ण प्रश्नों का बहुत बड़ा हाथ रहता है। ऐसे प्रश्न अध्यापक की अकुशलता एवं निकृष्ट कोटि की सूझ–बूझ के परिचायक होते हैं। शिक्षण की असफलता बहुत कुछ ऐसे प्रश्नों पर निर्भर करती है। प्रश्नों के कुछ दोषपूर्ण रूपों की सूची आगे प्रस्तुत की जा रही है।

1. प्रतिध्वन्यात्मक प्रश्न

जब प्रश्न में कुछ ऐसे तथ्य निहित होते हैं जिनसे उत्तर प्रतिध्वनित हो जाता है, तो ऐसे प्रश्नों को प्रतिध्वन्यात्मक कहा जाता है। उदाहरणार्थ–उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ है– लखनऊ क्या है? ऐसी रचना में उत्तर बड़ी सरलतापूर्वक निकल जाता है और बालक को विचार करने का अवसर नहीं मिल पाता है। बालक का ध्यान विषय की ओर आकर्षित नहीं हो पाता। ऐसे प्रश्न इलिप्टिकल भी कहे जाते हैं।

2. हाँ या नहीं रूप प्रश्न

ऐसे प्रश्नों के उत्तर हाँ या नहीं के रूप में देना होता है, जिससे बालक सोचने की ओर प्रवृत्त नहीं होते हैं। जैसे– क्या त्रिभुज के तीनों कोणों का योग दो समकोण के बराबर होता है? क्या इस कविता में देश प्रेम का भाव प्रकट किया गया है? आदि ऐसे प्रश्न छात्रों को बिना सोचे–समझे उत्तर देने के लिये प्रोत्साहित करते हैं। ऐसे प्रश्न कभी–कभी उत्तर की ओर संकेत करते हैं। जैसे– क्या श्रीमती इन्दिरा गाँधी अपने देश की प्रधानमन्त्री थी? इस प्रश्न को सांकेतिक कहना अधिक उचित होगा, क्योंकि इसमें प्रश्न के उत्तर के प्रति संकेत उपलब्ध हैं।

3. पुष्टिकारक प्रश्न

ऐसे प्रश्न जिनके अन्त में ठीक है आदि स्वीकारोक्ति जुड़ी रहती है, वे छात्रों की विचार–क्रिया को कुण्ठित बना देते हैं। बालक सोचकर उत्तर दे रहा है अथवा नहीं, ऐसे प्रश्नों में यह पता लगाना कठिन है। जैसे– अपना देश प्रजातान्त्रिक शासन के आधीन है, ठीक है न? इस तरह के प्रश्न नितान्त दोषपूर्ण हैं। इनके द्वारा बालकों को स्वतन्त्र चिन्तन की ओर आकृष्ट कराने में बाधा पहुँचती है।

4. अलंकारिक प्रश्न

प्रश्नों की भाषा अलंकारिक नहीं होनी चाहिए। ऐसे अध्यापक, जिन्हें शिक्षण अनुभव नहीं होता वे प्रश्न पूछते समय अलंकारिक भाषा प्रयुक्त करने में गर्व का अनुभव करते हैं। जैसे नागरिक शास्त्र में ऐसे प्रश्नों का उदाहरण आगे दिया जा रहा है–

1. भारत–माता को दासता की बेड़ियों से मुक्त कराने का अपार श्रेय किसको है?
2. राष्ट्रपति देश की सेवा का व्रत लिया हुआ अनन्य देश प्रेमी शासक होता है।

इन प्रश्नों की अलंकारिकता के कारण छात्र विचारशील नहीं बनाये जा सकते। वे भाषा के आडम्बर में इधर–उधर बहक सकते हैं। अतः शिक्षक को चाहिए कि वह ऐसे प्रश्नों का प्रयोग कदापि न करे।

5. अनिश्चित संदिग्ध तथा अप्रासंगिक प्रश्न

प्रश्नों को उत्तर की दृष्टि से निश्चित कर देना आवश्यक है। अनिश्चित उत्तर वाले प्रश्न बालक के मस्तिष्क को भ्रमजाल में फँसा देते हैं। इसी तरह प्रश्न में थोड़ा भी संदेह के लिये स्थान नहीं होना चाहिए। जब प्रश्न के द्वारा बालक के मन में किसी तरह की ऐसी शंका उत्पन्न हो जाती है, जो निराधार हो, तो प्रश्न को दोषपूर्ण समझना चाहिए। प्रश्नों का विषय से सम्बन्धित न होना भी

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

अनुसूचित है। बिना प्रसंगवश प्रश्नों का पूछा जाना शिक्षण क्रिया की कमजोरी मानी जाती है।

6. एक से अधिक उत्तर वाले प्रश्न

ऐसे प्रश्न जिनमें एक से अधिक उत्तर की आवश्यकता पड़ती है, कभी नहीं पूछे जाने चाहिए। जैसेः महात्मा गाँधी की मृत्यु कब और कैसे हुई? प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम कहाँ और किस प्रकार शुरू हुआ? आदि। ऐसे प्रश्न दो भागों में बाँट कर पूछे जाने चाहिए। ये प्रश्नों के दोषपूर्ण रूपों के कुछ नमूने हैं। अध्यापक अन्य कई तरह की भूलें प्रश्न के गठन, भाषा तथा आकार के बारे में कर सकता है। इन दोष-युक्त प्रश्नों को निर्मित करने से सम्बन्धित दोषों के अतिरिक्त कुछ अन्य दोष उनके पूछने के ढंग तथा वितरण आदि से जुड़े होते हैं। इसीलिये प्रश्नों के पूछने की विधि पर विचार कर लेना आवश्यक है।

15.13.4 प्रश्न पूछने की विधि

प्रश्न पूछना भी एक कला है। शिक्षक को केवल शुद्ध, स्पष्ट एवं सरल प्रश्नों के पूछने का ही अभ्यासी न बनकर उन्हें उचित ढंग से छात्रों के सम्मुख रखने की कुशलता भी अर्जित करनी चाहिए। प्रश्न पूछते समय जिन विशेष बातों पर ध्यान देना आवश्यक है, वे इस प्रकार हैं-

1. किसी छात्र विशेष का नाम लेकर प्रश्न नहीं पूछना चाहिए। यदि प्रश्न पूछने के पहले या समकाल ही किसी छात्र विशेष को उसका उत्तर देने के लिये कह दिया जाता है, तो कक्षा के अन्य छात्र ध्यान नहीं देते।
2. प्रश्नों के पूछने में न ही बहुत शीघ्रता और न ही अधिक शिथिलता का सिद्धान्त अपनाना चाहिए। बहुत जल्दी-जल्दी प्रश्न पूछने से छात्र की बोधगम्यता प्रभावित होती है। इसी प्रकार बहुत विलम्ब के साथ प्रश्नों के पूछे जाने से बालक की जिज्ञासा विकसित नहीं हो पाती।
3. प्रश्नों का वितरण कक्षा के सभी छात्रों पर समान रूप में हो। किसी एक ही छात्र से बार-बार प्रश्न पूछना ठीक नहीं है। इसी तरह केवल आगे वाले छात्रों से ही प्रश्न पूछने से पीछे या अन्यत्र बैठने वाले छात्र विषय में रूचि नहीं लेते तथा कक्षा-व्यवस्था की समस्या उत्पन्न हो सकती है।
4. प्रश्न पूछने के पहले अनावश्यक शब्द या वाक्य नहीं प्रयुक्त होने चाहिए। जैसे- अच्छा बताओं तुम लोगों में से कौन-कौन बता सकता है? आदि।
5. प्रश्नों की पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए। प्रश्न केवल एक बार ही पूछा जाए तो अधिक उचित होगा। भाषा के शिक्षण में प्रश्नों का दुहराना लाभदायक हो सकता है, किन्तु अन्य विषयों के शिक्षण में प्रश्नों के दोहराने से बालक में अवधान बढ़ता है।
6. एक ही ढंग से प्रश्न पूछने से बालक में अरूचि विकसित होती है और वह विषय के प्रति ध्यान नहीं दे पाता। अतः प्रश्नों के पूछने के ढंग में विविधता लाने की कोशिश करनी चाहिए।

15.13.5 उत्तर निकलवाना

प्रश्नों का पूछना उतना कठिन कार्य नहीं है, जितना छात्रों द्वारा उनका उत्तर निकलवाना। प्रश्नों के उत्तर से बालक की मनोदशा एवं अनुभूति का वास्तविक अनुमान लगाया जा सकता है। बालक जब अशुद्ध या असंगत उत्तर देता है, तो कभी-कभी अध्यापक अपना धैर्य खो बैठते हैं और अपना मानसिक सन्तुलन बिगाड़ लेते हैं। ऐसी दशा में शिक्षण कार्य विधिवत् सम्पन्न नहीं हो सकता। यह अध्यापक की असफलता का प्रतीक है। बालक के अशुद्ध अथवा अप्रासंगिक उत्तर को ठीक करने के लिये सर्वप्रथम अन्य बालकों की सहायता लेनी चाहिए। यदि वे ठीक न कर सकें, तो अध्यापक को स्वयं उत्तर बता देना चाहिए। कभी-कभी छात्र बिना पूछे भी उत्तर देने लग जाते हैं। ऐसी प्रवृत्ति को रोकना चाहिए। उत्तर के सही होने पर एकदम **हाँ** या **उत्तम** कहना चाहिए, लेकिन यदि प्रश्न अधिक कठिन न हो, तो ऐसा करना उचित नहीं है।

उत्तरों को ठीक करते समय भाषा तथा तथ्य की अशुद्धियों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। यदि कोई ऐसी अशुद्धि बालक के उत्तर में हो, तो उसे तत्काल ठीक कर देना चाहिए।

15.14 अनुवर्ग शिक्षण विधि

इसको प्रभुत्ववादी तथा प्रजातन्त्रवादी दोनों प्रकार की विधि मानते हैं। व्याख्यान शिक्षण विधि में छात्रों की व्यक्तिगत कठिनाइयों को शिक्षक से हल कराने का अवसर नहीं मिलता है। इसलिए कक्षा को छोट-छोटे सजातीय वर्गो में बाँट दिया जाता है। एक अनुवर्ग को एक शिक्षक को सौंप दिया जाता है। वह शिक्षक अपने अनुवर्ग की सभी अध्ययन सम्बन्धी कठिनाइयों के समाधान में सहायता करता है। इस प्रकार के शिक्षण को अनुवर्ग शिक्षण कहा जाता है। इसमें छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नता को महत्त्व दिया जाता है। इसमें उपचारात्मक विधियों का उपयोग होता है।

15.14.1 अनुवर्ग शिक्षण विधि के अधिनियिम

इसके प्रमुख अधिनियम इस प्रकार हैं-

1. इसका प्रमुख अधिनियम व्यक्तिगत भिन्नता का है।
2. छात्र-शिक्षक का सम्पर्क निकट का होता है।
3. छात्रों को शैक्षिक निर्देशन दिया जाता है।
4. व्यक्तिगत कठिनाइयों के समाधान का शिक्षण में अवसर मिलता है।
5. उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था की जाती है।

15.14.2 अनुवर्ग शिक्षण के प्रकार

अनुवर्ग शिक्षण की व्यवस्था तीन प्रकार से की जाती है, जो निम्नलिखित हैं-

1. पर्यवेक्षण अनुवर्ग शिक्षण

इसमें छात्र तथा शिक्षक नियमित रूप से मिलते हैं। छात्र निबन्धों को पढ़ते हैं और शिक्षक के प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करते हैं तथा उन पर वाद-विवाद करते हैं। यह विधि प्रतिभाशाली छात्रों के लिये अधिक प्रभावशाली मानी जाती है। इसमें पाठ्य-वस्तु की गहनता तथा स्वामित्व को अधिक अवसर प्रदान किया जाता है।

2. सामूहिक अनुवर्ग शिक्षण

इस प्रकार का शिक्षण सामान्य स्तर के छात्रों के लिये अधिक उपयोगी होता है। यह उनकी आवश्यकता की पूर्ति करता है। इसमें सामाजिक मनोविज्ञान की

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

पृष्ठभूमि होना आवश्यक होता है। शिक्षक को सामूहिक गतिशीलता का बोध होना चाहिए।

3. प्रयोगात्मक अनुवर्ग शिक्षण

इसको सामूहिक तथा व्यक्तिगत दोनों ही परिस्थितियों में प्रयुक्त किया जाता है। इसका प्रयोग क्रियात्मक पक्ष के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये अधिक किया जाता है। इसके लिये छात्रों को प्रयोगशाला, वर्कशॉप आदि में कार्य करना पड़ता है। इनके द्वारा शारीरिक कौशल का विकास किया जाता है। इसका प्रयोग प्रौढ़ों के लिये भी प्रभावशाली ढंग से किया जाता सकता है, जबकि व्यक्तिगत अनुवर्ग शिक्षण छोटे बालकों के लिये अधिक उपयोगी होता है। अनुवर्ग शिक्षण विधि की सहायता से ज्ञानात्मक तथा भावात्मक पक्षों के उच्च स्तरों के उद्देश्यों की प्राप्ति भली प्रकार की जा सकती है।

15.14.3 अनुवर्ग शिक्षण विधि के उपयोग

इस विधि के निम्नलिखित उपयोग होते हैं–

1. व्यक्तिगत शिक्षण की दृष्टि से यह एक बहुमूल्य विधि समझी जाती है।
2. शिक्षक को उपचारात्मक शिक्षण का अवसर मिलता है।
3. छात्र के पूर्व ज्ञान से अभाव की पूर्ति भी की जा सकती है।
4. छात्र को अपनी कठिनाइयों के समाधान का अवसर मिलता है और निष्पत्ति स्तर बढ़ता है।
5. शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति अधिकतम रूप में की जा सकती है।

15.14.4 अनुवर्ग शिक्षण विधि की सीमाएँ

अनुवर्ग शिक्षण की सीमाएँ निम्नलिखित हैं–

1. शिक्षक पक्षपातपूर्ण व्यवहार करते हैं और सभी छात्रों की कठिनाइयों में रूचि नहीं लेते हैं।
2. अधिक बोलने वाले छात्र अन्य को अवसर नहीं मिलने देते हैं।
3. एक शिक्षक सभी विषयों की कठिनाइयों के समाधान में समर्थ नहीं होता है। अपने विषय में अधिक रूचि लेता है।
4. कक्षा के वर्गों में स्पर्धा की भावना का विकास हो जाता है।

15.14.5 अनुवर्ग शिक्षण विधि हेतु सुझाव

अनुवर्ग शिक्षण हेतु सुझाव निम्नलिखित हैं–

1. समान योग्यता अथवा समान कठिनाई वाले छात्रों को एक वर्ग में रखना चाहिए।
2. शिक्षक को निष्पक्ष रूप में अनुवर्ग शिक्षण करना चाहिए।
3. शिक्षक की जिस विषय में रूचि हो उसके कमजोर छात्रों को शिक्षण के लिये अवसर दिया जाना चाहिए।
4. छात्रों के समूह बनाते समय विषय की कठिनाई को प्रधानता देनी चाहिए।
5. एक ही शिक्षक को सभी विषयों की कठिनाइयों का उत्तरदायित्व नहीं दिया जाना चाहिए।
6. प्रत्येक छात्र को अपनी–अपनी कठिनाइयों को व्यक्त करने का अवसर दिया जाना चाहिए।

15.15 शैक्षिक खेल विधि

शैक्षिक खेल शिक्षण अनुदेशन के क्षेत्र में अभी हाल ही का नवीन प्रवर्तन है। जिसके द्वारा छात्रों को अपेक्षित सीखने के अनुभव प्रदान किये जाते हैं। प्रयोजन वाद ने शिक्षा की प्रक्रिया को अनुभव–केन्द्रित माना है और छात्रों को उनके भावी जीवन के लिये तैयार करना है। इस प्रकार की शिक्षा के लिये योजना विधि तथा शैक्षिक खेल उत्तम प्रविधियाँ तथा विधि प्रणाली मानी जाती हैं।

15.15.1 शैक्षिक खेल विधि की परिभाषा

शैक्षिक खेल विधि की परिभाषा इस प्रकार है–

> दो या दो से अधिक निर्णायकों के मध्य निर्णय लेने की स्वतन्त्र क्रिया तथा प्रविधि है, जिसमें सीमित पाठ्यवस्तु से अपेक्षित उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।

छात्रों को जीवन की परिस्थिति का वास्तविक अनुभव प्रदान करने का प्रयास किया जाता है। जिससे छात्र पूर्णरूपेण मानवीय व्यवहार को जीवन की परिस्थिति में समझ सके। इस विधि का मुख्य उद्देश्य सामाजिक परिस्थिति में मानवीय अन्तः क्रिया करना जो मानवीय व्यवहार को जीवन में नियमित करती हैं। अधिकांश छात्र जीवन के आचरण एवं मानवीय व्यवहारों को सामाजिक परिस्थितियों से ही सीखते हैं। इन परिस्थितियों में छात्र खेल, खिलौनों द्वारा अपेक्षित क्रियाओं को करते हैं। यह प्रविधि अनुकरणीय शिक्षण तथा नाटकीय प्रविधि के समान है।

शैक्षिक खेल में साधारणतः सहयोग, समायोजन, मेल भाव की मुख्य विशेषताओं के विकास को महत्त्व देते हैं। वास्तविक जीवन में हार–जीत सामाजिक तथा सापेक्ष होती हैं। कुछ समूह अन्य की अपेक्षा अधिक सफलता प्राप्त करते हैं, परन्तु इसमें स्पर्धा का भाव नहीं आता है।

15.15.2 शैक्षिक खेल के उद्देश्य

शैक्षिक खेल विधि का उपयोग निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये किया जाता है–

1. टकराव की स्थिति के समाधान हेतु परिकल्पना का प्रतिपादन करना तथा प्रश्न उठाना।
2. परिकल्पनाओं की पुष्टि हेतु जानकारी का विकास करना।
3. ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करना जिसका अनुभव तथा कौशल वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में स्थानान्तरित करना।
4. मूल्यों के सम्बन्ध में निर्णय लेना तथा मूल्यों का जीवन में अनुसरण करना। खेल की परिस्थितियाँ छात्रों में अधिगम के स्वामित्व का विकास करती हैं। शैक्षिक खेल द्वारा मूल्यों का विश्लेषण करना तथा निर्णय करना सिखाया जाता है।

15.15.3 शैक्षिक खेल की प्रक्रिया

शैक्षिक खेल की प्रक्रिया लचीली होती है। यह कोई सुनिश्चित प्रक्रिया नहीं है, फिर भी शिक्षाविदों ने इसके छः सोपान दिए हैं–

1. प्रथम सोपान

शैक्षिक खेल का नियोजन करना, जिसमें छात्रों की भूमिका निर्वाह की सूची तैयार की जाती है जिसे चक्रीय क्रम में व्यवस्थित किया जाता है।

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

2. द्वितीय सोपान

शिक्षण के प्रकरण का निर्णय लेना तथा उसकी तैयारी करना, जिसमें प्रत्ययों तथा कौशलों को सुनिश्चित किया जाता है। शिक्षक छात्रों को भूमिका बड़ी समझदारी से देता है।

3. तृतीय सोपान

भूमिका–निर्वाह का कार्यक्रम तैयार किया जाता है कि कौन छात्र आरम्भ करेगा तथा कौन छात्र समाप्त करेगा।

4. चतुर्थ सोपान

शिक्षक शिक्षण के निरीक्षण तथा मूल्यांकन विधि को भी सुनिश्चित करता है। किस प्रकार की सूचनाओं का आलेख तैयार किया जाएगा, इसका भी निर्णय लेता है।

5. पंचम सोपान

शिक्षक कार्यक्रम को आरम्भ करता है और छात्रों के कार्यों तथा उपलब्धियों को पुनर्बलन भी देता है। छात्रों को कार्यक्रम की सभी भूमिकाओं का निर्वाह करना होता है तथा शिक्षण सत्र समाप्त होता है।

6. षष्टम सोपान

शिक्षक अपने कार्यक्रम में सुधार करता है छात्रों की क्रियाओं तथा उपलब्धियों के आधार पर परिवर्तन करता है। छात्रों की विभिन्न भूमिकाओं के आधार पर शिक्षक निर्णय लेता है कि कार्यक्रम में किस प्रकार का सुधार परिवर्तन अपेक्षित है।

15.15.4 शैक्षिक खेल की विशेषताएँ

शैक्षिक खेल की विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

1. भूमिका निर्वाह खेल में छात्रों को वास्तव में कार्य करना होता है। भूमिका निर्वाह की परिस्थिति सामाजिक होती है, जिसमें अन्तः प्रक्रिया होती है।
2. शिक्षक के लिये इन खेलों का प्रारूप इस प्रकार तैयार किया जाता है जिससे मानवीय व्यवहारों की गतिशीलता का शिक्षण किया जा सके जिससे सामाजिक समस्या का समाधान कर सकें तथा समायोजन कर सकें।
3. भूमिका निर्वाह में ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न की जाती हैं, जिसमें छात्रों को निर्णय लेना होता है, समझौता करना होता है, समायोजन करना होता है।
4. खेलों में विशिष्ट परिस्थितियों तथा अवस्थाओं के लिये कुछ नियम भी बनाये जाते हैं जिनका छात्रों को भूमिका निर्वाह में अनुसरण करना होता है। नियमों के आधार पर छात्रों की सफलता का निर्णय लिया जाता है।
5. भूमिका निर्वाह की एक पत्रावली भी तैयार की जाती है। जिसमें सामाजिक परिस्थितियों का वर्णन किया जाता है, जिसके अनुरूप छात्रों को भूमिका निर्वाह करना है।
6. शिक्षक छात्रों की भूमिका निर्वाह की सफलता एवं असफलता का मूल्यांकन करता है और छात्रों के विकास हेतु सुझाव तथा पुनर्बलन देता है।

15.15.5 शैक्षिक खेल के उदाहरण

शैक्षिक खेल विधि को निम्नलिखित उदाहरणों से स्पष्ट किया जा सकता है–

1. विद्यालय तथा महाविद्यालयों में छात्र संघ के चुनाव प्रक्रिया से प्रजातन्त्र में मतदान करने तथा उसके महत्त्व का ज्ञान होता है।
2. भारत ने प्रजातन्त्र जीवन के ढंग को स्वीकार किया है। प्रजातन्त्र व्यवस्था में मतदान प्रणाली का विशेष महत्त्व है। समाज तथा राष्ट्र अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करता है। इस प्रकार के अनुभव विद्यालय जीवन में ही प्रदान किये जाते हैं।
3. प्रतिनिधि के चुनाव होने पर उन्हें अपनी भूमिकाओं के निर्वाह का भी अनुभव होता है कि सामूहिक हित के कार्य किये जायें, जिसमें सभी का भला हो।
4. छात्रों की समस्याओं को कैसे हल किया जाये अथवा उनके साथ समायोजन किया जाये इस प्रकार के अनुभव भी उन्हें होते हैं।
5. छात्रों में नेतृत्व के विकास तथा नेतृत्व के भूमिका निर्वाह का ज्ञान तथा अनुभव भी प्रदान किया जाता है।

इस प्रकार चुनाव प्रणाली में छात्रों को अनेक भूमिकाओं का निर्वाह करना होता है। मतदाता के रूप में, अभ्यर्थी के रूप में, अपने दल के सदस्य के रूप में तथा एक नेता के रूप में आदि। नागरिकशास्त्र शिक्षण में इस प्रकार के कार्यक्रमों की व्यवस्था अन्य प्रकरणों पर भी की जा सकती है। पंचादन्त प्रणाली को नाटकीय ढंग से छात्रों को भूमिका निर्वाह का ज्ञान तथा अनुभव प्रदान किया जा सकता है। शैक्षिक खेल प्रविधि के द्वारा प्रजातान्त्रिक मूल्यों तथा भूमिका निर्वाह का ज्ञान एवं अनुभव भली प्रकार प्रदान किया जा सकता है।

15.16 अनुकरणीय शिक्षण विधि

इस विधि का प्रयोग प्रशिक्षण संस्थाओं में किया जाता है। इसके द्वारा सामाजिक कौशल का विकास किया जाता है। पाठ–प्रदर्शन की अपेक्षा अनुकरणीय शिक्षण को अधिक महत्त्व दिया जाने लगा है, क्योंकि यह पाठ–प्रदर्शन की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली होती है।

15.16.1 स्वरूप

यह एक नाटकीय विधि मानी जाती है। छात्रों को इसके अभ्यास में शिक्षक तथा छात्र दोनों की भूमिका का निर्वाह करना पड़ता है। छात्राध्यापक को एक छोटे प्रकरण को अपने साथियों को ही पढ़ाना पड़ता है। उसके अन्य साथी छात्रों की भूमिका निभाते हैं। शिक्षण के कार्यों की समीक्षा की जाती है और सुधार के लिये सुझाव दिया जाता है। इसके बाद अन्य छात्राध्यापक शिक्षण करते हैं।

15.16.2 अधिनियम

यह विधि निम्नलिखित अधिनियमों पर आधारित है–

1. स्वयं कार्य करने से अधिक सीखा जाता है।
2. वास्तविक कक्षा शिक्षण से पूर्व उन्हें अभ्यास का अवसर दिया जाता है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

3. पृष्ठपोषण प्रविधि का प्रयोग किया जाता है।
4. सामाजिक कौशल का विकास मनोवैज्ञानिक अधिनियम के उपयोग से किया जाता है।

15.16.3 सोपान

इसमें छः सोपानों का अनुसरण किया जाता है–

1. प्रथम सोपान – कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जाती है।
2. द्वितीय सोपान – छात्राध्यापक को शिक्षक, छात्र तथा निरीक्षक की भूमिका कब–कब निभानी होगी, इसकी रूपरेखा तैयार की जाती है।
3. तृतीय सोपान – छात्राध्यापक अपने प्रकरण का चयन करता है। उससे सम्बन्धित शिक्षा–कौशल के विशिष्ट रूप निश्चित कर लि जाते हैं।
4. चतुर्थ सोपान – शिक्षक–व्यवहार के निरीक्षण विधि का भी चयन किया जाता है।
5. पंचम सोपान – शिक्षण का अभ्यास किया जाता है। उसके निरीक्षण का लेखन तैयार किया जाता है।
6. षष्ठम सोपान – शिक्षण के अन्त में उसकी समीक्षा की जाती है और सुधार के लिये सुझाव दिये जाते हैं, जिससे उसे पुनर्बलन मिलता है।

15.16.4 विशेषताएँ

इस विधि की विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

1. इसमें छात्राध्यापक के जीवन से सम्बन्धित कौशल का विकास अनुभव द्वारा किया जाता है।
2. अपनी क्रियाओं का विश्लेषण, संश्लेषण तथा मूल्यांकन छात्राध्यापक भली प्रकार समझ सकता है।
3. शिक्षक–व्यवहार के स्वरूप का विकास अपेक्षित ढंग से किया जा सकता है।
4. सामाजिक–कौशल का विकास किया जाता है।
5. अपेक्षित उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है।

15.16.5 सीमाएँ

इस विधि की सीमाएँ निम्नलिखित हैं–

1. इसमें वातावरण बनावटी होता है, छात्राध्यापक इसे वास्तविक रूप देने में असफल रहते हैं।
2. सामान्य शिक्षक–व्यवहार के विकास के लिये प्रयुक्त किया जा सकता है। विशिष्ट शिक्षण–कौशल का विकास इसके द्वारा नहीं किया जा सकता है।

15.16.6 सुझाव

इसके प्रयोग में निम्नलिखित सावधानियाँ रखनी चाहिए–

1. इसका प्रयोग करने से पूर्व इसके बारे में समझना चाहिए।
2. छात्राध्यापक की भूमिका निर्वाह के समय प्रवक्ता की उपस्थिति भी होनी चाहिए।
3. शिक्षण के अन्त में समीक्षा के समय प्रवक्ता भी होना चाहिए, उसे पुनर्बलन देने का प्रयास करना चाहिए।
4. वास्तविक शिक्षा–शिक्षण से पूर्व इसका अभ्यास करना चाहिए।

15.17 निरीक्षण विधि

यद्यपि व्यक्तित्व आकलन के दृष्टिकोण से यह वस्तुनिष्ठ नहीं मानी जाती, किन्तु विज्ञान के क्षेत्र में प्रयोगात्मक कार्य इसी विधि का उपयोग करके आरम्भ किया जाता है और वहाँ इसे यथेष्ठ रूप से वस्तुनिष्ठ भी बनाया जा चुका है।

शिक्षा एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में विधि का उपयोग मुख्यतः सर्वेक्षण और नियन्त्रित प्रयोगों में किया जाता है। इसकी उपयोगिता को देखते हुए अब इसे इस क्षेत्र में भी यथाशक्ति वस्तुनिष्ठ बनाने का प्रयास किया जा रहा है। अतएव प्रक्षेपण को एक वैज्ञानिक आधार प्रदान करने के लिए विशेषज्ञों ने इस विधि में निम्नलिखित गुणों का समावेश करने का सुझाव दिया है–

1. सुव्यवस्थित निरीक्षण

निरीक्षण, अवसरवादिता एवं जटिल व्यवस्था से मुक्त होने चाहिए। अर्थात् प्रक्षेपण पूर्व–योजना के अनुसार किसी व्यक्ति अथवा घटना के सही एवं महत्त्वपूर्ण पक्ष के सन्दर्भ में किए जाए, एक स्पष्ट रूप से लक्ष्य आधारित हो।

2. वस्तुनिष्ठ एवं पक्षपात रहित निरीक्षण

निरीक्षण कुछ परिकल्पनाओं पर आधारित होने चाहिए। तभी इनके द्वारा परिकल्पनाओं की परख पक्षपात रहित ढंग से की जा सकेगी।

3. परिमाणात्मक निरीक्षण

यथा सम्भव निरीक्षण अंकों में प्राप्त होने चाहिए। ये अंक अथवा इनसे सम्बन्धित तकनीकी शब्द किसी घटना अथवा व्यक्ति के विषय में स्पष्ट परिमाणात्मक सूचना देने में सक्षम होने चाहिए।

4. विश्वसनीयता, वैधता एवं उपयोगिता

निरीक्षण का स्वरूप ऐसा होना चाहिए कि किसी घटना अथवा व्यक्ति के विषय में इनकी पुनरावृत्ति कई बार हो सके। इस प्रकार प्रक्षेपणों के माध्यम से प्राप्त परिणाम अधिक विश्वसनीय होगा।

5. मौलिकता, नमनीयता एवं कल्पनाशीलता

वस्तुतः यह गुण परीक्षण से कम अपितु निरीक्षण से अधिक सम्बन्धित है। मनोविज्ञान एवं शिक्षा के क्षेत्र में निरीक्षण मानव प्रकृति से सम्बन्धित होता है। मानव–व्यवहार और उससे जुड़ी हुई घटनायें बिना चेतावनी दिए ही परिवर्तनशील, अतएव निरीक्षण विधि का उपयोग करते समय परिस्थिति अनुसार निरीक्षक को अपनी कार्य विधि को तत्परता के साथ नियोजित करना पड़ता है। ऐसा तभी सम्भव है जब यह मौलिक, नमनीय एवं कल्पनाशील हो।

15.17.1 निरीक्षण विधि का वर्गीकरण

मानव–गतिविधि के विषय में सूचनाएँ कई प्रकार से प्राप्त की जा सकती हैं, जैसे– स्वयं देखकर, उस व्यक्ति से पूछकर अथवा किसी तीसरे व्यक्ति से उसके बारे में पूछकर। इन प्रत्यक्ष एवं परोक्ष विधियों के आधार पर व्यक्तित्व मापन विधि के स्वरूप में भी अन्तर आ जाता है। इस प्रकार रूपान्तरित विधियों को विभिन्न नामों से पुकारा जाता है।

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

निरीक्षण विधि के द्वारा किसी मनुष्य के विषय में निरीक्षक स्वयं देखकर धारणा बनाता है। इस विधि को निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत किया गया है–

1. परिस्थिति–परीक्षण
2. औपचारिक–निरीक्षण
3. अनौपचारिक–निरीक्षण

1. परिस्थिति–परीक्षण

इस प्रकार के निरीक्षण को सम्पन्न करने के लिए व्यक्ति को जीवन की वास्तविक परिस्थितियों का प्रतिनिधित्व करने वाली परिस्थिति में रखा जाता हैं। ये परिस्थियाँ कृत्रिम होती हैं और इनसे अन्तःक्रिया करके व्यक्ति व्यवहार प्रदर्शन करता है। इस व्यवहार को प्रक्षेपण ही व्यक्तित्व के मापन का आधार बनता है। सेना के अफसरों के चुनाव के समय सर्विसेज सलेक्शन बोर्ड में **समूह कार्य** परिस्थिति परीक्षण का एक उदाहरण है। मेय और हार्टशोर्न (1925) ने इसी प्रकार के अनेक परीक्षणों का निर्माण किया है। इन परीक्षणों की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. यह व्यक्तित्व मापन की एक रोचक प्रविधि है।
2. क्योंकि ये जीवन परिस्थिति नहीं हैं अतएव इन परिस्थितियों में व्यवहार का वास्तविक स्वरूप नहीं देखा जा सकता है। तब भी इस प्रविधि के द्वारा नेतृत्व कठिनाइयों से जूझने की क्षमता, कर्मठता आदि गुणों का मापन सन्तोषप्रद रूप से हो सकता है।
3. इस प्रकार के परीक्षण की विश्वसनीयता एवं वैधता के विषय में सन्तोषजनक आँकड़े अभी तक उपलब्ध नहीं हैं।
4. यह अभी तक एक मूल प्रविधि के रूप में शोध क्षेत्र में मान्यता प्राप्त नहीं कर सकी है।
5. इसके द्वारा दो व्यक्तियों के व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन सही–सही किया जा सकता है।

2. औपचारिक–निरीक्षण

इस प्रविधि में निरीक्षणकर्त्ता बालक के व्यवहार का अवलोकन औपचारिक रूप से करता है। बालक अपनी दिनचर्या में व्यस्त रहता है और निरीक्षक अपने निरीक्षणों को लिपिबद्ध करता जाता है। स्पष्ट है कि नवागुन्तुक की उपस्थिति में बालक का व्यवहार–अस्वाभाविक हो जाता है। परिणाम स्वरूप व्यवहार निरीक्षण शुद्ध नहीं रह पाते। उपर्युक्त कमी के होने पर भी औपचारिक–निरीक्षण प्रविधि के द्वारा शिशुओं के व्यवहारों के विषय में आसानी से सही–सही जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

1. बालक अपने व्यवहार को कृत्रिम बनाने की चेष्टा नहीं करते हैं, अतएव किसी अजनबी की उपस्थिति में अधिक देर तक अपनी प्रकृति को नहीं छिपाते हैं।
2. बालकों में भाषा का विकास बहुत सीमित होता है, अतएव जो प्रविधियाँ–मौखिक अथवा लिखित सम्प्रेषण पर आधारित हैं, उनका उपयोग नहीं किया जा सकता है। ऐसी दशा में औपचारिक निरीक्षण–प्रविधि ही उपयोगी सिद्ध होती है।

यदि इस निरीक्षण प्रविधि में आवश्यक परिवर्तन कर लिए जाए, तब इसका उपयोग किशोरों एवं प्रौढ़ों के अवलोकन में भी किया जा सकता है।

3. अनौपचारिक–निरीक्षण

यह प्रविधि औपचारिक निरीक्षण विधि का ही संशोधित रूप है। इस प्रविधि को समाजशास्त्र के क्षेत्र में शोध कार्य के लिए बहुत उपयोगी पाया गया है। आदिवासियों की जीवनशैली का विश्वसनीय परिचय इसी प्रकार की निरीक्षण–प्रविधि के माध्यम से समाजशास्त्र के शोधकर्त्ताओं ने प्रस्तुत किया है। इस निरीक्षण–प्रविधि को सुचारू रूप से सम्पन्न करने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

1. सर्वप्रथम व्यवहार प्रारूप के विषय में निर्णय ले लेना चाहिए। अर्थात् यह भली भाँति सोच लिया जाये कि व्यवहार के कौन से पक्ष का अवलोकन करना है। इस प्रकार व्यवहार निरीक्षण की परिसीमाएँ निर्धारित की जाती हैं।
2. तत्पश्चात् चयन किए गये व्यवहार के पक्षों को इस प्रकार परिभाषित करना चाहिए कि वह बालक की उस क्रिया के बारे में सूचना दे सकें, जो प्रकट रूप से देखी जा सके। इस प्रकार के निरीक्षक अपने कार्य के लिए संक्रियात्मक परिभाषाओं का निर्माण करते हैं।
3. व्यवहार–अवलोकन के अभिलेखन के लिए सहायक विधियों का चयन किया जाता है, जैसे– अल्पकालिक–लिपि, टेप–रिकॉर्डर, कैमरा आदि।
4. यथासम्भव निरीक्षण को अंकों में बदल लेना चाहिए। इस कार्य में पंच बिन्दुमापनी अधिक उपयुक्त रहता है।

15.17.2 निरीक्षण विधि के लाभ

1. इसका उपयोग बालकों एवं प्रौढ़ों दोनों के अवलोकन के लिए किया जा सकता है।
2. इसका उपयोग गूंगे, बहरे एवं अन्य अपंगों के व्यवहार–आकलन के लिए भी किया जा सकता है।
3. इस प्रकार के निरीक्षण के द्वारा व्यक्ति के व्यवहार का प्राकृतिक परिस्थितियों में अध्ययन किया जाता है। यह व्यवहार वास्तविकता के निकट होता है अतएव इन निरीक्षणों के आधार पर व्यक्तित्व मापन अधिक विश्वसनीय एवं वैध होता है।

15.17.3 निरीक्षण विधि की सीमाएँ

1. यह विधि समय और मानव–श्रम के दृष्टिकोण से महँगी है।
2. व्यक्ति के सहज व्यवहार पर निरीक्षक की उपस्थिति का प्रभाव पड़ता है, अतएव भरसक प्रयास करने पर भी बालक के मनोवैज्ञानिक वातावरण को सामान्य नहीं बनाया जा सकता है।
3. एक अप्रशिक्षित निरीक्षक के द्वारा यह प्रविधि आत्मनिष्ठता एवं पक्षपात से परिपूर्ण होती है, जिसके कारण व्यक्तित्व मूल्यांकन की विश्वसनीयता एवं वैधता पर प्रभाव पड़ता है।
4. इस विधि में परिवेश प्रभाव की सम्भावनाएँ भी अधिक है।
5. इस विधि का उपयोग करते समय इस बात का निर्णय करना कठिन हो जाता है कि किस व्यवहार पक्ष का अवलोकन किया जाए और किसका नहीं किया जाए?

निरीक्षण विधि का उपयोग करने वाले निरीक्षकों को उपयुक्त प्रशिक्षण

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

दिया जाना चाहिए। इस प्रशिक्षण के दौरान उल्लेखित कौशलों के अतिरिक्त उसे इस प्रकार की कला में भी दक्षता प्राप्त कराने का प्रावधान हो, जिसके द्वारा वह अपनी उपस्थिति के वास्तविक उद्देश्य को प्रकट किए बिना ही व्यक्ति के स्वाभाविक व्यवहार का अध्ययन कर सके। निरीक्षण को वैध एवं विश्वसनीय बनाने के लिए इस प्रकार का प्रशिक्षण नितान्त आवश्यक है। आदिवासियों के जीवन-यापन के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करने के लिए कुछ मापनकर्त्ताओं ने कबीले के सदस्य के रूप में उन लोगों के साथ ही रहना आरम्भ कर दिया था। इसी प्रकार वे कबीलों की गतिविधियों के बारे में वास्तविक चित्र प्रस्तुत करने में समर्थ हुए हैं।

15.18 पाठ-प्रदर्शन विधि

यह विधि प्रशिक्षण की परम्परागत विधि है। इसका प्रयोग तकनीकी संस्थाओं तथा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थाओं में किया जाता है। इसको अनुदेशनात्मक पाठ्यक्रम में अधिक प्रयुक्त करते हैं। यह प्रभुत्ववादी विधि मानी जाती है, क्योंकि अनुदेशक जिस प्रकार पाठ का प्रदर्शन करता है, छात्राध्यापक अनुकरण करने का प्रयास करते हैं। इसका अध्यापन, शिक्षा तथा प्रशिक्षण विभागों में अधिक प्रयोग किया जाता है।

15.18.1 पाठ-प्रदर्शन विधि का स्वरूप

पाठ-प्रदर्शन विधि में तीन सोपानों का अनुसरण किया जाता है-

1. **प्रस्तावना** - प्रथम सोपान में उद्देश्यों की व्याख्या की जाती है।
2. **विकास** - द्वितीय सोपान में पाठ को विकसित किया जाता है, जिसमें शिक्षक प्रश्नों तथा सहायक सामग्री को प्रयुक्त करता है।
3. **एकीकरण** - अन्तिम सोपान के अन्तर्गत पाठ्यवस्तु के एकीकरण के लिये अभ्यास कराया जाता है तथा मूल्यांकन प्रश्न पूछे जाते हैं।

15.18.2 पाठ-प्रदर्शन विधि के अधिनियम

इसके मुख्य अधिनियम निम्नलिखित हैं-

1. इस विधि की यह धारणा है कि कौशल का विकास अनुकरण से भली प्रकार किया जा सकता है।
2. अनुकरण के प्रत्यक्षीकरण का अवसर दिया जाता है।

15.18.3 पाठ-प्रदर्शन विधि की सीमाएँ

इसकी प्रमुख सीमाएँ निम्नलिखित हैं-

1. छात्र-अध्यापकों की मौलिकता का विकास नहीं हो पाता है, क्योंकि इसमें अनुकरण पर बल दिया जाता है।
2. छात्र पाठ-प्रदर्शन को आदर्श मानकर कौशल का विकास करते हैं, जबकि सभी अनुदेशक पाठ को सही रूप में प्रस्तुत नहीं कर पाते हैं।

15.18.4 पाठ-प्रदर्शन विधि हेतु सुझाव

पाठ-प्रदर्शन विधि हेतु सुझाव इस प्रकार हैं-

1. पाठ-प्रदर्शन के बाद छात्र अध्यापकों को अपनी शंकाओं के स्पष्टीकरण का अवसर देना चाहिए।
2. पाठ-प्रदर्शन के स्थान पर अनुकरणीय शिक्षण को प्रयुक्त किया जाना चाहिए।

15.18.5 पाठ-प्रदर्शन विधि का उपयोग

इस शिक्षण विधि को सामान्य स्तर तथा उससे निम्न स्तर के छात्रों के लिये मुख्य रूप से प्रयुक्त किया जाता है। प्रशिक्षण संस्थाओं के छात्र-अध्यापकों के लिये इसका प्रयोग किया जाता है। इसके द्वारा ज्ञानात्मक तथा क्रियात्मक पक्ष के मध्य तथा निम्न स्तर के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। इस शिक्षण विधि की प्रमुख विशेषता तथा उपयोगिता यह है कि इससे अध्यापकों को पाठ को विकसित करने के लिये क्रमबद्ध सोपानों का बोध होता है।

15.19 ऐतिहासिक खोज विधि

इस विधि के प्रवर्तक जे. एस. ब्रनूर हैं। प्रायः ऐतिहासिक खोज तथा अन्वेषण विधियों को भ्रमवश शिक्षक एक ही अर्थ में प्रयोग करते हैं परन्तु दोनों विधियाँ एक-दूसरे से बिल्कुल ही भिन्न होती हैं। ऐतिहासिक खोज का प्रयोग सामाजिक विषयों में तथ्यों के लिये किया जाता है, जबकि अन्वेषण विधि का प्रयोग वैज्ञानिक विषयों, प्रत्ययों तथा अधिनियमों के प्रतिपादन में किया जाता है। अन्वेषण विधि में पाठ्य-वस्तु का बोध वस्तुनिष्ठ रूप में दिया जाता है, जबकि ऐतिहासिक खोज में तथ्यों की व्याख्या तथा वर्णन व्यक्तिनिष्ठ ही होता है। अन्वेषण विधि का सम्बन्ध वर्तमान से होता है और निरीक्षण प्रत्यक्ष रूप में किया जाता है, जबकि ऐतिहासिक खोज का सम्बन्ध अतीत अर्थात् भूतकाल की घटनाओं से होता है तथा अवशेषों के आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते हैं।

15.19.1 स्वरूप

प्रमुख स्वरूप निम्न प्रकार हैं-

1. छात्रों के शैक्षिक पर्यटन में ऐतिहासिक अवलोकन के बाद उनसे वर्णन कराया जाता है।
2. किसी युग के वर्णन अथवा शासन का वर्णन करके छात्रों से उसकी सफलता अथवा असफलता के कारण को ज्ञात कराया जाता है।
3. छात्रों को नये तथ्यों की खोज मौलिक रूप में करनी होती है, परन्तु विद्यालय स्तर पर छात्र अपने लिये ही तथ्यों की खोज करता है।
4. इसमें तथ्यों का व्यवस्था अर्थापन इस प्रकार किया जाता है, जिससे नये तथ्यों का बोध होने लगता है।

15.19.2 अधिनियम

यह विधि निम्नलिखित अधिनियमों पर आधारित हैं-

1. छात्रों को क्रियाशीलता के लिये अवसर दिया जाता है।
2. छात्रों में सूझ शक्ति का विकास होता है।
3. छात्रों को व्यक्तिगत रूप से तथा स्वतन्त्र रूप से चिन्तन का अवसर मिलता हैं।
4. छात्रों की परिपाक तथा वर्णन करने की क्षमताओं का विकास होता है।
5. आन्तरिक तथा बाह्य (खोज) दोनों ही आवश्यक होती है।

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

15.19.3 विशेषताएँ

इस विधि की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

1. सामाजिक तथ्यों के रटने की अपेक्षा बोधगम्यता तथा चिन्तन के लिये अवसर दिया जाता हैं।
2. छात्रों में सृजनात्मक चिन्तन का विकास होता है।
3. विश्लेषण तथा संश्लेषण क्षमताओं का विकास किया जाता है।
4. ज्ञानात्मक तथा भावात्मक पक्षों के उच्च उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है।
5. छात्र केवल अपने लिये नये ज्ञान की खोज ही नहीं करता है, अपितु संचित ज्ञान का प्रत्यास्मरण भी करता है।

15.20 ब्रेन स्टॉरमिंग विधि

यह शिक्षण आव्यूह पूर्णरूप से प्रजातान्त्रिक है। इसकी धारणा यह है कि एक व्यक्ति की अपेक्षा उनका समूह अधिक विचार दे सकता है। इस शिक्षण विधि का प्रारूप समस्या केन्द्रित होता है। इसमें छात्रों को समस्या दे दी जाती है और उनसे कहा जाता है कि समस्या पर वाद–विवाद करें और जो विचार उनके मस्तिष्क में आए उनको प्रस्तुत करने का प्रयास करें। यह आवश्यक नहीं है कि उनके सभी विचार सार्थक ही हों। इस प्रकार समूह को प्रोत्साहित किया जाता है और समूह समस्या का विश्लेषण, संश्लेषण तथा मूल्यांकन करता है।

इस शिक्षण आव्यूह का आधार शैक्षिक तथा मनोवैज्ञानिक दोनों ही हैं। ब्रेन स्टॉरमिग का सम्बन्ध भावात्मक पक्ष के निम्न तथा उच्च स्तर के उद्देश्यों से है। इसको ज्ञानात्मक पक्ष के उच्च स्तर के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये भी प्रयुक्त किया जा सकता है। यह शिक्षण आव्यूह छात्रों में अच्छे विचारों को विकसित करने में सहायक होता है। इस शिक्षण आव्यूह के मूल्यांकन के लिये सृजनात्मक परीक्षायें अधिक सार्थक तथा उपयोगी होती है, क्योंकि इसकी शिक्षण परिस्थितियों में सृजनात्मक क्षमताओं के विकास के लिये अधिक अवसर दिए जाते हैं।

15.21 परिपृच्छा विधि

परिपृच्छा एक प्रक्रिया है, जिससे प्रश्नों, शंकाओं तथा समस्याओं का समाधान किया जाता है। परिपृच्छा अनेक प्रकार की होती है। परिपृच्छा के ढंग से उसके लक्ष्य को प्राप्त किया जाता है। परिपृच्छा एक सद्उद्देश्य प्रक्रिया है। ज्ञान के प्रत्येक शिक्षण तथा शोध में परिपृच्छा का उपयोग किया जाता है।

15.21.1 परिपृच्छा की परिभाषा

जब शिक्षा प्रश्नों पर आधारित होती है तब परिपृच्छा की परिभाषा की जाती है। शिक्षा एक बहुआयामी प्रत्यय है, इसकी परिभाषा करना कठिन है। शिक्षा के अनेक अर्थ तथा परिभाषा दी गई है। शिक्षा में समस्या–केन्द्रित आयाम का उपयोग किया जाता है तथा अधिगम एवं शिक्षण भी समस्या केन्द्रित होता है। योजना–विधि समस्या–केन्द्रित होती है। जब शिक्षण छात्र–केन्द्रित होता है तब परिपृच्छा का उपयोग किया जाता है। शिक्षण की प्रक्रिया में छात्रों को सक्रिय रखने के लिए परिपृच्छा का उपयोग किया जाता है।

सभी प्रकार का अधिगम छात्रों से आरम्भ होता है। छात्र क्या जानते हैं? वे क्या जानना चाहते हैं? तथा क्या पढ़ाया जा सकता है? उसके अतिरिक्त कुछ मूल प्रश्न क्यों पढ़ाया जाए? क्या पढ़ाया जाए? और कैसे पढ़ाया जाए? यह अधिगम तथा शिक्षण सम्बन्धी बुनियादी प्रश्न है। जॉन डीवी ने चार प्राथमिक अभिरूचियों का उल्लेख किया है, जो आज भी उपयुक्त हैं–

1. छात्रों की रूचि की मूल इच्छाएँ, जिन्हें वे जानना चाहते हैं
2. वार्तालाप में छात्रों की सम्प्रेषण की क्षमताएँ
3. रचनात्मक कार्यों से आनन्द प्राप्त करने की प्रवृत्ति
4. कलात्मक अभिव्यक्ति की प्रतिभा

बालकों का विकास तथा अभ्यास, इन्हीं चार अभिरूचियों तथा क्षमताओं पर निर्भर होता है।

जॉन डीवी का मानना है कि विद्यालय में शिक्षा व्यक्तिगत छात्र तक सीमित नहीं रहती है अपितु समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं को महत्त्व दिया जाता है। सामाजिक मानकों का अनुसरण किया जाता है। परिपृच्छा भी समाज और राष्ट्र के सन्दर्भ में की जाती है। विद्यालय में सामूहिक विचारों एवं रूचियों का सम्प्रेषण किया जाता है। इस प्रकार नई पीढ़ी को ज्ञान एवं मूल्यों को प्रदान करती है। समाज अपनी संस्कृति का भी संरक्षण विद्यालय के द्वारा करता है। शिक्षण परिपृच्छा की सहायता से इन लक्ष्यों की प्राप्ति करता है।

छात्रों के अधिगम के लिए परिपृच्छा एक विधि का कार्य करती है। कक्षा शिक्षण में छात्रों को चुनौती के रूप में वास्तविक ज्ञान प्रदान किया जाता है। परिपृच्छा के उपयोग से कक्षा के छात्र समग्र होकर शिक्षण की परिस्थिति में सक्रिय होकर भाग लेते हैं।

परिपृच्छा अधिगम का एक आयाम है, जिसमें प्राकृतिक एवं भौतिक विश्व के सम्बन्ध में जानने की प्रक्रिया है, जिसमें नवीन ज्ञान एवं बोध के लिए प्रश्नों के माध्यम से अग्रसर किया जाता है।

15.21.2 परिपृच्छा के प्रकार

परिपृच्छा ज्ञान अर्जित करने का आधार तथा साधन है। इसका उपयोग सभी विषयों में किया जाता है। इसके प्रमुख तीन प्रकार हैं–

1. कला परिपृच्छा
2. विज्ञान परिपृच्छा
3. दार्शनिक परिपृच्छा

इन परिपृच्छाओं का विवरण यहाँ पर दिया गया है–

1. कला परिपृच्छा

यहाँ कला का अभिप्राय साहित्य, सामाजिक विषयों से है। इन विषयों के शिक्षण में परिपृच्छा का उपयोग किया जाता है। सामान्यतः आगमन तथा निगमन विधियों का उपयोग किया जाता है। इनका उपयोग परिपृच्छा की सहायता से सम्भव होता है। इसमें तार्किक चिन्तन का विशेष महत्त्व होता है। शिक्षण को अन्तःप्रक्रिया मानते हैं इसलिए प्रश्नोत्तर विधि को प्राथमिकता दी जाती है। प्रश्नोत्तरविधि का सम्पादन भी परिपृच्छा की सहायता से किया जाता है। शिक्षक एवं छात्र दोनों को सक्रिय रखा जाता है। शिक्षण छात्र–केन्द्रित अधिक होता है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

2. विज्ञान परिपृच्छा

यहाँ विज्ञान का अभिप्राय, विज्ञान संकाय से है। विज्ञान के विषयों के शिक्षण में भी परिपृच्छा का उपयोग व्यवहारिक रूप में किया जाता है। प्रयोग तथा प्रदर्शन विधियों का उपयोग विज्ञान विषयों में किया जाता है। प्रश्नोत्तर विधि का उपयोग किया जाता है। परिपृच्छा की सहायता से अन्य विधियों तथा प्रविधियों का उपयोग किया जाता है। निगमन विधि का सम्पादन भी परिपृच्छा की सहायता से किया जाता है।

3. दार्शनिक परिपृच्छा

दर्शन शिक्षा का सिद्धान्त है। शिक्षा सम्बन्धी भौतिक प्रश्नों का उत्तर दर्शन द्वारा ही सम्भव है; जैसे–गणित क्यों पढ़ाया जाए? गणित में क्या पढ़ाया जाए? तथा गणित कैसे पढ़ाया जाए? इन प्रश्नों के उत्तर के दार्शनिक परिपृच्छा का उपयोग किया जाता है। प्रथम प्रश्न के उत्तर में उद्देश्य, दूसरे के उत्तर में पाठ्यवस्तु तथा तीसरे प्रश्न के उत्तर से शिक्षण विधि की जानकारी होती है।

15.21.3 परिपृच्छा की आवश्यकता

शिक्षा प्रक्रिया का लक्ष्य ज्ञान, कौशल तथा भावनाओं का विकास करना है। परिपृच्छा का ज्ञान से निकट का सम्बन्ध है। परिपृच्छा से ज्ञान का विकास किया जाता है। ज्ञानात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति में परिपृच्छा का विशेष महत्त्व है। परिपृच्छा से छात्रों की निम्नलिखित क्षमताओं का विकास किया जाता है–

1. परिपृच्छा के विविध स्वरूपों को समझना और विभिन्न समस्याओं एवं विचारों के ज्ञान के लिए प्रयुक्त करना।
2. ज्ञान के स्वरूप तथा आयामों का परीक्षण करना।
3. ज्ञान सम्बन्धी विचारों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।
4. शैक्षिक क्रियाओं में सक्रिय होना।
5. मौखिक रूप से विचारों की अभिव्यक्ति करना तथा उनकी पुष्टि करना।

परिपृच्छा में कई प्रकार के चिन्तन की आवश्यकता होती है उसके उपयोग की क्षमता तथा कौशल का विकास होता है। आलोचनात्मक चिन्तन, सर्जनात्मक चिन्तन तथा निष्कर्षात्मक चिन्तन की आवश्यकता होती है। शिक्षण बिना आगमन एवं निगमन विधियों के सम्भव नहीं होता है। यह विधियाँ चिन्तन पर आधारित हैं। इनका विकास बैकन ने तार्किक चिन्तन से किया। परिपृच्छा मानवीय ज्ञान का प्रमुख स्रोत है।

15.21.4 परिपृच्छा में चिन्तन

परिपृच्छा में अनेक प्रकार का चिन्तन प्रयुक्त किया जाता है, जिनका संक्षिप्त वर्णन निम्न प्रकार है–

1. आगमन चिन्तन

आगमन चिन्तन में विशिष्ट से सामान्य की ओर अग्रसर किया जाता है। शिक्षक उदाहरणों की सहायता से नियमों का बोध कराता है। व्याकरण शिक्षण में इस प्रकार का चिन्तन ही प्रयुक्त किया जाता है।

2. निगमन चिन्तन

निगमन चिन्तन में सामान्य से विशिष्ट की ओर अग्रसर किया जाता है। शिक्षक पहले नियम को बताकर उदाहरण की ओर अग्रसर होता है। यह दोनों प्रकार के चिन्तन एक दूसरे के पूरक है विरोधी नहीं हैं।

3. आलोचनात्मक चिन्तन

आलोचनात्मक चिन्तन में मानसिक प्रक्रिया अधिक होती है। इसके अन्तर्गत परिपृच्छा से ज्ञान की सत्यता की परख की जाती है। ज्ञान की परख में मूल्यों का विशेष महत्त्व होता है। इस परिपृच्छा में निर्णय शक्ति का अधिक महत्त्व होता है।

4. सृजनात्मक चिन्तन

सृजनात्मक चिन्तन में मौलिकता अधिक होती है। इस प्रकार के चिन्तन से समस्याओं तथा शंकाओं के समाधान ढूँढ़ने का प्रयास किया जाता है। इसमें कल्पनाशक्तितथा प्रत्ययीकरण का विशेष महत्त्व होता है। पाठ्यवस्तु को तार्किक क्रम में व्यवस्थित करने में शिक्षक इस प्रकार के चिन्तन का उपयोग करता है। परिपृच्छा में इस प्रकार के चिन्तन को अवसर दिया जाता है।

5. निष्कर्षात्मक चिन्तन

निष्कर्षात्मक चिन्तन का अवसर आगमन शिक्षण विधि में दिया जाता है। शिक्षक परिपृच्छा की सहायता से समान प्रकार के उदाहरण प्रस्तुत करता है और उनमें निहित तत्त्व को ज्ञात करने के लिए छात्रों को अवसर देता है। इसे नियम तथा सामान्यीकरण भी कहते हैं। यह प्रक्रिया निष्कर्षात्मक चिन्तन से सम्बन्धित होती है।

परिपृच्छा की सहायता से शिक्षक ऐसी अधिगम परिस्थितियों का सृजन करता है जिससे छात्रों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन लाया जा सके और शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके।

15.21.5 परिपृच्छा की अवस्था

परिपृच्छा की दो अवस्थाएँ होती है–

1. उत्तर की ओर देखना
2. उत्तर की वैधता की परख करना

परिपृच्छा की प्रथम अवस्था का सम्बन्ध शिक्षण विधि से होता है जिसमें शिक्षक प्रस्तुतीकरण करता है। द्वितीय अवस्था उत्तर का औचित्य होता है, जिसमें आलोचनात्मक चिन्तन किया जाता है। इन अवस्थाओं का उपयोग शिक्षण तथा शोध कार्यों में किया जाता है।

15.21.6 वैज्ञानिक परिपृच्छा

शिक्षण तथा शोध कार्यों में वैज्ञानिक परिपृच्छा का उपयोग अधिक किया जाता है। इसमें उत्तर तथा निष्कर्षों की वैधता अधिक होती है। यह परिपृच्छा समस्या–केन्द्रित होती है। प्रयोगात्मक कार्यों में इस प्रकार की परिपृच्छा का उपयोग किया जाता है। इसमें छः सोपानों का अनुसरण किया जाता है।

1. समस्या को पहचानना (परिपृच्छा का आरम्भ)
2. समस्या का सम्भावित समाधान या उत्तर
3. पाठ्य–सामग्री तथा प्रक्रिया/प्रारूप
4. निरीक्षण, प्रदत्तों का संकलन करना
5. प्रदत्तों/निरीक्षणों का विश्लेषण तथा अर्थापन करना
6. निष्कर्ष निकालना, समस्या/प्रश्न का उत्तर प्राप्त करना

इस सोपानों की सहायता से वैज्ञानिक परिपृच्छा का उपयोग किया जाता है। इसके लिए निरीक्षण, वर्गीकरण, सम्प्रेषण, अर्थापन, परिभाषा करना आदि कौशलों की आवश्यकता होती है।

www.praganya.org

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

15.21.7 परिपृच्छा का उपयोग

परिपृच्छा के मुख्य उपयोग निम्नलिखित हैं–

1. परिपृच्छा का सभी विषयों के शिक्षण में सभी स्तरों पर उपयोग किया जाता है।
2. आगमन एवं निगमन शिक्षण विधि के उपयोग में परिपृच्छा का उपयोग एक सहायक प्रविधि के रूप में किया जाता है।
3. परिपृच्छा का उपयोग, शिक्षण, अनुदेशन, प्रशिक्षण तथा शोध में किया जाता है।
4. परिपृच्छा का उपयोग एक प्रक्रिया, एक आयाम, एक विधि तथा प्रविधि के रूप में किया जाता है।
5. परिपृच्छा से ज्ञान की सार्थकता तथा वैधता की परख भी होती है।
6. परिपृच्छा में विविध प्रकार के चिन्तन का उपयोग किया जाता है।
7. परिपृच्छा एक समस्या केन्द्रित प्रक्रिया है।

15.22 विवरण प्रविधि

विवरण शिक्षण क्रिया की अनिवार्य युक्ति है। शिक्षण के किसी न किसी स्तर पर अध्यापक को विवरण या कथन अवश्य देना पड़ता है। किसी विषय के लिये विवरण देने में प्रमुख उद्देश्य यह होता है कि उसके मुख्य पहलुओं पर उचित प्रकाश पड़ सके। विवरण का प्रयोग पाठ के निम्नलिखित स्थलों पर किया जाता है–

1. प्रस्तावना के अन्त में

जब पाठ की प्रस्तावना प्रश्नों, चित्रों एवं उदाहरणों आदि के द्वारा प्रस्तुत की जाती है, तो आमतौर से उनके बाद विवरण की प्रविधि का प्रयोग करना पड़ता है।

2. पाठ के मध्य में

जब पाठ विकसित किया जाता है, तो कई स्थलों पर विषय पर विशेष प्रकाश डालने की दृष्टि से विवरण दिया जाता है। भिन्न-भिन्न विषयों में विवरण प्रविधि का प्रयोग भिन्न-भिन्न ढंगों से किया जाता है। इतिहास का अध्यापक अतीत की घटनाओं एवं परिस्थितियों का स्पष्ट चित्रण करने के लिये विवरण देने की आवश्यकता अनुभव करता है। गणित में प्रविधि का प्रयोग बहुत कम होता है, जबकि सामाजिक विषयों में विवरण को एक महत्त्वपूर्ण एवं अनिवार्य प्रविधि माना है।

15.22.1 विवरण प्रविधि की विशेषताएँ

इस प्रविधि की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

1. विवरण बालक के मस्तिष्क पर स्थायी प्रभाव डालता है। जो सूचना या ज्ञान पुस्तकों के पढ़ने से कुछ समय के बाद मालूम होता है, वह विवरण के माध्यम से अत्यन्त रोचक एवं मितव्ययी ढंग से शीघ्र ग्रहण किया जा सकता है।
2. विवरण को प्रभावशाली बनाने पर छात्रों में ध्यानपूर्वक विषय को समझने की शक्ति विकसित होती है और वह स्वयं अपनी अभिव्यक्ति को बढ़ाता है।
3. विवरण द्वारा विषय के अनेक पक्षों पर प्रकाश पड़ता है। एक ही विषय की सर्वांगपूर्ण समीक्षा विवरण द्वारा प्रस्तुत की जा सकती है।
4. विवरण द्वारा बालक की जिज्ञासा को पनपाने में सरलता होती है।
5. विषय की तर्कपूर्ण स्थापना की दृष्टि से विवरण बड़ा उपयोगी होता है।

15.22.2 विवरण प्रविधि की सीमाएँ

विवरण प्रविधि का प्रयोग सभी विषयों के शिक्षण में नहीं किया जा सकता। यदि कोई शिक्षण विवरण प्रविधि का प्रयोग उपयुक्त स्थान पर नहीं करता है, तो शिक्षण का प्रभाव घट जाता है। विवरण प्रविधि की सीमाएँ इस प्रकार हैं–

1. विवरण प्रविधि के प्रयुक्त होने पर शिक्षक अधिक सक्रिय रहता है।
2. विवरण को प्रस्तुत करने में भाषा की शुद्धता एवं उपयुक्तता, विषय वस्तु की रोचकता तथा बोधगम्यता आदि अनेक महत्त्वपूर्ण तत्त्व होते हैं, जिन पर ध्यान न देने से विवरण का महत्त्व घट जाता है।
3. विवरण की प्रासंगिकता एवं पर्याप्तता के बारे में निर्णय लेना बड़ा कठिन कार्य है।
4. विवरण को तार्किक तथा मनोवैज्ञानिक क्रम में उपस्थित करना एक कला है जिसमें प्रत्येक शिक्षक दक्ष नहीं होता है।
5. शिक्षक की कुशलता पर विवरण की प्रभावशीलता निर्भर करती है।

15.22.3 विवरण प्रविधि हेतु सुझाव

इस प्रविधि का प्रयोग करते समय उपर्युक्त सीमाओं पर ध्यान देना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य बातों के प्रति भी सावधानी बरतनी चाहिए, जो निम्नलिखित हैं–

1. विवरण प्रसंगानुकूल तथा उचित गति से प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
2. विवरण न तो अधिक लम्बा हो और न अधिक छोटा हो।
3. विवरण देते समय अध्यापक को अपने स्वर, उच्चारण, आरोह-अवरोह एवं बल के प्रति विशेष सजग रहना चाहिए।
4. तथ्यों तथा भाषा की दृष्टि से विवरण में किसी प्रकार की अशुद्धि नहीं रहनी चाहिए।
5. विवरण की शैली रोचक, स्पष्ट तथा विविधतापूर्ण होनी चाहिए। अध्यापक को धैर्यपूर्वक विवरण प्रस्तुत करने का अभ्यासी होना आवश्यक है।
6. विवरण को छात्र के लिये रोचक एवं बोधग्राह्य बनाने का प्रयास करना चाहिए।
7. विवरण देते समय चित्रों, रेखाचित्रों, चार्ट, मानचित्र तथा उदाहरण आदि भी देने चाहिए।
8. विवरण की व्यवस्था पाठ के भिन्न-भिन्न स्थानों पर पूर्व योजना के अनुसार करना अधिक उचित होता है।

15.23 वर्णन प्रविधि

वर्णन प्रविधि का प्रयोग किसी घटना, दृश्य एवं नियम का विस्तारपूर्वक वर्णन देने के लिये किया जाता है। केवल प्रश्नों के पूछने अथवा विवरण दे देने से किसी घटना अथवा दृश्य का सम्पूर्ण चित्र बालक के मस्तिष्क पटल पर उपस्थित नहीं किया जा सकता है। कभी-कभी अध्यापक को विषय के प्रति विस्तारपूर्वक विवरण देना पड़ता है। वर्णन को विस्तृत-विवरण कहना अधिक

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

समीचीन है। विवरण में टीका-टिप्पणी तथा विश्लेषण की भावना निहित होती है, जबकि वर्णन में विषय का सांगोपांग विवेचन एवं प्रस्तुतीकरण मुख्य उद्देश्य होता है। नागरिकशास्त्र में सन् 1857 ई. के स्वतन्त्रता संग्राम का वर्णन एक व्यक्तव्य के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। भाषा के शिक्षण द्वारा वर्णन कि योग्यता विकसित की जाती है तथा छात्र वर्णनात्मक निबन्धों तथा भाषणों के अभ्यास द्वारा यह योग्यता लाने का प्रयास करते हैं। इसी प्रकार इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र तथा विज्ञान शिक्षण में भी वर्णन प्रविधि का प्रयोग किया जाता है।

15.23.1 वर्णन की प्रभावोत्पादकता के आधार

सजीव एवं रोचक वर्णन प्रस्तुत करना एक कला है। वर्णन की प्रभावोत्पादकता निम्नलिखित बिन्दुओं पर आधारित है-

1. वर्णन की शैली

वर्णन किये जाने वाले विषय से सम्बन्धित भाव में उतार-चढ़ाव, शब्दों का प्रयोग, वाक्यों का गठन, अभिव्यक्ति आदि बातें वर्णन की शैली के आवश्यक तत्त्व हैं। यदि वर्णन की भाषा सरल, शुद्ध एवं स्पष्ट नहीं है, तो वर्णन की शैली पर इसका अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता है।

2. वर्णनीय विषय

जिस विषय का वर्णन किया जा रहा हो, उसका बालक के मानसिक स्तर तथा सामाजिक परिवेश से कितना निकट का सम्बन्ध है। यह बात भी वर्णन को प्रभावशाली बनाने में सहायक होती है।

3. वर्णन की उपयुक्ता

यदि वर्णन छात्रों की रूचि एवं विकास अवस्था की दृष्टि से उपयुक्त है, तो वह स्वाभाविक रूप से छात्रों के मस्तिष्क पर स्थायी प्रभाव डालता है।

4. वर्णन की सर्वांगपूर्णता

वर्णन द्वारा विषय की सर्वांगपूर्ण विवेचना प्रस्तुत करना प्रमुख लक्ष्य होता है। यदि वर्णन व्यापक नहीं है, तो उसे प्रभावशाली नहीं माना जा सकता है। एक-पक्षीय वर्णन की उपयोगिता बहु-पक्षीय वर्णन की तुलना में सर्वदा कम रहती है। अतः एक अच्छा वर्णन व्यापक तथा बहु-पक्षीय होता है।

www.praganya.org

15.23.2 वर्णन प्रविधि की सीमाएँ

प्रत्येक विषय के शिक्षण में इस प्रविधि का प्रयोग सम्भव नहीं है। इसी तरह एक ही विषय के प्रत्येक पहलू का शिक्षण इस प्रविधि के माध्यम से नहीं दिया जा सकता है। वर्णन प्रविधि की कुछ सीमाएँ इस प्रकार हैं-

1. वर्णन में शिक्षक अधिक सक्रिय होता है। छात्र की क्रियाशीलता को जाग्रत करने की चेष्टा कम होती है।
2. वर्णन की भाषा एवं विषय-वस्तु उपयुक्त न होने पर शिक्षण में नीरसता आ जाती है और छात्र विषय की ओर ध्यान नहीं दे पाते हैं।
3. वर्णन के अधिक विस्तृत एवं लम्बा हो जाने की सम्भावना हमेशा बनी रहती है। कभी-कभी एक व्यापक वर्णन तथा भाषण में बहुत कम अन्तर रह जाता है।
4. वर्णन को प्रस्तुत करने का ढंग प्रत्येक शिक्षक में समान रूप से प्रभावशाली नहीं हो सकती है। अतः ऐसे शिक्षक जिनकी अभिव्यक्ति प्रभावोत्पादक नहीं होती है, वे वर्णन-प्रविधि का प्रयोग उचित रूप में नहीं कर सकते हैं।
5. वर्णन की यथेष्टता एवं व्यापकता के बारे में निर्णय करना बड़ा कठिन होता है। इसके लिये विशेष प्रकार की सूझ-बूझ आवश्यक है।

15.23.3 वर्णन प्रविधि हेतु सुझाव

उपर्युक्त सीमाओं पर ध्यान रखते हुए शिक्षक को चाहिए कि वर्णन प्रविधि का प्रयोग करते समय निम्नलिखित सावधानियाँ रखे-

1. वर्णन की शैली मनोरंजक तथा आकर्षक हो। उसकी भाषा सरल, शुद्ध तथा प्रवाह-युक्त हो।
2. वर्णन की विषयवस्तु बालक के सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिवेशों से सम्बन्धित होनी चाहिए।
3. वर्णन की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिये चित्र, नमूने, उदाहरण तथा अन्य सहायक सामग्रियों का प्रयोग किया जा सकता है।
4. वर्णन करते समय विचारों को क्रमिक एवं तार्किक ढंग से उपस्थित करना चाहिए।
5. वर्णन का विषय अधिक कठिन नहीं होना चाहिए।
6. वर्णन प्रासंगिक हो तथा उसमें अनावश्यक उदाहरणों का समावेश न हो।
7. वर्णन द्वारा बालक के अन्दर उपयुक्त स्मृति चित्र बनाने चाहिए।
8. वर्णन में पूर्ण विषय का प्रारूप प्रस्तुत करने की क्षमता होनी चाहिए।

15.23.4 विवरण तथा वर्णन प्रविधियों में अन्तर

इन दोनों प्रविधियों में पर्याप्त समानता है। भाषा तथा शैली की दृष्टि से दोनों की प्रभावोत्पादकता को निर्धारित करने वाले तत्त्व एक ही जैसे हैं। इन दोनों प्रविधियों का प्रयोग विषय का सम्पूर्ण विवेचन प्रस्तुत करने के उद्देश्य से किया जाता है। इन समानताओं के होते हुये भी दोनों प्रविधियों में अन्तर है। इस अन्तर को एक तालिका द्वारा दर्शाया गया है-

क्र. सं.	विवरण प्रविधि	वर्णन प्रविधि
1.	संक्षिप्त एवं छोटे आकार का होता है।	विस्तृत एवं लम्बा होता है।
2.	विषय को स्पष्ट करने के लिए कभी-कभी प्रयुक्त होता है।	विषय का सर्वांगपूर्ण शाब्दिक चित्र निर्मित करने की दृष्टि से लगातार रूप में प्रयुक्त होता है।
3.	तार्किक दृष्टि से संगत होना अत्यन्त आवश्यक है।	तार्किक तथा मनोवैज्ञानिक दोनों दृष्टियों से उपयुक्त होना चाहिए।
4.	विश्लेषणात्मक अधिक होता है।	संश्लेषणात्मक अधिक होता है।
5.	मौखिक रूप मुख्य हैं।	मौखिक तथा लिखित दोनों ही रूपों में महत्त्वपूर्ण होता है।

15.24 व्याख्या प्रविधि

व्याख्या प्रविधि किसी विषयवस्तु को अधिक स्पष्ट करने के लिये प्रयुक्त की जाती है। इसके अन्तर्गत विषय का विश्लेषण गहराई के साथ किया जाता है तथा

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

विषय को अधिक बोधगम्य बनाने की चेष्टा की जाती है। विषय की जटिलता एवं दुरूहता के आधार पर व्याख्या प्रविधि की आवश्यकता पड़ती है।

15.24.1 व्याख्या की प्रभावोत्पादकता

व्याख्या को प्रभावोत्पादक बनाने के लिये निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

1. व्याख्या में प्रयुक्त होने वाली भाषा

वही शिक्षक व्याख्या प्रविधि का प्रयोग सफलतापूर्वक कर सकता है, जिसका भाषा पर अच्छा अधिकार हो। व्याख्या करते समय भाषा की सरलता, स्पष्टता, शुद्धता, एवं प्रवाहमयता नितान्त आवश्यक है।

2. विषय पर अधिकार

जो शिक्षक अपने विषय को भली प्रकार नहीं जानता, वह व्याख्या द्वारा बालकों को विषय का स्पष्टीकरण देने में कुशल नहीं प्रमाणित होता है। विषय की अच्छी जानकारी न होने से व्याख्या त्रुटिपूर्ण तथा असंगत हो जाती है।

3. व्याख्या की उपयुक्तता

शिक्षण के किस स्थल पर व्याख्या की आवश्यकता है? छात्र किस समय व्याख्या की आवश्यकता अनुभव करता है? आदि बातें शिक्षण–कला को प्रभावशाली रूप देने में सहायक होती हैं। शिक्षण के प्रत्येक स्थल पर व्याख्या प्रस्तुत करना उचित नहीं है। जब विद्यार्थी किसी विषय को समझने में कठिनाई अनुभव करें अथवा विषय बड़ा जटिल हो, तो व्याख्या का प्रयोग अपेक्षित है।

4. व्याख्या की मूर्तता

व्याख्या को अधिक से अधिक मूर्त बनाने के लिये उदाहरणों तथा चित्रों आदि की सहायता लेनी चाहिए।

15.24.2 व्याख्या प्रविधि का प्रयोग

व्याख्या प्रविधि का प्रयोग अधिकतर भाषा तथा सामाजिक विषयों में किया जाता है। भाषा की शिक्षा में शब्दों एवं वाक्यांशों को स्पष्ट करने के लिये व्याख्या का प्रयोग लाभदायक होता है। संस्कृत भाषा में तो व्याख्या के बिना व्याकरण पढ़ाना असम्भव है। हिन्दी एवं अंग्रेजी साहित्य में गद्य–खण्डों, निबन्धों एवं प्रबन्ध काव्यों को हृदयगम कराने के लिये व्याख्या को एकमात्र प्रविधि माना गया है। सामाजिक विषयों में तथ्यात्मक एवं सूचनात्मक पाठों के लिये व्याख्या प्रविधि का प्रयोग किया जाता है। भाषा की शिक्षा में व्याख्या प्रविधि का प्रयोग निम्नलिखित रूपों में किया जाता है–

1. समास विग्रह द्वारा शब्दों एवं वाक्यों का विग्रह करके उनको समझाना।
2. सन्धि विश्लेषण द्वारा शब्दों के मध्य संधियों की ओर संकेत करना।
3. व्युत्पत्ति द्वारा शब्दों की उत्पत्ति किस प्रकार हुई, इस बात को स्पष्ट करके।
4. परिभाषा द्वारा शब्दों अथवा पदों की निश्चित परिभाषा बताकर।
5. स्पष्टीकरण द्वारा भाषा एवं भाव की दृष्टि से कठिन स्थलों का सरल भाषा में रूपान्तर करके।
6. पर्याय कथन द्वारा शब्दों के समानार्थी पर्यायों को गिनाकर।
7. विलोम कथन द्वारा शब्दों तथा मुहावरों के विलोम को बताकर।

15.24.3 व्याख्या प्रविधि की सीमाएँ

व्याख्या प्रविधि की सफलता कुछ बातों पर निर्भर करती है, जो इस प्रविधि की सीमाएँ हैं। व्याख्या प्रविधि की सीमाएँ निम्न प्रकार है–

1. इस प्रविधि का प्रयोग करने के लिये प्रत्येक शिक्षक में अपेक्षित कुशलता नहीं होती है।
2. व्याख्या की उपयुक्तता एवं पर्याप्तता के सम्बन्ध में निश्चित रूप से निर्णय लेना कठिन होता है।
3. व्याख्या में विश्लेषण पर अधिक बल दिया जाता है, जिससे छात्र के समक्ष विषयवस्तु का समग्र चित्र नहीं बन पाता है।

15.24.4 व्याख्या प्रविधि हेतु सुझाव

व्याख्या प्रविधि की उपर्युक्त सीमाओं को ध्यान में रखते हुए इसका प्रयोग करते समय निम्नलिखित सावधानियों पर विशेष ध्यान देना चाहिए–

1. व्याख्या की भाषा सरल, शुद्ध तथा प्रवाहमय होनी चाहिए।
2. असंगत बातों को व्याख्या के अन्तर्गत नहीं लाना चाहिए।
3. व्याख्या देते समय उपदेश एवं सूत्र रूप में बातों को समझाना उचित नहीं हैं।
4. व्याख्या न अधिक विस्तृत और न अधिक सूक्ष्म होनी चाहिए।
5. व्याख्या की शैली को स्पष्ट तथा रोचक बनाना चाहिए।
6. व्याख्या को आकर्षक एवं मनोरंजक बनाने का प्रयास करना चाहिए।
7. व्याख्या को प्रभावपूर्ण बनाने के लिये उसे शिक्षण उद्देश्य के सन्दर्भ में मूल्यांकित करना आवश्यक है।
8. जिस विषय पर व्याख्या प्रस्तुत की जाए उससे सम्बन्धित सन्दर्भ ग्रन्थों का उल्लेख करना चाहिए तथा आवश्यक अंशों को श्यामपट्ट की सहायता से अंकित करा देना चाहिए।
9. व्याख्या द्वारा छात्रों की कठिनाइयों, भ्रान्त धारणाओं तथा असंगत विचारों व कल्पनाओं का निवारण होना चाहिए।
10. व्याख्या को शिक्षण के प्रत्येक स्थल पर प्रयोग करना आवश्यक नहीं है। केवल ऐसे ही स्थलों पर इसे प्रयोग करना चाहिए, जहाँ छात्रों को बोध–ग्रहण की दृष्टि से कठिनाई का अनुभव हो रहा हो।

15.25 ड्रिल प्रविधि

शिक्षण में कुछ विषय अभ्यास प्रधान होते हैं, जिनमें इस प्रविधि का उपयोग किया जाता है। सभी शिक्षण विषयों में इसका उपयोग नहीं किया जाता है। विशिष्ट विषयों की विशिष्ट पाठ्यवस्तु में इस स्थिरीय प्रविधि का उपयोग किया जाता है। परम्परागत शिक्षण में रटने के लिए इस प्रविधि का उपयोग किया जाता है। इस शब्द का उपयोग शारीरिक व्यायाम तथा शारीरिक शिक्षा में अधिक किया जाता है। माँसपेशियों को सशक्त करने के लिए शारीरिक व्यायाम का अभ्यास कराया जाता है। शिक्षण में इसी प्रकार के कुछ विषयों की पाठ्यवस्तु के लिए, जो अभ्यास प्रधान होती है, इस प्रविधि का उपयोग किया जाता है।

15.25.1 ड्रिल प्रविधि के प्रकार

ड्रिल प्रविधि को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है, जो निम्न प्रकार है–

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

1. परम्परागत अभ्यास प्रविधि
2. नवीन अभ्यास प्रविधि
3. अभ्यास की अनुकरणीय विधि

15.25.2 परम्परागत अभ्यास प्रविधि

इस प्रविधि का उपयोग परम्परागत प्रविधि के रूप में किया जाता है। विशेष रूप से भाषा और गणित शिक्षण में किया जाता है। इसके प्रमुख उपयोग इस प्रकार हैं–

1. शब्दों के शुद्ध उच्चारण के लिए, क्योंकि भाषाओं के शब्दों के उच्चारण सम्बन्धी नियम नहीं होते हैं। इस प्रविधि से शुद्ध उच्चारण सिखाया जाता है।
2. प्राथमिक स्तर पर पहाड़े को याद कराने में इसी प्रविधि का उपयोग प्रभावशाली होता है।
3. इस प्रविधि में रटने पर अधिक बल दिया जाता है।
4. यह प्रविधि मनोविज्ञान संकाय पर आधारित है।

www.praganya.org

15.25.3 नवीय अभ्यास प्रविधि

यह प्रविधि परम्परागत प्रविधि के ही समान है। इस प्रविधि के द्वारा शब्दों का चयन निम्नलिखित आधार पर किया जाता हैं–

1. छात्रों की आवश्यकताओं के अनुसार
2. पाठ्यपुस्तकों में शब्दों के उपयोग के अनुसार

नवीन प्रविधि के अन्तर्गत परम्परागत प्रविधि के दोषों को ध्यान में रखा जाता है। इसकी विशेषताएँ लगभग परम्परागत प्रविधि के समान ही होती है।

परम्परागत एवं नवीन अभ्यास प्रविधियों की कुछ सीमाएँ भी हैं, जो निम्न प्रकार हैं–

1. इन प्रविधियों में शिक्षक द्वारा उन शब्दों की सूची तैयार की जाती है, जिन शब्दों का उपयोग बहुत कम होता है।
2. शिक्षक बिना ध्यान दिये शब्दों का चयन करता है उनका कोई आधार नहीं होता है।
3. छात्रों को यह बोध नहीं होता कि कब और कहाँ किस प्रकार शब्दों का उच्चारण करना चाहिए।
4. यह प्रविधि यान्त्रिक व अर्थहीन होती है, छात्र अक्सर इनमें रूचि नहीं लेते हैं।

www.praganya.org

15.25.4 अभ्यास की अनुकरणीय विधि

सामान्यतः अभ्यास प्रविधि में अनुकरणीय विधि अपनाई जाती है इसमें चार सोपानों का अनुकरण किया जाता है–

1. प्रत्यक्षीकरण

शिक्षक शब्द को श्यामपट्ट पर लिखता है और आदर्श उच्चारण करता है। छात्र उस पर ध्यान देते हैं।

2. अनुकरण

छात्रों को आदर्श उच्चारण का अनुकरण कराया जाता है।

3. पृष्ठपोषण

छात्र जब शुद्ध उच्चारण कर लेता है तब उसे पृष्ठपोषण दिया जाता है। गलत उच्चारण होने पर पुनरावृत्ति कराते हैं।

www.praganya.org

4. अभ्यास (ड्रिल)

उच्चारण का अभ्यास समूह में कराया जाता है। व्यक्तिगत उच्चारण भी कराते हैं। सामूहिक उच्चारण में लय का उपयोग करते है, जिसमें उतार, चढ़ाव, प्रवाह, विराम का भी ध्यान रखा जाता है।

15.25.5 शुद्ध उच्चारण उपयोग के नियम

शिक्षक को उच्चारण सम्बन्धी नियमों का भी बोध होना चाहिए। भाषा–विज्ञान में इसका विस्तृत वर्णन किया जाता है। यहाँ पर कुछ नियमों का उल्लेख किया गया है–

1. हिन्दी वर्णमाला के समुचित ज्ञान का होना।
2. ध्वनि तत्त्व का बोध होना, मुख के अवयवों व अंगों का उच्चारण से सम्बन्ध का ज्ञान होना।
3. कठिन शब्दोच्चारण का अभ्यास कराना। अभ्यास की क्रिया अधिक उपयोगी है।
4. विशेष कठिन ध्वनियों के अन्तर को समझना तथा मुख अवयवों की क्रिया सम्बन्धित करने का ज्ञान होना।
5. शब्द विश्लेषण विधि का प्रयोग करना अर्थात् खण्डों में उच्चारण कराना।
6. शुद्ध उच्चारण के प्रति शिक्षक की सतर्कता होना।
7. ईकार–ऊकार सम्बन्धी अशुद्धियों का बोध कराना।
8. आदर्श अनुकरण विधि का प्रयोग करना।
9. सामूहिक तथा व्यक्तिगत सुधार की आवश्यकता को ध्यान देना।
10. स्वराघात, सुस्वरता, बल, विराम, उतार–चढ़ाव, आवृत्ति तथा गति पर ध्यान देना। अभ्यास लय में करना।
11. स्वर शक्ति, स्वर लोप, स्वरागम सम्बन्धी अशुद्धियों का ज्ञान देना।
12. अशुद्ध वर्ण विपर्यक या शब्दांश विपर्यक का बोध करना।
13. उच्चारण सम्बन्धी मौखिक परीक्षाओं का आयोजन करना।
14. उच्चारण प्रतियोगिताओं का आयोजन करना।
15. वाद विवाद, सम्भाषण, संवाद आदि प्रतियोगिताओं की व्यवस्था करना।

15.25.6 अशुद्ध उच्चारण के सुधार हेतु सुझाव

छात्रों को शुद्ध उच्चारण कराने हेतु शिक्षक के लिए मुख्य सुझाव इस प्रकार हैं–

1. छात्रों को शुद्ध उच्चारण का महत्त्व बतलाकर उनमें शुद्ध उच्चारण की आकांक्षा जाग्रत की जाए तथा उन्हें प्रशिक्षण के साथ प्रोत्साहित भी किया जाए।
2. सामूहिक उच्चारण तथा अभ्यास को अधिक महत्त्व देना चाहिए।
3. अशुद्ध उच्चारण करने वाले छात्रों से सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। अशुद्ध उच्चारण में उनका उपहास नहीं करना चाहिए।
4. अशुद्ध उच्चारण का सर्वप्रथम निदान किया जाए, जिससे कारण का बोध हो और समुचित प्रविधि का प्रयोग किया जाये।
5. शिक्षक को भाषा–विज्ञान के वाचन तथा उच्चारण का पर्याप्त बोध होना चाहिए, क्योंकि भाषा को विज्ञान मानते हैं।
6. यदि सुविधाएँ उपलब्ध हों तब तकनीकी माध्यमों तथा साधनों का प्रयोग किया जाना चाहिए। इसमें भाषा–प्रयोगशाला का भी उपयोग किया जाता है।
7. शिक्षक को उपचारी शिक्षण में धैर्य से कार्य लेना चाहिए और छात्रों

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

से सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

8. उच्चारण सम्बन्धी विविध प्रकार की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जानी चाहिए।

15.26 पुनः अभ्यास प्रविधि

थॉर्नडाइक ने अपने अधिगम सिद्धान्त **अभ्यास एवं त्रुटि** के अन्तर्गत कुछ अधिनियमों का प्रतिपादन किया, उनमें से **अभ्यास का नियम** प्रमुख है। इसके अन्तर्गत किसी नये प्रत्यय को सीखने के लिए उसका बार-बार अभ्यास करना होता है ऐसा करने से त्रुटियाँ कम होती जाती हैं और उसे प्रत्यय का ज्ञान हो जाता है। इससे प्रत्यास्मरण की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलता है। शब्दों की वर्तनी तथा सूत्रों की शुद्धता के लिए उन्हें बार-बार लिखने से शुद्ध वर्तनी लिखने लगता है और शुद्ध रूप लिखने लगता है। अधिगम की प्रक्रिया में थॉर्नडाइक के तीनों अधिनियमों का विशेष महत्त्व है-

1. अभ्यास का अधिनियम
2. प्रभाव का अधिनियम
3. तत्परता का अधिनियम

यह स्थिरीय प्रविधि थॉर्नडाइक के प्रथम अधिनियम पर आधारित है। इस अधिनियम के अनुसार उद्दीपन को बार-बार दिया जाता है, जिससे बार-बार अनुक्रिया होती है। अधिक समय तक ऐसा करने से धारण शक्ति बढ़ जाती है। उद्दीपन-अनुक्रिया का सम्बन्ध गहन हो जाता है। थॉर्नडाइक का मानना है कि यदि परिस्थितियाँ समान रहे, तो बार-बार अभ्यास से उद्दीपन-अनुक्रिया का सम्बन्ध प्रगाढ़ हो जाता है। अभ्यास के अभाव में उद्दीपन व अनुक्रिया का सम्बन्ध कमजोर हो जाता है, जिसे भूलना भी कहते हैं।

थॉर्नडाइक ने अभ्यास अधिनियम के उपरान्त **प्रभाव का नियम** दिया। उद्दीपन-अनुक्रिया के सम्बन्धों का प्रभाव भी होना चाहिए तथी उनके सम्बन्धों में गहनता हो सकती है। इस प्रकार यह दोनों ही अधिनियम एक दूसरे के पूरक है। सही अनुक्रिया को पुनर्बलन भी दिया जाए तभी प्रभाव पड़ेगा, जिससे छात्र को प्रसन्नता प्राप्त होगी। थॉर्नडाइक दण्ड का पूर्णरूप से खण्डन नहीं करता है। जबकि बी. एफ. स्किनर गलत अनुक्रिया के दण्ड देने के पक्ष में नहीं है अपितु सही अनुक्रिया को तुरन्त पुनर्बलन दिया जाए। अधिगम प्रक्रिया में दोनों ही अधिनियम साथ-साथ क्रियाशील होते हैं।

यह दोनों ही अधिनियम किसी अवधारणा तथा उद्देश्यों पर आधारित नहीं होते हैं, अपितु यह अधिनियम यान्त्रिक ढंग से क्रियाशील होते हैं। सभी विकास के अवस्थाओं के व्यवहारों के सम्बन्ध में पूर्वानुमान लगाते हैं। उन्हीं व्यवहारों के परिवर्तन एवं निष्पादन का प्रयास किया जाता है।

15.26.1 पुनःअभ्यास प्रविधि का उपयोग

थॉर्नडाइक ने सर्वप्रथम अधिगम के अधिनियमों का प्रतिपादन किया। इन्होंने मूल तथा गौण अधिनियमों को दिया इन दोनों ही प्रकार के अधिनियमों का उपयोग शिक्षा की प्रक्रिया में किया जाता है। इस प्रविधि के मुख्य उपयोग इस प्रकार हैं-

1. अधिगम तभी प्रभावशाली होता है जब छात्र तत्पर होकर अभ्यास करता है। शिक्षक को छात्रों की आवश्यकताओं के अनुरूप परिस्थितियों का कक्षा में सृजन करना चाहिए। छात्रों की सही अनुक्रियाओं को तुरन्त पुनर्बलन देना चाहिए। प्रश्नोत्तर प्रविधि से छात्रों में तत्परता लाई जा सकती है।
2. इस प्रविधि में सीखने में सुगमता होती है तथा धारण शक्ति अधिक समय तक रहती है। ड्रिल प्रविधि को सहायक प्रणाली के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। प्राथमिक स्तर पर इनका उपयोग अधिक किया जाता है।
3. शिक्षक की सही अनुक्रिया के सहायता तथा अनुबोधन करना चाहिए। किसी प्रश्न के अनेक उत्तर हो सकते हैं, परन्तु सही उत्तर के लिए उत्साहित करना चाहिए। थॉर्नडाइक के अनुसार त्रुटियाँ सीखने में सहायक होती हैं।
4. कक्षा शिक्षण से छात्रों को सन्तुष्टि प्राप्त होनी चाहिए तथा पाठ्यवस्तु को सार्थक रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। शिक्षक को कक्षा शिक्षण से आनन्द अनुभव करना चाहिए। शिक्षकों को छात्रों को पुनर्बलन के साथ निर्देशन तथा प्रोत्साहन भी देना चाहिए।
5. शिक्षण में सादृश अनुभव अधिक सहायक होता है। शिक्षण में परिपाक की क्रिया अधिक महत्त्वपूर्ण तथा उपयोगी होती है। एक प्रत्यय से नवीन प्रत्यय को समझने में सहायता करती है। इसमें सादृश्य अनुभव प्रविधि भी सहायक होती है।
6. शिक्षक को कक्षा में सामाजिक भावात्मक वातावरण का सृजन करना होता है, जो छात्रों को सीखने में सहायक होता है सार्थक कार्यों के प्रति उन्मुख करती है।

15.27 अन्वेषण विधि

अन्वेषण का अर्थ खोज करना भी होता है। इसका मुख्य उद्देश्य खोज की प्रवृत्ति को जाग्रत करना है। इसके प्रवर्त्तक आर्म स्ट्रांग थे। यह सम्प्रेषण हर्बर्ट स्पेन्सर की इस विचारधारा पर आधारित है कि-

> बालकों को जितना सम्भव हो कम बताया जाये और उनको जितना अधिक सम्भव हो स्वयं खोजने के लिये प्रोत्साहित किया जाये।

इस विधि का उल्लेख पोलियो तथा डनकर ने (1945) अपने लेख **समस्या समाधान** में किया था। इसकी विधि में त्रुटि एवं प्रयास अथवा अन्वेषण क्रियायें निहित होती हैं। यह विधि अधिक मितव्ययी तथा द्रुतगामी होती है। इसके अन्तर्गत समस्या समाधान हेतु अनेक विकल्पों को प्रयुक्त किया जाता है। इसमें तर्क तथा कल्पना शक्ति की भी अधिक आवश्यकता होती है।

15.27.1 अन्वेषण विधि के उद्देश्य

इसके निम्नलिखित उद्देश्य होते हैं-

1. बालकों की समस्या समाधान की प्रवृत्ति का विकास किया जाता है।
2. बालकों में तर्क तथा कल्पना शक्ति का विकास करना।
3. वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना।
4. स्वयं कार्य करने तथा स्वतन्त्र चिन्तन का विकास करना।

15.27.2 स्वरूप

छात्रों के सामने समस्या प्रस्तुत कर दी जाती है। सभी छात्र उस समस्या का समाधान करने का प्रयास करते हैं। प्रत्येक छात्र को व्यक्तिगत रूप में सोचने

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

तथा कार्य करने की पूरी स्वतन्त्रता दी जाती है। समस्या के समाधान के लिये अनेक युक्तियों का प्रयोग करते हैं। समस्या के तत्त्वों का विश्लेषण करते हैं तथा सम्भावित समाधान सोचते हैं। आवश्यकता पड़ने पर आपस में वाद-विवाद भी करते हैं, पुस्तकालय में जाकर पुस्तकों को पढ़ते हैं। इन कार्यों के लिये शिक्षक प्रोत्साहित करता है। शिक्षक छात्रों के प्रश्नों का उत्तर देता है तथा उन्हें आवश्यक स्रोतों तथा साधनों से परिचित कराता है।

15.27.3 अन्वेषण विधि की विशेषताएँ

इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं-

1. छात्रों में निरीक्षण तथा जिज्ञासा की भावना विकसित होती है, जिससे वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है।
2. शिक्षक प्रत्येक छात्र के सम्पर्क में आता है और उनके कार्यों का निरीक्षण करता है तथा सुझाव देता है।
3. इस विधि में छात्र को अधिक क्रियाशील रहना पड़ता है। अतः यह आधुनिक व्यवस्था अधिनियम पर आधारित है।
4. यह मनोवैज्ञानिक अधिनियमों पर आधारित है। इसमें कार्य द्वारा सीखने का अवसर दिया जाता है।
5. छात्रों की तर्क शक्ति तथा कल्पना शक्ति का विकास होता है।
6. छात्रों में आत्म-निर्भरता की भावना विकसित होती है।

www.praganya.org

15.27.4 अन्वेषण विधि की सीमाएँ

इसकी निम्नलिखित सीमाएँ होती हैं-

1. इसमें तथ्यों के शिक्षण तथा सीखने में अधिक समय लगता है। इसमें समय का अपव्यय अधिक होता है। छात्रों के अनेक प्रयास व्यर्थ हो जाते हैं।
2. इसको प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षण में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता है। इसका उपयोग उच्च कक्षाओं में ही सफलतापूर्वक किया जा सकता है।
3. इसका प्रयोग कम छात्रों पर ही सम्भव होता है, जबकि कक्षा में छात्रों की संख्या साधारणतः अधिक होती है।
4. सभी शिक्षक इस विधि का प्रयोग सफलतापूर्वक नहीं कर सकते, क्योंकि इसमें अनुशासन की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

www.praganya.org

15.27.5 अन्वेषण विधि हेतु सुझाव

इसके प्रयोग में निम्न बातों को ध्यान रखना चाहिए-

1. अन्तःप्रक्रिया के सम्भावित रूप अनेक तथा विशाल होते हैं और उनका सम्बन्ध जटिल होता है।
2. अन्वेषण विधि में जोखिम भी होता है। अनेकों प्रयास व्यर्थ हो जाते हैं। गलत समाधान को स्वीकार करने की सम्भावना अधिक रहती है।
3. इसमें सम्भावित उपलब्धियाँ वास्तव में अनेक होती है।
4. पाठ्य-वस्तु का स्वरूप निश्चित नहीं होता है।

www.praganya.org

****

अभ्यासार्थ प्रश्न

1. शिक्षण विधियों तथा शिक्षण व्यूह रचनाओं में अन्तर होता है-
   (1) पाठ्यवस्तु का (2) उद्देश्यों का
   (3) प्रारूप का (4) अधिनियमों का

2. शिक्षण विधियों से-
   (1) शिक्षण रोचक हो जाता है।
   (2) छात्रों का मन पढ़ाई में लगा रहता है।
   (3) शिक्षण प्रभावशाली हो जाता है।
   (4) इनमें से कोई नहीं

3. शिक्षण युक्तियों का सम्बन्ध है-
   (1) अधिगम संरचना से
   (2) अधिगम उपलब्धियों से
   (3) अधिगम अनुभवों से
   (4) अधिगम परिस्थितियों से

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

4. शिक्षण विधियों का लाभ है-
   (1) शिक्षण रोचक बन जाता है।
   (2) शिक्षण सरल, किन्तु प्रभावशाली बन जाता है।
   (3) छात्रों का ध्यान पढ़ाई में आकृष्ट रहता है।
   (4) उपर्युक्त सभी

5. शिक्षण में भिन्न-भिन्न विधियों का प्रयोग क्यों उपयोगी है?
   (1) शिक्षण को सुबोध बनाने के लिए
   (2) शिक्षण को रोचक बनाने के लिए
   (3) विद्यार्थियों का ध्यान आकृष्ट करने के लिए
   (4) उपर्युक्त सभी

6. अनुकरणीय शिक्षण प्रविधि को माना जाता है-
   (1) कौशल (2) नाटकीय प्रविधि
   (3) खेल विधि (4) इनमें से कोई नहीं

7. शिक्षण की उत्तम विधि है-
   (1) पाठ्य-पुस्तक विधि (2) प्रोजेक्ट विधि
   (3) पर्यटन विधि (4) भाषण विधि

8. पुनर्बलन कौशल का उपयोग करते हैं-
   (1) शिक्षण के अग्रसरण हेतु
   (2) छात्रों के प्रोत्साहन हेतु
   (3) अधिगम को रूचिकर बनाने हेतु
   (4) उपरोक्त सभी

1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.	
(2)	(3)	(1)	(4)	(4)	(2)	(3)	(4)	

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

9. शिक्षण के क्रियात्मक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रम में किस पर जोर दिया जाता है?
(1) सिद्धान्त एवं अवधारणा
(2) क्रिया एवं प्रयोग
(3) विद्यालय प्रबन्धन
(4) इनमें से कोई नहीं

10. प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापकों द्वारा प्रयुक्त शिक्षण विधियों से–
(1) विद्यार्थियों में सृजनात्मकता उत्पन्न होनी चाहिए।
(2) विद्यार्थियों में रटने की क्षमता उत्पन्न होनी चाहिए।
(3) लिखने की कला उत्पन्न होनी चाहिए।
(4) बोलने व सुनने की क्षमता उत्पन्न होनी चाहिए।

11. शिक्षण विधि का उद्देश्य पाठ्यपुस्तक का प्रभावी प्रस्तुतीकरण है जबकि शिक्षण रणनीति का ध्येय–
(1) उचित अधिगम वातावरण पैदा करना है।
(2) उद्देश्य की प्राप्ति है।
(3) छात्रों व अध्यापक के बीच अन्तःक्रिया को बढ़ाना है।
(4) उपरोक्त सभी

12. विवेचनात्मक शिक्षाशास्त्र का यह दृढ़ विश्वास है कि–
(1) एक शिक्षक को हमेशा कक्षा कक्ष के अनुदेशन का नेतृत्व करना चाहिए।
(2) शिक्षार्थियों को स्वतन्त्र रूप से तर्कणा नहीं करनी चाहिए।
(3) बच्चे स्कूल से बाहर क्या सीखते हैं? यह अप्रासंगिक है।
(4) शिक्षार्थियों के अनुभव और प्रत्यक्षण महत्त्वपूर्ण होते हैं।

13. निम्न में से सीखने के पठार के निराकरण का/के उपाय है/हैं–
(1) शिक्षण विधि
(2) विश्राम की व्यवस्था
(3) प्रेरणा में परिवर्तन
(4) उपर्युक्त सभी

14. यदि स्कूल में पूरे समय तक बच्चों को शिक्षा कार्यक्रमों में पूरी तरह व्यस्त रखा जाए, तो आपके ख्याल से कौनसी समस्या पैदा नहीं होगी?
(1) गृह–कार्य देने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।
(2) छात्रों के स्कूल के बाद ट्यूशन पढ़ने की जरूरत नहीं होगी।
(3) अनुशासनहीनता पैदा नहीं होगी।
(4) छात्रों में पढ़ने के प्रति रूचि में कमी नहीं आएगी।

15. कक्षा–शिक्षण के दौरान छात्र प्रश्न पूछते और प्रश्नों का उत्तर देते हैं। इस विधि से–
(1) अध्यापक को पता लगता है कि छात्र पाठ को कितना समझ रहे हैं।
(2) छात्रों में आत्म–विश्वास पैदा होता है व बढ़ता है।
(3) छात्रों को अपनी बात ठीक ढंग से पूछने का प्रशिक्षण मिलता है।
(4) उपर्युक्त सभी

16. यदि आपको कहीं प्रशिक्षण हेतु भेजा जाए, तो आप–
(1) शिक्षकों से नई–नई विधियाँ सीखेंगे।
(2) शिक्षण की नई–नई विधियाँ सीखेंगे।
(3) अनुभवी अध्यापकों के अनुभव सीखेंगे।
(4) उपर्युक्त सभी

17. स्किनर की पुनर्बलन की विचारधारा यह है कि–
(1) सही उत्तर पर पुनर्बलन देने से आगे सही उत्तर देने की सम्भावना और बढ़ जाती है।
(2) व्यवहार सामने आ जाने के बाद पुनर्बलन दिया जाता है, पहले नहीं।
(3) उपरोक्त दोनों
(4) उपरोक्त कोई नहीं

18. एक अच्छे शिक्षक को शिक्षण विधियों का ज्ञान अवश्य होना चाहिए, क्योंकि–
(1) इससे शिक्षण अधिक प्रभावशाली हो जाता है।
(2) इससे शिक्षण कार्य जल्दी सम्पन्न किया जा सकता है।
(3) इससे शिक्षण कार्य आसानी से किया जा सकता है।
(4) इससे शिक्षक को आत्म–विश्वास मिलता है।

19. निम्न विधियों में शिक्षण की कौनसी ऐसी विधि है, जिसमें कि हम छात्रों को अधिक से अधिक भाग लेने का अवसर दे सकते हैं?
(1) प्रदर्शन विधि (2) निगमन विधि
(3) प्रश्नोत्तर विधि (4) विश्लेषण विधि

20. आगमन विधि में शिक्षण सूत्र का प्रयोग होता है–
(1) नियम से उदाहरण की ओर
(2) सूक्ष्म से स्थूल की ओर
(3) ज्ञात से अज्ञात की ओर
(4) उक्त सभी

21. आगमनात्मक एवं निगमनात्मक शिक्षण विधियाँ हैं–
(1) पृथक्–पृथक्
(2) एक–दूसरे पर आश्रित
(3) एक–दूसरे की पूरक
(4) एक–दूसरे से स्वतन्त्र

22. निगमन विधि मार्ग है–
(1) शोध का (2) तीव्रता का
(3) अनुकरण का (4) खोज का

23. बाल केन्द्रित शिक्षण विधि का उद्देश्य होता है–
(1) छात्रों में मुक्त ढंग से सीखने की योग्यताओं का विकास करना
(2) छात्रों में स्वतन्त्र कौशलों का विकास करना
(3) छात्रों में आत्म निर्भरता का विकास करना
(4) उपर्युक्त सभी

9.	10.	11.	12.	13.	14.	15.	16.	17.	18.	19.	20.	21.	22.	23.				
(2)	(1)	(4)	(4)	(4)	(4)	(4)	(2)	(3)	(1)	(3)	(2)	(3)	(3)	(4)				

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

24. जब शिक्षक अति सक्रिय हो तथा छात्रगण निष्क्रिय हो और केवल श्रोतामात्र ही हो, तो ऐसी पद्धति को कहते हैं–
(1) व्याख्यान पद्धति (2) असाइनमेन्ट पद्धति
(3) प्रोजेक्ट पद्धति (4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

25. व्याख्यान विधि का प्रयोग किस परिस्थिति में करने पर वह अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगी?
(1) जब शिक्षक किसी नवीन एवं जटिल पाठ को प्रारम्भ करने जा रहा हो।
(2) जब शिक्षक किसी सैद्धान्तिक पक्ष की व्याख्या करना चाहता हो।
(3) जब शिक्षक किसी प्रदर्शन की व्याख्या करने में रूचि रखता हो।
(4) उपर्युक्त सभी

26. कक्षा–शिक्षण के दौरान आप किन छात्रों से प्रश्न पूछेंगे?
(1) सबसे कमजोर बच्चों से (2) औसत दर्जे के बच्चों से
(3) पढ़ाई में तेज बच्चों से (4) सभी बच्चों से

27. छात्र केन्द्रित शिक्षण का आशय है–
(1) प्रत्येक छात्र की आवश्यकता का ध्यान रखना
(2) छात्रों को मनमानी करने की छूट देना
(3) छात्रों को निःशुल्क शिक्षा देना
(4) शिक्षण में छात्रों का पूर्ण सहयोग लेना

28. कक्षा–शिक्षण में शिक्षक को छात्रों को–
(1) ज्ञात से ज्ञात की ओर ले जाना चाहिए।
(2) ज्ञात से अज्ञात की ओर ले जाना चाहिए।
(3) अज्ञात से ज्ञात की ओर ले जाना चाहिए।
(4) अज्ञात से अज्ञात की ओर ले जाना चाहिए।

29. शिक्षा की खेल विधि का अर्थ है–
(1) खेल क्रियाओं द्वारा शिक्षा
(2) खेल क्रियाओं द्वारा मनोरंजन
(3) खेल की शिक्षा
(4) क्रियाशीलता पर जोर

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

30. प्रयोग विधि से–
(1) छात्र करके सीखते हैं।
(2) छात्र देखकर सीखते हैं।
(3) छात्र अनुभव करके सीखते हैं।
(4) उपर्युक्त सभी

31. खेल–विधि की विशेषता यह है कि–
(1) कार्य (पढ़ाई) का स्थान खेल ले ले।
(2) इसमें कार्य (पढ़ाई) का कोई महत्त्व नहीं होता।
(3) खेल का समावेश करके कार्य (पढ़ाई) की नीरसता को दूर करना।
(4) खेल के बिना शिक्षा पूरी नहीं हो सकती।

32. खेल–विधि का सही अर्थ है–
(1) बालकों की मनोरंजन की इच्छा की पूर्ति मात्र
(2) बालकों को खेल की पूर्ण स्वाधीनता मात्र
(3) बालकों की खेल प्रवृत्ति को सन्तुष्ट करते हुए लाभप्रद शैक्षिक परिणाम निकालना।
(4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

33. सामूहिक खेलों से छात्र को कौनसा लाभ होता है?
(1) उत्तरदायित्व निभाने के गुण का विकास
(2) नियम पालन का अभ्यास
(3) मिलकर कार्य करने की ट्रेनिंग
(4) उपर्युक्त सभी

34. विनेटिका विधि में शिक्षण किया जाता है–
(1) वैयक्तिक शिक्षण (2) कक्षा शिक्षण
(3) परम्परागत शिक्षण (4) सामूहिक शिक्षण

35. शिक्षण की आगमन विधि–
(1) स्थूल से सूक्ष्म की ओर बढ़ती है।
(2) प्रत्यक्ष से प्रमाण की ओर बढ़ती है।
(3) विशिष्ट से सामान्य की ओर बढ़ती है।
(4) उपरोक्त सभी

36. निम्न में से किस विधि में पाँच पद होते हैं?
(1) प्रोजेक्ट विधि (2) हरबर्ट विधि
(3) ब्लूम विध (4) सुकराती विधि

37. निगमन विधि चलती है–
(1) ज्ञात से अज्ञात की ओर (2) नियम से उदाहरण की ओर
(3) सामान्य से विशिष्ट की ओर (4) उपरोक्त सभी

38. निगमन विधि का एक प्रमुख दोष है–
(1) समय की बर्बादी
(2) सत्य परीक्षण में असफलता
(3) रटने की आदत डालना
(4) कोई नहीं

39. उदाहरण देने के बाद नियम निकलवाने वाले पाठ है–
(1) आगमन (2) निगमन
(3) विकासात्मक (4) उपरोक्त सभी

40. आगमन विधि–
(1) मस्तिष्क का विकास करती है।
(2) समय बर्बाद करती है।
(3) बालक को सीखने की प्रक्रिया में सहभागी बनाती है।
(4) उपरोक्त सभी

www.praganya.org

24.	25.	26.	27.	28.	29.	30.	31.	32.	33.	34.	35.	36.	37.	38.	39.	40.					
(1)	(2)	(4)	(4)	(2)	(1)	(4)	(3)	(3)	(4)	(4)	(4)	(2)	(4)	(3)	(1)	(4)					

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

41. सामूहिक शिक्षण प्रायः–
(1) शिक्षक–छात्र सम्पर्क कम करता है।
(2) कक्षा केन्द्रित होता है।
(3) वैयक्तिक भेद का पालन नहीं कर पाता।
(4) उपरोक्त सभी

42. वैयक्तिक शिक्षण विधि–
(1) समय और शक्ति का अपव्यय करती है।
(2) प्रतिस्पर्धा का भाव विकसित नहीं करती।
(3) सामाजिकता का ज्ञान नहीं करा पाती।
(4) उपरोक्त सभी

43. प्रोजेक्ट विधि के अन्तर्गत शिक्षक–
(1) एक मार्गदर्शक होता है।
(2) मूल्यांकनकर्ता होता है।
(3) केवल दर्शक होता है।
(4) कोई नहीं

44. खेल विधि द्वारा शिक्षा का अर्थ है–
(1) खेल द्वारा मनोरंजन (2) खेल की शिक्षा
(3) खेल क्रियाओं द्वारा शिक्षा (4) इनमें से कोई नहीं

45. विज्ञान शिक्षण की सर्वोत्तम विधि है–
(1) डेक्रोली विधि (2) प्रयोगशाला विधि
(3) निगमन विधि (4) आगमन विधि

46. ह्यूरिस्टिक विधि सर्वाधिक उपयोगी होगी–
(1) विज्ञान में (2) भाषा में
(3) कला में (4) उपरोक्त सभी में

47. **कोई वस्तु अपने आयतन के बराबर जल बाहर निकालती है** यह नियम बताने के बाद कई प्रयोगों के द्वारा इसे सिद्ध किया जाता है। शिक्षण की यह विधि है–
(1) आगमन विधि (2) निगमन विधि
(3) प्रयोगशाला विधि (4) ह्यूरिस्टिक विधि

48. प्रोजेक्ट विधि किस सिद्धान्त पर आधारित है?
(1) चयन के सिद्धान्त पर
(2) प्रेरणा के सिद्धान्त पर
(3) नियमीकरण के सिद्धान्त पर
(4) करके सीखने के सिद्धान्त पर

49. व्याकरण शिक्षण की सर्वोत्तम विधि है–
(1) संश्लेषण विधि (2) विश्लेषण विधि
(3) आगमन विधि (4) निगमन विधि

50. कक्षा शिक्षण में छात्रों का ध्यान आकृष्ट करने के लिए चाहिए–
(1) दृश्य श्रव्य सामग्री का प्रयोग
(2) पाठ के विकास में छात्रों का प्रयोग
(3) पाठ को रोचक बनाया जाना
(4) उपरोक्त सभी

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

51. तुलना विधि द्वारा विकास होता है–
(1) सोचने की शक्ति का
(2) निरीक्षण शक्ति का
(3) वर्गीकरण करने की शक्ति का
(4) उपरोक्त सभी

52. प्रभावी एवं सफल शिक्षण के लिए सर्वाधिक आवश्यक है–
(1) विद्यार्थियों को अधिकाधिक नोट्स लिखवाना
(2) व्यावहारिक उदाहरणों द्वारा विषय को स्पष्ट करना
(3) श्यामपट्ट का अधिकाधिक उपयोग करना
(4) साहित्यिक भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करना

53. प्राथमिक स्तर के शिक्षण का सबसे अच्छा तरीका क्या है?
(1) परम्परागत श्यामपट्ट और चॉक विधि
(2) स्वयं सीखना
(3) प्रयोगात्मक विधि
(4) खेल विधि

54. निम्न में से किस रणनीति से अध्यापक किसी भी प्रकार से नहीं बच सकता?
(1) व्याख्यान (2) पाठ्यपुस्तक
(3) स्पष्टीकरण (4) उपरोक्त सभी

55. पाठ परिचय के लिए निम्न में से कौनसी रणनीति सर्वाधिक उपयुक्त है?
(1) व्याख्यान (2) प्रश्नोत्तर
(3) विवरण (4) प्रदर्शन

56. निम्न में से कौनसा अनुवर्ग शिक्षण का सबसे बड़ा लाभ है?
(1) कमजोर छात्रों को उपचारात्मक शिक्षण प्रदान किया जा सकता है।
(2) हम एक–एक करके सभी शिष्यों पर ध्यान दे सकते हैं।
(3) इसमें छात्रों की ओर से अधिकतम आत्म अभिव्यक्ति सम्भव हैं।
(4) उपरोक्त सभी

57. प्रश्नोत्तर विधि को सफल बनाने के लिए निम्न में से किस बिन्दु को ध्यान में रखना चाहिए?
(1) हर प्रश्न अगले प्रश्न से सम्बन्धित होना चाहिए।
(2) छात्रों को भी कक्षा में प्रश्न पूछने की स्वतन्त्रता दी जानी चाहिए।
(3) ऐसे प्रश्न नहीं पूछे जाने चाहिए, जिनका उत्तर हाँ या नहीं में हो।
(4) उपरोक्त सभी

41.	42.	43.	44.	45.	46.	47.	48.	49.	50.	51.	52.	53.	54.	55.	56.	57.					
(4)	(4)	(1)	(3)	(2)	(1)	(2)	(4)	(2)	(4)	(3)	(2)	(4)	(3)	(2)	(2)	(4)					

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

58. निम्न में से कौनसी रणनीति मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के सबसे अधिक निकट है?
(1) प्रश्नोत्तर (2) व्याख्यान
(3) पाठ्यपुस्तक (4) उपरोक्त सभी

59. परियोजना विधि में निम्न में से किन के नाम जुड़े हैं?
(1) जॉन डीवी (2) किलपैट्रिक
(3) उपरोक्त दोनों (4) उपरोक्त कोई नहीं

60. परियोजना विधि में हल की गयी समस्या होती है–
(1) वास्तविक एवं व्यावहारिक (2) वास्तविक एवं सैद्धान्तिक
(3) सैद्धान्तिक एवं काल्पनिक (4) उपरोक्त सभी

61. परियोजना विधि का लाभ नहीं है–
(1) यह करके सीखने के सिद्धान्त पर आधारित है।
(2) यह तत्परता, अभ्यास तथा प्रभाव के सिद्धान्तों पर आधारित है।
(3) यह केवल सृजनात्मक एवं प्रतिभावान छात्रों के लिए उपयुक्त है।
(4) यहाँ वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल किया जा सकता है।

62. किस विधि द्वारा छात्रों को कार्य अनुभव प्रदान किया जा सकता है?
(1) खोज विधि द्वारा (2) विश्लेषण विधि द्वारा
(3) परियोजना विधि द्वारा (4) परिचर्चा विधि द्वारा

63. भूमिका निर्वहन विधि अध्यापक प्रशिक्षण कॉलेजों के लिए सबसे अधिक उपयुक्त है, क्योंकि–
(1) अभ्यास व्यक्ति को परिपूर्ण बनाता है।
(2) आलोचनात्मक प्रेक्षण भी गलतियों को दूर कर सकता है।
(3) उपरोक्त दोनों
(4) उपरोक्त कोई नहीं

64. अन्वेषण व खोज रणनीतियों से निकट रणनीति है–
(1) आगमन (2) निगमन
(3) विश्लेषण (4) संश्लेषण

65. निम्न में से कौन संश्लेषण विधि का उदाहरण है?
(1) पाठ का सारांश लिखना
(2) समस्या के कारणों को जानना
(3) प्रयोगों के आधार पर नियम व सिद्धान्त प्रतिपादित करना
(4) उपरोक्त सभी

66. सूक्ष्म शिक्षण इस मान्यता पर आधारित है कि–
(1) अध्यापक के व्यवहार में सुधार अभ्यास द्वारा सम्भव है।
(2) पुनर्बलन अध्यापक के व्यवहार में सुधार ला सकता है।
(3) शिक्षण की जटिलता के व्यवहार में सुधार ला सकता है।
(4) उपरोक्त सभी

67. पूर्वाभ्यास शिक्षण निम्न में से किस मान्यता पर आधारित है?
(1) अध्यापक के व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सकता है।
(2) इच्छित व्यवहार का अभ्यास किया जा सकता है।
(3) सामाजिक कौशलों को सम्प्रेषित किया जा सकता है।
(4) उपरोक्त सभी

68. सूक्ष्म शिक्षण व्यवहार में सुधार लाता है–
(1) अभ्यास द्वारा (2) प्रेक्षण द्वारा
(3) पुष्टपोषण द्वारा (4) उपरोक्त सभी

69. प्रकृतिवादी शिक्षा उपागम के अनुसार निम्नांकित शिक्षण विधि पर विशेष बल दिया जाता है–
(1) प्रयोजना विधि (झीक्षशलीं चशींहेव)
(2) करके सीखना (ड्शरीपळपस लू उेळपस)
(3) विचार विमर्श (ऊळीलीींळेप)
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

70. **प्रयोजनवाद** शिक्षा–दर्शन की शिक्षा को देन है–
(1) आगमन निगमन विधि
(2) करके सीखना
(3) योजना पद्धति
(4) उपरोक्त सभी

71. निम्नलिखित में से एक विशेषता सीखने से सम्बन्धित नहीं है–
(1) नवीन प्रतिक्रियाओं का अर्जन
(2) व्यवहार में स्थायी परिवर्तन
(3) प्रशिक्षण एवं निरीक्षण पर आधारित
(4) उद्दीपक–अनुक्रिया में असाहचर्य

72. शिक्षण को प्रभावी बनाया जा सकता है–
(1) प्रजातान्त्रिक विधि द्वारा (2) कठोर अनुशासन द्वारा
(3) तानाशाही व्यवहार द्वारा (4) कक्षा को व्यस्त रखकर

73. प्राथमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षण की प्रभावी विधि है–
(1) अनुभव आधारित शिक्षण (2) प्रयोगशाला विधि
(3) मौखिक वार्ता (4) पाठ्य–पुस्तक विधि

74. नवाचार को वास्तविकता की कसौटी पर परखने हेतु आयोजन किया जाना चाहिए–
(1) कार्यशालाओं का (2) सेमिनार का
(3) विचार–विमर्श संगोष्ठी का (4) उपर्युक्त सभी

75. निम्न में से क्रिया आधारित पद्धति नहीं है–
(1) कार्य शाला (2) भूमिका निर्वाह
(3) प्रयोगशाला विधि (4) दल शिक्षण

www.praganya.org

58.	59.	60.	61.	62.	63.	64.	65.	66.	67.	68.	69.	70.	71.	72.	73.	74.	75.				
(1)	(3)	(1)	(3)	(3)	(3)	(3)	(4)	(4)	(4)	(4)	(2)	(3)	(4)	(1)	(1)	(4)	(4)				

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

76. अभिक्रमित अधिगम में **शाखीय फ्रेम निर्माण** किसने विकसित किया?
(1) क्राउडर (2) जे. जे. शॉव
(3) क्लार्क (4) क्लासमियर

77. **खेल शिक्षण विधि** के प्रतिपादक कौन है?
(1) सुकरात (2) फ्रोबेल
(3) किलपैट्रिक (4) अरस्तू

78. निम्नलिखित में से कौनसा सूक्ष्म गतिक कौशल का उदाहरण है?
(1) फुदकना (2) दौड़ना
(3) लिखना (4) चढ़ना

79. निम्न कक्षाओं में शिक्षण की खेल विधि आधारित है–
(1) शारीरिक शिक्षा कार्यक्रमों के सिद्धान्त पर
(2) शिक्षण की विधियों के सिद्धान्त पर
(3) विकास एवं वृद्धि के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त पर
(4) शिक्षण के सामाजिक सिद्धान्तों पर

80. शिक्षण को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक शिक्षक को अधिक से अधिक प्रश्न पूछने चाहिए, क्योंकि इससे–
(1) कक्षा का अनुशासन बना रहता है।
(2) छात्रों को यह पद्धति पसन्द नहीं होती है।
(3) छात्रों को अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है।
(4) शिक्षक को अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है।

81. उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षक को क्रियात्मक शोध का ज्ञान होना चाहिए, क्योंकि वे–
(1) इसके माध्यम से बच्चों की समस्या की पहचान कर सुधार करने का कौशल विकसित कर पाएँगे।
(2) अपना स्वयं का विकास कर पाएँगे।
(3) बच्चों को प्रभावी ढंग से पढ़ा पाएँगे।
(4) शोध करने का कौशल विकसित कर पाएँगे।

82. पाठ्यक्रम व शिक्षण विधि में गुण होना अनिवार्य है–
(1) कठोरपन का
(2) लचीलेपन का
(3) पुनर्बलन का
(4) उपर्युक्त सभी

83. **बीजों का अंकुरण संकल्पना** के शिक्षण की सबसे प्रभावी पद्धति है–
(1) विस्तृत व्याख्या करना
(2) विद्यार्थियों द्वारा पौधे के बीज बोना और उसके अंकुरण के चरणों का अवलोकन करना
(3) श्यामपट्ट पर चित्र बनाना और वर्णन करना
(4) बीज की वृद्धि के चित्र दिखाना

84. छात्रों में अध्ययन के प्रति रूचि विकसित करने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण तरीका है–
(1) शिक्षण विधि में सुधार करना
(2) छात्रों को दण्डित करना
(3) अभिभावकों से शिकायत करना
(4) छात्रों को पिकनिक पर ले जाना

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

85. नवाचार की विशेषता नहीं है–
(1) इसका उद्भव आवश्यकता एवं परिस्थितिजन्य है।
(2) इसमें विशिष्टता का पुट रहता है।
(3) यह सचेतन एवं अनायास अपनाया जाता है।
(4) इसमें अभिप्रेरणा एवं गत्यात्मकता के गुण होते हैं।

86. आगमन विधि छोटे बच्चों एवं मन्द सभी छात्रों के लिए उपयुक्त है, क्योंकि–
(1) नियम व सूत्र उन तथ्यों के आधार पर निकाले जाते हैं जिन्हें छात्र पहले से जानते हैं।
(2) इसमें ज्ञात अधिकांशतः स्व अधिगम द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।
(3) इसमें छात्र आरम्भ से अन्त तक रूचि नहीं खोते।
(4) उपरोक्त सभी

87. निम्न सभी आगमन विधि की हानियाँ हैं, सिवाय–
(1) यह अधिक समय नष्ट करती है।
(2) यह ज्ञात से अज्ञात की ओर चलती है।
(3) यह इतिहास, भूगोल आदि को पढ़ाने के लिए बहुत कम उपयुक्त है।
(4) यह छात्रों के मस्तिष्क में पूर्ण का प्रत्यय विकसित नहीं करती।

88. यदि कक्षा में कुछ बच्चे पढ़ने में कमजोर हो और कुछ तेज हो, तो अध्यापक के लिए क्या उचित है?
(1) विभिन्न प्रयोजनों के लिए बच्चों को योग्यता व रूचि के आधार पर समूहों में बाँट कर कार्य कराए।
(2) कमजोर बच्चों को पढ़ाने का काम तेज बच्चों को सौंप दे।
(3) कमजोर बच्चों को स्कूल टाइम के बाद अलग से पढ़ाए।
(4) तेज बच्चों को स्वतः पढ़ने की छूट देकर कमजोर बच्चों की ओर ध्यान दे।

89. कक्षा–शिक्षण के दौरान कोई छात्र पढ़ाई की ओर ध्यान नहीं दे रहा हो, तो ऐसी स्थिति में आप एक शिक्षक होने के नाते क्या करेंगे?
(1) उस छात्र को डाँटेंगे।
(2) उसे चेतावनी देने के बाद कक्षा से बाहर निकाल देंगे।
(3) पढ़ाते समय उससे प्रश्न पूछते रहेंगे, ताकि उसका ध्यान पढ़ाई में लगा रहे।
(4) उसको स्पष्ट बता देंगे कि या तो वह ध्यान दे या कक्षा से बाहर चला जाए।

****

76.	77.	78.	79.	80.	81.	82.	83.	84.	85.	86.	87.	88.	89.		
(1)	(2)	(3)	(3)	(3)	(4)	(2)	(2)	(1)	(3)	(3)	(2)	(3)	(3)		

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

अध्याय 16

मूल्यांकन

16.1 प्रस्तावना

शिक्षा के क्षेत्र में जाँच और परीक्षा के स्थान पर मापन एवं मूल्यांकन का प्रयोग किया जाता है। इसके उद्देश्य, क्षेत्र और कार्य-प्रणाली पुराने ढंग से ली जाने वाली परीक्षा से भिन्न हैं। अध्यापन क्रियाओं द्वारा छात्रों के ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक तीनों ही पक्षों का विकास किया जाता है। निष्पत्ति या उपलब्धि परीक्षणों द्वारा छात्रों के ज्ञानात्मक पक्ष का मापन किया जाता है, परन्तु उनके भावात्मक और मनोशारीरिक पक्षों के विकास का मापन कठिन होता है। अतः इन दोनों पक्षों के मापन हेतु मूल्यांकन प्रक्रिया अधिक उपयोगी है, क्योंकि मूल्यांकन एक सतत् प्रक्रिया है तथा इसके द्वारा परिमाणात्मक और गुणात्मक दोनों ही पक्षों के बारे में सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। इस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन का विशेष महत्त्व है।

छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन किस सीमा तक हो पाए तथा उनका मूल्यांकन क्या रहा? इस सम्बन्ध में निर्णय मूल्यांकन द्वारा ही किया जा सकता है। प्राचीन ढंग की परीक्षाओं द्वारा केवल विषय-वस्तु के ज्ञान की उपलब्धि का निर्णय ही किया जाता है, जबकि मूल्यांकन द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति तथा सम्पूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण की जाँच को लक्ष्य माना जाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि प्रचलित परीक्षाओं की अपेक्षा मूल्यांकन अधिक व्यापक तथा उद्देश्यपूर्ण है।

16.2 मापन का अर्थ

मापन का अर्थ है- किसी व्यक्ति के गुण एवं व्यवहार अथवा वस्तु के गुण का संख्यात्मक विवरण प्रस्तुत करना। मापन क्रिया में विभिन्न पक्षों के सम्बन्ध में साक्ष्यों का संकलन किया जाता है। मापन किसी वस्तु या उपलब्धि का संख्यात्मक मान है। जैसे- प्राची का वजन 35 किग्रा. है, जलज की बुद्धिलब्धि 140 है, चक्रेश के गणित में 90% अंक हैं, आदि। दूसरे शब्दों में मापन द्वारा यह पता लगाया जा सकता है कि कोई वस्तु, गुण या विशेषता में कितनी है?

इस प्रकार मापन में अंक प्रदान किये जाते हैं तथा किसी गुण या विशेषता के प्रतीक निर्धारित किये जाते हैं, जिससे परिमाण का सही ज्ञान हो सके। परीक्षक छात्रों की उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच करके अपना निर्णय अंकों के रूप में देते हैं। यहाँ पर परीक्षा में प्राप्त किये गये अंक बालक की उपलब्धि का प्रतीक मात्र ही हैं। अतः मापन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा विभिन्न योग्यताओं तथा गुणों के परिमाण के सम्बन्ध में बताया जाता है, परन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं रहता, अध्यापक को यह भी ध्यान रखना होता है कि मापन द्वारा प्राप्त अंकों का स्तर क्या हैं? अर्थात् छात्रों के प्राप्तांक कितने अच्छे हैं? इसका निर्धारण करना मूल्यांकन के अन्तर्गत आता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि मापन मूल्यांकन का ही भाग है अर्थात् मूल्यांकन में मापन निहित होता है।

16.3 मापन की परिभाषाएँ

भिन्न-भिन्न विद्वानों ने मापन को भिन्न-भिन्न प्रकार परिभाषित किया है, उनमें से कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं-

1. एस.एस. स्टीवेन्स के अनुसार-

मापन किन्हीं निश्चित स्वीकृत नियमों के अनुसार वस्तुओं को अंक प्रदान करने की प्रक्रिया है।

2. माइकल तथा कार्नीस के अनुसार-

मापन यह बताता है कि कोई वस्तु कितनी मात्रा में है या वह कितनी कम या ज्यादा है या कितनी अधिक या कम है।

3. ब्रेडफीलड तथा मोरेडॉक के अनुसार-

किसी तथ्य के विभिन्न आयामों को प्रतीक प्रदान करना ही मापन कहलाता है।

4. हैल्मस्टेडर के अनुसार-

मापन को किसी व्यक्ति या पदार्थ में निहित विशेषताओं के आंकिक वर्णन की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है।

16.4 मापन की विशेषताएँ

मापन की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. यह वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक विधि है।
2. मापन के लिए मापनी का प्रयोग किया जाता है, जैसे- बुद्धि मापन के लिए बिने-साइमन बुद्धि मापनी।
3. मापन के लिए इकाईयाँ होती हैं, जैसे- लम्बाई के लिए मीटर, सेण्टीमीटर तथा शैक्षिक मापन में प्रामाणिक, प्राप्तांक, जैसे-शतांक, जेड-स्कोर, टी-स्कोर आदि।
4. मापन में अंकों की व्याख्या करने के प्रतिमान होते हैं, जिसके आधार पर तुलना करके हम बता सकते हैं कि कौन बालक औसत बुद्धि का है और कौन औसत से ऊपर है तथा कितना ऊपर है।

16.5 मापन के स्तर

मापन के अन्तर्गत व्यक्तियों, घटनाओं, वस्तुओं, शीलगुणों अथवा विशेषताओं को संख्यात्मक या परिमाणात्मक रूप प्रदान किया जाता है। व्यावहारिक रूप से मापन की मुख्यतः चार प्रचलित विधियाँ हैं। मापन की इन विधियों को मापनी या स्तर भी कहते हैं। प्रत्येक मापनी का परिशुद्धता के स्तर पर सरलतापूर्वक वर्गीकरण किया जा सकता है-

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

1. नामित मापनी अथवा शाब्दिक मापनी

यह मापन की सबसे निम्न श्रेणी की मापनी है। इसमें वस्तुओं, घटनाओं अथवा विशेषताओं को उनके किन्हीं निश्चित गुणों के आधार पर अलग-अलग समूहों में रखा जाता है। उस समूह की पहचान के लिए उसे कोई संख्या, चिह्न अथवा नाम दे दिया जाता है। इस समूह की एक विशेषता होती है कि उस समूह के सभी व्यक्ति या तत्त्व आपस में तो समान होते हैं, परन्तु किसी दूसरे समूह से बिल्कुल भिन्न होते हैं। जैसे- मतदाताओं को स्त्री या पुरूष वर्गों में विभाजित करना, विभिन्न देशों की क्रिकेट या फुटबॉल आदि खेलों की टीमों को अलग-अलग रंग की वेशभूषा तथा पहचान चिह्न तथा क्रमांक देना, विभिन्न स्तर के छात्र-छात्राओं को अलग-अलग श्रेणियों में विभाजित करना आदि। इस स्तर के मापन के लिए प्रश्नावली तथा निरीक्षण प्रविधि का प्रयोग किया जाता है।

2. क्रमिक मापनी अथवा क्रमसूचक मापनी

मापन की शाब्दिक मापनी की अपेक्षा क्रमिक मापनी अधिक परिशुद्ध मापनी है। इसमें घटनाओं एवं वस्तुओं का वर्गीकरण अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट होता है। इस मापनी या स्तर में घटनाओं, व्यक्तियों अथवा विशेषताओं को किसी गुण या समानता के आधार पर बढ़ते हुए क्रम या घटते हुए क्रम में व्यवस्थित करके, उन्हें श्रेणी प्रदान की जाती है। इस मापनी को क्रम निर्धारण मापनी भी कहते हैं, क्योंकि इसमें किसी घटना अथवा शीलगुण को विभिन्न श्रेणियों में क्रमिक आधार पर प्रस्तुत किया जाता है। इसकी सहायता से विभिन्न इकाइयों का वर्गीकरण तथा तुलनात्मक अध्ययन आसानी से किया जा सकता है। जैसे- परीक्षा में प्राप्तांकों के आधार पर प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ आदि क्रम प्रदान करना, श्रेष्ठ प्रदर्शन के आधार पर खिलाड़ियों को क्रम प्रदान करना। इसी प्रकार सुन्दरता के आधार पर विभिन्न क्रम प्रदान करना, जैसे-बहुत अधिक सुन्दर, अधिक सुन्दर, कम सुन्दर आदि।

3. अन्तराल मापनी

यह मापनी या स्तर क्रमिक मापनी की अपेक्षा अधिक शुद्ध, विकसित तथा विस्तृत सूचनाएँ प्रदान करता है, क्योंकि यह मापनी विभिन्न इकाईयों के मुख्य अन्तर को भी स्पष्ट करती है। यह अन्तर एक प्रकार से गुणात्मक आँकड़ों को परिमाणात्मक आँकड़ों में प्रस्तुत करता है। फॉरनेहाइट तथा सेन्टीग्रेड थर्मामीटर इस मापनी के उपयुक्त तथा प्रचलित उदाहरण हैं। थर्मामीटर में तापक्रम 98 डिग्री से 108 डिग्री तक अंकित होता है तथा उसमें जितना अन्तर 99 डिग्री तथा 100 डिग्री के बीच होता है, उतना ही अन्तर 104 और 105 डिग्री के मध्य रहता है।

4. अनुपात मापनी

यह सबसे अधिक प्रचलित तथा लोकप्रिय मापनी है, क्योंकि इसके द्वारा मापन अत्यधिक यथार्थ तथा शुद्ध रहता है। मापन की यह वस्तुनिष्ठ, विश्वसनीय तथा वैज्ञानिक मापनी है। इसमें उपर्युक्त तीनों प्रकार की मापनियों की विशेषताएँ विद्यमान होती हैं। इस मापनी की प्रमुख विशेषता निरपेक्ष शून्य बिन्दु है। इस शून्य बिन्दु का सम्बन्ध किसी घटना, शीलगुण अथवा विशेषता की शून्य मात्रा से होता है। अनुपात मापनी (स्तर) में निरपेक्ष शून्य बिन्दु, मापनी का प्रारम्भिक बिन्दु माना जाता है। इसी के द्वारा हम दो स्थानों या विशेषताओं के मध्य दूरी का अनुमान लगा पाते हैं तथा कह सकते हैं कि **अ** स्थान की तुलना में **ब** स्थान कितना अधिक पास या दूर है।

16.6 मूल्यांकन का अर्थ

शिक्षक जब उद्देश्यों के लिए अधिगम परिस्थितियों का सावधानीपूर्वक निर्धारण कर लेता है तब मूल्यांकन के लिए परीक्षा का निर्माण किया जाता है। इस परीक्षा द्वारा यह निश्चित किया जाता है कि इन उद्देश्यों की प्राप्ति कहाँ तक हो सकी है। मेगर के अनुसार इस पद के अन्तर्गत शिक्षक शिक्षण विधियों, प्रविधियों, अनुदेशन तथा अन्य शिक्षण सहायक सामग्री की उपयोगिता का मूल्यांकन करता है, जिससे उनमें सुधार तथा विकास के लिए शिक्षक को प्रोत्साहन मिलता है, जिसके आधार पर वह उत्तम साधनों तथा स्रोतों का प्रयोग अधिगम उन्नति के लिए करता है। मापन द्वारा विभिन्न गुणों, योग्याताओं अथवा विशेषताओं के परिमाण के बारे में जानकारी प्राप्त होती है कि अमुक छात्र या छात्रा ने 50 में से 35 या 40 अंक प्राप्त किये, परन्तु 50 में से 35 या 40 अंक प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं होता है। अध्यापक को यह भी जानना होता है कि छात्र के प्राप्तांक कितने अच्छे हैं? अतः मूल्यांकन के अन्तर्गत किसी गुण, योग्यता अथवा विशेषता का मूल्य निर्धारित किया जाता है अर्थात् मूल्यांकन द्वारा परिमाणात्मक या गुणात्मक दोनों ही प्रकार की सूचनाएँ प्राप्त होती हैं, जिनके आधार पर बालक की योग्यता एवं उपलब्धियों का आंकलन किया जाता है। मूल्यांकन के शाब्दिक अर्थ को इस प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है-

मूल्यांकन	=	मापन	+	मूल्य निर्धारण
		↓		↓
		संख्यात्मक/परिमाणात्मक		गुणात्मक

इस प्रकार मूल्यांकन का आशय मापन के साथ-साथ मूल्य निर्धारण से है अर्थात् अधिगम अनुभवों द्वारा विद्यार्थी में अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन किस सीमा तक हुए? इसका मूल्य निर्धारण (मूल्यांकन) करके निर्णय देना है। अतः मापन मूल्यांकन का ही भाग है तथा सदैव उसमें निहित रहता है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, दिल्ली की पुस्तक **कॉन्सेप्ट ऑफ इवेल्युशन** के अनुसार मूल्यांकन प्रक्रिया में मुख्यतः निम्न बातों के सम्बन्ध में निर्णय किया जाता है।-

1. शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई?
2. उद्देश्य प्राप्त करने की विधि/प्रविधि कितनी प्रभावी रही?
3. अधिगम-अनुभव कितने प्रभावी उत्पादक रहे?

उपर्युक्त तीनों बिन्दु मिलकर मूल्यांकन प्रक्रिया को पूरा करते हैं। इन तीनों के सम्बन्ध को त्रिभुजाकार आकृति से अग्र प्रकार प्रदर्शित किया जा सकता है-

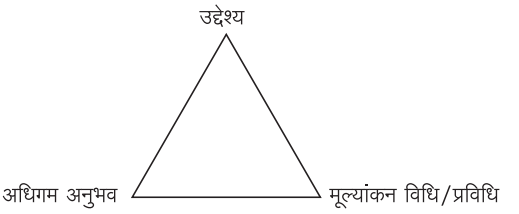

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

16.7 मूल्यांकन की परिभाषाएँ

वर्तमान शिक्षा का उद्देश्य न केवल विद्यार्थी को ज्ञान प्रदान करना है, बल्कि उसका सर्वांगीण विकास करना होता है। अतः शिक्षकों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह विषय-वस्तु एवं शिक्षण पद्धतियों के साथ-साथ विद्यार्थी की उपलब्धि एवं योग्यता मापने वाले परीक्षण उपकरणों की ओर भी ध्यान दें। शिक्षण प्रक्रिया के मुख्य चार उपांग होते हैं–

1. अनुदेशी उद्देश्य
2. छात्र का प्रविष्ट व्यवहार
3. शिक्षण-प्रविधि
4. उपलब्धि या निष्पादन मूल्यांकन

इस प्रकार मूल्यांकन शिक्षा प्रक्रिया का अविच्छिन्न अंग भी माना जाता है। शैक्षिक मूल्यांकन के स्वरूप को और अधिक स्पष्ट करने के लिए हम निम्न परिभाषाओं का अवलोकन करेंगे—

1. गुड्स के अनुसार–

मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिससे सही ढंग से किसी वस्तु का मापन किया जा सकता है।

2. डान्डेकर के अनुसार–

मूल्यांकन एक ऐसी क्रमबद्ध प्रक्रिया है, जो हमें यह बताती है कि बालक ने किस सीमा तक किन उद्देश्यों को प्राप्त किया है।

3. टारगेर्सन तथा एडम्स के अनुसार–

मूल्यांकन का अर्थ है किसी वस्तु या प्रक्रिया का मूल्य निर्धारित करना तथा शैक्षिक मूल्यांकन से आशय किसी शिक्षण प्रक्रिया या अधिगम अनुभवों की उपयोगिता के सम्बन्ध में मूल्य प्रदान करना होता है।

4. क्विलेन व हन्ना के अनुसार–

विद्यालय द्वारा बालक के व्यवहार में लाये गये परिवर्तनों के सम्बन्ध में प्रमाणों के संकलन और उनकी व्याख्या करने की प्रक्रिया को मूल्यांकन कहते हैं।

5. मुफ्फात के अनुसार–

मूल्यांकन एक सतत् प्रक्रिया है तथा यह बालकों की औपचारिक शैक्षिक उपलब्धि की उपेक्षा करता है। यह व्यक्ति के विकास में अधिक रूचि रखता है। यह व्यक्ति के विकास को उसकी भावनाओं, विचारों तथा क्रियाओं से सम्बन्धित वांछित व्यवहारगत परिवर्तनों के रूप में व्यक्त करता है।

6. कोठारी कमीशन के अनुसार–

मूल्यांकन एक अनवरत प्रक्रिया है, जो कि सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है तथा इसका शैक्षिक उद्देश्यों से घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है।

16.8 मूल्यांकन की विशेषताएँ

मूल्यांकन की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. मूल्यांकन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।
2. मूल्यांकन समस्त शिक्षण एवं अधिगम का अभिन्न अंग है।
3. मूल्यांकन वर्णनात्मक एवं संख्यात्मक दोनों प्रकार का होता है।
4. मूल्यांकन का शिक्षा के उद्देश्य से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।
5. मूल्यांकन परीक्षण एक व्यापक पद है, जिसमें जाँच एवं मापन दोनों का समावेश है।
6. मूल्यांकन का सम्बन्ध छात्र की स्थिति से न होकर छात्र के विकास से होता है।
7. मूल्यांकन एक सहयोगी कार्य है, क्योंकि इसमें छात्रों, शिक्षकों, अभिभावकों, सभी का सहयोग प्राप्त किया जाता है।
8. मूल्यांकन केवल विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि का ही मापन नहीं करता है, अपितु उसकी शैक्षिक उपलब्धि में सुधार करता है।
9. मूल्यांकन का सम्बन्ध, समूह में विद्यार्थी की स्थिति से नहीं होता वरन् उसके विकास से भी होता है।
10. मूल्यांकन का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है, क्योंकि इसमें विद्यार्थी के सभी पक्ष आ जाते हैं- नैतिक, मानसिक, शारीरिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक।
11. मूल्यांकन में छात्र के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों की व्याख्या करने में समस्त सामग्री को एकत्र किया जाता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि शैक्षिक मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका आधार निर्धारित शैक्षिक उद्देश्य (अनुदेशी उद्देश्य) होते हैं तथा इनसे सम्बन्धित विषयवस्तु, शिक्षण अधिगम क्रियाएँ तथा मूल्यांकन के ये सभी पहलू एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और इन्हें अलग नहीं किया जा सकता है। अतः जैसे ही शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण हो जाता है, मूल्यांकन प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है तथा बालक के व्यवहार में वांछित परिवर्तन होने के साथ ही समाप्त हो जाती है।

16.9 मूल्यांकन की आवश्यकता

मूल्यांकन की आवश्यकता छात्र, शिक्षक, अभिभावक और समाज, सभी के लिए है। इस आवश्यकता के क्या कारण है? इन कारणों का पृथक् शीर्षकों के अन्तर्गत वर्णन निम्नलिखित हैं–

16.9.1 छात्रों के लिए मूल्यांकन की आवश्यकता

छात्र के लिए मूल्यांकन की आवश्यकता के कारण निम्नलिखित हैं–

1. छात्र को अपनी अच्छाई व कमियों का ज्ञान हो जाता है।
2. छात्र को यह ज्ञात हो जाता है कि उसकी योग्यता में कैसा सुधार हो रहा है।
3. छात्र में समय तत्परता के गुण का विकास होता है।
4. छात्र को अपनी प्रगति की जानकारी हो जाती है।
5. छात्र में स्पर्द्धा की भावना का उदय होता है।
6. मूल्यांकन के आधार पर छात्र पुरस्कार प्राप्त करने के योग्य हो जाता है।
7. छात्र में आत्म-सन्तोष एवं आत्मविश्वास के गुणों का निर्माण होता है।
8. मूल्यांकन के द्वारा प्रत्येक छात्र के विषय में पर्याप्त जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
9. मूल्यांकन छात्र को यह जानने में सहायता प्रदान करता है कि उसे

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

व्यवहार को किस प्रकार विकसित एवं परिवर्तित करना चाहिए।

10. मूल्यांकन, छात्र को प्रगति करने का प्रोत्साहन देता है तथा उसे अपने एवं कार्य के वास्तविक स्तर में अन्तर बताता है।

16.9.2 शिक्षक के लिए मूल्यांकन की आवश्यकता

शिक्षक के लिए मूल्यांकन आवश्यकता के पक्ष में निम्नलिखित तर्क उपस्थित किए जा सकते हैं–

1. मूल्यांकन के द्वारा शिक्षक को अपनी शिक्षा की योजना, शिक्षण की विधियाँ, शिक्षण के उपकरणों की सफलता एवं असफलता का ज्ञान होता है।
2. शिक्षक को शिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ति या अप्राप्ति का स्पष्ट बोध होता है।
3. शिक्षक इस बात को ज्ञात कर सकता है कि उसकी शिक्षण–विधियाँ कितनी उपयुक्त हैं।
4. शिक्षक को छात्र की उपलब्धि का ज्ञान होता है।
5. शिक्षक को छात्रों की सहायता करने का अवसर प्राप्त होता है।

16.9.3 अभिभावक के लिए मूल्यांकन की आवश्यकता

अभिभावक के लिए मूल्यांकन की आवश्यकता के निम्नलिखित कारण स्वीकार किए जाते हैं–

1. अभिभावक को अपने बच्चे की वास्तविक स्थिति का ज्ञान होता है।
2. मूल्यांकन द्वारा प्राप्त प्रगति–पत्र से अभिभावक को अपने बच्चों की योग्यता, रूचि, निष्पत्ति आदि गुणों का ज्ञान होता है।
3. अभिभावक अपने बच्चे को कमियाँ ज्ञात करके, उन्हें दूर करने का प्रयास करते हैं।
4. अभिभावक, मूल्यांकन द्वारा अपने बच्चे की योग्यता के अनुरूप व्यवसाय का चयन कर सकते हैं।
5. अभिभावक को अपने बच्चे का भविष्य उज्जवल बनाकर उसको सुख एवं सन्तोष का जीवन व्यतीत करने का अवसर प्राप्त होता है।

16.9.4 समाज के लिए मूल्यांकन की आवश्यकता

समाज के लिए जिन कारणों से मूल्यांकन की आवश्यकता का अनुभव किया जाता है, वे सामान्य रूप से निम्नांकित हैं–

1. समाज को प्रचलित शिक्षा के स्तर का ज्ञान होता है।
2. समाज, शिक्षा के स्तर को उठाने के प्रयास कर सकता हैं
3. मूल्यांकन से किसी देश या समाज की प्रगति का ज्ञान होता है, क्योंकि प्रगति–साहित्यिक, वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिक क्षेत्र से ज्ञात होती हैं तथा सबका आधार शिक्षा–व्यवस्था है।
4. मूल्यांकन द्वारा यह ज्ञात होता है कि शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्यों एवं पाठ्यक्रम में समाज का कितना प्रभाव है।
5. मूल्यांकन द्वारा यह ज्ञात होता है कि छात्र की अभिवृत्तियाँ, रूचियाँ, शारीरिक कुशलताएँ आदि समाज के हित में हैं अथवा नहीं।

उपर्युक्त विवेचन में यह निष्कर्ष निकलता है कि मूल्यांकन का बहुत महत्त्व है तथा यह बहुत आवश्यक है। मूल्यांकन समय–समय पर छात्र, शिक्षक, अभिभावक एवं समाज की सहायता करता है। इसलिए, इस बात पर जोर दिया जाता है कि मूल्यांकन को सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया का अभिन्न अंग होना चाहिए।

16.10 मूल्यांकन की नवीन धारणा

मूल्यांकन प्रक्रिया की नवीन धारणा के अनुसार इस प्रक्रिया के प्रमुख तीन अंग हैं–

1. शैक्षिक उद्देश्य
2. सीखने के अनुभव
3. व्यावहारिक परिवर्तन

इन तीनों अंगों में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है, जिसे निम्नांकित त्रिभुज द्वारा स्पष्ट किया गया हैं–

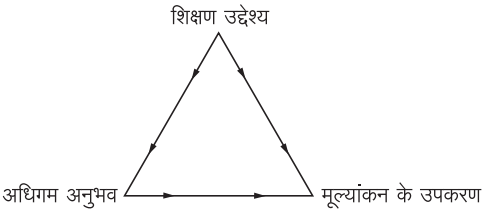

उपर्युक्त रेखाचित्र मूल्यांकन प्रक्रिया के तीनों अंगों की परस्पर निर्भरता व्यक्त करता है। सीखने के अनुभव या शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया, उद्देश्य–प्राप्ति के लिए कार्य करते है। उद्देश्य, अधिगमकर्ता के व्यवहार परिवर्तन में परिलक्षित होते हैं। व्यवहार–परिवर्तन वे प्रमाण हैं, जो उद्देश्य की प्राप्ति और सीखने के अनुभव तथा शिक्षण–प्रक्रिया की उपयुक्तता या अनुपयुक्तता की ओर संकेत करते है। मूल्यांकन के द्वारा हम यह पता लगाते हैं कि सीखने के अनुभव अथवा शिक्षण–प्रक्रिया छात्रों को शैक्षणिक उद्देश्यों की ओर ले जाने में कहाँ तक सफल हुए हैं?

शिक्षण–प्रक्रिया प्रारम्भ करने का बिन्दु है– व्यावहारिक उद्देश्य को निश्चित करना। इसके बाद शिक्षक यह मालूम करता है कि छात्र प्रारम्भ में कहाँ पर है? तत्पश्चात् शिक्षक विधि का अनुसरण करके छात्र में उपयुक्त सीखने के अनुभव उत्पन्न करता है और छात्र को आरम्भिक बिन्दु से वहाँ पर ले जाता है, जहाँ वह जाना चाहता है। इस प्रकार छात्र व्यावहारिक उद्देश्य की प्राप्ति करता है, अर्थात् उसमें वांछित व्यवहार परिवर्तन हो जाता है।

शिक्षण उद्देश्य या व्यावहारिक उद्देश्य वह बिन्दु है, जिसे केन्द्र मानकर समस्त शिक्षण क्रिया संचालित होती हैं। इस प्रकार से अध्यापन की विषय–सामग्री, शिक्षण–विधि, सहायक सामग्री आदि सभी शिक्षण उद्देश्य पर आधारित होते है। शिक्षक इस ढंग से शिक्षण कार्य सम्पादित करता है कि छात्र उपयुक्त सीखने के अनुभव प्राप्त कर सकें, जो उनके व्यवहार में दिखाई पड़ते हैं। शिक्षण के साथ–साथ मूल्यांकन चलता रहता है, जिससे छात्र में होने वाले व्यवहार–परिवर्तन का पता हो जाता है। मूल्यांकन के उपकरण के रूप में परीक्षण की उपयुक्तता इस बात पर निर्भर करती है कि वह किस सीमा तक शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति के सम्बन्ध में सही–सही जाँच कर रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि मूल्यांकन की दृष्टि से शिक्षण प्रक्रिया और परीक्षण (मूल्यांकन का उपकरण) दोनों उद्देश्य (शैक्षणिक उद्देश्य) केन्द्रित होने चाहिए।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

16.11 शैक्षिक मूल्यांकन की प्रक्रिया

मूल्यांकन एक सतत् तथा क्रमबद्ध प्रक्रिया है जिसके पद निश्चित होते हैं तथा जिनका अनुकरण करके इसको पूरा किया जाता है। मुख्यतः मूल्यांकन प्रक्रिया में निम्निलिखित सोपान होते हैं–

1. उद्देश्यों का चयन एवं निर्धारण करना।
2. उद्देश्यों का विश्लेषण (व्यवहार परिवर्तन के सन्दर्भ में)।
3. मूल्यांकन प्रविधियों का चयन।
4. प्रविधियों का प्रयोग एवं परिणाम निकालना।
5. परिणामों की व्याख्या एवं सामान्यीकरण करना।

इस प्रकार उपर्युक्त पदों के अनुसार क्रमशः आगे बढ़ते जाते हैं और परिणाम निकालने में समर्थ हो जाते हैं, तत्पश्चात् प्राप्त परिणामों की व्याख्या करके सामान्यीकरण कर लेते हैं। किसी निर्णय पर पहुँचने के लिए हमें निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए।–

1. परीक्षण में अधिकतम अंक क्या है?
2. बालकों द्वारा प्राप्त निम्नतम तथा उच्चतम अंक क्या हैं?
3. प्राप्त अंकों का औसत क्या है?
4. अमुक छात्र की क्षमता सीमा क्या है?
5. उसने अपनी योग्यतानुसार कहाँ तक अंक प्राप्त किये हैं?

डॉ. पटेल ने निम्नलिखित चार बिन्दुओं द्वारा मूल्यांकन की प्रक्रिया को स्पष्ट किया है–

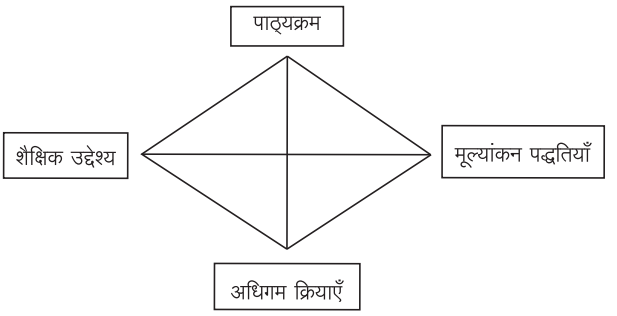

16.12 मापन एवं मूल्यांकन के उद्देश्य एवं प्रयोजन

मापन एवं मूल्यांकन के उद्देश्य एवं प्रयोजन निम्नलिखित बिन्दुओं की सहायता से समझे जा सकते हैं–

1. मापन व मूल्यांकन से शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति का ज्ञान होता है। इससे यह ज्ञात होता है कि उद्देश्यों की प्राप्ति हुई है या नहीं, यदि हुई है तो किस सीमा तक?
2. शैक्षिक उद्देश्यों के साथ–साथ शिक्षण–प्रक्रिया सम्बन्धी अन्य निर्णय भी मापन एवं मूल्यांकन के आधार लिए जाते हैं। अनुदेशी उद्देश्यों के अनुकूल छात्रों ने सीखा या नहीं, छात्रों में कितना वांछित परिवर्तन हुआ, शिक्षक द्वारा अपनायी गयी शिक्षण विधियाँ कितनी प्रभावशाली एवं उपयोगी रहीं, इन सभी बातों की जानकारी मूल्यांकन द्वारा ही सम्भव हैं।
3. मूल्यांकन केवल छात्र का ही अध्ययन नहीं करता, बल्कि यह शिक्षक का भी मूल्यांकन करता है कक्षाध्यापन की क्रियाओं को प्रभावशाली बनाने में शिक्षक कहाँ तक दक्ष है, इसका भी मूल्यांकन किया जाता है?
4. मापन एवं मूल्यांकन शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। यह शिक्षण की प्रक्रिया के साथ सतत् चलता रहता है। शिक्षण प्रारम्भ करते समय कक्षा के छात्रों के प्रविष्ट व्यवहार का मूल्यांकन करना आवश्यक होता है, जिससे शिक्षण–प्रक्रिया की योजना बनायी जा सके।
5. शिक्षण के उपरान्त छात्र उपलब्धि का मापन एवं मूल्यांकन करना होता हैं, जिससे छात्र को स्वयं अपनी उपलब्धि एवं कमियों का ज्ञान हो जाता है इससे छात्रों को प्रेरणा एवं प्रतिपुष्टि प्राप्त होती है।
6. छात्रों की सीखने सम्बन्धी कठिनाइयों तथा कमजोरियों का ज्ञान शिक्षक के लिए आवश्यक होता है। मापन एवं मूल्यांकन की तकनीकी के प्रयोग से छात्रों की सीखने सम्बन्धी कठिनाइयों या समस्याओं का निदान किया जाता है। निदानात्मक परीक्षण इस कार्य के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं।
7. मापन एवं मूल्यांकन के परिणामों के आधार शैक्षिक एवं व्यावसायिक दिशा–निर्देशन दिया जा सकता है।
8. इसके द्वारा किसी विद्यार्थी के विषय में भविष्यवाणी करना, पूर्वानुमान लगाना सम्भव है।
9. मापन एवं मूल्यांकन के उपकरणों का एक उद्देश्य व्यक्ति से व्यक्ति तथा समूह से समूह की तुलना करना है। दो या दो से अधिक समूह का तुलनात्मक अध्ययन इन उपकरणों की सहायता से कर सकते हैं।
10. इसके द्वारा शिक्षार्थी के व्यक्तित्व की माप की जाती है, जिससे यह ज्ञात होता है कि कौनसा शिक्षार्थी सन्तुलित व्यक्तित्व का है तथा कौन कुसमायोजित व्यक्तित्व वाला है। इस प्रकार की जानकारी हो जाने पर शिक्षक अपने छात्र की समस्याओं के निराकरण के लिए उपाय करता है।
11. कक्षा–शिक्षण करते समय छात्रों को उनकी बौद्धिक क्षमता के आधार कुशाग्र बुद्धि के छात्र, सामान्य स्तर तथा मन्द–बुद्धि के छात्रों का वर्गीकरण करने के लिए मापन एवं मूल्यांकन की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार मापन एवं मूल्यांकन का मुख्य प्रयोजन शिक्षण–प्रक्रिया को संचालित करना है। मूल्यांकन का प्रमुख कार्य शिक्षार्थी की योग्यता एवं व्यवहार तथा शिक्षणोपरान्त छात्र में अधिगम के कारण उत्पन्न व्यावहारिक परिवर्तन की जाँच करना है, जिससे सम्पूर्ण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया व्यवस्थित ढंग से संचालित हो सके।

16.13 मापन एवं मूल्यांकन में अन्तर

ब्रेडफील्ड तथा गोंरडाक ने अपनी पुस्तक **शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन** में इन दोनों शब्दों का अन्तर बताते हुए उल्लेख किया है कि मापन की प्रक्रिया में किसी घटना या तथ्य के विभिन्न परिणामों के लिए प्रतीक निश्चित किये जाते हैं, ताकि उस घटना या तथ्य के बारे में यथार्थ निश्चय किया जा सके, जबकि मूल्यांकन में उस घटना या तथ्य का मूल्य ज्ञात किया जाता है। उदाहरणार्थ– एक टाइपिंग सीखने वाले विद्यार्थी को लीजिए। यदि अन्य विद्यार्थियों के साथ

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

उसे एक टाइपिंग परीक्षा दी जाये और परिणाम निकले कि वह प्रति मिनट 40 शब्द टाइप करता है और कुल 5 त्रुटियाँ करता है, तो इसे मापने की प्रक्रिया कहेंगे। इसमें मुख्य तथ्य टाइप करता है। गति एवं परिशुद्धता इस तथ्य के वे परिणाम हैं जिनका मापन किया जा रहा है। 40 शब्द तथा 5 त्रुटियाँ, वे प्रतीक हैं जिनमें परीक्षार्थी की टाइप-योग्यता प्रमाणित हुई है। अब यदि लड़के की टाइप करने की योग्यता को अन्य विद्यार्थियों की टाइप-योग्यता से या सामान्य वितरण में विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों को सामने रखकर आँका जाये और उस आधार पर परीक्षार्थी को बी ग्रेड दिया जाये तो इस प्रक्रिया को मूल्यांकन कहेंगे। इसमें प्रतीक ज्ञात करने के लिए सामान्य विवरण में प्राप्त अंकों या अन्य विद्यार्थियों की योग्यता को प्रतिमान माना जाता है।

दोनों शब्दों का सामान्यतया एक ही अर्थ समझा जाता है, किन्तु दोनों में अन्तर हैं। मापन एवं मूल्यांकन में अन्तर को निम्न तालिका के रूप में स्पष्ट किया जा सकता है-

क्र.सं.	मापन	मूल्यांकन
1.	मापन का क्षेत्र सीमित होता है।	मूल्यांकन का क्षेत्र व्यापक होता है। इसमें छात्र के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का मापन किया जाता हैं।
2.	मापन के द्वारा व्यक्तित्व के किसी एक पक्ष पर बल दिया जाता है। इस प्रकार मापन मूल्यांकन का एक भाग है।	मूल्यांकन में व्यक्ति की सम्पूर्ण परीक्षा ली जाती है। मूल्यांकन में परीक्षाओं का समावेश होता है।
3.	मापन में किसी भी वस्तु या तथ्य का संख्यात्मक चित्र होता है।	मूल्यांकन में मापन के साथ-साथ परिमाणात्मक चित्र को भी सम्मिलित किया जाता है।
4.	मापन किसी छात्र के सम्बन्ध में धारणा व्यक्त नहीं करता।	मूल्यांकन के आधार पर किसी छात्र के विषय में स्पष्ट धारणा बनाई जा सकती है।
5.	मापन के लिए अधिक श्रम और समय की आवश्यकता नही पड़ती है।	मूल्यांकन में अधिक श्रम और समय की आवश्यकता नहीं पड़ती है।
6.	मापन से एक स्थिति का ज्ञान होता है। यह सम्पूर्ण वातावरण से पृथक् रहता है।	मूल्यांकन सम्पूर्ण वातावरण के सन्दर्भ में स्थिति का ज्ञान कराता हैं।
7.	मापन में अंक प्रदान किये जाते हैं। उत्तर-पुस्तिकाओं की जाँच करके उनमें अंक प्रदान करना ही मापन है। इस प्रकार स्पष्ट है कि मापना ही मापन है।	अंक प्रदान करने के पश्चात् अंकों का मूल्य निर्धारित किया जाता हैं, तो यह मूल्यांकन कहलाता है।
8.	मापन के आधार पर भविष्यवाणी सार्थकता के साथ नहीं की जा सकती।	मूल्यांकन में सार्थकता के साथ भविष्यवाणी की जा सकती है। इसमें सभी पक्षों का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।
9.	मापन के अन्तर्गत बुद्धि परीक्षण, व्यक्तित्व परीक्षण आदि आते हैं।	मूल्यांकन के अन्तर्गत मानव-व्यवहार में हुए परिवर्तनों की जानकारी प्राप्त की जाती है।
10.	किसी निरीक्षण की मात्रा का निर्धारण करना मापन है।	व्यक्ति, समाज, संस्कृति की दृष्टि से उस निरीक्षण का कितना महत्त्व है, यह मूल्यांकन कहा जाता है।
11.	मापन में व्यक्ति की योग्यताओं एवं व्यवहार का अंशों में अध्ययन किया जाता ह	मूल्यांकन में व्यक्ति की योग्यताओं एवं व्यवहार का समग्र रूप से अध्ययन किया जाता है।

16.14 मापन एवं मूल्यांकन का महत्त्व

मापन एवं मूल्यांकन शिक्षा-प्रक्रिया की धुरी हैं। यह समस्त शैक्षिक-प्रक्रिया, जैसे- शैक्षिक उद्देश्य, शिक्षण-विधियों, अधिगम (सीखने की स्थितियों), बालक एवं शिक्षक सभी का प्रत्येक स्तर पर निरन्तर मूल्यांकन करता रहता है। शिक्षण-प्रक्रिया में शैक्षिक उद्देश्य, सीखने वाले बालक की प्रारम्भिक योग्यता शिक्षण-विधियाँ तथा मूल्यांकन के बीच एक कड़ी बन जाती है।

मापन एवं मूल्यांकन के महत्त्व एवं उपयोगिता पर निम्नलिखित रूप में प्रकाश डाला जा सकता है-

1. मापन एवं मूल्यांकन, शैक्षिक-प्रक्रिया में अत्यन्त उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इससे शिक्षणोपरान्त अधिगमकर्ता (छात्र) की उपलब्धि की जानकारी प्राप्त होती है।
2. इसके द्वारा छात्र के विभिन्न विषयों की कमजोरी का पता चलता है। इस कमजोरी को दूर करने के लिए शिक्षक उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था करता है।
3. मापन एवं मूल्यांकन द्वारा शिक्षक अपनी शिक्षण विधियों तथा शिक्षण योजना की उपयोगिता की जानकारी प्राप्त कर लेता है। शिक्षण विधियों का मूल्यांकन करने के उपरान्त शिक्षक आवश्यकतानुसार उसमें वांछित परिवर्तन या परिमार्जन कर लेता है।
4. बालक को स्वयं अपनी कमजोरी या सीखने से सम्बन्धित कठिनाइयों एवं दुर्बलताओं की जानकारी मूल्यांकन के उपकरणों द्वारा ज्ञात हो जाती है। वह तद्नुरूप अपने में वांछित सुधार लाने का प्रयास करता है।
5. मूल्यांकन एवं मापन के उपकरणों द्वारा छात्र (अभिगमकर्ता) की उपलब्धि की जानकारी उसे हो जाती है। अच्छी सफलता प्राप्त करने के बाद वह प्रेरित होकर अपने मुख्य लक्ष्य की ओर अग्रसर हो जा सकता है।
6. मूल्यांकन एवं मापन द्वारा छात्र (सीखने वाला) की व्यक्तिगत विभिन्नता का ज्ञान हो जाता है तथा छात्र की योग्यता, बुद्धि, अभिक्षमता, रूचि, व्यक्तित्व के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था की जा सकती है।
7. शैक्षिक, व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत निर्देशन में मापन एवं मूल्यांकन के उपकरणों की विशेष उपयोगिता स्पष्ट होती है।
8. व्यावसायिक प्रशिक्षण की कक्षाओं में प्रवेश के समय अभ्यर्थियों के चयन हेतु मापन व मूल्यांकन के उपकरणों; यथा-बुद्धि परीक्षण, व्यक्तित्व प्रश्नावली, अभिक्षमता परीक्षण आदि का विशेष महत्त्व होता है।
9. छात्रों को कक्षोन्नति प्रदान करते समय मापन एवं मूल्यांकन का विशेष महत्त्व है।

16.15 परीक्षा सुधार हेतु मूल्यांकन की भूमिका

मापन का उद्देश्य विद्यार्थियों के अर्जित ज्ञान का मूल्यांकन करना ही नहीं वरन् इसका लक्ष्य परीक्षा प्रणाली में सुधार करना भी है। इन दोनों लक्ष्यों की पूर्ति तभी हो सकती है, जब हम उस सारे ज्ञान की जाँच कर लें जो छात्रों को पढ़ाया

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

गया है तथा जो ज्ञान जाँचना होता है, उसे भी भली प्रकार पढ़ाना अध्यापक का कर्त्तव्य होता है। दूसरे शब्दों में, परीक्षा लेने से पूर्व हमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि हमें परीक्षा का क्षेत्र कहाँ तक सीमित रखना है, बालकों को कितना ज्ञान दिया जा चुका है तथा किस रूप में दिया गया है, बालकों में कौन-कौन से व्यावहारिक परिवर्तन किए जा चुके हैं जो उनकी प्रगति के सूचक हैं आदि। परीक्षा के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाता है कि बालकों में अपेक्षित व्यावाहरीय परिवर्तन हुए भी हैं अथवा नहीं। यदि हुए हैं तो किस सीमा तक और अगर नहीं हो पाए हैं तो क्यूँ? चूँकि शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाना होता हैं इस दृष्टि से उसके व्यवहार में ऐसे परिवर्तन लाए जाए जो उसके स्वयं की तथा समाज की दृष्टि से उपयोगी हों, साथ ही, उसे सीखने के अनुभव भी व्यवस्थित क्रम में प्रदान किये जाए। इसके विपरीत यदि उन्हें उचित अनुभव समुचित ढंग से प्रदान नहीं किए जाते, तब हमारी परीक्षा का औचित्य ही समाप्त हो जाता हैं

16.16 परीक्षा एवं मूल्यांकन में अन्तर

परीक्षा एवं मूल्यांकन में प्रमुख अन्तर निम्नलिखित हैं-

क्र. सं.	परीक्षा	मूल्यांकन
1.	परीक्षा का क्षेत्र मूल्यांकन की अपेक्षा संकुचित होता है।	मूल्यांकन का क्षेत्र अत्यधिक व्यापक एवं विस्तृत होता है।
2.	मूल्यांकन की अपेक्षा परीक्षा कम विश्वसनीय तथा वैध होती है।	मूल्यांकन अधिक विश्वसनीय तथा वैध होता है।
3.	परीक्षा वर्ष में निश्चित समय पश्चात् आयोजित की जाती है, जैसे- वार्षिक, अर्द्धवार्षिक, मासिक।	मूल्यांकन एक सतत् प्रक्रिया है, जो कि निरन्तर चलती रहती है।
4.	परीक्षा द्वारा बालक की केवल शैक्षिक योग्यताओं एवं कुशलताओं के मान निर्धारित किये जाते है।	मूल्यांकन द्वारा बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व तथा व्यवहार का निर्धारण किया जाता है, जिसमें व्यवहार के तीनों पक्ष- ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा मनोशारीरिक पक्ष समाहित रहते हैं।
5.	परीक्षा मुख्यतः लिखित, मौखिक तथा प्रयोगात्मक होती है।	मूल्यांकन में विभिन्न विधियों तथा प्रविधियों का प्रयोग करके बालक के सम्बन्ध में सूचनाएँ एकत्र की जाती है।
6.	परीक्षा द्वारा प्राप्त निष्कर्ष परिमाणात्मक होते हैं।	मूल्यांकन द्वारा प्राप्त निष्कर्ष परिमाणात्मक होने के साथ-साथ गुणात्मक भी होते हैं।
7.	परीक्षा का उपयोग वर्गीकरण तथा क्रमोन्नति के लिए ही किया जाता है।	इसका उपयोग वर्गीकरण के साथ-साथ शैक्षिक निदान, छात्रों का मार्गदर्शन तथा पूर्व कथन करने के लिए किया जाता है।

16.17 सतत् मूल्यांकन की अवधारणा

सतत् मूल्यांकन, मूल्यांकन की ऐसी व्यवस्था है जो सीखने-सिखाने के साथ-साथ चलती है, जिसमें शिक्षार्थियों के अनुभवों और व्यवहारों में होने वाले परिवर्तनों का लगातार मूल्यांकन होता रहता है। सतत् मूल्यांकन लिखित, मौखिक एवं अन्य क्रियाकलापों के माध्यम से सम्पन्न होता है। सतत् मूल्यांकन में प्रत्येक इकाई (पाठ/अध्याय) से शिक्षण के उपरान्त या शिक्षण के दौरान विभिन्न उपकरणों से छात्रों का मूल्यांकन किया जाता है। इससे यह पता लगाया जाता है कि अध्यापित विषय वस्तु को छात्र समझ रहा है अथवा नहीं।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में हमारा एकमात्र उद्देश्य रहता है- बालक का सर्वांगीण विकास। इसके अतिरिक्त बालक की आयु व कक्षा के स्तर को ध्यान में रखते हुए सीखने के उद्देश्य निश्चित किये जाते हैं, लेकिन उद्देश्यों की प्राप्ति तभी सम्भव है जब बालक के सीखने के स्तर के बारे में निरन्तर जानकारी ज्ञात होती रहे। इसके लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक शिक्षण के दौरान ही विभिन्न परीक्षणों के आधार पर यह सुनिश्चित कर ले कि बालक ने कितना सीख लिया है और उसे किस-किस सोपान पर सहायता की आवश्यकता हैं

सतत् मूल्यांकन का आशय उस आकलन या परीक्षण से है, जिससे शिक्षार्थी के अध्ययन एवं उपलब्धियों का प्रतिमाह आकलन किया जाता है। सतत् मूल्यांकन प्रक्रिया में सामान्यतः सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को दस इकाइयों में विभक्त कर दिया जाता है। उस इकाई का अध्यापन कराने के बाद स्वाभाविक रूप से प्रतिमाह परीक्षण किया जाता है तथा उसका व्यवस्थित लेखा-जोखा रखा जाता है। प्राथमिक एवं पूर्ण माध्यमिक कक्षाओं में सतत् प्रक्रिया हर जगह प्रचलित नहीं, किन्तु यह उस रूप में प्रचलित नहीं है जिस प्रकार की सतत् मूल्यांकन के मौलिक स्वरूप में होनी चाहिए। इससे केवल ज्ञानार्जन के शैक्षिक कौशल का मूल्यांकन नहीं किया जाता है। इसे निरन्तर मूल्यांकन योजना भी कहते हैं।

16.18 सतत् मूल्यांकन का महत्त्व

कक्षोन्नति का प्रमुख साधन वार्षिक परीक्षा तथा उसके परिणाम होते हैं। इस प्रथा से सभी भली-भाँति परिचित हैं। सम्पूर्ण स्कूल संकल्पना के कार्यक्रम अन्तर्निहित सतत् मूल्यांकन इस समस्या का प्रमुख समाधान हैं। सतत् मूल्यांकन के माध्यम से बालक की योग्यता तथा अयोग्यता के बारे में नियमित रूप से उपयोगी तत्त्वों का संकलन सम्भव हो सकेगा। इन तथ्यों का प्रयोग ऐसे उपचारात्मक शिक्षण यन्त्र तथा समृद्ध शिक्षण के रूप में किया जा सकेगा, जिससे कि बालकों के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का अधिकतम विकास किया जा सके और शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। इस फीडबैक से न केवल विद्यार्थी को मापन, वर्गीकरण एवं प्रमापीकरण में सहायता मिलेगी अपितु उसकी कार्यकुशलता एवं सफलता के स्तर को सुधारने की तथा इस प्रकार के रचनात्मक मूल्यांकन के द्वारा उसके अधिकतम विकास की व्यवस्था को सक्षम बनाया जा सकेगा। इस प्रकार सतत् मूल्यांकन के परिणाम हमें शीघ्र प्राप्त होंगे और सतत् व्यापक मूल्यांकन स्वयं लक्ष्य न होकर लक्ष्य प्राप्त करने का साधन है विद्यार्थी परीक्षा के भय से मुक्त हो सकेंगे तथा सहज भाव से मूल्यांकन के लिए तत्पर रहेंगे।

सतत् मूल्यांकन सार्थक ज्ञान के लिए निदान का पथ प्रशस्त करता है। एक प्राथमिक शिक्षक अपने ज्ञान तथा कार्यकुशलता की सहायता से मूल्यांकन का प्रयोग विद्यार्थी के ज्ञानार्जन की कठिनाइयों और उसके कारणों का निदान करने के लिए कर सकता है। वह उचित उपचारात्मक साधन अपना कर उसकी

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

प्रगतिरोध तथा क्षति को कम कर सकता है तथा इस तरह उसे अधिकतम ज्ञान प्राप्त करने में सहायता कर सकता है। सार्थक ज्ञान का अर्थ है– विद्यार्थी की वांछनीय योग्यताओं तथा क्षमताओं का विकास जिससे वह भविष्य में अधिकतम लाभ प्राप्त कर सके, विद्यार्थी को रूचि ज्ञानार्जन के लिए उपलब्ध समय एवं शिक्षा से लाभ उठाने की क्षमता प्राप्त होती है।

16.19 सतत् मूल्यांकन की विधियाँ

वर्तमान में परम्परागत रूप से अर्द्ध वार्षिक परीक्षा एवं वार्षिक परीक्षा काफी अधिक समयान्तराल के बाद होती हैं, जिनके कारण बालकों की कठिनाइयों को पहचान कर उन्हें दूर करना असम्भव होता है। अतः बालकों की प्रगति को निरन्तर बनाये रखने के लिए सतत् मूल्यांकन करने हेतु कुछ निम्नलिखित नई प्रविधियों को अपनाया जाने लगा है–

1. सत्र परीक्षा

विद्यालयों में परम्परागत, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं के अतिरिक्त सतत् व्यापक मूल्यांकन को ध्यान में रखते हुए शिक्षा सत्र में सितम्बर व फरवरी माह में दो और परीक्षाएँ लेने का प्रावधान किया गया है। शासनादेशानुसार ये दोनों परीक्षाएँ दोनों माहों के प्रथम सप्ताह में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के नेतृत्व में सम्पन्न होंगी। कक्षा 1 से 8 तक के लिए प्रत्येक विषय की परीक्षा 100 अंक की होगी। कक्षा 1 व 2 के लिए अंकों की मौखिक व 50 अंकों की लिखित परीक्षा होगी। छात्र परीक्षाओं के अंकों को वार्षिक परीक्षा के अंकों में जोड़ दिया जाता है।

2. इकाई परीक्षण

सतत् मूल्यांकन को विकसित एवं सुदृढ़ बनाने की दृष्टि से पाठ्य–पुस्तक के अध्याय के बाद इकाई परीक्षण योजना को लागू किया गया है। एक अध्याय के शिक्षण के बाद उसका परीक्षण किया जाता है कि पढ़ाये गये पाठ का बालकों को बोध हो गया है अथवा नहीं। यदि उन्हें उस अध्याय का बोध नहीं हुआ है, तो शिक्षण पुनः किया जाता है।

3. मासिक परीक्षाएँ

एक माह में पढ़ायी गयी विषय–वस्तु का आकलन करने के लिए विद्यालयों में मासिक परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है। इस परीक्षा का आयोजन इस दृष्टि से किया जाता है कि एक माह में पढ़ायी गयी विषय–वस्तु का छात्रों को कितना बोध हुआ है, यदि शिक्षण में कुछ कमियाँ महसूस की जाती हैं, तो उन्हें तत्काल प्रभाव से दूर किया जा सके।

4. सेमेस्टर पद्धति

सतत् मूल्यांकन की अवधारणा को ध्यान में रखते हुए वर्तमान में उच्च शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण आदि में 6–6 माह की सेमेस्टर पद्धति को लागू किया गया है। प्रत्येक सेमेस्टर पूरा करने के बाद परीक्षा आयोजित की जाती है। इस अवधि में सीमित पाठ्यक्रम होने के कारण छात्रों को अधिगम करने में आसानी रहती है तथा 6 माह के बाद यह ज्ञात हो जाता है कि छात्रों में किस स्तर पर कमी है। इस पद्धति में सेमेस्टर का परीक्षाफल निकलने का इन्तजार न करके तुरन्त अगले सेमेस्टर की पढ़ाई प्रारम्भ कर दी जाती है।

16.20 व्यापक मूल्यांकन का अर्थ

शिक्षा जीवन–पर्यन्त चलने वाली एक प्रक्रिया है जो मानव जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करती है। चूँकि मूल्यांकन और शिक्षा का परस्पर गहन सम्बन्ध है अतः मूल्यांकन भी जीवन से मृत्यु तक किसी न किसी रूप में किया जाता है। मनुष्य के जीवन के अनेक पहलुओं, पक्षों, अवयवों, अवधारणाओं का संयुक्त स्वरूप हैं, जो मनुष्य के जीवन को प्रभावित करता है वस्तुतः वह हमें दिखाई नहीं पड़ता।

बालक के अधिगम को किसी न किसी रूप में प्रभावित करने वाले स्थूल–सूक्ष्म, प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष, ज्ञात–अज्ञात अनेकों पक्ष हैं, जिनका मूल्यांकन करना व्यापक मूल्यांकन कहलाता है। इस मूल्यांकन के द्वारा यह निर्णय लिया जा सकता है कि कौन से तत्त्व छात्र के अन्दर अच्छे हैं और कौन से बुरे हैं तथा तत्त्वों का छात्र के विकास में क्या योगदान हैं। शैक्षिक क्षेत्र में किसी बालक का मूल्यांकन करते समय उसके वातावरण तथा सामाजिक पृष्ठभूमि व उसकी शारीरिक क्षमता को समझकर ही व्यापक मूल्यांकन किया जाता है।

16.21 व्यापक मूल्यांकन के विभिन्न पक्ष

बालक के सम्पूर्ण पक्षों का मूल्यांकन करना व्यापक मूल्यांकन कहलाता है। व्यापक मूल्यांकन के अन्तर्गत निम्नलिखित पक्षों को सम्मिलित किया जाता है–

1. संज्ञानात्मक पक्ष

बालक में निहित ज्ञान, स्मरण, पुनः स्मरण तथा अभिज्ञान की अवधारणा को मजबूत करना संज्ञानात्मक मूल्यांकन है, जिसमें रूचि एवं चिन्तन सम्मिलित किये जाते हैं।

2. भावात्मक पक्ष

बालक में निहित भावपक्ष, दया, करूणा, पुनर्वास की इच्छा, सत्यनिष्ठा श्रृद्धा भाव आदि का मूल्यांकन किया जाता है।

3. कौशलात्मक पक्ष

बालक में निहित कार्यकुशलता, कार्य करने की क्षमता, श्रम के प्रति निष्ठा तथा रचनात्मक व क्रियात्मक प्रवृत्ति का मूल्यांकन किया जाता है।

****

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

1. मूल्यांकन का अर्थ है–
(1) निरीक्षण
(2) परीक्षण
(3) निर्णय देना
(4) उपरोक्त सभी

2. मूल्यांकन से अभिप्राय है–
(1) छात्रों की आवश्यकता का पता लगाना
(2) छात्रों की बुद्धि का पता लगाना
(3) छात्रों के अधिगम की सफलता व असफलता का अध्ययन करना
(4) स्वास्थ्य परीक्षण करना

3. मूल्यांकन का उद्देश्य हैं–
(1) शैक्षिक उद्देश्यों में स्पष्टता लाना।
(2) छात्रों का वर्गीकरण अथवा श्रेणी निर्धारण करना
(3) प्रयोजन के अनुसार चयन करना
(4) उपरोक्त सभी

4. एक अच्छे मूल्यांकन की विशेषता होनी चाहिए–
(1) विद्यार्थी केन्द्रित हो (2) व्यापक हो
(3) उद्देश्य केन्द्रित हो (4) उपर्युक्त सभी

5. मूल्यांकन में शामिल है–
(1) मूल्य निर्धारण (2) मापन
(3) उपर्युक्त दोनों (4) पुरस्कार/दण्ड

6. मूल्यांकन का उद्देश्य है–
(1) निरपेक्ष (2) सापेक्ष
(3) एकांगी (4) बहुमुखी

7. मूल्यांकन प्रक्रिया के तीन महत्त्वपूर्ण बिन्दु हैं–
(1) उद्देश्य, अधिगम अनुभव व मूल्यांकन के उपकरण
(2) छात्र, अध्यापक व उद्देश्य
(3) छात्र, समाज व अधिगम के अनुभव
(4) छात्र, परीक्षा व परिणाम

8. मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए–
(1) शिक्षार्थियों की उपलब्धि को मापना
(2) यह निर्णय लेना कि क्या विद्यार्थी को अगली कक्षा में प्रोन्नत किया जाना चाहिए
(3) सीखने में होने वाली कमियों का निदान और उपचार करना
(4) शिक्षार्थियों की त्रुटियाँ निकालना

9. सतत् और व्यापक मूल्यांकन ..... होता है।
(1) शिक्षक–केन्द्रित (2) विद्यार्थी–केन्द्रित
(3) परीक्षा–केन्द्रित (4) निष्पादन–आधारित

10. सतत् मूल्यांकन में गुण निहित होता है–
(1) नियमबद्धता का (2) निरन्तरता का
(3) अस्पष्टता का (4) अव्यवस्था का

11. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के मध्य अन्तर है–
(1) शिक्षण–शक्ति का (2) पाठ्य–वस्तु का
(3) समय का (4) उद्देश्य का

12. छात्रों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए–
(1) वर्ष में दो बार (2) लगातार वर्ष भर
(3) वर्ष में तीन बार (4) वर्ष के अन्त में

13. मूल्यांकन में दी जाती है–
(1) शैक्षिक प्रगति की प्रेरणा
(2) भाषण की प्रेरणा
(3) खाने–पीने की प्रेरणा
(4) इनमें से कोई नहीं

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

14. मूल्यांकन के पक्ष होते हैं–
(1) तीन (2) चार
(3) पाँच (4) दो

15. शिक्षण प्रक्रिया किस सीमा तक सफल है, इसका पता लगाया जाता है–
(1) शिक्षकों से
(2) मूल्यांकन से
(3) समाज से
(4) विद्यार्थियों से

16. सतत् और व्यापक मूल्यांकन बल देता है–
(1) बोर्ड परीक्षाओं की अनावश्यकता पर
(2) सीखने को सुनिश्चित करने के लिए व्यापक स्केल पर निरन्तर परीक्षण पर
(3) सीखने को किस प्रकार अवलोकित, रिकॉर्ड और सुधारा जाए इस पर
(4) शिक्षण के साथ परीक्षाओं के सामंजस्य पर

17. जब एक बावर्ची, खाना पकाते समय खाने को चखता है, तो यह .....के समान है।
(1) सीखने का आकलन
(2) सीखने के लिए आकलन
(3) सीखने के रूप में आकलन
(4) आकलन और सीखना

1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.	9.	10.	11.	12.	13.	14.	15.	16.	17.					
(3)	(3)	(4)	(4)	(3)	(2)	(4)	(1)	(2)	(2)	(4)	(2)	(1)	(1)	(2)	(3)	(2)					

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

18. ..... के अलावा निम्नलिखित घटना/वृत्तान्त रिकॉर्ड की विशेषताएँ हैं–
(1) यह घटनाओं का सही वर्णन है।
(2) यह बच्चे के व्यक्तिगत विकास अथवा सामाजिक अन्तःक्रियाओं को वर्णित करता है।
(3) यह पर्याप्त विस्तार से पूर्ण तथ्यात्मक प्रतिवेदन है।
(4) यह व्यवहार का व्यक्तिनिष्ठ साक्ष्य है और इसलिए वह शैक्षणिक क्षेत्र के लिए प्रतिपुष्टि (फीडबैक) उपलब्ध नहीं कराता।

19. सतत् और व्यापक मूल्यांकन की योजना में **व्यापक** शब्द ..... के अलावा निम्नलिखित के द्वारा समर्थित किया जाता है।
(1) बहुबुद्धि सिद्धान्त
(2) सूचना प्रक्रमण सिद्धान्त
(3) जे. पी. गिलफोर्ड का बुद्धि–संरचना का सिद्धान्त
(4) थर्स्टन का प्राथमिक मानसिक योग्यताओं का सिद्धान्त

20. विद्यार्थियों के पोर्टफोलियो के लिए सामग्री का चयन करते समय ..... का ..... जरूर होना चाहिए।
(1) विद्यार्थियों, समावेशन (2) अभिभावकों, समावेशन
(3) विद्यार्थियों, बहिष्करण (4) अन्य शिक्षकों, समावेशन

21. सीखने ..... आकलन, आकलन और अनुदेशन के बीच ..... के दृढ़ीकरण द्वारा सीखने को प्रभावित करता है।
(1) के लिए, सम्बन्धों (2) के लिए, अन्तर
(3) का, अन्तर (4) का, भिन्नता

22. सामाजिक स्थिति का सर्वोत्तम उपकरण क्या है?
(1) प्रश्नावली (2) साक्षात्कार
(3) निरीक्षण (4) समाजमिति

23. किसी विद्यार्थी के आन्तरिक मनोभावों के माप की सर्वोत्तम प्रविधि कौनसी है?
(1) प्रश्नावली (2) साक्षात्कार
(3) प्रत्यारोपण विधि (4) समाजमिति

24. किसी कक्षा में किसी विद्यार्थी के सामाजिक सम्बन्धों का मापन किस विधि से किया जा सकता है?
(1) प्रश्नावली (2) साक्षात्कार
(3) निरीक्षण (4) समाजमिति

25. शैक्षिक अनुसन्धान में सबसे अधिक किस प्रविधि का प्रयोग किया जाता है?
(1) प्रश्नावली (2) साक्षात्कार
(3) निरीक्षण (4) समाजमिति

26. मुँह दर मुँह बातचीत अनुसन्धान की कौनसी प्रविधि है?
(1) प्रश्नावली (2) साक्षात्कार
(3) निरीक्षण (4) समाजमिति

27. **यदि मापन के सारे यन्त्र तथा साधन विश्व से समाप्त कर दिए जाए, तो आधुनिक सभ्यता बालू की दीवार की तरह ढ़ह जायेगी।** यह कथन है–
(1) रॉय का (2) रॉस का
(3) हरबर्ट का (4) सिंपसन का

28. किसी वस्तु को मात्रा के रूप में प्रकट करने की प्रक्रिया को ..... कहते हैं।
(1) मापन (2) मूल्यांकन
(3) परिधि (4) संक्रिया

29. वही परीक्षा पूर्णतया वैध मानी जाएगी, जिसमें–
(1) निबन्धात्मक प्रश्न हो। (2) लघूत्तरात्मक प्रश्न हो।
(3) वस्तुनिष्ठ प्रश्न हो। (4) उपर्युक्त सभी हो।

30. सीखने के लिए आकलन निम्नलिखित का ध्यान है सिवाय–
(1) विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ
(2) विद्यार्थियों की त्रुटियाँ
(3) विद्यार्थियों की अधिगम–शैलियाँ
(4) विद्यार्थियों की क्षमताएँ

31. सतत् और व्यापक मूल्यांकन के लिए तार्किक आधार है–
(1) सीखने के एक से अधिक पक्षों का आकलन
(2) आकलन के अवसरों का अधिकमीकरण
(3) मानव व्यक्तित्व की समग्र प्रकृति
(4) शिक्षकों पर बोझ बढ़ाना

32. **प्रश्नावली मापन की एक प्रविधि है, जिसकी सहायता से प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किये जाते हैं, जिन्हें न्यादर्श के सदस्यों द्वारा स्वयं लिखना पड़ता है।** यह किसने कहा है?
(1) गुड तथा स्केट ने
(2) गुड तथा हैट ने
(3) वाट, डेविस तथा जॉनसन ने
(4) उपर्युक्त सभी

33. आकलन को **उपयोगी और रोचक** प्रक्रिया बनाने के लिए ..... के प्रति सचेत होना चाहिए।
(1) अलग–अलग विद्यार्थियों में तुलना करने
(2) विद्यार्थियों को बुद्धिमान या औसत शिक्षार्थी की उपाधि देने
(3) शैक्षिक और सह–शैक्षिक क्षेत्रों में विद्यार्थी के सीखने के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए विविध तरीकों का प्रयोग करने
(4) प्रतिपुष्टि (फीडबैक) देने के लिए तकनीकी भाषा का प्रयोग करने

18.	19.	20.	21.	22.	23.	24.	25.	26.	27.	28.	29.	30.	31.	32.	33.						
(4)	(3)	(1)	(1)	(4)	(3)	(4)	(2)	(2)	(2)	(1)	(3)	(1)	(1)	(1)	(2)						

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

34. क्रिस्टिना अपनी कक्षा को क्षेत्र-भ्रमण पर ले जाती है और वापस आने पर अपने विद्यार्थियों के साथ भ्रमण पर चर्चा करती है। यह ..... की ओर संकेत करता है।
(1) सीखने के लिए आकलन
(2) आकलन के लिए सीखना
(3) आकलन का सीखना
(4) सीखने का आकलन

35. निम्न में से अधिगम के मूल्यांकन की विशेषता नहीं है-
(1) यह मूल्यांकन शिक्षा-प्राप्ति के बाद किया जाता है।
(2) इसमें सूचना को सामान्य रूप से अंकों अथवा ग्रेडों में रूपान्तरित किया जाता है।
(3) इसमें सूचना अध्यापक द्वारा एकत्र की जाती है।
(4) इसमें सूचना छात्रों के द्वारा स्वयं एकत्र की जाती है।

36. वह मूल्यांकन, जो विद्यालय परिषदों के दिशा-निर्देशों के आधार पर तो किया जाता है, किन्तु परिषद् (बोर्ड) स्तर पर नहीं, कहलाता है-
(1) विद्यालय आधारित मूल्यांकन (2) निरीक्षण
(3) अवलोकन (4) व्यापक मूल्यांकन

37. आजकल विद्यालय आधारित मूल्यांकन की चर्चा की जाती है, इसके अन्तर्गत अध्यापकों को विद्यार्थियों के बारे में निम्नलिखित में से क्या जानने का अवसर प्राप्त होता है?
1. वे क्या सीखते हैं? 2. वे क्या सोचते हैं?
3. वे कैसे सीखते हैं?
(1) केवल 1 (2) 2 और 3
(3) 1 और 3 (4) ये सभी

38. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने विद्यालय आधारित सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के दिशा-निर्देश दिए हैं, निम्नलिखित में से कौनसा इसका एक उद्देश्य नहीं है?
(1) बच्चों पर पड़ने वाले दबाव को कम करना
(2) विद्यार्थियों को अपनी रूचि के अनुसार पढ़ने की छूट देना
(3) छात्रों की प्रवीणता के निर्धारण के लिए अंकों के स्थान पर ग्रेडों का उपयोग
(4) निदान एवं उपचार के साधन की व्यवस्था करना

39. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में **व्यापक** का तात्पर्य क्या है?
(1) एक बार के कार्यक्रम के बदले निरन्तर मूल्यांकन।
(2) छात्रों के शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक पक्षों की किसी एक क्षमता का व्यापक मूल्यांकन।
(3) छात्रों की ज्ञान, समझ, व्याख्या, अनुप्रयोग, विश्लेषण इत्यादि की क्षमता का मूल्यांकन।
(4) छात्रों की याद करने की क्षमता का व्यापक मूल्यांकन।

40. निम्नलिखित में से कौनसा सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का एक उद्देश्य नहीं है?
(1) याद रखने पर बल देने के बदले सीखने की प्रक्रिया पर बल देना।
(2) छात्रों के सीखने की प्रक्रिया एवं परिवेश के बारे में उपयुक्त निर्णय लेना।
(3) अध्यापन एवं अधिगम प्रक्रिया को शिक्षक केन्द्रित कार्यकलाप बनाना।
(4) बोधात्मक, मनोप्रेरक और भावात्मक कौशलों के विकास में सहायता करना।

41. साक्षात्कार को किस श्रेणी में रखा गया है?
(1) प्रेक्षण (2) प्रक्षेपण
(3) वार्तालाप (4) इनमें से कोई नहीं

42. मूल्यांकन की प्रक्रिया के दौरान शिक्षकों को काफी सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। इस दौरान शिक्षकों को निम्नलिखित में से कौनसा कार्य करना चाहिए?
(1) छात्रों को फीडबैक उपलब्ध कराना, ताकि वे बेहतर ढंग से कार्य कर सके।
(2) छात्रों के बीच तुलना करना।
(3) छात्रों के बारे में नकारात्मक बयान देना।
(4) शिक्षार्थियों को मन्द, कमजोर, बुद्धिमान आदि के रूप में वर्गीकृत करना।

43. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के बारे में निम्नलिखित में से कौनसा कथन असत्य है?
(1) सतत् और व्यापक मूल्यांकन के सतत् पहलू के अन्तर्गत मूल्यांकन के सतत् और आवधिक पहलू का ध्यान रखा जाता है।
(2) व्यापक संघटक में विद्यार्थियों के विकास के शैक्षिक और इसके अलावा सह-शैक्षिक पहलुओं का निर्धारण शामिल है।
(3) इसमें छात्रों की उपलब्धियों का मूल्यांकन अंकों के रूप में होता है।
(4) इसमें मूल्यांकन की बहुविध तकनीकों का उपयोग अनौपचारिक रूप से किया जाता है।

44. निम्नलिखित में से कौनसा सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का एक उपकरण या साधन है?
1. निरीक्षण
2. प्रश्नावली
3. जाँच सूची
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) केवल 3 (4) ये सभी

45. अधिगम के अच्छे मूल्यांकन का/के मानदण्ड है/हैं-
(1) ये युक्तिसंगत होते हैं।
(2) ये विश्वसनीय होते हैं।
(3) ये तुलनीय होते हैं।
(4) ये सभी

34.	35.	36.	37.	38.	39.	40.	41.	42.	43.	44.	45.										
(1)	(4)	(1)	(4)	(2)	(2)	(3)	(1)	(1)	(3)	(4)	(4)										

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

46. पारम्परिक बाह्य परीक्षा की तुलना में वर्तमान समय में विद्यालय-आधारित मूल्यांकन को सुदृढ़ करने की आवश्यकता क्यों है?
(1) क्योंकि विद्यालय आधारित मूल्यांकन में बच्चों की सभी योग्यताओं का मूल्यांकन होता है।
(2) क्योंकि विद्यालय आधारित मूल्यांकन वर्ष के अन्त में एक बार होता है, जिससे छात्रों को सुविधा होती है।
(3) क्योंकि विद्यालय आधारित परीक्षा में अंकों के आधार पर विद्यार्थियों को उत्तीर्ण अथवा अनुत्तीर्ण किया जाता है।
(4) उपरोक्त सभी

47. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के अन्तर्गत निम्नलिखित में से कौनसा कार्य नहीं किया जाता है?
(1) इसमें परीक्षा-परिणामों का विश्लेषण, और व्यापक वैज्ञानिक तरीके से किया जाता है।
(2) इसमें परीक्षा के प्राप्तांकों के आधार पर विद्यार्थियों को उत्तीर्ण अथवा अनुत्तीर्ण किया जाता है।
(3) इसमें बच्चों पर पड़ने वाले दबाव को कम किया जाता है।
(4) मूल्यांकन को व्यापक एवं नियमित बनाया जाता है।

48. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में निम्नलिखित में से किसका मूल्यांकन नहीं किया जाना चाहिए?
(1) छात्रों के विभिन्न विषय क्षेत्रों के कौशल
(2) छात्रों के विभिन्न विषय क्षेत्रों में सफलता का स्तर
(3) छात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति
(4) छात्रों के वैयक्तिक कौशल, रूचि एवं अभिवृत्ति

49. मूल्यांकन की प्रक्रिया के दौरान शिक्षकों को काफी सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। इस दौरान शिक्षकों को निम्नलिखित में से कौनसा कार्य नहीं करना चाहिए?
(1) प्रत्येक विद्यार्थी की अनुक्रिया के बारे में संवेदनशील होना।
(2) बच्चों की प्रगति के बारे में सूचना एकत्र करते रहना।
(3) शिक्षार्थियों को विभिन्न वर्गों में विभाजित कर उनके बीच तुलना करना।
(4) बच्चों की विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को अभिलेखबद्ध करना।

50. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की निम्नलिखित में से किस विधि में शिक्षक विद्यार्थी के विभिन्न तथ्यों जैसे- भाषा के प्रयोग, संवेगात्मक, खेल के दौरान व्यवहार इत्यादि को लिखता है एवं इस तरह एकत्र सूचनाओं के आधार पर मूल्यांकन करता है?
(1) जाँच-सूची
(2) प्रश्नावली
(3) निरीक्षण
(4) साक्षात्कार

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

51. मूल्यांकन द्वारा पता चलता है-
(1) छात्र के मानसिक विकास का
(2) छात्र की शैक्षिक स्थिति तथा प्रगति का
(3) छात्र के सामाजिक विकास का
(4) छात्र की सोच का

52. मूल्यांकन के द्वारा-
(1) छात्र अपनी कमियों को जान जाते हैं।
(2) छात्र कक्षा में प्रतिस्पर्द्धा करते हैं।
(3) छात्र अपनी योग्यता में सुधार लाने का प्रयास करते हैं।
(4) उपर्युक्त सभी लाभ प्राप्त करते हैं।

53. आन्तरिक मूल्यांकन है-
(1) शिक्षा परिषद् द्वारा मूल्यांकन
(2) अध्ययनरत विद्यालय के अध्यापक द्वारा मूल्यांकन
(3) छात्रों द्वारा स्व-मूल्यांकन
(4) अध्यापकों के शिक्षण का मूल्यांकन

54. दैनिक मूल्यांकन लाभदायक है-
(1) बालकों का ध्यान केन्द्रित करने में
(2) बालकों की तात्कालिक शैक्षिक स्थिति का पता लगाने में
(3) कक्षा को अधिकाधिक तंग करने में
(4) शिक्षक द्वारा अपने कर्त्तव्य का मूल्यांकन करने में

55. मूल्यांकन में गुणात्मक पक्ष का मापन करते हैं-
(1) साक्षात्कार एवं अवलोकन के द्वारा
(2) छात्रों के गुणों के स्पर्श द्वारा
(3) लिखित परीक्षा द्वारा
(4) मौखिक परीक्षा द्वारा

56. निम्न में से कौनसी मूल्यांकन की विशेषता नहीं हैं?
(1) यह एक व्यापक प्रक्रिया है, जो व्यवहार के तीनों पक्षों को शामिल करती है।
(2) यह एक व्यवस्थित प्रक्रिया है, जो पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की दिशा में आगे बढ़ती है।
(3) यह कार्य पूरा होने के बाद किया जाता है।
(4) यह एक उद्देश्य पूर्ण क्रिया है, जो कि शिक्षक तथा शिष्य दोनों की जरूरत को पूरा करती है।

57. मूल्यांकन सहायक है-
(1) संचयी अभिलेख तैयार करने में
(2) अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति में
(3) अध्यापक के व्यवहार में सुधार लाने में
(4) उपरोक्त सभी

46.	47.	48.	49.	50.	51.	52.	53.	54.	55.	56.	57.										
(4)	(2)	(3)	(3)	(1)	(2)	(4)	(2)	(2)	(1)	(3)	(4)										

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

58. मूल्यांकन किस प्रकार से अध्यापक के लिए उपयोगी है?
(1) यह क्रिया अनुसन्धानों के लिए नये रास्ते खोलता है।
(2) अध्यापक अपने छात्रों को विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत कर सकता है।
(3) अध्यापक अपने छात्रों को तुरन्त पुष्टिपोषण दे सकता है।
(4) उपरोक्त सभी

59. मूल्यांकन करते समय आप–
(1) प्रिय छात्रों को अधिक अंक देंगे।
(2) मूल्यांकन निष्पक्ष करेंगे।
(3) मजबूरीवश सिफारिश वाले छात्रों को अच्छे अंक देंगे
(4) उपर्युक्त सभी

60. शिक्षण को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक है कि–
(1) पाठ्यक्रम को बार-बार दोहराया जाए।
(2) गृहकार्य दिया जाए।
(3) छात्रों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
(4) छात्रों का मूल्यांकन और समस्या समाधान साथ-साथ किया जायें

61. सतत् मूल्यांकन का कार्य है–
(1) शिष्यों व अध्यापकों की कमजोरियों का पता लगाना
(2) छात्र तथा अध्यापकों को कठिन परिश्रम करने के लिए अभिप्रेरित करना
(3) छात्रों को विशेषज्ञता स्तर तक पहुँचाना
(4) उपरोक्त सभी

62. मूल्यांकन आँकड़ों की अर्थपूर्ण व्याख्या के लिए विश्लेषण के मुख्य सोपान बताइए?
1. आँकड़ों का वर्गीकरण और सारणीकरण
2. समंकों का सांख्यिकीय विश्लेषण
3. त्रुटियों का विश्लेषण
4. ग्राफीय विश्लेषण और निरूपण
5. मानकों और मानदण्ड़ों का उपयोग

कूट–
(1) 1,4,2,5 और 3
(2) 1,2,4,5 और 3
(3) 1,2,5,4 और 3
(4) 3,1,2,5 और 4

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

63. विद्यालय-आधारित आकलन मुख्य रूप से किस सिद्धान्त पर आधारित होता है?
(1) आकलन बहुत किफायती (मितव्ययी) होना चाहिए।
(2) बाह्य परीक्षकों की अपेक्षा शिक्षक अपने शिक्षार्थियों की क्षमताओं को बेहतर जानते हैं।
(3) किसी भी कीमत पर विद्यार्थियों को अच्छे ग्रेड मिलने चाहिए।
(4) विद्यालय, बाह्य परीक्षा निकायों की अपेक्षा ज्यादा सक्षम है।

64. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. प्रश्नावली, प्रश्नों का एक समूह, जो उत्तरदाता के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है।
2. प्रश्नावली प्रमाणीकृत साक्षात्कार का लिखित रूप है। साक्षात्कार में प्रश्न मौखिक रूप से क्रम में पूछे जाते हैं।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

65. प्रश्नावली तैयार करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
1. प्रश्नावली के साथ मुख-पत्र अवश्य रूप से संलग्न रहना चाहिए, जिसमें प्रश्नावली को प्रशासित करने के उद्देश्य का स्पष्ट उल्लेख किया जाना चाहिए।
2. प्रश्नावली में सम्मिलित प्रश्न आकार की दृष्टि से छोटे व बोधगम्य होने चाहिए।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1
(2) केवल 2
(3) 1 और 2
(4) न तो 1 और न ही 2

66. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. अनुसूचियाँ एक-दूसरे से एक्सक्लूसिव होती है।
2. साक्षात्कार को प्रामाणिक बनाने में अनुसूचियाँ सहायक नहीं होती है।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

67. प्रश्नावली के सम्बन्ध में क्या सत्य है?
(1) मिश्रित प्रश्नावली में मुक्त प्रश्नावली एवं प्रतिबन्धित प्रश्नावली शामिल नहीं है।
(2) प्रतिबन्धित प्रश्नावली में विचारानुसार उत्तर दिया जाता है।
(3) मुक्त प्रश्नावली में किसी एक उत्तर का चयन करना होता है।
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

68. प्रश्न करते समय साक्षात्कारकर्ता को किन बातों का ध्यान रखना होता है?
1. प्रश्न क्रमबद्ध हो।
2. प्रश्न सरल व स्पष्ट हो।
3. साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति को अपनी अभिव्यक्ति का उचित अवसर प्रदान नहीं किया जाता है।

कूट–
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) केवल 3

58.	59.	60.	61.	62.	63.	64.	65.	66.	67.	68.											
(4)	(2)	(4)	(4)	(2)	(2)	(3)	(3)	(4)	(4)	(3)											

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

69. मूल्यांकन के विषय में जो उचित है, वह है–
(1) मूल्यांकन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।
(2) छात्रों के व्यवहार सम्बन्धी सामग्री एकत्रित करने का साधन।
(3) शिक्षा के उद्देश्यों से घनिष्ठ सम्बन्ध है।
(4) उपरोक्त सभी हैं।

70. शिक्षक के कार्य मूल्यांकन का प्रमुख आधार है–
(1) परीक्षा परिणाम के आधार पर मूल्यांकन करना
(2) समाज द्वारा मूल्यांकन करना
(3) शिक्षक के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करना
(4) विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा मूल्यांकन करना

71. विद्यालय के निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति की जाँच हेतु आवश्यक है–
(1) मूल्यांकन
(2) पर्यवेक्षण
(3) शिक्षण
(4) उपर्युक्त सभी

72. **जवाहर योजना** जिसे सरकार बखूबी चला रही है, के प्रति लोगों की मनोवृत्ति जाँचने का सबसे उत्तम एवं वैज्ञानिक तरीका है–
(1) साक्षात्कार
(2) प्रश्नावली
(3) प्रयोग
(4) प्रेक्षण

73. मूल्यांकन को व्यापक तभी माना जा सकता है, जब–
(1) सभी अध्यापक मूल्यांकन करे।
(2) सभी उद्देश्य मूल्यांकित किए जाए।
(3) बच्चों के व्यक्तित्व के सभी पक्षों का मूल्यांकन हो।
(4) सम्पूर्ण विषयवस्तु का मूल्यांकन हो।

74. मूल्यांकन का उद्देश्य है–
(1) बालकों को धीमी गति से सीखने वाले एवं प्रतिभाशाली बालकों के रूप में लेबल करना।
(2) जिन बालकों को उपचारात्मक शिक्षा की आवश्यकता है, उनकी पहचान करना।
(3) अधिगम की कठिनाइयों व समस्या वाले क्षेत्रों का पता लगाना।
(4) उत्पादन जीवन जीने के लिए शिक्षा किस सीमा तक तैयार कर पाई है, का पुष्टिपोषण प्रदान करना।

75. बच्चों का मूल्यांकन होना चाहिए–
(1) बोर्ड परीक्षा द्वारा
(2) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन द्वारा
(3) गृह परीक्षा द्वारा
(4) लिखित एवं मौखिक परीक्षा द्वारा

76. कक्षा नायक (उपदेशक) द्वारा प्रयुक्त मूल्यांकन का प्रकार, जो अनुदेशन के समय सीखने के विकास में किया जाता है, कहलाता है–
(1) नैदानिक मूल्यांकन (2) फॉर्मेटिव मूल्यांकन
(3) प्लेसमेन्ट मूल्यांकन (4) संकलित मूल्यांकन

77. निम्न में से कौन सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का भाग नहीं हो सकता है?
(1) संचित अभिलेख (2) दत्त कार्य
(3) अभिभावक–शिक्षक बैठक (4) एनेकडॉटल रिकॉर्ड

78. योगात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य है–
(1) समय विशेष एवं विभिन्न कार्यों पर एक विद्यार्थी ने कितना अच्छा निष्पादित किया है, का पता लगाना।
(2) अधिगम को सुगम बनाना व ग्रेड न प्रदान करना।
(3) ऐसे विद्यार्थी का पता लगाना, जो अपने साथियों के समकक्ष सम्प्राप्ति में कठिनाई अनुभव कर रहा है।
(4) अगली इकाई के अनुदेशन से पूर्व प्रगति का पता लगाना।

79. बच्चों को सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान, वे उस कार्य को किस प्रकार से कर रहे हैं, इसकी जानकारी उन्हें–
(1) कार्य समाप्त होने के पश्चात् दी जानी चाहिए।
(2) कार्य करते समय सतत् रूप से दी जानी चाहिए।
(3) कार्य के बीच में एक बार दी जानी चाहिए।
(4) इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।

80. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 की संस्तुतियों के अनुसार कक्षा 1 एवं कक्षा 2 के विद्यार्थियों के लिए मूल्यांकन का तरीका होना चाहिए–
(1) लिखित परीक्षण के आधार पर
(2) मौखिक परीक्षण के आधार पर
(3) लिखित एवं मौखिक परीक्षण के आधार पर
(4) प्रेक्षण के आधार पर

81. ..... के अतिरिक्त निम्नलिखित सभी सीखने के रूप में आकलन को बढ़ावा देते हैं।
(1) शिक्षार्थियों को आन्तरिक पृष्ठपोषण लेने के लिए कहने
(2) अवसर लेने हेतु शिक्षार्थियों के लिए एक सुरक्षित वातावरण का निर्माण करने
(3) पढ़ाए गए विषय पर मनन करने के लिए शिक्षार्थियों को कहने
(4) जितनी सम्भावना हो शिक्षार्थियों का लगातार परीक्षण लेने

82. एक समाज वैज्ञानिक होने के नाते आप अवैध आँकड़ों के संग्रहण के लिए निम्नांकित में से किसे महत्त्वपूर्ण समझते हैं?
(1) सिर्फ प्रश्नावली को
(2) सिर्फ अनुसूची को
(3) प्रश्नावली व अनुसूची दोनों को
(4) इनमें से किसी को नहीं

69.	70.	71.	72.	73.	74.	75.	76.	77.	78.	79.	80.	81.	82.								
(4)	(1)	(1)	(2)	(3)	(4)	(2)	(2)	(3)	(1)	(2)	(4)	(4)	(3)								

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

83. प्रश्नावली की मुख्य विशेषताओं में जो सही नहीं है, वह है–
(1) प्रश्नावली द्वारा गुणात्मक तथा परिमाणात्मक प्रदत्तों का संकलन किया जाता है।
(2) प्रश्नावली में समुचित निर्देश होते हैं।
(3) प्रश्नों की प्रकृति वस्तुनिष्ठ होती है और उनके उत्तर भी वस्तुनिष्ठ होते हैं।
(4) प्रश्नावली का प्रशासन तथा निर्माण अपेक्षाकृत सरल होता है।

84. साक्षात्कार जिसे आंग्ल भाषा में इन्टरव्यू कहते हैं, इसकी उत्पत्ति **एन्टर हाई** शब्द से हुई है। **एन्टरहाई** किस भाषा का शब्द है?
(1) लैटिन भाषा का (2) ग्रीक भाषा का
(3) फ्रैंच भाषा का (4) जर्मन भाषा का

85. अनुसूची के विषय में क्या सत्य नहीं है?
1. अनुसूची समंक संकलन हेतु बहुलता से प्रयोग होने वाला एक मापक उपकरण है।
2. साधारणत अनुसूची की पूर्ति समंक संकलन करने वाला व्यक्ति स्वयं करता है।
3. विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए यह एक अविश्वसनीय उपकरण है।
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) केवल 3 (4) ये सभी

86. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. मूल्यांकन केवल मूल्य निर्धारण का दूसरा नाम नहीं है, विद्यार्थियों के सीखने के गुणात्मक स्तर को परखना केवल एक बिन्दु है।
2. अन्य निष्पत्तियाँ इस बात की ओर संकेत करती हैं कि मूल्यांकन में कुछ अनपेक्षित बातें ज्ञात हो सकती है।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1
(2) केवल 2
(3) 1 और 2
(4) न तो 1 और न ही 2

87. शिक्षा संस्थाओं के द्वारा नियोजित किए जाने वाले किसी अच्छे संस्थागत मूल्यांकन कार्यक्रम में क्या विशेषताएँ होनी चाहिए?
1. इसे सहभागिता के आधार पर किया जाना चाहिए। किसी भी अच्छे संस्थागत मूल्यांकन कार्यक्रमों में अध्यापकों, छात्रों व अभिभावकों को पूर्ण सहायता प्राप्त होती है।
2. शिक्षा के क्या उद्देश्य हैं तथा उनकी प्राप्ति का गुण या ज्ञान किस प्रकार से सम्भव है, इस बात पर समुचित ढंग से विचार करने के उपरान्त ही संस्थागत मूल्यांकन की योजना बनानी चाहिए।
3. संस्थागत मूल्यांकन कभी भी सन्तुलित नहीं होना चाहिए।
4. मूल्यांकन कार्यक्रम बनाते समय इस पर आने वाले खर्च पर अंकुश नहीं लगाना चाहिए, क्योंकि इससे कार्य प्रभावित नहीं होता है।
उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) ये सभी

88. मूल्यांकन की वैधता से तात्पर्य है–
(1) मूल्यांकन की वैधता है कि वही मापन करे, जिसके लिए उसका निर्माण हुआ है।
(2) मूल्यांकन कुशल अध्यापकों द्वारा सम्पन्न हुआ हो।
(3) मूल्यांकन पूर्णतः निष्पक्ष और आदर्श परिस्थितियों के अनुकूल हो।
(4) बालक का समग्र मूल्यांकन हो।

83.	84.	85.	86.	87.	88.			
(3)	(3)	(3)	(3)	(3)	(1)			

****

अगर आप B.Ed, D.Ed, BSTC या शिक्षण अध्यापन के क्षेत्र में पढ़ाई कर रहे हैं तो आपसे निवेदन है कि निम्नलिखित Whatsapp No. अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में जोड़ें। अगर आपका व्हाट्सएप ग्रुप नहीं बना हुआ है तो कृपया कम से कम 20 विद्यार्थी मिलकर व्हाट्सएप ग्रुप बना लें।

REET - 94604 43210
UPTET - 95301 43210
MP Samvida - 95302 43210
BTET - 95302 43210
UTET - 72209 29294
JTET - 72209 29239
HTET - 72209 29266
CGTET - 72209 28969
HPTET - 72209 28535

आपके क्लास के व्हाट्सएप ग्रुप में शिक्षा संबंधी सभी प्रतियोगी परीक्षा के पेपर्स, मॉडल पेपर्स एवं अन्य अध्ययन सामग्री भेजी जाएगी। आपका शुरू से मार्गदर्शन किया जाएगा, ताकि आप प्रतियोगी परीक्षा में अतिशीघ्र सफलता प्राप्त कर सकें।

प्रगण्य प्रकाशन द्वारा CTET एवं प्रत्येक राज्य के TET (UPTET, MP Samvida, BTET, UTET, JTET, HTET, CGTET, HPTET) के लिए मॉडल पेपर की फ्री PDF प्रकाशित की जाती है। मॉडल पेपर की फ्री PDF प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित Whatsapp No. अपने कॉलेज के क्लास ग्रुप या कोचिंग के क्लास ग्रुप या अन्य स्टडी ग्रुप में जोंडे। आपके ग्रुप में मॉडल पेपर भेज दिए जाएँगें।

REET - 94604 43210
UPTET - 95301 43210
MP Samvida - 95302 43210
BTET - 95302 43210
UTET - 72209 29294
JTET - 72209 29239
HTET - 72209 29266
CGTET - 72209 28969
HPTET - 72209 28535

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

अध्याय 17

उपलब्धि परीक्षण का निर्माण

17.1 प्रस्तावना

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में अनेकों प्रकार का ज्ञान तथा कौशल प्राप्त करता है। इस ज्ञान तथा कौशल में कितनी दक्षता व्यक्ति ने प्राप्त की है, इसका पता उस ज्ञान तथा कौशल के उपलब्धि परीक्षण से ही चलता है।

विद्यालय की विभिन्न कक्षाओं में अनेकों प्रकार के छात्र, शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते हैं। समान मानसिक योग्यताओं से सम्पन्न न होने के कारण वे समय की एक ही अवधि में विभिन्न विषयों तथा कुशलताओं में विभिन्न सीमाओं तक प्रगति करते हैं। उनकी इसी प्रगति, प्राप्ति या उपलब्धि का मापन या मूल्यांकन करने के लिए उपलब्धि परीक्षाओं की व्यवस्था की गई है।

17.2 उपलब्धि परीक्षण का अर्थ एवं परिभाषाएँ

उपलब्धि परीक्षाएँ वे परीक्षाएँ हैं, जिनकी सहायता से विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषयों और सिखाई जाने वाली कुशलताओं में छात्रों की सफलता या उपलब्धि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

उपलब्धि परीक्षाओं के अर्थ को अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ परिभाषाएँ प्रस्तुत हैं–

1. प्रेसी, रॉबिन्सन व हॉरक्स के अनुसार–

उपलब्धि परीक्षाओं का निर्माण मुख्य रूप से छात्रों के सीखने के स्वरूप और सीमा का माप करने के लिए किया जाता है।

2. गैरिसन व अन्य के अनुसार–

उपलब्धि परीक्षा, बालक की वर्तमान योग्यता या किसी विशिष्ट विषय के क्षेत्र में उसके ज्ञान की सीमा का मूल्यांकन करती हैं।

3. थॉर्नडाइक व हेगन के अनुसार–

जब हम उपलब्धि परीक्षा का प्रयोग करते हैं, तब हम इस बात का निश्चय करना चाहते हैं कि एक विशिष्ट प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त व्यक्ति ने क्या सीखा है।

17.2.1 उपलब्धि परीक्षण की विशेषताएँ

उपलब्धि परीक्षण, ज्ञान तथा कौशल के मापन के लिए होती है, इसलिये विद्यालयों से इसका सीधा सम्बन्ध होता है। इसकी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. उपलब्धि परीक्षण दि हुए ज्ञान तथा कौशल का मापन करता है।
2. उपलब्धि परीक्षण द्वारा ज्ञान तथा उपलब्धि की लब्धि ज्ञात की जाती है।
3. उपलब्धि परीक्षण में प्रश्नों की रचना उपलब्धि की मात्रा की गणना तथा व्यक्ति की प्रगति की मात्रा का मापन करने के लिए की जाती है।
4. उपलब्धि परीक्षण से वर्तमान प्रगति का पता चलता है।
5. विषयों की भिन्नता के अनुसार अलग–अलग परीक्षण बनाये जाते हैं।
6. उपलब्धि परीक्षण में अर्जित ज्ञान का मापन उसका साध्य होता है।
7. उपलब्धि परीक्षण, व्यक्ति की उपलब्धि की क्षमता का प्रदर्शन करता है।

17.3 उपलब्धि परीक्षण का उद्देश्य

साधारणतः वर्ष के अन्त में विभिन्न कक्षाओं के छात्रों के लिए उपलब्धि परीक्षाओं का आयोजन निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया जाता है–

1. बालकों की उपलब्धि से सामान्य स्तर को निर्धारित करने के लिए किया जाता है।
2. बालकों को पढ़ाये जाने वाले विद्यालय–विषयों में उनकी ज्ञान की सीमा का मापन करने के लिए किया जाता है।
3. बालकों की विभिन्न विषयों तथा क्रियाओं में वास्तविक स्थिति को ज्ञात करने के लिए किया जाता है।
4. बालकों की पढ़ने–लिखने के समान कुशलताओं में गति तथा श्रेष्ठता को निश्चित करने के लिए किया जाता है।
5. पाठ्यक्रम के लक्ष्यों तथा उद्देश्यों की प्राप्ति की और बालकों की प्रगति की जानकारी करने के लिए किया जाता है।
6. बालकों को ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में दिये गए प्रशिक्षण के परिणामों का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है।
7. बालकों की अधिगम सम्बन्धी कठिनाइयों को ज्ञात करने तथा उनका निवारण करने के लिए पाठ्यक्रमों में आवश्यक परिवर्तन करने के लिए किया जाता है।

शिक्षक के शिक्षण तथा अध्ययन की सफलता का अनुमान लगाने के लिए किया जाता है।

17.4 उपलब्धि परीक्षण के प्रकार

डगलस एवं हॉलैण्ड के अनुसार उपलब्धि परीक्षण निम्नलिखित प्रकार के होते हैं–

1. प्रमापित परीक्षण
2. शिक्षक–निर्मित परीक्षण
3. मौखिक परीक्षण
4. निबन्धात्मक परीक्षण
5. वस्तुनिष्ठ परीक्षण

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

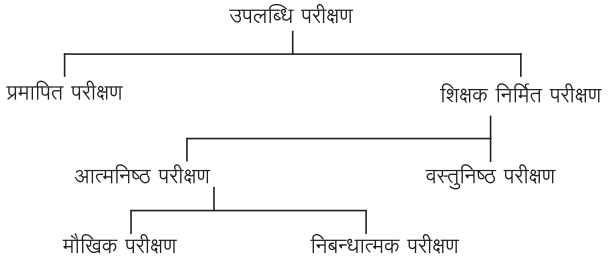

इन विभिन्न प्रकार के परीक्षणों का विवरण निम्न प्रकार प्रस्तुत है–

17.5 प्रमापित परीक्षण

प्रमापित परीक्षण आधुनिक युग की एक देन है। इनके अर्थ को स्पष्ट करते हुए थॉर्नडाइक व हेगम ने कहा है कि–

> प्रमापित परीक्षण का अभिप्राय केवल यह है कि सब छात्र समान निर्देशों और समय की समान सीमाओं के अन्तर्गत समान प्रश्नों और अनेक प्रश्नों का उत्तर देते हैं।

प्रमापित परीक्षणों के कुछ उल्लेखनीय तथ्य निम्नलिखित हैं–

1. इनका निर्माण एक विशेषज्ञ या विशेषज्ञों के समूह द्वारा किया जाता है।
2. इनका निर्माण, परीक्षण–निर्माण के निश्चित नियमों तथा सिद्धान्तों के अनुसार किया जाता है।
3. इनका निर्माण विभिन्न कक्षाओं तथा विषयों के लिए किया जाता है। एक कक्षा तथा एक विषय के लिए अनेक प्रकार के परीक्षण होते हैं।
4. जिस कक्षा के लिए जिन परीक्षणों का निर्माण किया जाता है, उनको विभिन्न स्थानों पर उसी कक्षा के सैकड़ों–हजारों बालकों पर प्रयोग करके निर्दोष बनाया जाता है या प्रमापित किया जाता है।
5. निर्माण के समय इसमें प्रश्नों की संख्या बहुत अधिक होती है, लेकिन विभिन्न स्थानों पर प्रयोग किए जाने के फलस्वरूप प्राप्त होने वाले अनुभवों के आधार पर उनकी संख्या में काफी कमी कर दी जाती है।
6. इनमें दिए हुए प्रश्नों को निश्चित निर्देशों के अनुसार निश्चित समय के अन्तर्गत करना पड़ता है। मूल्यांकन या अंक प्रदान करने के लिए भी निर्देश होते हैं।
7. इनका प्रकाशन किसी संस्था या व्यापारिक फर्म के द्वारा किया जाता है। जैसे– भारत में सेन्ट्रल इन्स्टीट्यूट ऑफ एजूकेशन, राष्ट्रीय शैक्षणिक एवं प्रशिक्षण परिषद्, जामिया मिलिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस इत्यादि ने इनको प्रकाशित किया है।

17.6 शिक्षक–निर्मित परीक्षण

शिक्षक–निर्मित परीक्षण, आत्मनिष्ठ तथा वस्तुनिष्ठ दोनों प्रकार के होते हैं। सामान्य रूप से शिक्षकों द्वारा सभी विषयों पर परीक्षणों का निर्माण किया जाता है तथा कुछ समय पूर्व तक इन परीक्षणों का रूप आत्मनिष्ठ था। भारत में अब भी इसी प्रकार के परीक्षणों का प्रचलन है, यद्यपि वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के निर्माण की दिशा में सक्रिय कदम उठाये जा रहे हैं। सब शिक्षकों में परीक्षणों के लिए प्रश्नों का निर्माण करने की समान योग्यता नहीं होती है। अतः एक ही विषय पर दो शिक्षकों द्वारा निर्मित प्रश्नों के स्तरों में अन्तर हो सकता है। इसीलिए, शिक्षक–निर्मित परीक्षणों को विश्वसनीय नहीं माना जाता है। ऐलिस ने कहा है कि–

> शिक्षक–निर्मित परीक्षणों में बहुधा कम विश्वसनीयता होती है।

प्रमापित एवं शिक्षक–निर्मित परीक्षण की तुलना

थॉर्नडाइक एवं हेगन ने प्रमापित परीक्षण को शिक्षक–निर्मित परीक्षण से श्रेष्ठतर सिद्ध करने के लिए निम्नलिखित तथ्य प्रस्तुत किए हैं–

1. प्रमापित परीक्षण को सम्पूर्ण देश के किसी भी विद्यालय की किसी भी कक्षा के लिए प्रयोग किया जा सकता है, लेकिन शिक्षक–निर्मित परीक्षण को केवल उसी विद्यालय की किसी विशेष कक्षा के लिए प्रयोग किया जा सकता है।
2. प्रमापित परीक्षण का निर्माण किसी विशेषज्ञ या विशेषज्ञों के समूह के द्वारा किया जाता है, लेकिन शिक्षक–निर्मित परीक्षण का निर्माण अध्यापक के द्वारा अकेले तथा किसी की सहायता के बिना किया जाता है।
3. प्रमापित परीक्षण में प्रयोग की जानें वाली परीक्षा–सामग्री का व्यापक रूप में पहले ही परीक्षण कर लिया जाता है, लेकिन शिक्षक–निर्मित परीक्षण में इस प्रकार का कोई परीक्षण नहीं किया जाता है।
4. प्रमापित परीक्षण में बहुत कुछ विश्वसनीयता होती है, लेकिन शिक्षक–निर्मित परीक्षण में कम विश्वसनीयता होती है। इस सम्बन्ध में थॉर्नडाइक व हेगन की सलाह है कि–

> प्रमापित परीक्षणों का ही विश्वास किया जाना चाहिए।

कुछ लेखकों ने प्रमापित परीक्षण को शिक्षक–निर्मित परीक्षण से निम्नतर सिद्ध करने के लिए निम्नलिखित कारण प्रस्तुत किए हैं, जो निम्नलिखित हैं–

1. प्रमापित परीक्षण के निर्माण के लिए बहुत समय तथा धन की आवश्यकता होती है, लेकिन शिक्षक–निर्मित परीक्षण के लिए अति अल्प समय तथा धन काफी है।
2. प्रमापित परीक्षण इस बात का मूल्यांकन नहीं कर सकता है कि कक्षा में क्या पढ़ाया जा सकता था? क्या पढ़ाया जाना चाहिए था? लेकिन शिक्षक–निर्मित परीक्षण इन दोनों बातों का मूल्यांकन कर सकता है।
3. प्रमापित परीक्षण, शिक्षक के शैक्षिक लक्ष्यों का अनुमान लगाने में असफल रहता है, लेकिन शिक्षक–निर्मित परीक्षण इन लक्ष्यों का मापन कर सकता है।
4. प्रमापित परीक्षण, अध्यापक की शैक्षिक सफलता तथा छात्रों की वास्तविक प्रगति का मूल्यांकन करने में सफल नहीं होता है, लेकिन शिक्षण–निर्मित परीक्षण देते हैं।

अतः उपरोक्त कारणों के फलस्वरूप अनेक लेखक प्रमापित परीक्षण को शिक्षक–निर्मित परीक्षण से निम्नतर स्थान देते हैं।

आज जिन परिस्थितियों में हमारे विद्यालय कार्य कर रहे हैं, उन पर विचार करके तो यही कहना उचित जान पड़ता है कि शिक्षक–निर्मित परीक्षणों का प्रयोग ही अधिक लाभदायक है। प्रमापित परीक्षणों के प्रयोग में तीन विशेष आपत्तियाँ हैं–

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

1. उनको काफी धन व्यय करके ही प्रयोग किया जा सकता है, लेकिन धन व्यय करने पर भी यह आवश्यक नहीं है कि वे उचित समय पर उपलब्ध हो जाए।
2. विद्यालय तथा छात्रों की स्थानीय आवश्यकताओं को केवल शिक्षक-निर्मित परीक्षण ही पूरा कर सकते हैं, लेकिन प्रमापित परीक्षण नहीं।
3. प्रमापित परीक्षण का भले ही सर्वोत्तम विधि से निर्माण किया गया हो, पर यह आवश्यक नहीं है कि उसमें एक विशेष अध्यापक या एक विशेष विद्यालय के सभी महत्त्वपूर्ण लक्ष्यों का समावेश हो।

17.7 मौखिक परीक्षण

एक समय ऐसा था, जब विद्यालयों तथा उच्च शिक्षा-संस्थाओं में मौखिक परीक्षाओं की प्रधानता थी, लेकिन आधुनिक युग में लिखित परीक्षाओं का प्रचलन होने के कारण इनका महत्त्व बहुत कम हो गया है। फिर भी, प्राथमिक कक्षाओं तथा उच्च कक्षाओं में विज्ञान के विषयों की प्रयोगात्मक परीक्षाओं एवं वायवा के रूप में अब भी इनका अस्तित्व शेष है। मौखिक परीक्षा का मूल्यांकन करते हुए राईटस्टोन ने कहा है कि मौखिक परीक्षा कितनी भी अच्छी क्यों न हो, पर छात्रों को अंक प्रदान करने के लिए एक निम्न साधन है। इसका महत्त्व केवल निदानात्मक साधन के रूप में और उन परिस्थितियों में है, जिनमें लिखित परीक्षाओं का प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

17.8 निबन्धात्मक परीक्षण

निबन्धात्मक परीक्षण, सर्वाधिक प्रचलित उपलब्धि परीक्षण हैं। इन्हें शिक्षक बनाता है। इनमें प्रश्नों का उत्तर निबन्ध के रूप में देना पड़ता है, इसीलिए इनको निबन्धात्मक परीक्षण कहा गया हैं। हमारे देश में मात्र निबन्धात्मक परीक्षा का ही प्रचलन है। इस परीक्षा-प्रणाली में छात्रों को कुछ प्रश्न दे दिये जाते हैं, जिनके उत्तर उनको निर्धारित समय में लिखने पड़ते हैं।

17.8.1 निबन्धात्मक परीक्षण के गुण या विशेषताएँ

निबन्धात्मक परीक्षा प्रणाली में उत्तम गुणों का इतनी बहुतायत है कि वर्षों व्यतीत हो जाने पर भी इसकी लोकप्रियता में कोई विशेष न्यूनता दिखाई नहीं पड़ती है। इस प्रणाली के उल्लेखनीय गुण निम्नलिखित है-

1. यह सब विषयों के लिए उपयोगी है

यह प्रणाली विद्यालय के सब विषयों के लिए उपयोगी है। इस तरह के एक भी विषय का संकेत नहीं दिया जा सकता है, जिसके लिए इस प्रणाली का लाभप्रद ढंग से प्रयोग नहीं किया जा सके।

2. इसमें उत्तर एवं भाव प्रकाशन की स्वतन्त्रता है

यह प्रणाली बालकों को प्रश्नों के उत्तर देने तथा उनके सम्बन्ध में अपने भावों का प्रकाशन करने की पूरी स्वतन्त्रता प्रदान करती है। इन दोनों बातों में उनके ऊपर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं होता है।

3. यह शिक्षक की सुगमता प्रदान करती है

यह प्रणाली शिक्षक के लिए अत्यधिक सुगम होती है, क्योंकि वह प्रश्नों की रचना थोड़े ही समय में तथा बिना किसी विशेष प्रयास के कर सकता है। आवश्यकता पड़ने पर वह उनको बोल सकता है या श्यामपट्ट पर लिख भी सकता है।

4. यह बालकों को सुगमता प्रदान करती है

यह प्रणाली बालकों के लिए भी सुगम होती है, क्योंकि इसमें ऐसे कोई विशेष निर्देश नहीं होते हैं, जिनको समझने में उनको किसी भी प्रकार की कठिनाई का अनुभव हो।

5. यह बालकों के तथ्यात्मक ज्ञान की परीक्षा करती है

इस प्रणाली का प्रयोग करके बालकों के तथ्यात्मक ज्ञान की बहुत अधिक सरलता से परीक्षा ली जा सकती है।

6. यह बालकों की विभिन्न योग्यताओं की परीक्षा करती है

इस परीक्षा का प्रयोग करके बालकों की लगभग सभी प्रकार की योग्यताओं की परीक्षा ली जा सकती है, जैसे- विचार-संगठन, विवेचन तथा अभिव्यक्ति, सम्बन्ध चिंतन एवं तार्किक लेखन इत्यादि।

7. यह बालकों की प्रगति का वास्तविक ज्ञान कराती है

यह प्रणाली, शिक्षक को बालकों की प्रगति का वास्तविक ज्ञान प्रदान करती है। वह उनके उत्तरों को पढ़कर उनसे सम्बन्धित विषयों में उपलब्धियों का सही ज्ञान प्राप्त कर लेता है।

17.8.2 निबन्धात्मक परीक्षण के दोष

आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान ने निबन्धात्मक परीक्षा प्रणाली के अनेक दोषों पर प्रकाश डालकर, उसकी अनुपयुक्तता प्रमाणित करने का प्रयास किया है। इनमें से मुख्य दोष निम्नलिखित हैं-

1. इसमें अंकों में विविधता होती है

इस प्रणाली में प्रदान किए जाने वाले अंकों में विविधता पाई जाती है। इस सम्बन्ध में अनेकों अध्ययन किए गए हैं। उदाहरणार्थ, स्टार्च एवं इलियट ने बताया है कि जब 142 शिक्षकों द्वारा अंग्रेजी की उत्तर-पुस्तिकाओं की जाँच की गई, तो उनके द्वारा प्रदान किए गए अंक 50 और 95 के बीच में ही थे।

2. इसमें विश्वसनीयता का अभाव होता है

इस प्रणाली में जो अंक प्रदान किए जाते हैं, उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता है। इसका कारण यह है कि अगर एक छात्र की एक ही उत्तर-पुस्तिका को दो परीक्षक जाँचते हैं, या एक ही शिक्षक कुछ समय व्यतीत होने के बाद जाँचता है, तो अंकों में अन्तर मिलता है। परीक्षा को विश्वसनीय तभी कहा जा सकता है, जब छात्र को अपने उत्तरों के लिए हमेशा समान अंक प्राप्त हो। निबन्धात्मक परीक्षा-प्रणाली को इस दृष्टिकोण से विश्वसनीय नहीं कहा जा सकता है।

3. यह सीमित प्रतिनिधित्व करती है

इस प्रणाली का सबसे प्रिय दोष यह है कि वह विषय का सीमित प्रतिनिधित्व करती है। इसका अर्थ यह है कि इसमें सम्पूर्ण विषय से सम्बन्धित प्रश्न नहीं पूछे जाते हैं। विषय के अनेक भाग होते हैं, जिस पर एक भी प्रश्न नहीं पूछा जाता है। प्रणाली की इस निर्बलता से लाभ उठाकर छात्र थोड़े से प्रश्नों का चुनाव करके रट लेते हैं। इस निर्बलता का मुख्य कारण है- प्रश्नों की सीमित सीमा। पाँच या दस प्रश्न सम्पूर्ण विषय का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते हैं।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

4. वैधता का अभाव होता है

इस प्रणाली में वैधता का स्पष्ट अभाव होता है। वैधता का अर्थ है कि परीक्षा उन गुणों, तथ्यों तथा कुशलताओं की जाँच करे, जिसकी जाँच करना उसका ध्येय होता है। अनेक अध्ययनों द्वारा यह सिद्ध किया गया है कि निबन्धात्मक परीक्षा वास्तव में विषय के ज्ञान की जाँच न करके, बालकों की भाषा, लेखन-शक्ति इत्यादि की जाँच करती है।

5. इसमें भविष्यवाणी का अभाव होता है

इस प्रणाली के परिणामों के आधार पर छात्रों के भविष्य के सम्बन्ध में किसी प्रकार का निश्चित निर्णय नहीं दिया जा सकता है। इसका कारण यह है कि अंकों की प्राप्ति रटने की शक्ति, लेखन-शक्ति, अभिव्यंजना, सुलेख, उपयुक्त भाषा एवं संयोग पर निर्भर रहती है।

6. इसमें आत्मनिष्ठता होती है

इस प्रणाली में आत्मनिष्ठता की प्रधानता पाई जाती है, जबकि अच्छे परीक्षण में वस्तुनिष्ठता का होना आवश्यक होता है। इसमें उत्तरों के अंकन में परीक्षक के विचारों, धारणाओं, मानसिक स्तर, मनोदशा, अभिवृत्तियाँ इत्यादि का बहुत प्रभाव पड़ता है। इसमें उत्तर-पुस्तिकाओं के अंकन के लिए वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं के समान कोई उत्तर-तालिका नहीं होती है, जिसको आधार बनाकर सभी परीक्षक, उत्तर-पुस्तिकाओं का अंकन कर सकें। कुछ परीक्षक सहृदय होने के कारण अधिक अंक प्रदान करते हैं, कुछ कठोर होने के कारण कम, कुछ आलसी तथा लापरवाह होने के कारण उत्तरों को पढ़ते ही नहीं हैं, बल्कि अव्यवस्थिति ढंग से अंक प्रदान करते हैं। इन सब कारणों के फलस्वरूप इस प्रणाली में आत्मनिष्ठा की मात्रा अधिक मिलती है।

7. इसमें अंकन में अधिक समय लगता है

इस प्रणाली में छात्रों द्वारा दिए जाने वाले उत्तर काफी लम्बे होते हैं। उनको आद्योपान्त पढ़कर ही उनका उचित ढंग से मूल्यांकन किया जा सकता है। इसके लिए न केवल अधिक समय वरन् अधिक शक्ति की भी आवश्यकता है। स्टालनकर ने कहा है कि-

> भली प्रकार लिखे गए निबन्धात्मक प्रश्न का ठीक मूल्यांकन दीर्घकालीन और कठिन कार्य है और इसे उचित प्रकार से करने के लिए बुद्धि, परिश्रम और धैर्य की आवश्यकता है।

निबन्धात्मक परीक्षा-प्रणाली के गुण भी हैं तथा दोष भी। इन पर सम्यक् दृष्टि से विचार करके हम यही कह सकते हैं कि इनकी उपादेयता को चुनौती नहीं दी जा सकती है। इस सम्बन्ध में ऐलिस ने कहा है कि-

> निबन्धात्मक परीक्षाएँ, छात्रों को मौलिकता का अवसर देती हैं और उनकी तर्क-शक्ति की जाँच करने के लिए वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं की अपेक्षा इनका प्रयोग साधारणतः अधिक सरल है।

17.8.3 निबन्धात्मक परीक्षण में सुधार के लिए सुझाव

निबन्धात्मक परीक्षण व्यक्ति की स्मृति, तर्क, चिन्तन तथा कल्पना शक्ति का मापन करते हैं। ये आज के समय की बड़ी आवश्यकता है। इन परीक्षण के दोषों को निम्नलिखित प्रकार से दूर किया जा सकता है-

1. प्रश्न रचना

निबन्धात्मक परीक्षण का सबसे बड़ा दोष यह है कि इसमें प्रश्न प्रायः उद्देश्य आधारित नहीं बन पाते हैं, क्योंकि क्या, कब, कहाँ और कैसे की सम्भावनाओं का निराकरण खोजती हैं। इसमें उद्देश्य के अनुसार प्रश्न रचना की जानी चाहिए। पाठ्यक्रम का ध्यान रखना चाहिए। प्रश्नों की संख्या अधिक हो तथा उसका स्वरूप भी बदलना आवश्यक होता है। प्रश्न छोटे तथा वस्तुपरक प्रकृति के हो तथा सभी प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य हो।

2. मूल्यांकन प्रक्रिया

मूल्यांकन प्रक्रिया इस तरह हो, जिसमें किसी तरह का पूर्वाग्रह न हो। उत्तर संक्षिप्त तथा सटीक हो। अच्छे बुरे उत्तरों का मापदण्ड निर्धारित कर लिया जाए तथा पाँच श्रेणियों में मूल्यांकन मापदण्ड बनाया जाए। छात्र का नाम उत्तर पुस्तिका में नहीं हो। वैसे तो आजकल, मिश्रित प्रणाली अधिक उपयोग में लाई जा रही है।

17.9 वस्तुनिष्ठ परीक्षण

वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का विकास करने का सराहनीय कार्य जे. एम. राइस का है। उसने इन परीक्षणों की रचना, प्रयोग और अंकन इत्यादि के सम्बन्ध में अनेकों मौलिक कार्य किए हैं। उसके कार्यों से प्रोत्साहित होकर स्टार्च व इलियट ने अनेक अध्ययन करके इन परीक्षणों की उपयोगिता को सिद्ध किया है। फलस्वरूप इनके प्रयोग पर अधिकाधिक बल दिया जाने लगा है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षा, वह परीक्षा है, जिनमें विभिन्न परीक्षक स्वतन्त्रापूर्वक कार्य करने के बाद अंकों के सम्बन्ध में एक ही निष्कर्ष पर पहुँचते हैं या समान उत्तरों के लिए समान अंक प्रदान करते हैं। गुड का कहना है कि-

> वस्तुनिष्ठ परीक्षा साधारणतः सत्य-असत्य उत्तर, बहुसंख्यक चुनाव, मिलान या पूरक प्रकार के प्रश्नों पर आधारित होती है, जिसके सही उत्तरों का तालिका की सहायता से अंकन किया जाता है। यदि कोई तालिका के विपरीत होता है, जो उसे गलत माना जाता है।

17.9.1 वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के प्रकार

वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के मुख्य प्रकार निम्नलिखित हैं-

1. सरल पुनः स्मरण टेस्ट

इस टेस्ट के अन्तर्गत परीक्षार्थी को प्रश्नों के उत्तर स्वयं स्मरण करके लिखने पड़ते हैं। जैसे-

निर्देश- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके समक्ष दिए हुए कोष्ठकों में लिखिए-

1. भारत कब स्वतन्त्र हुआ? (.....)
2. उत्तर प्रदेश के राज्यपाल कौन हैं? (.....)
3. भारत के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे? (.....)
4. रामायण की रचना किसने की थी? (.....)

2. सत्य-असत्य टेस्ट

इस टेस्ट के अन्तर्गत परीक्षार्थी को **सत्य** या **असत्य** में उत्तर देने पड़ते हैं। जैसे-

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

निर्देश– निम्नलिखित कथन अगर सही हो, तो **सत्य** तथा गलत हो, तो **असत्य** को रेखांकित कीजिए–

1. शिवाजी का जन्म 1605 में हुआ था। सत्य/असत्य
2. गाँधी जी की मृत्यु बम्बई में हुई थी। सत्य/असत्य
3. अमेरिका की खोज कोलम्बस ने की थी। सत्य/असत्य
4. कामायनी के रचयिता जयशंकर प्रसाद थे। सत्य/असत्य

3. बहुसंख्यक चुनाव टेस्ट

इस टेस्ट के अन्तर्गत परीक्षार्थी को दिए हुए अनेक उत्तरों में से सही उत्तर का चुनाव करना पड़ता है। जैसे–

निर्देश– निम्नलिखित कथनों के अनेक उत्तर दिये हुए हैं, जिनमें एक सही है। सही उत्तर को रेखांकित कीजिए–

1. पंजाब की राजधानी (दिल्ली/लखनऊ/चंडीगढ़/जयपुर) है।
2. अकबर ने (ईसाई धर्म/दीनइलाही/बौद्ध धर्म/जैन धर्म) चलाया था।
3. महात्मा गाँधी की मृत्यु (1952/1947/1948/1950) में हुई थी।
4. भारत में प्रधानमंत्री के पद पर (श्री राजीव गाँधी/श्री मनमोहन सिंह/श्री नरेन्द्र मोदी) सुशोभित हैं।

4. मिलान टेस्ट

इस टेस्ट के अन्तर्गत परीक्षार्थी को दो पदों में मिलान करके कोष्ठक में सही पद लिखना पड़ता है।

निर्देश– नीचे कुछ घटनाएँ दी हुई हैं। उनके सामने अव्यवस्थित रूप से उनसे सम्बन्धित तिथियाँ दी हुई हैं। प्रत्येक कोष्ठक में सही तिथि लिखिए–

1. पानीपत का प्रथम युद्ध 1784 ई. (.....)
2. राणा प्रताप की मृत्यु 1627 ई. (.....)
3. शिवाजी का जन्म 1597 ई. (.....)
4. पिट का इण्डिया बिल 1526 ई. (.....)

5. पूरक टेस्ट

इस टेस्ट के अन्तर्गत परीक्षार्थी को वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति करनी पड़ती है। जैसे–

निर्देश– निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. भारत के उपराष्ट्रपति ..... हैं।
2. उत्तर प्रदेश की राजधानी ..... है।
3. द्वितीय विश्वयुद्ध ..... ई. में हुआ था।
4. गीतांजलि के लेखक ..... थे।

17.9.2 वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के गुण तथा विशेषताएँ

अपने गुणों या विशेषताओं के कारण ही वस्तुनिष्ठ परीक्षा–प्रणाली के प्रचलन में दिन–प्रतिदिन लगातार वृद्धि होती चली जा रही है। हम यहाँ इनका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं–

1. इसमें वैधता होती है

वैधता इस प्रणाली का एक मुख्य गुण है। यह उसी निर्धारित योग्यता का माप करती है, जिसके लिए इसका निर्माण किया जाता है।

2. इसमें वस्तुनिष्ठता होती है

इस प्रणाली में वस्तुनिष्ठता इतनी अधिक होती है कि अंक प्रदान करने के समय परीक्षक के व्यक्तिगत निर्णय, विचार, धारणा, मानसिक स्तर, मनोदशा इत्यादि के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता है।

3. इसमें विश्वसनीयता होती है

इस प्रणाली में विश्वसनीयता अपनी चरम सीमा पर पाई जाती है। इसका कारण यह है कि चाहे कोई भी व्यक्ति अंक प्रदान करे, उनमें किसी भी प्रकार का अन्तर नहीं होता है।

4. इसमें विभेदीकरण होता है

इस प्रणाली की एक मुख्य विशेषता है–इसकी विभेदीकरण करने की क्षमता। इसका अर्थ यह है कि प्रतिभाशाली तथा मन्दबुद्धि छात्रों के भेद को स्पष्ट कर देती है।

5. इसमें विस्तृत प्रतिनिधित्व होता है

इस प्रणाली में प्रत्येक प्रश्न–पत्र में प्रश्नों की संख्या इतनी अधिक होती है कि विषय का कोई भी अंक अछूता नहीं रह जाता है। इस तरह यह प्रणाली विषय का विस्तृत प्रतिनिधित्व करती हैं

6. इसमें धन की बचत होती है

इस प्रणाली में इतना कम लिखना पड़ता है कि साधारणतया दो–तीन पृष्ठों की उत्तर–पुस्तिकाएँ काफी होती हैं। अतः इस प्रणाली का प्रयोग करने से धन की बचत होती है।

7. इसमें समय की बचत होती है

इस प्रणाली में छात्र कम समय में बहुत से प्रश्नों का उत्तर देते हैं। परीक्षकों को भी उत्तर पुस्तिकाओं को जाँचने में कम समय लगता है। इस तरह छात्रों तथा परीक्षकों–दोनों के समय की बचत होती है।

8. इसमें एक संक्षिप्त उत्तर देना पड़ता है

इस प्रणाली में एक प्रश्न का केवल एक ही संक्षिप्त उत्तर हो सकता है। अतः छात्रों को अपने उत्तरों के सम्बन्ध में किसी प्रकार का भ्रम नहीं रह सकता है।

9. इसमें उत्तर की सरलता होती है

इस प्रणाली में उत्तर देना बहुत ही आसान होता है। इसका कारण यह है कि छात्र **हाँ या नहीं** लिखकर **सत्य या असत्य** में से एक पर निशान लगाकर, एक या दो शब्दों को रेखांकित करके तथा इसी प्रकार के अन्य सरल कार्य करके उत्तर दे सकते हैं।

10. इसमें छात्रों को सन्तोष प्राप्त होता है

इस प्रणाली में छात्रों को ठीक अंक मिलते हैं। इससे उनको न केवल सन्तोष ही प्राप्त होता है, बल्कि उनको अधिक परिश्रम करने की प्रेरणा भी मिलती है।

11. इसमें छात्रों की उत्तर पुस्तिका को जाँचने में कम समय लगता है

इस प्रणाली में उत्तर–पुस्तिकाओं को जाँचने में इतना कम समय लगता है कि वे शीघ्र ही छात्रों को लौटा दी जाती हैं। छात्र अपनी अशुद्धियों से अवगत होकर उनके सम्बन्ध में शिक्षक से विचार विमर्श कर लेते हैं। इस तरह यह प्रणाली छात्रों के लिए बहुत उपयोगी है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

12. इसमें अंकों में समानता होती है

इस प्रणाली में सब छात्रों को सब परीक्षकों से समान अंक प्राप्त होते हैं। अतः उनके अंकों में पूर्ण समानता होती है।

13. इसमें अंकन में सरलता होती है

इस प्रणाली में अंकन, उत्तरों की तालिका की सहायता से किया जाता है। अतः अंकन का कार्य एकदम सरल होता है तथा समय भी कम लगता है।

14. इसमें रटने का अन्त हो जाता है

यह प्रणाली रटने की प्रथा का अन्त करती है, क्योंकि इस प्रणाली में कुछ प्रश्नों के उत्तरों को रट लेने से ही काम नहीं चलता है। अतः छात्र रटने के बजाय विषय-वस्तु को ध्यान से पढ़कर स्मरण करते हैं।

15. इसमें ज्ञान की वास्तविक जाँच होती है

इस प्रणाली में छात्रों को अति संक्षिप्त उत्तर देने पड़ते हैं। अतः वे अपनी अज्ञानता को भाषा के आवरण में नहीं छिपा पाते हैं। इस तरह यह प्रणाली ज्ञान की वास्तविक जाँच करती है।

17.9.3 वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के दोष

वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के निरन्तर प्रयोग से इनमें कुछ दोष इस तरह उभर कर सामने आ गए हैं, जिनके कारण अनेकों शिक्षाविद् इनको छात्रों के लिए अहितकर समझने लगे हैं। इस प्रकार के कुछ दोष निम्नलिखित हैं-

1. यह अनुमान को प्रोत्साहन देता है

ये परीक्षण, छात्रों में अनुमान लगाने की अवांछनीय प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देते हैं। वे बुद्धि का प्रयोग नहीं करके केवल अनुमान से सत्य या असत्य पर चिह्न लगा देते हैं तथा शब्दों को रेखांकित कर देते हैं।

2. इसमें भाषा व शैली की दुर्बलता होती है

इन परीक्षणों का भाषा तथा शैली से कोई प्रयोजन नहीं होता है। अतः छात्र इन बातों की ओर जरा भी ध्यान नहीं देते हैं। फलस्वरूप, उनकी भाषा तथा शैली हमेशा के लिए दुर्बल हो जाती है।

3. इसमें भाव-प्रकाशन की असमर्थता होती है

ये परीक्षण, छात्रों की अभिव्यंजना-शक्ति का विकास नहीं कर पाते हैं। अतः वे अपने भावों का प्रकाशन करने में असमर्थ सिद्ध होते हैं।

4. इसमें श्रेष्ठ मानसिक शक्तियों की जाँच असम्भव होती है

इन परीक्षणों द्वारा श्रेष्ठ मानसिक शक्तियों की जाँच असम्भव होती है। उदाहरणार्थ, इन परीक्षणों में तर्क चिन्तन, मौलिक विचार, सृजनात्मक कल्पना तथा विश्लेषणात्मक शक्तियों की जाँच का कोई स्थान नहीं होता है।

5. इसमें केवल तथ्यात्मक ज्ञान की जाँच होती है

इन परीक्षणों द्वारा केवल तथ्यात्मक ज्ञान पर बल दिया जाता है। अतः इसके अन्तर्गत केवल इसी ज्ञान की जाँच की जा सकती है।

6. इसमें विवादग्रस्त तथ्यों एवं समस्याओं की अवहेलना होती है

साहित्य, इतिहास तथा सामाजिक विज्ञान में अनेकों विवादग्रस्त तथ्य तथा समस्याएँ होती हैं तथा इनको अत्यधिक महत्त्वपूर्ण समझा जाता है, क्योंकि वस्तुनिष्ठ परीक्षणों में प्रश्नों के उत्तर सन्देहपूर्ण नहीं हो सकते हैं। इसलिए इन महत्त्वपूर्ण विवादग्रस्त तथ्यों तथा समस्याओं को हमेशा के लिए छोड़ दिया जाता है। फलस्वरूप, छात्रों की तर्क तथा चिंतन शक्तियाँ अविकसित ही रह जाती हैं।

7. इसमें अधिक धन की आवश्यकता होती है

वस्तुनिष्ठ परीक्षणों में प्रश्नों की संख्या बहुत अधिक होती है। इन प्रश्नों को बोलना या श्यामपट्ट पर लिखना असम्भव होता है। अतः हर बार इनकी उतनी ही प्रतियाँ छपवानी पड़ती हैं, जितने कि छात्र होते हैं। इसके लिए काफी मात्रा में धन की आवश्यकता पड़ती है।

8. इसमें शिक्षक पर अत्यधिक भार होता है

ये परीक्षण, शिक्षक पर अत्यधिक भार डालते हैं। छोटे उत्तरों वाले प्रश्नों का निर्माण करने में उसे काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा इनकी संख्या भी बहुत अधिक होती है। अतः इसका अधिकांश समय इन प्रश्नों की रचना में व्यतीत हो जाता है।

17.9.4 वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का योगदान

स्किनर का विचार है कि अपनी सीमाओं के बावजूद वस्तुनिष्ठ परीक्षणों ने शिक्षा को चार रूपों में अपूर्व योगदान दिया है-

1. इन परीक्षणों ने छात्रों में वैयक्तिक भेदों की उपस्थिति पर बल देने वाले साधनों के रूप में काम किया है।
2. इन्होंने छात्रों की शक्तियों तथा उपलब्धियों का अधिक उत्तम वर्गीकरण करने की विधि प्रस्तुत की है।
3. इन्होंने छात्रों के बारे में शिक्षकों के अति त्वरित, अति संकुचित तथा अति वैयक्तिक निर्णयों पर अंकुश लगा दिया है।
4. जैसा कि स्किनर ने कहा है कि-

> ऐसे परीक्षणों के बिना जिन पर अंक वस्तुनिष्ठ दृष्टि से दिए जाते हैं, बच्चों और युवकों के मानसिक और शैक्षिक विकास पर बहुत सा ऐसा अनुसन्धान नहीं हो पाता, जिसने शिक्षा की प्रक्रिया पर प्रभाव डाला है।

17.10 उपलब्धि परीक्षाओं के उपयोग

थॉर्नडाइक एवं हेगन ने विद्यालय में उपलब्धि परीक्षाओं के अनेक उपयोगों का वर्णन किया है, जो निम्नलिखित है-

1. इसमें वर्गीकरण होता है

इन परीक्षाओं में छात्रों को जो अंक प्राप्त होते हैं, उनके मानसिक स्तरों का सहज रूप से ही अनुमान लगाया जा सकता है। अतः उन्हें शिक्षण के लिए अपने मानसिक स्तरों के अनुकूल वर्गों में स्थान दिया जा सकता है।

2. इसमें श्रेणी-विभाजन होता है

ये परीक्षाएँ, छात्रों की योग्यताओं का मूल्यांकन करने की सबसे उत्तम एवं निर्दोष विधि है। अतः इसका प्रयोग करके छात्रों को अति उत्तम ढंग से विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

3. इसमें प्रेरणा होती है

ये परीक्षायें, छात्रों को प्रेरणा प्रदान करने में अति सफल सिद्ध हुई हैं। उनको

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से परीक्षाफलों को सुनाकर या परीक्षाफलों के चार्ट दिखाकर अधिक अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

4. इसमें व्यक्तिगत शिक्षण होता है

इन परीक्षाओं की सहायता से कुशाग्र-बुद्धि छात्रों की समय से पूर्व कक्षोन्नति की जा चुकी होती है तथा मन्द-बुद्धि छात्रों को अधिक कार्य देकर कक्षा के सामान्य स्तर पर लाया जा सकता है।

5. इसमें व्यक्तिगत सहायता दी जा सकती है

इन परीक्षाओं का प्रयोग करके सामान्य प्रक्रिया, मन्द-बुद्धि तथा विभिन्न विषयों में विशेष योग्यता वाले छात्र का आसानी से चुनाव करके उनको उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार सहायता दी जा सकती है।

6. इसमें छात्रों को परामर्श दिया जाता है

ये परीक्षाएँ, छात्रों की विशिष्ट रूचियों तथा कार्य-क्षमताओं का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करती हैं। अतः इनके आधार पर छात्रों को भावी अध्ययन के सम्बन्ध में परामर्श देकर उनको लाभान्वित किया जा सकता है।

7. इसमें छात्रों की कठिनाई का निदान किया जाता है

ये परीक्षाएँ, छात्रों की सामान्य कठिनाइयों का ज्ञान प्रदान करती है। यह ज्ञान प्राप्त हो जाने पर उनका निवारण किया जा सकता है तथा इस तरह छात्रों की प्रगति में प्रत्यक्ष योगदान दिया जा सकता है।

8. इसमें शैक्षिक निर्देशन दिया जा सकता है

इन परीक्षाओं में छात्रों द्वारा प्राप्त किए गए अंकों के पूर्व तथा वर्तमान अभिलेखों का अध्ययन करके उनको उन विषयों को नहीं लेने का निर्देशन किया जा सकता है, जिनमें उनकी उपलब्धियाँ अधिक निम्न होती हैं।

9. इसमें अध्यापक के कार्य का परीक्षण होता है-

उपलब्धि-परीक्षाएँ एक प्रकार से शिक्षक के कार्य का परीक्षण करती है, उदाहरणार्थ अगर किसी परीक्षा में अधिकांश छात्रों को कम अंक प्राप्त होते हैं, तो इसका अर्थ यह है कि अध्यापक की शिक्षक-विधि दोषपूर्ण थी या शिक्षण-सामग्री में कोई त्रुटि अवश्य थी। सम्भवतः अध्यापक की शिक्षक-विधि, पाठ्य विषय या शिक्षा-सामग्री, छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल नहीं थी। इसलिए उसने शिक्षण-सामग्री की स्पष्ट व्याख्या नहीं की। इस तरह के और भी अन्य कारण हो सकते हैं। अतः उपलब्धि परीक्षाएँ, अध्यापक के कार्य का परीक्षण करती हैं। इस प्रसंग में कोलेसनिक ने कहा है कि-

> बुद्धिमान अध्यापक को परीक्षाओं को अपने स्वयं के कार्य का परीक्षण समझना चाहिए।

यह बड़ा खेद का विषय है कि आजादी के आज 50 वर्ष बीतने पर भी उपलब्धि परीक्षणों के क्षेत्र में या यूँ कहा जाय कि परीक्षा के क्षेत्र में कोई विशेष प्रगति नहीं कर पाए हैं। हम ईमानदारी के साथ यह नहीं कह सकते हैं कि हमारी उपलब्धि परीक्षाएँ तथा मूल्यांकन की तकनीक छात्रों के साथ न्याय कर पा रही है। कितने इस तरह के विद्यालय हैं, जहाँ इन परीक्षणों के प्राप्तांकों का लाभ उठाया जाता है।

शिक्षा मनोवैज्ञानिकों तथा शिक्षाशास्त्रियों को इस दिशा में विचार करना अति आवश्यक है।

17.11 उत्तम परीक्षण का निर्माण एवं विशेषताएँ

परीक्षण किसी भी योग्यता, क्षमता तथा उपलब्धि के मापन का एक सर्वोत्तम उपकरण होता है। अगर उपकरण सार्थक व प्रामाणिक है तथा उस पर देश, काल तथा परिस्थिति का प्रभाव नहीं पड़ता है, तो उसे उत्तम परीक्षण कहा जाता है।

गत वर्षों में शिक्षकों ने विभिन्न विधियों का प्रयोग करके छात्रों की उपलब्धियों का मूल्यांकन करने में बहुत अधिक प्रगति की है। इस कार्य में उन्होंने वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का बहुत अधिक कुशलता से प्रयोग किया है। फिर भी उनकी मूल्यांकन की विधियों को पूर्णतया निर्दोष नहीं कहा जा सकता है। यह तभी सम्भव है, जब वे स्वनिर्मित परीक्षणों का प्रयोग न करके, प्रमापित शैक्षिक परीक्षणों को काम में लाए, क्योंकि इनकी अपनी कुछ खास विशेषताएँ होती है। इस सम्बन्ध में डगलस व हॉलैण्ड ने कहा है कि-

> उत्तम परीक्षा में अनेक विशेषताओं का होना आवश्यक है और ये विशेषताएँ प्रत्येक परीक्षण के निर्माण के आधारभूत सिद्धान्त हो जाते हैं।

अब हम एक उत्तम परीक्षण की विशेषताओं या उसके निर्माण के सिद्धान्तों पर निम्नलिखित रूप से विचार करेंगे-

1. इसमें वैधता होती है

उत्तम परीक्षण में वैधता का गुण या विशेषता अधिक होती है। इसका अर्थ यह है कि परीक्षण को बालक की उसी योग्यता की जाँच करनी चाहिए, जिसकी जाँच करने के लिए उसे बनाया गया है। वैधता का विस्तृत विवेचन अध्याय में आगे किया गया है।

2. इसमें विश्वसनीयता होती है

उत्तम परीक्षण में विश्वसनीयता का गुण अधिक होता है। इसके विभिन्न पक्षों का विस्तृत विवेचन अध्याय में आगे किया गया है।

3. इसमें व्यावहारिकता होती है

उत्तम परीक्षण में व्यावहारिकता या सफलतापूर्वक प्रयोग किए जाने का गुण होता है। इसका अर्थ यह होता है कि परीक्षण के लिए विशेष प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति, विशेष तैयारी तथा सामग्री एवं अधिक समय की आवश्यकता नहीं होती है। अतः उसके प्रयोग में किसी भी प्रकार की कठिनाई नहीं होती है।

4. इसमें निश्चित उद्देश्य होता है

उत्तम परीक्षण में निश्चित उद्देश्य का गुण होता है। ये उद्देश्य उस विषय या पाठ्यक्रम का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने के बाद निश्चित किए जाते हैं, जिसके लिए परीक्षण का निर्माण किया जाता है।

5. इसमें सरलता होती है

उत्तम परीक्षण में सरलता का गुण होता है। दूसरे शब्दों में प्रश्न, निर्देश तथा अंक देने की विधियाँ इतनी आसान होती हैं कि परीक्षक तथा परीक्षार्थी उनको अति सरलता से समझ जाते हैं। अतः किसी प्रकार की त्रुटि की आशंका नहीं रहती हैं।

6. इसमें वस्तुनिष्ठता होती है

उत्तम परीक्षण में वस्तुनिष्ठता का गुण विशेष रूप से पाया जाता है। इस परीक्षण में बालक, प्रश्नों को निश्चित निर्देशों के अनुसार करते हैं तथा परीक्षक अंक-तालिका की सहायता से अंक देता है। अतः यह परीक्षण पूर्णरूप से निष्पक्ष

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

होता है। इस पर विद्यार्थी की जांच तथा परीक्षक की मनोदशा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

7. इसमें व्यापकता होती है

उत्तम परीक्षण में व्यापकता का गुण पाया जाता है। इसका अर्थ होता है बालकों की जिस योग्यता का माप किया जाता है, उसके सब पहलुओं से सम्बन्धित प्रश्न होते हैं। इस तरह का कोई भी महत्त्वपूर्ण पहलू नहीं होता है, जिस पर प्रश्न नहीं हों। अतः परीक्षण एकांगी नहीं होकर व्यापक होता है।

8. इसमें रोचकता होती है

उत्तम परीक्षण में रोचकता का गुण होता है। इसी गुण के कारण बालक इसमें पूर्ण तन्मयता से कार्य करते हैं। फलस्वरूप इसके परिणाम अशुद्ध नहीं होने पाते हैं।

9. इसमें मितव्ययता होती है

उत्तम परीक्षण में मितव्ययता का गुण होता है। इसमें किसी विशेष यन्त्र या सामग्री की आवश्यकता नहीं होने के कारण व्यय का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। बालक कागज पर छपे हुए प्रश्नों के उत्तर कलम या पेन्सिल का प्रयोग करके दे सकता है।

10. इसमें सुविधा होती है

उत्तम परीक्षण सुविधाजनक होता है। इसका अर्थ यह होता है कि इसके लिए किसी विशेष व्यवस्था की आवश्यकता नहीं होती है। यह कम स्थान तथा कम समय में अधिक से अधिक बालकों के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

11. इसमें विभेदीकरण होता है

उत्तम परीक्षण में विभेदीकरण का गुण अनिवार्य रूप से विद्यमान रहता है। दूसरे शब्दों में यह परीक्षण प्रतिभाशाली तथा मन्दबुद्धि बालकों में अन्तर करता है। इस उद्देश्य से इसके सब प्रश्न कठिन नहीं होते हैं, क्योंकि उनको केवल प्रतिभाशाली बालक ही कर सकते हैं। इसमें सरल प्रश्न भी होते हैं, ताकि मन्दबुद्धि बालकों को भी उनको करने का अवसर प्राप्त हो सके।

12. इसमें प्रमापितता होती है

उत्तम परीक्षण प्रमापित होता है। इसका अर्थ यह होता है कि परीक्षण में दिए जाने वाले प्रश्नों, निर्देशों, परीक्षा लेने की विधियों तथा अंक देने के लिए ढंगों को पहले से निश्चित कर लिया जाता है तथा यह जाँच कर ली जाती हैं कि ये सब बात ठीक हैं या नहीं।

13. इसमें सामान्य स्तर होता है

उत्तम परीक्षण का एक या अधिक सामान्य स्तर होता है। परीक्षण-निर्माता पहले ही इस बात का निश्चय कर लेता है कि बालकों की किस योग्यता में किस स्तर के होने की आशा की जा सकती है। सामान्य स्तर पहले से निश्चित होने के कारण इस बात का सुगमता से ज्ञान हो जाता है कि बालक की मानसिक आयु इस स्तर से कम, अधिक या बराबर है।

14. इसमें कठिनाई का क्रम सरल से कठिन की ओर चलता है

उत्तम परीक्षण में प्रश्नों का क्रम सरल से कठिन की ओर चलता है। परीक्षार्थी प्रारम्भिक प्रश्नों को सरल पाता है, पर जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता है, वैसे-वैसे प्रश्न अधिक से अधिक कठिन होते चले जाते हैं।

17.12 वैधता

वैधता एक अच्छे परीक्षण की तकनीकी विशेषता होती है। सम्भवतः वैधता परीक्षण की सबसे प्रमुख और अनिवार्य विशेषता या गुण है। यदि परीक्षण वैध नहीं होगा, तो परीक्षण द्वारा प्राप्त निष्कर्ष या परिणाम भी वैध नहीं होंगे। किसी भी परीक्षण का निर्माण करने के पश्चात् यह आवश्यक नहीं कि उसका प्रमापीकरण किया जाए, परन्तु उसकी वैधता को ज्ञात करना अत्यन्त आवश्यक है।

परीक्षण का निर्माण किसी न किसी उद्देश्य को दृष्टि में रखकर किया जाता है। जिस उद्देश्य के लिए परीक्षण का निर्माण किया गया है यदि उस उद्देश्य की पूर्ति परीक्षण द्वारा हो रही है, तो परीक्षण वैध है और यदि नहीं हो रही है, तो परीक्षण अवैध है।

17.12.1 वैधता का अर्थ

वैधता से तात्पर्य है कि कोई अमुक परीक्षण कितनी शुद्धता और सार्थकता से परीक्षण के उन विशिष्ट एवं सामान्य उद्देश्यों का मापन करता है, जिनके लिए उसका निर्माण किया गया है। दूसरे शब्दों में, वैधता का अर्थ यह है कि परीक्षण में बालक की उसी योग्यता की जाँच की जाए, जिसकी जाँच करने के लिए उसे बनाया गया है। वैधता के अर्थ पर प्रकाश डालते हुए प्रेसी, रॉबिन्सन व हॉरक्स ने कहा है कि–

> परीक्षण में वैधता तभी होती है, जब वह वास्तव में उसी बात का मापन करता है, जिसके मापन की उससे आशा की जाती है।

वैधता के अर्थ को हम उदाहरण द्वारा अच्छी तरह स्पष्ट कर सकते हैं। हम फुटरूल से लम्बाई नाप सकते हैं, गोलाई नहीं। इसी तरह, हम इतिहास के टेस्ट से बालक के इतिहास के ज्ञान की जाँच कर सकते हैं, उसके भूगोल के ज्ञान की नहीं। इतना ही नहीं, इतिहास का टेस्ट इस प्रकार निर्मित किया जाना चाहिए कि उससे बालक के इतिहास सम्बन्धी ज्ञान का मापन किया जा सके, न कि उसकी पढ़ने की गति तथा कुशलता का। तभी इतिहास के टेस्ट से वैधता का वास्तविक गुण प्रकट हो सकता है।

17.12.2 वैधता की परिभाषाएँ

वैधता का प्रत्यय कठिन होने के कारण इसे परिभाषित करना अत्यन्त कठिन कार्य है। कुछ विद्वानों ने वैधता को निम्न शब्दों में परिभाषित करने का प्रयास किया हैं–

1. फ्रीमैन के अनुसार–

> वैधता का सूचकांक उस मात्रा को व्यक्त करता है, जिस मात्रा तक एक परीक्षण उस तथ्य को मापता है, जिसके मापन हेतु यह बनाया गया हो, जबकि उसकी तुलना किसी स्वीकृति कसौटी से की जाती है।

2. क्रॉनबैक के अनुसार–

> किसी परीक्षण की वैधता उसकी वह सीमा है, जिस सीमा तक वह, वही मापता है, जिसके लिए उसका निर्माण किया गया है।

3. घिसेली के अनुसार–

> शायद वैधता की सबसे सामान्य परिभाषा यह है कि एक परीक्षण किस सीमा तक प्रस्ताविक उद्देश्यों का मापन करता है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

4. गुलिक्सन के अनुसार–

किसी कसौटी के साथ परीक्षण का सह–सम्बन्ध ही वैधता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वैधता और परीक्षण के उद्देश्य में घनिष्ठ सम्बन्ध है। अतः परीक्षण की वैधता सदैव उद्देश्यों पर निर्भर रहती है। यदि परीक्षण वैध नहीं है, तो उन उद्देश्यों की प्राप्ति कभी नहीं हो सकती, जिन उद्देश्यों के लिए उसका निर्माण किया गया है।

17.12.3 वैधता के प्रकार

क्लासमियर एवं गुडविन के अनुसार, वैधता निम्नलिखित चार प्रकार की होती है, जिनमें से उत्तम परीक्षण में कम से कम एक का होना अनिवार्य होता है–

1. विषय–वस्तु की वैधता

अगर परीक्षण में अध्यापक द्वारा पढ़ाई गई विषय–वस्तु का पूर्ण या पर्याप्त सामवेश है, तो उसमें विषय–वस्तु की वैधता होती है।

2. पूर्व–कथन की वैधता

यदि परीक्षण में बालक द्वारा प्राप्त किये गए अंक, छात्र के विषय में यह भविष्यवाणी करते हैं कि वह आगे चलकर क्या करेगा, तो उसमें पूर्व–कथन की वैधता होती है।

3. निर्माण की वैधता

अगर परीक्षण में बालक द्वारा प्राप्त किए गए अंक उतने ही हैं, जितने उसके द्वारा प्राप्त किये जाने की आशा थी, तो उसमें परीक्षण–निर्माण की वैधता होती है।

4. समवर्ती–वैधता

अगर परीक्षण में बालक द्वारा प्राप्त किए गए अंक उसके चालू कार्यों से सह–सम्बन्ध बताते हैं, तो उसमें समवर्ती वैधता होती है।

वैधता के जो प्रकार ऊपर बताए गए हैं उनमें विषय–वस्तु की वैधता को उपलब्धि परीक्षण के लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है। इसका कारण यह है कि इसी की सहायता से छात्रों की उपलब्धियों का मूल्यांकन करके उनका श्रेणी–विभाजन तथा वर्गीकरण किया जाता है तथा उनकी कक्षोन्नति भी की जाती है। इसीलिए, क्लासमियर व गुडविन ने कहा है कि–

उपलब्धि परीक्षण में विषय–वस्तु की वैधता अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

17.12.4 वैधता को प्रभावित करने वाले कारक

किसी भी परीक्षण की वैधता को प्रभावित करने वाले कारकों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है–

1. परीक्षण का आकार

यदि किसी परीक्षण में पदों की संख्या बढ़ा दी जाती है, तो केवल विश्वसनीयता गुणांक में ही वृद्धि नहीं होती, अपितु वैधता भी बढ़ जाती है। परीक्षण का आकार जितना बढ़ा होता है, उतनी ही अधिक विश्वसनीयता और वैधता होती है। इसके विपरीत परीक्षण का आकार जितना छोटा होता है या प्रश्नों की संख्या जितनी कम होती है, वैधता एवं विश्वसनीयता उतनी कम होती है। इस प्रकार परीक्षणों का आकार बढ़ने से उनकी वैधता भी बढ़ जाती है।

2. परीक्षण की गत्यात्मकता

परीक्षण की वैधता और उसकी गत्यात्मकता का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। यदि परीक्षण की प्रशासन की अवधि को बढ़ा दिया जाए, तो परीक्षण की गत्यात्मकता कम हो जाती है। वैधता गुणांक बढ़ता है और यदि उसकी प्रशासनिक अवधि कम कर दी जाए, तो गत्यात्मकता बढ़ती है और वैधता गुणांक कम होता जाता है। इस प्रकार परीक्षण की गत्यात्मकता उसकी वैधता को प्रभावित करती है।

3. समूह की सजातीयता

जिस समूह को परीक्षण दिया जाता है, उसकी सजातीयता और विजातीयता वैधता को प्रभावित करती है। यदि समूह के छात्र सजातीय है, तो वैधता गुणांक अधिक होगा और यदि समूह के छात्र विजातीय है, तो वैधता का गुणांक कम होगा। इस प्रकार समूह की विजातीय बढ़ने से वैधता का गुणांक कम होता जाता है।

4. अस्पष्ट निर्देश

परीक्षण के प्रशासन में जो निर्देश दिए जाते हैं, उनमें समरूपता तथा स्पष्टता होनी चाहिए। यदि वह निर्देश स्पष्ट नहीं है, तो परीक्षण की वैधता प्रभावित होगी। अर्थात् वास्तविक वैधता से प्राप्त की हुई वैधता कम होगी। अतः परीक्षण देते समय जिन निर्देशों का प्रयोग किया जाए, वे भी प्रामाणिक होने चाहिए।

5. सामाजिक एवं सांस्कृतिक अन्तर का प्रभाव

समाज के विभिन्न समूहों को परीक्षण दिया जाता है, तो उनके प्राप्तांकों पर उनके आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक पक्षों का प्रभाव पड़ता है, जो उस परीक्षण की वैधता को प्रभावित करता है। अतः किसी परीक्षण को बनाते समय यह सावधानी रखनी चाहिए कि परीक्षण के पदों का स्वरूप ऐसा हो जिन पर सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक पक्षों का कम से कम प्रभाव हो। जब कोई परीक्षण सांस्कृतिक एवं सामाजिक सीमाओं को परा कर लेता है तब भी परीक्षण की वैधता प्रभावित नहीं होती है।

6. परीक्षण के पदों का कठिनाई स्तर

किसी परीक्षण में ऐसे प्रश्नों को सम्मिलित किया जाता है, जिनके कठिनाई स्तर का विस्तार बहुत अधिक होता है तब उस परीक्षण की विश्वसनीयता और वैधता कम हो जाती है। परीक्षण की वैधता वास्वत में उसके पदों के कठिनाई स्तर तथा उनकी विभेदीकरण शक्ति पर निर्भर करती है।

7. अनुक्रिया प्रवृत्ति

वस्तुनिष्ठ परीक्षणों में अनुमान से सही करने का अवसर होता है। इसलिए जब परीक्षणों में अनुमान प्रश्नों को सही करता है तब वैधता गुणक कम होगा और विश्वसनीयता गुणक भी कम होगा। इसलिए परीक्षार्थी के प्राप्तांकों के लिए अनुमान से सही करने के सूत्र का प्रयोग करना चाहिए।

8. वैधता गुणक की विधि का प्रभाव

परीक्षण पदों का होता है पद की कठिनाई परीक्षार्थीयों की जानकारी पर निर्भर करती है। यदि हम किसी पद को जानते हैं, तो सरल है नहीं जानते है, तो कठिन है। इस प्रकार वैधता और विश्वसनीयता की गणना में पदों की चरिता को महत्त्व नहीं दिया जाता, इसलिए वैधता गुणांक वास्तविकता से कम होता है। सैद्धान्तिक रूप से यह पद चरिता होती है। उसकी वैधता गुणांक की गणना में महत्त्व देना चाहिए।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

9. अन्य कारक

शुद्धता के स्थान पर गति से कार्य करने की प्रवृत्ति, अंकन पर परीक्षक की आत्मनिष्ठता एवं मनावृत्ति का हावी होना, आयु, लिंग, योग्यता स्तर, शैक्षणिक पृष्ठभूमि, विषय-वस्तु, व्यवहार, परिवर्तन, शारीरिक मानसिक अवस्था, परीक्षण का स्वरूप, भाषा, कम व्यवस्था आदि सभी कारक परीक्षण की वैधता को प्रभावित करते हैं।

17.13 विश्वसनीयता

एक अच्छे परीक्षण की आवश्यक तकनीकी कसौटी है कि परीक्षण विश्वसनीय हो। अतः किसी भी नये परीक्षण का निर्माण करते समय इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि परीक्षण विश्वसनीय हो। यदि हमारा परीक्षण विश्वसनीय नहीं है, तो उसका उपयोग नहीं हो सकेगा, क्योंकि जब हमारा परीक्षण ही विश्वसनीय नहीं है तो इससे प्राप्त निष्कर्ष या परिणाम भी विश्वसनीय नहीं होंगे। अविश्वसनीय परीक्षण के द्वारा हम किसी महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष पर भी नहीं पहुँच पाएँगे और न ही छात्रों का सही मूल्यांकन हो सकेगा।

परीक्षण की विश्वसनीयता इस तथ्य को प्रकट करती है कि उसमें चर त्रुटि कितनी है। चर त्रुटि के कम होने पर परीक्षण अधिक विश्वसनीय होगा, जबकि चर त्रुटि के अधिक होने पर परीक्षण कम विश्वसनीय होगा।

17.13.1 विश्वसनीयता का अर्थ

विश्वसनीयता का अर्थ होता है कि परीक्षण का जब भी प्रयोग किया जाए, तब उसके परिणामों में किसी प्रकार का अन्तर नहीं होकर समानता ही हो। उदाहरणार्थ अगर किसी बालक के लिए एक ही परीक्षण का चार बार प्रयोग किया जाए और अगर उस अवधि में उसके ज्ञान में किसी प्रकार की वृद्धि नहीं हो, तो चारों बार समान अंक प्राप्त होने चाहिए। अगर उसके अंकों में परिवर्तन हो जाता है, तो परीक्षण को विश्वसनीय नहीं कहा जा सकता है। इस तरह, हम कह सकते हैं कि विश्वसनीयता का अर्थ है- परिणाम की समानता या स्थिरता। क्लासमियर व गुडविन का कहना है कि-

> विश्वसनीयता उस सीमा का उल्लेख करती है, जिस सीमा तक परीक्षण द्वारा प्राप्त मापनों में समानता या स्थिरता होती है।

17.14 विश्वसनीयता की परिभाषाएँ

1. घिसेली के अनुसार

मापन की विश्वसनीयता को व्यक्ति के कुल शील गुणों पर प्राप्त प्राप्तांकों के अव्यवस्थति विचलन की सीमा के रूप में परिभाषित किया गया है, जबकि उस शील गुण को अनेक बार मापा गया।

2. एनेस्टेसी के अनुसार

परीक्षण विश्वसनीयता विभिन्न अवसरों या समान पदों के विभिन्न विन्यासों में एक ही व्यक्ति के संगति प्राप्तांकों की प्राप्ति की ओर इंगित करती है।

3. गैरेट के अनुसार

एक परीक्षण या मानसिक मापन यन्त्र की विश्वसनीयता उस संगति पर निर्भर करती है, जो उन व्यक्तियों की योग्यता का अनुमान लगाती है, जिनके लिए उसका प्रयोग होता है।

4. गिलफोर्ड के अनुसार

संक्षिप्त में विश्वसनीयता प्राप्त परीक्षण प्राप्तांकों में वास्तविक विचरण अनुपात है।

5. स्टोडोला एवं स्टोरडल के अनुसार

एक ही समूह के व्यक्तियों पर समरूप परीक्षण प्रशासित कर एवं दो या अधिक प्राप्तांकों के विन्यासों के मध्य सह-सम्बन्ध ज्ञात करने के रूप में परीक्षण विश्वसनीयता को परिभाषित किया जा सकता है।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि यदि किसी परीक्षण को एक ही समूह पर अलग-अलग समय पर प्रशासित किया जाए और समूह द्वारा प्राप्त अंक लगभग समान आते रहें, तो परीक्षण विश्वसनीयता कहा जा सकेगा। यदि समूह द्वारा प्राप्त अंक अलग-अलग अवसरों पर अलग-अलग होंगे, तो परीक्षण विश्वसनीय नहीं होगा।

17.14.1 विश्वसनीयता की विशेषताएँ

विश्वसनीयता की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है-

1. विश्वसनीयता परीक्षण के परिणामों से सम्बन्धित है अर्थात् विश्वसनीयता का सम्बन्ध मूल्यांकन के उपकरण द्वारा प्राप्त परिणामों से है न कि उपकरण से।
2. विश्सनीयता, वैधता के लिए आवश्यक होती है यह इसका एक निर्धारक तत्व है, किन्तु यह अनिवार्य शर्त नहीं हे। अर्थात् किसी अधिक विश्वसनीय परीक्षण का अधिक वैध होता आवश्यक नहीं है।
3. विश्सनीयता एक सांख्यिकीय विश्लेषण है। इसमें दो बार प्रशासित किये गये परीक्षण के प्राप्तांक में सहसम्बन्ध ज्ञान दिया जाता है। यह सहसम्बन्ध गुणांक का मूल्य ही विश्सनीयता गुणांक होता है।
4. परीक्षण के प्राप्तांक की विश्वसनीयता को मापन की त्रुटि कम करके या परीक्षण अविश्वसनीतया के कारणों को दूर करके बढ़ाया जा सकता है।

17.14.2 विश्वसनीयता को प्रभावित करने वाले कारक

परीक्षण की विश्वसनीयता को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक निम्नलिखित है-

1. परीक्षण की लम्बाई

यहाँ पर परीक्षण की लम्बाई का तात्पर्य पदों की संख्या से है। यदि परीक्षण में अधिक पद हैं तो हम कह सकते हैं कि उस परीक्षण की लम्बाई अधिक है और यदि परीक्षण में पदों की संख्या कम है तो उसकी लम्बाई कम होगी। परीक्षण की लम्बाई का प्रभाव परीक्षण की विश्वसनीयता पर भी पड़ता है। यदि किसी परीक्षण में पदों की संख्या अधिक है अर्थात् उसकी लम्बाई अधिक है तो उस परीक्षण में अधिक विश्वसनीयता होगी और परीक्षण में पदों की संख्या कम है अर्थात् उसकी लम्बाई कम है तो वह परीक्षण अपेक्षाकृत कम विश्वसनीय होगा। परीक्षण की लम्बाई अधिक होने से मापन की अक्सर त्रुटियाँ कम होती हैं, परीक्षण अधिक प्रतिनिधिकारी होता है तथा परीक्षण-शुद्धता से व्यक्ति की विशेषताओं का मापन करता है। यही कारण है कि निबंधात्मक परीक्षाओं की अपेक्षा वस्तुनिष्ठ परीक्षा अधिक विश्वसनीय होती है क्योंकि निबंधात्मक परीक्षा में पदों की संख्या मक होती है तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षा में पदों की संख्या अधिक होती है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

2. फलांक प्रसार

किसी परीक्षण के फलांक प्रसार भी परीक्षण के विश्वसनीयता गुणांक को प्रभावित करते हैं। यदि किसी परीक्षण के फलांकों का प्रसार अधिक होगा तो उसका विश्वसनीयता–गुणांक भी अधिक होगा और अगर परीक्षण का फलांक–प्रसार कम होगा तो उसका विश्वसनीयता–गुणांक भी कम होगा। उदाहरणार्थ, एक परीक्षण का फलांक–प्रसार 17 से 50 है तथा अन्य दूसरे परीक्षण का फलांक–प्रसार 33 से 100 है तो पहले परीक्षण की अपेक्षा दूसरे परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक अधिक होगा क्योंकि दूसरे परीक्षण का फलांक–प्रसार पहले परीक्षण की अपेक्षा अधिक है।

3. समूह प्रसार

परीक्षण की विश्वसनीयता को प्रभावित करने वाला तीसरा महत्त्वपूर्ण कारक समूह का प्रसार है। जिस परीक्षण का विश्वसनीयता–गुणांक ज्ञात करना है उस परीक्षण को यदि बड़े समूह पर प्रशासित किया जाए तो उस परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक अधिक आएगा और अगर परीक्षण को छोटे समूह पर प्रशासित किया जाएगा तो परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक कम आएगा। इसके अतिरिक्त जिस समूह पर परीक्षण प्रशासित किया जा रहा है वह समूह यदि विजातीय है अर्थात् उस समूह में अलग–अलग योग्यता के छात्र अधिक हैं तो परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक कम होगा। इसके विपरीत समूह यदि सजातीय है अर्थात् समूह में एक ही योग्यता के छात्र अधिक हैं तो परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक अपेक्षाकृत अधिक होगा।

4. आयु प्रसार

समूह के छात्रों की आयु भी परीक्षण के विश्वसनीयता–गुणांक को प्रभावित करती है। परीक्षण के जितने अधिक आयु–प्रसार वाले समूह पर प्रशासित किया जाता है उस परीक्षण का विश्वसनीयता–गुणांक उतना ही अधिक होगा तथा परीक्षण को जितने कम आयु–प्रसार वाले समूह पर प्रशासित किया जाता है उस परीक्षण का विश्वसनीयता–गुणांक उतना ही कम होगा। उदाहरणार्थए एक परीक्षण 12 से 16 वर्ष की आयु वाले छात्रों के समूह पर प्रशासित किया जाता है, तो प्रथम परीक्षण का विश्वसनीयता–गुणांक अपेक्षाकृत अधिक होगा क्योंकि इसमें अधिक आयु प्रसार वाले छात्र हैं। इसका कारण यह है कि कम आयु के छात्रों की समझ अधिक आयु वाले छात्रों से कम होती है और वे अनुमान से काम लेते हैं तथा अनुमान की संभावना अधिक होने से परीक्षण में अविश्वसनीयता आती है।

5. अनुमान लगाना व संयोग का प्रभाव

यदि किसी परीक्षण के पदों को हल करने के लिए अनुमान के अवसर अधिक होंगे तो परीक्षण का विश्वसनीयता–गुणांक कम आएगा और यदि परीक्षण के पदों को हल करने के लिए अनुमान के अवसर कम होंगे तो परीक्षण का विश्वसनीयता–गुणांक अधिक आएगा। बहुविकल्प पदों को अनुमान से सही करने की संभावना कम होती है। बहुविकल्प पदों में विकल्पों की संख्या जितनी अधिक होगी, अनुमान से उत्तर देने की संभावना उतनी ही कम होगी। जबकि हाँ/नहीं या सत्य/असत्य प्रकार के पदों में पचास प्रतिशत पदों को अनुमान से सही करने की संभावना रहती है यही कारण है कि बहुविकल्प पदों को उत्तम माना जाता है। अनुमान की संभावना अधिक होने से परीक्षण में अविश्वसनीयता आती है।

6. प्रशासन की परिस्थितियाँ एवं फलांक गुणांक

परीक्षण देने की परिस्थितियाँ तथा अंकन की प्रक्रिया भी परीक्षण के विश्वसनीयता–गुणांक को प्रभावित करती हैं। छात्रों को परीक्षण देने की परिस्थितियों में यदि समानता नहीं है या परिस्थितियों में विषमता होगी तो फलांकों में अन्तर आएगा और परीक्षण की विश्वसनीयता भी कम हो जाएगी। इसके अतिरिक्त छात्रों की उत्तर–पुस्तिकाओं के अंकन की प्रक्रिया वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए अर्थात् यदि छात्र किसी प्रश्न का उत्तर सही देता है तो अंक प्रदान किये जाएँ और गलत उत्तर देने पर शून्य दिया जाए। आंशिक रूप से किसी प्रश्न का उत्तर सही करने पर अंक देने का प्रावधान न रखा जाए। यदि आंशिक सही उत्तर पर अंक दिया गया तो परीक्षण की विश्वसनीयता कम होगी।

17.14.3 विश्वसनीयता में वृद्धि करने के उपाय

विश्वसनीयता एक सापेक्षिक शब्द होता है। अतः उसकी वृद्धि तो की ही जा सकती हैं, लेकिन उसे पूर्ण नहीं बनाया जा सकता है। डगलस एवं हॉलैण्ड के अनुसार उसमें वृद्धि करने के लिए निम्नलिखित उपाय लाभप्रद सिद्ध हो सकते हैं–

1. परीक्षण लम्बा होना चाहिए, ताकि उसमें विषय या पाठ्यक्रम की लगभग सभी बातों का समावेश हो जाए।
2. परीक्षण के प्रश्न छोटे होने चाहिए, ताकि उनके उत्तर शीघ्रता तथा सरलता से दिए जा सकें।
3. परीक्षण के प्रश्न की रचना इस तरह की जानी चाहिए कि उनके उत्तर चिह्न बनाकर संख्या लिखकर या एक–दो शब्द के द्वारा दिए जा सकें।
4. परीक्षण के प्रश्न ऐसे होने चाहिए कि उनके उत्तर या तो निश्चित रूप से सही हो या गलत हो।
5. परीक्षण में प्रश्नों की संख्या अधिक होनी चाहिए, ताकि अनुमानित उत्तरों के कारण उसकी विश्वसनीयता पर कम प्रभाव पड़े। उदाहरणार्थ अगर परीक्षण में केवल 10 प्रश्न है, तो बालक उनमें से 3 या 4 का अनुमान से उत्तर देकर उसकी विश्वसनीयता को कम कर सकते हैं। इसके विपरीत अगर प्रश्नों की संख्या 100 है, तो अनुमानित उत्तरों का विश्वसनीयता पर तुलनात्मक प्रभाव बहुत कम पड़ता है।
6. परीक्षण का समय, दशाएँ तथा निर्देश बिल्कुल स्पष्ट रूप में अंकित होने चाहिए।
7. एक ही परीक्षण एक ही कक्षा के बालकों को दो बार देना चाहिए। दोनों बार के परिणामों में जितनी अधिक समानता होती है, परीक्षण उतना ही अधिक विश्वसनीय होता है।
8. एक ही परीक्षण को दो समान कक्षाओं या समूहों के बालकों को देना चाहिए। दोनों समूहों के परिणामों में जितनी अधिक समानता होती है, परीक्षण उतना ही अधिक विश्वसनीय होता है।

निष्कर्ष के रूप में हम ऐलिस के शब्दों में कह सकते हैं कि–

विश्वसनीयता, परीक्षण–सामग्री के विवेकपूर्ण चयन पर और विशेष रूप से परीक्षण की लम्बाई पर भी निर्भर रहती है। यदि अन्य बातें समान हैं, तो परीक्षण जितना लम्बा होता है, उतना ही अधिक विश्वसनीय होता है।।

****

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

1. उपलब्धि परीक्षण माप है–
   (1) बुद्धि का (2) मानसिक योग्यता का
   (3) ज्ञान का (4) शारीरिक क्षमता का

2. विद्यार्थियों के लिए उपलब्धि परीक्षा का सबसे अच्छा तरीका है–
   (1) वार्षिक परीक्षा (2) अर्द्धवार्षिक परीक्षा
   (3) आवधिक परीक्षा (4) मासिक परीक्षा

3. छात्र की उपलब्धि के मूल्यांकन के लिए सबसे बेहतर तरीका क्या हो सकता है?
   (1) प्राप्तांकों के आधार पर श्रेणी प्रदान करना।
   (2) ग्रेडिंग पद्धति का प्रयोग
   (3) तुलनात्मक मूल्यांकन
   (4) उपरोक्त सभी

4. उपलब्धि परीक्षण में निम्नांकित में किस तरह की वैधता की जरूरत सबसे अधिक पड़ती है?
   (1) अन्तर्विषय वैधता (2) समवर्ती वैधता
   (3) भविष्यवाची वैधता (4) रचनात्मक वैधता

5. प्रश्न होने चाहिए–
   (1) स्पष्ट (2) उद्देश्यपूर्ण
   (3) निश्चित उत्तर वाले (4) ये सभी

6. परीक्षा में विद्यार्थियों से किस प्रकार के प्रश्न पूछने चाहिए?
   (1) स्मृति एव समझ आधारित
   (2) वस्तुनिष्ठ एवं विषयगत
   (3) समझ एवं अनुप्रयोग आधारित
   (4) केवल वस्तुनिष्ठ

7. विद्यालय आधारित आकलन–
   (1) शिक्षार्थियों और शिक्षकों को अगम्भीर और लापरवाह बनाता है।
   (2) शिक्षा–बोर्ड की जवाबदेही कम कर देता है।
   (3) सार्वभौमिक राष्ट्रीय मानकों की प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करता है।
   (4) परिचित वातावरण में अधिक सीखने में सभी शिक्षार्थियों की मदद करता है।

8. जब बच्चा **फेल** होता है, तो इसका तात्पर्य है कि–
   (1) बच्चा पढ़ाई के लिए योग्य नहीं है।
   (2) बच्चे ने उत्तरों को सही तरीके से याद नहीं किया है।
   (3) बच्चे को प्राइवेट ट्यूशन लेनी चाहिए थी।
   (4) व्यवस्था फेल हुई है।

9. निम्नलिखित में कौनसा वस्तुनिष्ठ प्रश्न है?
   (1) निबन्धात्मक प्रश्न (2) लघुत्तरात्मक प्रश्न
   (3) मुक्त उत्तर वाला प्रश्न (4) सत्य या असत्य

10. मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए–
   (1) शिक्षार्थियों की उपलब्धि को मापना
   (2) यह निर्णय लेना कि क्या विद्यार्थी को अगली कक्षा में प्रोन्नत किया जाना चाहिए।
   (3) सीखने में होने वाली कमियों का निदान और उपचार करना
   (4) शिक्षार्थियों की त्रुटियाँ निकालना

11. निम्नलिखित में से कौनसा रचनात्मक आकलन के लिए उचित उपकरण नहीं हैं?
   (1) मौखिक प्रश्न (2) सत्र परीक्षा
   (3) प्रश्नोत्तरी और खेल (4) दत्त कार्य

12. सृजनात्मक उत्तरों के लिए आवश्यक है–
   (1) विषय–वस्तु पर आधारित प्रश्न
   (2) मुक्त–उत्तर वाले प्रश्न
   (3) एक अत्यन्त अनुशासित कक्षा
   (4) प्रत्यक्ष शिक्षण एवं प्रत्यक्ष प्रश्न

13. शिक्षार्थियों को ..... के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए।
   (1) समूह कार्य में दूसरे शिक्षार्थियों के साथ सक्रिय रूप से अन्तःक्रिया करने
   (2) अधिक से अधिक पाठ्य सहगामी क्रियाओं में हिस्सा लेने
   (3) शिक्षक जो प्रश्न पूछ सकते हैं, उन सभी प्रश्नों के उत्तर याद करने
   (4) कक्षा के अन्दर और बाहर अधिक से अधिक प्रश्न पूछने

14. वर्तमान समय में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के अन्तर्गत ग्रेडों में अंकों का वितरण किया जाता है। इस प्रणाली में कितने प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले छात्र को **बहुत अच्छा** या **बी ग्रेड** के अन्तर्गत रखा जाता है?
   (1) 90%–100%
   (2) 56%–74%
   (3) 75%–89%
   (4) 35%–55%

15. वर्तमान समय में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के अन्तर्गत ग्रेडों में अंकों का वितरण किया जाता है। इस प्रणाली में कितने प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले छात्र को **सर्वोत्कृष्ट** या **ए+ ग्रेड** के अन्तर्गत रखा जाता है?
   (1) 90%–100% (2) 56%–74%
   (3) 75%–89% (4) 35%–55%

16. बच्चे के मूल्यांकन के लिए प्रश्न एक अच्छा तरीका है, किन्तु प्रश्न पूछते समय इस बात का ध्यान रखा जाना आवश्यक है कि इसमें एक अच्छे प्रश्न की अधिकतर विशेषताएँ अवश्य हो। एक अच्छे प्रश्न की

1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.	9.	10.	11.	12.	13.	14.	15.	16.						
(3)	(4)	(2)	(1)	(4)	(3)	(4)	(4)	(4)	(1)	(2)	(2)	(3)	(2)	(1)	(4)						

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

विशेषता है–
(1) यह उद्देश्य पर आधारित होना चाहिए।
(2) प्रश्न परीक्षण किए जाने वाले विषय क्षेत्र से सम्बन्धित होना चाहिए।
(3) प्रश्न में उत्तर की सीमा और क्षेत्र का उल्लेख किया जाना चाहिए।
(4) उपरोक्त सभी

17. प्रश्नों के कई प्रकार होते हैं। पौधे एवं जानवरों में चार अन्तर बताइए। यह प्रश्न किस प्रकार के प्रश्न का उदाहरण है?
(1) लघुत्तरात्मक प्रश्न (2) वस्तुनिष्ठ प्रश्न
(3) अति लघुत्तरात्मक प्रश्न (4) उपरोक्त में से कोई नहीं

18. चयन प्रकार के सभी प्रश्न ..... प्रकार के प्रश्न ही होते हैं।
(1) वस्तुनिष्ठ (2) लघुत्तरात्मक
(3) अति लघुत्तरात्मक (4) निबन्धात्मक

19. सत्य/असत्य, सही/गलत एवं हाँ/नहीं उत्तर देने वाले प्रश्न किस प्रकार के प्रश्नों के उदाहरण हैं?
(1) मिलान प्रकार के प्रश्न
(2) बहुवैकल्पिक प्रश्न
(3) वैकल्पिक उत्तर वाले प्रश्न
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

20. आजकल इस बात पर अधिक जोर दिया जाता है कि छात्रों में विषय-वस्तु को रटने की प्रवृत्ति को कम करने के लिए प्रश्नों का निर्माण किया जाए। किस प्रकार के प्रश्नों से बालकों में रटने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है?
(1) अति लघुत्तरात्मक प्रश्न (2) वस्तुनिष्ठ प्रश्न
(3) निबन्धात्मक प्रश्न (4) मिलान प्रकार के प्रश्न

21. जब परीक्षार्थियों की संख्या अधिक हो, तो किस प्रकार के प्रश्नों द्वारा उनका मूल्यांकन किया जा सकता है?
(1) अति लघुत्तरात्मक प्रश्न (2) वस्तुनिष्ठ प्रश्न
(3) निबन्धात्मक प्रश्न (4) लघुत्तरात्मक प्रश्न

22. भाषा की परीक्षा में शब्द, पदबन्ध, वाक्य, अलंकार इत्यादि की जाँच के लिए किस प्रकार के प्रश्नों का प्रयोग सर्वाधिक उपयुक्त होता है?
(1) अति लघुत्तरात्मक प्रश्न
(2) वस्तुनिष्ठ प्रश्न
(3) निबन्धात्मक प्रश्न
(4) ये सभी

23. छात्रों के मूल्यांकन के लिए पूरक प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं। पूरक प्रकार के प्रश्न हैं–
(1) अति लघुत्तरात्मक प्रश्न (2) वस्तुनिष्ठ प्रश्न
(3) निबन्धात्मक प्रश्न (4) ये सभी

24. निबन्धात्मक प्रश्नों के द्वारा निम्नलिखित में से किस क्षमता का मूल्यांकन सम्भव नहीं है?
(1) अर्जित ज्ञान से संगत तथ्य का चयन करना।
(2) स्थूल एवं सूक्ष्म दोनों स्तरों पर समस्या को समझाना।
(3) विद्यार्थी का भाषण कौशल
(4) समस्या और मुद्दे के प्रति आन्तरिक अभिवृत्ति का प्रदर्शन करना।

25. आपको किसी छात्र के बारे में यह मूल्यांकन करना है कि वह दी गई समस्या के बारे में अपने व्यक्तिगत और मूल दृष्टिकोण को व्यक्त कर पाता है या नहीं। इसके लिए आप किस प्रकार के प्रश्नों का निर्माण करेंगे?
(1) अति लघुत्तरात्मक प्रश्न (2) निबन्धात्मक प्रश्न
(3) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (4) लघुत्तरात्मक प्रश्न

26. व्यावहारिक रूप से रचनात्मक मूल्यांकन का अर्थ नहीं है–
(1) यह विश्वास करना कि प्रत्येक विद्यार्थी को सुधारने के लिए शिक्षक की भूमिका सर्वाधिक आवश्यक है।
(2) फीडबैक मुहैया करना, जो विद्यार्थियों को समझने में और अगले कदम उठाने में सहायता करता है।
(3) शिक्षा-प्राप्ति के लक्ष्य विद्यार्थियों के साथ बाँटना
(4) स्व-निर्धारण में विद्यार्थियों को शामिल करना।

27. ..... मूल्यांकन के अन्तर्गत शिक्षकों को विभिन्न तरीके इस्तेमाल करने चाहिए, क्योंकि ..... विषय क्षेत्रों में शिक्षा प्राप्ति और विकास के पहलुओं का ..... किया जाना होता है–
(1) सारांशात्मक; कुछ; निरूपण
(2) रचनात्मक; विभिन्न; मूल्यांकन
(3) सारांशात्मक; विभिन्न; वर्णन
(4) रचनात्मक; कुछ; वर्णन

28. ..... मूल्यांकन ..... मुहैया करता है, जो विद्यार्थी को शिक्षा-प्राप्ति ..... को समझने और उन्हें ..... करने में सहायता देता है।
(1) सारांशात्मक; सुविधाएँ; की त्रुटियों; प्राप्त
(2) रचनात्मक; सुविधाएँ; के उद्देश्यों; प्राप्त
(3) सारांशात्मक; फीडबैक; के उद्देश्यों; प्राप्त
(4) रचनात्मक; फीडबैक; की त्रुटियों; दूर

29. आप एक शिक्षक के रूप में विद्यार्थी के ज्ञान के विभिन्न पहलुओं के बीच उनकी पहचान करने और उनके आपस का सम्बन्ध निर्धारित करने की योग्यता की जाँच करना चाहते हैं। इसके लिए आपको किस प्रकार के प्रश्नों का निर्माण करना चाहिए?
(1) निबन्धात्मक (2) अति लघुत्तरात्मक
(3) वस्तुनिष्ठ (4) मिलान वाले प्रश्न

17.	18.	19.	20.	21.	22.	23.	24.	25.	26.	27.	28.	29.									
(1)	(1)	(3)	(3)	(2)	(4)	(4)	(2)	(2)	(1)	(2)	(4)	(1)									

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

30. विद्यार्थियों का सही मूल्यांकन करने वाले अच्छे प्रश्न-पत्र में निम्नलिखित में से कौनसी विशेषता होनी चाहिए?
1. वैधता 2. विश्वसनीयता
3. वस्तुनिष्ठता 4. व्यापकता
(1) 1 और 2 (2) 1 और 3
(3) 1,2 और 3 (4) उपरोक्त सभी

31. प्रश्न-पत्र की वैधता का क्या तात्पर्य है?
(1) मूल्यांकन के परिणामों में एकरूपता हो।
(2) इससे विद्यार्थी के उसी गुण का मूल्यांकन हो, जिसके लिए उसे प्रयोग में लाया जा रहा है।
(3) प्रश्न-पत्र के प्रश्नों में व्यापकता हो।
(4) प्रश्न-पत्र में वस्तुनिष्ठता हो।

32. प्रश्न-पत्र की विश्वसनीयता का क्या तात्पर्य है?
(1) मूल्यांकन के परिणामों में एकरूपता हो।
(2) इससे विद्यार्थी के उसी गुण का मूल्यांकन हो, जिसके लिए उसे प्रयोग में लाया जा रहा है।
(3) प्रश्न-पत्र के प्रश्नों में व्यापकता हो।
(4) प्रश्न-पत्र में वस्तुनिष्ठता हो।

33. प्रश्न-पत्र का सही रूप है-
(1) पहले आसान और बाद में कठिन प्रश्न
(2) कठिन और आसान का अनुपात बराबर
(3) प्रश्न-पत्र ऐसा हो कि सभी बच्चे पास हो जाए।
(4) आसान और कठिन बारी-बारी से

34. एक अच्छी परीक्षा के तीन महत्त्वपूर्ण गुण हैं-
(1) व्यापकता, मूल्यांकन और व्यावहारिकता
(2) वैधता, व्यापकता और मूल्यांकन
(3) वैधता, व्यावहारिकता और मूल्यांकन
(4) इनमें से कोई नहीं

35. प्रश्नों का वह स्वरूप, जिसमें स्वतन्त्र अभिव्यक्ति को अवसर नहीं मिलता-
(1) वस्तुनिष्ठ प्रश्न
(2) लघुत्तरात्मक प्रश्न
(3) निबन्धात्मक प्रश्न
(4) अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

36. **परीक्षण शिक्षण के लिए है, शिक्षण परीक्षण के लिए नहीं।** यह मूल्यांकन का लक्ष्य है-
(1) संकुचित (2) व्यापक
(3) सीमित (4) उपरोक्त सभी

37. बालक की **रूचि का परीक्षण** मूल्यांकन की कौनसी विधि है?
(1) सामूहिक परीक्षा (2) सामर्थ्य परीक्षण
(3) वैयक्तिक परीक्षा (4) प्रक्षेपण विधि

38. जब किसी परीक्षा के बार-बार अंकन करने पर कोई अन्तर नहीं आता, तो वह परीक्षा कहलायेगी-
(1) वैध (2) विश्वसनीय
(3) व्यापक (4) वस्तुनिष्ठ

39. यदि कोई परीक्षण विभिन्न अवसरों पर संगत (एक प्रकार) परिणाम देता है, तो इसे कहते हैं-
(1) वैध परीक्षण
(2) अध्यापक निर्मित परीक्षण
(3) विश्वसनीय परीक्षण
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

40. प्रश्न-पत्र उत्तम होते हैं-
(1) छोटे, सरल एवं तर्कयुक्त
(2) बड़े, कठिन एवं द्वि-अर्थी
(3) छोटे, कठिन एवं असंगत
(4) बड़े, सरल एवं तर्कसंगत

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

41. ब्लू-प्रिन्ट है-
(1) प्रश्न-पत्र की आधारशिला
(2) शिक्षण की आधारशिला
(3) विद्यालय की आधारशिला
(4) इनमें से कोई नहीं

42. शिक्षण के मूल्यांकन चरण का ध्येय है-
(1) यह जानना कि उद्देश्य कहाँ तक प्राप्त हुए हैं।
(2) अध्यापक की कमियों को जानना।
(3) शिक्षण रणनीतियों की प्रभावशीलता को जानना।
(4) उपरोक्त सभी

43. कक्षा में प्रस्तावना प्रश्न पूछना शिक्षण के किस सूत्र पर आधारित है?
(1) दृश्य से अदृश्य की ओर
(2) आसान से कठिन की ओर
(3) ज्ञात से अज्ञात की ओर
(4) मूर्त से अमूर्त की ओर

44. वस्तुनिष्ठ परीक्षण वे होते हैं, जिनमें-
(1) परीक्षार्थियों को बहुविकल्पीय प्रश्न दिये जाते हैं।
(2) परीक्षक की अपनी सोच अंकों को प्रभावित नहीं करती।
(3) परीक्षार्थी 100% अंक ला सकता है।
(4) उपरोक्त सभी

30.	31.	32.	33.	34.	35.	36.	37.	38.	39.	40.	41.	42.	43.	44.							
(3)	(2)	(1)	(1)	(3)	(1)	(2)	(3)	(2)	(1)	(1)	(1)	(4)	(3)	(4)							

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

45. निबन्धात्मक परीक्षणों के सम्बन्ध में निम्न में से कौनसा कथन सत्य है?
(1) कभी-कभी छात्र यह समझ ही नहीं पाते कि उनसे प्रश्न में पूछा क्या गया है।
(2) इन परीक्षणों के माध्यम से छात्रों की संगठनात्मक क्षमता तथा तार्किक विवरण शक्ति का मूल्यांकन किया जाता है।
(3) छात्र पूरे पाठ्यक्रम से कुछ अन्दाजा लगाये जाने वाले प्रश्नों की तैयारी कर के परीक्षा दे देते हैं।
(4) उपरोक्त सभी

46. सही-गलत वाले प्रश्न मूल्यांकन का सही मानदण्ड नहीं प्रदान कर सकते, क्योंकि-
(1) इसमें छात्रों द्वारा अन्दाजा लगाकर उत्तर देने की सम्भावना 50% होती है।
(2) इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए गहन अध्ययन की आवश्यकता नहीं होती।
(3) इसमें नकल करके वास्तविक उपलब्धि बढ़ायी जा सकती है।
(4) उपरोक्त सभी

47. बहुविकल्पीय प्रश्न सही-गलत प्रश्नों से श्रेष्ठ है, क्योंकि-
(1) इसमें अनुमान की सम्भावना घट कर 25% ही रह जाती है।
(2) इनका तेजी से उत्तर दिया जा सकता है।
(3) इनका निर्माण आसान है।
(4) उपरोक्त सभी

48. अनुबोधक (Probing) प्रश्न तब पूछे जाते हैं, जब-
(1) छात्र द्वारा दिया उत्तर अध्यापक के आकांक्षा स्तर से नीचे होता है।
(2) छात्र पाठ में रूचि कम ले रहे होते हैं।
(3) अध्यापक छात्र का ध्यान किसी विशेष बात की ओर आकृष्ट करना चाह रहा हो।
(4) उपरोक्त सभी

49. परीक्षण की उस क्षमता को मापने का गुण, जिसे मापने के लिए उसे बनाया गया था, को कहा जाता है-
(1) विश्वसनीयता
(2) आन्तरिक संगतता
(3) वैधता
(4) पूर्वकथनात्मक शक्ति

50. वस्तुनिष्ठ प्रश्न का विशेष महत्त्व है-
(1) इसका मूल्यांकन निश्चित होता है।
(2) इसके लिए अधिक समय की जरूरत होती है।
(3) इसके लिए कठिन परिश्रम, धैर्य तथा बुद्धिमत्ता की जरूरत होती है।
(4) इसके द्वारा मन्द बुद्धि वाले बालक एवं तेज बुद्धि वाले बालक में तुलना नहीं होती है।

51. निबन्धात्मक प्रश्न होते हैं-
(1) विश्वसनीय (2) वैध
(3) वस्तुनिष्ठ (4) व्यक्तिनिष्ठ

52. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में-
(1) विश्वसनीयता होती है।
(2) वैधता का अभाव होता है।
(3) वस्तुनिष्ठता का अभाव होता है।
(4) व्यक्तिनिष्ठता का गुण होता है।

53. मौखिक मूल्यांकन द्वारा जिस उद्देश्य की जाँच करना सम्भव नहीं है, वह है-
(1) ज्ञान (2) अवबोधन
(3) ज्ञानोपयोग (4) कौशल

54. संचयी प्रमाण मदद करता है-
(1) नैतिकता का मूल्यांकन करने में
(2) विद्यार्थी के शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन करने में
(3) कक्षा में अनुशासन बनाये रखने में
(4) विद्यार्थी के विकास का मूल्यांकन करने में

55. चिन्तन-स्तर के शिक्षण में निम्नांकित में से किस प्रकार की परीक्षा ली जानी उचित है?
(1) वस्तुनिष्ठ परीक्षा (2) निबन्धात्मक परीक्षा
(3) मौखिक परीक्षा (4) प्रायोगिक परीक्षा

56. स्मृति स्तर के प्रश्न का उदाहरण नहीं है-
(1) अकबर का जन्म कहाँ हुआ था?
(2) अकबर के राज्य की सीमा कहाँ तक की थी?
(3) अकबर को महान् क्यों कहा जाता है?
(4) अकबर का जन्म किस सन् में हुआ था?

57. शिक्षक अधिगम प्रक्रिया के दौरान एक छात्र की सहभागिता है, यह तभी कहा जा सकता है, जब वह-
(1) शिक्षक के प्रश्नों का उत्तर देता है।
(2) अपनी तरफ से पहल करता है।
(3) दूसरों के विचारों पर प्रतिक्रिया करता है।
(4) सम्बद्ध प्रश्न पूछता है।

58. **जब हम निष्पत्ति परीक्षणों का प्रयोग करते हैं, तब हम इस बात को निश्चित करने में रूचि रखते हैं कि विशेष प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के बाद व्यक्ति ने क्या सीखा।** यह कथन है-
(1) थॉर्नडाइक व हैगन का (2) अनास्टोसी का
(3) होरासमैन का (4) इनमें से कोई नहीं

45.	46.	47.	48.	49.	50.	51.	52.	53.	54.	55.	56.	57.	58.								
(4)	(4)	(4)	(4)	(3)	(3)	(4)	(1)	(4)	(4)	(2)	(3)	(4)	(1)								

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

59. सूची–I जो मनोमितीय सम्प्रत्यय है, को सूची–II जो उनका विवरण है, के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिये गये कूटों का प्रयोग करते हुए सही उत्तर चुनिए–

सूची–I	सूची–II
(i) वस्तुनिष्ठता	1. परीक्षण के संचालन एवं प्राप्तांक–लेखन में एकरूपता
(ii) विश्वसनीयता	2. संगत एवं स्थिर प्राप्तांकों का प्राप्त होना
(iii) मानकीकरण	3. व्यक्तिगत पूर्वाग्रह से स्वतन्त्र होकर परीक्षण का प्राप्तांक–लेखन उनकी कुंजी के अनुसार करना
(iv) वैधता	4. प्रस्तावित विशेषता/ शीलगुण का मापन करना

कूट–

	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(1)	1	2	3	4
(2)	3	4	1	2
(3)	3	2	1	4
(4)	1	4	3	2

60. छात्रों के व्यवहार सर्वे में प्रत्येक छात्र से कहा गया कि वे संक्षेप में (करीब सौ शब्दों में) अपने जीवन के सन्तोषदायी अनुभवों का वर्णन करें। यह पद एक उदाहरण है–
(1) निश्चित विकल्प प्रारूप का
(2) मापनी एकांश का
(3) वस्तुनिष्ठ परीक्षण एकांश का
(4) मुक्त एकांश का

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

61. निबन्धात्मक प्रश्न के लिए निम्नलिखित में से कौनसा सबसे अच्छा विकल्प है?
(1) न्यूटन के गति के नियम की चर्चा करे।
(2) न्यूटन के गति के तीनों नियमों की व्याख्या करे।
(3) न्यूटन के गति का नियम क्या है?
(4) न्यूटन के गति के नियम पर एक लेख लिखे।

62. विश्वसनीयता तथा वैधता में मुख्य अन्तर यह है कि–
(1) विश्वसनीयता परीक्षण का किसी बाह्य कसौटी के साथ सहसम्बन्ध होता है, जबकि वैधता परीक्षण का आत्म–सम्बन्ध होता है।
(2) विश्वसनीयता परीक्षण का एक वांछनीय गुण होता है, जबकि वैधता परीक्षण का एक अवांछनीय गुण है।
(3) विश्वसनीयता परीक्षण का आत्मसम्बन्ध होता है, जबकि वैधता परीक्षण का किसी बाह्य कसौटी के साथ सह–सम्बन्ध होता है।
(4) विश्वसनीयता परीक्षण प्राप्तांकों का गुण होता है, जबकि वैधता परीक्षण का।

63. यदि आपको परीक्षार्थी की संगठनात्मक क्षमता की माप करनी है, तो आप निम्नांकित में से किस तरह के एकांश वाले परीक्षण पसन्द करेंगे?
(1) निबन्धात्मक एकांश वाले परीक्षण
(2) वस्तुनिष्ठ एकांश
(3) 1 तथा 2 दोनों तरह के एकांश
(4) मात्र एक मौखिक परीक्षा

64. आपूर्ति प्रकार का परीक्षण तैयार करने के लिए उपयुक्त प्रश्न होंगे–
(1) बहुविकल्पी प्रश्न (2) तुल्यात्मक प्रश्न
(3) वर्गीकरण सम्बन्धी प्रश्न (4) पूरक प्रश्न

65. एक अच्छे परीक्षण की क्या विशेषताएँ होती है?
1. परीक्षण की विश्वसनीयता ज्ञान के इस तथ्य को प्रकट करती है कि उसमें चर त्रुटि कैसी है।
2. यदि छात्रों के प्राप्तांक विभिन्न अवसरों पर जोड़े जाए, तो यह परीक्षण विश्वसनीय माना जाएगा।

कूट–
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

66. रिक्त स्थानों की पूर्ति के विषय में निम्न में से कौनसा कथन सही है?
1. इस प्रकार के प्रश्नों को एक अपूर्ण वाक्य, कथन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
2. इस प्रकार के प्रश्नों में सीधे–सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं।

कूट–
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) ये सभी

67. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. माना किसी व्यक्ति को एक टेस्ट दिया जाए व वही टेस्ट उसको कुछ समय के अन्तराल में फिर दिया जाए और उसके प्राप्तांकों में समानता हो, तो उस टेस्ट को विश्सनीय माना जाएगा।
2. इसी प्रकार बहुत से व्यक्तियों को कोई टेस्ट बार–बार दिया जाए, वह प्रत्येक बार के प्राप्तांक के समान ही अविश्वसनीय माना जाएगा।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1
(2) केवल 2
(3) 1 और 2
(4) न तो 1 और न ही 2

59.	60.	61.	62.	63.	64.	65.	66.	67.													
(1)	(4)	(2)	(3)	(1)	(4)	(3)	(3)	(3)													

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

68. निबन्धात्मक परीक्षण के सम्बन्ध में कहा जाता है कि **अध्यापक छात्रों के बारे में जो धारणा रखते हैं, उसके अनुसार ही उन्हें अंक प्रदान करने की प्रवृत्ति रखते हैं।** यह किस प्रकार का प्रभाव है?
(1) कैरी ओवर प्रभाव (2) हेलो प्रभाव
(3) विश्वसनीयता (4) इनमें से कोई नहीं

69. कौनसा निबन्धात्मक प्रकार का प्रश्न नहीं है?
(1) व्याख्यात्मक (2) विवेचनात्मक
(3) आलोचनात्मक (4) सरल प्रत्यास्मरण

70. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. निबन्धात्मक परीक्षणों का अंकन करते समय पहले प्रश्नों के उत्तरों की गुणवत्ता बाद के प्रश्नों के अंकन को बुरी तरह प्रभावित कर सकती है।
2. निबन्धात्मक परीक्षणों की मुख्य आलोचना इनके आत्मनिष्ठ, अविश्वसनीय व अवैध होने के कारण की जाती है।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

71. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. वस्तुनिष्ठ परीक्षण निबन्धात्मक परीक्षण की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय व वैध होते हैं।
2. इस प्रकार के प्रश्नों में मूल्यांकन करते समय परीक्षक छात्रों को निर्धारित अंक प्रदान करता है।
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनेक प्रकार के हो सकते हैं।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1,2 और 3 (4) इनमें से कोई नहीं

72. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. शैक्षिक सत्र के अन्त में परीक्षणों के द्वारा छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मापन किया जाता है।
2. यह योजना कक्षा उन्नति के लिए शुरू की गई है।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

73. चेक लिस्ट का प्रयोग किया जाता है, निम्न परिस्थितियों में–
1. चेक लिस्ट का प्रयोग तब जब किसी व्यक्ति में गुण की उपस्थिति या अनुपस्थिति का ज्ञान करना होता है, किया जाता है।
2. निर्णायक को कथनों के सही या गलत होने की स्थिति को सही (✓) या गलत (×) चिह्न लगाकर बताया जाता हो।
3. निर्णायक के उत्तरों के आधार पर व्यक्ति में मौजूद गुणों की मात्रा का पता लगाया जाता है।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) केवल 3 (4) ये सभी

74. **कथन** (A) बहुविकल्पात्मक प्रश्न, सत्य–असत्य प्रश्न, मिलान प्रश्न व वर्गीकरण प्रश्न आदि चयन प्रकार के वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के अन्तर्गत आते हैं।
कारण (R) प्रत्यास्मरण प्रश्न तथा रिक्त स्थानों की पूर्ति जैसे प्रश्न को आपूर्ति प्रकार के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है।
कूट–
(1) A और R दोनों सही हैं।
(2) A और R दोनों गलत हैं।
(3) A सही है, किन्तु R गलत है।
(4) A गलत है, किन्तु R सही है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

75. वस्तुनिष्ठ परीक्षण अन्य परीक्षणों से बेहतर है, क्योंकि–
(1) चिह्न विशिष्ट व्यक्ति द्वारा दिया जाता है।
(2) चिह्न में विशेष कौशल की आवश्यकता होती है।
(3) ये पूर्वाग्रह से मुक्त होते हैं।
(4) पूरे पाठ्यक्रम के लिए अधिक–से–अधिक प्रतिदर्श की आवश्यकता होती है।

76. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. मूल्यांकन केवल मूल्य निर्धारण का दूसरा नाम नहीं है, विद्यार्थियों के सीखने के गुणात्मक स्तर को परखना केवल एक बिन्दु है।
2. अन्य निष्पत्तियाँ इस बात की ओर संकेत करती है कि मूल्यांकन में कुछ अनपेक्षित बातें ज्ञात हो सकती हैं।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

77. निम्नलिखित में से कौन प्रश्न बैंक का प्रकार नहीं है?
(1) वस्तुनिष्ठ प्रश्न बैंक
(2) अमिश्रित प्रश्नों का बैंक
(3) लघुत्तरात्मक प्रश्नों का बैंक
(4) विस्तृत प्रश्नों का बैंक

78. ग्रेडिंग के सन्दर्भ में निम्न कथनों पर विचार कीजिए–
1. माध्यमिक शिक्षा आयोग तथा शिक्षा आयोग ने अंकों के स्थान पर ग्रेड प्रदान करने का सुझाव दिया था।
2. वर्ष 1975 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान व प्रशिक्षण परिषद् ने भी ग्रेड प्रणाली के प्रयोग की सिफारिश की है।
3. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के द्वारा प्रकाशित **परीक्षा सुधार एक कार्य योजना** नामक प्रतिवेदन में भी ग्रेड प्रणाली को स्वीकार करने का समर्थन किया गया।

68.	69.	70.	71.	72.	73.	74.	75.	76.	77.	78.											
(2)	(4)	(3)	(3)	(2)	(4)	(2)	(3)	(3)	(2)	(4)											

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल 1 (2) केवल 2

(3) केवल 3 (4) य सभी

79. परीक्षाओं के प्राप्तांकों का विश्लेषण तथा विद्यार्थियों की प्रतिपुष्टि हेतु निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1 परीक्षण के प्रशासन के उपरान्त परीक्षण पुस्तिकाओं या उत्तर पुस्तिकाओं का अंकन किया जाता है।

2. परीक्षण के अंकन में प्रयोज्यों के द्वारा दिए गए उत्तरों को अंक प्रदान किए जाते हैं।

3. सम्पूर्ण परीक्षण या उसके विभिन्न भागों के सभी प्रश्नों पर प्रयोज्य को प्राप्त अंकों का योग ही प्रयोज्य के लिए परीक्षण (सम्पूर्ण) प्राप्तांकों को या विभागीय प्राप्तांकों को इंगित करता है।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल 1 (2) केवल 2

(3) केवल 3 (4) ये सभी

80. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

1. विगत् कुछ वर्षों में शैक्षणिक मापन तथा मूल्यांकन के क्षेत्र में अनेक नवीन प्रत्ययों तथा नवाचारों का प्रादुर्भाव हुआ है।

2. इनमें से कुछ प्रत्यय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं समसामयिक हैं तथा शैक्षिक मापन व मूल्यांकन के क्षेत्र में कार्यरत सभी व्यक्तियों के लिए इन प्रत्ययों में नवाचारों का ज्ञान व उनमें निपुणता प्राप्त करना आवश्यक है।

3. शैक्षिक मापन व मूल्यांकन के कुछ प्रमुख नवाचारों में ही मानक तथा निकष सन्दर्भित परीक्षण भी हैं।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल 1

(2) केवल 2

(3) केवल 1, 2 और 3

(4) केवल 3

81. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

1. निकष सन्दर्भित मापन की आवश्यकता सर्वप्रथम वर्ष 1963 में रॉबर्ट ग्लेजर ने महसूस की।

2 सातवें दशक में अभिक्रमित अनुदेशन की प्रभावशीलता का मापन करते समय यह महसूस किया गया, कि तत्कालीन उपलब्धि परीक्षणों के अत्यधिक सामान्य प्रकृति का होने के कारण उनका प्रयोग इस कार्य के लिए तर्कसंगत ढंग से किया जा सकता है।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल 1

(2) केवल 2

(3) 1 और 2

(4) न तो 1 और न ही 2

82. सुमेलित कीजिए–

सूची I	सूची II
A. उद्देश्य	1. सामान्य वर्णन पर आधारित
B. परीक्षण निर्माण का आधार	2. 50% कठिनाई स्तर
C. प्रश्नों का कठिनाई स्तर	3. संकलित समंको का उपयोग
D. प्रश्नों का चयन	4. छात्रों की सम्प्राप्ति का मापन

कूट–

	A	B	C	D
(1)	1	2	3	4
(2)	4	3	2	1
(3)	3	4	1	2
(4)	4	1	2	3

83. स्केलिंग मानक प्राप्तांक के विषय में निम्न पर विचार कीजिए–

1. भिन्न-भिन्न परीक्षकों के लिए प्राप्तांकों का अभिप्राय भिन्न-भिन्न हो सकता है।

2. कुछ परीक्षकों में अधिक अंक प्रदान करने की प्रवृत्ति होती है।

3 कुछ परीक्षकों में कम अंक प्रदान करने की प्रवृत्ति होती है तथा कुछ परीक्षकों में औसत स्तर के अंक प्रदान करने की मृतप्रायः प्रवृत्ति होती है।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल 1 (2) केवल 2

(3) केवल 3 (4) ये सभी

84. उपलब्धि मापन से तात्पर्य यह है कि–

1. उपलब्धि मापन से तात्पर्य उन परीक्षणों से है, जो छात्रों के ज्ञान, बोध, कौशल आदि का मापन करते हैं।

2 विद्यालयों में पढ़ाए जाने वाले विभिन्न विषयों में छात्रों ने क्या सीखा है? इसका मापन करने के लिए सम्प्राप्ति/उपलब्धि परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है।

कूट–

(1) केवल 1 (2) केवल 2

(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

85. निम्न कथनों की सत्यता निर्धारित कीजिए–

1. प्रायः देखा जाता है कि प्रश्न-पत्रों में अधिकांश प्रश्न बहुत ही सतही स्तर के होते हैं।

2. प्रश्न-पत्र निर्माता द्वारा तैयार किए गए प्रश्न-पत्र न, तो सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का सही ढंग से प्रतिनिधित्व कर पाते हैं तथा न ही वे छात्रों के ज्ञान बोध या कौशल का विस्तृत अर्थों में मूल्यांकन कर पाते हैं।

79.	80.	81.	82.	83.	84.	85.															
(4)	(4)	(1)	(4)	(4)	(3)	(3)															

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

कूट–
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) 1 और 2 (4) न तो 1 और न ही 2

86. प्रश्न बैंक के सन्दर्भ में निम्न कथनों पर विचार कीजिए–
1. वर्तमान परीक्षा प्रणाली के प्रमुख दोषों में से एक दोष परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों का अध्ययन–अध्यापक परीक्षण से ताल–मेल का अभाव है।
2. प्रश्न–पत्र रचयिता अपनी पसन्द–नापसन्द, रूचि–अभिरूचि तथा प्रश्न निर्माण कौशल के आधार पर प्रश्नों की रचना करके प्रश्न–पत्रों में सम्मिलित करते हैं।
3. प्रश्नों की उपरोक्त कमियों के फलस्वरूप छात्र परीक्षा हेतु कुछ विशिष्ट प्रश्नों/प्रकरणों को तैयार करते हैं।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) केवल 3 (4) ये सभी

87. सतत् आन्तरिक मूल्यांकन के विषय में निम्न कथनों पर विचार कीजिए–
1. सतत् आन्तरिक मूल्यांकन प्रणाली के अन्तर्गत छात्रों की शैक्षिक प्रगति का मूल्यांकन शिक्षण कार्य कर रहे अध्यापकों के द्वारा सत्र के बीच में लगातार थोड़े–थोड़े अन्तराल पर किया जाता रहा है।
2. छात्रों को पृष्ठपोषण मिलने पर वे अपनी क्षमता के अनुरूप सर्वोत्तम शैक्षिक प्रगति करने के लिए प्रयासरत् रहते हैं।
3. सतत् आन्तरिक मूल्यांकन में अध्यापकों के द्वारा छात्रों की शैक्षिक प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए प्रयासरत् लिखित परीक्षाओं के अलावा मापन व मूल्यांकन की विभिन्न विधियों तथा उपकरणों का प्रयोग किया जाता है।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) केवल 3 (4) ये सभी

88. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. सतत् आन्तरिक मूल्यांकन छात्रों के साथ–साथ अध्यापकों को भी अपनी शिक्षण योजना में सुधार करने के अवसर प्रदान करता है।
2. छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान व कौशल की जानकारी के आधार पर अध्यापक वर्ग भी अपनी शिक्षण व्यूह रचना को आवश्यकतानुसार परिवर्तित कर सकता है।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) 1 और 2
(2) केवल 1
(3) केवल 2
(4) न तो 2 और न ही 2

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

89. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. परीक्षा सुधार के क्षेत्र में कार्यरत विशेषज्ञों का ध्यान इस विचार की ओर शीघ्रता से आकर्षित हुआ।
2. विशेषज्ञों द्वारा यह माना गया है कि अंकन वर्गों की संख्या को कम करके अंकन की त्रुटियों को काफी हद तक समाप्त किया जा सकता है।
3. ग्रेड प्रणाली अंक प्रणाली के विपरीत वास्वत में छात्रों को कुछ गुणात्मक श्रेणियों में बाँटती है।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) केवल 3 (4) ये सभी

90. ग्रेड प्रणाली के लाभों के विषय में क्या सत्य है?
1. ग्रेड की सहायता से छात्रों का मूल्यांकन अधिक विश्वसनीय हो सकता है। अतः ग्रेड प्रणाली का प्रयोग परीक्षा परिणामों की विश्वसनीयता को बढ़ाता है।
2. छात्रों की अभिरूचि व योग्याता के आधार पर भावी पाठ्यक्रम के चयन करने की दृष्टि से ग्रेड प्रणाली अधिक उपयुक्त व वैज्ञानिक है।
3. ग्रेड प्रणाली को अपनाए जाने पर एक स्थान से दूसरे स्थान को प्रवर्जन करते समय होने वाली कठिनाइयाँ काफी कम हो सकेंगी, जिससे अन्तर्क्षेत्रीय स्थानान्तरण में सुविधा हो सकेगी।

कूट–
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) केवल 3 (4) ये सभी

91. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. निबन्धात्मक परीक्षण अति प्राचीनकाल से प्रयुक्त किए जा रहे हैं।
2. वस्तुनिष्ठ परीक्षण अपेक्षाकृत नए प्रकार का परीक्षण है।
3. निबन्धात्मक परीक्षणों की वस्तुनिष्ठता, विश्वसनीयता व वैधता कम होती है।
4. उपरोक्त के अन्तर्गत समुद्री लहरों की सघनता का अध्ययन किया जाता है।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1 (2) केवल 2
(3) केवल 3 (4) ये सभी

92. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. परीक्षण के वैध होने के लिए उसकी विश्वसनीयता तथा वैधता दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।
2. सांख्यिकीय दृष्टिकोण से किसी भी परीक्षण की वैधता का अधिकतम सम्भाव्य मान उसकी विश्वसनीयता के वर्गमूल के बराबर ही हो सकता है।
3. विश्वसनीयता गुणांक शून्य होने पर भी वैधता गुणांक शून्य होगा।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल 1
(2) केवल 2
(3) केवल 3
(4) ये सभी

86.	87.	88.	89.	90.	91.	92.															
(4)	(4)	(1)	(4)	(4)	(4)	(4)															

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

93. नीचे प्रश्न एवं उसके प्रकारों को दर्शाया गया है। इनको सुमेलित कीजिए–

	सूची I		सूची II
A.	जाँच–सूची	I.	मिलान प्रकार के प्रश्न
B.	सत्य/असत्य	II.	निबन्धात्मक प्रश्न
C.	व्याख्या	III.	वैकल्पिक उत्तर वाले प्रश्न

	A	B	C
(1)	III	II	I
(2)	I	III	II
(3)	I	II	III

(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

94. छात्रों के मूल्यांकन के लिए सामान्यतः निबन्धात्मक प्रश्नों का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार के प्रश्नों की सबसे बड़ी कमी क्या है?
(1) इन प्रश्नों में वस्तुनिष्ठता एवं विश्वसनीयता की कमी होती है।
(2) ये प्रश्न विद्यार्थी के लेखन कौशल की जाँच के लिए सही नहीं होते हैं।
(3) इन प्रश्नों की सहायता से किसी प्रकार का मूल्यांकन सम्भव नहीं।
(4) उपरोक्त सभी

95. निम्नलिखित में से कौनसे ग्रेड प्रणाली के लाभ हैं?
(1) ग्रेड प्रणाली की सहायता से छात्रों का मूल्यांकन अधिक अविश्वसनीय हो सकता है।
(2) ग्रेड प्रणाली परीक्षा परिणामों की अविश्वसनीयता को बढ़ाती है।
(3) विभिन्न परीक्षा संस्थाओं अथवा विश्वविद्यालय के द्वारा घोषित छात्रों के परिणामों की तुलना करने की दृष्टि से मूल्यांकन की ग्रेड प्रणाली अत्यधिक उपयोगी है।
(4) छात्रों की अभिरूचि के आधार पर पाठ्यक्रम चयन करने की दृष्टि से यह अनुपयुक्त है।

96. ग्रेड प्रणाली के लाभ निम्नलिखित में से कौनसे हैं?
1. छात्रों का मूल्यांकन विश्वसनीय तरीके से हो सकता है।
2. यह परीक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता को घटाता है।
3. विविध विषयों तथा संकायों में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करने के लिए एक अभिरूचि तथा पैमाने का कार्य सफलतापूर्वक करता है।

कूट–
(1) 1 और 3
(2) 1, 2 और 3
(3) केवल 3
(4) 2 और 3

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

97. एक शिक्षक प्रश्न–पत्र बनाने के बाद यह जाँच करता है कि क्या प्रश्न परीक्षण के विशिष्ट उद्देश्यों की परीक्षा ले रहे हैं। वह मुख्य रूप से प्रश्न–पत्र की/के ..... के बारे में चिन्तित है।
(1) वैधता
(2) सम्पूर्ण विषय–वस्तु को शामिल करने
(3) प्रश्नों के प्रकार
(4) विश्वसनीयता

98. निम्नलिखित में से कौन उपलब्धि परीक्षण का उद्देश्य नहीं है?
(1) छात्रों को अध्ययन के लिए प्रेरित करना।
(2) छात्रों के वर्गीकरण तथा प्रोन्नति में सहायता प्रदान करना।
(3) छात्रों को शैक्षिक मार्गदर्शन एवं परामर्श देना।
(4) शैक्षिक स्तर को बनाए रखने में सहायता न करना।

99. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. ग्रेड प्रणाली की सहायता से छात्रों का मूल्यांकन अधिक विश्वसनीय ढंग से हो सकता है।
2. ग्रेड प्रणाली विभिन्न विषयों तथा संकायों में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करने के लिए एक उभयनिष्ठ पैमाने का कार्य सफलतापूर्वक कर सकती है।

उपरोक्त कथनों में कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(1) 1 और 2 (2) केवल 2
(3) केवल 1 (4) न तो 1 और न ही 2

100. निम्न में से वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के गुण के सम्बन्ध में सही कथन है?
1. इनका अंकन शीघ्रता एवं सुगमता से किया जा सकता है।
2. ये परीक्षकों के व्यक्तिगत प्रभाव से प्रभावित नहीं होते हैं।
3. वस्तुनिष्ठता के कारण ये अधिक विश्वसनीय एवं वैध होते हैं।
4. उपर्युक्त में से कोई नहीं

(1) केवल 1 (2) 1,2 एवं 3
(3) केवल 4 (4) 2 एवं 3

101. एक शिक्षक एक पासा इस्तेमाल करते हैं, जिस पर वर्णन, भविष्यवाणी, स्पष्ट, संक्षेपण, अनिर्मित और मूल्यांकन अंकित हैं। प्रकरण की समाप्ति पर वे पासा फेंकते हैं और पासे की स्थिति पर आधारित प्रश्न का उत्तर देने के लिए विद्यार्थियों से कहते हैं। शिक्षक–
(1) रूपात्मक आकलन कर रहे है।
(2) विद्यार्थियों के चिन्तन को प्रोत्साहित कर रहे हैं।
(3) विद्यार्थियों की चिन्तन प्रक्रिया का विविधीकरण कर रहे हैं।
(4) अपनी खास शैली में पाठ को समाप्त कर रहे हैं।

****

93.	94.	95.	96.	97.	98.	99.	100.	101.												
(2)	(1)	(3)	(1)	(2)	(4)	(1)	(2)	(1)												

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

अध्याय 18

क्रियात्मक अनुसंधान

18.1 प्रस्तावना

वर्तमान युग में प्रत्येक क्षेत्र का चतुर्मुखी विकास करने के लिए अनुसंधान कार्य को बहुत महत्त्व दिया जा रहा है। शैक्षिक जगत् में अनेक समस्याओं का उदय हुआ है, जिनका निराकरण करने के लिए और व्यावहारिक रूप में वांछित परिवर्तन करने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान करने की आवश्यकता है। इस दृष्टि से शिक्षा क्षेत्र में जो अनुसंधान कार्य होते रहे हैं, उनसे शिक्षा का सैद्धान्तिक पक्ष मजबूत हुआ, लेकिन शिक्षा के क्रियात्मक या व्यावहारिक पक्ष में इन अनुसंधान कार्यों से कोई खास लाभ नहीं हुआ। इस स्थिति में एक ऐसी पद्धति की जरूरत महसूस हुई, जिसके द्वारा विद्यालय से सम्बन्धित समस्याओं का निदान ढूँढ़ा जा सके और विशिष्ट स्थिति में परिवर्तन और सुधार किया जा सके। इन विचारों के परिणामस्वरूप ही क्रियात्मक अनुसंधान के महत्त्व में वृद्धि हुई।

18.2 अनुसंधान का अर्थ एवं परिभाषा

वर्तमान युग में अनुसंधान का विशेष महत्त्व है। अनुसंधान किसी राष्ट्र की प्रगति के पहचान चिन्ह हैं। **अनुसंधान** का शाब्दिक अर्थ है– **लक्ष्य का अनुगामी** दूसरे शब्दों में अनुसंधान एक वैज्ञानिक खोज है, जो क्रमबद्ध प्रयासों द्वारा ईमानदारी के साथ बुद्धिपूर्वक पूर्णरूपेण की जाती है। अनेक मनोवैज्ञानिकों ने अनुसंधान की अनेक परिभाषाएँ दी हैं, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं–

1. वेबस्टर अन्तर्राष्ट्रीय शब्दकोश के अनुसार–

अनुसंधान केवल सत्य के लिए खोज मात्र नहीं है, अपितु यह दीर्घकालीन सघन एवं सोद्देश्य अनुसंधान है।

2. जेम्स ड्रेवर के अनुसार–

ज्ञान की खोज अथवा सिद्धि के लिए किया जाने वाला क्रमबद्ध वैज्ञानिक खोज ही अनुसंधान कहलाता है।

3. रैडमैन तथा मौरी के अनुसार–

नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिए क्रमबद्ध प्रयत्न को अनुसंधान कहते हैं।

4. जॉन डब्ल्यू. बेस्ट के अनुसार–

अनुसंधान अधिक औपचारिक, व्यवस्थित तथा गहन प्रक्रिया है, जिसमें वैज्ञानिक विधि विश्लेषण को प्रयुक्त किया जाता है। अनुसंधान में व्यवस्थित स्वरूप को सम्मिलित किया जाता है जिसके फलस्वरूप निष्कर्ष प्राप्त किये जाते हैं और उनका औपचारिक आलेख तैयार किया जाता है।

5. पी. एम. कुक के अनुसार–

अनुसंधान किसी समस्या के प्रति ईमानदारी एवं व्यापक रूप में समझदारी के साथ की गई खोज है, जिसमें तथ्यों, सिद्धान्तों तथा अर्थों की जानकारी दी जाती है। अनुसंधान की उपलब्धि तथा निष्कर्ष प्रामाणिक तथा पुष्टि योग्य होते हैं, जिससे ज्ञान में वृद्धि होती है।

6. मुनरो के अनुसार–

अनुसंधान को समस्याओं के अध्ययन की पद्धति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिनके सुझाव आंशिक या पूर्ण रूप से तथ्यों से प्राप्त किये जाते हैं। अनुसंधान के तथ्य चाहे विचार के वक्तव्य हों, ऐतिहासिक हों, उनका अभिलेख एवं प्रतिवेदन हो, परिणाम परीक्षा पर हों, उत्तर प्रश्नावली, प्रयोगात्मक आँकड़ों या किसी अन्य तथ्य से प्राप्त हुए हों।

18.3 अनुसंधान की विशेषताएँ

अनुसंधान की परिभाषाओं पर विचार करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अनुसंधान किसी भी समस्या के क्रमबद्ध अध्ययन की प्रक्रिया मात्र है। इस प्रकार के अनेक पद हैं, जिनमें समस्या का चुनाव, प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण तथा उनसे फल प्राप्ति के पद प्रमुख हैं। अनुसंधान की प्रमुख विशेषताओं को निम्न रेखाचित्र द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है–

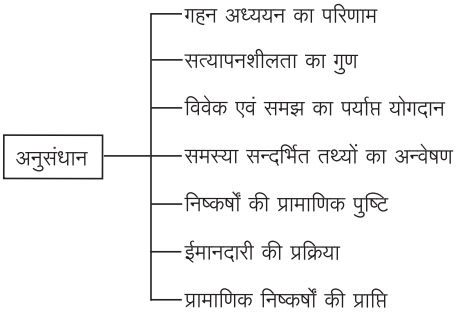

18.4 शैक्षिक अनुसंधान का अर्थ

शिक्षा का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। इसके अन्तर्गत केवल पठन-पाठन ही नहीं है, अपितु पठन-पाठन से सम्बन्धित जितनी भी समस्याएँ हैं, उतनी ही शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र का निर्माण कराती हैं। छात्र और अध्यापक, अध्यापकों का स्तर, समाज और अध्यापक, पाठ्यक्रम और तो और विद्यालय के भवन तथा फर्नीचर भी शैक्षिक अनुसंधान के विषय हैं। ट्रेवर्स के अनुसार–

संस्थाओं में किया गया शैक्षिक अनुसंधान सम्पूर्ण रूप से ज्ञान का विकास करता है और स्थानीय समस्या को हल करने के बाद दूसरी समस्या हल करनी पड़ती है और इस प्रकार अनेक सम्बन्धित समस्याओं की शृंखला बनती चली जाती है। संस्थागत शैक्षिक अनुसंधान में इस प्रकार की विशेषता नहीं है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

18.5 शैक्षिक अनुसंधान की परिभाषाएँ

शैक्षिक अनुसंधान की परिभाषाएँ शिक्षाविदों द्वारा निम्न प्रकार की गई हैं–

1. मुनरो के अनुसार–

शैक्षिक अनुसंधान का चरम उद्देश्य है–शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्तों तथा विधियों का प्रतिपादन करना।

2. ट्रेवर्स के अनुसार–

शैक्षिक अनुसंधान एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा शैक्षिक परिस्थितियों में नवीन व्यवहारों का विकास होता है।

18.6 शैक्षिक अनुसंधान के प्रकार

शैक्षिक अनुसंधान तीन प्रकार के होते हैं–

1. ऐतिहासिक अनुसंधान

ऐतिहासिक समस्याओं के अन्वेषण में वैज्ञानिक विधि का प्रयोग ऐतिहासिक अनुसंधान है। इसमें एक सुनियोजित विधि एवं प्रवृत्ति के मापदण्ड की आवश्यकता होती है। यह अतीत की घटनाओं, विकास-क्रमों तथा अनुभवों का विशिष्ट अन्वेषण होता है, जिसमें अतीत से सम्बन्धित सूचनाओं के साधन तथा प्राप्त सन्तुलित विवेचना की वैधता का सावधानीपूर्वक परीक्षण किया जाता है। जॉन डब्ल्यू. बेस्ट के अनुसार–

ऐतिहासिक अनुसंधान ऐतिहासिक समस्याओं का वैज्ञानिक विधियों द्वारा अध्ययन है।

2. प्रयोगात्मक अनुसंधान

प्रयोगात्मक अनुसंधान में प्रयोगशाला के माध्यम से नियन्त्रित दशाओं में परिणाम निकाले जाते हैं। जॉन डब्ल्यू. बेस्ट के अनुसार–

प्रयोगात्मक पद्धति इस बात का वर्णन व विश्लेषण करती है कि क्या होगा? या सावधानीपूर्वक नियन्त्रित की गई दशाओं में क्या घटित हो सकता है।

3. विवरणात्मक अनुसंधान

विवरणात्मक अनुसंधान वर्तमान से सम्बन्धित होता है और अनुशासन के अन्तर्गत घटना के स्तर को निर्धारित करता है। यह प्रयोगात्मक अनुसंधान की अपेक्षा वास्तविक है। जॉन डब्ल्यू. बेस्ट के अनुसार–

इसका सम्बन्ध विद्यमान दशाओं तथा सम्बन्धों एवं विकसित होने वाली प्रचलित परम्पराओं, विश्वासों, मनोदशाओं, प्रचलित प्रक्रियाओं, अनुभव किये जाने वाले प्रभावों अथवा व्यवहारों से होता है।

18.7 क्रियात्मक अनुसंधान का अर्थ

क्रियात्मक अनुसंधान विद्यालयों एवं महाविद्यालयों की कार्य-प्रणाली में सुधार एवं परिवर्तन लाने के लिए एक महत्त्वपूर्ण विधि है। क्रियात्मक अनुसंधान दो शब्दों का योग है– **क्रियात्मक+अनुसंधान** अर्थात् क्रियात्मक अनुसंधान व्यक्ति के क्रियात्मक पक्षों से सम्बन्धित है। अपने सामान्य अर्थ में किसी व्यक्ति द्वारा अपनी क्रियाओं को सुधारने की विधियाँ खोजना क्रियात्मक अनुसंधान है। यदि किसी व्यक्ति को स्वयं के कार्यों में किसी अवरोध का अनुभव होता है और अपनी कार्य-विधि में सुधार करता है जब यह कार्य अनुसंधान की वैज्ञानिक विधि से किया जाता है अर्थात् अवरोधों का वस्तुनिष्ठ ढंग से निरीक्षण किया जाता है और अवरोध को स्पष्ट रूप से समझा जाता है अवरोध से सम्बन्धित तथ्यों का संकलन किया जाता है और इसके कारणों का विश्लेषण किया जाता है और उसके आधार पर क्रियाओं में सुधार की विधियों की कल्पना की जाती है। इन उपकल्पनाओं का परीक्षण होता है और अन्त में इस निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है कि क्या बदलाव करना है और क्या नहीं, तो इसे क्रियात्मक अनुसंधान कहा जाता है।

18.8 क्रियात्मक अनुसंधान की परिभाषाएँ

क्रियात्मक अनुसंधान के अर्थ को विभिन्न दृष्टिकोणों से स्पष्ट करने के लिए हम विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएँ प्रस्तुत कर रहे हैं–

1. गुड के अनुसार–

क्रियात्मक अनुसंधान, शिक्षकों, निरीक्षकों और प्रशासकों द्वारा अपने निर्णयों और कार्यों की गुणात्मक उन्नति के लिए प्रयोग किया जाने वाला अनुसंधान है।

2. कोरे के अनुसार–

शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान, कार्यकर्ताओं द्वारा किया जाने वाला अनुसंधान है ताकि वे अपने कार्यों में सुधार कर सके।

3. स्टीफन के अनुसार–

शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान कार्यकर्ताओं द्वारा किया जाने वाला अनुसंधान है, ताकि वे अपने कार्य में सुधार कर सकें।

4. मैकग्रेथ के अनुसार–

क्रियात्मक अनुसंधान एक प्रकार की संगठित खोजपूर्ण प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य व्यक्ति अथवा समूह की क्रिया में परिवर्तन तथा विकास करने के लिए अध्ययन करना तथा रचनात्मक सुझाव प्रस्तुत करना है।

5. जेन फ्रांसेथ के अनुसार–

क्रियात्मक अनुसंधान व्यक्ति या समूह द्वारा अपने कार्य में आई हुई समस्याओं का समाधान प्राप्त करने के लिये, विधिपूर्वक किया जाने वाला अध्ययन है। इसका उद्देश्य अपने कार्यक्षेत्र की उपलब्धियों में वृद्धि लाना है।

6. मौले के अनुसार–

शिक्षक के समक्ष उपस्थित होने वाली समस्याओं में से अनेक तत्काल ही समाधान चाहती हैं। मौके पर किये जाने वाला अनुसंधान, जिसका उद्देश्य तात्कालिक समस्या का समाधान होता है, शिक्षा में साधारणतया क्रियात्मक अनुसंधान के नाम से जाना जाता है।

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट हो जाता है कि क्रियात्मक अनुसंधान में व्यवहार पक्ष पर बल दिया जाता है। इसके द्वारा अध्यापक की अध्यापन प्रक्रिया में, विद्यालय की प्रशासकीय तथा शैक्षणिक प्रक्रियाओं में उपयुक्त परिवर्तन, संशोधन तथा सुधार लाने का प्रयास किया जाता है। क्रियात्मक अनुसंधान में निम्नलिखित दो प्रमुख बातें हैं–

1. व्यक्ति स्वयं ही अपनी समस्याओं का समाधान एवं निराकरण करता है।
2. क्रियात्मक अनुसंधान उसी स्थिति में होता है, जब किसी समस्या का समाधान करने के लिये शोध की आवश्यकता पड़ती है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

18.9 क्रियात्मक अनुसंधान की विशेषताएँ

1. क्रियात्मक अनुसंधान, विद्यालय की वास्तविक परिस्थितियों का सामाजिक परिस्थितियों में किया जाता है।
2. क्रियात्मक अनुसंधान का ध्यान केवल एक परिस्थिति पर नहीं होता बल्कि अनेकों परिस्थितियों पर केन्द्रित रहता है।
3. क्रियात्मक अनुसंधान का ध्यान सम्पूर्ण परिस्थिति पर नहीं होकर उसके किसी विशेष अंग पर केन्द्रित रहता है।
4. क्रियात्मक अनुसंधान अन्य परिस्थितियों के सम्बन्ध में किसी प्रकार का सामान्यीकरण स्थापित नहीं करता है।
5. क्रियात्मक अनुसंधान विभिन्न प्रकार की सामग्री तथा सूचनाओं को एकत्र करने के लिए साधनों का निर्माण करता है।
6. क्रियात्मक अनुसंधान करने वालों के मस्तिष्क में अपनी स्वयं की विधियों में सुधार करने का विचार हमेशा विद्यमान रहता है।
7. क्रियात्मक अनुसंधान के परिणामों को कार्यान्वित करने वाले व्यक्ति उसमें शुरू से अन्त तक सक्रिय भाग लेते हैं।
8. क्रियात्मक अनुसंधान उस समय की प्रगति की मात्रा को निश्चित करने का प्रयत्न करता है, जिसके सम्बन्ध में वह अध्ययन करता है।
9. क्रियात्मक अनुसंधान में विद्यालय के शिक्षक, प्रशासक तथा निरीक्षक एवं कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों के अध्यापक साधारणतः एक-दूसरे के सहयोग से कार्य करते हैं।
10. क्रियात्मक अनुसंधान में विद्यालय के समय उद्देश्यों में परिवर्तन, नवीन उपकल्पनाओं का निर्माण तथा उनका परीक्षण किया जा सकता है।

अतः हम एण्डरसन के शब्दों में कह सकते हैं कि–

क्रियात्मक अनुसंधान की एक सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है– प्रेरणा, जो वह शिक्षकों, निरीक्षकों और प्रशासकों को परिणामों का अधिक आत्मनिष्ठ और आकस्मिक मूल्यांकन का त्याग करने और विचारों का परीक्षण करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रमाणों का अधिक वस्तुनिष्ठ संग्रह करने के लिए देता है।

18.10 क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्य

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अपने ढंग से क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्यों को व्यक्त किया है, जो निम्नलिखित है–

1. विद्यालय के कार्याभ्यास में उन्नति

सभी विद्यालयों की मौलिक समस्याएँ ऐसी होती हैं, जिनका सम्बन्ध विद्यालयों के कर्मचारियों से होता है। विद्यालय के कर्मचारियों द्वारा प्रयुक्त कार्यविधियाँ किस सीमा तक प्रभावशाली हैं, इसका परीक्षण क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा किया जाता है। क्रियात्मक अनुसंधान से विद्यालय की कार्यविधि में उन्नति एवं कुशलता अर्जित की जा सकती है।

2. शिक्षकों की उन्नति

शिक्षक शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग है। उसका पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि तथा विद्यार्थियों से सीधा सम्पर्क रहता है। छात्रों की समस्याओं का अध्ययन करने का उसे उचित अवसर मिलता है। क्रियात्मक अनुसंधान के सहयोग से वह छात्रों एवं स्वयं की बुराइयों का निराकरण कर स्वयं एवं छात्रों को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर कर सकता है। बेस्ट के अनुसार, शिक्षक की प्रगति, विचार शक्ति, व्यावसायिक भावना और दूसरों के साथ मिलकर कार्य करने की योग्यता में क्रियात्मक अनुसंधान वृद्धि कर सकता है।

3. पाठ्यक्रम का विकास

क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा पाठ्यक्रम की पूर्णता एवं अपूर्णता का अध्ययन किया जाता है एवं इससे उसकी कमियों पर विचार करके उसे परिष्कृत किया जाता है। पाठ्यक्रम शिक्षा के उद्देश्यों की भी पूर्ति करने में सफल है या नहीं इसका पता क्रियात्मक अनुसंधान से चलता है।

4. झिझक दूर करना

क्रियात्मक अनुसंधान सामान्यतया समस्याग्रस्त व्यक्तियों द्वारा सम्पन्न किये जाते हैं। अतः इनके परिणामों को अर्जित या प्राप्त करके क्रियान्वित करने में किसी भी तरह की झिझक नहीं होती।

5. व्यवहार में परिवर्तन

क्रियात्मक अनुसंधान का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य अध्यापकों तथा विद्यार्थियों के अन्तर्गत व्यावहारिक परिवर्तन करता है। इसके माध्यम से विद्यालय संगठन तथा प्रशासन, शिक्षण पद्धति, परीक्षा प्रणाली आदि में विद्यमान समस्याओं का निराकरण खोजकर व्यवहार में परिवर्तन करना है।

6. प्रशासकों एवं निरीक्षकों के ज्ञान में वृद्धि

क्रियात्मक अनुसंधान का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य शिक्षा से सम्बद्ध पदाधिकारियों जैसे– प्रशासकों, मैनेजरों एवं निरीक्षकों के कार्य, दिशा एवं पद्धति के ज्ञान में वृद्धि करना हैं। क्रियात्मक अनुसंधान के निष्कर्षों से वे सहजतापूर्वक कमजोर स्थलों के अभावों को निराकरित कर कुशलता में वृद्धि कर सकते हैं।

18.11 क्रियात्मक अनुसंधान का शैक्षिक महत्त्व

आधुनिक युग में क्रियात्मक अनुसंधान एक ऐसी विधि है, जिसके अन्तर्गत शिक्षा के क्षेत्र में उत्पन्न समस्याओं का वैज्ञानिक विधि से अध्ययन किया जाता है। प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर समस्याओं का निराकरण करते हैं। अतः इसका अत्यधिक महत्त्व है, जिसे निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है–

1. विद्यालय के क्रिया-कलाप में वांछित सुधार करना

क्रियात्मक अनुसंधान के सहयोग से अध्यापक, प्राचार्य, प्रबन्धक और निरीक्षक आदि अपने विद्यालय में विद्यमान समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त करके उनके निदान का उपाय ढूँढ़ते हैं और विद्यालय की कार्य-प्रणाली में वांछित सुधार करते हैं।

2. विद्यालय में व्याप्त यान्त्रिकता एवं रूढ़िवादितापूर्ण वातावरण का अन्त करना

हमारे विद्यालयों में परम्परागत शिक्षण विधियों एवं शिक्षा सिद्धान्तों के आधार पर ही अध्ययन किया जाता था। अध्यापक इनमें किसी भी तरह की नवीनता नहीं लाता था, लेकिन आधुनिक युग में क्रियात्मक अनुसंधान के प्रयोग में वृद्धि होने के कारण उनमें जरूरत के मुताबिक बदलाव आ रहा है और यान्त्रिकता तथा रूढ़िवादिता का बादल ढल रहा है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

3. विद्यालय के घटकों में वैज्ञानिक प्रवृत्ति विकसित करने में सहायक

क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा विद्यालय के घटकों, जैसे– अध्यापक, प्राचार्य, प्रबन्धक एवं निरीक्षकों आदि में वैज्ञानिक प्रवृत्ति का विकास होता है।

4. छात्रों के चतुर्मुखी विकास में सहायक

विद्यालय के प्रमुख घटक क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा विद्यालय की समस्याओं का गहनतापूर्वक अध्ययन करते हैं एवं उनके निदान हेतु नवीन ज्ञान खोज निकालते हैं। यह प्रत्येक क्षेत्र में छात्रों का समुचित विकास करने के लिए विद्यालय की क्रियाओं को प्रभावशाली ढंग से आयोजित करते हैं।

5. राष्ट्र के उत्थान में सहायक

प्रत्येक राष्ट्र का उत्थान उस राष्ट्र की शैक्षिक प्रगति पर निर्भर करता है। शिक्षा की प्राप्ति के लिए उसकी समस्याओं को दूर करना एवं नवीनतम एवं उपयोगी शिक्षण की खोज करना क्रियात्मक अनुसंधान का ही कार्य है। इस तरह क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षा की प्रगति में सहयोग करके राष्ट्र के उत्थान में सहायक होता है।

6. विद्यालय की उपलब्धि की वृद्धि में सहायक

क्रियात्मक अनुसंधान के माध्यम से शिक्षा सम्बन्धी विभिन्न समस्याओं का अध्ययन करके उनका निराकरण खोजा जाता है। परीक्षाओं में अत्यधिक असफलता के कारणों का पता लगाकर, उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाता है, जिससे विद्यालय की उपलब्धि में वृद्धि होती है।

7. अध्यापकों में परस्पर सहयोग एवं प्रेमपूर्वक कार्य करने में सहायक

विद्यालय की चारदीवारी के अन्दर क्रियात्मक अनुसंधान के अनेक महत्त्व हैं। जैस– शिक्षक, प्राचार्य, प्रबन्धक एवं निरीक्षक आदि के मध्य सहयोग एवं प्रेमपूर्वक कार्य करने की नसीहत देना, जिसके फलस्वरूप उनमें आपसी माधुर्य बढ़ता है।

8. विद्यालय में सामाजिक कुशलता का विकास करने में सहायक

आधुनिक शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य छात्रों में सामाजिक कुशलता की भावना का विकास करना है, क्योंकि छात्र देश के भावी कर्णधार होते हैं। अतः उनमें कुशल सामाजिकता एवं आदर्श नागरिकता का विकास करना आवश्यक है। यह कार्य विद्यालय ही कर सकता है। क्रियात्मक अनुसंधान इस कार्य में सहायक होता है।

18.12 क्रियात्मक अनुसंधान के सोपान

एण्डरसन के अनुसार क्रियात्मक अनुसंधान की प्रणाली में सात सोपानों का होना अनिवार्य है, ये निम्नलिखित हैं–

1. समस्या का ज्ञान
2. कार्य के प्रति प्रस्तावों पर विचार–विमर्श
3. योजना का चयन व उपकल्पना का निर्माण
4. तथ्य–संग्रह करने की विधियों का निर्माण
5. योजना का कार्यान्वयन एवं प्रमाणों का संकलन
6. तथ्यों पर आधारित निष्कर्ष
7. दूसरों को परिणामों की सूचना

अब सभी सोपानों पर बारी-बारी से विचार कर रहे हैं, जो इस प्रकार हैं–

1. समस्या का ज्ञान

क्रियात्मक अनुसंधान का पहला सोपान है– विद्यालय में उपस्थित होने वाली समस्या को अच्छी तरह समझना। यह तभी सम्भव हो सकता है, जब विद्यालय के शिक्षक, प्रधानाचार्य इत्यादि उसके सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करें। इस तरह करके ही वे वास्तविक समस्या को समझकर अपने कार्य को आगे बढ़ा सकते हैं।

2. कार्य के लिए प्रस्तावों पर विचार विमर्श–

यह क्रियात्मक अनुसंधानों का दूसरा सोपान है– समस्या को अच्छी तरह समझने के बाद इस बात पर विचार करना कि उसके कारण क्या हैं तथा उसका निराकरण करने के लिए कौन से कार्य किये जा सकते हैं? शिक्षक, प्रधानाचार्य, प्रबन्धक इत्यादि इन कार्यों के सम्बन्ध में अपने-अपने प्रस्ताव या सुझाव देते हैं। उसके बाद वे अपने विश्वासों, सामाजिक मूल्यों, विद्यालयों के उद्देश्यों इत्यादि को ध्यान में रखकर उन पर विचार–विमर्श करते हैं।

3. योजना का चयन एवं उपकल्पना का निर्माण

यह क्रियात्मक अनुसंधान का तीसरा सोपान कहलाता है– विचार-विमर्श के फलस्वरूप समस्या का निराकरण करने के लिए एक योजना का चुनाव तथा उपकल्पना का निर्माण करना। इसके लिए विचार-विमर्श करने वाले सब व्यक्ति संयुक्त रूप से उत्तरदायी होते हैं।

उपकल्पना में तीन बातों का सविस्तार वर्णन किया जाता है–

1. समस्या का निराकरण करने के लिए अपनाई जाने वाली योजना
2. योजना का परीक्षण
3. योजना द्वारा प्राप्त किया जाने वाला उद्देश्य

उदाहरणार्थ, एक उपकल्पना इस प्रकार की हो सकती है–

यदि प्रत्येक कक्षा में विभिन्न प्रकार की शिक्षण-सामग्री का प्रयोग किया जाय, तो बालकों को अधिक और अच्छी शिक्षा दी जा सकती है।

यही समस्या है– बालकों को अधिक तथा अच्छी शिक्षा किस प्रकार दी जा सकती है। इसका समाधान करने के लिए अपनाई जाने वाली योजना है– प्रत्येक कक्षा में विभिन्न प्रकार की शिक्षण-सामग्री का प्रयोग। योजना बनाने वालों को इस बात का विश्वास है कि शिक्षण-सामग्री के प्रयोग से अधिक अच्छी शिक्षा दी जा सकती है। अतः वे इस योजना का परीक्षण करना चाहते हैं। योजना द्वारा प्राप्त किया जाने वाला उद्देश्य है– बालकों को अधिक तथा अच्छी शिक्षा देना।

4. तथ्य संग्रह करने की विधियों का निर्माण

यह क्रियात्मक अनुसंधान का चौथा सोपान कहलाता है– योजना को कार्यान्वित करने के बाद तथ्यों या प्रमाणों का संग्रह करने की विधियाँ निश्चित करना। इन विधियों की सहायता से जो तथ्य संग्रह किये जाते हैं, उनमें यह अनुमान लगाया जाता है कि योजना का क्या प्रभाव पड़ रहा है? उदाहरणार्थ, विभिन्न प्रकार की शिक्षण सामग्री का प्रयोग किये जाने के समय निम्नलिखित चार विधियों का प्रयोग करके यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पढ़ाई पहले से अधिक तथा अच्छी हो रही है या नहीं–

1. शिक्षक द्वारा प्रत्येक घण्टे में पढ़ाई जाने वाली विषय–सामग्री का लेखा रखा जाना।
2. प्रश्नावली का प्रयोग करके छात्रों से उत्तर प्राप्त करना।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

3. विभिन्न छात्रों से साक्षात्कार करना।
4. विभिन्न कक्षाओं से छात्रों का मत-संग्रह करना।

5. योजना का कार्यान्वयन व प्रमाणों का संकलन

यह क्रियात्मक अनुसंधान का पाँचवाँ सोपान कहलाता है। निश्चित की गयी योजना को कार्यान्वित करना तथा उसकी सफलता या असफलता के सम्बन्ध में प्रमाणों या तथ्यों का संकलन करना। योजना से सम्बन्धित सभी व्यक्ति चौथे सोपान में निश्चित की गई विधियों की सहायता से तथ्यों का संग्रह करते हैं। वे समय-समय पर एकत्र होकर इन तथ्यों के विषय में विचार–विमर्श करते हैं। इसके आधार पर वे योजना के स्वरूप में परिवर्तन करते हैं, ताकि उद्देश्य की प्राप्ति सम्भव हो सके। उदाहरणार्थ, प्रत्येक कक्षा में प्रयोग की जाने वाली शिक्षण-सामग्री को वे कम, अधिक या परिवर्तित कर सकते हैं।

6. तथ्यों पर आधारित निष्कर्ष

यह क्रियात्मक अनुसंधान का छठवाँ सोपान कहलाता है– योजना की समाप्ति के बाद संग्रह किए हुए तथ्यों या प्रमाणों से निष्कर्ष निकालना। उदाहरणार्थ, प्रत्येक कक्षा में विभिन्न प्रकार की शिक्षण-सामग्री का प्रयोग करने से बालकों को अधिक तथा अच्छी शिक्षा दी गई या नहीं। इस तरह निकाले जाने वाले निष्कर्ष उसी विद्यालय के होते हैं, जहाँ क्रियात्मक अनुसंधान किया जाता है। कुछ निष्कर्ष इस तरह के होते हैं, जिनकी कल्पना भी नहीं की जाती है। उक्त उदाहरण में एक निष्कर्ष यह भी हो सकता है कि एक विशेष प्रकार की शिक्षण-सामग्री अधिक तथा अच्छी शिक्षा देने में विशेष उपयोगी सिद्ध हुई है।

7. दूसरों को परिणामों की सूचना

यह क्रिया अनुसंधान का सातवाँ तथा अन्तिम सोपान कहलाता है– दूसरे व्यक्तियों को योजना के परिणामों की सूचना देना। उदाहरणार्थ अगर उक्त योजना, विद्यालय के कुछ ही शिक्षकों द्वारा निर्मित तथा कार्यान्वित की गई है, तो उसके परिणामों की सूचना विद्यालय के शेष शिक्षकों को दी जानी आवश्यक होती है। इन परिणामों से दूसरे विद्यालय के शिक्षकों को भी अवगत कराया जाना चाहिए। इसकी आवश्यकता बताते हुए एण्डरसन ने कहा है कि–

> विद्यालय के लोगों को इस बात में रूचि होती है कि अनुसंधान किस प्रकार किया जाता है और उसके क्या परिणाम हैं? परिणामतः जो व्यक्ति क्रियात्मक अनुसंधान करते हैं, उन पर उसकी सूचना देने का उत्तरदायित्व है।

18.13 क्रियात्मक अनुसंधान का क्षेत्र

क्रियात्मक अनुसंधान का मुख्य कार्य विद्यालय की समस्याओं का निराकरण करके उसकी गुणात्मक उन्नति करना है। अतः इसका क्षेत्र बहुत ही व्यापक है तथा इसमें निम्नलिखित समस्याओं को स्थान दिया जा सकता है–

1. बाल–व्यवहार से सम्बन्धित समस्याएँ

इन समस्याओं का सम्बन्ध केवल छात्रों से होता है, जैसे– चोरी करना, विद्यालय न आना, देर में आना या भाग जाना, विद्यालय की सम्पत्ति को हानि पहुँचाना, कक्षा में शोर मचाना, शरारत करना, यौन अपराध करना, एक दूसरे के लड़ना, झगड़ना या मारपीट करना आदि ।

2. शिक्षण से सम्बन्धित समस्याएँ

इन समस्याओं का सम्बन्ध छात्रों तथा शिक्षकों दोनों से होता है, जैसे– छात्रों का पाठ्य-विषयों को नहीं समझना या उनमें रूचि नहीं लेना, गृह कार्य या लिखित कार्य नहीं करना, वाचन, उच्चारण इत्यादि की ओर ध्यान नहीं देना। अपने विचारों को व्यक्त करने का अवसर नहीं पाना, शिक्षकों का उपयुक्त शिक्षण-विधियों को नही अपनाना, शिक्षण के लिए पूरी तैयारी नहीं करना, शिक्षण के लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण नहीं कर पाना, छात्रों तथा शिक्षकों में अच्छे सम्बन्ध का नहीं होना, आदि।

3. परीक्षा से सम्बन्धित समस्याएँ

इन समस्याओं का सम्बन्ध प्रायः छात्रों से होता है, जैसे– परीक्षा-प्रणाली का विश्वसनीय, प्रामाणिक तथा वस्तुनिष्ठ नहीं होना, निबन्धात्मक प्रकार की परीक्षाओं के कारण छात्रों की वास्तविक उपलब्धियों का मूल्यांकन नहीं हो पाना, निदानात्मक परीक्षणों का निर्माण तथा प्रयोग नहीं किया जाए, उपलब्ध परीक्षणों के प्रयोग की सुविधा नहीं होना, छात्रों द्वारा चयन किये जाने के लिए प्रश्न-पत्रों में अधिक प्रश्न नहीं होना, परीक्षा तथा शिक्षण में समन्वय नहीं होना आदि।

4. पाठान्तर–क्रियाओं से सम्बन्धित समस्याएँ

इन समस्याओं का सम्बन्ध छात्रों, शिक्षकों तथा प्रधानाचार्य से होता है, जैसे– पाठान्तर-क्रियाओं के लिए पर्याप्त साधन का नहीं होना, इन क्रियाओं का विधिवत आयोजन नहीं किया जाना, इन क्रियाओं तथा पाठ्यक्रम में उचित सम्बन्ध तथा सन्तुलन का नहीं होना, इन क्रियाओं को विद्यालय के लिए भार तथा आडम्बर समझा जाना, इन क्रियाओं के लिए प्रधानाचार्य द्वारा काफी समय नहीं दिया जाना, इन क्रियाओं के प्रति शिक्षकों का उदासीन रहना, इन क्रियाओं को छात्रों के समय का अपव्यय समझना, उत्साही छात्रों को अपनी रूचियों के अनुसार विभिन्न प्रकार की पाठान्तर क्रियाओं में भाग लेने का अवसर नहीं मिलना आदि।

5. विद्यालय–संगठन एवं प्रशासन से सम्बन्धित समस्याएँ

इन समस्याओं का सम्बन्ध प्रायः विद्यालय प्रबन्धक तथा प्रशासक से होता है, जैसे– विद्यालय में भावात्मक एकता का अभाव होना, विद्यालय-स्तर का उन्नयन करने में असफल होना, विद्यालय के कक्षों का स्वच्छ तथा हवादार नहीं होना, कक्षा में स्थान तथा फर्नीचर का अभाव होना, शिक्षण परीक्षाओं तथा पाठान्तर-क्रियाओं में उचित समन्वय का नहीं होना, कला, विज्ञान, भूगोल, इतिहास इत्यादि के शिक्षण के लिए पर्याप्त उपयुक्त उपकरणों का अभाव होना, पुस्तकालय, वाचनालय तथा प्रयोगशाला की उत्तम व्यवस्था का नहीं होना, शिक्षकों में पारस्परिक सहयोग तथा सहानुभूति की भावना का अभाव होना, छात्रों का अनुशासनहीन होना, छात्र-संघ तथा अध्यापक के कार्यों पर नियन्त्रण का नहीं होना, आदि।

18.14 क्रियात्मक अनुसंधान के दोष

मौले ने क्रियात्मक अनुसंधान में निम्नलिखित मुख्य दोषों की ओर संकेत किया है–

1. क्रियात्मक अनुसंधान में श्रेष्ठता और उत्तम गुण का अभाव होता है,

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

क्योंकि शिक्षक, निरीक्षक आदि को अनुसंधान करने का कोई अनुभव या प्रशिक्षण नहीं होता है।

2. क्रियात्मक अनुसंधान करने वाले शिक्षक, निरीक्षक आदि अनुसंधान की वैज्ञानिक विधि से अनभिज्ञ होने के कारण समस्या और उसके कारणों को पूर्ण रूप से नहीं समझ पाते हैं। अतः वे उसका वास्तविक हल खोजने में असमर्थ होते हैं।
3. क्रियात्मक अनुसंधान करने वाले शिक्षक, निरीक्षक आदि का विद्यालय की समस्याओं से इतना सम्बन्ध होता है कि उनका समाधान करते समय वे अपने को वैयक्तिक कारकों से पूर्णतया पृथक् करने में असफल होते हैं।
4. क्रियात्मक अनुसंधान का आधार एक विशेष विद्यालय की एक विशेष परिस्थिति में एक विशेष समस्या होती है। इस समस्या का हल खोजने वाला शिक्षक दूसरे विद्यालय में जाने के बाद वहाँ उसका प्रयोग नहीं कर पाता है।
5. क्रियात्मक अनुसंधान का भार उन शिक्षकों को वहन करना पड़ता है, जो पहले से ही शिक्षण के भार से दबे रहते हैं। परिणामतः वे अपना पूर्ण ध्यान न तो अनुसंधान के प्रति दे पाते हैं और न ही शिक्षण के प्रति।
6. ऐसे अनुसंधानों में मूल अनुसंधान की तरह अध्ययन समस्या के प्रति कठोर नियन्त्रण नहीं रहता। इसके द्वारा अध्ययन में अधिक से अधिक केवल प्रयुक्त नियन्त्रण की ही मात्रा रहती है।
7. सामान्य वैज्ञानिक अनुसंधानों में सामान्यीकरण की प्रमुख विशेषता पायी जाती है, परन्तु ऐसे अनुसंधानों में सामान्यीकरण का प्रायः अभाव रहता है।

निष्कर्ष रूप में हम मौले के शब्दों में कह सकते हैं अपने दोषों के बावजूद भी क्रियात्मक अनुसंधान को निःसन्देह प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। शिक्षकों को अपनी समस्याओं में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। क्रियात्मक अनुसंधान के कारण कक्षा कक्ष की अनेक समस्याओं का समाधान हुआ है और इसने विज्ञान के रूप में शिक्षा की प्रगति में योगदान दिया है।

18.15 क्रियात्मक व मौलिक अनुसंधान में अन्तर

क्रियात्मक अनुसंधान और मौलिक अनुसंधान में विभिन्न आधारों पर पर्याप्त अन्तर दिखाई देता है। मौलिक अनुसंधान को परम्परागत अनुसंधान भी कहा गया है। मौलिक अनुसंधान के उद्देश्य, क्षेत्र तथा अनुसंधानकर्ताओं के दृष्टिकोण और कार्य-प्रणाली में व्यापकता होती है, जबकि क्रियात्मक अनुसंधान का क्षेत्र, उद्देश्य तथा अन्य बातें सीमित होती हैं। क्रियात्मक अनुसंधान और मौलिक अनुसंधान में भेदों को नीचे स्पष्ट किया गया है–

क्र. सं.	क्रियात्मक अनुसंधान	मौलिक अनुसंधान
1.	इस अनुसंधान द्वारा विद्यालय की गतिविधियों में सुधार एवं प्रगति को ओर ध्यान दिया जाता है।	इसमें चरम तथ्यों की खोज की ओर ध्यान दिया जाता है।
2.	क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षक, प्रशासक तथा निरीक्षकों में वैज्ञानिक प्रवृत्ति जाग्रत करता है।	मौलिक अनुसंधान ने शिक्षा के क्षेत्र में नये सिद्धान्तों की खोज करने में सहायता की है।
3.	यह उसी विद्यालय से सम्बन्धित रहता है, जहाँ अनुसंधानकर्ता कार्य करता है।	समस्या का क्षेत्र व्यापक होता है।
4.	विद्यालय के छात्रों तक न्यादर्श रहता है।	न्यादर्श जनसंख्या पर आधारित होता है।
5.	क्रियात्मक अनुसंधान समस्त व्यावहारिक कठिनाईयों से सम्बन्धित होता है।	इसमें समस्या सैद्धान्तिक कठिनाईयों के अधिक निकट होती है।
6.	इसमें सामान्यीकरण की आवश्यकता नहीं होती।	मौलिक अनुसंधान में सामान्यीकरण अनावश्यक है।
7.	अनुसंधान की रूपरेखा में समय के अनुसार परिवर्तन किया जा सकता है।	अनुसंधान की रूपरेखा निश्चित तथा अपरिवर्तनशील होती है।
8.	अनुसंधानकर्ता में विशेष योग्यता की आवश्यकता नहीं होती।	अनुसंधानकर्ता में विशेष योग्यता की आवश्यकता होती है।
9.	अनुसंधान का विद्यालय से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रहता है।	विद्यालय से प्रत्यक्ष सम्बन्ध, आवश्यक नहीं है।
10.	चिन्तन तथा कार्य-प्रणाली में परिवर्तन ही इसका लक्ष्य होता है।	अनुसंधान की सफलता, इसकी उपलब्धि व्यावहारिक तथा सामाजिक मान्यताओं से आँकी जाती है।
11.	अनुसंधान की सफलता से विद्यालय की कार्य-पद्धति में उपयोगी परिवर्तन होता है।	नये ज्ञान की प्राप्ति से अपने लक्ष्य की प्राप्ति हो जाती है।

****

अगर आप B.Ed, D.Ed, BSTC या शिक्षण अध्यापन के क्षेत्र में पढ़ाई कर रहे हैं तो आपसे निवेदन है कि निम्नलिखित Whatsapp No. अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में जोड़ें। अगर आपका व्हाट्सएप ग्रुप नहीं बना हुआ है तो कृपया कम से कम 20 विद्यार्थी मिलकर व्हाट्सएप ग्रुप बना लें।

REET - 94604 43210
UPTET - 95301 43210
MP Samvida - 95302 43210
BTET - 95302 43210
UTET - 72209 29294
JTET - 72209 29239
HTET - 72209 29266
CGTET - 72209 28969
HPTET - 72209 28535

आपके क्लास के व्हाट्सएप ग्रुप में शिक्षा संबंधी सभी प्रतियोगी परीक्षा के पेपर्स, मॉडल पेपर्स एवं अन्य अध्ययन सामग्री भेजी जाएगी। आपका शुरू से मार्गदर्शन किया जाएगा, ताकि आप प्रतियोगी परीक्षा में अतिशीघ्र सफलता प्राप्त कर सकें।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

1. क्रियात्मक अनुसंधान है–
(1) बाह्य मूल्यांकन (2) आन्तरिक मूल्यांकन
(3) 1 व 2 दोनों (4) उपरोक्त कोई नहीं

2. क्रियात्मक अनुसन्धान का उद्देश्य है–
(1) नवीन ज्ञान की खोज
(2) शैक्षिक परिस्थितियों में व्यवहार विज्ञान का विकास
(3) विद्यालय तथा कक्षा की शैक्षिक कार्य प्रणाली में सुधार लाना
(4) इनमें से सभी

3. क्रियात्मक अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य है–
(1) सैद्धान्तिक (2) तथ्यात्मक
(3) व्यावहारिक (4) उपरोक्त सभी

4. क्रियात्मक अनुसंधान के प्रवर्तक हैं–
(1) जॉन डब्ल्यू. वेस्ट (2) स्टीफन एम. कोरे
(3) कर्टलीविन (4) कोई नहीं

5. क्रियात्मक अनुसंधान का सर्वप्रथम सूत्रपात किस देश में हुआ?
(1) भारत में (2) रूस में
(3) इटली में (4) अमेरिका में

6. क्रियात्मक अनुसंधान शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किसने किया?
(1) ब्लेयर ने (2) सिम्पसन ने
(3) कोलियर ने (4) स्टीफन कोरे ने

7. क्रियात्मक अनुसंधान को शिक्षा जगत में स्थायी रूप से किसने प्रतिष्ठित किया?
(1) ब्लेयर ने (2) लेविन ने
(3) कोलियर ने (4) स्टीफन एम. कोरे ने

8. क्रियात्मक अनुसंधान सीमित होता है–
(1) विद्यार्थी तक (2) मुहल्ले तक
(3) समाज तक (4) विद्यालय तक

9. हिन्दी शिक्षण में क्रियात्मक अनुसंधान की समस्या है–
(1) शुद्ध उच्चारण (2) शुद्ध लिखना
(3) वाक्य संरचना (4) उपरोक्त सभी

10. क्रियात्मक अनुसंधान का सम्पादन करता है–
(1) शोधकर्ता (2) हिन्दी शिक्षक
(3) 1 व 2 दोनों (4) उपरोक्त कोई नहीं

11. क्रियात्मक अनुसंधान में परिणामों का प्रयोगकर्ता होता है–
(1) निरीक्षक (2) प्रधानाचार्य
(3) शोधकर्ता (4) शिक्षक

12. क्रियात्मक अनुसंधान के निष्कर्षों का रूप होता है–
(1) सामान्यीकरण (2) सिद्धान्त का प्रतिपादन
(3) व्यावहारिक रूप (4) उपरोक्त सभी

13. क्रियात्मक अनुसंधान के लिए क्या आवश्यक है?
(1) प्रख्यात शिक्षक (2) पर्याप्त शिक्षक
(3) परिकल्पना निर्माण (4) कक्षा–कक्ष

14. क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षा जगत् में कब प्रतिष्ठित हुआ?
(1) 1948 में (2) 1953 में
(3) 1955 में (4) 1945 में

15. क्रियात्मक शोध की रूपरेखा होती है–
(1) लचीली (2) नमनीय
(3) कठोर (4) सरल

16. क्रियात्मक शोध में उपकरण प्रयुक्त होता है–
(1) अवलोकन (2) प्रश्नावली
(3) साक्षात्कार (4) उपर्युक्त तीनों

17. क्रियात्मक अनुसंधान हेतु सोपान होते हैं–
(1) 4 (2) 7
(3) 6 (4) 10

18. एण्डरसन के अनुसार, क्रियात्मक अनुसंधान के पद (सोपान) हैं–
(1) 3 (2) 7
(3) 5 (4) 4

19. क्रियात्मक अनुसंधान सम्बन्धित है–
(1) शिक्षक से (2) शिक्षार्थी से
(3) विद्यालय से (4) उपरोक्त सभी से

20. क्रियात्मक अनुसंधान का मूल उद्देश्य है–
(1) समस्या का समाधान ढूँढ़ना (2) नवीन शोध करना
(3) उपाधि प्राप्त करना (4) पुरस्कार प्राप्त करना

21. क्रियात्मक अनुसंधान का प्रयोग शिक्षा में करने का श्रेय किसे जाता है?
(1) रेडमैन को (2) डीवी को
(3) स्टीफन एम. कोरे को (4) स्किनर को

22. **क्रियात्मक अनुसंधान वह अनुसंधान है, जो एक व्यक्ति अपने उद्देश्यों को अधिक उत्तम प्रकार से प्राप्त करने के लिए करता है।** उक्त परिभाषा

1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.	9.	10.	11.	12.	13.	14.	15.	16.	17.	18.	19.	20.	21.	22.
(3)	(4)	(3)	(2)	(4)	(3)	(4)	(4)	(4)	(2)	(3)	(3)	(3)	(2)	(1)	(4)	(2)	(2)	(4)	(1)	(3)	(3)

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

दी है–
(1) कोठारी आयोग ने (2) मुदालियर आयोग ने
(3) रिसर्च इन एजुकेशन ने (4) इनमें से कोई नहीं

23. **शिक्षक के समक्ष उपस्थित होने वाली समस्याओं में से अनेक समस्याएँ तत्काल ही समाधान चाहती हैं। मौके पर किये जाने वाले अनुसंधान जिनका उद्देश्य तात्कालिक समस्या का समाधान होता है, शिक्षा में साधारणतः क्रियात्मक अनुसंधान के नाम से प्रसिद्ध है।** यह कथन है–
(1) मौले का (2) कोरे का
(3) बेंथम का (4) हरबर्ट का

24. **शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान कार्यकर्ताओं के द्वारा किया जाने वाला अनुसंधान है, ताकि वे अपने कार्य में सुधार कर सके।** यह कथन है–
(1) मिलर का (2) कोरे का
(3) एण्डरसन का (4) मौले का

25. निम्न में से क्रियात्मक अनुसंधान का क्षेत्र है–
(1) परीक्षा से सम्बन्धित समस्याएँ
(2) विद्यालय प्रशासन से सम्बन्धित समस्याएँ
(3) बाल व्यवहार से सम्बन्धित समस्याएँ
(4) उपरोक्त सभी

26. क्रियात्मक अनुसंधान की विशेषता नहीं है–
(1) विद्यालय की वास्तविक परिस्थितियों का सामान्यीकरण सामाजिक परिस्थितियों में किया जाता है।
(2) इसका ध्यान अनेक परिस्थितियों पर केन्द्रित रहता है।
(3) यह विभिन्न प्रकार की सामग्री एवं सूचनाओं को एकत्र करने के लिए साधनों का निर्माण करता है।
(4) यह अन्य परिस्थितियों के सम्बन्ध में सामान्यीकरण स्थापित करता है।

27. **क्रियात्मक अनुसंधान की एक सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है–प्रेरणा जो यह शिक्षकों, निरीक्षकों और प्रशासकों को परिणामों का अधिक आत्मनिष्ठ और आकस्मिक मूल्यांकन का त्याग करने और विचारों का परीक्षण करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रमाणों का अधिक वस्तुनिष्ठ संग्रह करने के लिए देता है।** यह कथन है–
(1) एण्डरसन का (2) कोरे का
(3) मौले का (4) मिलर का

28. क्रियात्मक अनुसंधान का गुण है–
(1) क्रियात्मक अनुसंधान में श्रेष्ठता और उत्तम गुण का अभाव होता है।
(2) समस्या का वास्तविक हल खोजने में असमर्थ होता है
(3) इसका व्यापक प्रयोग नहीं किया जा सकता
(4) शिक्षक के व्यवहार, उसके विचार और दृष्टिकोण को सकारात्मक परिवर्तन करता है।

29. **क्रियात्मक अनुसंधान एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा अभ्यासकर्ता अपने निर्णयों का मूल्यांकन करने तथा निर्देशन के लिए समस्याओं का वैज्ञानिक विधि द्वारा अध्ययन करने का प्रयास करते हैं।** यह परिभाषा किसने दी?
(1) लेविन ने (2) एस. एम. कोरे ने
(3) कार्टर वी. गुड ने (4) गुड एवं हाट ने

30. क्रियात्मक अनुसंधान में 7 सोपान किसने आवश्यक माने हैं?
(1) स्टीफन कोरे ने (2) एण्डरसन ने
(3) पीटरसन ने (4) ब्लेयर ने

31. क्रियात्मक अनुसंधान की प्रणाली का/के सोपान है/हैं–
(1) प्रस्तावों पर विचार–विमर्श (2) योजना का चयन
(3) समस्या का ज्ञान (4) उपरोक्त सभी

32. क्रियात्मक अनुसंधान का द्वितीय सोपान है–
(1) उपकल्पना निर्माण
(2) तथ्य संग्रह विधियाँ
(3) योजना का कार्यान्वयन
(4) कार्य के लिए प्रस्तावों पर विचार–विमर्श

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

33. क्रियात्मक अनुसंधान का अन्तिम सोपान है–
(1) समस्या का चयन
(2) तथ्यों का संग्रह
(3) दूसरों को परिणामों की सूचना देना
(4) योजना का कार्यान्वयन

34. निम्न में से क्रियात्मक अनुसंधान का मूल उद्देश्य क्या है?
(1) विद्यालय की कार्य प्रणाली में सुधार करना।
(2) विद्यालय का आर्थिक ढाँचा सुधारना।
(3) नये सिद्धान्तों की खोज करना।
(4) पुराने सिद्धान्तों की व्याख्या करना।

35. क्रियात्मक अनुसंधान से हल की जा सकती है–
(1) पर्यावरण प्रदूषण की समस्या
(2) समाज की बुराइयाँ
(3) बालकों में झगड़े की समस्या
(4) उपर्युक्त सभी

36. क्रियात्मक अनुसंधान द्वारा निम्न में से कौनसा कार्य नहीं किया जाता है?
(1) समस्याओं का व्यावहारिक अध्ययन करना
(2) समस्याओं का व्यावहारिक समाधान निकालना
(3) कार्य प्रणाली में सुधार लाना
(4) ज्ञान के क्षेत्र में नवीन योगदान देना

23.	24.	25.	26.	27.	28.	29.	30.	31.	32.	33.	34.	35.	36.								
(1)	(2)	(4)	(4)	(1)	(4)	(2)	(2)	(4)	(4)	(3)	(1)	(3)	(4)								

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

37. विद्यालय में क्रियात्मक अनुसंधान का प्रयोग किया जा सकता है–
(1) शिक्षण विधियों व प्रविधियों में सुधार हेतु
(2) विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति रुचि विकसित करने हेतु
(3) विद्यालय में अनुशासन से सम्बन्धित समस्याओं के सुधार हेतु
(4) उपर्युक्त सभी

38. क्रियात्मक अनुसंधान हेतु प्रथम सोपान है–
(1) समस्या की पहचान करना
(2) समस्या को परिभाषित करना
(3) कारणों का विश्लेषण करना
(4) परिकल्पनाओं का निर्माण करना

39. क्रियात्मक अनुसंधान का अन्तिम चरण है–
(1) पहचान (2) परिभाषा
(3) परिकल्पना (4) निष्कर्ष

40. राजस्थान में शैक्षिक क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसंधान को बढ़ावा देने वाली संस्था है–
(1) सर्व शिक्षा अभियान
(2) राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान
(3) माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
(4) राजस्थान पाठ्य-पुस्तक मण्डल

41. शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसंधान को प्रोत्साहन देने हेतु प्रायोगिक योजना का प्रारुप किसके द्वारा निर्मित किया गया है?
(1) NCERT (2) IASE
(3) SIERT (4) CTE

42. क्रियात्मक अनुसंधान के विषय में कौनसा कथन गलत है?
(1) इसके परिणामों का प्रयोग शोधकर्ता ही करता है।
(2) इसके परिणामों का सामान्यीकरण किया जा सकता है।
(3) कार्य करने वाला ही शोधकर्ता होता है।
(4) यह दैनिक समस्याओं के समाधान में सहायक है।

43. निम्न में से क्रियात्मक अनुसंधान के सम्बन्ध में असत्य कथन है–
(1) यह विद्यालय की कार्य प्रणाली में संशोधन और सुधार करता है।
(2) यह विद्यालय में जनतन्त्रात्मक मूल्यों की स्थापना पर बल देता है।
(3) यह विद्यालय प्रबन्धकों, छात्रों व शिक्षकों आदि की समस्याओं का व्यावहारिक समाधान करता है।
(4) यह विद्यालय में यान्त्रिक और परम्परागत वातावरण बनाने का प्रयत्न करता है।

44. निम्नलिखित में से कौनसा विषय क्रियात्मक अनुसंधान का हो सकता है?
(1) विद्यालय में छात्रों में अनुशासन की समस्या का निदान
(2) आधुनिक साहित्य के बदलते रूप
(3) शेक्सपियर की कविताओं में सौन्दर्य बोध
(4) उपर्युक्त में कोई नहीं

45. क्रियात्मक अनुसंधान के सम्बन्ध में निम्न में से कौनसा कथन सही नहीं है?
(1) यह अध्यापकों एवं शिक्षा व्यवसाय से जुड़े लोगों के द्वारा किया जाता है।
(2) यह किसी विशिष्ट समस्या के समाधान के लिए किया जाता है।
(3) व्यापक स्तर पर निर्णय लेने के लिए सूचना संकलन का कार्य इसमें किया जाता है।
(4) स्थानीय स्तर पर रोजमर्रा की समस्याओं के समाधान के लिये क्रियात्मक अनुसंधान किया जाता है।

46. क्रियात्मक अनुसंधान का उद्देश्य है–
(1) नवीन ज्ञान की खोज
(2) शैक्षिक परिस्थितियों में व्यवहार विज्ञान का विकास
(3) विद्यालय तथा कक्षा की शैक्षिक कार्य प्रणाली में सुधार लाना
(4) इनमें से सभी

****

प्रगण्य प्रकाशन द्वारा CTET एवं प्रत्येक राज्य के TET (UPTET, MP Samvida, BTET, UTET, JTET, HTET, CGTET, HPTET) के लिए मॉडल पेपर की फ्री PDF प्रकाशित की जाती है। मॉडल पेपर की फ्री PDF प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित Whatsapp No. अपने कॉलेज के क्लास ग्रुप या कोचिंग के क्लास ग्रुप या अन्य स्टडी ग्रुप में जोंडे। आपके ग्रुप में मॉडल पेपर भेज दिए जाएँगें।

REET - 94604 43210
UPTET - 95301 43210
MP Samvida - 95302 43210
BTET - 95302 43210
UTET - 72209 29294
JTET - 72209 29239
HTET - 72209 29266
CGTET - 72209 28969
HPTET - 72209 28535

37.	38.	39.	40.	41.	42.	43.	44.	45.	46.												
(4)	(1)	(4)	(3)	(1)	(2)	(4)	(1)	(3)	(3)												

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org अनुमति द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित हैं।

अध्याय 19

निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम,2009

19.1 प्रस्तावना

संविधान विकास के समान अवसर की गारण्टी देता है। अतः यह सरकार का उत्तरदायित्व है कि आजीविका की दौड़ में राष्ट्र के सभी बच्चों को, चाहे वे धनी परिवार के हो या निर्धन परिवार के, समान अवसर दिये जाएँ। देश के बच्चों को मजबूत, साक्षर और अधिकार सम्पन्न बनाने का मार्ग प्रशस्त करना सरकार का प्रमुख उत्तरदायित्व है। देश के सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना तथा ज्ञान, कौशल और मूल्य से लैस कर उन्हें भारत का प्रबुद्ध नागरिक बनाना ही सरकार का प्रमुख उद्देश्य है। स्वतन्त्रता के बाद प्राथमिक शिक्षा के विस्तार के लिए सरकार द्वारा किए गये प्रयास प्रशंसनीय है। इसी क्रम में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 भी सरकार द्वारा किए गये प्रयासों में से एक प्रशंसनीय प्रयास है।

19.2 अधिनियम का निर्माण

1 अप्रैल, 2010 को, निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 जम्मू एवं कश्मीर को छोड़कर सारे देश में लागू कर दिया गया। यह अधिनिमय 6 से 14 वर्ष के आयु वर्ग के सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने हेतु विभिन्न प्रावधानों एवं उन प्रावधानों को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के लिए कर्त्तव्य एवं दायित्वों का निर्धारण करता है। इस अधिनियम के लागू होने के बाद 6 से 14 वर्ष तक के प्रत्येक बच्चे के लिए शिक्षा का अधिकार मौलिक अधिकार है तथा सभी बच्चों को कक्षा 8 तक निः शुल्क शिक्षा उपलब्ध कराने का दायित्व **राज्य** का है।

पूर्व में सन् 1948 में संविधान सभा के सामने भी शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाने की माँग उठी थी, लेकिन तब उन्होंने इसे मौलिक अधिकार न मानते हुए नीति निर्देशक सिद्धान्तों की सूची में रखा और अनुच्छेद 45 में लिखा कि राज्य इस संविधान के लागू होने के 10 वर्ष की अवधि में सभी बच्चों के लिए जब तक कि वे 14 वर्ष की आयु को प्राप्त नहीं कर लेते, निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रयास करेगा।

86वें संवैधानिक संशोधन, 2002 के अन्तर्गत मूल अधिकारों में अनुच्छेद 21अ जोड़ा गया, जिसमें कहा गया कि राज्य 6 से 14 वर्ष के आयु वर्ग वाले सभी बच्चों के लिए निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध कराने का, ऐसी रीति में जो राज्य विधि द्वारा अवधारित करे, उपबन्ध करेगा। इसके साथ ही अनुच्छेद 45 के लिए निम्नलिखित अनुच्छेद स्थानापन्न किया–

> राज्य सभी बच्चों को जब तक वे अपनी 6 वर्ष की आयु पूरी नहीं कर लेते, बचपन पूर्व सुरक्षा उपलब्ध कराने का प्रयास करेगा।

संविधान के अनुच्छेद 51अ में धारा ग के बाद धारा घ जोड़ी गई, जिसके अनुसार–

> यदि माता–पिता या संरक्षक हैं, 6 से 14 वर्ष की आयु वाले अपने, यथास्थिति बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

राजस्थान में शिक्षा का अधिकार अधिनियम,2009 की धारा 38 के तहत राज्य सरकार ने इस अधिनियम के प्रावधानों की क्रियान्विति हेतु राजस्थान निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2011 निर्मित कर 29 मार्च, 2011 को अधिसूचित कर दिया। इसके प्रावधान राज्य के सभी सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों तथा ऐसे माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों, जिनमें कक्षा 1 से 8 तक शिक्षण होता है, पर लागू होते हैं।

19.3 अधिनियम की विशेषताएँ

निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम,2009 की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है–

1. सरकार के लिए 6 से 14 वर्ष के आयु वर्ग के बालक/बालिकाओं को शिक्षित करना अनिवार्य होगा।
2. सभी राज्य सरकारों और स्थानीय निकायों के लिए यह अनिवार्य होगा कि उस क्षेत्र विशेष के सभी बालकों को विद्यालय भेजें।
3. शिक्षा विभाग के सदस्य/कर्मचारी घर–घर जाकर स्कूल से छूटे बच्चों की तलाश करेंगे।
4. अभिभावकों की भी यह जिम्मेदारी होगी कि बच्चों को विद्यालय भेजे।
5. बालकों को अनुत्तीर्ण नहीं किया जाये।
6. कोई भी विद्यालय बच्चों को प्रवेश देने से इन्कार नहीं कर सकेगा।
7. 60 विद्यार्थियों तक पढ़ाने के लिए कम से कम 2 प्रशिक्षित शिक्षक होंगे।
8. इस कानून में प्रावधान है कि एक शिक्षक पर 40 से अधिक छात्र नहीं होंगे। जो कि कोठारी आयोग की अनुशंसा 1:30 से कम है।
9. विकलांग, मन्दबुद्धि बच्चों के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यवस्था होगी।
10. खर्च का वहन केन्द्र व राज्य सरकारें मिलकर करेंगी।
11. बालकों को घर से 1 किमी. के दायरे में स्कूल उपलब्ध कराना होगा।
12. राज्य सरकारें 6 वर्ष से कम आयु के बालकों के लिए प्री–स्कूलिंग की व्यवस्था करेंगी।
13. सत्र शुरू होने से 6 महीने बाद तक प्रवेश दिया जाएगा।
14. निजी विद्यालयों में 25 फीसदी सीट गरीब बच्चों के लिए आरक्षित होगी।
15. निजी स्कूलों में कोई पूर्व स्क्रीनिंग टेस्ट, प्रतियोगिता आदि पर

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

प्रतिबन्ध होगा।

16. अध्यापकों को अनावश्यक सरकारी कार्यों से मुक्त रखा जाएगा।
17. तीन वर्ष की अवधि में आधारभूत सुविधाओं की व्यवस्था विद्यालयों में कराई जाएगी।
18. बच्चों का स्कूल फीस, यूनिफॉर्म, किताबों, परिवहन, मध्याह्न जैसी व्यवस्थाओं पर खर्च भी शून्य होगा।

19.4 अधिनिमय के अध्याय

निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 के अन्तर्गत सात अध्याय सम्मिलित हैं, जो निम्नलिखित हैं–

1. प्रथम अध्याय

प्रथम अध्याय में अधिनियम का संक्षिप्त नाम, विस्तार एवं प्रारम्भ सम्मिलित हैं तथा दो परिभाषाएँ भी दी गई है।

2. द्वितीय अध्याय

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत 6 से 14 वर्ष की आयु के बालकों की निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार, अन्य विद्यालय में स्थानान्तरण का अधिकार तथा प्रवेश न दिए गए बालकों के लिए विशेष उपबन्धों का वर्णन किया गया है।

3. तृतीय अध्याय

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत समुचित सरकार, स्थानीय प्राधिकारी और माता–पिता के कर्त्तव्य सम्मिलित हैं।

4. चतुर्थ अध्याय

चतुर्थ अध्याय में विद्यालय और शिक्षकों के उत्तरदायित्व का वर्णन किया गया है।

5. पंचम अध्याय

पंचम अध्याय में प्रारम्भिक शिक्षा के पाठ्यक्रम और उसके पूरा किए जाने के सम्बन्ध में वर्णन किया गया है।

6. षष्ठम् अध्याय

षष्ठम् अध्याय में बालकों के अधिकारों के संरक्षण का प्रावधान है।

7. सप्तम् अध्याय

सप्तम् अध्याय के अन्तर्गत निर्देश जारी करने की शक्ति, अभियोजन के लिए पूर्व मन्जूरी, समुचित सरकार के साथ नियम बनाने की शक्ति एवं सद्भावपूर्ण की गई कार्यवाही के लिए संरक्षण आदि विषय सम्मिलित किए गये हैं।

19.5 अधिनियम की उपबन्ध धाराएँ एवं नियम

निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 में कुछ उपबन्ध धाराओं का प्रावधान किया गया है। इन धाराओं के तहत कुछ नियम निर्धारित किए गये हैं, जिनका वर्णन निम्न प्रकार है–

1. धारा 3

निःशुल्क व अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार 6 से 14 वर्ष तक की आयु के बच्चे को पहली से 8वीं कक्षा तक का प्रावधान।

2. धारा 4

6 से अधिक आयु के बालकों को जिन्हें विद्यालय में प्रवेश नहीं दिया गया, के लिए विशेष उपबन्ध।

3. धारा 5

बालकों को अन्य विद्यालयों में स्थानान्तरण का अधिकार होता है।

4. धारा 6

3 वर्ष के भीतर स्कूल का बुनियादी ढाँचा तैयार करना होगा। निर्धारित सीमा में विद्यालय स्थापित होना चाहिए।

5. धारा 12

दुर्बल एवं अलाभित समूह के लिए नजदीकी निजी विद्यालय में 25 प्रतिशत आरक्षण दिया जाएगा।

6. धारा 15

बालक प्रारम्भ में अथवा विहित समय 6 माह तक कभी भी विद्यालय में प्रवेश ले सकता है।

7. धारा 16

किसी विद्यालय द्वारा बालक को किसी कक्षा में प्रवेश लेने से रोका नहीं जाएगा और न ही निष्कासित किया जाएगा।

8. धारा 19

विद्यालय को मान्यता प्रदान करता है, इसमें नियम है।

9. धारा 21

प्रत्येक विद्यालय एक विद्यालय समिति का गठन करेगा। समिति में कम से कम तीन चौथाई सदस्य माता–पिता या संरक्षक होंगे, 50 प्रतिशत स्त्रियाँ समिति की सदस्य होंगी। इसके सदस्य बालकों के माता–पिता या संरक्षक और शिक्षकों के निर्वाचित प्रतिनिधि सदस्य होंगे।

10. धारा 22

प्रत्येक विद्यालय प्रबन्ध समिति एक विद्यालय विकास योजना बनाएगी।

11. धारा 23

धारा 23 की उपधारा 1 के अनुसार नियुक्त शिक्षक विद्यालय में उपस्थित होने में नियमितता और समय पालन करेगा।

12. धारा 27

शिक्षक को किसी गैर–शैक्षिक प्रयोजन के लिए अभिनियोजित नहीं किया जाएगा, जनगणना, आपदा राहत, चुनावी प्रक्रिया से अतिरिक्त।

13. धारा 28

कोई भी शिक्षक प्राइवेट ट्यूशन या शिक्षण कार्य नहीं करेगा। किसी विद्यालय में शिक्षकों के रिक्त पद कुल स्वीकृत पद संख्या के 10 प्रतिशत से अधिक नहीं होंगे।

14. धारा 29

धारा 29 की उपधारा 2 के प्रावधान के अनुसार पाठ्यक्रम संचालित करना, उसे पूरा करना।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

15. धारा 30

बालक को कोई बोर्ड परीक्षा उत्तीर्ण करना आवश्यक नहीं होगा। प्रत्येक बालक को प्रारम्भिक परीक्षा पूर्ण करने का, विहित प्रारूप में एक प्रमाण–पत्र दिया जाएगा।

16. धारा 33

इसके तहत केन्द्र सरकार एक राष्ट्रीय सलाहकार परिषद् का तथा राज्य सरकार एक राज्य सलाहकार परिषद् का गठन करेगी, जिसमें सदस्य संख्या अधिकतम 15 होगी।

19.6 अधिनियम में शिक्षकों की भूमिका एवं दायित्व

निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 के अन्तर्गत धारा 23 से धारा 28 में शिक्षकों के दायित्व, विद्यालयों में छात्र शिक्षक अनुपात तथा शिक्षकों की भूमिकाओं पर स्पष्ट रूप से प्रकाश डाला गया है। प्रत्येक धारा में उल्लेखित विवरण का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है–

1. धारा 23

यह धारा शिक्षकों की नियुक्ति पर प्रकाश डालती है।

1. कोई व्यक्ति, जिसके पास केन्द्रीय सरकार द्वारा मान्यता अधिसूचना द्वारा प्राधिकृत किसी शिक्षा प्राधिकारी द्वारा यथा अधिकथित ऐसी न्यूनतम योग्यताए हैं, शिक्षक के रूप में नियुक्ति के लिए पात्र होगा।
2. जहाँ किसी राज्य में अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम या उसमें प्रशिक्षण प्रदान करने वाली पर्याप्त संस्थाएँ नहीं हैं या उपधारा–1 के अधीन यथा अधिकथित न्यूनतम योग्यताएँ रखने वाले शिक्षक पर्याप्त संख्या में नहीं हैं, वहाँ केन्द्र सरकार यदि वह आवश्यक समझे, अधिसूचना द्वारा शिक्षक के रूप में नियुक्ति के लिए अपेक्षित न्यूनतम योग्यताओं को 5 वर्ष से अधिक की ऐसी अवधि के लिए शिथिल कर सकेगी, जो उस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट की जाए।

   परन्तु ऐसा कोई शिक्षक, जिसके पास इस अधिनियम के प्रारम्भ में उप उपधारा–1 के अधीन यथा अधिकथित न्यूनतम योग्यताएँ नहीं है, 5 वर्ष की अवधि के भीतर ऐसी न्यूनतम योग्यताएँ अर्जित करेगा।
3. शिक्षक को संदेय वेतन और भत्ते तथा उसके सेवा के नियम व शर्तें वह होंगी, जो विहित की जाएँ।
4. कोई भी व्यक्ति जिसके पास केन्द्र सरकार द्वारा घोषित शिक्षा अधिकारी द्वारा तय की गई न्यूनतम योग्यताएँ हैं, शिक्षक के रूप में नियुक्ति के लिए पात्र होगा।
5. यदि किसी राज्य में अध्यापक शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम या प्रशिक्षण देने वाली पर्याप्त संस्था या उपधारा–1 के तहत चाहे गए उपयुक्त शिक्षक पर्याप्त संख्या में नहीं है, तो केन्द्र सरकार एक लिखित सूचना जारी करके शिक्षक भर्ती के लिए न्यूनतम योग्यताओं में अधिकतम 5 वर्ष के लिए शिथिलता दे सकती है।
6. यदि वर्तमान में ऐसे शिक्षक/शिक्षिकाएँ हैं, जो कि तय मापदण्ड के अनुरूप योग्यता पूरी नहीं करते हैं, तो उन्हें यह कानून लागू होने के 5 वर्ष के भीतर निर्धारित योग्यता हासिल करनी होगी।
7. शिक्षक को दिया जाने वाला वेतन और भत्ते तथा सेवा नियम और शर्तें सरकार द्वारा तय की जाएँगी।

2. धारा 24

धारा 23 के अधीन नियुक्त शिक्षक निम्नलिखित कर्त्तव्यों का पालन करेगा–

1. विद्यालय में उपस्थित होने में नियमितता और समय पालन।
2. धारा 29 की उपधारा (2) के उपबन्धों के अनुसार पाठ्यक्रम संचालित करना और उसे पूरा करना।
3. विनिर्दिष्ट समय के भीतर सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पूरा करना।
4. प्रत्येक बालक के शिक्षा ग्रहण करने के सामर्थ्य का निर्धारण करना और तदनुसार तथा अपेक्षित अतिरिक्त शिक्षण (यदि कोई हो) जोड़ना।
5. माता–पिता और सरंक्षकों के साथ नियमित बैठकें करना और बालक के बारे में उपस्थिति में नियमितता, शिक्षा ग्रहण करने के सामर्थ्य, शिक्षण में की गई प्रगति और किसी अन्य ससंगत जानकारी के बारे में उन्हें अवगत कराना।
6. ऐसे अन्य कर्त्तव्यों का पालन करना, जो विहित किए जाए।
7. उपधारा 1 में विनिर्दिष्ट कर्त्तव्यों के पालन में व्यतिक्रम करने वाला/वाली कोई शिक्षक/शिक्षिका, उस पर लागू सेवा नियमों के अधीन अनुशासनिक कार्यवाही के लिए दायी होगा/होगी, परन्तु ऐसी अनुशासनिक कार्यवाही करने से पूर्व ऐसे शिक्षक को सुनवाई का युक्तियुक्त अवसर दिया जाएगा।
8. शिक्षक की शिकायतों (यदि कोई हो) को ऐसी रीति से दूर किया जाएगा, जो विहित की जाएँ।
9. शिक्षक स्कूल में नियमित आएँगे और समय का पालन करेंगे।
10. प्रत्येक बच्चे के पढ़ने के स्तर और गति को जाँचना, दर्ज करना और उसके आधार पर शिक्षण योजना तैयार करके पढ़ाना। यदि आवश्यकता हो, तो अतिरिक्त कक्षाएँ लेना।
11. सरकार द्वारा तय अन्य शैक्षिक कार्य।

3. धारा 25

यह धारा छात्र शिक्षक अनुपात पर प्रकाश डालती है।

1. इस अधिनियम के प्रारम्भ की तारीख से 6 माह के भीतर समुचित सरकार और स्थानीय प्राधिकारी यह सुनिश्चित करेंगे कि प्रत्येक विद्यालय में छात्र शिक्षक अनुपात अनुसूची में विनिर्दिष्ट किए गए अनुसार बनाए रखा जाए।
2. उपधारा (1) के अधीन छात्र–शिक्षक अनुपात बनाए रखने के प्रयोजन के लिए किसी विद्यालय में पदस्थापित किए गए किसी शिक्षक को किसी अन्य विद्यालय में सेवा नहीं करने दी जाएगी या धारा 27 में विनिर्दिष्ट प्रयोजनों से भिन्न किसी गैर–शिक्षण प्रयोजन के लिए तैयार नहीं किया जाएगा।
3. इस अधिनियम के पारित होने के 6 माह के भीतर अनुसूची में तय किया गया छात्र शिक्षक अनुपात बनाया जाएगा।
4. उपरोक्त उपधारा (1) की पालना करने हेतु शिक्षक को किसी ऐसे स्कूल में लगाया जा सकता है, जहाँ छात्र शिक्षक अनुपात ठीक नहीं है। उन शिक्षकों को धारा 27 के अन्तर्गत तय किए गए कार्यों के

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

अतिरिक्त गैर शैक्षणिक कार्यों में नहीं लगाया जाएगा।

4. धारा 26

नियुक्ति प्राधिकारी, समुचित सरकार या किसी स्थानीय प्राधिकारी द्वारा स्थापित उसके स्वामित्वाधीन, नियन्त्रणाधीन या उसके द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष उपलब्ध करवाई गई निधियों द्वारा भागत वित्तपोषित किसी विद्यालय के सम्बन्ध में यह सुनिश्चित करेगा कि उसके नियन्त्रणाधीन किसी विद्यालय में शिक्षक के रिक्त पद कुल स्वीकृत पद संख्या के 10 प्रतिशत से अधिक नहीं हो।

5. धारा 27

किसी शिक्षक को दस वर्षीय जनसंख्या जनगणना, विभीषिका राहत कर्त्तव्यों या यथास्थिति, स्थानीय प्राधिकारी या राज्य विधानमण्डलों या संसद के निर्वाचनों से सम्बन्धित कर्त्तव्यों से भिन्न किसी गैर-शैक्षिक प्रयोजन के लिए अभिनियोजित नहीं किया जाएगा।

6. धारा 28

कोई शिक्षक/शिक्षिका निजी शिक्षण क्रियाकलापों में स्वयं को नहीं लगाएगा/लगाएगी।

19.7 विद्यालय में कठिनाइयाँ एवं उनके निराकरण हेतु दिशा-निर्देश

सत्र 2012-13 में राज्य सरकार द्वारा गुणात्मक प्रारम्भिक शिक्षा प्रदान किए जाने के उद्देश्य से राज्य के चिह्नित प्रारम्भिक शिक्षा के विद्यालयों में सम्बलन कार्यक्रम के तीन चरण आयोजित किए गए हैं। सम्बलन कार्यक्रम के तीसरे चरण के दौरान विद्यालय में कुछ कठिनाइयाँ सामने आयी हैं। विद्यालयों में सम्बलन अभियान के दौरान अनुभूत की गई कठिनाइयाँ व उनके निराकरण सम्बन्धी दिशा-निर्देश निम्न प्रकार हैं-

1. शिक्षकों द्वारा अलग-अलग कक्षाओं में अलग-अलग विषयों का शिक्षण

ऐसे विद्यालय जहाँ शिक्षकों की संख्या आर.टी.ई. मानकों के अनुसार है, वहाँ जो शिक्षक कक्षा 1 को हिन्दी या अन्य विषय पढ़ाता हो, वही शिक्षक कक्षा 5 तक उसी विषय को पढ़ाए अर्थात् हिन्दी या अन्य विषय का शिक्षण सभी पाँच कक्षाओं में एक ही शिक्षक द्वारा किया जाए। जिन विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या आर.टी.ई. मानकों से कम है, वहाँ कम से कम कक्षा 1 से 3 तक का एक विषय का शिक्षण एक ही अध्यापक द्वारा करवाया जाए तथा कक्षा 4 से 5 में किसी अन्य शिक्षक द्वारा वह विषय पढ़ाया जा सकता है।

उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 6 से 8 तक के शिक्षण के लिए विशेष अध्यापक लगाए जाते हैं। अतः विषय विशेष के अध्यापक द्वारा ही कक्षा 6 से 8 तक का शिक्षण सुनिश्चित किया जाए। यदि शिक्षकों की उपलब्धता विषयवार नहीं है या एक शिक्षक द्वारा एक से अधिक विषयों का शिक्षण करवाया जाता है, तो भी यह प्रयास किया जाए कि कम से कम कक्षा 6 से 8 तक की कक्षाओं में एक विषय का शिक्षण एक ही अध्यापक द्वारा करवाया जाए।

2. कक्षाओं में शिक्षकों द्वारा मोबाइल फोन लेकर जाना

प्रायः देखने में आया है कि शिक्षकों द्वारा कक्षागत शिक्षण के दौरान मोबाइल फोन का उपयोग अक्सर किया जाता है, जिससे कक्षा में शैक्षिक वातावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अतः सभी शिक्षकों को निर्देशित किया जाता है कि शिक्षण के दौरान वे अपने मोबाइल फोन का उपयोग नहीं करे। इस सन्दर्भ में पूर्व में भी विभाग द्वारा निर्देश जारी किए जा चुके हैं।

3. शिक्षण में पासबुक का उपयोग होना

यह भी सामने आया है कि विद्यालयों में छात्र-छात्राओं तथा शिक्षकों के पास पासबुक होती है, जिसका उपयोग वे कक्षा में पठन-पाठन कार्य में करते हैं। सभी शिक्षकों तथा संस्था प्रधानों को निर्देशित किया जाता है कि शिक्षण कार्य मूल रूप से पाठ्यपुस्तकों एवं अन्य टीएलएम के आधार पर ही करवाया जाए। कक्षा में पासबुक के उपयोग पर रोक लगावें।

4. 45 दिन से अधिक की अनुपस्थिति के बावजूद छात्र-छात्राओं को ड्रॉप-आउट नहीं करना

45 दिन से अधिक समय तक अनुपस्थित रहने वाले छात्र-छात्राओं के सम्बन्ध में दिए गए दिशा-निर्देश निम्न प्रकार है-

1. सम्बलन कार्य के दौरान अधिकारियों ने पाया कि कुछ विद्यालयों में कुछ छात्र-छात्राओं के नाम लगातार अनुपस्थिति रहने के बावजूद भी उपस्थिति रजिस्टर में चल रहे हैं। इन छात्र-छात्राओं की लगातार 45 दिनों से अधिक अनुपस्थिति के बावजूद भी संस्था प्रधान/शिक्षक द्वारा उन्हें ड्रॉप-आउट घोषित नहीं किया गया है। सभी सम्बन्धित लोगों को निर्देशित किया जाता है कि यदि कोई बालक-बालिका विद्यालय में लगातार 45 दिन अनुपस्थित रहता है, तो नियमानुसार उसका नाम पृथक् कर उसे ड्रॉप आउट की श्रेणी में रखें। अनुपस्थिति के 45 दिनों की गणना में, अनुपस्थिति अवधि के समस्त अवकाश भी सम्मिलित होंगे।
2. यह भी ध्यान में आया है कि कुछ विद्यालयों में लगातार अनुपस्थित चल रहे छात्र-छात्रा ड्रॉप आउट होने की अवधि से पूर्व ही एक या दो दिन के लिए उपस्थित होकर लम्बी अवधि के लिए पुनः अनुपस्थित हो जाते हैं। ज्ञातव्य हो कि राजस्थान सरकार के परिपत्र 8 अक्टूबर, 2012 (प्रारम्भिक शिक्षा एवं कक्षोन्नति नियम) के नियम 2.2(2) के अनुसार कक्षा-क्रमोन्नति के लिए विद्यार्थी की 70 प्रतिशत उपस्थिति होना अनिवार्य है। न्यून उपस्थिति की स्थिति में विद्यार्थी को ड्रॉप आउट मानते हुए आयु अनुरूप पुनः प्रवेश की कार्यवाही की जाकर उसे विशेष प्रशिक्षण के माध्यम से उस कक्षा के स्तर तक लाया जाएगा।
3. उपर्युक्त बिन्दु 1 व 2 में वर्णित दिशा-निर्देश सीसीई विद्यालयों एवं कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत बालक एवं बालिकाओं पर भी लागू होंगे।

19.8 गतिविधि पत्रक : सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

राज्य में सन् 2010 से आर.टी.ई., 2009 को स्वीकार किए जाने के उपरान्त निहित घटकों को उचित ढंग से लागू करने हेतु मौजूदा शैक्षिक प्रणाली को पुनः

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

रचित करने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इसके अन्तर्गत मूल्यांकन को भी सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के रूप में देखा गया। चूँकि सीखना एक सतत् प्रक्रिया है, अतः मूल्यांकन भी सतत् होना चाहिए।

मूल्यांकन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया व उसमें सुधार का एक अभिन्न अंग है। यह एक प्रक्रिया है, लक्ष्य नहीं, जो बालक के विकास एवं उपलब्धियों को दर्शाती है। साथ ही विद्यार्थी तथा शिक्षातन्त्र दोनों को ही विवेचनात्मक और आलोचनात्मक प्रतिपुष्टि से फायदा पहुँचाती है। मूल्यांकन का उद्देश्य बालक पर टिप्पणी करना, नहीं बल्कि कक्षाओं में होने वाली सीखने-सिखाने की निर्धारित प्रक्रिया को फीडबैक देकर लक्ष्यों पर पुनर्विचार करना है, जो इस तथ्य पर आधारित होता है कि शिक्षार्थियों की क्षमता किस हद तक विकसित हुई है।

प्रारम्भिक शिक्षा की आठ वर्षों की अवधि वह समय होता है, जब बालक का महत्त्वपूर्ण संज्ञानात्मक विकास होता है और उनके विवेक को आधार व आकार मिलता है। सामाजिक कौशलों, बुद्धि एवं अभिवृत्तियों का भी विकास होता है। इसीलिए आवश्यक है कि कक्षा 1 से 8 की 8 वर्षों की विद्यालयी शिक्षा को एक सम्पूर्ण इकाई के रूप में देखा जाए। अतः बालकों के सीखने एवं मूल्यांकन को भी कक्षावार देखने के स्थान पर सततता के साथ देखा जाए, लेकिन इसका आशय यह कदापि नहीं कि कक्षा 8 के पश्चात् बालक सीखना बन्द कर देता है और उसका सततता के साथ मूल्यांकन नहीं होना चाहिए।

सतत् मूल्यांकन का अभिप्राय कक्षा शिक्षण एवं मूल्यांकन दोनों से है, जो साथ-साथ चलने वाली प्रक्रिया है। सततता अन्तर्गत सीखने के दौरान बालकों के अधिगम का अवलोकन, अवलोकन के दौरान बालक की कठिनाइयों को पहचानना एवं उसे इस प्रकार से दूर करना कि बालक की लगातार प्रगति को देखा जा सके, सम्मिलित है। सीखने के दौरान बच्चे के कार्यों पर लगातार नजर रखना, उसकी सक्रियता, सहभागिता कठिनाइयों को दर्ज करना तदनुसार शिक्षण योजना बनाना ही मूल्यांकन की सततता है।

बालकों के सीखने एवं आकलन में विविधता एवं व्यापकता भी होनी चाहिए। सामान्य शिक्षक उसी विषयवस्तु का अध्ययन करवाते हैं, जिनका मूल्यांकन करना होता है, लेकिन व्यापकता के सन्दर्भ में यह बात अधूरी प्रतीत होती है, क्योंकि व्यापकता बालक को उपलब्ध कराए जाने वाले अवसरों, विषयों अनुभवों, मूल्यांकन के क्षेत्रों व तरीकों सभी में देखी जाती है।

आर.टी.ई., 2009 की विभिन्न धाराओं के मद्देनजर प्रत्येक बालक के पढ़ने की गति और स्तर के आधार पर योजना बनाई जाए, किसी भी बालक को फेल न किया जाए तथा बहुस्तरीय एवं बहुकक्षीय शिक्षण करवाया जाए। अतः विद्यालयों के स्वरूप को बदलने की आवश्यकता है। विद्यालयों को बालकों का श्रेणीकरण करने वाली संस्था के स्थान पर एक ऐसी संस्था के रूप में बदलना है, जो उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए प्रेरित करे तथा स्वयं को भी बालकों के सन्दर्भ में आवश्यकतानुसार बदलने को तैयार करे।

19.8.1 शिक्षकों के लिए सतत् मूल्यांकन

प्रत्येक बालक अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करता है। अध्यापक की भूमिका सहयोगकर्ता की है। बिना भेदभाव के सभी बालकों को शिक्षा देना महत्त्वपूर्ण है। शिक्षक को एक सतर्क एवं सहज व्यक्ति के रूप में कार्य करना होगा। आकलन/मूल्यांकन का स्वरूप भी ऐसा हो, जिससे प्रत्येक बालक को सहज व समान विकास के अवसर मिले, बालक को किसी प्रकार ठेस न पहुँचे आदि। सभी तथ्यों के मद्देनजर हमें आकलन/मूल्यांकन का क्षेत्र व प्रकार सुनिश्चित करना होगा, क्योंकि बालक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, शिक्षा बालक के लिए है, बालक शिक्षा के लिए नहीं है।

सतत् और व्यापक मूल्यांकन में शिक्षकों को कुछ बातों को ध्यान में रखने की आवश्यकता है-

1. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में शिक्षक द्वारा तीन महत्त्वपूर्ण कार्य किए जाने हैं- पहला यह देखना कि बच्चों ने क्या वो सीखा है, जो कि उन्हें सीखना चाहिए? दूसरा उनके सीखने की प्रगति क्या है? और तीसरा उसकी सतत् उपलब्धि क्या है?
2. शिक्षक द्वारा बच्चों का मूल्यांकन दो स्थितियों में किया जाना है- पहला बच्चे के व्यक्तिगत कार्यक्षेत्र में और दूसरा सामूहिक कार्यक्षेत्र में।
3. शिक्षक देखे कि बच्चे किस तरह से सीख रहे हैं। यानी बच्चे के सीखने के तरीके क्या हैं? उनमें क्या किसी बदलाव की आवश्यकता है? शिक्षक इन बातों को अपनी डायरी में अपने अनुसार लिख ले, ताकि बाद में उस बच्चे के बारे में लिखते समय यह टिप्पणी काम आ सके।
4. शिक्षक यह देखे कि जो विषयवस्तु बच्चे को सीखनी थी, वो सीखी या नहीं। इसे दर्ज करते रहे, ताकि कुछ समय बाद पाठ्यक्रम के आधार पर बच्चे की प्रगति का मूल्यांकन किया जा सके।
5. बच्चों को सीखने-सिखाने की गतिविधि में पर्याप्त अभ्यास की आवश्यकता होती है। एक शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वो समय-समय पर बच्चों को सिखाई गई अवधारणा पर अभ्यास कार्य देते रहें।
6. बच्चों को अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर दिए जाएँ। इस कार्य के लिए बच्चों को कलर, पेन्सिल, शॉर्पनर तथा स्केच पेन के साथ ड्रॉइंग शीट आदि दी जानी है।
7. बच्चों का मूल्यांकन करने के लिए शिक्षक के पास पर्याप्त साक्ष्य होना चाहिए। इसके लिए बच्चों के द्वारा किए गये कार्यों को पोर्टफोलियो फाईल में संकलित किया जाना है।
8. सतत् और व्यापक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान बालक का मूल्यांकन नियमित रूप से किया जाना है।
9. बच्चों के बारे में जानने के लिए जो भी सम्भव तार्किक एवं रचनात्मक तरीके हैं, यह तरीके कक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान होंगे।
10. विषयाधारित अवधारणाओं के साथ तार्किक सोच, समूह में व्यवहार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सौन्दर्यबोध, न्याय व समता के प्रति दृष्टिकोण आदि का भी मूल्यांकन किया जाना है।
11. बच्चे के सीखने की प्रक्रिया के दौरान निरन्तर प्राप्त हो रही सूचनाओं के आधार पर बच्चों के समूह/उपसमूहों में शिक्षण हेतु पाक्षिक योजना बनाते हुए कार्य करना आवश्यक है।
12. मूल्यांकन के लिए विभिन्न तकनीक जैसे- मौखिक, प्रोजेक्ट, प्रस्तुति और विभिन्न उपकरण जैसे- चेकलिस्ट, अवलोकन, रेटिंग स्केल, पोर्टफोलियो आदि का उपयोग शिक्षण योजना अनुसार किया जाना है।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

13. समय-समय पर अभिभावकों को बालक की प्रगति से अवगत कराते रहना है।
14. स्वमूल्यांकन व समूह कार्य के लिए बालकों को सही समझ बनाते हुए प्रेरित करना है।

19.8.2 सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया

आर.टी.ई., 2009 के अनुसार शिक्षक प्रत्येक बच्चे के स्तर का आकलन करेंगे-

1. उनके स्तर एवं गति के अनुसार गतिविधि आधारित शिक्षण कराएँगे।
2. शिक्षण के दौरान ही प्रत्येक बच्चे का व्यापक आकलन सतत् रूप से करेंगे।
3. अभिभावकों को बच्चों की प्रगति, उपस्थिति आदि के बारे में नियमित बताएँगे।

इसका अर्थ यह हुआ कि शिक्षकों को अपनी कार्यशैली और मूल्यांकन पद्धति में व्यापक बदलाव करने होंगे तथा साथ ही बच्चों की प्रगति को भी दर्ज करना होगा।

19.8.3 सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में प्रयुक्त शब्दावली

शिक्षकों द्वारा अपनी कार्यशैली तथा मूल्यांकन पद्धति में बदलाव तथा बच्चों की प्रगति को दर्ज करने हेतु कई नये शब्दों से परिचित होना होगा। इस शब्दावली के कुछ प्रमुख शब्दों का वर्णन निम्न प्रकार है-

1. रचनात्मक आकलन

बच्चों के कार्यों का निरन्तर अवलोकन करना और उसे दर्ज करते हुए उनके कार्य का मूल्यांकन करने का तरीका रचनात्मक आकलन है। इसमें कार्य को करते हुए शिक्षण अधिगम के दौरान बच्चों के सीखने को ग्रेड देते हुए टिप्पणी दर्ज की जाती है। यह प्रत्येक दो माह में एक बार किया जाता है।

2. योगात्मक आकलन

एक निश्चित अवधि में बच्चों द्वारा सीखे गए समस्त पाठ्यक्रम का आकलन योगात्मक आकलन कहते हैं। इसमें प्रत्येक 5 माह में एक बार समस्त प्रमाणों के आधार पर बच्चे की समझ की स्थिति को दर्ज करते हैं।

3. पोर्टफोलियो

समय की निश्चित अवधि में विद्यार्थी द्वारा किए गए कार्यों का संग्रह पोर्टफोलियो कहा जाता है। इसमें रोजमर्रा के काम हो सकते हैं या शिक्षार्थी के कार्य के उत्कृष्ट नमूने भी हो सकते हैं।

4. चेकलिस्ट

यह बच्चे के किसी खास व्यवहार या क्रिया के बारे में सुव्यवस्थित तरीके से दर्ज की गई सूचनाओं का फॉर्म है। ये बच्चे के किसी भी खास पहलू की तरफ ध्यान आकर्षित करने में मदद करती है।

5. आधार रेखा मूल्यांकन

बच्चे के स्तर के अनुरूप शिक्षण करवाने के लिए आवश्यक है कि उसके स्तर को जाने। अतः शिक्षण अधिगम मूल्यांकन से पूर्व बच्चे के शैक्षिक स्तर का पता लगाने के लिए किया जाता है।

6. मॉड्यूल

एक वर्ष के पाठ्यक्रम को सुविधानुसार छोटे भागों में बाँटा जा सकता है। इसे दो भागों में बाँट कर प्रत्येक वर्ग के दो मॉड्यूल बनाये गए हैं।

19.9 अधिनियम में विद्यालय के लिए तय मापदण्ड

1. शिक्षकों की संख्या

1. **कक्षा 1 से 5 के लिए** - प्रवेश लेने वाले बालकों की संख्या 60 तक है, तो शिक्षकों की संख्या 2, 61 से 90 बालक हो, तो 3, 91 से 120 के मध्य बालक हो, तो 4, 121 से 200 तक मध्य बालक हो, तो 5, 150 बालकों से अधिक हो , तो 5 शिक्षक और एक प्रधानाध्यापक तथा 200 बालकों से अधिक हो, तो छात्र-शिक्षक अनुपात (प्रधानाध्यापक को छोड़कर) 40 से अधिक नहीं होगा।
2. **कक्षा 6 से 8 के लिये** - कम से कम प्रति कक्षा एक शिक्षक होगा। यह व्यवस्था इस प्रकार होगी कि निम्नलिखित प्रत्येक के लिए कम से कम एक शिक्षक हो- (1) विज्ञान और गणित, (2) सामाजिक अध्ययन, (3) भाषा। प्रत्येक 35 बालकों के समूह के लिए कम से कम एक शिक्षक होना अनिवार्य है। जहाँ 100 से अधिक बालकों को प्रवेश दिया गया है, वहाँ एक पूर्णकालिक प्रधानाध्यापक के साथ कला शिक्षा, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा तथा कार्य शिक्षा के लिए अंशकालिक शिक्षक होने चाहिए।

2. भवन

सभी मौसम वाला भवन, जिसमें निम्नलिखित व्यवस्थाएँ हो-

1. प्रत्येक शिक्षक के लिए कम से कम एक कक्षा और एक कार्यालय-सह-भण्डार, सह-प्रधानाध्यापक कक्ष।
2. बाधा मुक्त पहुँच।
3. लड़कों और लड़कियों के लिए पृथक् शौचालय।
4. सभी बालकों के लिए सुरक्षित और पर्याप्त पेयजल सुविधा।
5. जहाँ दोपहर का भोजन विद्यालय में पकाया जाता है, वहाँ एक रसोई।
6. खेल का मैदान।
7. सीमा दीवार या बाड़ द्वारा विद्यालय भवन की सुरक्षा करने के लिए व्यवस्थाएँ।

3. एक शैक्षणिक वर्ष में कार्य दिवसों/शिक्षण घण्टों की न्यूनतम संख्या

1. कक्षा 1 से 5 के लिए 200 कार्य दिवस।
2. कक्षा 6 से 8 के लिए 220 कार्य दिवस।
3. कक्षा 1 से 5 के लिए प्रति शैक्षणिक वर्ष 800 शिक्षण घण्टे।
4. कक्षा 6 से 8 के लिए प्रति शैक्षणिक वर्ष 1000 शिक्षण घण्टे।

4. शिक्षक के लिए प्रति सप्ताह कार्य घण्टों की न्यूनतम संख्या

45 शिक्षण घण्टे, जिसके अन्तर्गत तैयारी के घण्टे भी शामिल हैं।

5. अध्यापन शिक्षण उपस्कर

प्रत्येक कक्षा के लिए अपेक्षानुसार उपलब्ध कराये जाएँगे।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

6. पुस्तकालय

प्रत्येक विद्यालय में एक पुस्तकालय होगा, जिसमें समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ और सभी विषयों पर पुस्तकें, जिनके अन्तर्गत कहानी की पुस्तकें भी हैं, उपलब्ध होंगी।

7. खेल सामग्री और क्रीड़ा उपस्कर

प्रत्येक कक्षा को अपेक्षानुसार उपलब्ध कराये जाएँगे।

19.10 अधिनियम से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्य

निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 से सम्बन्धित कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य निम्नलिखित है-

1. वर्ष 2006 में शिक्षा के अधिकार अधिनियम का मॉडल विधेयक विकसित किया गया।
2. 4 अगस्त, 2009 को शिक्षा का अधिकार, 2009 पारित हुआ।
3. 27 अगस्त, 2009 को भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशित हुआ।
4. 1 अप्रैल, 2010 को सारे देश में लागू हो गया।
5. ऐसा बालक जिसकी आयु 6 वर्ष से ऊपर है, उसने प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश नहीं लिया है, तो उसकी आयु के अनुसार कक्षा में दाखिला कराया जाएगा। जैसे- यदि कोई बालक 12 वर्ष का है, किन्तु उसने कहीं दाखिला नहीं लिया है, तो भी उसे सीधे कक्षा 6 में पंजीकृत किया जाएगा।
6. जब तक कि बालक प्राथमिक शिक्षा पूर्ण न कर ले, उसे बीच में किसी कक्षा में अनुत्तीर्ण कर रोका नहीं जा सकता।
7. स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करने में विलम्ब या न प्रस्तुत करने के आधार पर बालक को प्रवेश से वंचित नहीं किया जा सकता।
8. प्रत्येक शिक्षक के लिए न्यूनतम शैक्षिक योग्यता अनिवार्य है। शैक्षिक योग्यताा में शिथिलता मात्र अधिनियम लागू होने के 5 वर्ष तक होगी।
9. किसी भी शिक्षक के लिए निजी शिक्षण कार्य पूर्णतः वर्जित है।
10. किसी शिक्षक को दस वर्षीय जनसंख्या, आपदा राहत कर्त्तव्यों से भिन्न किसी गैर शैक्षिक प्रयोजन के लिए अभिनियोजित नहीं किया जा सकता।
11. प्रत्येक विद्यालय में एक विद्यालय प्रबन्ध समिति का गठन किया जाएगा।
12. आर्थिक रूप से कमजोर समुदायों के लिए सभी निजी स्कूलों के कक्षा 1 में दाखिला लेने के लिए 25 प्रतिशत आरक्षण।

****

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

अभ्यासार्थ प्रश्न

1. **शिक्षा अधिकार अधिनियम** देशभर में लागू हुआ-
   (1) 1 अप्रैल, 2010 से (2) 1 अगस्त, 2010 से
   (3) 26 अप्रैल, 2010 से (4) 1 अप्रैल, 2011 से

2. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम को राष्ट्रपति द्वारा मन्जूरी कब दी गई थी?
   (1) मई, 2009 (2) मई, 2010
   (3) अगस्त, 2009 (4) अगस्त, 2010

3. अधिनियम के विभिन्न नियमों को केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री श्री कपिल सिब्बल ने कब मन्जूरी प्रदान की?
   (1) 13 फरवरी, 2010 (2) 2 फरवरी, 2010
   (3) 1 अप्रैल, 2010 (4) 28 फरवरी, 2010

4. 1 अप्रैल, 2010 से लागू किए जाने की घोषणा राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल द्वारा किस दिन की गई थी?
   (1) 1 अप्रैल, 2010
   (2) 13 फरवरी, 2010
   (3) 22 फरवरी, 2010
   (4) 13 अप्रैल, 2010

5. अनिवार्य शिक्षा से क्या तात्पर्य है?
   (1) सम्बन्धित सरकार 6-14 वर्ष के बालकों को मुफ्त शिक्षा प्रदान करेगी।
   (2) 6-14 वर्ष के बालकों का विद्यालय में प्रवेश, उपस्थिति और अनिवार्य शिक्षा सुनिश्चित करना।
   (3) बालकों को विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाएगा।
   (4) 1 और 2 दोनों

6. राजस्थान निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2010 के अनुसार प्राथमिक विद्यालय है-
   (1) कक्षा 1 से 5 तक शिक्षा देने वाले विद्यालय
   (2) कक्षा 1 से 8 तक शिक्षा देने वाले विद्यालय
   (3) कक्षा 6 से 8 तक शिक्षा देने वाले विद्यालय
   (4) कक्षा 1 से 10 तक शिक्षा देने वाले विद्यालय

7. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनिमय, 2009 के अन्तर्गत प्रारम्भिक शिक्षा से तात्पर्य है-
   (1) कक्षा 1 से 5 तक की शिक्षा
   (2) कक्षा 1 से 8 तक की शिक्षा
   (3) कक्षा 1 से 10 तक की शिक्षा
   (4) कक्षा 6 से 8 तक की शिक्षा

1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.			
(1)	(3)	(1)	(3)	(2)	(1)	(2)			

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

8. कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों के लिए कितनी दूरी की सीमा में एक विद्यालय स्थापित किया जाएगा?
(1) 2 किलोमीटर (2) 5 किलोमीटर
(3) 1 किलोमीटर (4) 3 किलोमीटर

9. **शिक्षा का अधिकार कानून** किस राज्य पर लागू नहीं है?
(1) आन्ध्रप्रदेश (2) जम्मू-कश्मीर
(3) सिक्किम (4) गोवा

10. इस अधिनियम के अनुसार विद्यालय प्रबन्धन समिति में कितने प्रतिशत महिलाएँ होगी?
(1) 25 प्रतिशत (2) 33 प्रतिशत
(3) 50 प्रतिशत (4) 60 प्रतिशत

11. इस अधिनियम के अनुसार किस कक्षा तक बालक को रोका या निष्कासित नहीं किया जा सकता?
(1) 5वीं कक्षा तक (2) 8वीं कक्षा तक
(3) 10वीं कक्षा तक (4) 9वीं कक्षा तक

12. भारतीय संविधान की धारा 45 में किस आयु तक के बालक-बालिकाओं की शिक्षा निःशुल्क व अनिवार्य करने का निर्देश दिया गया है?
(1) 21 वर्ष (2) 14 वर्ष
(3) 18 वर्ष (4) 11 वर्ष

13. संविधान की कौनसी धारा के अन्तर्गत 14 वर्ष तक की आयु के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का प्रावधान किया गया है?
(1) धारा 41 (2) धारा 45
(3) धारा 49 (4) धारा 42

14. हाल ही में किस कक्षा तक सभी विद्यार्थियों को राजकीय शिक्षण शुल्क मुक्त कर दिया गया है?
(1) कक्षा 1 से 5 तक (2) कक्षा 1 से 10 तक
(3) कक्षा 1 से 8 तक (4) कक्षा 1 से 12 तक

15. **साक्षरता शिक्षित करने के साधनों में से एक है। साक्षरता अपने आप में शिक्षा नहीं है।** यह कथन किसका है?
(1) महात्मा गाँधी का (2) रवीन्द्रनाथ ठाकुर का
(3) स्वामी विवेकानन्द का (4) श्री अरविन्द का

16. भारतीय संविधान की किस धारा में शिक्षा को मौलिक अधिकार बताया गया है?
(1) 32 ख (2) 45 ग
(3) 21 अ (4) 351

17. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 किस आयु वर्ग के बालकों के लिए लागू है?
(1) 6-14 वर्ष (2) 7-13 वर्ष
(3) 5-11 वर्ष (4) 6-12 वर्ष

18. शिक्षा का अति महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है-
(1) आजीविका कमाना (2) बच्चे का सर्वांगीण विकास
(3) पढ़ना एवं लिखना सीखना (4) बौद्धिक विकास

19. कक्षा 6 से 8 तक शिक्षक-छात्र अनुपात होना चाहिए-
(1) 1:30 (2) 1:35
(3) 1:40 (4) 1:45

20. कक्षा 1 से 5 तक के लिए 200 बालकों के ऊपर छात्र-शिक्षक अनुपात होना चाहिए-
(1) 1:30 (2) 35:1
(3) 40:1 (4) 45:1

21. उच्च प्राथमिक स्तर तक फेल करने की व्यवस्था का अन्त किस कानून की देन है?
(1) RTI (2) RTE
(3) RTCP (4) REI

22. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 किस राज्य में लागू नहीं है?
(1) केरल (2) पंजाब
(3) जम्मू-कश्मीर (4) अरुणाचल प्रदेश

23. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकाकर अधिनियम, 2009 में एक अध्यापक के लिए कितने न्यूनतम कार्य घण्टे प्रति सप्ताह निर्धारित किए गए हैं-
(1) 40 घण्टे (2) 45 घण्टे
(3) 50 घण्टे (4) 55 घण्टे

24. आर्थिक रूप से कमजोर समुदाय के बच्चों हेतु निजी स्कूलों में कितने प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान है?
(1) 10 प्रतिशत (2) 25 प्रतिशत
(3) 33 प्रतिशत (4) 50 प्रतिशत

25. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 के अनुसार कक्षा 6 से 8 तक एक शैक्षणिक वर्ष में निर्धारित कार्य दिवसों की संख्या है-
(1) 200 कार्य दिवस (2) 220 कार्य दिवस
(3) 235 कार्य दिवस (4) 265 कार्य दिवस

8.	9.	10.	11.	12.	13.	14.	15.	16.	17.	18.	19.	20.	21.	22.	23.	24.	25.				
(3)	(2)	(3)	(2)	(2)	(2)	(4)	(4)	(3)	(1)	(2)	(2)	(3)	(2)	(3)	(2)	(2)	(2)				

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

26. संविधान के किस संशोधन द्वारा पूर्व में भी बालकों को अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा प्रदान किया जाना आवश्यक किया गया था?
(1) 86वाँ संशोधन, 2002 (2) 87वाँ संशोधन, 2002
(3) 86वाँ संशोधन, 2001 (4) 86वाँ संशोधन, 2005

27. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनिमय, 2009 में प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम कार्यदिवस माने गए हैं–
(1) 200 (2) 150
(3) 225 (4) 175

28. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 में प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम वार्षिक शैक्षणिक घण्टे माने गए हैं–
(1) 200 (2) 400
(3) 600 (4) 800

29. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 के अनुसार 200 बालकों पर शिक्षकों की संख्या होगी–
(1) 5 (2) 4
(3) 7 (4) 10

30. किस धारा के अन्तर्गत शिक्षकों के लिए अकादमिक उत्तरदायित्व निर्धारित किया गया है?
(1) धारा 15 (2) धारा 24
(3) धारा 17 (4) धारा 13

31. हमारे देश के संविधान में किसके लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था है?
(1) सभी छात्रों के लिए
(2) 14 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए
(3) सभी छात्रों और प्रौढ़ों के लिए
(4) सभी नागरिकों के लिए

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

32. अनिवार्य शिक्षा के मार्ग में बाधा हैं–
(1) अपव्यय की समस्या (2) जनचेतना की कमी
(3) शिक्षा महत्त्व की अज्ञानता (4) उपरोक्त सभी

33. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनिमय, 2009 को लागू करना क्यों आवश्यक था?
(1) बालकों को दिये गये मूल अधिकार के अनुसार गुणवत्ता शिक्षा की संरचना उपलब्ध कराने हेतु।
(2) भारतीय संविधान की धारा 45 बालकों की शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा नहीं करती थी।
(3) बालकों की शिक्षा को संविधान में मूल अधिकार बनाने के लिये।
(4) क्योंकि राज्य के लिये नीति–निर्देशक तत्त्व निर्देश थे, उन्हें लागू नहीं किया जा सकता था।

34. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करने की कल्पना किस प्रकार के शैक्षिक प्रशासन में की गई?
(1) प्रजातन्त्रात्मक शैक्षिक प्रशासन में
(2) सर्वहारा शैक्षिक प्रशासन में
(3) आन्तरिक शैक्षिक प्रशासन में
(4) बाह्य शैक्षिक प्रशासन में

35. बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के प्रावधान का अधिनियम है–
(1) Free Education Act
(2) The Right of Children to Free and Compulsory Education
(3) Right to Education
(4) Free Education Right for Compulsory

36. कक्षा 1 से 5 तक 1 किमी. तथा कक्षा 6 से 8 तक 3 किमी. के दायरे में विद्यालय को किस रूप में कानून में परिभाषित किया है?
(1) नेबरहुड (2) प्राथमिक स्कूल
(3) उच्च प्राथमिक स्कूल (4) इनमें से कोई नहीं

37. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम में स्थानीय सरकार का/के कार्य है/हैं–
(1) प्रत्येक बालक को मुफ्त व अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध कराना।
(2) शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था करना।
(3) विद्यालय भवन, शिक्षक और शिक्षण सामग्री की व्यवस्था करना।
(4) उपर्युक्त सभी

38. संसद के बजट सत्र के पहले दिन अधिनियम की घोषणा के समय राष्ट्रपति ने देश के शैक्षिक ढाँचे में बुनियादी परिवर्तन को किन सम्बन्धों पर आधारित बताया?
(1) समावेषण (2) उत्कृष्टता
(3) विस्तार (4) उपर्युक्त सभी

39. सही कथन है–
(1) विद्यार्थियों की प्रवेश पूर्व परीक्षा लेनी चाहिए।
(2) आयु प्रमाण–पत्र के अभाव में विद्यार्थी को विद्यालय में प्रवेश से नहीं रोका जा सकता।
(3) विद्यार्थियों को दण्ड देना चाहिए।
(4) विद्यार्थियों से प्रवेश शुल्क लेना चाहिए।

40. अधिनियम में शिक्षक का/के कर्त्तव्य है/हैं–
(1) शिक्षक विद्यालय में नियमित रूप से और समय पर उपस्थिति दे।
(2) समय पर पाठ्यक्रम पूर्ण कराये।
(3) अभिभावकों से नियमित मीटिंग करे और छात्रों की प्रगति से अवगत करायेगा।
(4) उपर्युक्त सभी

26.	27.	28.	29.	30.	31.	32.	33	34.	35.	36.	37.	38.	39.	40.							
(1)	(1)	(4)	(1)	(2)	(2)	(4)	(1)	(4)	(2)	(1)	(4)	(4)	(2)	(4)							

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

41. अधिनियम के सम्बन्ध में सही कथन है/हैं–
(1) बालक का सर्वांगीण विकास होना चाहिए।
(2) बालक की शारीरिक व मानसिक योग्यताओं को बढ़ाकर उनका विकास किया जाएगा।
(3) भय, चिन्ता और तनाव से मुक्त कर बालक को स्वतन्त्र रूप से विचार व्यक्त करने में सहयोग दिया जाएगा।
(4) उपर्युक्त सभी

42. शिक्षकों की नियुक्ति के सम्बन्ध में अधिनियम में कहा गया है–
(1) सम्बन्धित सरकार द्वारा निर्धारित शैक्षिक योग्यताएँ।
(2) आवश्यकता होने पर यदि अप्रशिक्षित व्यक्ति अध्यापक नियुक्त किया जाता है, तो उसे 5 वर्ष के भीतर निर्धारित योग्यताएँ पूरी करनी होगी।
(3) उपर्युक्त दोनों कारण सही है।
(4) दोनों कथन गलत हैं।

43. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम के सम्बन्ध में शिक्षकों के लिए निषेध है–
(1) विद्यालयी शिक्षा के कार्यों को करना
(2) शिक्षण में नवाचार अनुप्रयोग करना
(3) शैक्षणिक उद्देश्य के कार्यों के अतिरिक्त कार्य करना तथा शिक्षा के विकास की तुलना में सामाजिक कार्यों को अधिक महत्त्व देना
(4) शिक्षण गतिविधियों में पूर्ण सहभागिता देना तथा शैक्षणिक विकास के लिए कार्य करना

44. कौनसे ऐसे कार्य हैं, जो शैक्षणिक कार्यों के अन्तर्गत नहीं आते हैं, लेकिन शिक्षकों को उन कार्यों में लगाया जा सकता है?
(1) जनगणना सम्बन्धी कार्य।
(2) आपातकाल में सहायता करना।
(3) स्थानीय, राज्य या केन्द्र सरकार सम्बन्धी चुनावी कार्य।
(4) उपर्युक्त सभी

45. विद्यालय में शिक्षण के अतिरिक्त शिक्षक धन प्राप्ति के लिए कर सकता है–
(1) घर पर विद्यार्थियों को ट्यूशन पढ़ाना
(2) विद्यालय से अवकाश लेकर घर में कोचिंग के लिए अतिरिक्त समय देना
(3) विद्यालय समय समाप्ति के बाद विद्यालय में ही अतिरिक्त समय में ट्यूशन पढ़ाना
(4) इनमें से कोई नहीं

46. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम के सन्दर्भ में केन्द्र सरकार का/के क्या उत्तरदायित्व है/हैं?
(1) राष्ट्रीय पाठ्यक्रम सम्बन्धी रूपरेखा का विकास
(2) शिक्षकों के प्रशिक्षण सम्बन्धी योग्याताओं का विकास
(3) राज्य सरकार को शोध, योजना और नवाचार के लिए सहयोग
(4) उपर्युक्त सभी

47. अधिनियम के अनुसार विद्यार्थियों के लिए क्या सुविधा निर्धारित है?
(1) सभी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए सुविधाएँ प्रदान करना।
(2) विद्यालयी जीवन में बिना भेदभाव सभी विद्यार्थियों को पूरा सम्मान मिले।
(3) विद्यार्थी की आवश्यकतानुसार योजनागत ढंग से शिक्षण कराया जाए।
(4) उपर्युक्त सभी

48. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम में विद्यालयों को क्या निर्देश दिया गया है?
(1) विद्यार्थियों की प्रवेश पूर्व परीक्षा लेना
(2) विद्यार्थियों से प्रवेश पूर्व किसी प्रकार की परीक्षा या प्रवेश शुल्क ना लेना
(3) विद्यार्थियों को दण्ड देना
(4) इनमें से कोई नहीं

49. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनिमय, 2009 में एक अध्यापक को निम्न में से किस दायित्व को पूरा करना होगा?
(1) विद्यालय में नियमित रूप से समय पर उपस्थित होना होगा।
(2) पाठ्यक्रम का संचालन कर पूरा करना होगा।
(3) सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को निर्धारित समय पर पूरा करना होगा।
(4) इनमें से सभी।

50. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 की निम्न में से विशेषता नहीं है–
(1) 6–14 वर्ष आयु वर्ग हेतु निःशुल्क शिक्षा
(2) प्राइवेट ट्यूशन का अन्त
(3) शारीरिक दण्ड व मानसिक प्रताड़ना का निषेध
(4) निजी विद्यालयों को प्रोत्साहन

51. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनिमय, 2009 के अन्तर्गत केन्द्र और राज्य सरकारों के मध्य कोष का साझेदारी अनुपात है–
(1) 25:75 (2) 50:50
(3) 55:45 (4) 45:55

52. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनिमय, 2009 के सम्बन्ध में असत्य कथन है–
(1) इससे शिक्षा बालकों का मौलिक अधिकार बन गया है।
(2) यह कानून 1 अप्रैल, 2011 से लागू हो गया।
(3) इसमें बालक की आयु 6–14 वर्ष है।
(4) निजी शिक्षण संस्थानों में 25 प्रतिशत सीटें कमजोर तबके के बालकों के लिए आरक्षित होंगी।

53. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनिमय, 2009 के सम्बन्ध में असत्य कथन है–
(1) कोई भी विद्यालय बालक को प्रवेश के लिए मना नहीं कर सकता।
(2) विकलांग, मन्दबुद्धि बच्चों के लिए विशेष प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यवस्था होगी।

41.	42.	43.	44.	45.	46.	47.	48.	49.	50.	51.	52.	53.									
(4)	(3)	(3)	(4)	(4)	(4)	(4)	(2)	(4)	(4)	(3)	(2)	(4)									

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

(3) शिक्षकों के लिए न्यूनतम शैक्षिक योग्यता का पालन आवश्यक होगा।
(4) 60 छात्रों पर एक शिक्षक होगा।

54. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनिमय, 2009 के सम्बन्ध में असत्य कथन है–
(1) विद्यालय प्रवेश के लिए जन्म प्रमाण–पत्र, स्थानान्तरण प्रमाण–पत्र के आधार पर मना नहीं करेंगे।
(2) निजी विद्यालयों में कैपिटेशन फीस और पूर्व प्रवेश परीक्षा निषेध होगी।
(3) शिक्षक–छात्र अनुपात कोठारी आयोग की अनुशंसा के अनुरूप है।
(4) सत्र प्रारम्भ होने के पश्चात् 6 महीने तक बालकों को प्रवेश दिया जाएगा।

55. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनिमय, 2009 के अन्तर्गत शिक्षकों के लिए निर्धारित अकादमिक उत्तरदायित्व नहीं है–
(1) विद्यालयों में उपस्थित होने में नियमितता और समय पालन
(2) तय समय सीमा में पाठ्यक्रम संचालित और पूर्ण करना।
(3) प्रत्येक बालक की शिक्षा ग्रहण की क्षमताओं का आकलन करना।
(4) निजी ट्यूशन का कार्य करना।

56. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनिमय, 2009 में **अनिवार्य** शब्द का अर्थ है–
(1) दण्डात्मक कार्य से बचने के लिए अपने बच्चों को विद्यालय भेजने के लिए अभिभावकों पर अनिवार्य रूप से जोर डाला गया है।
(2) अनिवार्य शिक्षा सतत् परीक्षण के माध्यम से प्रदान की जाएगी।
(3) केन्द्र सरकार दाखिले, उपस्थिति और प्रारम्भिक शिक्षा की पूर्णता को सुनिश्चित करेगी।
(4) उचित सरकारें दाखिले, उपस्थिति और प्रारम्भिक शिक्षा की पूर्णता को सुनिश्चित करेगी।

57. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 के अन्तर्गत किसी भी अध्यापक को निम्न में से किस कार्य के लिए नहीं लगाया जा सकता?
(1) दस वर्ष पश्चात् होने वाली जनगणना में
(2) आपदा राहत कार्य में
(3) चुनाव सम्बन्धी कार्य में
(4) पल्स पोलियो कार्यक्रम में

****

अगर आप B.Ed, D.Ed, BSTC या शिक्षण अध्यापन के क्षेत्र में पढ़ाई कर रहे हैं तो आपसे निवेदन है कि निम्नलिखित Whatsapp No. अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में जोड़ें। अगर आपका व्हाट्सएप ग्रुप नहीं बना हुआ है तो कृपया कम से कम 20 विद्यार्थी मिलकर व्हाट्सएप ग्रुप बना लें।

REET - 94604 43210
UPTET - 95301 43210
MP Samvida - 95302 43210
BTET - 95302 43210
UTET - 72209 29294
JTET - 72209 29239
HTET - 72209 29266
CGTET - 72209 28969
HPTET - 72209 28535

आपके क्लास के व्हाट्सएप ग्रुप में शिक्षा संबंधी सभी प्रतियोगी परीक्षा के पेपर्स, मॉडल पेपर्स एवं अन्य अध्ययन सामग्री भेजी जाएगी। आपका शुरू से मार्गदर्शन किया जाएगा, ताकि आप प्रतियोगी परीक्षा में अतिशीघ्र सफलता प्राप्त कर सकें।

प्रगण्य प्रकाशन द्वारा CTET एवं प्रत्येक राज्य के TET (UPTET, MP Samvida, BTET, UTET, JTET, HTET, CGTET, HPTET) के लिए मॉडल पेपर की फ्री PDF प्रकाशित की जाती है। मॉडल पेपर की फ्री PDF प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित Whatsapp No. अपने कॉलेज के क्लास ग्रुप या कोचिंग के क्लास ग्रुप या अन्य स्टडी ग्रुप में जोंडे। आपके ग्रुप में मॉडल पेपर भेज दिए जाएँगें।

REET - 94604 43210
UPTET - 95301 43210
MP Samvida - 95302 43210
BTET - 95302 43210
UTET - 72209 29294
JTET - 72209 29239
HTET - 72209 29266
CGTET - 72209 28969
HPTET - 72209 28535

54.	55.	56.	57.																		
(3)	(4)	(2)	(4)																		

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

अध्याय 20

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005

1.1 प्रस्तावना

पाठ्यचर्या एक व्यापक सम्प्रत्यय है, जिसके द्वारा छात्र निश्चित रूप से अधिगम करता है। अतः पाठ्यचर्या के द्वारा शिक्षक एवं छात्र दोनों को उचित मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

पाठ्यक्रम सुधार एवं उसको नवीन बनाने के प्रयास अनवरत रूप से किए जाते रहे हैं, क्योंकि पाठ्यक्रम द्वारा ही समाज एवं वर्तमान समय की आकांक्षा को पूर्ण किया जा सकता है, इसलिए समस्त शिक्षा विशेषज्ञ अपने प्रयत्नों के माध्यम से पाठ्यक्रमों में समय-समय पर सुधार करते हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 भी इस पाठ्यक्रम सुधार की महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी कड़ी है।

1.2 निर्माण

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की कार्यकारिणी ने 14 एवं 19 जुलाई, 2004 की बैठकों में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या को सुधारने या संशोधित करने का निर्णय लिया। यह निर्णय माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री द्वारा लोकसभा में इस वक्तव्य के अनुसरण में लिया गया कि परिषद् को यह संशोधन करना चाहिए। इसी क्रम में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा सचिव ने परिषद् के निदेशक को एक पत्र लिखा। पत्र में उन्होंने 1993 की **शिक्षा बिना बोझ के** रिपोर्ट की रोशनी में विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2000 की समीक्षा करने की आवश्यकता व्यक्त की। इन्हीं निर्णयों के सन्दर्भ में प्रोफेसर यशपाल की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय फोकस समूह का गठन किया गया। इन समितियों में उच्च शिक्षा संस्थानों के प्रतिनिधि, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के अकादमिक सदस्य, विद्यालयों के शिक्षक और गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि सदस्यों के रूप में शामिल हुए। राष्ट्र के प्रत्येक क्षेत्र में इसके सम्बन्ध में विचार-विमर्श किया गया। इसके साथ ही अजमेर, मैसूर, भोपाल, भुवनेश्वर और शिलांग में स्थित परिषद् के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में भी क्षेत्रीय संगोष्ठियों का आयोजन किया गया। राज्यों के सचिवों, राज्यों की शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों और परीक्षा बोर्ड के सदस्यों से विचार-विमर्श किया गया। ग्रामीण शिक्षकों से सुझाव लेने के लिए एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय और क्षेत्रीय समाचार-पत्रों में विज्ञापन दिए गए, जिससे लोग नयी पाठ्यचर्या के बारे में अपनी राय दे सकें और बड़ी संख्या में लोगों की प्रतिक्रियाएँ आईं।

संशोधित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या दस्तावेज का आरम्भ रवीन्द्रनाथ टैगोर के निबन्ध **सभ्यता और प्रगति** के एक उद्धरण से होता है, जिसमें कविगुरु हमें याद दिलाते हैं कि सृजनात्मकता और उदार आनन्द बचपन की कुन्जी है और नासमझ वयस्क संसार द्वारा उनकी विकृति का खतरा है।

टैगोर के शब्दों में-

> अपनी उत्तेजना में वह एक चीज भूल गया, वह तथ्य जो उसे उस वक्त बहुत मामूली लगा था कि इस प्रलोभन में एक ऐसी चीज खो गई जो उसके खिलौने से कहीं श्रेष्ठ थी, एक श्रेष्ठ व पूर्ण बच्चा। उस खिलौने से महज उसका धन व्यक्त होता था, बच्चे की रचनात्मक ऊर्जा नहीं। उसके खेल में न ही बच्चों को आनन्द था न ही साथियों को खुला निमन्त्रण।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

1.3 विशेषताएँ

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं-

1. **शिक्षा बिना बोझ के** रिपोर्ट की सूझ के आधार पर पाठ्यचर्या के बोझ को कम करना।
2. पाठ्यचर्या सुधार से सुसंगत व्यवस्थागत परिवर्तन करना।
3. ऐसे नागरिक वर्ग का निर्माण, जो लोकतान्त्रिक व्यवहारों, मूल्यों के प्रति कटिबद्ध हो, लैंगिक न्याय के प्रति, अनुसूचित जातियों-जनजातियों और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की समस्याओं एवं आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील हो तथा जिनमें राजनीतिक एवं आर्थिक प्रक्रियाओं में भाग लेने की क्षमता हो।
4. सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ पर विवेचनात्मक परिप्रेक्ष्य को विकसित करने वाली प्रक्रियाओं को पाठ्यचर्या में स्थान देने की आवश्यकता।
5. विद्यार्थियों की सहभागिता के क्षेत्र-अवलोकन, अन्वेषण, विश्लेषणात्मक विमर्श आदि भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं, जितनी कि ज्ञान की विषय-वस्तु।
6. विद्यार्थियों के विकास एवं अधिगम के सम्बन्ध में सर्वांगीण दृष्टिकोण।
7. कक्षा में सभी विद्यार्थियों के लिए समावेशी वातावरण तैयार करना।
8. ज्ञान निर्माण में विद्यार्थियों की सहभागिता और रचनात्मकता को बढ़ावा।
9. प्रयोगात्मक माध्यमों द्वारा सक्रिय शिक्षण।
10. अध्यापक और अध्ययन सम्बन्धी हमारी समझ का पुनः अभिमुखीकरण।
11. पाठ्यचर्या की प्रक्रियाओं में बच्चों की सोच, जिज्ञासा और प्रश्नों के लिए पर्याप्त स्थान।
12. ज्ञान को अनुशासनिक सीमाओं के पार जोड़ते हुए ज्ञान के अन्तर्दृष्टिपूर्ण निर्माण के लिए एक व्यापक ढाँचा प्रदान करना।
13. स्थानीय ज्ञान एवं बच्चों के अनुभव पाठ्यपुस्तकों और अध्यापक प्रक्रियाओं के महत्त्वपूर्ण अंग है।
14. पर्यावरण सम्बन्धी परियोजनाओं से जुड़े विद्यार्थी ऐसे ज्ञान के निर्माण

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

में अपना योगदान दे सकते हैं, जो भारतीय पर्यावरण का एक पारदर्शी एवं सार्वजनिक डाटाबेस तैयार करने में सहायक हो।

15. शिक्षा की राष्ट्रीय व्यवस्था को बहुलतावादी समाज में मजबूती प्रदान करना।
16. संविधान में उल्लिखित मूल्यों, जैसे– सामाजिक न्याय, समता एवं धर्मनिरपेक्षता पर आधारित पाठ्यचर्या अभ्यास।
17. सभी बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना।

1.4 उद्देश्य

सामाजिक न्याय और समानता के संवैधानिक मूल्यों पर आधारित एक धर्मनिरपेक्ष, समतामूलक और बहुलतावादी समाज के आदर्श से प्रेरणा लेते हुए इस दस्तावेज में शिक्षा के कुछ व्यापक उद्देश्य चिह्नित किए गए हैं, जो निम्नलिखित हैं–

1. लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी की प्रवृत्ति
2. विचार और कर्म की स्वतन्त्रता
3. दूसरों की भलाई और भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता
4. आर्थिक प्रक्रियाओं तथा सामाजिक बदलाव में योगदान देने के लिए काम करने की क्षमता।
5. नई स्थितियों का लचीलेपन और रचनात्मक तरीके से सामना करना

अगर शिक्षा के लोकतान्त्रिक तरीकों को सुदृढ़ करना है, तो उसे स्कूल में जाने वाली पहली पीढ़ी की उपस्थिति का भी ध्यान रखना ही होगा, जिसका स्कूल में बने रहना उस संविधान संशोधन के चलते अनिवार्य हो गया है जिसने आरम्भिक शिक्षा को हर बच्चे का मौलिक अधिकार बना दिया है। संविधान के इस संशोधन से हम पर यह जिम्मेदारी आ गई है कि हम सारे बच्चों को जाति, धर्म सम्बन्धी अन्तर, लिंग और असमर्थता सम्बन्धी चुनौतियों से निरपेक्ष रहते हुए स्वास्थ्य, पोषण और समावेशी स्कूली परिवेश उपलब्ध कराए, जो उन्हें शिक्षा ग्रहण करने में सहायता पहुँचाए तथा उन्हें सशक्त बनाए।

1.5 पाठ्यचर्या निर्माण के निर्देशक सिद्धान्त

हमारे शैक्षिक उद्देश्यों और शिक्षा की गुणवत्ता में आज गहरी विकृति आ गई है, इसका प्रमाण यह तथ्य है कि शिक्षा बच्चों और उनके माता–पिता के लिए तनाव और बोझ का कारण बनी आई है, इस विकृति को दूर करने के लिए पाठ्यचर्या के इस दस्तावेज ने पाठ्यचर्या निर्माण के पाँच निर्देशक सिद्धान्तों का प्रस्ताव रखा है, जो निम्न प्रकार है–

1. पाठ्यचर्या का इस तरह संवर्द्धन कि वह बच्चों को चहुँमुखी विकास के अवसर उपलब्ध करावाए, बजाए इसके कि पाठ्यपुस्तक केन्द्रित बन कर रह जाए।
2. परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों से जोड़ना।
3. ज्ञान को विद्यालय के बाहरी जीवन से जोड़ना।
4. यह सुनिश्चित करना कि शिक्षण रटन्त प्रणाली से मुक्त हो।
5. एक ऐसी अधिभावी का विकास, जिसमें प्रजातान्त्रिक राज्य व्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्रीय चिन्ताएँ समाहित हो।

1.6 अध्याय

1. प्रथम अध्याय

आरम्भिक अध्याय में स्वतन्त्रता के बाद पाठ्यचर्या में किए गए सुधार के प्रयासों की चर्चा की गई है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या को शिक्षा की राष्ट्रीय व्यवस्था विकसित करने का एक साधन होना चाहिए, जो भारतीय संविधान में राष्ट्रीय निर्माण के दर्शन को अपनी आधार भूमि माने। इस अध्याय में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा की गई है–

1. शिक्षा के लक्ष्य
2. शिक्षा की गुणवत्ता
3. शिक्षा के सामाजिक सन्दर्भ

2. द्वितीय अध्याय

द्वितीय अध्याय में ज्ञान की प्रकृति और बच्चों के सीखने की कार्यनीतियों पर चर्चा की गई है, जो अध्याय 3 में दिए गए उन सुझावों का सैद्धान्तिक आधार निरूपित करती है, जो पाठ्यचर्या के विभिन्न क्षेत्रों के लिए दिए गए हैं। यह तथ्य कि बच्चा ज्ञान का सृजन करता है, इसका निहितार्थ है कि पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें शिक्षक को इस बात के लिए सक्षम बनाएँ कि वे बच्चों की प्रकृति और वातावरण के अनुरूप कक्षायी अनुभव आयोजित करें, ताकि सारे बच्चों को अवसर मिल पाए। शिक्षण का उद्देश्य बच्चे के सीखने की सहज इच्छा और युक्तियों को समृद्ध करना होना चाहिए। अनुभव या ज्ञान को सूचना से पृथक् करने की आवश्यकता है और शिक्षण को एक पेशेवर गतिविधि के रूप में पहचानने की जरूरत है न कि तथ्यों के रटने और प्रसार के प्रशिक्षण के रूप में। जटिल एवं सक्रिय गतिविधि के माध्यम से बालक अपने आसपास के वातावरण को जानने का प्रयास करता है, इसलिए प्रत्येक साधन का उपयोग इस तरह किया जाना चाहिए कि बच्चे को खुद को अभिव्यक्त करने में, वस्तुओं का इस्तेमाल करने में, अपने प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश की खोजबीन करने में और स्वस्थ रूप से विकसित होने में सहायता मिले।

3. तृतीय अध्याय

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत पाठ्यचर्या के विभिन्न क्षेत्रों के सम्बन्ध में सुझाव दिए गए है। इसके अन्तर्गत स्कूल के विषयों और पाठ्यचर्या के क्षेत्रों की फिर से संकल्पना करने पर जोर दिया गया है।

4. चतुर्थ अध्याय

चतुर्थ अध्याय में विद्यालय तथा कक्षा के वातावरण के सम्बन्ध में चर्चा की गई है। इस अध्याय में भौतिक वातावरण के साथ–साथ मनोवैज्ञानिक वातावरण की भी विस्तृत चर्चा की गई है। यह अध्याय स्कूलों के लोकाचार की गुणवत्ता को सुधारने के लिए संसाधन जुटाए जाने पर जोर देता है।

5. पंचम अध्याय

अन्तिम अध्याय में व्यवस्थागत सुधारों पर चर्चा की गई है। यदि बच्चों के कक्षा के अनुभवों को इस तरह आयोजित करना हो, जिससे उन्हें ज्ञान सृजित करने का मौका मिले, तो हमारी विद्यालयी व्यवस्था में व्यापक व्यवस्थागत सुधारों की आवश्यकता होगी। इस अध्याय में इस बात पर जोर दिया गया है कि शिक्षण बच्चे की सीखने की सहज इच्छा को समृद्ध करें, न कि केवल सूचनाएँ प्रदान करे।

1.7 सुधार सम्बन्धी दिशा-निर्देश

शिक्षा के माध्यम से बच्चों में बौद्धिक परिवर्तन होता हैं उनकी क्षमता, अभिरुचि व दृष्टिकोण में काफी बदलाव आते हैं, इसलिए विषयवस्तु के चुनाव, व्यवस्था तथा ज्ञान निर्माण की प्रक्रियाओं को उनके हिसाब से अनुकूलित करना चाहिए। यह राष्ट्रीय पाठ्यचर्या दस्तावेज इस बात की सिफारिश करता है कि विषयों के बीच की दूरी को कम करने के प्रयास किए जाए, ताकि बच्चों को ज्ञान का समग्र आनन्द मिल सके और किसी चीज को समझने से मिलने वाली खुशी हासिल हो सके। इसके साथ यह भी सुझाया गया है कि पाठ्यपुस्तक और दूसरी सामग्री की बहुलता हो, जिनमें स्थानीय ज्ञान और पारम्परिक कौशल शामिल हो सकते हैं और बच्चों के गृह और सामुदायिक परिवेश से जीवन्त सम्बन्ध बनाने वाले स्फूर्तिदायक विद्यालयी परिवेश को सुनिश्चित किया जा सके।

1.7.1 गणित विषय के सम्बन्ध में

गणित शिक्षण का मुख्य लक्ष्य औपचारिक एवं यान्त्रिक प्रक्रियाओं का ज्ञान अर्थात् गणित का ज्ञान प्रदान करना न होकर गणितीकरण होना चाहिए। गणित की शिक्षा से बच्चों की तार्किक, सोचने की, अमूर्तनों के निर्माण व दृष्टिकरण की एवं समस्या सुलझाने की क्षमता का विकास होना चाहिए।

उद्देश्यों का यह व्यापक फलक उस प्रासंगिक और अर्थपूर्ण गणित को पढ़ाकर तय किया जा सकता है, जो बच्चों के अनुभवों में गुँथी हुई हो। गणित में सफलता को प्रत्येक बच्चे के अधिकार की तरह देखा जाना चाहिए। इसके लिए गणित के दायरे को और विस्तृत करने की जरूरत है और इसे दूसरे विषयों से जोड़ने की जरूरत है। प्रत्येक विद्यालय को कम्प्यूटर, हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और कनैक्टिविटी उपलब्ध कराने जैसी आधारभूत समस्याओं का समाधान करने की आवश्यकता है।

1.7.2 भाषा विषय के सम्बन्ध में

पढ़ना, लिखना, बोलना और सुनना ये क्रियाएँ पाठ्यचर्या के सभी क्षेत्रों में बच्चों की प्रगति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है और उन्हें पाठ्यचर्या की योजना का आधार होना चाहिए। आरम्भिक कक्षाओं के पूरे दौर में पढ़ने पर जोर देना जरूरी है, जिससे प्रत्येक बच्चे को स्कूली शिक्षा का ठोस आधार मिल सके।

त्रिभाषा फॉमूले को पुनः लागू किए जाने की दिशा में काम किया जाना चाहिए, जिसमें बच्चों की घरेलू भाषाओं और मातृभाषाओं को शिक्षण के माध्यम के रूप में मान्यता देने की जरूरत है। इनमें आदिवासी भाषाएँ भी सम्मिलित हैं। अंग्रेजी को अन्य भारतीय भाषाओं के बीच स्थान दिए जाने की आवश्यकता है। भारतीय समाज की बहुभाषात्मक प्रकृति को स्कूली जीवन की समृद्धि के लिए संसाधान के रूप में देखा जाना चाहिए।

1.7.3 सामाजिक विज्ञान के सम्बन्ध में

बच्चों को सामाजिक शिक्षा देने में केवल इस प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे उनकी सामाजिक अवधारणा विकसित हो। इससे उन्हें सामाजिक मुद्दों पर स्वतन्त्र तथा आलोचनात्मक रूप से सोचने का अवसर मिलेगा। नागरिक शास्त्र को राजनीतिशास्त्र में तब्दील कर दिया जाए तथा इतिहास को बच्चे के अतीत तथा नागरिकता की पहचान की अवधारणा पर प्रभाव डालने वाले विषय के रूप में पहचाना जाए। प्रमुख राष्ट्रीय चिन्ताओं, जैसे- लैंगिक न्याय, मानव अधिकार, हाशिए पर ढकेल दिए गए समूहों और अल्पसंख्यकों के प्रति संवेदनशीलता को विकसित किए जाने के लिए अंतःअनुशासनात्मक दृष्टिकोण अपनाए जाने की जरूरत है।

1.7.4 विज्ञान विषय के सम्बन्ध में

विज्ञान की भाषा, प्रक्रिया एवं विषयवस्तु विद्यार्थी की उम्र और उसकी ज्ञान की सीमा के अनुकूल होनी चाहिए। विज्ञान की शिक्षा में इस प्रकार का परिवर्तन एवं सुधार करना चाहिए कि यह प्रत्येक बालक को अपने प्रतिदिन के कार्यों के अनुभवों को परखने एवं जाँचने और उनका विश्लेषण करने में सक्षम बनाए।

परिवेश सम्बन्धी सरोकारों और चिन्ताओं पर हर विषय में जोर दिए जाने की जरूरत है और यह ढेरों गतिविधियाँ और बाहरी दुनिया पर की गई परियोजनाओं के द्वारा होना चाहिए। सभी प्रकार की परियोजनाओं के माध्यम से निकलने वाली सूचनाओं और समझ के आधार पर भारतीय पर्यावरण को लेकर एक सर्वसुलभ और पारदर्शी डाटाबेस तैयार हो सकता है, जो अत्यन्त उपयोगी शैक्षणिक संसाधन साबित होगा। यदि विद्यार्थियों की परियोजनाएँ सुनियोजित हो, तो उनसे ज्ञान सृजित होगा। बाल विज्ञान कांग्रेस की तर्ज पर एक सामाजिक आन्दोलन की कल्पना की जा सकती है, जिससे पूरे देश में अन्वेषण की शिक्षा को प्रोत्साहन मिलेगा, जो बाद में पूरे दक्षिण एशिया में फैल सकता है।

विज्ञान की शिक्षा को बच्चों के परिवेश के व्यापक सन्दर्भ के अनुकूल होना चाहिए ताकि उनमें बाहरी दुनिया में प्रवेश करने लायक जरूरी ज्ञान एवं कौशल विकसित हो सके। पर्यावरण की चिन्ताओं के प्रति जागरूकता को सम्पूर्ण स्कूली पाठ्यचर्या में व्याप्त होना चाहिए।

1.7.5 काम विषय के सम्बन्ध में

पूर्व प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च माध्यमिक स्तर पर स्कूली पाठ्यचर्या को पुनर्गठित किए जाने की आवश्यकता है, जिसमें ज्ञान अर्जन, मूल्यों का विकास और बहुविध कौशलों के निर्माण के सन्दर्भ में काम की शिक्षाशास्त्रीय सम्भावनाओं को देखा जा सके।

काम के सन्दर्भ में आरम्भिक स्तर से शुरू करते हुए अधिगम से जोड़ने के लिए कुछ बुनियादी कदम सुझाए गए हैं। उनके पीछे आधार यह है कि ज्ञान काम को अनुभव में रूपान्तरित कर देता है और सहयोग, सृजनात्मकता और आत्म-निर्भरता जैसे मूल्यों की उत्पत्ति करता है। यह ज्ञान और रचनात्मकता के नए रूपों की प्रेरणा भी देता है। वरिष्ठ कक्षाओं में स्कूल के बाहर के संसाधनों को औपचारिक मान्यता देने की सिफारिश की गई है ताकि उन बच्चों को लाभ पहुँच सके, जो आजीविका से सीधे जुड़ी हुई शिक्षा का चुनाव करते हैं। स्कूल के बाहर की आजीविका संस्थाओं को औपचारिक मान्यता की जरूरत है, जिससे वे बच्चों को ऐसा स्थान उपलब्ध करवाएँ, जहाँ बच्चे औजारों और दूसरे साधनों से काम करें। दस्तकारियों के मानचित्रीकरण की सिफारिश की गई है, जिससे उन क्षेत्रों की पहचान की जा सके जहाँ बच्चों को स्थानीय कारीगरों के सहारे दस्तकारियों में प्रशिक्षण दिया जा सके।

1.7.6 कला विषय के सम्बन्ध में

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

कला (संगीत, नृत्य, दृश्यकला, कठपुतली कला, मिट्टी की कला, नाटक आदि के लोक तथा शास्त्रीय रूप) और धरोहर शिल्पों को पाठ्यचर्या में समेकित घटकों के रूप में मान्यता प्रदान की जानी चाहिए। भारतीय पारम्परिक दस्तकारियाँ आर्थिक और सौन्दर्यपरक मूल्यों के अर्थ में स्कूली शिक्षा के लिए प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण है, यह तथ्य पहचाना जाना चाहिए। वैयक्तिक, आर्थिक, सामाजिक और सौन्दर्यात्मक आवश्यकताओं के सन्दर्भ में उनकी प्रासंगिकता के बारे में माता-पिता, विद्यालय के अधिकारियों और प्रशासकों में जागरूकता पैदा करना आवश्यक है। बच्चों में कला के प्रति रुचि विकसित करने के लिए विद्यालयी शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर कला को शामिल किया जाना चाहिए।

1.7.7 स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा के सम्बन्ध में

स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए आवश्यक है। स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा के माध्यम से स्कूल में नामांकन, उपस्थिति एवं ठहराव आदि की समस्या से निपटा जा सकता है।

विद्यालय में बच्चों की सफलता उनके पोषण और सुनियोजित शारीरिक गतिविधि के कार्यक्रमों पर निर्भर होती है। इसीलिए आवश्यक संसाधनों और स्कूल के समय को, मध्याह्न भोजन कार्यक्रम को सुदृढ़ बनाने में लगाना चाहिए। यह सुनिश्चित करने के लिए विशेष प्रयासों की जरूरत होगी, जैसे कि स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रमों में शाला पूर्व अवस्था से लेकर आगे तक लड़कियों की ओर भी उतना ही ध्यान दिया जाए, जितना कि लड़कों की तरफ दिया जाता है।

1.7.8 शान्ति के सम्बन्ध में

स्कूली शिक्षा के दौरान उपयुक्त गतिविधियों के माध्यम से सभी विषयों में शान्ति के मूल्यों का संवर्द्धन किया जाना चाहिए तथा शान्ति के लिए शिक्षा को शिक्षक-प्रशिक्षण का भी एक अवयव बनाया जाना चाहिए।

विश्व में बढ़ती असहिष्णुता और मतभेदों को सुलझाने के तरीके के रूप में इस बात की सिफारिश की गई है कि शान्ति को राष्ट्रीय निर्माण की पूर्व शर्त और एक सामाजिक संस्कार के रूप में समग्र मूल्य संरचना के तौर पर स्वीकार किया जाए, जिसकी आज अत्यधिक प्रासंगिकता है। एक लोकतान्त्रिक और न्यायपूर्ण संस्कृति में बच्चों के समाजीकरण के लिए, शान्ति के लिए शिक्षा की सम्भावनाओं को विभिन्न गतिविधियों के द्वारा प्रत्येक स्तर पर और प्रत्येक विषय में विषयों के विवेकपूर्ण चुनाव के जरिए साकार किया जा सकता है।

1.7.9 विद्यालय वातावरण के सम्बन्ध में

शिक्षकों के प्रदर्शन को सुधारने के लिए आधारभूत और भौतिक सामग्री की न्यूनतम उपलब्धता और दैनिक योजना को लचीला बनाना आवश्यक है। बच्चों को सीखने वालों के रूप में पहचानने वाली स्कूली संस्कृति प्रत्येक बच्चे की रुचियों और उसकी सम्भावनाओं को और अधिक समृद्ध करती है। सीखने के लिए एक सबसे अनिवार्य शर्त यह है कि ऐसी विशिष्ट गतिविधियों का आयोजन किया जाए, जिनमें सक्षम और विभिन्न अक्षमताओं को झेल रहे बच्चे भी भाग ले सकें।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा और सीखने के साधनों के बारे में पुनर्विचार की आवश्यकता है। निम्न महत्त्वपूर्ण सन्दर्भों पर विशेष रूप से ध्यान देने की जरूरत है-

1. विद्यालय का पुस्तकालय विद्यार्थियों, शिक्षकों और समुदाय के लोगों के लिए ज्ञान को गहरा करने और विस्तृत संसार के साथ जोड़ने वाला होना चाहिए।
2. पाठ्यपुस्तक में अवधारणाओं की व्याख्या, गतिविधियाँ, समस्याएँ और अभ्यास उससे सम्बन्धित चिन्तन और समूह कार्य को बढ़ावा देने वाले होने चाहिए।
3. शिक्षा में द्विपक्षीय संवाद बनाने के लिए मल्टीमीडिया और सूचना एवं संचार तकनीकी के साधनों का उपयोग किया जाना चाहिए।
4. सहायक पुस्तकें, कार्य पुस्तिकाएँ, शिक्षकों के लिए मार्गदर्शिकाएँ आदि अभिनव चिन्तन और नवीन दृष्टि पर आधारित होनी चाहिए।

शिक्षा का वातावरण बनाने के लिए स्कूल सारणी की विकेन्द्रीकृत योजना, दैनिक सारणी और शिक्षक को पेशेवर कार्यों के लिए स्वायत्तता अनिवार्य है।

विद्यालय के वातावरण को पाठ्यचर्या के एक अंग के रूप में माना जाता है, क्योंकि यह छात्रों को शिक्षा के लक्ष्यों और अधिगम की उन विधियों हेतु तैयार करता है, जो विद्यालय में सफलता हेतु आवश्यक है। एक संसाधन के रूप में स्कूल के समय को लचीले ढंग से नियोजित किए जाने की आवश्यकता है। स्थानीय स्तर पर नियोजित लचीले स्कूली कैलेण्डर और समय सारणी की सिफारिश की गई है, ताकि परियोजना और पारम्परिक धरोहर वाले स्थलों के लिए भ्रमण जैसी विविध प्रकार की गतिविधियों के लिए अवसर मिल सके।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 माध्यमिक स्तर पर विकल्पों में बहुलता और लचीलेपन के महत्त्व पर जोर देती है और बच्चों को बन्द खाँचों में डाल देने की स्थापित प्रवृत्ति को हतोत्साहित करती है, क्योंकि इससे बच्चों के, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों के अवसर सीमित हो जाते हैं।

1.7.10 व्यवस्थागत सुधार के सम्बन्ध में

व्यवस्थागत सुधार से अभिप्राय, संस्था द्वारा अपनी कमियों को जानकर उनमें सुधार करके गुणवत्ता में सुधार तथा नयी क्षमताओं को विकसित करने से है। यह वांछनीय है कि समान स्कूल व्यवस्था विकसित की जाए, ताकि देश के अलग-अलग क्षेत्रों की तुलनीय गुणवत्ता भी सुनिश्चित हो सके, क्योंकि जब अलग-अलग पृष्ठभूमियों के बच्चे साथ-साथ पढ़ते हैं, तो इससे शिक्षण की गुणवत्ता में विकास होता है और विद्यालय का वातावरण समृद्ध होता है। आगामी योजना के लिए महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों की पहचान की शुरुआत स्कूलों से करते हुए, संकुल तथा खण्ड-स्तर पर हो। बाद में इन्हें समेकित करते हुए विस्तृत रूपरेखा बनाई जा सकती है। यह आगे जिला स्तर पर विकेन्द्रीकरण योजना नीति बनाने में मदद कर सकती है। प्रधानाध्यापक और शिक्षकों के सहयोग से सार्थक अकादमिक योजना का विकास तथा पठन-पाठन के सन्दर्भ में प्रत्येक स्कूल के साथ सतत् अन्तःक्रिया की जानी चाहिए, ताकि गुणवत्ता का निरीक्षण किया जा सके।

व्यवस्थागत संशोधनों के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 पंचायतीराज व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने पर जोर देती है। गुणवत्ता और जवाबदेही बढ़ाने के माध्यम के रूप में सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित

करने के लिए एक अधिक सुनियोजित रुख अपनाकर यह किया जा सकता है। चट्टोपाध्याय कमीशन (1984) द्वारा सुझाए गए पेशेवर मानकों में ढीलापन लाने की हाल की प्रवृत्ति के कार्यक्रमों को ज्यादा लम्बी अवधि का तथा अधिक समग्रता लिए हुए होना चाहिए, ताकि बच्चों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करने के लिए तथा विद्यालयों में इंटर्नशिप के द्वारा शिक्षाशास्त्रीय सिद्धान्तों को व्यवहार से जोड़ने के लिए पर्याप्त अवसर प्राप्त हो सके।

1.7.11 अध्यापक शिक्षा के सम्बन्ध में

शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों का इस प्रकार पुनर्सूत्रीकरण एवं शक्तिकरण किया जाए कि शिक्षक निम्न प्रकार अपनी भूमिका निभा सके–

1. शिक्षक–शिक्षा का इस प्रकार पुनर्सूत्रीकरण हो कि इसमें ज्ञान निर्माण में विद्यार्थी की सक्रिय भागीदारी, अधिगम के साझे सन्दर्भ, ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षक उत्प्रेरक का काम करे आदि पर बल दिया जाए। शिक्षक शिक्षा का दृष्टिकोण बहु–अनुशासनात्मक हो, उसमें सिद्धान्त और व्यवहार अन्तर्भूत हो तथा इसमें आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य विकसित करने की दृष्टि से समकालीन भारतीय सामाजिक मुद्दों पर बातचीत हो।
2. अध्ययन–अध्यापन की परिस्थितियों को शिक्षकों के लिए उत्साहवर्द्धक, सहयोगी और मानवीय बनाया जाए, ताकि विद्यार्थियों को अपनी शारीरिक तथा बौद्धिक सम्भावनाओं के पूर्ण विकास का अवसर मिले। साथ ही जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपनी भूमिका निभाने के लिए वांछनीय सामाजिक और मानवीय मूल्यों के विकास का भी अवसर मिल सके।
3. लोकतान्त्रिक सहभागिता को साकार करने हेतु ग्राम स्तर की समानान्तर संस्थाओं के क्रियाकलापों को नियन्त्रित कर पंचायतीराज संस्थाओं को मजबूती प्रदान की जा सके।
4. शिक्षक को ऐसे समूह का हिस्सा होना चाहिए, जो लगातार विद्यार्थियों की व्यक्तिगत और सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर सुधार में सजगता से लगा हो।
5. शिक्षक शिक्षा में भाषिक दक्षता को केन्द्र में रखा जाए और शिक्षक शिक्षा का समेकित मॉडल विकसित किया जाए, ताकि शिक्षकों के पेशेवरपन को मजबूत किया जा सके।
6. सेवाकालीन शिक्षण स्कूल में बदलाव का उत्प्रेरक हो।

1.7.12 परीक्षा व्यवस्था में सुधार के सम्बन्ध में

छात्रों में होने वाले परीक्षा तनाव को कम करने तथा परीक्षा में सफलता की वृद्धि के लिए निम्न महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर बल देने की आवश्यकता है–

1. विषयवस्तु के परीक्षण के स्थान पर शिक्षार्थियों की समस्या समाधान तथा समझ को जाँचने की दिशा में परिवर्तन किया जाना चाहिए। इसके लिए प्रश्न–पत्र के वर्तमान स्वरूप में परिवर्तन आवश्यक है।
2. एक ऐसी नोडल एजेन्सी की स्थापना, जो प्रवेश परीक्षाओं के डिजाइन बनाए तथा उन्हें संचालित कर सके।
3. पारदर्शिता और आन्तरिक आकलन को बढ़ावा देते हुए परीक्षाओं को कक्षा की गतिविधियों से जोड़ा जाना चाहिए।
4. आज प्रचलित पास और फेल की सामान्यीकृत श्रेणियों की कमी दूर करने के लिए जरूरी होगा कि ऐसी युक्तियाँ खोजी जाएँ, जो बच्चों को अलग–अलग स्तर की उपलब्धियों का विकल्प लेने को प्रेरित कर सकें।
5. दसवीं और बाहरवीं कक्षा में बच्चों और उनके माता–पिता पर बढ़ते मनोवैज्ञानिक दबाव की गहराती समस्याओं का समाधान।
6. विद्यार्थियों की रटने की क्षमता के स्थान पर तर्कशक्ति और रचनात्मक क्षमताओं को आकलन का आधार बनाया जाना चाहिए।
7. बोर्ड–पूर्व परीक्षाओं पर अतिरिक्त जोर को भी हतोत्साहित किए जाने की जरूरत है।
8. लचीली समय सीमा के साथ परीक्षा।
9. लघु परीक्षाओं की ओर बदलाव।

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक को दो भाग में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक के दोनों भाग प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org पर उपलब्ध है। आप वहाँ से फ्री PDF डाउनलोड कर सकते हैं।

1.7.13 व्यावसायिक शिक्षा के सम्बन्ध में

विद्यालयी पाठ्यचर्या में पूर्व प्राथमिक से 12वीं कक्षा तक काम केन्द्रित शिक्षा को, शिक्षा का अभिन्न अंग मान संस्थागत दर्जा दिया जाए। इससे वैश्विक अर्थव्यवस्था की चुनौतियों का सामना करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा की पुनर्रचना हो सकेगी। व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण (वेट) को मिशन मोड के रूप में प्रारम्भ करने तथा क्रियान्वित करने की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में पहले से उपलब्ध सुविधाओं के सहयोग से गाँव, समुदाय और ब्लॉक स्तर से लेकर जिला, नगर और महानगर तक में व्यावसायिक शिक्षा तथा प्रशिक्षण केन्द्रों और संस्थाओं की स्थापना की जाए। शिक्षकों के चुनाव और बच्चों की आवश्यकताओं तथा रुचियों का विविधिता से विस्तार करने के लिए विविध पाठ्यपुस्तकों को उपलब्ध कराया जाए।

1.7.14 नवाचारों के सम्बन्ध में

अन्ततः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 स्कूली व्यवस्था और दूसरे नागरिक समूहों के बीच सहभागिता की सिफारिश करती है, जिनमें गैर–सरकारी संगठन और शिक्षक संगठन भी शामिल हैं। पहले से ही मौजूद नवाचारों के अनुभवों को मुख्य धारा का स्वरूप देने की जरूरत है। शिक्षण अनुभवों तथा विविध कक्षा अभ्यासों में साझेदारी को बढ़ावा मिले ताकि नए विचार उत्पन्न हो सके और नवाचार व प्रयोग को बढ़ावा मिले। आज जरूरत इस बात की है कि आरम्भिक शिक्षा के सर्वव्यापीकरण में निहित चुनौतियों के प्रति सजगता को राज्य और बच्चों को लेकर काम कर रही एजेन्सियों के बीच एक व्यापक सहभागिता का विषय बनाया जाए और पहले से मौजूद नवाचारों के अनुभवों को मुख्यधारा में लाया जाए।

निष्कर्षतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 बालकों के सर्वांगीण विकास पर बल देती है। इसमें नवीन तकनीकी, शिक्षण विधियों तथा शिक्षण सामग्री के प्रयोग को व्यापकता के साथ मान्यता प्रदान की गई है। यह पाठ्यचर्या बालकों को मानसिक एवं शारीरिक रूप से सक्रिय बनाते हुए शिक्षण प्रदान करने पर बल देती है। इसके अन्तर्गत शिक्षण से सम्बन्धित सभी क्षेत्रों को ध्यान में रखा गया है। अतः यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा पाठ्यचर्या सुधार एवं बालकों के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक प्रंशसनीय प्रयास है।

****

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र की इस पुस्तक का प्रत्येक 15 दिन पश्चात् संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस पुस्तक की संशोधित संस्करण की फ्री PDF प्रगण्य प्रकाशन की वेबसाइट www.praganya.org से ही डाउनलोड करें।

यह पुस्तक प्रगण्य प्रकाशन, www.praganya.org जयपुर द्वारा प्रकाशित की गयी है एवं इसके प्रकाशन के सर्वाधिकार प्रगण्य प्रकाशन के पास सुरक्षित है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

1. पाठ योजना से अभिप्राय है–
   (1) पढ़ाये गए पाठ को स्वयं पढ़कर जानना।
   (2) उन सभी बातों का विवरण तैयार करना, जिन्हें शिक्षक कक्षा के अन्दर एक निश्चित समय में पूरा करने की इच्छा रखता है।
   (3) छात्रों से पूछे जाने वाले प्रश्नों का ब्यौरेवार उत्तर तैयार करना।
   (4) छात्रों से पूछे जाने वाले सभी प्रश्नों की सूची तैयार करना।

2. आपके विचार से पाठ्यक्रम–
   (1) छात्र की रुचियों के अनुसार होना चाहिए।
   (2) ऐसा हो, जो विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार बदला जा सके।
   (3) छात्र की क्रियाशीलता का सदुपयोग करने वाला हो।
   (4) उपर्युक्त सभी

3. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 के अन्तर्गत परीक्षा सुधारों में निम्नलिखित में से किस सुधार को सुझाया गया है?
   (1) खुली पुस्तक परीक्षा (2) सतत्/निरन्तर मूल्यांकन
   (3) सामूहिक कार्य मूल्यांकन (4) सभी

4. निम्नलिखित में से कौनसा सिद्धान्त पाठ–योजना में शामिल नहीं है?
   (1) उद्देश्यों की स्पष्टता (2) शिक्षक का ज्ञान
   (3) योजना की दृढ़ता (4) शिक्षार्थियों का ज्ञान

5. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 की संस्तुतियों के अनुसार कक्षा एक एवं कक्षा दो के विद्यार्थियों के लिए मूल्यांकन का तरीका होना चाहिए–
   (1) लिखित परीक्षण के आधार पर
   (2) मौखिक परीक्षण के आधार पर
   (3) लिखित एवं मौखिक परीक्षण के आधार पर
   (4) प्रेक्षण के आधार पर

6. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 की संस्तुतियों के सम्बन्ध में कौनसा कथन सत्य नहीं है?
   (1) विश्वविद्यालयों को राजनीति से मुक्त रखना
   (2) ज्ञान को बाह्य जीवन से जोड़ना
   (3) राष्ट्र के प्रजातांत्रिक मूल्यों का सम्मान
   (4) परीक्षाओं में लचीलापन

7. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 के अनुसार गणित शिक्षण का मुख्य उद्देश्य है–
   (1) बालकों को अंकगणित का ज्ञान देना।
   (2) बालकों में गणित के प्रति रुचि पैदा करना।
   (3) बालकों में तार्किक चिन्तन और समस्या समाधान की योग्यता का विकास करना।
   (4) बालकों का संवेगात्मक विकास करना।

8. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 में **गुणवत्ता आयाम** शीर्षक के अन्तर्गत अत्यधिक महत्त्व दिया गया है–
   (1) भौतिक संसाधनों को
   (2) शिक्षित एवं अभिप्रेरित अध्यापकों को
   (3) बालकों के लिए ज्ञान के सन्दर्भ में संरचित अनुभवों को
   (4) बालकों के लिए संरचित अनुभव एवं पाठ्यक्रम सुधार को

9. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 में बातचीत की गई–
   (1) ज्ञान स्थायी है व दिया जाता है, ज्ञान का विकास होता है और इसकी संरचना होती है।
   (2) शैक्षिक केन्द्र से विषय केन्द्र पर हो।
   (3) विद्यार्थी केन्द्रित से अध्यापक केन्द्रित की ओर
   (4) इनमें से कोई नहीं

10. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 में निम्न में से किस परीक्षा सम्बन्धी सुझाव को सुझाया गया है?
    (1) 10वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा ऐच्छिक हो।
    (2) विद्यालय शिक्षा की विभिन्न अवस्थाओं पर राज्य स्तरीय परीक्षा संचालन
    (3) प्रतियोगी प्रवेश परीक्षाओं को ऐच्छिक करना
    (4) उपर्युक्त सभी

11. दबाव को कम करने एवं परीक्षाओं में सफलता के लिए आवश्यक है–
    (1) कम अवधि की परीक्षाओं में अन्तरण
    (2) विद्यालयी शिक्षा की विभिन्न चरणों में परीक्षाओं का आयोजन
    (3) वार्षिक एवं अर्द्धवार्षिक परीक्षाएँ
    (4) विभिन्न प्रवेश परीक्षाओं के लिए विभिन्न एजेन्सियों की स्थापना

12. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 में शान्ति शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कुछ क्रियाओं की अनुशंसा की गई है। पाठ्यचर्या रूपरेखा में निम्न में से किसे सूचीबद्ध किया गया है?
    (1) महिलाओं के प्रति आदर एवं जिम्मेदारी का दृष्टिकोण का विकसित करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जाए।
    (2) नैतिक शिक्षा को पढ़ाया जाए।
    (3) शान्ति शिक्षा को एक अलग विषय के रूप में पढ़ाया जाए।
    (4) शान्ति शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए।

13. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 में बहुभाषा को एक संसाधन के रूप में समर्थन दिया गया है, क्योंकि–
    (1) यह एक तरीका है, जिसमें प्रत्येक बालक सुरक्षित महसूस करे।
    (2) भाषागत पृष्ठभूमि के कारण कोई भी बालक पीछे न छूट जाए।
    (3) यह बालकों को स्वयं पर विश्वास के लिए प्रोत्साहन देगा।
    (4) इनमें से सभी

****

1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.	9.	10.	11.	12.	13.									
(2)	(2)	(4)	(3)	(4)	(1)	(3)	(4)	(1)	(1)	(1)	(1)	(4)									